ओ३म्

८४ वाँ वार्षिक विवरण

१६८३-८४

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

ओ३म्

८४ वाँ

वार्षिक विवरण

१९८३-८४

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रकाशक :
कुल-सचिव
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
गुरुकुल कांगडी, हरिद्वार (उ०प्र०)

मुद्रक :
देवेन्द्र कुमार जैन, एम०ए०
जैना प्रिंटर्स, ज्वालापुर

दीक्षान्त समारोह १९८४ के अवसर पर अलंकार उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों का विवरण

गुरुकुल काँगड़ी

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	श्रेणी	कक्षा
१.	२४७	८०००९२	ललित कुमार	श्री सुखबीर सिह	II	अलंकार
२.	२५०	८१०१७७	नरेन्द्र कुमार	श्री बलबीर सिंह	I	वेदालंकार

दीक्षान्त समारोह १९८४ के अवसर पर अलंकार उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों का विवरण

गुरुकुल भैंसवाल

क्रम स०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	श्रेणी	कक्षा
१.	२४०	७८००८३	दिलबाग	श्री सत्यवीर सिह	II	अलंकार
२.	२४१	८१०१२८	जयदेव	,, प्रभुराम	I	अलंकार
३.	२४२	८०००७५	राजसिह	,, फूलसिह	I	अलंकार
४.	२४३	८१०१२९	राजसिह	,, बिशम्बर दयाल	I	अलंकार
५.	२४४	८१०११०	वीरेन्द्र कुमार	,, सुखदयाल	I	अलंकार

विषय-सूची

विश्वविद्यालय के १९८३–८४ के अधिकारी

विजिटर	—डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
कुलाधिपति	—श्री वीरेन्द्र
कुलपति	—श्री बलभद्र कुमार हूजा
उपकुलपति एवं आचार्य	—श्री रामप्रसाद वेदालंकार
प्रिंसिपल विज्ञान महाविद्यालय	—श्री सुरेशचन्द त्यागी
आचार्या, कन्या गुरुकुल देहरादून	—श्रीमती दमयन्ती कपूर
कुलसचिव	—डॉ० जबरसिंह सेंगर (३१-५-८४ तक)
	—श्री वीरेन्द्र अरोड़ा
वित्त अधिकारी	—श्री बृजमोहन थापर
उप-कुलसचिव	—श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी (२-१०-८३ तक)
	—डॉ० श्यामनारायण सिंह
जन-सम्पर्क अधिकारी	—डॉ० बी०सी० सिन्हा (३१-३-८४ तक)
	—डॉ० राधेलाल वार्ष्णेय
सचिव-कुलपति	—डॉ० कश्मीरसिंह (३१-१२-८३ तक)
	—डॉ० राधेलाल वार्ष्णेय
पुस्तकालयाध्यक्ष	—श्री जगदीशप्रसाद विद्यालकार
विकास एवं सम्पदा अधिकारी	—श्री बृजमोहन थापर (३१-१२-८३ तक)
	—डॉ० कश्मीर सिंह

सम्पादक मंडल

प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार	आचार्य एवं उप-कुलपति
श्री वीरेन्द्र अरोड़ा	कुलसचिव
श्री बृजमोहन थापर	वित्त अधिकारी
डॉ० आर०एल० वार्ष्णेय	जन-सम्पर्क अधिकारी एवं सचिव कुलपति
डॉ० मानसिंह	सम्पादक 'गुरुकुल पत्रिका'
डॉ० विजय शंकर	सम्पादक 'आर्यभट्ट'
डॉ० हरगोपाल सिंह	सम्पादक 'वैदिक पाथ'
डॉ० विष्णुदत्त राकेश	सम्पादक 'प्रह्लाद'

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

विजिटर —डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, विद्यामार्तण्ड, भूतपूर्व कुलपति, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

कुलाधिपति — श्री वीरेन्द्र, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, जालन्धर।

कुलपति —श्री बलभद्र कुमार हूजा

उपकुलपति एवं आचार्य —श्री रामप्रसाद वेदालकार

प्रिसिपल विज्ञान महाविद्यालय —श्री सुरेशचन्द त्यागी

आचार्य गुरुकुल — डॉ० सत्यकाम विद्यालंकार

आचार्या, कन्या गुरुकुल देहरादून —श्रीमती दमयन्ती कपूर

कुलसचिव —श्री वीरेन्द्र अरोड़ा

वित्त अधिकारी —श्री बृजमोहन थापर

उप-कुलसचिव —डॉ० श्यामनारायण सिह

जन-सम्पर्क अधिकारी एवं सचिव-कुलपति —डॉ० राधेलाल वार्ष्णेय

पुस्तकालयाध्यक्ष —श्री जगदीशप्रसाद विद्यालंकार

विकास एवं सम्पदा अधिकारी —डॉ० कश्मीर सिह

———

आमुख

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की स्थापना भारतीय जीवन-मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा गंगा के पावन तट पर १९०२ में हुई। राजनीतिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की दृष्टि से यह संस्था, शिक्षण संस्थाओ में अलग से रेखांकित की जाती रही है। स्थापना से लेकर अब तक विश्वविद्यालय उन्नत शिक्षा एवं शोधकार्य के अतिरिक्त सामाजिक पुनरुत्थान, राष्ट्रनिर्माण, सांस्कृतिक चेतना के प्रसार एवं पत्रकारिता के क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान देता रहा है।

(१) गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली में ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धो पर विशेष बल दिया जाता है। गुरुकुल की प्रारम्भिक योजना मे संस्कृत-साहित्य और वेदांग की शिक्षा के साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को भी यथोचित स्थान दिया गया था।

गत अनेक वर्षों से कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा, (आई० ए० एस०, अव० प्राप्त) के प्रबुद्ध नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने प्रशंसनीय प्रगति की है और शिक्षा एवं शोध के नये क्षेत्रों मे प्रवेश किया है। गतवर्ष कुलपति जी की प्रेरणा से विश्वविद्यालय पर्यावरण-विभाग, भारत सरकार से गंगा के समन्वित अध्ययन के लिए डॉ० विजयशंकर के निर्देशन मे शोधकार्य करने के लिये ९.३७ लाख रु० का अनुदान स्वीकृत हुआ। इसी प्रकार प्रौढ शिक्षा के लिये भारत सरकार से ६६,३७७ रु० का अनुदान स्वीकृत हुआ। इसके साथ पहले से चल रहे कार्यक्रमो जैसे राष्ट्रीय सेवा योजना, ग्राम विकास योजना एवं अन्य प्रसार सेवाओ मे भी तेजी से प्रगति हुई है। ग्राम विकास योजना के फलस्वरूप अनेक ग्रामीणो की सामाजिक, आर्थिक स्थिति मे सराहनीय सुधार हुआ है। गंगा योजना के द्वारा ऋषिकेश से गढमुक्तेश्वर तक गंगा के दोनो किनारो पर बसे हुये ग्रामो का समन्वित विकास के लिये भी अध्ययन किया जा रहा है जहा जल, भूमि, प्रदूषण एवं अपरदन आदि समस्याओ का वैज्ञानिक अध्ययन किया जा रहा है।

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि गतवर्ष विश्वविद्यालय ने अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियो मे भाग लिया। मान्य कुलपति जी ने तेरहवे राष्ट्रमण्डल विश्वविद्यालय सम्मेलन, बरमिंघम में भाग लिया एवं विद्वतापूर्ण

वार्ताएँ प्रस्तुत की। इसके अतिरिक्त कुलपति महोदय ने डबलिन में हुए अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिटी एजूकेशन सम्मेलन, ईस्ट एकेडमी लूनीवर्ग में हुए शिक्षक सम्मेलन में भाग लिया तथा उन्होंने हैम्बर्ग विश्वविद्यालय एवं अन्य कई शिक्षण सस्थाओ में गुरुकुल शिक्षा-पद्धति की प्रासंगिता प्रतिपादित की।

अन्य गौरवपूर्ण उपलब्धिया जो विश्वविद्यालय ने अर्जित कीं, वे इस प्रकार है —

(१) कुलपति जी ए० आई० यू० को स्टेंडिंग कमेटी के सदस्य मनोनीत किये गये।

(२) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा डीम्ड यूनिवर्सिटीज के लिये गठित समिति के सदस्य मनोनीत किये गये।

छठी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विजिटिंग कमेटी ने ६-१० मार्च ८४ को विश्वविद्यालय मे आकर योजनाओं का अध्ययन किया। कमेटी की संस्तुति पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विश्वविद्यालय को ५० लाख रुपये का अनुदान देना स्वीकृत किया। इससे संस्था मे अनेक विकास कार्यक्रम-जैसे शिक्षको एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियो के आवास-गृहो का निर्माण, विज्ञान में माइक्रो-बाईलोजी की स्नातकोत्तर कक्षाएँ प्रारम्भ करना, पुस्तकालय को अधिक समृद्ध बनाना एवं स्वास्थ्य केन्द्र का निर्माण आदि प्रारम्भ हो रहे है।

इस सत्र में विश्वविद्यालय मे अनेक प्राध्यापको ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की गोष्ठियो में भाग लिया। "इण्डियन एसोसियेशन फॉर अमेरिकन स्टडीज" की १८ वी वार्षिक कान्फेन्स का आयोजन विश्वविद्यालय में हुआ, जिसका उद्घाटन प० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, विजिटर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने किया। इसमें कुछ विदेश से आये विद्वानों ने भी भाग लिया।

इस वर्ष दीक्षान्त समारोह के अवसर पर भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं आर्य संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज ने दीक्षान्त भाषण दिया। दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी ने की।

(२) विश्वविद्यालय से निकलने वाली पत्रिकाए-वैदिक पथ, आर्य भट्ट, प्रह्लाद एवं गुरुकुल पत्रिका, प्रसार-शिक्षा के क्षेत्र में समुचित योगदान देती रही है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने विश्वविद्यालय में सेवा योजना केन्द्र स्थापित किया है, जिससे विद्यार्थियों को रोजगार के लिए लाभ होगा। इसके अतिरिक्त

योग की सर्टिफिकेट कक्षाएं भी सुचारू रूप से चली, जिससे अनेक विद्यार्थियों एवं प्रौढ़ों ने लाभ उठाया। अन्तर्विश्वविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता में यहां की क्रिकेट-टीम ने भाग लिया।

विश्वविद्यालय की शिष्ट-परिषद्, कार्य परिषद्, शिक्षा-पटल, वित्त समिति, योजना-पटल एवं परिसर विकास समिति की बैठकें नियमित रूप से होती रहती है। विश्वविद्यालय में शिक्षकों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रस्तावित योग्यता-प्रोन्नति योजना लागू की गई है।

(३) विश्वविद्यालय ने आकाशवाणी नजीबाबाद को प्रसार शिक्षा का केन्द्र मानकर अनेक वार्ताएं प्रस्तुत की। कुलपति जी एवं अनेक प्राध्यापकों ने रेडियो वार्ता प्रस्तुत की और उनके अनेक शोध-पत्र एवं भाषण प्रसारित हुए।

इस वर्ष का गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार भारत के प्रसिद्ध पत्रकार एवं इस विश्वविद्यालय के यशस्वी स्नातक प० सत्यकाम विद्यालंकार को दिया गया।

परीक्षा प्रणाली सुधार एवं पाठ्यक्रमों के पुनर्गठन पर अनेक बार विचार हुआ।

परिसर को सुन्दर बनाने के लिए अनेक शोभाकारी वृक्ष एवं लताएं लगाई गई। मास जुलाई ८३, वृक्षारोपण के अवसर पर 'चिपको आन्दोलन' के प्रणेता पद्मश्री श्री सुन्दरलाल बहुगुणा ने विद्यार्थियों को पर्यावरण सम्बन्धी फिल्म दिखाई एवं पर्यावरण संरक्षण का महत्व बताया। वृक्षारोपण के अवसर पर उ० प्र० सरकार के मन्त्री श्री शिवनार्थासह कुशवाहा, मेरठ मंडल के आयुक्त, जिलाधीश सहारनपुर एवं अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भी पर्यावरण पर अपने विचार प्रस्तुत किए एवं पौधे लगाये।

अखिल भारतीय कृषक समाज का सम्मेलन विश्वविद्यालय में २६ दिसम्बर से २८ दिसम्बर ८४ तक हुआ, जिसकी अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने की। उन्होंने राष्ट्रीय सेवा योजना का निरीक्षण पुण्यभूमि में किया एवं कांगड़ी ग्राम विकास योजनाओं को भी देखा तथा ग्रामीणों से भी बातचीत की।

उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने अपनी पुस्तक "वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त" दि० १०-५-८४ को माननीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी को उनके निवास पर आयोजित एक भव्य समारोह में भेंट की।

कन्या गुरुकुल देहरादून आचार्या श्रीमती दमयन्ती कपूर के आचार्यत्व में दिनों-दिन चहुँमुखी प्रगति कर रहा है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय ने ग्रामोत्थान योनना के अन्तर्गत गाजीवाला ग्राम को गोद लिया है और उसमें प्रौढ़ शिक्षा, सफाई, वृक्षारोपण, सड़क निर्माण, रोजगार के लिए बैंक से ऋण की सुविधा दिलाना तथा अछूत एवं दलितोद्धार योजनायें प्रारम्भ की हैं। इसी प्रकार की योजनायें जगजीतपुर ग्राम में भी प्रारम्भ करने की योजना है। जगजीतपुर ग्राम में गंगा के कटान से भूमि की रक्षा हेतु व्यापक पैमाने पर वृक्षारोपण किया जा चुका है।

इस वर्ष ग्रीष्मावकाश में एन०सी०सी० डाइरैक्टरेट, दिल्ली के लगभग १००० जूनियर कैडटस् का कैम्प विश्वविद्यालय में ५ जून से १५ जून तक लगा। इस कैम्प में कैडटों को ड्रिल, हथियार चलाने तथा अनुशासन में रहने एवं समाज सेवा करने की शिक्षा दी गई।

मैं भारत सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारू रूप से चलता रहा है और प्रगति होती रही है।

—वीरेन्द्र अरोड़ा
कुलसचिव

गुरुकुल काँगड़ी–संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवी शताब्दी की ऊषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी प्रारम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नयी स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलों से एक नये पौधे का रोपण किया। यही नन्हा-सा पौधा आज ८१ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओ को पुन. धरती में संजो लिया और फिर उन्हीं शाखाओ मे नयी टहनिया फूट आईं। यह पौधा गुरुकुल कांगड़ी, जिसकी स्थापना गंगा के पूर्वी तट पर हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धि एवं उपयोगिता से भारतवर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१९ वी शताब्दी मे लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा पद्धति चलाई जो उनके देश मे प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहां इंग्लैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहां भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षा-स्थलो पर पाठशालाये चल रही थी। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया, जिसमें दोनो शिक्षा पद्धतियो का समन्वय हो सके, दोनो के गुण ग्रहण करते हुए दोषो को तिलांजलि दी जा सके। अत. गुरुकुल की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत साहित्य और वेदाग की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निसंस्देह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आई इस मानसिक क्रान्ति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी विचार थे जिन्हें वे मूर्त रूप प्रदान करना चाहते थे। इनमें ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धों पर बल था।

कुछ वर्षों बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृ-भाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती

थी। उस समय आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिल्कुल नही थी। गुरुकुल के उपाध्यायों ने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो. महेशचरण सिंह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो. रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो. साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन की भौतिकी और रसायन, प्रो. सिन्हा का वनस्पति शास्त्र, प्रो. प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो. सुधाकर का मनोविज्ञान, हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रन्थ है। प्रो. रामदेव ने मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध "भारतवर्ष का इतिहास" प्रकाशित किया।

१६१२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनों स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नही, अनेक विदेशियो को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुकों में सी. एफ. ए. एण्ड्रज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत सिडनी बेव और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मैक्डानेल्ड उल्लेखनीय है।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही सस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नही हुआ, जब तक संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आंखों से नही देख गये। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल मे चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १६०७ के व्यापक दुर्भिक्ष, १६०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १६११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह संग्राम मे गुरुकुल ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान किया। इसी भावना को देखकर महात्मा गांधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है, जिसमें महात्मा गाँधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गये।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप मुलतान, कुरुक्षेत्र, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानो पर गुरुकुल खोले गये। बाद में झज्जर, देहरादून, भटिंडा, चित्तौडगढ़ आदि स्थानो पर भी गुरुकुल खोले गये। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा सम्बन्धी आदर्शो को स्वीकार करके गुरुकुल के ढग के शिक्षणालय खोलने शुरू किये।

१४ वर्ष तक अर्थात् १६१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से

स्वामी श्रद्धानन्द हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१६२१ में गुरुकुल विश्वविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे।

(१) वेद महाविद्यालय
(२) साधारण (कला) महाविद्यालय।
(३) आयुर्वेद महाविद्यालय।
(४) कृषि महाविद्यालय।

बाद मे एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमें जोड़ दिया गया।

बाढ़—१६२४ में गंगा में भयंकर बाढ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गई। अतः निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाये, जहां पर इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। यह स्थान हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर ज्वालापुर के समीप गंगा नहर के किनारे हरिद्वार बाई पास मार्ग पर स्थित है।

१६२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक यात्री विविध प्रान्तो मे सम्मिलित हुये। इनमें महात्मा गांधी, पं० मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ जमुनालाल बजाज, डा० मुंजे साधुवर, वासवानी आदि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बडी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १६२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता था। १६२१ से पं० विश्वंभरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए, पर १६२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गये।

पं० विश्वम्भर नाथ जी के बाद १६२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १६०५ में गुरुकुल आये थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्न से लाखो रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारतें बननी शुरू हुई। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान् और प्रचारक पं० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १६३५ मे प० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं० देव शर्मा जी विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १६४२ में स्वास्थ्य खराब होने के कारण सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं०

इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १९४३ में चले गये। उनके स्थान पर पं० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १९५० में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालों में श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेद सिंह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुर दास जी, महाशय कृष्णजी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेव शरण जी अग्रवाल, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, कुंवर चांदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय है। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १९५३ में पं० धर्मपाल विद्यालंकार सहा० मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं० जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे और उन्होने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस वर्ष पर एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई, जिसका नाम है "गुरुकुल कांगड़ी के ६० वर्ष"। २० वर्ष से भी अधिक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्ही के समय १९६२ में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। विधिवत् ८ विषयों में एम० ए० कक्षाएं भी चालू हुई। अब चार विषयों में पी-एच०डी० (शोध-व्यवस्था) भी है। इन्हीं के समय १९६६ में डॉ० गंगाराम जी प्रथम पूर्णकालिक कुल-सचिव, जो अंग्रेजी विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६८ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नो से विश्वविद्यालय को पंच-वर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानो में संशोधन हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ८२ वर्ष हो गये हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान किया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्य में आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकाओं के माध्यम से हम शैक्षिक एवं

सांस्कृतिक क्षेत्र में काफी योगदान कर रहे हैं। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपने मातृग्राम कांगड़ी को अंगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिये कुलपति श्री हूजा जी ने ५००/- रु० का दान भी संवड़ विद्या सभा से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एवं ग्राम जगजीतपुर को भी अंगीकृत किया है और स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक, प्रौढ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही हैं।

विद्यालय—प्रथम कक्षा से १० वी कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाण-पत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय—प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक। उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद और संस्कृत म एम. ए. और पी-एच. डी. की उपाधियां प्राप्त करने की व्यवस्था है।

साधारण कला महाविद्यालय—इसमें प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालंकार की स्नातक उपाधि दी जाती है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अंग्रेजी में एम. ए. तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी-एच. डा. उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी दर्शन तथा अंग्रेजी विषयों में प्राप्त की जा सकती है।

विज्ञान महाविद्यालय—इसमे प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी. एस-सी. की उपाधि प्रदान की जाती है। सम्प्रति भौतिकी, रसायन, वनस्पति शास्त्र, जन्तु विज्ञान और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी—यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ी फार्मेसी है। बिक्री ६० लाख से ऊपर है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियो तथा जनकल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय जो गुरुकुल के भवन हैं, उनका अनुमानतः मूल्य १ करोड़ से कही ऊपर है। इन भवनों में वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियों के आवास-गृह सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त जो भूमि है, इसका भी अनुमानतः मूल्य १ करोड़ से कम नहीं है।

(४) १६७५ से श्री बलभद्र कुमार हूजा, आई. ए. एस. (अवकाश प्राप्त) कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता का कार्य कर रहे है। सम्प्रति डा० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विजिटर है और श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब, कुलाधिपति ।

विश्वविद्यालय के विजिटर महोदय को भी राष्ट्रपति पुरस्कार तथा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी से अपने लेखन कला के क्षेत्र में पुस्तकों पर पुरस्कार मिल चुका है। श्री कुलपति जी भी इस संस्था को बनाने में जो अथक प्रयत्न कर रहे हैं वें आज हमारे सामने है और उससे गुरुकुल को काफी प्रतिष्ठा मिली है एवं प्रगति की ओर द्रुतगामी गति से अग्रसरित हो रहा है। कुलपति श्री हूजा के सद्प्रयत्नों के फलस्वरूप विश्वविद्यालय आन्तरिक रूप से सुदृढ हुआ है एवं राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय रूप से इसे ख्याति मिली है। इनकी सबसे बड़ी उपलब्धि रही है विश्वविद्यालय में आठ पीठों की स्थापना और इन सभी विभागो मे प्रोफेसर पद की स्वीकृतियां एवं पचास लाख रुपये का विशेष अनुदान। कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी का भी इस संस्था के हित में वरद-हस्त प्राप्त है। वे अपना अमूल्य समय निकालकर विश्वविद्यालय की समय-समय पर सेवा करते रहते है।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एव उप-कुलपति

दीक्षान्त समारोह १९८३-८४

कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी दीक्षान्त समारोह पर नव-स्नातको को सम्बोधित करते हुए।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के आधीन गंगा प्रदूषण तथा ग्राम्य विकास योजनाओं के अन्तर्गत जगजीतपुर ग्राम में गंगा तट पर वृक्षारोपण !
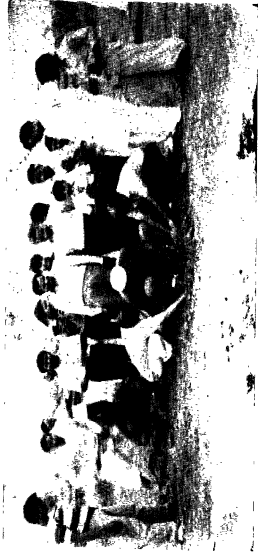
डॉ० विजय शकर, निदेशक, श्री बलभद्र कुमार हूजा, कुलपति; श्री वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव (बैठे हुए)। डॉ० आर०एल० वार्ष्णेय, सचिव कुलपति एवं जन सम्पर्क अधिकारी;

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के

दीक्षान्त समारोह

१४ अप्रैल, १९८४-२४ चैत, १९०६ (शक)

के अवसर पर

स्वामी श्री सत्यप्रकाश जी सरस्वती का भाषण

नव-दीक्षित सौम्य युवा स्नातकवृन्द !

आपके गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, कुलपति एवं अधिकारियो ने मुझे दीक्षान्त भाषण देने के लिए स्नेहपूर्वक आमंत्रित किया है, इसके लिए मैं आभारी हूँ। मैं भी एक विश्वविद्यालय का अन्तेवासी रहा, और उसी मे १९२५, १९२७ और १९३२ मे मैंने तीन उपाधियां पायी और तीन दीक्षान्त भाषण सुने। मैं भारत की पराधीनता के युग का स्नातक हूं। मेरे समय मे देश मे इतने विश्वविद्यालय नही थे, जितने आज है। मेरा विश्वविद्यालय १८८८ के लगभग (१८५७ की क्रान्ति के ३१ वर्ष बाद) स्थापित हुआ था। १८५८ में पहली शृंखला के तीन विश्वविद्यालय स्थापित हुए कलकत्ता, बम्बई ओर मद्रास के। लगभग ३० वर्ष बाद दो और बने प्रयाग और लाहौर के। आज विश्वविद्यालय। स्तरीय उपाधि देने वाली संस्थायें १०० से ऊपर है। आपका विद्यालय दो अन्तेवासियों और एक आचार्य से प्रारम्भ हुआ—हरिश्चन्द्र, इन्द्र और मुंशीराम। मुझे उन दिनों की याद है जब हरिश्चन्द्र और इन्द्र स्नातक हुए थे। मैं नही जानता कि उस समय १९१२ के प्रथम दीक्षान्त भाषण मे क्या कहा गया था। आपका गुरुकुल देश का गौरव था और आर्य जगत् को उस पर अभिमान था। कहा जाता है कि २ मार्च १९०१ को हरिद्वार में एक विद्यालय का शुभारम्भ हुआ-जिसमें १ आचार्य और २ विद्यार्थी थे। हरिश्चन्द्र की आयु १३ वर्ष की रही होगी और इन्द्र कुछ और छोटे थे। महर्षि दयानन्द की मृत्यु के दो वर्ष बाद १८८५ मे आर्यजगत् ने महर्षि की स्मृति में दयानन्द स्कूलों की शृंखला प्रारम्भ की जिसकी शती धूमधाम से मनाने की तैयारियां प्रारम्भ हो गयी हैं। हंसराज और मुन्शीराम-ये दो व्यक्ति शिक्षा के क्षेत्र में देश के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेंगे। इन दोनों संस्थाओं के प्रारम्भिक युग में पार्थक्य

अधिक था। मुन्शीराम जी का गुरुकुल राष्ट्रीय था, और हंसराज जी द्वारा प्रेरित दयानन्द विद्यालय भारत की पराधीनता के प्रतीक थे और सरकारी स्कूलों के सामञ्जस्य में थे। १६४७ की स्वतन्त्रता के बाद आज हमारे सभी विद्यालय और विश्वविद्यालय राष्ट्रीय और राष्ट्र के गौरव है। विद्यालयो के दो ही उद्देश्य हैं–पूर्वार्जित ज्ञान का संरक्षण, और नवीन ज्ञान का अर्जन। इसे ही वैदिक परिभाषा में क्रमशः क्षेम और योग कहेंगे। गुरुकुलों से भी हमें यही आशा है और नवीन पद्धति के विश्वविद्यालयो से भी। पुराने ऋषियों ने परम्परा से ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में हमें जो सामग्री दी, वह भी सुरक्षित रहे, और साथ ही साथ अपने स्नातकों से हम यह भी पूछने का अधिकार रखते हैं कि इस ज्ञान सागर में उन्होने नया क्या दिया। हमारे पुराने ऋषियों ने अपने-अपने क्षेत्र में पुराना भी सुरक्षित रखा और नया भी दिया था? गौतम, कपिल, कणाद, यस्क और पाणिनी के ग्रन्थ देखिये। सबने अपने पूर्वजों के ज्ञान को आगे की पीढियो तक बढ़ाया भी, और अपना नया भी दिया। मानव योमि की यह विशेषता है। पशुओ का ज्ञान न श्रुति है, न शास्त्र। मनुष्य से ही यह अपेक्षा की जाती है कि पुराना भी पढ़े, और आगे उसमें कुछ वृद्धि भी करे। गुरुकुल के नवीन स्नातको से भी मै यह कहूँगा कि आपके ऊपर ऋषि-ऋण है। आपका पढ़ा हुआ और आपके आचार्यो का पढ़ाया गया तभी तेजस्वी होगा, जब हम यह कह सकेंगे कि आपने अपने अध्ययन के फलस्वरूप ज्ञान-भण्डार को, और पुराने वाङ्मय को, पूर्व विचार-धारा को, कला को, शिल्प को, कौशल को, जनजीवन के प्रवाह को भी कुछ नया दिया है। नवीनता के पर्यावरण में प्राचीनता भी गौरवान्वित होती है, और इसी प्रसंग में ऋग्वेद में प्रारम्भ में ही **पूर्वेभिः** और **नूतनैः ऋषिभिः**—दोनों प्रकार के ऋषियों की कल्पना की है। ऋषि दयानन्द की परिभाषा मे पहले समय के विद्वानों को पूर्व–ऋषि, और आप जैसे नवीन अध्येता ब्रह्मचारी और विद्वानों को जो नवीन तर्कों के विशेषज्ञ हों, जिन्होने अपने-अपने क्षेत्रो में नये मार्ग प्रशस्त करने का संकल्प किया हो, वेद प्रतिपादित नूतन–ऋषि कहा गया है। पूर्व ऋषियों के प्रति समादर की भावना रखना, और नूतन-ऋषियों की बातों को निष्ठापूर्वक सुनना और मानना–इस प्रकार की भावना जिस समाज में जागृत रहती है वह समाज उन्नति की ओर अग्रसर रहता है, अन्यथा समाज में रुढ़ि-वादिता व्याप्त होने लगती है। आप सब स्नातक नूतन–ऋषि हैं, और इसलिए मेरे ऐसे वयोवृद्ध व्यक्ति द्वारा आप नवस्नातकों का स्वागत, अभिनन्दन और विनम्र अभिवादन।

विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में मेरी दृष्टि में यह अन्तर है कि हम विश्वविद्यालय के प्राचार्यों और विद्यार्थियों से यह अपेक्षा करते हैं कि वे शास्त्र का विकास करेगे किन्तु महाविद्यालय के विद्यार्थी और आचार्यों का कर्त्तव्य है

कि वे पढ़कर पूर्वार्जित ज्ञान को जीवित रखेंगे, और आगे आने वाली पीढ़ियों को यह ज्ञान सौंप देंगे। आज जो स्नातक शिक्षित होने के अनन्तर दीक्षित हो रहे हैं, उनसे मैं यही कहूँगा कि जो कुछ आपने गुरुओं के समीप रहकर सीखा है, उसको समाज में जीवित रखें, और मुझे आशा है कि आप में से कुछ स्नातक उस शास्त्रीय ज्ञान को प्रशस्त करने में भी उद्यत रहेंगे। मैं पुरानी यज्ञशालाओं को ज्ञान-विज्ञान के विकास की वेधशालाएं, अनुसन्धानशालाएं और प्रयोगशालाएं मानता हूँ। इन्ही यज्ञशालाओ में बैठकर प्राचीन ऋषियों ने वेदांग, उपाग और उपवेदों का विकास किया था। महर्षि दयानन्द ने यज्ञ की जो परिभाषा अपने ग्रन्थों में की है, वह आज के स्नातकों को सर्वदा याद रखनी चाहिये। महर्षि यज्ञ की परिभाषा इस प्रकार करते हैं—

> 'यज्ञ' उसे कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार, यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थ विद्या, उससे उपयोग और विद्यादि शुभ गुणों का दान, अग्निहोत्र, जिनसे वायु, वृष्टि, जल, औषधि की पवित्रता करके सब जीवो को सुख पहुँचाना है, उसको उत्तम मानता हूँ।

आर्य समाज के विद्वानों ने स्वामी दयानन्द की इस परिभाषा की सर्वदा उपेक्षा की है। आज गायत्री यज्ञ, पारायण यज्ञ, शान्ति यज्ञ, हमारे विद्वानों को सद्-उद्देश्यों से बहुत दूर विचलित कर रहे है। हिन्दू वातावरण में और महर्षि दयानन्द द्वारा अनुप्राणित वातावरण में यही तो अन्तर है। हमने यज्ञ को रूढि अर्थों में लेना आरम्भ किया है। जो लोग वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में, शिल्प में, कारखानों में, अनुसन्धानशालाओ में और चिकित्सा-संस्थानों में कार्य कर रहे है, हमने उन्हें याज्ञिक समझा ही नही। आपके गुरुकुल में तो कम-से-कम यज्ञ की वास्तविक परिभाषा का स्वरूप निखरना चाहिये। प्रसन्नता की बात है कि आपकी गुरुकुल भूमि से कुछ ही दूरी पर रानीपुर में भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स का विशाल उद्योग है, ऋषिकेश में भी उपयोगी कार्य हो रहा है। यह सब यज्ञ हैं। क्या आपने इन यज्ञो के ऋत्विकों का आह्वान, आदर-सत्कार किया ? आप अपने स्नातको को इन यज्ञो के प्रति निष्ठावान बनाएं। नहीं तो आपकी यज्ञो के प्रति श्रद्धा हिन्दुओ की कोटि की अन्धश्रद्धा ही कहलावेगी (वस्तुतः श्रद्धा शब्द का जो यौगिक अर्थ है, उसके साथ अन्ध शब्द का प्रयोग हो ही नही सकता)। अभी अजमेर मे जो महर्षि निर्वाण शताब्दी मनाई गई थी, उसमें हमने पहली बार महर्षि द्वारा प्रतिपादित यज्ञ की परिभाषा चरितार्थ की—देश के ८–९ वैज्ञानिकों को और कतिपय अन्य विशेषज्ञों को स्वर्ण पदक से हमने सम्मानित किया था, जिन्होने अपने-अपने क्षेत्रों में कार्य करके भारत को गौरवान्वित किया है। वह समा-रोह ऋषि के शब्दों में यज्ञ था। यजुर्वेद के अध्याय १८ में प्रथम सत्ताईस मन्त्र ऐसे

हैं, जिनके अन्त मे 'यज्ञेन कल्पताम्' ये दो शब्द बराबर प्रयुक्त हुए है। इन दोनो को भाष्य करते समय महर्षि दयानन्द ने लगभग प्रत्येक मन्त्र मे यज्ञ का अर्थ अलग-अलग किया है। मैं आज के स्नातको से कहूँगा कि इस पुण्य-स्थली मे यज्ञ द्वारा तुम सबने विद्या प्राप्त की है। आप अपना आगे का जीवन भी यज्ञ द्वारा निर्मित करे। आपका समस्त जीवन यज्ञमय हो। देवहित आपकी आयु अर्पित हो, आपके यज्ञ भी यज्ञ पर आधारित हो— 'आयुर्यज्ञेन कल्पताम्, यज्ञ यज्ञेन कल्पताम्'। आप याज्ञिक बने। किन्तु जब मै ऐसा उद्बोधन आपको दे रहा हूँ, तो मेरा अभिप्राय यह नही है, आप प्रात से साय तक काष्ठाग्नि पर स्वाहोच्चार के साथ हव्य-द्रव्य की आहुति डालते या डलवाते रहे। स्वामी दयानन्द ने यजुर्वेद के अष्टादश अध्याय के मन्त्रो मे 'यज्ञेन' शब्द का प्रसगानुसार अलग-अलग अभिप्राय लिया है। मैं कुछ उदाहरण दूगा। आप मे से कईयो ने आचार्य के चरणो मे बैठकर शायद यजुर्वेद पढा हो।

१–पृथिवी, नक्षत्र, द्यौ, दिशा के प्रसग मे– 'यज्ञेन पृथिवीकालविज्ञापकेन' (१८)

२—अशु, उपाशु, मैत्रावरुण, मन्थी आदि के प्रसग मे— 'यज्ञेन अग्नि-पदार्थोपयोगेन' (१६)

३—स्रुच, कलश, ग्रावाण, वेदि, बर्हि आदि के सम्बन्ध मे—'यज्ञेन हवनादिना'(२१)

४—अग्नि, धर्म, अक, सूर्य के प्रसग म—'यज्ञेन सगतिकरण योग्येन परमात्मा'(२२)

५—एक, तीन, पाच आदि सख्याओ के प्रसग मे— 'यज्ञेन सगतिकरणेन योगेन दानेन वियोगेन वा', अर्थात् जोड, गुणन, घटाना, भाग देना आदि अकगणित द्वारा (१४)

६—त्र्यवि, दित्यवाट्, त्रिवत्स आदि गाय, भेड, बकरी आदि के प्रसग मे—'यज्ञेन पशुपालनविधिना' (२६), और इसी प्रकार षष्ठवाट् षष्ठौही, उक्षा आदि के प्रसग म—'यज्ञेन पशु-शिक्षाख्येन' (२७)

७—व्रीहि, यव, माष, तिल, गोधूम आदि के प्रसग म— 'यज्ञेन सर्वान्नप्रदेन परमात्मा' (१२)

८—अश्मा, मृत्तिका, हिरण्य, लोह, सीस, त्रपु आदि के प्रसग मे— 'यज्ञेन सगतिकरणयोग्येन' (१३)

स्वामी दयानन्द जब यज्ञ शब्द का अर्थ सगतिकरण करते है तो उनका अभिप्राय रसायन विद्या, धातु विद्या, शिल्प, भौतिकी आदि से होता है।

आर्य जगत् मे स्वतत्रता के बाद सुन्दर यज्ञशालाओ के भवन तैयार करने की परिकल्पना उठी, तो हमने देश-देशान्तर मे भव्य और रमणीक यज्ञशालाए बना डाली–मन्दिर, मस्जिद और गिरजे भी बहुत बने, परन्तु आर्य समाज की

दीक्षान्त समारोह १९८३–८४

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती दीक्षान्त भाषण देते हुए ।

दीक्षान्त समारोह १९८३-८४

विश्वविद्यालय के दीक्षान्त यज्ञ का दृश्य । नव-स्नातको को आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार यज्ञ कराते हुए । साथ मे विश्वविद्यालय के अधिकारीगण ।

प्रेरणा से स्वामी दयानन्द के अभिप्राय की एक भी यज्ञशाला नहीं बनी। किन्तु भारत राष्ट्र तो इसकी उपेक्षा नहीं कर सकता था। आज हमारा आर्य समाज कुछ गिरकर हिन्दू बनता जा रहा है। किन्तु यह अच्छा हुआ कि भारत राष्ट्र न तो हिन्दू राष्ट्र बना, न मुस्लिम राष्ट्र। हमारा राष्ट्र अभी तक आम (भारतीय) राष्ट्र बना हुआ है। आज हमारे देश में १०० के लगभग विभिन्न कार्यों की राष्ट्रीय प्रयोगशालाएं हैं। सैकड़ों कारखाने हैं, चिकित्सा, कृषि, शिल्प और विज्ञान को प्रोत्साहन देने वाली यज्ञशालाएं हैं। इन पर हमें गर्व है। ये संस्थान और संस्थाएं राष्ट्रीय यज्ञस्थली हैं। किन्तु रुढ़िग्रस्त हिन्दुत्ववादी आर्य समाज आज भी इन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देख रहा है।

मैं अपने आज के स्नातकों से आग्रहपूर्वक संकेत करूंगा कि आपकी शिक्षा-दीक्षा आर्य जगत् के सर्वश्रेष्ठ शिक्षा-संस्थान में हुई है। इसके लिए आपको बधाई है। आपके कुलपति और कुलाधिपति और अधिकारियों से भी कहूंगा कि आप अपने अन्तेवासियों को दयानन्द के सपनों को पूरा करने की प्रेरणा दें, इन्हें राष्ट्रवादी बनाएं। ये राष्ट्रीय संस्थानों में यशस्वी स्थान प्राप्त करें।

इस संबंध में एक घटना का उल्लेख करूं। कई वर्षों की बात है, मै गृहस्थी था। अपनी पत्नी के साथ स्पेन के प्रसिद्ध नगर बार्सिलोना गया, वहां मरियम के नाम पर एक गिरजाघर कई दशकों से बन रहा है। आयोजकों की कल्पना है कि वह संसार का सबसे ऊंचा गिरजाघर होगा। अभी केवल आगे की ऊंची दीवार तैयार हुई है। गिरजे के जिस श्रद्धालु पादरी ने मुझे गिरजा-घर घुमाकर दिखाया, उसने वेदना भरे भावुक शब्दों में कहा—"आज लोग यूनिवर्सिटियों को तो धन देते हैं, किन्तु भगवान के नाम पर बनने वाले गिरजों के लिए नहीं।" यही तो ईसाइयत है, मुसलमान भी ऐसा ही समझता है, अधोगति प्राप्त हिन्दू की भी यही मनोवृत्ति है, और आर्य समाज का व्यक्ति भी इसी मनोवृत्ति में साथ दे रहा है। यह सम्प्रदायवादिता है। आर्य समाज को इसी से बचना है। स्वामी दयानन्द इसी मनोवृत्ति से हमें बचाना चाहते थे। वैदिक धर्म यथार्थ जीवन का है, यज्ञमय जीवन का निर्माण वेद की शिक्षा है। उन्नीसवें शतक में वेद के परमोद्धारक ऋषि दयानन्द एकमात्र ऐसे धर्माचार्य थे जिन्होंने यूरोप में विकसित ज्ञान एवं नये शिल्प का स्वागत किया। आज का यूरोपीय, अमरीकी विद्वान बाइबिल की दुहाई नहीं देता। उसका ज्ञान-विज्ञान मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए है। ईसाइयों ने वैज्ञानिकों का विरोध किया, मुसलमानों ने भी विरोध किया। पौराणिक हठाग्रहियों ने भी विरोध किया। हममें से भी कुछ रुढ़िवादी हिन्दू-आर्य समाजियों ने भौतिकतावाद की गन्ध

विज्ञान और शिल्प में पायी, पर विज्ञान के चरण आगे बढ़ते गये। वेद, वेदांग उपवेद सबको मिलाकर वर्तमान नाम विज्ञान है। विज्ञान ही मानव - मात्र का समान धर्म है। विज्ञान प्रतिपादित, अपौरुषेयत्व में निष्ठा रखना ही सच्ची आस्तिकता है। और इसी अपौरुषेयत्व के प्रति नत-मस्तक होना मनुष्य का सहज स्वाभाविक धर्म है, अपौरुषेय सृष्टि में विराट् पुरुष का दर्शन करना और इस पुरुष के साक्षात्कार से व्यक्ति और समाज को शाश्वत नैतिकतत्व की ओर अग्रसर करना मनुष्य का स्वाभाविक सहज धर्म है। हम अपने विगत मध्यकालीन इतिहास में हिन्दू, गणित, ग्रीक ज्योतिष, अरब की रसायन—इन संकुचित भावनाओं के शब्दों का प्रयोग करते थे। किन्तु आज मानव-मात्र की एक गणित है, एक रसायन है, एक शिल्प शास्त्र है। ऋषि दयानन्द ने इसी प्रकार की एक कल्पना तथाकथित धर्म के क्षेत्र में की थी। वे समस्त मानव को एक धर्म मञ्च पर, एक आस्तिकता पर और एक नैतिकता पर लाना चाहते थे। आपके गुरुकुल के स्नातकों से भी इस दिशा में कार्य करने की पूरी आशा हमें थी। हम कभी २ आपको ही लक्ष्य करके आवेश में खुशियों के साथ गाया करते थे कि गुरुकुल का ब्रह्मचारी अरब देश में वेद-घोष ले जावेगा, भारत से दूर वेद का प्रचार करेगा। इस सबका एक अर्थ था कि राष्ट्र या देश की, जाति पाँत की, सम्प्रदायों की सीमाये लांघ कर एक मानवता को हमारा स्नातक प्रश्रय देगा, सभी देशों के अन्धविश्वासों और अज्ञानो को दूर करेगा।

हम २२-२४ वर्ष के वसु ब्रह्मचारी से बहुत आशा नही करते। आप सब स्नातक जीवन में प्रवेश करने जा रहे हैं। आप वैवाहिक गृहस्थ जीवन में रुद्र और आदित्य ब्रह्मचारी बनने की चेष्टा करें। ज्ञान के विस्तारक का नाम ब्रह्मचारी है। ब्रह्म और वेद शब्द समानार्थक हैं। सृष्टि ज्ञान का नाम ही विद्या है। इसके दो भेद हैं—परा और अपरा। मूर्त संबंधी ज्ञान सृष्टि का नाम अपरा विद्या है। अपराविद्या ईश्वर में निष्ठा उत्पन्न करती है, किन्तु पराविद्या सृष्टि से हमें ऊपर उठाकर सृष्टि रचयिता तक ले जाती है। अमूर्त सृष्टि का ज्ञान पराविद्या है। इस पराविद्या के पांच अध्याय हैं। पांचों के विषय अमूर्त हैं—पहले अध्ययन का विषय इन्द्रियाँ है, दूसरे का प्राण, तीसरे का मानस-क्षेत्र या अन्तःकरण, चौथे का जीवात्मा, और पांचवे का विराट् पुरुष या ब्रह्म। ये पराविद्या के अध्ययन के शीर्षक हैं। उपनिषदों में इसी विद्या का उल्लेख है। ये पाँचों तत्व निराकार हैं। भौतिक या रसायन शास्त्र के क्षेत्र से बाहर इनका क्षेत्र है। इन क्षेत्रों में न्यूटन का सिद्धान्त नहीं लगेगा, न आइन्स्टाइन का। इनका विषय काल्पनिक नहीं है, यथार्थ है। इन पांच की की सहायता के बिना कोई ज्ञान अर्जित नही हो सकता। इनके तत्व दर्शन के प्रति कोई उपेक्षा की भावना नहीं रख सकता। वेद का अध्ययन इस दिशा में भी आपका मार्ग प्रशस्त करेगा। आप अपनी ज्ञानपिपासा को बढ़ाते जायें।

आपका गृहस्थ धर्म इस जीवन में बाधा नहीं डालेगा। ऋषियों की भी पत्नियां थी। ऋषि स्वयं भी ऋषि थे और उनमें से कतिपय की सन्तानें भी ऋषि थी। कुछ ऋषि-पत्नी भी थी और ऋषिकायें भी थीं। सर विलियम ब्रैग नोबुल-पुरस्कार विजेता हुए और उसका पुत्र ब्रैग (जूनियर) भी साथ ही साथ इस पुरस्कार में उसका साझी हुआ। सर जे० जे० थॉमसन ने नोबुल पुरस्कार पाया और उसके पुत्र जी० पी० थॉमसन ने भी। मेडम क्यूरी ने अपने पति पीयरे क्यूरी के साथ भौतिकी के क्षेत्र में नोबुल पुरस्कार पाया और दुबारा उसकी पत्नी क्यूरी ने रसायन के क्षेत्र में यही पुरस्कार पाया। क्यूरी-परिवार की पुत्री आइरीन क्यूरी और उसके दामाद जोलिओ ने भी साथ-साथ नोबुल पुरस्कार पाया। इस अर्थ में मैं आपसे कह रहा हूँ कि गृहस्थ जीवन मे प्रविष्ट होकर भी आप ऋषित्व प्राप्त कर सकते हैं। आप वसु हैं। मेरी आकांक्षा है कि आपका ब्रह्मचर्य, आपका वेद प्रेम आगे भी बढ़े, जीवन भर आपका वेदाध्ययन बना रहे, गृहस्थ रहकर भी आप रुद्र ब्रह्मचारी बनें। तथा आप पढ़ा-लिखा तेजोवान् बने। अभी तो आपने ज्ञान का 'अ इ उ ण' सीखा है, 'श ष स र ह ल्' तक पहुँचते-पहुँचते कई जीवन लगेंगे। ज्ञान की कोई सीमा नही। परमात्मा की थाह नही, परमात्मा की रची सृष्टि की भी थाह नही। परमात्मा अज्ञेय है और उसकी रचना का प्रत्येक कण भी अज्ञेय है। अज्ञेय से अज्ञेय को समझने की पात्रता केवल ज्ञानियों में है। अज्ञानी अपने तुच्छ ज्ञान मे ही अपनी सर्वज्ञता समझता है। आदित्य ब्रह्मचारी ही यह जानता है कि जो कुछ उसने जाना, वह कितना कम है, शून्य के बराबर। केनो परिषद् का ऋषि, सुकरात ऐसा तत्ववेत्ता, न्यूटन ऐसा वैज्ञानिक ही इस सत्य के आस्वादन का अधिकारी था।

आप सम्भवतया समझते हों कि गुरुकुल या आचार्य-कुल की परम्परा आपकी ही संस्था में है। उपनिषदों में गुरु-शिष्य परम्परा की कतिपय नामावलिया है। सुकरात, प्लेटो और अरस्तू की परम्परा प्रसिद्ध है। विज्ञान के क्षेत्र में, यूरोप के विश्वविद्यालयों में यह परम्परा तीन सौ वर्षों की है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति जिसने विज्ञान के क्षेत्र में कुछ भी यशस्वी काम किया है, अपने गुरु के नाम पर गौरवान्वित होता है। मेरे गुरु अभी जीवित हैं, ९३ वर्ष की आयु के। मैं और मेरे गुरु भाई आज तक भी (८० वर्ष की आयु में भी) उनकी आंख से आंख मिलाकर बातचीत करने की उद्दण्डता नहीं करते। उनके भी गुरु थे, उनके समय में भी गुरु की यही स्थिति थी। अगर मैं अपनी वंशावली बताऊं तो २००-६०० वर्ष पहले के जगत-प्रसिद्ध जर्मन रसायन से अपना नाता जोड़ सकता हूँ। पर यह गुरु-शिष्य सम्बन्ध प्रथम स्नातक उपाधि के समय स्थापित नहीं होता। जिस गुरु ने अनुसन्धान और उच्च अध्ययन के क्षेत्र में हाथ पकड़कर कुछ सिखाया, वह अन्तिम गुरु हमारा गुरु है। मेरा एक गुरु और

अनेक शिष्य। मेरे एक माता-पिता उनके अनेक पुत्र। गुरु और शिष्य में इतना गहरा सम्बन्ध इन गुरुकुलों में हुआ है कि गुरु अपने शिष्यों को न केवल अपने ज्ञान क्षेत्र में आलोक देता है, वह उसके मानों पूरे जीवन का उत्तरदायित्व लेता है। कहां नौकरी लगे, कहां आगे के कार्य के लिए सुविधायें प्राप्त हों और कभी-कभी कहां शादी-विवाह हो, इन सबकी उसे चिन्ता है। मालूम नहीं कि आपके गुरुकुल में यह परम्परा कहां तक स्थापित हुई है। पहले गुरु के गौरव से शिष्य गौरवान्वित होता है, और बाद को शिष्य के गौरव से गुरु भी अपने को यशस्वी समझता है। कभी किसी बात में गुरु की अपकीर्ति हुई तो शिष्य को उस अपकीर्ति का परिणाम भी भोगना पड़ता है।

विगत ८० वर्षों में आपके गुरुकुल ने शिक्षा और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के संबंध में अच्छी सेवा की थी। आपके अनेक स्नातकों के विद्यानुराग से हम सभी परिचित हैं। हिन्दी साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में इन स्नातकों ने अभूत-पूर्व ख्याति प्राप्त की। दिल्ली नगरी में १००-२०० आपके स्नातक अच्छा काम कर रहे है। मैं किसी एक का नाम नही लेना चाहता। देश-देशान्तर मे मिशनरी का काम भी इन्होने अच्छा किया। आज के स्नातकों को अपने इन बड़े गुरु भाइयों के चरणो पर चलने का हौंसला बढाना चाहिए। नौकरियां तो हम बडे-बडे विश्वविद्यालय-स्नातको को भी नही दे पाते, पुनः आपको भी हम आश्वस्त नही कर सकते। जब कभी मैं आपके गुरुकुल के पुराने स्नातकों के सम्पर्क मे आया हूँ, उनमे एक विशेषता पायी है। वह है आत्मविश्वास की। यह आत्म-विश्वास उन्हें नित्य नूतन संघर्षों के लिए साहस और सामर्थ्य देता है। आपके स्नातक यशस्वी हुए है और पी.एच.डी.,एम.ए., आचार्य या शास्त्री की उपाधिया ले लेने मे कोई कठिनाई नही मालूम होती। वाद-प्रतिवाद प्रतियोगिता मे मैं इन स्नातको की कुशलता प्रयाग विश्वविद्यालय मे भी देख चुका हूं।

मैं न तो स्नातको को उपदेश देने का साहस करूंगा और न अधिकारियो को सुझाव। पर कुछ बातें अवश्य कहूँगा। तैत्तिरीय उपनिषद् के उद्बोधन से उत्तम और उद्बोधन हो ही क्या सकता है? स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय वातावरण में सभी भारतीय विश्वविद्यालयो ने पूर्णतया या अंशतः इसे अपना लिया है। यह उद्बोधन किसी सम्प्रदाय की बपौती नही है। उस समय का है जब मानवता संकीर्ण सम्प्रदायों में बंटी न थी। न हिन्दू था, न बौद्ध, न ईसाई और न मुसलमान।

आज युग विशेषज्ञता का है। आपके विश्वविद्यालय, महाविद्यालय या गुरुकुल की कुछ विशेषता होनी ही चाहिये। प्रत्येक विश्वविद्यालय अपने पाठयक्रम, पठन-पाठन पद्धति आदि विवरणों मे स्वतंत्र है (सीमा या बाधा केवल अर्थतंत्र की है, अनुदानों की है) आप पूर्ण स्वतंत्रतापूर्वक अपने संस्थान की

विशेषता का विकास करें। ऊंचे स्तर पर पहुँच कर कोई भी शिक्षा संस्थान सभी विषयों के अध्ययन का भार नही ले सकता। मेरा सुझाव है कि अन्य संस्थानो का आप न तो अनुकरण करें और न उनसे प्रतियोगिता। आप अपने लिये सीमित क्षेत्र का वरण करें। स्मरण रक्खें कि विज्ञान विषयक शोध संस्थान आप नही चला सकते। आज यह क्षेत्र इतना व्ययसाध्य है कि इंगलैण्ड, फ्रांस और जर्मनी के पुराने विश्वविद्यालय भी अपने को इस कार्य के लिये दरिद्र पा रहे है।

आप स्नातक कक्षाओं में विद्यार्थियो की संख्या बढाने की आतुरता न दिखावें। आप अपनी पद्धति के गुरुकुलो से देश की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई संख्या के शिक्षण की आवश्यकताओं की पूर्ति नही कर सकते।

आप अपने गुरुकुल में ऐसे स्नातक तैयार करें जो वैदिक वाङ्मय के ऊंचे विद्वान हों। अष्टाध्यायी निरुक्त महाभाष्य के महाविद्वान हों, इन्हें आप भाषाशास्त्र के विद्वान बनाये। इस क्षेत्र मे काम करने के लिये तपस्या करनी पड़ेगी। एकाध आचार्य और दो चार शिष्य लैटिन, ग्रीक और प्राचीन आशाओं की भाषाओं के विशेषज्ञ बनें और भारत के प्राचीन इतिहास के मर्मज्ञ हो। चीन की पुरानी संस्कृति का ये अध्ययन करें और धीरे-धीरे इस क्षेत्र को विकसित करे। आपका संग्रहालय और पुस्तकालय इन सीमित क्षेत्रों मे सम्पन्न हो।

आपके प्राच्य-विभागीय छात्रो को भी संसार की गतिविधि से परिचित होना चाहिए। पाठ्यक्रम से बाहर इनके लिए कुछ विशेष व्याख्यानों का प्रबन्ध करना होगा। चुने हुए कुछ आचार्यों और कुछ शिष्यो को ऐसे कामों के लिए आपके अधिकारियों को प्रोत्साहन देना होगा।

आर्य समाज के प्रति भी आपके गुरुकुल का एक कर्त्तव्य है। मैं आपसे पुरोहित तैयार करने के लिए नही कहता। निष्ठावान्, तपस्वी, उच्चस्तरीय मिशनरी आपको तैयार करने होंगे - देश के अनेक प्राँचलों में आपके स्नातक काम करने का अवसर प्राप्त करे, आर्यसमाज की संस्थायें इनका भरण-पोषण कर निकटवर्ती एवं दूरस्थ देशों में इन्हें भेजें। ये सेवा-व्रती अपने कार्य-योग्य शिक्षा-दीक्षा आपके माध्यम से प्राप्त करें और फिर कार्यरत हों, तो आर्य-जगत को भी गुरुकुल पर भरोसा होगा।

बहुत दिनों से मेरी कल्पना रही है कि उच्चस्तरीय अनुसन्धान या शोधपत्रिका आर्यजगत् की भी होनी चाहिए। होशियारपुर से एक पत्रिका निकलती है। आपके गुरुकुल से वैदिक मैगजीन निकलता था, एक 'वैदिक पाथ'

निकलता है। ये पत्रिकायें आज की दृष्टि से स्तरीय या मानक नहीं हैं। यदि इन पत्रिकाओं का जीवन क्षणिक है तो ये यशस्वी नहीं हो सकती। मैं स्वयं प्रयाग के विज्ञान परिषद् से विज्ञान शोध सम्बन्धी एक पत्रिका 'विज्ञान परिषद् अनुसन्धान पत्रिका' लगभग २७ वर्ष से निकाल रहा हूँ। यह हिन्दी-भाषा को एकमात्र शोध पत्रिका है। यदि गुरुकुल को ऐसी पत्रिका निकालनी है तो गुरुकुल के पास कम-से-कम ५ लाख रुपये की एक स्थाई निधि होनी चाहिए। इतनी धनराशि से ५०-६० हजार रुपया वार्षिक ब्याज आवेगा, तब आश्वस्त होकर उस ब्याज से उच्चस्तरीय त्रैमासिक पत्रिका निकाली जा सकेगी। आज अनेक विश्व-विद्यालयों ने दयानन्द पीठ की स्थापना की है। इनकी संख्या बढ़ती जायेगी। बिना स्तरीय शोध पत्रिका के इन पीठों का काम भी अधूरा रहेगा। क्या आर्य समाज के क्षेत्र में गुरुकुलों में निष्ठा रखने वाले ५-१० ऐसे धनी-मानी व्यक्ति नहीं मिल सकते जो इस काम के लिये एक-एक लाख रुपया दे दे ? शोध संस्थान खोलने की बात मैंने कलकत्ते में भी सुनी, बम्बई, दिल्ली और अजमेर में भी सुनी। शोध संस्थान का नाम तो लोगों ने सुना है किन्तु शोध कार्य के लिए शोधकर्त्ता को जो शोध स्वतन्त्रता चाहिए, उसे कोई देने को तैयार नहीं है। हमारा समाज भी रुढ़ियों से बंधा हुआ है। शोधकर्त्ता अपने क्षेत्र में कल्पना की मुक्त उड़ान लेता है। दूसरों को भी उसकी प्रत्यालोचना करने का अधिकार है, पर विचारों के स्वातंत्र्य और उनके प्रकाशन में कोई बाधा नहीं आनी चाहिए। आपका गुरुकुल संस्थान इस कार्य को उदारता से प्रारम्भ करे तो बहुत अच्छा होगा। आप नहीं करेंगे तो कोई करेगा ही। सम्भवतया यूनिवर्सिटी वालों को करना पड़े। गुरुकुलों और यूनिवर्सिटीज में अब निकट का सम्पर्क बढाना चाहिए।

स्वतन्त्रता के बाद हमारे सम्मुख विगत कई वर्षों से दु:खद कहानियां भी आयीं। उत्तर भारत में यह विषाक्तता तेजी से फैली। हमारी समस्त शिक्षा-संस्थायें इसके कलुषित प्रभाव से ग्रस्त हो गयी। अभी यह प्रभाव मिटा नहीं है। विद्यार्थियों में यह विष ऐसा फैला कि उनके लिए अभिशाप बन गया। इसमें सबसे अधिक हानि युवकों और छात्रों की हुई। ये संयम खो बैठे, दूसरो ने अपने स्वार्थ के लिए उन्हें मूर्ख बनाया। आपका गुरुकुल भी उस प्रभाव से बच न पाया। मैं अनैतिक तत्वों की बात नहीं करना चाहता जिन्होने यह स्थिति पैदा कर दी अपितु इन बातों से गुरुकुल की प्रतिष्ठा हानि हुई है और विश्वविद्यालयों की भी।

१९४७ से पूर्व देश परतन्त्र था। उस परतन्त्रता में भी विश्वविद्यालयों को स्वतन्त्रता प्राप्त थी और उस समय का शासक उस स्वतन्त्रता का सम्मान करता

था। देश स्वतन्त्र हो गया, किन्तु हमारी परतन्त्रता बढ़ती गयी। आर्थिक परतन्त्रता आई, राष्ट्रीयकरण हुआ जिसका अर्थ था सरकारीकरण। सरकारी तंत्र की अस्थिरता ने देश में उच्छृंखलता पैदा की। उत्तरदायित्वों से शून्य अधिकारों की मांग बढी और इसका अवश्यम्भावी परिणाम युवकों को भोगना पड़ा। युवक आज की भयंकर परिस्थिति के जनक भी हैं और भोक्ता भी। ऐसे पर्यावरण में मैं गुरुकुलों के आदर्शों की बात ही नहीं करना चाहता।

नव-स्नातकों को बहुत-बहुत आशीर्वाद और शतशः बधाइयां। आप और आपके गुरुकुल के गौरव में देश का गौरव है। मेरी समस्त शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय में हुई। मैंने वहीं कार्य किया। उसकी एक-एक ईंट पर मुझे गर्व है और प्यार है। पर जब आज उसकी धरती पर चलता हूँ तो आंखों को नीचे किये हुए, सशंकित सा, जहां वर्षों से दीक्षान्त समारोह ही न हो पाया।

दीक्षान्त-समारोह

पर

कुलपति बलभद्र कुमार हूजा

द्वारा

स्वागत भाषण

१४ अप्रैल, १९८४

अर्चनीय स्वामी जी, परिद्रष्टा महोदय, कुलाधिपति जी, विशिष्ट अतिथि-गण, देवियो, सज्जनो एवं ब्रह्मचारियो !

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के ८४वें दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मुझे आपका अभिनन्दन करते हुए अतीव प्रसन्नता हो रही है। स्वामी सत्यप्रकाश जी का मैं अत्यन्त आभारी हूं कि उन्होने इस दीक्षान्त समारोह में पधारने का हमारा निमन्त्रण स्वीकार किया और अपनी गरिमामयी उपस्थिति से समारोह की शोभा बढ़ाई।

स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती के व्यक्तित्व से हम सभी परिचित और प्रभावित है। उनका जीवन एक खुली किताब है और हमारे लिए प्रेरणा का एक बड़ा भारी स्रोत है। आप विज्ञान और वेद दोनो के मर्मज्ञ विद्वान है। आपने १९६७ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रसायन शास्त्र के प्रोफेसर पद से अवकाश प्राप्त किया और १९७१ में संन्यास ग्रहण किया। भौतिकी और रसायन शास्त्र में आपके सैकड़ो अनुसंधान पत्र प्रकाशित हो चुके है। आप विज्ञान परिषद् के प्रमुख संचालक रहे है। 'अंग्रेजी-हिन्दी वैज्ञानिक कोष' तथा 'वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा' आपकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। देश में हिन्दी माध्यम से वैज्ञानिक विषयों पर लिखने वाले वैज्ञानिकों में आप अग्रणी है। इसके साथ ही पातञ्जल योग और उपनिषदों में पारंगत है। आपने ऋग्वेद का अंग्रेजी में

दीक्षान्त समारोह १९८३-८४

कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा दीक्षान्त समारोह पर स्वागत-भाषण देते हुए।

दीक्षान्त समारोह (१९८३-८४) के अवसर पर अधिकारीगण

दाएं से—श्री सरदारी लाल वर्मा, आचार्य श्री रामप्रसाद वेदालंकार, डॉ० एम० आराम (कुलपति, गांधी रूरल इन्स्टीट्यूट, मदुराई), कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र, स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा, डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार (परिद्रष्टा), पं० सत्यकाम विद्यालंकार (आचार्य), डॉ० गंगाराम गर्ग ।

अनुवाद करके अंग्रेजी भाषा-भाषी लोगों में वेद के प्रचार का महत्वपूर्ण कार्य किया है। सी०एस०आई०आर० द्वारा प्रकाशित 'भारत की सम्पदा' श्रृंखला पुस्तकों के आप मुख्य सम्पादक रहे है।

आदरणीय स्वामी जो !

आप जैसे मनीषी व्यक्ति को अपने बीच पाकर हम अपने आपको इसलिए भी गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं क्योकि आधुनिक ऋषियों की परम्परा का इस संस्थान के संस्थापक ने पुनरावर्तन किया है और आपका गैरिक परिधान उसी अनुपम आध्यात्मिक प्रकाश का प्रेरक प्रतीक है। आज दीक्षा लेने वाले स्नातकों के लिये यह दिन और आपका उपदेश अविस्मरणीय रहेगा।

आपकी उपलब्धियों और प्रखर योग्यता को ध्यान में रखते हुए इस विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद् ने इस वर्ष आपको 'विद्या मार्तण्ड' की मानद उपाधि से अलंकृत करने का निश्चय किया है। उनकी ओर से हम आपको यह उपाधि प्रदान करते हुए अपने को गौरवान्वित अनुभव करते है।

देवियो और सज्जनो !

इस वर्ष के 'आचार्य गोवर्धन शास्त्री' पुरस्कार विजेता श्री सत्यकाम विद्यालंकार का भी मैं अभिनन्दन करता हूँ। श्री सत्यकाम विद्यालंकार वेदों के निष्णात ज्ञाता हैं और उन्होने भी ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को गति दी है। आप गुरुकुल के यशस्वी स्नातक हैं और वर्षों से वेद का प्रचार भाषण, चित्रकला तथा शब्दालेखों द्वारा करते रहे हैं।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि विश्वविद्यालय की कार्य-परिषद् ने आपको इस विश्वविद्यालय में मानद प्रोफेसर के पद पर कार्य करने के हेतु आमन्त्रित किया है और आर्य विद्या सभा ने आपको गुरुकुल के आचार्य का पद-भार सौंपा है। आपने अत्यन्त कृपा कर इन दोनों पदों पर कार्य करने की सहमति प्रदान की है। हम आपके प्रति कृतज्ञ हैं।

मान्य पण्डित जी, आपकी उपलब्धियों को देखते हुए विश्वविद्यालय की सीनेट ने आपको 'विद्या मार्तण्ड' की उपाधि से विभूषित करने का निश्चय किया है। उसकी ओर से यह उपाधि प्रदान करते हुए हम अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

इस अवसर पर मैं गुरुकुल कांगड़ी की ओर से और आप सबकी ओर से

भारत के पहले अन्तरिक्ष यात्री राकेश शर्मा का भी अभिनन्दन करना चाहूंगा। आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि राकेश शर्मा आर्य समाज के प्रसिद्ध उपदेशक पं० लोकनाथ, जो कि 'यज्ञरूप प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये' गीत के रचियता हैं, के पौत्र हैं। मेरी उत्कृष्ट इच्छा है कि चाँद पर उतरने वाला पहला भारतीय गुरुकुल का ब्रह्मचारी हो।

इधर जो कुछ पंजाब में हो रहा है उसके बारे में भी हमें कुछ सोचना है, करना है। एक वक्त था जब हमारा देश 'आसिन्धु' सिन्धु पर्यन्त था और सिन्धु से ही हमने हिन्दू नाम लिया था। लेकिन हमारे देश के चार टुकड़े बने और अब पांचवां टुकड़ा बनाने का षड्यन्त्र रचा जा रहा है। गुरुकुल के गुरुजन और आर्यजनो को सोचना है कि इसका किस प्रकार से प्रतिकार किया जाय तथा राष्ट्र की मूल-भूत एकता पर मंडराते हुये साम्प्रदायिक खतरों का कैसे मुकाबला किया जाये।

इस सन्दर्भ में मैं श्री वी०के०आर०वी० राव द्वारा वी०टी० कृष्णामाचारी स्मृति व्याख्यान माला में दिये गये व्याख्यान को दोहराना चाहूंगा जिसमें उन्होंने कहा कि हमें राष्ट्र-निर्माण की सर्वांगीण प्रक्रिया में भारतीय तत्व-चिन्तन और मूल्यों के आधार पर ही विकास का ढांचा स्थिर करना है। भारत मे भिन्नता होते हुए भी एक राष्ट्रीयता का स्वरूप विद्यमान है। अत: न केवल शासन-तन्त्र को अपितु स्वयंसेवी संस्थाओ को भी इस महान् राष्ट्रीय यज्ञ में इकट्ठे मिलकर कार्य करना है जिससे देश में फैली हुई संकुचित विचारधारा और व्याप्त पाखण्ड का नाश हो, प्राचीन और आधुनिक जीवन-मूल्यो का समन्वय हो और राष्ट्र हर दृष्टि से अभ्युदय तथा कल्याण की ओर अग्रसर हो सके।

उपस्थित भद्रजनो !

वार्षिक दीक्षान्त समारोह गत वर्ष की गतिविधियों को भी उपस्थित करने का एक सुखद अवसर होता है।

अपने स्थापना काल से लेकर ८४ वर्षों की सुदीर्घ यात्रा में इस विश्वविद्यालय ने युग की कई करवटें देखी। आँधी और तूफान के अनेक झटके महसूस किये। लेकिन सुदृढ़ और अडिग चट्टान के सदृश कुलपिता के आदर्शों से पोषित यह विश्वविद्यालय आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त शिक्षा संस्थान के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है और सम्पूर्ण विश्व की दृष्टि आज गुरुकुल पर केन्द्रित है।

कॉमनवेल्थ विश्वविद्यालय के बरमिंघम सम्मेलन में गुरुकुल के कुलपति के रूप में अगस्त १९८३ में मुझे आमन्त्रित किया गया था। इस सम्मेलन में विश्व के प्रमुख शिक्षा शास्त्रियों ने भाग लिया। इसमें मैंने निरन्तर शिक्षा एवं सर्वांगीण ग्राम-सुधार में गुरुकुल विश्वविद्यालय की भूमिका पर प्रकाश डाला। मैंने आयरलैण्ड, फ्रांस, हालैंड, पश्चिमी जर्मनी, बैल्जियम आदि देशों के प्रमुख विश्वविद्यालयों का अवलोकन भी किया। मैंने अनुभव किया कि वहाँ के शिक्षा-शास्त्री गुरुकुल शिक्षा के स्वरूप को समझने और ग्रहण करने में जिज्ञासा तथा रुचि लिये हुये हैं। मैंने अनेक कुलपतियों को गुरुकुल में आकर शिक्षा की भारतीय परम्परा को देखने का निमन्त्रण दिया है।

१९८० के जिला जज सहारनपुर के निर्णय के बाद गुरुकुल में पुर्ननिर्माण का युग आरम्भ हुआ। किन्तु गत तीन वर्षों में आशा के विपरीत कतिपय अप्रत्याशित दिशाओं से गुरुकुल की प्रगति में बाधायें डालने के अनेक प्रयत्न किये गये। फिर भी मैं निःसंकोच कह सकता हूँ कि बावजूद इन बाधाओं के, मान्य परिद्रष्टा डॉ० सत्यव्रत और कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी के नेतृत्व में गुरुकुल निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हुआ है। सवैधानिक व्यवस्था के अनुरूप नियमित रूप से शिक्षा-पटल, कार्य-परिषद् एवं शिष्ट-परिषदों की बैठकें सम्पन्न हुईं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार तथा उत्तर-प्रदेश सरकार के प्रतिनिधि इन बैठकों मे सम्मिलित हुये। उनके सहयोग एवं परामर्श से विश्वविद्यालय को उज्ज्वल स्वरूप प्राप्त हुआ है।

गत वर्ष विश्वविद्यालय के गुरुजनों और अधिकारियो ने समय-समय पर अनेक शिक्षा-सम्मेलनों, परिचर्चाओं एवं संगोष्ठियों में भाग लिया।

५ जून १९८३ को विश्वविद्यालय में पर्यावरण दिवस पर एक विद्वद् संगोष्ठी का आयोजन हुआ। देश के अनेक विद्वानों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया। भारत सरकार के पर्यावरण मन्त्रालय के उपमन्त्री माननीय श्री दिग्विजय सिंह इस संगोष्ठी के उद्घाटन के लिये पधारे।

देवियों एवं सज्जनों !

मुझे आपको सूचित करते हुए प्रसन्नता है कि भारत सरकार के पर्यावरण विभाग ने गंगा के समन्वित अध्ययन की योजना के अन्तर्गत इस विश्वविद्यालय को लगभग १० लाख रुपये का अनुदान देना स्वीकार किया है। इस कार्य हेतु हमें ऋषिकेश से लेकर गढमुक्तेश्वर तक का गंगा का भाग मिला है। डॉ० विजयशंकर, अध्यक्ष, वनस्पति-विज्ञान इस प्रयोजना के निदेशक हैं।

२५ जुलाई १९८३ को विश्वविद्यालय में वृक्षारोपण का कार्यक्रम बड़े भव्य रूप से मनाया गया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री शिवनाथ सिंह कुशवाहा, 'चिपको आन्दोलन' के प्रणेता पद्मश्री सुन्दरलाल बहुगुणा, मेरठ मण्डल के आयुक्त श्री बी०के० गोस्वामी, जिलाधीश श्री एल०के० गुप्ता ने पर्यावरण सम्बन्धी अपने विचार अभिव्यक्त किये। गत वर्षा ऋतु में विश्वविद्यालय परिसर एवं कांगड़ी ग्राम में हजारों वृक्षों का आरोपण किया गया।

२५ से २७ दिसम्बर तक 'अखिल भारतीय कृषक संमाज' ने इस विश्व विद्यालय में डॉ० बलराम जाखड़, अध्यक्ष लोकसभा के नेतृत्व में अपना वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया। इस अवसर पर देश भर से हजारों कृषक-बन्धु इस विश्वविद्यालय में आये। उन्होंने इसे देखा और इसकी प्रगति की सराहना की।

९-१० मार्च १९८३ को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विजिटिंग कमेटी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की छठी पंचवर्षीय योजना को अन्तिम रूप देने के लिये गुरुकुल में आयी। इसके सदस्य थे—श्री रमारंजन मुखर्जी, भू०पू० कुलपति बर्दवान विश्वविद्यालय, प्रो०आर०सी० गौड, अलीगढ विश्वविद्यालय, प्रो०एम०एल० रैना, पंजाब विश्वविद्यालय। श्री बी०आर० क्वाटरा, उप-सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, इस समिति के सचिव थे।

इस सन्दर्भ मे जो प्रश्न उभर कर सामने आया वह था कि क्या गुरुकुल की कोई निजी विशेषता है अथवा गुरुकुल भी अन्य विश्वविद्यालयो की तरह ही है जो बी०ए०, एम०ए० की परीक्षायें लेते है और डिग्रियाँ बाँटते हैं।

इस अवसर पर मैंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के ८० वें दशक का कार्यक्रम उपस्थित करते हुये कहा कि गुरुकुल सामान्य विश्वविद्यालयों की तरह नही, अपितु विश्व की समस्याओ के समाधान की दिशा में भी उपयोगी सदेश दे सकता है। वह सन्देश है आध्यात्मिक मूल्यों का प्रचार, विज्ञान का प्रसार और पाखण्ड का खण्डन अर्थात् श्रेयस् और प्रेयस् का संगम। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जानते थे कि देश तभी सशक्त होगा जब सभी देशवासी सशक्त, सबल, हृष्ट-पुष्ट, तेजस्वी, ओजस्वी और विचारवान् होंगे। वह देश की निर्बल, असहाय, असमर्थ जनता को बलवान्, स्वावलम्बी तथा समर्थ बनाना चाहते थे। अतः जहाँ एक ओर उन्होंने समाज-सुधार के कार्यक्रम पर बल दिया, वहां व्यक्तिगत सुधार पर भी उन्होंने यथेष्ट बल दिया।

इसी हेतु स्वामी श्रद्धानन्द ने आज से ८४ वर्ष पूर्व गुरुकुल कांगड़ी की

स्थापना की, ताकि यहाँ से निकले हुये ओजस्वी स्नातक अच्छे ब्राह्मण, अच्छे वैश्य बनें और देश के उद्धार में अपना योगदान दें। लेकिन जिस पौराणिकता, पाखण्ड और पोप-लीला के विरुद्ध स्वामी दयानन्द ने युद्धभेरी बजाई थी वह अभी भी देश में व्याप्त है। अतः उनके कायक्रम को गतिमान करने हेतु तथा अज्ञान और रूढ़ियों के इन गढों को मिटाने हेतु कृत-संकल्प नवयुवक समुदाय की, दयानन्द के वीर सैनिकों की बहुत आवश्यकता है और उनको तैयार करने का कार्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का है।

इस सन्दर्भ में आचार्य सत्यकाम विद्यालंकार ने गुरुकुल को वैदिक संस्कृति का अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र बनाने की योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विजिटिंग कमेटी के सम्मुख रखी, जिसे उन्होंने बहुत पसन्द किया।

विजिटिंग कमेटी ने हरिद्वार की शैक्षणिक आवश्यकताओं का भी जायजा लिया तथा विश्वविद्यालय की गतिविधियों का गहराई से अध्ययन किया और इसकी कमजोरियों एवं क्षमताओं का मूल्यांकन किया। आशा की जाती है कि उनकी सिफारिशें गुरुकुल के विस्तार में बहुत उपयोगी सिद्ध होंगी।

१६ मार्च, १९८४ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में 'आचार्य गोवर्धन शास्त्री स्मृति मन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 'गोवर्धन ज्योति' की छठी रश्मि का विमोचन करते हुये महात्मा आर्य भिक्षु ने कहा कि आचार्यों का परम कर्त्तव्य है कि वे बालकों में गुणो की वृद्धि करें तथा अवगुणों को दूर करें।

इन दिनों आर्य समाज गुरुकुल कागड़ी ने भी अंगडाई ली है। संघड विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर की आर्थिक सहायता से आर्य समाज गुरुकुल कांगड़ी ने स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के दूसरे, तीसरे एवं छठे समुल्लास के सरलीकृत एवं संक्षिप्त संस्करण किये। इसी प्रकार उन्होंने 'व्यवहार भानु' के सरलीकृत संस्करण का प्रकाशन किया। इन तीनों पुस्तिकाओं का प्रकाशन इस आशा से किया गया है कि स्वामी जी के विचार घर-घर तक पहुँचें।

मुझे यह कहते हुये भी प्रसन्नता हो रही है कि पद्मश्री विनयचन्द्र मौदगिल्य, प्राचार्य गन्धर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली जिनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल में ही हुई थी, ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को संगीत शिक्षा की ओर प्रेरित करने हेतु अपनी अमूल्य सेवायें प्रदान की है। इस श्रृंखला में उन्होंने पिछले तीन दिन तक गुरुकुल में प्रवास किया तथा चुने हुए ब्रह्मचारियों को सस्वर

वेदमन्त्र एवं अन्य गीत सिखाये।

मुझे आपको यह सूचना देते हुए हर्ष हो रहा है कि पिछले दिनों इस विश्वविद्यालय में 'अमेरिकन अध्ययन के अखिल भारतीय संगठन' का १८वाँ वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर उ०प्र० के पर्यटन मन्त्री श्री गुलाब सेहरा ने अपने सन्देश में कहा कि ऐसी संस्थाओ ने देश-विदेश में एकात्मकता प्रतिष्ठित करने में लाभदायक भूमिका निभाई है। अवध विश्वविद्यालय के कुलपति श्री मेहरोत्रा ने कहा कि इस प्रकार के सम्मेलनों से गुरुकुल कांगड़ी की छवि निखरेगी। इस सम्मेलन का उद्घाटन हमारे मान्य परिद्रष्टा डा० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार ने अपने ओजस्वी भाषण से किया। उन्होने कहा कि किपलिंग तो कहता था पूर्व-पश्चिम का संगम सर्वथा असम्भव है। मैं भारतीय कहता हूं कि पूव और पश्चिम अभिन्न है और सदा ही एक-दूसरे से जुड़े रहेंगे।

देवियो तथा सज्जनो !

आप जानते ही है कि गुरुकुल का मातृ-ग्राम काँगड़ी ग्राम है। इस विश्वविद्यालय द्वारा इस गाँव को पूर्ण रूप से अंगीकृत कर लिया गया है। २६ दिसम्बर १९८३ को लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ का इस गाँव में पदार्पण हुआ तथा वे इस गाँव की प्रगति से काफी प्रभावित हुए। स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, ज्वालापुर ने ग्रामवासियो को कुटीर उद्योग-धन्धो के लिए ऋण देने का व्यापक कार्यक्रम शुरू किया है जिससे यहाँ के निवासियों की आर्थिक स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ है।

गत वर्ष 'श्रद्धानन्द सप्ताह' के दौरान डॉ० बी०डी० जोशी के निर्देशन में पुण्य-भूमि मे राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत कैम्प लगाया गया। विश्वविद्यालय के ५० छात्रो ने अत्यन्त लगन और निष्ठा से कांगड़ी ग्राम में कार्य किया।

अन्य विशिष्ट अतिथिगण के अलावा माननीय बलराम जाखड, श्री आर० वैंकटनारायण, कृषि उत्पादन आयुक्त उत्तर प्रदेश, श्री दर्शन सिंह, जिलाधीश, बिजनौर ने कैम्प का अवलोकन किया। इसका उद्घाटन भारत सरकार के भू०पू० सलाहकार श्री शाह ने किया था।

डॉ० त्रिलोक चन्द के निर्देशन में गुरुकुल कांगड़ी द्वारा प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम के अन्तर्गत ३० प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रो का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है।

गुरुकुल पुस्तकालय ने भी आशातीत प्रगति की है। गत वर्ष पुस्तकालय

में विभिन्न विषयों की लगभग ५,००० पुस्तकें मंगवाई गई। इस समय विभिन्न विषयों की ३५० पत्रिकायें नियमित रूप से आ रही हैं। पुस्तकालय में इस वर्ष गुरुकुल से प्रकाशित सम्पूर्ण साहित्य एवं गुरुकुल के स्नातकों के विपुल प्रकाशन को पृथक् रूप से 'गुरुकुल प्रकाशन संग्रह, के नाम से संगृहीत किया गया है। इसके लिए पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जगदीश विद्यालंकार धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रो० विनोद चन्द्र सिन्हा के नेतृत्व में गुरुकुल का संग्रहालय राष्ट्रीय ख्याति की ओर अग्रसर हो रहा है। इस सत्र में यहाँ अष्टधातु कक्ष और चित्रकला कक्ष की भी स्थापना की गई है। पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष माननीय श्री मेहरोत्रा ने, जो पिछले दिनों गुरुकुल आये थे, गुरुकुल के संग्रहालय हेतु १०,००० रु० विशेष अनुदान के रूप मे स्वीकृत किये।

मित्रो !

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि विश्वविद्यालय में शोध तथा प्रकाशन का कार्य आलोच्य वर्ष में उत्साहवर्धक ढंग से बढा है। आपको ज्ञात ही है कि गुरुकुल से नियमित रूप से प्रकाशित होने वाली पाँच पत्रिकाओ के अतिरिक्त ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर गुरुकुल कांगडी ने अपने श्रद्धासुमन प्रस्तुत करते हुए 'ऋषि दयानन्द की साधना और सिद्धान्त' नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया। निर्वाण शताब्दी के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सौजन्य से डॉ० गंगाराम गर्ग ने अंग्रेजी में 'वैदिक पर्सपैक्टिव ऑन स्वामी दयानन्द सरस्वती' नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया। इस पुस्तक की भूमिका सुप्रसिद्ध दार्शनिक प्रो० कैनिथ जॉन्स द्वारा लिखी गई।

वेद एवं कला महाविद्यालय के वेद, संस्कृत, प्राचीन भारतीय इतिहास तथा हिन्दी विभागो मे अनुसंधान-कार्य प्रगति पर है। इस वर्ष वेद-विभाग में २, संस्कृत-विभाग मे ५ छात्रो के पंजीकरण किये गये। इस सम्बन्ध मे उल्लेखनीय है कि अब तक केवल चार विभागो मे ही अनुसंधान कार्य की अनुमति थी। इस वर्ष दर्शन-विभाग मे भी अनुसंधान कार्य प्रारम्भ करने की अनुमति विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने प्रदान कर दी है। तदनुसार दर्शन विभाग मे भी ५ छात्र पंजीकृत किए गये है। इसके अतिरिक्त अनुसंधान कार्य करने हेतु मनोविज्ञान, अंग्रेजी तथा विज्ञान महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान तथा रसायन विज्ञान आदि विभागो में भी अनुसंधान कार्य प्रारम्भ करने के लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से पत्राचार चल रहा है।

विश्वविद्यालय अपने स्थापना-काल में ही उच्चतर अध्ययन तथा अनुसंधान कार्य में अग्रणी रहा है। महर्षि दयानन्द को केन्द्र बनाकर शोध के विविध

परिदृश्य प्रस्तुत किये जाते रहे हैं। वैदिक मानवतावाद, वेद-वर्णित संस्थायें, दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य में समाज का स्वरूप, प्राचीन भारत में धर्म-निरपेक्षता, जनमत, भारत-कुम्बुज सम्बन्ध, बाली द्वीप में भारतीय संस्कृति का मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में वैदिक परम्परा, सत्यदेव परिव्राजक तथा आर्य समाज और प्रेमचन्द, ऐसे कार्य हैं जो विश्वविद्यालयीय शोध-कार्य की तुलना में प्रतिबद्ध किन्तु लोकोपयोगी कार्य का दिशा-बोध कराते हैं। वैदिक शिक्षा दर्शन का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विनियोजन करना ही हमारा लक्ष्य है और भावी अनुसंधान कार्य की रूप-रेखा भी इसी दिशा में स्थिर की जा रही है।

आज की नई पीढ़ी स्वतन्त्रता के ऊँचे महलों में उपलब्ध सुख-सुविधाओं की तो आकांक्षा करती है और उनके अभाव में उग्र आन्दोलन चलाने की बात भी करती है, पर वह नही जानती कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये उनके पूर्वजों ने क्या कुर्बानियाँ दी, क्या यातनायें भोगी ? स्वतन्त्रता के लिये लड़ी गई लड़ाई तथा उसकी बुनियादी विशेषताओं का राष्ट्रीय दृष्टिकोण से आकलन कर, भारतीय इतिहास की पुनर्रचना के लिये योजनाबद्ध अध्ययन करने की आवश्यकता को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय ने अपनी छठी योजना मे 'लाजपतराय अनुसंधान पीठ' प्रतिष्ठित करने का प्रस्ताव अनुदान आयोग के समक्ष रखा। विजिटिंग कमेटी के सदस्यों ने इस प्रस्ताव का हार्दिक अनुमोदन किया है। मुझे विश्वास है कि भारत की स्वतन्त्रता एवं पुनर्जागरण के इतिहास की नव-संरचना में यह पीठ अप्रतिम योगदान करेगी।

विश्वविद्यालयीय संकाओं के विद्यार्थियों को आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की विशेष उपलब्धियों से परिचित कराने के लिये भारतीय विश्वविद्यालयों के सम्मानित विद्वानों के व्याख्यानों का आयोजन किया गया। मगध विश्वविद्यालय गया के इतिहास के प्रोफेसर डॉ० उपेन्द्र ठाकुर, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के सेन्ट्रल एशिया स्टडीज के अध्यक्ष डॉ० राम राहुल, दिल्ली विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान के अध्यक्ष डॉ० एच०सी० गाँगुली, रांची विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के अध्यक्ष डॉ० आर०एस० श्रीवास्तव तथा मुजफ्फर नगर के प्रोफेसर डॉ० विश्वनाथ मिश्र ने विजिटिंग फैलो के रूप में आकर व्याख्यान दिये। इनके आगमन से विश्वविद्यालय की सार्थकता बढ़ी है।

प्राध्यापकों की नियुक्तियों हेतु विषय-विशेषज्ञ के रूप में जगन्नाथ विश्वविद्यालय पुरी के कुलपति डॉ० सत्यव्रत शास्त्री, बर्दवान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० रामरंजन मुखर्जी, गुजरात विद्यापीठ के कुलपति डॉ० रामलाल पारिख तथा कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री वहीद मलिक यहां पधारे। उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रगति पर हार्दिक सन्तोष व्यक्त किया।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के श्री के०एन० सिंह, कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तथा लाओस, वियतनाम और कम्पूचिया के मान्य राजदूत भी इस वर्ष गुरुकुल पधारे और यहाँ की प्राचीन गुरु-शिष्य प्रधान प्रणाली को देखकर अभिभूत हो गये।

भारत की भावात्मक एकता की पुष्टि तथा नवनिर्माण की अद्यतन जानकारी के लिये जहाँ यहाँ के विद्यार्थी बम्बई, कन्याकुमारी, रामेश्वरम्, मद्रास, अजमेर, जयपुर, आगरा तथा मथुरा की सरस्वती यात्रा पर गये, वहाँ अन्तर्विश्वविद्यालयीय खेल परिषद् की सदस्यता प्राप्त कर हमारे विद्यार्थी खेल-कूद के क्षेत्र में भी उतरे। इस वर्ष अलीगढ़ वि०वि० में आयोजित अन्तर्विश्व-विद्यालयीय हाकी प्रतियोगिता में हमारे छात्रों का उल्लेखनीय प्रदर्शन रहा।

विद्यार्थियों की शारीरिक क्षमता की वृद्धि के लिये जिमनेजियम की व्यवस्था को भी सुधारा गया, यद्यपि इस क्षेत्र में बहुत कुछ करना शेष है। इसका उद्घाटन श्री टी०एन० चतुर्वेदी, तत्कालीन शिक्षा सचिव, भारत सरकार ने किया।

विश्वविद्यालय के छात्रों को परिसर में ही उचित व्यवसाय मार्ग निर्देशन तथा व्यवसाय जगत् की पूरी जानकारी देने के लिये एक विश्वविद्यालय सेवा योजना एवं मंत्रणा-केन्द्र की स्थापना की गई है, जो व्यवसायोन्मुख शिक्षा के व्यवहारीकरण में यह एक ठोस कदम है और इस दिशा में इस अंचल के छात्रों को आगे बढ़ने का पूर्ण अवसर मिल सकेगा। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रदत्त इस योजना के लिये हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

शिष्ट परिषद् तथा कार्यपरिषद् में शिक्षा मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आगामी तीन वर्षों के लिए मनोनीत सदस्यों डॉ० एल०पी० सिन्हा, कुलपति, हिमाचल विश्वविद्यालय, डॉ० एम० आराम, कुलपति, गाँधी ग्राम इन्सटीट्यूट मदुराई, जस्टिस श्री आई०डी० दुआ, श्री गुरबख्श सिंह, उप-सचिव, शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार, डॉ० रामलाल पारीख, कुलपति, गुजरात विद्यापीठ, तथा श्री आर०एस० चितकारा का मैं इस अवसर पर हार्दिक स्वागत करना चाहूँगा। ये अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित विद्वान् हैं और इनके दीर्घ अनुभवों से हमें भरपूर लाभ मिलेगा।

यदि इस अवसर पर मैं कन्या गुरुकुल की उपलब्धियों का जिक्र न करूं तो बात अधूरी ही रहेगी। यहाँ की आचार्या बहन दमयन्ती कपूर कन्याओं को,

वेदांग, व्याकरण, संस्कृत तथा गृहकलाओं में पारंगत बनाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहती हैं। कन्याओं को अतीत के राष्ट्रीय आदर्शों से प्रेरणा लेकर जीवन-संग्राम में विवेक तथा उत्साहपूर्वक चल पड़ने के लिए तैयार करना ही इस संस्था का लक्ष्य है। कन्या गुरुकुल की स्नातिकाओं ने ललित कला, उद्योग तथा शिक्षा के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किये हैं। यहाँ की छात्रायें चरखा कताई, काव्य तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता, खेल, विज्ञान-प्रतियोगिता तथा गृह-विज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम रहती हैं। खेलों मे प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर यहाँ की छात्राओ का चयन हुआ है।

निर्माण कार्यों की शृंखला में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त धनराशि में ८ प्रोफेसर - क्वार्टर्स का निर्माण सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा किया जा रहा है। इसका शिलान्यास १ फरवरी १९८४ को कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी के सानिध्य मे हमारे परिद्रष्टा डा० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार ने किया।

विश्वविद्यालय विभाग गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की जीती जागती प्रयोगशाला है। ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नित्य-क्रिया से निवृत होकर श्री ईश्वर भारद्वाज के नेतृत्व में ब्रह्मचारी वेदमन्त्रों का सस्वर पाठ तथा योगाभ्यास करते है। वरिष्ठ ब्रह्मचारियों को प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी द्वारा प्रतिदिन एक वेद-मन्त्र अर्थ सहित कंठस्थ कराया जाता है। ब्रह्मचारियों की नियत वेश-भूषा, भोजन व्यवस्था तथा आवासीय व्यवस्था में इस वर्ष विशेष सुधार हुआ है। पण्डित सत्यकाम जी के सुदक्ष आचार्यत्व मे ब्रह्मचारियों का दल अपने कार्य में निरन्तर अग्रणी होता चलेगा, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।

मैं एक बार पुनः गुरुकुल की गत वर्ष की उपलब्धियों के लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, आकाशवाणी नजीबाबाद, विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद्, कार्यपरिषद् तथा शिक्षापटल के मान्य सदस्यगणों के प्रति आभार प्रकट करना चाहूंगा, जिन्होंने समय-समय पर हमें अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया तथा हमारा मार्ग प्रदर्शन किया। इसके साथ ही मैं स्थानीय प्रशासन को भी धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होने इस दौरान परिसर में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

मैं इस अवसर पर अपने अध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को भी साधुवाद देना चाहूंगा जिन्होंने मेहनत और लगन से ये सब उपलब्धियां प्राप्त कीं।

मान्यवर स्वामी जी !

इस वर्ष पी. एच. डी. की १, एम. ए. की ६२, एम०एस-सी० की ४२, बी०एस-सी० की ३२ तथा अलंकार की १७ उपधियां प्रदान की गई हैं।

अब आपसे निवेदन है कि नव-स्नातकों को आशीर्वाद देने की कृपा करें।

वित्त एवं लेखा

समीक्षाधीन वर्ष में मुख्य रूप से आडिट बजट एवं विभिन्न अनुदान आदि का कार्य सम्पन्न हुआ।

विश्वविद्यालय का 1979–80, 1980–81, 1981–82 तक का आडिट महालेखाकार उत्तर-प्रदेश, इलाहाबाद को आडिट पार्टी द्वारा किया गया। आडिट रिपोर्ट अभी तक प्राप्त नहीं हुई है।

अगस्त, सितम्बर 1983 में विश्वविद्यालय का संशोधित बजट बनाया गया। इसे वित्त-समिति की बैठक दिनांक 15-10-1983 में प्रस्तुत किया गया जिसे समिति ने निम्न प्रकार पारित किया।

बजट सारांश

	संशोधित अनुदान 83–84	बजट अनुमान 1984–85
वेतन एवं भत्ते आदि	22,65,000·00	21,90,000·00
अंशदायी भविष्य निधि,	87·000 00	80,000·00
अन्य व्यय	6,50,000 00	6,74,000·00
योग व्यय	30,02,000·00	29,44,000·00
आय	1,25,000·00	1,30,000·00
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त अनुदान	28,77,000 00	28,14,000·00

समीक्षाधीन वर्ष 1983–84 में 28,77,000·00 के अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है उनका विवरण निम्न प्रकार है।

क्रमसं०	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण	अन्य
1	2	3	4	5
1.	2,50,000·00	वि०वि० अनुदान आयोग	पुस्तकालय की पुस्तकें	
2.	15,000·00	,,	शोध प्रबन्ध छपवाने हेतु	
3.	10,000·00	,,	अनएसाण्ड ग्रान्ट	
4.	25,000 00	,,	शोध छात्रों हेतु आकस्मिक अनुदान जिनको छात्रवृत्ति नही मिलती।	
5.	2,500·00	,,	प्रौढ़ शिक्षा	
6.	63,877·00	,,	,,	
7.	4,00,000·00	,,	स्टाफ क्वार्टर्स	
8.	25,000·00	,,	पुस्तकालयाध्यक्ष का वेतन	
9.	30,000·00	भारत सरकार	पुस्तक सुरक्षा	
10.	4,93,000·00	,,	गंगा बेसिन	
11.	15,000·00	,,	पर्यावरण अनुदान	
12.	18,700·00	,,	एन०एस०एस०	

इस वर्ष संस्था को नियमित अनुदान मिलता रहा जिसके कारण कर्मचारियों के वेतन का नियमित भुगतान तथा अन्य मदों में व्यय की प्रगति संतोषजनक रही। वित्त समिति ने अपनी दिनांक 15-7-83 तथा दिनांक 10-2-1984 की बैठक में वित्त संबन्धी जो निर्णय लिए उनके क्रियान्वन सम्बन्धी कार्यवाही की गई। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के संशोधित वेतनमान का एरियर प्राप्त हुआ तथा कर्मचारियों को दिया गया। डॉ० हरगोपाल सिंह को 1966 से 1982 तक रीडर के वेतनमान का एरियर दिया गया।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विजिटिंग कमेटी द्वारा छठी पंचवर्षीय योजना के अर्न्तगत निम्न धनराशि स्वीकृत की गई।

छठी पंचवर्षीय योजना में यू.जी.सी. से स्वीकृत योजनायें

छठी पंचवर्षीय योजना में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की संस्तुतियों पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत योजनायें—

क्रम	विभाग	प्रो०री०ले० अन्य	किताबें एवं जर्नल	संयत्र	भवन	अन्य
1	2	3 4 5 6	7	8	9	10
1.	वेद	....	25,000			
2.	संस्कृत	....	25,000			
3.	हिन्दी	1	25,000			
4.	अंग्रेजी	1 1	25,000	30,000		
5.	दर्शन	....	25,000			
6.	मनोविज्ञान	1	25,000	50,000		
7.	गणित	1........	25,000	10,000		
8.	रसायन	.....1 1.....	25,000	1,00,000		
9.	भौतिकी	....1 1 .. .	25,000	50,000		
10.	जीव-विज्ञान	1 1	25,000	50,000		
11.	वनस्पति विज्ञान	1 1.....	25,000	50,000		
12.	प्रकाशन कार्यक्रम तथा अन्य सांस्कृतिक		(प्रकाशन)		50,000	
			(होनोरेरियम स्कोलर्स)		25,000	
			(विजिटिंग फैकल्टी)		25,000	
13.	संग्रहालय	.........2 (संग्रहालय सहायक) 1 क्यूरेटर (लेक्चरर ग्रेड में)		50,000 (फील्ड वर्क, फर्नीचर तथा एक्सकावेशन)		

1	2	3 4 5 6	7	8	9	10
14.	केन्द्रीय पुस्तकालय	... 2	2,00,000	50,0000/	(1 पुस्तकालयाध्यक्ष रीडर के स्केल में तथा 1 प्रोफेसनल सहायक)	
15.	योग एवं शारीरिक शिक्षा	1 शिक्षक				
16.	जूनियर रिसर्च फैलोशिप स्कीम/स्वीकृत परपज ग्रांट				5 J.R.F.S 50,000	
भवन	प्रोफेसर-निवास हेतु भवनो का निर्माण		16,64,800/-		UGC संदर्भ F-13-1/83(D-I) dt. 15-7-83	
	महायोग —		26,05,800/-			
17.	स्वास्थ्य केन्द्र सुविधाएं			1,00,000		30,000 स्टाफ
18.	'अतिथि गृह' की पूर्णता				50,000	
19.	यूनिवर्सिटि हाल का पुनरुद्धार				50,000	
20.	शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के लिए क्वाटर्स				5,00,000	
21.	विश्वविद्यालय ट्रांसपोर्ट की बदली					1,00,000
	योग—6255		4,75,000	4,90,000	6,00,000	3,30,000
	स्टाफ के वेतन पर अनुमानित व्यय		रु० 5,00,000/-			
	महायोग—		रु० 23,95,000/-			

(ह० बी०आर० क्वातरा)
उप-सचिव

एनेक्सचर II
पत्र संख्या F. 13-3/81 (D-I)
दि० 1 मई, 1984

यूनिवर्सिटि ग्रांट्स् कमीशन

बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-२

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संदर्भ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा छठी पंचवर्षीय योजना में स्वीकृत योजनाएं—

क्रम	योजना	स्वीकृत अनुदान	वि०अ०आ० संदर्भ
I स्टाफ			
1.	एक पुस्तकालयाध्यक्ष (रु० 900-1600/-		F-13-2/81 (D-I) dt. 10-8-81
2.	एक निदेशक शारी- (रु० 550-1200/-) रिक शिक्षा		F-13-2/81 (D-I) dt. 6-10-81
3.	चार प्रोफेसरो.के अतिरिक्त पद—वेद, संस्कृत दर्शन एवं प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृत-प्रत्येक के लिए 1		F-13-2/81 (D-I) dt. 1-5-82
4.	दो कनिष्ठ पुस्तकालय सहायक		-do-
5.	एक ऑफिसर विशेष सेवाओ हेतु (रु० 850-1150) (अस्थाई पद 31-3-85) तक		13-2/81 (D-I) dt. 7-1-84
	योग— 9 अतिरिक्त पद	4,41,000	
II-किताबें			
1.	किताबों तथा जर्नलों के लिए छठी योजना में बेसिक अनुदान	50,000	F-13-1/81 (D-I) dt. 13-1-82
2.	किताबों तथा जर्नलों की खरीद के लिए अनुदान	2,00,000	F-13-3/81 (D-I) dt. 1-5-82
3.	किताबों तथा जर्नलों के लिए अतिरिक्त अनुदान	2,50,000	F-13-1/81 (D-I) dt. 29-2-84
	योग—	5,00,000	

आय का विवरण

1983–1984

क) दान और अनुदान—

क्रम संख्या	आय का मद		राशि
1.	वि०वि० अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान—		28,77,000·00
2.	अक्षय निधि का ब्याज		10,218·00
		योग—	28,87,218·00

ख) शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय—

1.	पंजीकरण शुल्क	03,903 00
2.	पी–एच०डी० रजिस्ट्रेशन शुल्क	500·00
3.	पी–एच०डी० मासिक शुल्क	65,124·00
4.	परीक्षा शुल्क	27,703·00
5.	अंक-पत्र शुल्क	01,865·00
6.	पड़ताल शुल्क	286·00
7.	विलम्ब दण्ड/टूट-फूट	03,563 00
8.	माईग्रेशन शुल्क	01,646·00
9.	प्रमाण-पत्र शुल्क	02,243·00
10.	नियमावली, पाठविधि तथा फार्मों आदि का शुल्क	751·00
11.	सेवा आवेदन पत्र	702·00
12.	रद्दी व पुराने पर्चे	708·00
13.	शिक्षा शुल्क	18,214·00
14.	प्रवेश व पुनः प्रवेश शुल्क	05,087·00
15.	भवन शुल्क	580·00
16.	क्रीड़ा शुल्क	02,309·00
17.	पुस्तकालय शुल्क	02,090 00
18.	परिचय-पत्र शुल्क	138·00

19.	एसोसियेशन शुल्क	270 00
20.	मनोविज्ञान लैब	694·00
21.	मंहगाई शुल्क	04,351·00
22.	विज्ञान शुल्क	04,514·00
23.	पुस्तकालय से आय	05,009·00
24.	पत्रिका शुल्क	04,291 00
25.	अन्य शुल्क	02,137·00
26.	सदस्यता शुल्क	896·00
27.	साइकिल स्टैण्ड	01,370 00
	योग—	01,00,944·00
	योग क+ख—	29,88,162·00

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)
1983-84

क) वेतन —

क्रम संख्या	व्यय की मद	राशि
1.	शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियो का वेतन	21,75,209·00
2.	भविष्य निधि पर संस्था का अंशदान	77,124·00
		22,52,333·00

ख) अन्य —

1.	विद्युत व जल	65,343·00
2.	टेलीफोन	14,737·00
3.	मार्ग व्यय	62,597·00
4.	लेखन सामग्री व छपाई	25,245·00
5.	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	08,025·00
6.	डाक व तार व्यय	05,875·00
7.	वाहन अनुरक्षण तथा पैट्रोल	39,218·00
8.	विज्ञापन	03,762·00
9.	न्यायिक व्यय	19,069·00
10.	आतिथ्य व्यय	08,922·00
11.	दीक्षान्तोत्सव	26,218·00
12.	लॉन संरक्षण	07,687·00
13.	भवन मरम्मत	56,228·00
14.	उपकरण	18,067·00
15.	फर्नीचर एवं साज-सज्जा	12,655·00
16.	राष्ट्रीय छात्र सेवा	699·00
17.	निर्धनता फण्ड	500·00
18.	छात्रों की छात्रवृत्ति	29,741·00

19.	खेलकूद एवं क्रीड़ा	12,902·00
20.	गोष्ठी एवं संभाषण	18,512·00
21.	सरस्वती यात्रा	07,004·00
22.	वाग् वर्धिनी सभा	735·00
23.	उत्सव एवं साँस्कृतिक कार्यक्रम	01,762·00
24.	मनोविज्ञान प्रयोगशाला	02,303·00
25.	रसायन प्रयोगशाला	17,056·00
26	भौतिकी प्रयोगशाला	11,690.00
27.	वनस्पति विज्ञानशाला	06,457·00
28.	जन्तु विज्ञानशाला	04,365·00
29.	गैस प्लाट	04,929·00
30.	जनरल साइस आर्य भट्ट	03,761·00
31.	वनस्पति वाटिका ग्रीन हाऊस	959·00
32.	साइकिल स्टेण्ड	489·00
33.	समाचार पत्र व पत्रिकाएँ	04,949·00
34.	पुस्तकें	01,775·00
35.	जिल्दबंदी व पुस्तक सुरक्षा	10,780·00
36.	कैटेलॉग कार्ड व इण्डेक्सिंग	956 00
37.	वैदिक पथ, प्रह्लाद, आर्य भट्ट, गुरुकुल पत्रिका छपाई	36,291·00
38.	मिश्रित व्यय	07,694·00
39.	आकस्मिक व्यय	01,332·00
40.	सदस्यता शुल्क व अंशदान	15,150·00
41.	पुस्तकालय कागडी ग्राम योजना	430·00
‹2.	'पढते समय कमाओ'	726·00
		05,77,596·00

ग) परीक्षा व्यय

1.	परीक्षकों का पारिश्रमिक	16,078·00
2	मार्ग-व्यय परीक्षक	03,880·00
3.	निरीक्षण-व्यय	01,476·00
4.	प्रश्न-पत्रों की छपाई	21,837·00
5.	उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्य	07,481·00
6.	डाक-तार व्यय	05,660 00

7	लेखन सामग्री	01,267 00
8.	नियमावली, पाठविधि व फार्मों की छपाई	20,354·00
9.	अन्य व्यय	897·00
		78,930 00
	योग ख+ग =	06,56,526·00
	सर्वयोग क+ख+ग =	29,08,859·00

वेद तथा कला महाविद्यालय

स्टॉफ वेद महाविद्यालय

प्रोफेसर-संस्कृत	—	१
रीडर-वेद	—	१
प्रवक्ता	—	६
लिपिक	—	१
चतुर्थ श्रेणी	—	३

कला महाविद्यालय

प्रोफेसर	—	१
रीडर	—	५
प्रवक्ता	—	१५
लिपिक	—	१
प्रयोगशाला सहायक	—	१
चतुर्थ श्रेणी	—	७

छात्र संख्या—अलंकार एवं विनोद

कक्षा	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	योग
विद्याविनोद	५	२	७
वेदालंकार	८	२	१०
विद्यालंकार	—	५	५
			योग २२

इस सत्र की पढाई १-८-८३ से आरम्भ की गई तथा ३१-३-८४ को समाप्त की गई। दि० २६-४-८४ से वार्षिक परीक्षा आरम्भ हुई तथा १५-५-८४ को समाप्त हुई। ग्रीष्मावकाश १७-५-८४ से १६-७-८४ तक रहा।

व्याख्यान—

(१) दिनांक १०-८-८३ को डॉ० उपेन्द्र ठाकुर, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष प्राचीन भारतीय इतिहास, मगध विश्वविद्यालय का 'दक्षिणी-पूर्वी एशिया में रामायण' विषय पर स्टाफ रूम में व्याख्यान हुआ।

(२) दिनांक १२-९-८३ को स्टाफ रूम में 'संस्कृत दिवस' मनाया गया।

(३) दिनांक १८-११-८३ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विजिटर डॉ० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार का विज्ञान महाविद्यालय मे व्याख्यान हुआ।

(४) दिनांक २-१२-८२ को दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ० सत्यकाम वर्मा का वेद विभाग की ओर से व्याख्यान हुआ।

(५) ९-१२-८३ को 'आचार्य रामदेव दिवस' के उपलक्ष्य में स्टाफ रूम में एक सभा हुई। इसके सयोजक संस्कृत विभाग के श्री वेदप्रकाश शास्त्री थे।

(६) दिनांक २३-१२-८३ को 'श्रद्धानन्द बलिदान दिवस' के उपलक्ष्य में श्रद्धानन्द द्वार से एक शोभा-यात्रा निकाली गयी तथा इसके पश्चात् वेद मन्दिर में एक सभा हुई जिसमें विभिन्न वक्ताओं द्वारा श्रद्धाँजलि अर्पित की गई।

(७) दिनांक ६-२-८४ को विजिटिंग फैलो डॉ० विश्वनाथ मिश्र का 'साहित्य की अपेक्षा' विषय पर व्याख्यान हुआ।

(८) दिनांक २२-२-८४ को दर्शन विभाग के तत्वावधान में विजिटिंग फैलो डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष दर्शन विभाग, रांची विश्वविद्यालय का 'आधुनिक भारतीय दर्शन की मुख्य विशेषताएँ' विषय पर व्याख्यान हुआ।

(९) दिनांक १५-३-८४ को डॉ० एच०सी० गांगुली, विजिटिंग फैलो का 'चेतना के परिवर्धित स्तर' विषय पर व्याख्यान हुआ। इसकी अध्यक्षता विश्व-विद्यालय के विजिटर डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने की।

(१०) दिनांक १९-३-८४ को विजिटिंग फैलो डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव का 'पूर्ण योग' (श्री अरविन्द के संदर्भ में) विषय पर व्याख्यान हुआ।

(११) दिनांक २२-३-८४ को डॉ० एच०सी० गांगुली, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष मनो-विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय का 'मानसिक स्वास्थ्य' विषय पर एक व्याख्यान हुआ।

(१२) दिनांक १-१२-८३ को विश्वविद्यालय के विजिटर डॉ० सत्यकाम विद्यालंकार का वेद विषय पर व्याख्यान हुआ।

वाद-विवाद प्रतियोगिता—अन्य वर्षों की भांति इस वर्ष भी उज्जैन विश्व-विद्यालय में दि० २०-११-८३ को सम्पन्न 'कालिदास संस्कृत वाद-विवाद प्रतियो-गिता' मे इस विश्वविद्यालय के दो छात्रो श्री दूधपुरी गोस्वामी वेदालंकार प्रथम वर्ष तथा श्री सत्यदेव आर्य एम०ए० द्वितीय वर्ष (संस्कृत) ने भाग लिया। इसमें श्री दूधपुरी गोस्वामी ने प्रथम स्थान प्राप्त कर शील्ड प्राप्त की तथा स्वर्ण पदक प्राप्त किया तथा श्री सत्यदेव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया जिससे उन्हें कांस्य पदक प्राप्त हुआ।

खेल आदि—इस वर्ष भी क्रिकेट तथा हाकी की टीमे बाहर खेलने गयी। गत वर्ष की भाति इस वर्ष भी 'सरस्वती परिषद्' का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विश्वविद्यालयो के छात्र-छात्राओ ने भाग लिया। इसका आयोजन वेद मन्दिर में किया गया।

सरस्वती-यात्रा—इस वर्ष छात्र सरस्वती यात्रा पर अजमेर गये तथा वहां पर महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी में भी भाग लिया।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उप-कुलपति

गरुकल कांगडी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति की पुस्तक "वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त"

यू०जी०सी० विजिटिंग कमेटी के सदस्यों–श्री रमारंजन मुखर्जी, भू०पू० कुलपति, बर्दवान विश्वविद्यालय; प्रो० आर०सी० गौड, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, प्रो० एम० एल० रैना, पंजाब विश्वविद्यालय तथा श्री बी० आर० क्वाटरा, उप-सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा पुस्तकालय का अवलोकन कराते हुए। साथ में है डॉ० जबरसिंह सेंगर, कुल-सचिव (कार्यकाल १६-८-८२ से ३१-५-८४ तक)

वेद विभाग

विभाग का सामान्य परिचय—

वेद विभाग वैसे तो गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की १६०२ में स्थापना से ही विद्यमान है। पर इस रूप में इसकी स्थापना तभी हुई जब कि १६६२ मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय के समकक्ष मान्यता प्रदान की। इससे पूर्व इस विभाग में पं० दामोदर सातवलेकर, आचार्य अभयदेव, पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, प० बुद्धदेव जी विद्यालकार एवं आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति और पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति आदि कार्य कर चुके है।

छात्र संख्या—

एम०ए० प्रथम वर्ष—	५
एम०ए० द्वितीय वर्ष—	३
अलंकार प्रथम वष—	१४
अलंकार द्वितीय वर्ष—	८
विद्याविनोद प्रथम वर्ष—	५
विद्याविनोद द्वितीय वर्ष—	२
कुल	३७

विभागीय उपाध्याय—

(१) आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार—सिद्धान्त-भूषण, सिद्धान्त-शिरोमणि, एम०ए०, रीडर-अध्यक्ष तथा आचार्य एवं उप-कुलपति।
(संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट द्वारा 'आचार्य गोवर्धन शास्त्री' पुरस्कार द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत)

(२) डॉ० भारतभूषण विद्यालंकार—वेदाचार्य, एम०ए०, पी-एच०डी०, प्रवक्ता।

(३) डॉ० सत्यव्रत राजेश—विद्यावाचस्पति, शास्त्री, प्रभाकर, सिद्धान्त-भूषण, सिद्धान्त-शिरोमणि, वेद-शिरोमणि, एम०ए०, पी–एच०डी०, प्रवक्ता ।

(४) श्री मनुदेव 'बन्धु'—एम०ए० (वेद, संस्कृत, हिन्दी), व्याकरणाचार्य, साहित्यरत्न, सिद्धान्त-शिरोमणि, प्रवक्ता ।

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य—

(१) **आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार**—गुरुकुल पत्रिका के सम्पादक । वैदिक विषयो पर ३० पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है । नवम्बर ८३ में 'दयानन्द निर्वाण शताब्दी समिति' अजमेर द्वारा वैदिक साहित्य सम्बन्धी सेवाओ के लिए पुरस्कृत तथा सम्मानित किये गये । उज्जैन में 'वेदार्थ प्रक्रिया' विषय पर विद्वत् गोष्ठी में उद्घाटन भाषण दिया । विभिन्न पत्रिकाओ मे लेख आदि प्रकाशित हुए ।

(२) **डॉ० भारतभूषण विद्यालंकार**—श्री पी० एन० ओक द्वारा संस्थापित "विश्व इतिहास परिषद्" ठाणे, बम्बई में आयोजित विद्वत् गोष्ठी मे 'विदेशेषु संस्कृतम्' विषय को आधार बनाकर वैदिक साहित्य मे सकेतित भारत के सभी पश्चिमीय एवं अरब राष्ट्रो के भौगोलिक स्थिति पर वैदिक प्रभाव पर निबन्धवाचन किया । महाराज सयाजी राव गायकवाड विश्वविद्यालय, बडौदा में 'सस्कृत–दिवस' के आयोजन मे भाग लिया । पुणे, नासिक, बम्बई आदि विभिन्न स्थानो के विश्वविद्यालयो एवं संस्कृतज्ञ विद्वानो से वैदिक साहित्य के विषय मे विचार–विमर्श किये । पंजाब, हरियाणा, उत्तर–प्रदेश, बिहार, बंगाल आदि प्रान्तो में विभिन्न स्थानो पर वेद–प्रचार किया । विभिन्न उच्चस्तरीय पत्रिकाओ मे अनेक लेख प्रकाशित हुए । एमेनेस्टी इन्टरनेशनल के सदस्य नियुक्त हुए ।

(३) **डॉ० सत्यव्रत राजेश**— मेरठ कालेज मेरठ के द्वारा आयोजित 'वैदिक विद्वत् गोष्ठी' मे महर्षि दयानन्द के राजधर्म विषय पर भाषण दिया । इसके साथ ही गुजरात, हरियाणा, उत्तर–प्रदेश, पजाब आदि प्रान्तों के विभिन्न स्थानों पर वेद-प्रचार का कार्य किया । विभिन्न पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित हुए ।

(४) **श्री 'मनुदेव बन्धु'**—गुरुकुल पत्रिका का सह-सम्पादन । आकाशवाणी नजीबाबाद से २६-१-८४ को 'पशु-पक्षियो पर दया की भावना' विषय पर

वार्ता प्रसारित हुई। विभिन्न उच्चस्तरीय पत्रिकाओं में निबन्ध तथा लेख प्रकाशित हुए—(१) 'वेद भाष्यकार दयानन्द : एक अध्ययन'–विश्वज्योति जुलाई ८३।

२) 'वेदभाष्य में दयानन्द की सूक्ष्म दृष्टि' –परोपकारी मई ८४।

३) 'स्वार्थ परार्थ'—गुरुकुल पत्रिका जुलाई ८३। आगरा, दिल्ली, मेरठ, सहारनपुर, रुड़की तथा हरिद्वार के विभिन्न स्थानो पर वैदिक विषयों पर भाषण दिये।

अनुसन्धान कार्य—

१–आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार जी के निर्देशन में निम्नलिखित ४ छात्र शोधकार्य कर रहे है —

(१) श्री सत्यप्रकाश रामबहल—"महर्षि दयानन्द की बृहत्रयी आलोचनात्मक अध्ययन"।

(२) श्री जगदीश प्रसाद विद्यालंकार—"अथर्ववेदीय मनोविज्ञान"।

(३) श्री मनुदेव बन्धु—"बृहदारण्यकोपनिषद् : एक अध्ययन"।

(४) श्री सुरेन्द्र कुमार—"ऋग्वेद में प्रतिपादित विभिन्न विद्याओं का संकलन एवं विवेचनात्मक अध्ययन" (संस्कृत विभाग का शोधार्थी)

२–डा० भारतभूषण विद्यालंकार के निर्देशन मे निम्न छात्र शोधकार्य कर रहे है —

(१) श्री रामनारायण रावत—"वैदिक एवं औपनिषदिक दर्शन का एक तुलनात्मक अध्ययन"।

(२) श्री अनुराग चतुर्वेदी—"छान्दोग्य उपनिषद् के प्रमुख भाष्यकारो का तुलनात्मक अध्ययन"।

(३) श्री भगतसिंह—"महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य मे नारद, बृहस्पति तथा कात्यायन स्मृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन"।

(४) श्री रामदत्त—"महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ" एक विवेचनात्मक अध्ययन।

३–डॉ० सत्यव्रत राजेश के निर्देशन में निम्न तीन शोधार्थी कार्यरत है —

(१) श्री रविदत्त—"गृहसूत्रों के परिप्रेक्ष्य में संस्कार विधि का अध्ययन"।

(२) कु० सुमेधा आर्या—"महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य में अग्नि देवता का अध्ययन"।

(३) कु० कामजित—"महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य में इन्द्र-देवता का अध्ययन"।

इसके अतिरिक्त एम०ए० द्वितीय वर्ष के निम्न दो छात्रों ने वैकल्पिक प्रश्न-पत्र के रूप में निम्न विषयो पर डॉ० भारतभूषण जी के निर्देशन में अपना लघुशोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया।

१–श्री सूर्यप्रकाश पाठक—"वरुण देवता"।

२–श्री रामेश्वरदयाल गुप्त—"वैदिक साहित्य मे विज्ञान"।

विभागीय कार्यक्रम—

इस वर्ष प० सत्यकाम विद्यालंकार, भूतपूर्व सम्पादक-नवनीत तथा डॉ० सत्यकाम वर्मा, रीडर, सस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली के विभाग मे महत्वपूर्ण व्याख्यान हुए।

मास मार्च ८४ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से विश्व-विद्यालय में एक विजिटिंग टीम आयी थी। विजिटिंग टीम के मान्य सदस्यो से विभागीय स्थिति और आगामी योजनाओ पर विचार-विमर्श हुआ। इनमे से "वैदिक वाटिका," जो विभिन्न सन्दिग्ध वनस्पतियों और अपने चिकित्सकीय गुणों के लिए अत्यन्त उपादेय होगी तथा आगे चलकर अनुसंधान का आधार बनेगी, पर विचार-विमर्श हुआ। वे इस योजना से सहमत हुए।

विभागीय निर्देशन के अन्तर्गत "वैदिक विश्वकोष" (इनसाइक्लोपीडिया वैदिका) की विस्तृत पृष्ठभूमि एव उसकी आवश्यकता से भी विजिटिंग टीम पूर्णत. सहमत थी। परन्तु दीर्घकालीन योजना होने के कारण यह योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के समक्ष प्रस्तुत करने का निर्णय हुआ।

विभागीय प्रगति का कार्यक्रम और कर्म-काण्ड आदि को दृष्टिगत करते हुए एक सक्षम प्रयोगशाला के निर्माण की भी चर्चा हुई, जिसमें छात्रो को श्रौत कर्मकाण्ड तथा स्वर आदि के सूक्ष्म भेद-प्रभेदो से परिचित कराया जा सके।

यज्ञ और वृष्टि सम्बन्धी सूक्ष्म विवेचनाओं और प्रयोगों के लिए एक विस्तृत कार्यक्रम की रूपरेखा पर भी विचार हुआ, परन्तु अत्यन्त व्ययसाध्य होने के कारण इस पर तत्काल कोई निर्णय नही किया जा सका।

विश्व के वैदिक प्राचीन भारतीय विद्याओं की ओर बढते हुए सम्मान को दृष्टिगत रखकर "इन्टरनेशनल वैदिक सेन्टर" की स्थापना का विचार प्रस्तुत हुआ। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं० सत्यकाम विद्यालकार, आचार्य गुरुकुल कांगड़ी का इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण योगदान है। आशा है शीघ्र ही यह केन्द्र अपना कार्यक्रम प्रारम्भ कर देगा।

कुछ विभागीय अन्य आवश्यक बातें—

१–विभाग में इस वर्ष दो छात्र विदेशी है।

(१) श्री सत्यप्रकाश रामबहल—गयाना (शोधछात्र)

(२) श्री आनन्द कुमार बिरना—सूरीनाम (एम०ए० प्रथम वर्ष)

२–इस वर्ष वेद-विभाग के छात्र अजमेर में सम्पन्न महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह में भाग लेने गये।

३–श्री सूर्यप्रकाश पाठक, एम०ए० द्वितीय वर्ष ने एन०सी०सी० मे सफलतापूर्वक कार्य किया है।

वेद विभाग के छात्रो ने सामाजिक कार्यों में बहुत सहयोग दिया।

—रामप्रसाद वेदालंकार
रीडर-अध्यक्ष तथा
आचार्य एवं उप-कुलपति

संस्कृत विभाग

१-विभागीय अध्यापक—

(१) डॉ० मानसिंह, एम०ए०, पी-एच०डी०, वेदाचार्य, डिप० इन जर्मन (प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष)

(२) डॉ० निगम शर्मा, एम०ए०, पी-एच०डी०, साहित्याचार्य (प्रवक्ता)

(३) श्री वेदप्रकाश शास्त्री, एम०ए०, साहित्याचार्य (प्रवक्ता)

(४) डॉ० रामप्रकाश शर्मा, एम०ए०, पी-एच०डी०, डी० लिट्०, व्याकरणाचार्य (प्रवक्ता)

(५) डॉ० राकेशचन्द्र शास्त्री, एम०ए०, पी-एच०डी०, साहित्याचार्य (अस्थायी प्रवक्ता)

(६) एक रीडर-पद की रिक्ति विज्ञापित।

२-छात्र संख्या—

कक्षा	प्रथम खण्ड	द्वितीय खण्ड	योग
(१) विद्याविनोद	५	२	७
(२) अलङ्कार	१०	७	१७
(३) एम०ए०	१०	७	१७
(४) पी-एच०डी०	—	—	१३
		कुल योग—	५४

३-विभागीय गतिविधियाँ—

(१) १२ सितम्बर, १९८३ को संस्कृत-दिवस-समारोह का आयोजन किया गया। इसमें विद्वानों के ओजस्वी भाषण हुए। इस अवसर पर छात्रों की भाषण तथा श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

(२) १४ सितम्बर, १९८३ को पाठ्यक्रम-निर्धारण-समिति की बैठक हुई।

(३) २० नवम्बर, १९८३ को विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में कालिदास-अकादमी के द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता में श्री वेदप्रकाश शास्त्री जी के द्वारा प्रशिक्षित छात्र श्री दूधपुरी गोस्वामी (अलङ्कार, प्रथम खण्ड) ने प्रथम तथा श्री सत्यदेव (एम०ए०, द्वितीय खण्ड) ने तृतीय स्थान प्राप्त कर विश्वविद्यालय की गौरव-वृद्धि की।

(४) मार्च, १९८४ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अनुदानार्थ समिति का स्वागत तथा विभाग के लिए अनुदान हेतु प्रस्ताव।

४–अध्यापकीय विवरण—

१–डॉ० मानसिंह—

आपने २३ फरवरी, १९८४ से विभाग में प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से १९६६ ई० मे पी–एच०डी० उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् आपने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ, मेरठ विश्वविद्यालय तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला मे कार्य किया। आप सितम्बर, १९७७ से हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में रीडर–पद पर कार्य कर रहे थे।

१–शोध–निर्देशन—

आपके निर्देशन में ५ व्यक्ति पी–एच०डी० तथा २० व्यक्ति एम० फिल० की उपाधियाँ प्राप्त कर चुके है; २ एम० फिल० छात्रो की मौखिकी परीक्षा प्रतीक्षित है। इसके अतिरिक्त, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला मे ८ पी–एच०डी० तथा २ एम० फिल० छात्र शोधकार्यरत है। एक पी–एच०डी० छात्र का शोधप्रबन्ध तैयार है।

२–प्रकाशनादि—

(१) 'सुबन्धु एण्ड दण्डिन्' (Subandhu and Dandin) नामक शोध-ग्रन्थ १९७९ मे मेहरचन्द लच्छमनदास, दिल्ली से प्रकाशित। प्राची ज्योति, कुरुक्षेत्र और श्री गङ्गानाथ झा केन्द्रीय सस्कृत-विद्यापीठ, प्रयाग की शोधपत्रिका मे इस बहुचर्चित ग्रन्थ की अतीव प्रशंसात्मक समीक्षाएँ प्रकाशित है।

(२) कुछ पुस्तकों में शोधलेख प्रकाशित।

(३) प्राच्य प्रज्ञा, अलीगढ; संस्कृत स्टडीज़्, दिल्ली; इण्डोलॉजिकल जर्नल, होशिआरपुर; श्री गङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत-विद्यापीठ, प्रयाग की शोध-पत्रिका; एनल्ज् ऑफ् ओरियण्टल रिसर्च, मद्रास; केरल विश्व-विद्यालय, त्रिवेन्द्रम की शोध-पत्रिका, भारतीय विद्या, बम्बई, सम्बोधि, अहमदाबाद; ब्रह्मविद्या, अड्यार, मद्रास, भाण्डारकर प्राच्यविद्या-संशोधन-संस्थान, पुणे की शोध-पत्रिका; विश्वभारती-पत्रिका, शान्तिनिके-तन; परिषत्पत्रिका, पटना; श्री व्यंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति की शोध-पत्रिका आदि और कल्याण, गोरखपुर, विश्वज्योति, होशिआरपुर आदि पत्रिकाओ में ५० से भी अधिक शोधलेख, लेख तथा पुस्तक-समीक्षाएँ प्रकाशित।

(४) 'हिन्दू धर्म' नामक पुस्तक भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशनाधीन।

(५) 'द उपनिषदिक इटीमोलोज़ीज़्' (The Upanisadic Etimologies) नामक पुस्तक के प्रणयन में संलग्न।

३-वार्ताएँ--

आकाशवाणी, शिमला से वैदिक तथा लौकिक संस्कृत-साहित्य से सम्बद्ध लगभग २४ वार्ताएँ प्रसारित।

४-अन्य—

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में कार्यभार ग्रहण करने पर यहाँ के उत्सव, अन्यान्य कार्यक्रमों तथा परीक्षा-कार्य आदि मे सक्रिय सहयोग।

२-डॉ० निगम शर्मा—

(१) १२ सितम्बर, १९८३ को संस्कृत-दिवस-समारोह का निर्देशन और इस अवसर पर भाषण।

(२) विभिन्न आर्य-समाज-मन्दिरो में भाषण।

३-श्री वेदप्रकाश शास्त्री—

(१) १२ सितम्बर, १९८३ को संस्कृत-दिवस के समारोह का संयोजन।

(२) २० नवम्बर, १९८३ को विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में कालिदास-अकादमी द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत-वादविवाद-प्रतियोगिता के लिए छात्रों का प्रशिक्षण।

(३) १२ अगस्त, १९८३ को गुरुकुल एटा को मान्यता प्रदान करने हेतु निरीक्षण।

(४) 'महर्षि दयानन्द की साधना और सिद्धान्त' (निर्वाण-शताब्दी के अवसर पर गुरुकुल-पत्रिका का विशेषाङ्क, नवम्बर, १९८३) में "वैदिक जल-विद्या" नामक लेख प्रकाशित (पृ० १२४-२८)।

(५) गुरुकुल-पत्रिका, जनवरी, १९८४ मे "उपनिधि" नामक लेख प्रकाशित।

(६) १ दिसम्बर, १९८३ को मेरठ कॉलेज, मेरठ के संस्कृत-विभाग में "काव्य-कारण" विषय पर व्याख्यान।

(७) वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर और ज्वालापुर, हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून, कांठ आदि स्थानो के आर्य-समाज-मन्दिरो में विभिन्न वैदिक विषयों पर लगभग ४० भाषण।

४-डॉ० रामप्रकाश शर्मा—

(१) आगरा विश्वविद्यालय, आगरा मे १३ अप्रैल, १९८४ को "पातञ्जल महाभाष्य के ज्ञापको का समालोचनात्मक अध्ययन" विषय पर डी०लिट्० उपाधि से सम्मानित।

५-डॉ० राकेशचन्द्र शास्त्री—

(१) **प्रकाशन—**

(१) "उपमा कालिदासस्य," गुरुकुल-पत्रिका, जून, १९८३।
(२) "ऋग्वेद में अद्धा निपात", वही, जुलाई, १९८३।
(३) "रुद्र-व्युत्पत्ति-विवेचन", वही, अगस्त, १९८३।
(४) "ऋग्वेद में खलु निपात" वही, सितम्बर, १९८३।
(५) "कुलपति जी की बर्मिंघम-यात्रा का सक्षिप्त विवरण", वही, सितम्बर, १९८३।
(६) "स्वामी दयानन्द और नारी-शिक्षा", महर्षि दयानन्द की साधना और सिद्धान्त, नवम्बर, १९८३।
(७) "निपात", गुरुकुल-पत्रिका, जनवरी-फरवरी, १९८४।

(८) डॉ० गङ्गाराम गर्ग जी की पुस्तक "वर्ल्ड पर्स्पेक्टिवज् ऑन् स्वामी दयानन्द" की समीक्षा, वही, जनवरी-फरवरी, १९८४।

(२) अन्य—

(१) २२ अप्रैल से ११ मई, १९८३ तक कन्या-गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून मे सहायक परीक्षाध्यक्षत्व।

(२) जुलाई, १९८३ से गुरुकुल-पत्रिका का प्रबन्ध-सम्पादकत्व।

(३) नवम्बर,१९८३में अजमेर में आयोजित ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी-समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय के छात्रों की सरस्वती-यात्रा का नेतृत्व।

(४) "महर्षि दयानन्द की साधना और सिद्धान्त" (नवम्बर, १९८३) का प्रूफ-संशोधन।

(५) गढवाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढवाल) से "वैदिक साहित्य में क्षिप्रार्थक निपात" विषय पर डी०लिट्० हेतु शोधकार्य मे संलग्न।

(६) वैदिक स्वरविषयक पुस्तक-रचना में संलग्न।

—मानसिंह
प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष

दर्शन शास्त्र विभाग

छात्र संख्या—

विद्याविनोद—	9
अलंकार—	15
एम०ए०—	11
पी-एच०डी०—	5
योग—	40

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय प्राच्य विद्याओं का मुख्य भारतीय प्रतिष्ठान माना जाता है। इसमे दर्शन शास्त्र विभाग का मुख्य उत्तरदायित्व है कि भारतीय दर्शन शास्त्र के मूल ग्रन्थों का अध्ययन एवं अध्यापन उच्च एवं गम्भीर रूप में कराये। यहाँ से उपाधिप्राप्त स्नातक भारतीय दर्शन के गम्भीर सूत्रों का तत्त्वज्ञान् प्राप्त किये हों और साथ ही पाश्चात्य दर्शन में भी गहरी योग्यता रखते हों।

दर्शन शास्त्र विभाग अपने इस उक्त उत्तरदायित्व को पूर्णरूपेण निभा रहा है। इस विभाग से निकलने वाले स्नातक देश-देशान्तर दर्शन शास्त्र में अध्यापन, प्रचार आदि कार्यों में लगे हुये है।

(१) **स्थापना**—१९१० ई० में अलंकार दर्शन वाचस्पति तक अध्ययन प्रारम्भ हुआ। १९६७ ई० से विश्वविद्यालयीय स्तर का अध्यापन प्रारम्भ हुआ। स्थापना-अध्यक्ष —स्व० प्रो० सुखदेव दर्शन वाचस्पति

(२) **वर्तमान स्टाफ**—

१– डॉ० जयदेव वेदालंकार—	रीडर एवं अध्यक्ष
२– डॉ० विजयपाल शास्त्री—	प्राध्यापक
३– डॉ० त्रिलोक चन्द्र—	प्राध्यापक
४– श्री नामदेव दुधाटे—	प्राध्यापक (एडहॉक) (१५ मई १९८४ तक)

(३) **शोध (पी-एच०डी०) कार्य प्रारम्भ**—जौलाई १९८३ से दर्शन विभाग में पी-एच०डी० का कार्य प्रारम्भ हुआ है। डॉ० जयदेव वेदालंकार के निर्देशन में निम्नलिखित छात्र शोधकार्य में रत है।

(१) श्री दयानन्द शर्मा—प्रवक्ता राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी।
विषय—आयुर्वेदीय ग्रन्थों मे साख्य दर्शन के मूल तत्व।

(२) श्री नामदेव दुधाटे—हरिद्वार
विषय- आचार्य शंकर, रामानुज और महर्षि दयानन्द के दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

(३) श्री रघुवीरसिह आर्य – पलवल हरियाणा
विषय- श्री अरविन्द और महर्षि दयानन्द के दर्शन का तुलनात्मक परिशीलन

(४) श्रीमती उषा खण्डेलवाल- शान्तिकुञ्ज हरिद्वार
विषय- न्याय और बौद्ध दर्शन की प्रमाणमीमांसा का तुलनात्मक अध्ययन

(५) श्री चक्रधर जोशी-प्रधानाचार्य-संस्कृत महाविद्यालय, कनखल
विषय- महात्मा गाँधी और महर्षि दयानन्द : एक दार्शनिक परिशीलन।

(४) आई० ए० एस० और पी० सी० एस० के अध्ययन की व्यवस्था-

सर्वसाधारण को यह जानकर अति हर्ष होगा कि आई० ए० एस० एवं पी० सी० एस० में बैठने वाले छात्रों के लिये अध्यापन की व्यवस्था है। विभाग के समस्त प्राध्यापकगण अपने २ विषय के विद्वान है। उक्त परीक्षाओ में दर्शन-संस्कृत आदि विषय लेने वाले परीक्षार्थी निशुल्क चाहे जब आकर अध्ययन एवं मार्ग-दर्शन प्राप्त कर सकते है। इस वर्ष बी० एच० ई० एल० एवं हरिद्वार के छात्र उक्त विषयक अध्ययन एवं परामर्श लेते रहे है।

(५) प्राध्यापकगण-

(१) डॉ० जयदेव वेदालंकार- पद- रीडर
योग्यताएँ- एम० ए० (दर्शन + मनोविज्ञान), दर्शनाचार्य, पी-एच० डी०। डी० लिट्० के लिये रांची विश्वविद्यालय से पंजीकृत
विषय- वैदिक दर्शन : एक अध्ययन (महर्षि दयानन्द के सन्दर्भ विशेष में)

(ii) रचनाऐं–१ "महर्षि दयानन्द की विश्वदर्शन को देन"
प्रकाशक– विश्वविद्यालय पृष्ठ १५०—३०×४० साईज ।

(२) उपनिषदों का तत्त्वज्ञान- पृष्ठ- २५० । साईज १८×२२ ।
प्रकाशक– प्राच्यविद्याशोध संस्थान, १९८०

(३) "वैदिक शिक्षा राष्ट्रिय कार्यशाला स्मारिका" का सम्पादन- १९८२

(४) "महर्षि दयानन्द की साधना एवं सिद्धान्त" प्रस्तुतकर्त्ता ।

(iii) शोध लेख—१९८३-१९८४

(१) तत्त्वमीमासा— महर्षि दयानन्द की साधना एवं सिद्धान्त में प्रकाशित—
पृष्ठ-६५

(२) ब्रह्ममीमांसा– ,, ,, पृष्ठ-३०

(३) "वैदिक ओरिजिन ऑव स्वामी दयानन्दज़ फिलौसफी" पृष्ठ—३२ लघु पुस्तिका के रूप में

(४) वैदिक वाङ्मय में गौ हत्या या गौ रक्षा ? पृष्ठ २४ (लघु पुस्तिका के रूप में)

(iv) व्याख्यान —

आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में ८ व्याख्यान

१. योग दर्शन और साधना
२. समाधि के अंग
३. अष्टांग योग
४. तन्मात्राओं का योग में उपयोग
५. भारतीय दर्शन और कर्मवाद
६. भारतीय दर्शन और आत्म तत्त्व
७. योग का अर्वाचीन एवं प्राचीन रूप
८. उपनिषदों की आध्यात्मविद्या ।

(i) मेरठ विश्वविद्यालय के मेरठ कालेज मे "महर्षि दयानन्द का त्रैतवाद" विषय पर दो शोधपत्र वाचन (मार्च १९८४)

(vi) **इण्डियन फिलोसोफिकल कांग्रेस—** (जनवरी १९८४)

इस वर्ष उक्त कांग्रेस के साधारण अधिवेशन में वाल्टेयर आन्ध्रप्रदेश में विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप में सक्रिय भाग लिया और 'स्वामी दयानन्द का सामाजिक दर्शन' विषय पर शोधपत्र वाचन किया ।

(vii) **महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर—**

इस शताब्दी में सक्रिय भाग लिया। त्रैतवाद गोष्ठी में समापन भाषण दिया। शताब्दी के खुले सम्मेलन सौमनस्य में भाषण दिया।

(viii) आई० सी० पी० आर० नई दिल्ली से दस हजार रुपये का अनुदान प्राप्त

—दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में होने वाले सेमीनार हेतु इण्डियन कौंसिल फिलोसोफिकल रिसर्च से दस हजार रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ है।

(२) **डॉ० विजयपाल शास्त्री** — प्राध्यापक।

(i) योग्यताएँ— शास्त्री, दर्शन शास्त्र एवं संस्कृत साहित्य से आचार्य, साहित्य रत्न, एम० ए० (दर्शन शास्त्र, हिन्दी, संस्कृत साहित्य) पी-एच० डी०-विषय-उदयनाचार्य और विज्ञानभिक्षु।

(ii) लेख—

१. सुख और दुःख–अंक २, १९८३ प्रह्लाद पत्रिका में प्रकाशित
२. मित्रता बड़ा अनमोल रत्न ,, ,,
३. संविधान का अनुच्छेद २५
४. वैदिक संस्कृति के मूल सिद्धान्त। म० द० की साधना एवं सिद्धान्त में प्रकाशित।

(iii) **शोधपत्र वाचन—**

"प्रलय में ईश्वरोपाधि का लय" स्वामी केशवानन्द योग संस्थान, रूपनगर दिल्ली, सितम्बर १९८३ में सक्रिय भाग लिया। उक्त विषय पर निबन्ध पढ़ा।

(३) **डॉ० त्रिलोकचन्द्र**– प्राध्यापक नियुक्ति।

(i) योग्यताएँ– एम० ए०, पी-एच० डी०।

(ii) **विश्वविद्यालय में अतिरिक्त कार्य—**

१. योग डिप्लोमा कोर्स का संचालन
२. प्रौढ़ शिक्षा प्रसार– कोर्डिनेटर

(iii) आकाशवाणी वार्ता– विषय– 'दर्शन'

(iv) सेमीनार (क) विश्व योग सम्मेलन पूना में सक्रिय भाग एवं शोधपत्रवाचन किया।

(ख) अजमेर शताब्दी—

इस शताब्दी में छात्रों के साथ सक्रिय भाग लिया।

(ग) लखनऊ में अवध वि० वि० की ओर से आयोजित सेमीनार शिक्षा में सक्रिय भाग लिया।

(v) **लेख—(१)** घर को आग लगी घर के चिराग से

"गुरुकुल पत्रिका"

(१) गौ हत्या और वैज्ञानिक–

"प्रह्लाद पत्रिका"

(३) "संगीत द्वारा ध्यान विधि"—"टाइम्स ऑफ इण्डिया"

—जयदेव वेदालंकार
रीडर एवं अध्यक्ष

———

मनोविज्ञान विभाग

स्टाफ— १. प्रो० ओमप्रकाश मिश्र, रीडर एवं अध्यक्ष

२. डॉ० हरगोपाल सिह, लेक्चरर

३ प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी, लेक्चरर

४. प्रो० सतीशचन्द्र धमीजा, लेक्चरर

५. श्री लाल नरसिंह ,प्रयोगशाला सहायक

६. श्री कुँवरसिंह नेगी; प्रयोगशाला भृत्य

सत्र१९८३-८४मनोविज्ञान विभाग के लिये नई उपलब्धियो का वर्ष रहा। इस वर्ष विभाग में एम०ए० प्रथम वर्ष में १३ विद्यार्थियो ने पंजीकरण कराया। एम०ए० द्वितीय वर्ष में यह संख्या ६ थी। एक विद्यार्थी ने "मीनो पौज" एण्ड साइकलैजीकल कोरिलेटस विषय पर प्रो० ओमप्रकाश मिश्र के निर्देशन में प्रशंसनीय कार्य किया। विज्ञान के विद्यार्थियों का क्रीडा के क्षेत्र मे यथेष्ट योगदान रहा। उन्होने विश्वविद्यालय की विभिन्न टीमों के सदस्य के रूप में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। विद्यार्थियो ने इस वष विभागीय पुस्तकालय का प्रारम्भ किया। उन्होंने अपने पास से एक-एक पुस्तक देकर विभागीय पुस्तकालय की नीव डाली , आशा है कि इस वर्ष विद्यार्थियों द्वारा प्रारम्भ किया गया पुस्तकालय अगले वर्षो में अच्छा पुस्तकालय बन जायेगा।

विभाग में इस वर्ष डॉ० एन० एस० 'चौहान का सृजनात्मकता' विषय पर भाषण हुआ। डॉ० चौहान मेरठ विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष है। विभाग में डॉ० एच० सी० गाँगुली, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय,विजिटिग फैलो के रूप मे १५ दिन के लिये आये। उनके विभाग में दो भाषण क्रमशः Trascendental Meditation एवं मानसिक स्वास्थ्य विषयों पर हुये। श्रद्धेय कुलपति जी ने इन सभाओं की अध्यक्षता की। उनका मानसिक स्वास्थ्य विषय पर अध्यक्षीय भाषण अत्यन्त विचारोत्तेजक था जिसमें उन्होंने स्वामी दयानन्द जी द्वारा बताये मार्ग पर चल कर

मानसिक स्वास्थ्य किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है, इस पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त विभाग के तत्वावधान में डॉ० विश्वनाथ मिश्र का 'साहित्य एवं मनोविज्ञान' विषय पर सारगर्भित भाषण हुआ।

इस वर्ष गढवाल विश्वविद्यालय के कुलपति ने ओमप्रकाश मिश्र को गढवाल विश्वविद्यालय की रिसर्च डिग्री कमेटी में विषय विशेषज्ञ के रूप मे तीन वर्ष के लिये नियुक्त किया। उन्हे नजीबाबाद रेडियो ने ढलती उम्र का मनोविज्ञान विषय पर १४ मिनट की वार्ता देने हेतु आमन्त्रित किया। उन्होने दिल्ली मे आयोजित एप्लाइड साइकोलोजी की काफ्रेंस मे भाग लिया। गत वर्षों की भाँति उन्होने क्रीडा-विभाग के अध्यक्ष के रूप मे कार्य किया तथा विश्वविद्यालय की वार्षिक परीक्षा का संचालन परीक्षाध्यक्ष के रूप मे किया। इस वर्ष उन्हें प्रतियोगी परीक्षा प्रशिक्षण का निदेशक नियुक्त किया गया।

डॉ० हरगोपाल सिंह ने विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका 'वैदिक पाथ' का गत वर्षो की भाँति कुशल सम्पादन किया। उनके सम्पादन मे शोध पत्रिका दिनो दिन उन्नति कर रही है। इसके अतिरिक्त डॉ० सिह के इस सत्र मे अनेक शोध पत्र छपे तथा दिल्ली मे आयोजित एप्लाइड साइकोलोजी की काफ्रेंस मे भाग लेकर 'एप्लाईड साइकोलोजी इन एनसिएन्ट इंडिया' विषय पर शोध पत्र पढा। इस वर्ष उनकी पुस्तक का स्पैनिश तथा इतावली भाषा मे अनुवाद होना प्रारम्भ हो गया है। उनकी कई वार्ताएँ नजीबाबाद रेडियो से प्रसारित हुईं। जुलाई १९८३ मे यू०जी०सी० द्वारा आयोजित "इवैल्युएशन टक्नोलोजी एण्ड इग्जामिनेशन रिफोर्म" डी०ए०वी० कालेज देहरादून मे लेक्चर देने गये।

प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी ने गत वर्षो की भाँति विद्यालय के विद्यार्थियों को १०० वेद मन्त्र कठस्थ कराये। इन मन्त्रो को बाद मे अर्थ सहित व्याख्या के साथ पुस्तकाकार रूप में छापा गया। वह यह कार्य गत तीन वर्षो से श्रद्धेय कुलपति जी की प्रेरणा से कर रहे है जिसकी सर्वत्र भूरि–२ प्रशसा हो रही है।

प्रो० सतीश चन्द्र धमीजा का विभाग की प्रयोगशाला सवर्धन मे विशेष योगदान रहा।

इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गठित समिति ने विभाग का निरीक्षण किया तथा विभाग के विकास कार्यक्रमो पर विचार-विमर्श किया। समिति की सस्तुति पर विभाग को छठी पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत एक प्रोफेसर, २५,००० रुपये पुस्तको के लिये, लगभग इतनी ही राशि शोध पत्रिकाओं

के लिये तथा ५०,००० रुपये प्रयोगशाला हेतु मिले । समिति ने विभाग को 'डिप्लोमा इन साइको आयुर्वेदिक मेडिसीन' प्रारम्भ करने की अनुमति दे दी है । यह डिप्लोमा भारत में प्रथम बार एक शैक्षणिक प्रयोग के रूप में प्रारम्भ किया जा रहा है जो विभाग के लिये गौरव की बात है। यह सब श्रद्धेय कुलपति जी के सतत् प्रयास, दिशा-निर्देशन एवं कुशल नेतृत्व द्वारा ही सम्भव हो सका।

—**प्रो० ओमप्रकाश मिश्र**
रीडर एवं अध्यक्ष

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना से ही भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्ययन पर विशेष बल दिया जाता रहा है। गुरुकुल को १९६३ में जब विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पूर्ण विश्वविद्यालय का स्तर प्रदान किया गया तब स्नातकोत्तर विभागों के साथ प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग भी स्थापित हुआ। यह विभाग देश के प्रसिद्ध इतिहास विज्ञों के संरक्षण में फला-फूला। वर्तमान समय में भी विभाग के सभी प्राध्यापक विभाग को पूर्ण रूप से विकसित करने में प्रयत्नशील हैं।

१–विभाग में कार्यरत प्राध्यापक

१–डॉ० विनोदचन्द्र सिन्हा, प्रो० एवं अध्यक्ष।
२–डॉ० श्यामनारायण सिंह, प्रवक्ता।
३–डॉ० कश्मीरसिंह भिंडर, प्रवक्ता।
४–श्री राकेश कुमार, शोध छात्र एवं प्रवक्ता।

२–स्नातकोत्तर कक्षाओं में परीक्षार्थियों की संख्या

प्रथम वर्ष—२१
द्वितीय वर्ष—११
शोध छात्र—१८

३–शोधकार्य

पिछले १४ वर्ष के अल्पकाल में १४ महत्वपूर्ण विषयों पर शोधकार्य किया जा चुका है। इस वर्ष के दीक्षान्त समारोह में श्री महाराजकृष्ण नारद को "हिस्टोरिकल एण्ड कल्चरल स्टडी ऑव दी प्रतिहार इन्सक्रिप्सन्स" नामक विषय पर पी-एच०डी० की उपाधि प्रदान की गयी। वर्तमान समय तक ३ अन्य शोधार्थियों की मौखिक परीक्षा भी सम्पन्न हो चुकी है जिनका विवरण निम्न है—

नाम	निर्देशक का नाम	विषय
१–श्री राकेश कुमार	डॉ० विनोदचन्द्र सिन्हा	प्राचीन भारत में सम्प्रभुता का विकास (वैदिक काल से गुप्तकाल तक)
२–श्री आई०जी०पी० फलगुनादि	,, ,,	इवोलेशन ऑव इण्डियन कल्चर इन वाली।
३–कु० ऊषा भसीन	,, ,,	उत्तर भारत की शासन संस्थाओ का तुलनात्मक अध्ययन।

इनके अतिरिक्त विभाग के योग्य प्राध्यापको के निर्देशन मे जिन शोधार्थियो के कार्यसन्तोष जनक ढग से प्रगति पर है, वे निम्न है—

नाम	निर्देशक का नाम	विषय
१–श्रीमती साधना सिपाहा	डॉ० विनोदचन्द्र सिन्हा	मौर्यकाल मे राजनीतिक चिन्तक (स्वामी दयानन्द के राजदर्शन के परिप्रेक्ष्य मे)
२–श्री विनोद कुमार शर्मा	,, ,,	गुप्तकाल में आयुर्वेद।
३–कु० अंजली मेहरोत्रा	,, ,,	प्राचीन भारत मे स्थानीय स्वशासन
४–श्री बृजमोहन खन्ना	,, ,,	भारत और ईरान के प्राचीन सांस्कृतिक सम्बन्ध।
५–कु० अरुणा मिश्रा	डॉ० जबरसिंह सेंगर	प्राचीन भारतीय नारी शिक्षा एव महर्षि दयानन्द का योगदान।
६–श्री धर्मसिंह सैनी	,, ,,	भारत और मध्य एशिया के प्राचीन सम्बन्ध।
७–श्री शिशिर कुमार पाण्डेय	,, ,,	प्राचीन भारत में सैन्य संगठन (वैदिक काल से हर्षवर्द्धन तक)
८–श्री सुखबीरसिंह	डॉ० श्याम नारायणसिंह	पुरातत्व संग्रहालय की तृण मूर्तियो का अध्ययन।

नाम	निर्देशक का नाम	विषय
६-श्री जसबीरसिंह मलिक	डॉ० श्याम नारायणसिंह	प्राचीन भारत में पौरोहित्य
१०-श्रीमती ऊषा आनन्द	,, ,,	टीचिंग इन एन्शियन्ट इण्डिया।
११-श्री जयकिशोर	डॉ० कश्मीरसिंह भिण्डर	प्राचीन भारतीय समाज में पददलितों का अध्ययन।

४-विभाग के प्राध्यापकों द्वारा लेखन कार्य

विभागीय शोध कार्य के अतिरिक्त विभाग के प्रोफेसर-अध्यक्ष डॉ० विनोद चन्द्र सिन्हा की पुस्तक "हिन्दुइज्म एण्ड सिबल वर्शिप" इस सत्र मे प्रकाशित हुई। इससे पूर्व डॉ० सिन्हा की ८ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। वर्तमान सत्र मे डॉ० सिन्हा के ३ महत्वपूर्ण लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशित हुये। डॉ० जबरसिंह सेंगर का शोध ग्रन्थ "भारत और कम्बुज के सम्बन्ध" शीघ्र प्रकाशित हो रहा है। इसके अतिरिक्त उनके कुछ लेख भी प्रकाशित हुये। डॉ० श्यामनारायण सिंह का शोध ग्रन्थ "अहिछत्रा का इतिहास" भी शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। डॉ० कश्मीरसिंह भिण्डर का शोध ग्रन्थ "प्राचीन भारत म धर्मनिरपेक्षता" शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसके अतिरिक्त डॉ० भिण्डर की दो वार्तायें आकाशवाणी नजीबाबाद से प्रसारित हुई जो निम्न है– साधारण व्यक्ति के लिये कानून तथा राष्ट्रीय एकता के सन्दर्भ मे गुरुतेग बहादुर का बलिदान। विभाग के प्राध्यापक श्री राकेश कुमार का शोध प्रबन्ध, "प्राचीन भारत में सम्प्रभुता का विकास" भी विश्वविद्यालय मे जमा हुआ। इनकी मौखिकी परीक्षा भी दिनाक ७-५-८४ को हो चुकी है। गुरुकुल के सम्बन्ध मे उनका एक लेख भी प्रकाशित हुआ है।

५-विभाग में आयोजित व्याख्यान

वर्तमान सत्र मे अनेक गोष्ठियो का आयोजन किया गया। अगस्त माह में डॉ० उपेन्द्र ठाकुर, प्रो० एव अध्यक्ष मगध विश्वविद्यालय ने कई सारगर्भित व्याख्यान दिये। इनमें से १०-८-८३ को दक्षिणी पूर्वी एशिया में रामायण का महत्व, १८-८-८३ को गंगा का ऐतिहासिक तथा सास्कृतिक महत्व तथा १-९-८३ को भारतीय संस्कृति का दक्षिणी पूर्वी एशिया मे प्रसार, विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनसे विभाग के विद्यार्थी तथा अनेक विषयो के प्राध्यापक भी लाभान्वित हुये। इसी श्रृंखला मे विभाग मे ३०-९-८३ को प्रो० रामराहुल, चेयरमैन सेन्ट्रल एशियन स्टडीज, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय ने विभाग के विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। इनका विषय था 'आज के युग में छात्रो के लिये नैतिक शिक्षा'।

२२ नवम्बर को विभाग में मानव अधिकार दिवस का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता प्रो० विनोदचन्द्र सिन्हा ने की तथा संचालन विभाग के प्राध्यापक श्री राकेश कुमार ने किया। ६-१२-८३ को विभाग की ओर से एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध विद्वान एवं पत्रकार पं० सत्यकाम विद्यालंकार ने इस व्याख्यान में वेदो में इतिहास नामक विषय पर सारगर्भित विचार रखे।

६–प्रोफेसर पद का सृजन

विभाग के लिये इस वर्ष की उपलब्धि के रूप में विभाग में प्रोफेसर पद का सृजन भी रहा। विभाग के रीडर एवं अध्यक्ष डॉ० विनोदचन्द्र सिन्हा को चयन समिति की संस्तुति पर कार्य परिषद् ने दिनांक १५ फरवरी ८४ को प्रोफेसर पद पर नियुक्त किया। विभाग के अन्य सहयोगियों तथा विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि डॉ० सिन्हा ने विश्व-विद्यालय के प्रथम प्रोफेसर होने का गौरव पाया।

७–इतिहासविज्ञों का आगमन

यह सत्र विभाग में आने वाले देश के प्रसिद्ध इतिहासविज्ञों के आगमन के कारण स्मरण किया जाता रहेगा। इस सत्र के प्रारम्भ मे डॉ० उपेन्द्र ठाकुर, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष मगध विश्वविद्यालय का आगमन विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में एक माह के लिये हुआ। प्रो०. ठाकुर का आगमन विभाग के लिये अत्यधिक प्रेरणादायी सिद्ध हुआ। इसी सत्र मे बोर्ड आफ स्टडीज की मीटिंग में डॉ० राम राहुल, चेयरमैन सेन्ट्रल एशियन स्टडीज, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय पधारे। गुजरात विद्यापीठ के कुलपति एवं देश के प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डॉ० रामलाल पारिख ने गुरुकुल पधार कर संग्रहालय तथा विभाग की अन्य गतिविधियो को देखा।

शोध छात्रो की मौखिकी परीक्षा हेतु पधारे विद्वानो की शृंखला में डॉ० बी०एन० पुरी, भूतपूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष लखनऊ विश्वविद्यालय, डॉ० उपेन्द्र ठाकुर, प्रो० एवं अध्यक्ष मगध विश्वविद्यालय, डॉ० आर०सी० गौड, प्रो० अलीगढ़ विश्वविद्यालय, डॉ० एल०पी० पाण्डेय, प्रो० एवं अध्यक्ष हिमाचल विश्वविद्यालय के नाम उल्लेखनीय है।

उपर्युक्त विद्वानो के अतिरिक्त इस वर्ष डॉ० के०डी० वाजपेयी, भूतपूर्व टैगोर प्रो० सागर विश्वविद्यालय, डॉ० विमलचन्द्र पाण्डेय, प्रो० पंजाब विश्व विद्यालय तथा के०पी० नौटियाल गढ़वाल विश्वविद्यालय का भी आगमन हुआ।

८–छठी पंचवर्षीय योजना में विभाग का विकास

इस सत्र में विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की डेवलपमेन्ट कमेटी का आगमन १०, ११ मार्च १९८४ में हुआ। विजिटिंग टीम ने विभाग को ५० हजार रुपये उत्खनन कार्य हेतु प्रदान किया। संग्रहालय में दो नये पदो; क्यूरेटर कम लेक्चरर तथा म्यूजियम असिस्टेन्ट का सृजन हुआ।

९–विभाग की अन्य उपलब्धियाँ

पिछले सत्रो की भांति इस सत्र में भी विभाग ने अकादमिक गतिविधियो के अतिरिक्त विश्वविद्यालय की अन्य गतिविधियो में भी सक्रिय रूप से भाग लिया। डॉ० विनोदचन्द्र सिन्हा ने इस वर्ष जनसम्पर्क अधिकारी के रूप में विश्व-विद्यालय की छवि को निखारने के लिये अथक् प्रयास किया। अत्यधिक कार्यभार के कारण प्रो० सिन्हा ने अप्रल में उक्त पद से त्यागपत्र दे दिया है। विश्व-विद्यालय के कुलपति श्रीयुत हूजा जी ने "कुलसचिव चयन समिति" का सचिव भी प्रो० सिन्हा को नियुक्त किया। विश्वविद्यालय मे योग्यता प्रोन्नति योजना लागू की जा रही है। इस योजना के क्रियान्वयन का दायित्व भी प्रो० सिन्हा को विश्वविद्यालय की ओर से सौपा गया है।

विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ० श्याम नारायण सिह को इसी सत्र में विश्वविद्यालय का उपकुलसचिव नियुक्त किया गया। इनकी कार्य कुशलता की प्रशंसा विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारी, प्राध्यापक तथा कर्मचारी करते है।

विभाग के अन्य प्राध्यापक डॉ० कश्मीरसिंह भिण्डर को इसी सत्र में सम्पदा विकास अधिकारी का दायित्व सौपा गया। इन्होने इस कार्य के अन्तर्गत विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर क्वाटर्स का निर्माण सार्वजनिक विभाग की सहायता से प्रारम्भ करा दिया है। इसी सन्दर्भ मे विश्वविद्यालय मे नवीन विद्युत व्यवस्था के प्रवाह का कार्य भी डॉ० भिण्डर द्वारा सम्पन्न किया गया। इसके अतिरिक्त डॉ० श्याम नारायणसिह एवं डॉ० भिण्डर ने विश्वविद्यालय के क्रीड़ा समिति के सदस्यो के रूप में खेल–कूद के स्तर को बढ़ाने मे विशेष योगदान दिया।

विभाग के कनिष्ठ प्रध्यापक श्री राकेश कुमार ने भी विश्वविद्यालय प्रशासन के द्वारा सौपे गये कार्यो को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया।

पुरातत्व संग्रहालय

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग का यह संग्रहालय आज चौमुखी प्रगति की ओर अग्रसर है। अल्पकाल में इस संग्रहालय

ने जो उन्नति की है, उसकी प्रशंसा देश और विदेश के अनेक विद्वानों और पुरातत्ववेत्ताओं ने मुक्त कण्ठ से की है। प्रति वर्ष लाखों धर्मपरायण यात्री हरिद्वार गंगा में स्नान करने आते है, उनके लिये यह संग्रहालय स्वस्थ मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन का महत्वपूर्ण साधन बन गया है। पचपुरी की विभिन्न शिक्षा संस्थाये अपने छात्रों को क्रियात्मक ज्ञान देने के लिये इस संग्रहालय का उपयोग कर रही है। देहरादून, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, चण्डीगढ, हरियाणा आदि की छात्र मण्डलिया भी अपनी सरस्वती यात्राओ में इसे देखने के लिये प्रतिवर्ष आया करती है।

संग्रहालय में सेवारत कर्मचारी

१—डॉ० विनोदचन्द्र सिन्हा, पदेन निर्देशक
२—श्री सुखबीर सिह, सहायक क्यूरेटर
३—बालकृष्ण शुक्ल, लेखक
४—रमेश चन्द्र पाल, भृत्य
५—ओमप्रकाश, भृत्य
७—वासुदेव मित्र, चौकीदार

इस वर्ष संग्रहालय में दो नई वीथिकाओ का समावेश किया गया। ये अष्टधातु कक्ष एवं चित्रकला कक्ष बहुत ही आकर्षक है। मार्च १९८४ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विजिटिंग कमेटी ने संग्रहालय की प्रशंसा करते हुए कहा कि इतना विशाल संग्रहालय गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के लिये बड़े गौरव की बात है।

पुरातत्व संग्रहालय में भव्य प्रदर्शनी

इस वर्ष गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव और दीक्षान्त समारोह के अवसर पर पुरातत्व संग्रहालय में १३, १४ और १५ अप्रैल को एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय श्री सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार, विजिटर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय ने किया। प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण वेदों के मन्त्रो को दृश्यो द्वारा स्पष्ट किया गया था। यह प्रदर्शनी माननीय प० सत्यकाम जी के सौजन्य से विद्यालय विभाग द्वारा लगायी गयी। इस प्रदर्शनी के अतिरिक्त मुद्रा प्रदर्शनी भी दर्शकों के लिये विशेष आकर्षण का केन्द्र बनी हुई थी।

—विनोदचन्द्र सिन्हा
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

अंग्रेजी विभाग

यू० जी० सी० एक्ट द्वारा १९६३ में अन्य स्नातकोत्तर विभागों के साथ ही अंग्रेजी विभाग का उन्नयन।

स्नातकोत्तर विभाग के दो दशक (२० वर्ष) पूर्ण। इस अवधि में विभाग की निरन्तर सुदृढता एवं प्रगति। गुरुकुल मे अंग्रेजी की प्रधानता का प्रमाण यह है कि हाई स्कूल के स्तर से विद्याविनोद (इन्टरमीडिएट) एवं अलंकार (बी०ए०) के स्तर तक अंग्रेजी एक अनिवार्य विषय के रूप मे वर्तमान काल में भी प्रतिष्ठित।

एम०ए० मे अंग्रेजी एक ऐच्छिक विषय होने पर भी लोकप्रिय। अधिकतर अन्य विश्वविद्यालय के स्नातकों का ही एम०ए० अंग्रेजी मे प्रवेश। विद्यार्थियो की विशेषता यह कि न केवल विभिन्न विश्वविद्यालयो, अपितु विभिन्न प्रान्तो से भी छात्रो का एम०ए० अंग्रेजी में प्रवेश के लिए यहां आना। इस दिशा में विभाग का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता में योगदान। इस वर्ष एम०ए० द्वितीय वर्ष में गुयाना (दक्षिण अमेरिका) के एक विद्यार्थी का प्रवेश।

अमेरिकन स्टडीज़ का १८ वां अधिवेशन

अप्रैल १९८४ के दौरान गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय मे इन्डियन एसोसियेशन ऑव अमेरिकन स्टडीज़ का १८वाँ वार्षिक अधिवेशन अंग्रेजी विभाग के तत्वावधान में विभाग के अध्यक्ष श्री सदाशिव भगत के संयोजकत्व मे हुआ। इसके अध्यक्ष डॉ० भूपेन्द्र कानूनगो, अध्यक्ष इतिहास विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय थे।

इस सम्मेलन ने विभाग को राष्ट्रव्यापी प्रचार और ख्याति प्रदान की। इसमें देश के प्रायः सभी महत्वपूर्ण विश्वविद्यालयो से विद्वानों ने अमरीकी साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास और राजनीति शास्त्र के विभिन्न पक्षो पर अनेक लेख पढ़े।

इसका उद्घाटन विश्वविद्यालय के विजिटर डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने किया और स्वागत भाषण कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा ने दिया। दोनों ही विद्वानो ने पूर्व और पश्चिम के पारस्परिक सम्बन्धो की गहनता और सुदृढता पर बल दिया और कहा कि भारत और अमेरिका दोनों एक दूसरे से बहुत कुछ ग्रहण कर सकते है।

इस अवसर पर विभाग के दो प्रवक्ताओ ने निम्नलिखित शोध-पत्र प्रस्तुत किये—

(१) **डॉ० नारायण शर्मा**—"द इसैन्शियल रिलिजियसनस ऑव अमेरिकन लिट्रेचर विद स्पेशल रैफरन्स टु हैमिगवे।"

(२) **डॉ० आर० एल० वार्ष्णेय**—"एमिली डिकिन्सन इन द लाइट ऑव इन्डियन पोइटिक्स।"

उक्त सम्मेलन के अवसर पर विभाग की ओर से एक स्मारिका भी प्रकाशित की गई जिसमें विभाग के तथा बाहर के विद्वानो के लेख छापे गये।

२० वर्षो से स्थापित अमेरिकन एसोसिएशन अभी तक कोई शोध पत्रिका प्रकाशित नही कर पाई थी। उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर गुरुकुल के अंग्रेजी विभाग के सद्प्रयास से आई. ए. ए. एस. की प्रथम शोध पत्रिका आई. ए. ए. एस. जरनल न०१ भी प्रकाशित की गई जो कि विभाग की एक बड़ी उपलब्धि है और साथ ही गौरव भी। विभाग का प्रयास अगले वर्ष मे भी एक शोध पत्रिका प्रकाशित करने का है।

ग) बाह्यीय विद्वानों के भाषण—

गत सितम्बर माह में प्रयाग विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के विद्वान प्रो० ओ०पी० मालवीय का विभाग के तत्त्वावधान में 'क्रिटिकल एप्रोच टु लिटेचर' विषय पर एक सारगर्भित भाषण हुआ।

गत फरवरी माह में विजिटिग फेलो डॉ०विश्वनाथ मिश्र (मेरठ विश्वविद्यालय) का अंग्रेजी एवं हिन्दी साहित्य में बिम्ब योजना पर एक तुलनात्मक भाषण हुआ।

अध्यापकीय विवरण —

१—श्री सदाशिव भगत, एम०ए० (इलाहाबाद), पी-एच०डी० (कार्यरत) रीडर एवं अध्यक्ष।

आप पिछले २० वर्ष से विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं और विभाग के निर्माण और प्रगति में सदैव से संलग्न हैं। आप विश्वविद्यालय की एकैडमिक काउन्सिल के सदस्य रहे हैं और विश्वविद्यालय से बाहर, अनेक स्थानों पर विषय-विशेषज्ञ, परीक्षक, मौखिकी परीक्षा तथा अनुसंधान परीक्षक नियुक्त हुए है।

आप उत्तर प्रदेश चाइल्ड वैलफेयर काउन्सिल के वर्तमान सदस्य है। इस काउन्सिल में आपका मनोनयन उत्तर प्रदेश के राज्यपाल द्वारा किया गया था। अमेरिकन स्टडीज के अठारहवे अधिवेशन को गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय मे सम्पन्न कराने का श्रेय आपको ही जाता है। आप हरिद्वार रोटरी क्लब के सदस्य और भूतपूर्व प्रधान भी है।

२—**डॉ० नारायण शर्मा**, एम०ए०, एल-एल० बी, पी-एच०डी०

आप लगभग १८ वर्ष से इस विभाग मे प्रवक्ता पद पर कार्यरत है। आपके अनेक लेख व शोध-पत्र विभिन्न पत्रिकाओ मे प्रकाशित हो चुके है। साहित्य मे मिस्टिसिज्म में आपकी विशेष रुचि रही है। इस वर्ष अमेरिकन स्टडीज अधिवेशन मे आपने एक शोध-पत्र पढा और अन्य लेख प्रकाशित कराये।

इसके अतिरिक्त "भारतीय सस्कृति एव साहित्य का विश्वसाहित्य पर प्रभाव" विषय पर अनुसन्धान कार्य भी कर रहे है। "प्रौबलैम्बज ऑव प्रीसैशनल इक्वीनौक्स" एवं अन्य खगोलिक विषयों पर लिखे लेखो के आधार पर कैनेडा से प्रकाशित "इन्टरनेशनल डाइरैक्टरी" मे इनका नाम छप चुका है।

"हिन्दूइज्म" पर लिखे गए लेखो के लिये "आल इन्डिया बिबलिओग्राफी आव लिट्रेचर आन हिन्दूइज्म" में इनका नाम सम्मिलित किया गया है।

३—**डॉ० आर० एल० वार्ष्णेय**—एम०ए०, पी-एच०डी०, पी०जी०सी०टी०ई०, डी०टी०ई०

विभाग में सन् १९७२ से प्रवक्ता; इसके अतिरिक्त ७७-८० मे कुलसचिव; वर्तमान में सचिव कुलपति तथा जनसम्पर्क अधिकारी; सन् १९८२-८३ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा रूस में व्याख्यान और अध्ययन के लिये चयन, लगभग १०० पुस्तकें तथा अनेक लेख और शोध-पत्र प्रकाशित। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सैन्ट्रल आग्ल संस्थान हैदराबाद में विशेष अध्ययन हेतु फैलोशिप; कुछ एवार्ड्स (पुरस्कार) प्राप्त करने का श्रेय; अनेक वार्ताएं तथा व्याख्यान।

शोध निर्देशन

आपके निर्देशन में चार शोधार्थी मेरठ विश्वविद्यालय से निम्नलिखित

विषयों पर शोध कर रहे हैं—

(१) पी० एस० नेगी—"द थीम ऑव एलीनेशन इन द पोइट्री ऑव कीट्स।"

(२) पी० चौधरी—"इमेजरी इन द प्लेज ऑव क्रिस्टोफर फ्राई।"

(३) आभा मगन—"एलीनेशन इन बाइरन्ज पोइट्री।"

(४) अंजू गुप्ता—"एक्सप्रैसनिज्म एण्ड रीअलिज्म इन द प्लेज़ ऑव टिनैसी विलियम्ज़।"

डॉ० वार्ष्णेय के ८३-८४ के प्रकाशन

पुस्तकें—

(१) टिनैसी विलियम्ज : द ग्लास मिनैजरी का एक अध्ययन।

(२) जार्ज ऑरवल : १९८४, एक समीक्षा।

(३) ग्रैहम ग्रीन : द पावर एण्ड ग्लोरी

लेख—

(१) "द इम्पैक्ट ऑव वेदाज आन श्री अरोविन्दोज सावित्री," **वैदिक पथ**, जून १९८३।

(२) "स्वामी दयानन्दज व्यूज ऑन डौमस्टिक लाइफ" **महर्षि दयानन्द की साधना और सिद्धान्त :** गुरुकुल पत्रिका विशेषांक, १९८३।

(३) "स्वामी दयानन्द एज़ ए राइटर" वर्ल्ड पर्सपैक्टिव ऑन स्वामी दयानन्द," सं० डॉ० गंगाराम गर्ग, १९८३; इसी पुस्तक में तीन लेखों का हिन्दी से अंग्रेजी में रुपातरण।

पुस्तक समीक्षायें—

(१) "ए रिव्यू ऑव डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकारज ओल्ड ऐज़ ट यूथ, **कैअर**, बौम्बे, फरवरी १५, १९८४।

(२) "ए रिव्यू ऑव डॉ० सत्यकाम विद्यालंकारज ग्लिम्पसैज ऑव द वेदाज," **वैदिक पथ,** १९८४।

(४) **अजय शर्मा**—एम०ए०, एम० फिल०, पी-एच०डी० (कार्यरत)

इन्होंने १९८० में उच्च शिक्षा संस्थान, मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ से एम०ए० (अंग्रेजी) की परीक्षा विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करते हुए

पास की। तत्पश्चात् मेरठ कालेज मेरठ एवं मुल्तानीमल मोदी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। १९८२ में मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ से एम० फिल० परीक्षा पास की। फरवरी १९८४ से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय मे अध्यापन कार्य कर रहे है। १९८२ से ही पी-एच०डी० में कार्यरत है।

प्रकाशन

एम० फिल० शोध प्रबन्ध "ह्यूमन रिलेशनशिपस् इन द नावल्स ऑब टामस हार्डी" पुस्तक रूप मे १९८४ मे प्रकाशित ।

—**सदाशिव भगत**
रीडर एवं अध्यक्ष

हिन्दी विभाग

१—हिन्दी विभाग का संक्षिप्त परिचय

सन् १९६३ के प्रारम्भ से ही विश्वविद्यालय स्तर की मान्यता के साथ यह विभाग प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में इसमें केवल दो ही पद थे, विभागाध्यक्ष तथा प्रवक्ता। दोनो पदों पर एक-एक व्यक्ति की नियुक्ति की गई थी, तत्पश्चात् दो प्रवक्ताओं की और नियुक्ति हुई। वर्तमान समय मे विभाग मे एक विभागाध्यक्ष तथा तीन प्रवक्ता हैं। उन सभी का विवरण इस प्रकार है—

१. डॉ० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, पी-एच०डी०, डी०लिट्०
   विभागाध्यक्ष

२. डॉ० विष्णुदत्त 'राकेश', पी-एच०डी०, डी०लिट्०, प्रवक्ता

३. श्री ज्ञानचन्द रावल, एम०ए०, प्रवक्ता

४. डॉ० भगवानदेव पाण्डेय, एम०ए० (हिन्दी-साहित्य), एम०ए० (भाषा विज्ञान), पी-एच०डी०, प्रवक्ता

इस विभाग के अन्तर्गत एम०ए०, अलंकार तथा विद्याविनोद कक्षाओं हेतु शिक्षा की व्यवस्था है। साथ ही पी-एच०डी० का शोध-काय भी कराया जाता है।

२—विभागीय शोध-कार्य

इस विभाग की सबसे बड़ी उपलब्धि उसके द्वारा कराये गये शोध-कार्य में निहित है। पी-एच०डी० के शोध-कार्य का स्तर अनेक विश्वविद्यालयों से ऊँचा है तथा इस विश्वविद्यालय के सभी विभागों से अधिक शोध-कार्य हिन्दी-विभाग में हुआ है।

जिन शोध प्रबन्धो पर पी-एच०डी० उपाधि अभी तक प्रदान की गई है उनमें से कुछ शीर्षक इस प्रकार हैं—

क्र०सं०	शोध प्रबन्ध का शीर्षक	लेखक का नाम	पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त करने का वर्ष
१.	स्वयभू एवं तुलसी के नारी पात्र : तुलनात्मक अनुशीलन।	श्री योगेन्द्र नाथ	१६७३
२.	भारतीय रसचिन्तन पर वेदान्त दर्शन का प्रभाव।	श्री रामचन्द्र पुरी	१६७३
३.	सप्तक त्रय . आधुनिकता तथा परंपरा।	श्री सूर्यप्रकाश	१६७३
४.	तुलसी के नियतिवाद और आग्ल साहित्यकारो के नियतिवाद का तुलनात्मक अध्ययन।	श्री दिनेश प्रकाश	१६७४
५.	सूफी सन्त परम्परा मे नूर मुहम्मद का स्थान और उनकी कृतिया।	श्री हरिनन्दन प्रसाद	१६७४
६.	रीतिकालीन विविध काव्याग निरुपण की परम्परा : उपनिषद् ग्रन्थो के आलोक मे आचार्य जनराज कृत कविता-रस-विनोद का काव्य शास्त्रीय मूल्यांकन।	श्री प्रेमसिंह वर्मा	१६७४
७.	आचार्य जगतसिह जीवनी और कृतित्व।	श्री विजयपालसिंह तोमर	१६७५
८	प्रगतिवादी हिन्दी कविता और रूसी काब्य का तुलनात्मक अध्ययन।	श्री राजेन्द्र कुमार	१६७५
६.	मध्यकालीन हिन्दी-साहित्य मे वैदिक परम्परा।	श्री हरपालसिह	१६७५
१०.	हिन्दी के आंचलिक उपन्यास : उद्भव और विकास।	श्री भोलाराम	१६७५
११.	हिन्दी व्याकरण : उद्भव और विकास।	श्री केहरसिह	१६७६
१२.	रामचरित मानस और बाल्मीकि रामायणेतर रामचरित-मूलक संस्कृत-काव्यो का तुलनात्मक अध्ययन।	श्री रामजी दत्त	१६७६
१३.	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में महानगरीय सवेदना।	सुश्री इला रानी कौशिक	१६७६
१४.	रीतिकालीन हिन्दी कविता में लोकतत्व।	श्री पृथ्वीसिंह 'विकसित'	१६७६

१५.	प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी-कथा-साहित्य में व्यंग्य।	श्री कुंवर बहादुर	१९७६
१६.	मध्यकालीन हिन्दी-साहित्य पर ज्योतिष शास्त्र का प्रभाव।	श्री केदारनाथ जगता	१९७७
१७.	हिन्दी शब्द-समूह का विकास (१९००-१९२५)	श्री रामनरेश	१९७७
१८.	सेनापति और उनका काव्य।	श्रीमती कुसुमलता अग्रवाल	१९८१
१९.	तुलसी की रामचरित-मानसेत्तर रचनाओ का आलोचनात्मक अध्ययन।	श्रीमती शोभा तिवारी	१९८१
२०.	महाकाव्य की दृष्टि से जयशंकर प्रसाद और कालिदास का तुलनात्मक अध्ययन।	श्री महेशचन्द्र विद्यालंकार	१९८१
२१.	मौर्य एवं शुंग-काल-सम्बन्धी हिन्दी-उपन्यासों का साहित्यिक एवं सास्कृतिक अध्ययन।	कु० ऊषारानी शर्मा	१९८१
२२.	स्वामी सत्यदेव परिव्राजक : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।	श्री दीनानाथ शर्मा	१९८१
२३.	आचार्य पद्मसिंह शर्मा : जीवनी और कृतित्व।	श्री इन्द्रजीत शर्मा	१९८१
२४.	इन्द्र विद्यावाचस्पति और उनकी साहित्य-साधना।	श्री भगवत्शरण	१९८२
२५.	प्रेमचन्द साहित्य पर आर्य-समाज का प्रभाव।	श्री सुरेन्द्रसिह	१९८२

३—अन्य कार्यक्रम

प्रारम्भ से ही इस विभाग में प्रमुखता अध्यापन तथा शोध निर्देशन को दी जाती रही है। इस सत्र में एक विद्वान को विजिटिंग फेलो के रूप में भी आमंत्रित किया गया। उक्त विद्वान डॉ० विश्वनाथ मिश्र, अवकाश प्राप्त प्राचार्य, सनातन धर्म कालेज, मुजफ्फरनगर थे। आपने साहित्य सम्बन्धी अनेक वार्ताओं से विश्वविद्यालय के छात्रो तथा शिक्षकों को लाभान्वित कराया।

४—विभागीय शिक्षकों की उपलब्धियाँ

अनेक वर्ष पूर्व इस विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ० वाजपेयी ने अयोध्या नरेश महाराजा मानसिंह "द्विजदेव" की जीवनी और कृतियों की खोज एवं उनका समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करके पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की तथा डी.लिट्.

उपाधि के लिए 'तुलसी के काव्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण' शीर्षक शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया। इस विभाग के प्रवक्ता डॉ० विष्णुदत्त 'राकेश' ने पी-एच०डी० हेतु कुलपति मिश्र के काव्य की समीक्षा की तथा डी० लिट्० के लिए हिन्दी के ध्वनि-वादी आचार्यों पर शोध प्रबन्ध लिखा। इस विभाग के अन्य प्रवक्ता डॉ० भगवान देव पाण्डेय ने 'सन्त काव्य की परम्परा और प्रयोग' शीर्षक शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करके हिन्दी के एक क्षेत्र के अभाव की पूर्ति की। अन्य प्रवक्ता श्री ज्ञानचन्द रावल का शोध-प्रबन्ध परीक्षण हेतु गया हुआ है। इस प्रकार इस विभाग के सभी शिक्षक मिलकर इस विभाग की श्रीवृद्धि करने में समर्थ है। विभागाध्यक्ष डॉ वाजपेयी आगरा विश्वविद्यालय के सन् १९५८ के पी-एच डी. तथा १९६२ के डी. लिट् है। वह ही इस विभाग के सस्थापक अध्यक्ष भी है। विभागीय शोध-कार्य में उनका सर्वाधिक योगदान रहा है।

—**डॉ० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी**
विभागाध्यक्ष

गणित विभाग

(कला महाविद्यालय)

विभाग का सत्र जुलाई के मध्य से प्रारम्भ हुआ। छात्रों का प्रवेश चयन समिति द्वारा किया गया। इस वर्ष छात्रों की संख्या निम्न रही—

प्रथम वर्ष—१२
द्वितीय वर्ष—१४

कक्षाओं में विधिवत् अध्यापन कार्य अगस्त मास से प्रारम्भ हुआ।

माननीय कुलपति जी की प्रेरणा के अनुसार सभी छात्रों को विभाग के अध्यापको द्वारा गर्भस्थ किया गया।

इस वर्ष विभाग मे अध्ययन को रुचिपूर्ण बनाने के लिए तथा छात्रो मे आत्मविश्वास जागृत करने के लिए समय-समय पर उनका बौद्धिक परीक्षण किया गया तथा उनसे सेमिनार मे बोलने का अभ्यास कराया गया।

दिवाशीष, रामेश्वर, दिनेश इत्यादि, छात्रो ने पटियाला अन्तर-विश्व-विद्यालय टूर्नामैन्ट में सक्रिय भाग लिया।

छात्रो को कम्प्यूटर के बारे में जानकारी प्राप्त कराने के लिए उन्हे देहरादून—एफ०आर०आई० मे भेजा गया। निदेशन के लिए विभाग के अध्यक्ष तथा अन्य अध्यापक भी साथ गये।

द्वितीय वर्ष के छात्रो ने विभाग के निर्देशन मे कई प्रशासनिक एवं बैंकिंग प्रतियोगिताओं में भाग लिया। एक छात्र का इन्जीनियरिंग में प्रवेश हुआ।

श्री महकारसिंह तथा श्री जोशी का मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के कम्प्यूटर विभागो में चयन हुआ।

दीक्षान्त समारोह मे विभाग के छात्रों एवं अध्यापको ने सक्रिय योगदान

दिया। विभाग के अध्यापकों ने परीक्षा कार्य करने तथा अनुशासन कायम रखने में सहयोग प्रदान किया।

विभाग में निम्न प्राध्यापक कार्यरत हैं—

(१) श्री विजयपाल सिह (रीडर एवं अध्यक्ष)
(२) श्री वीरेन्द्र अरोड़ा
(३) श्री महीपाल सिंह

श्री वीरेन्द्र अरोड़ा जून ८४ से कुलसचिव नियुक्त हुए।

—विजयपाल सिंह
अध्यक्ष

विज्ञान महाविद्यालय

स्टाफ विज्ञान महाविद्यालय—

रीडर—	३
प्रवक्ता—	६
लिपिक—	२
प्रयोगशाला सहा०	४
चतुर्थ श्रेणी	१०

छात्र संख्या—बी०एस–सी०

बी०एस–सी	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	योग
	१०८	३३	१४१

इस सत्र की पढ़ाई १८-८-८३ से प्रारम्भ की गयी। ग्रीष्मावकाश १६-५-८४ से १६-७-८४ तक रहा।

(१) श्रीयुत कुलपति महोदय का दिनांक १६-८-८३ को रसायन-कक्ष में विदेश यात्रा पर भाषण हुआ।

(३) इस सत्र की बी०एस-सी० द्वितीय वर्ष की परीक्षायें अप्रैल-मई मास में सम्पन्न हुई। बी० एस-सी० प्रथम वर्ष की परीक्षायें छात्रों के प्रतियोगी-परीक्षाओं में बैठने के कारण अप्रैल-मई मास में नहीं हो सकी। इस सत्र के जौलाई मास में ये परीक्षा पूर्ण हो जायेंगी तथा अगस्त मास के प्रथम सप्ताह में इस सत्र की पढ़ाई आरम्भ हो जायेगी।

(३) कालेज में छात्रो के प्रवेश हेतु बड़ी संख्या में प्रत्याशी के रूप में प्रार्थना-पत्र आते है। इनमें मेरिट के आधार पर ही छात्रो को प्रवेश दिया जाता है। इस वर्ष कालेज में १४१ छात्रो ने प्रवेश लिया। कालेज के छात्र इन्जीनियरिंग, मेडिकल, सैनिक तथा प्रशासनिक सेवाओं आदि अनेक प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में प्रतिवर्ष सफलता प्राप्त करते है। इस कार्य में कालेज के प्राध्यापकगण उनका पथ-प्रदर्शन करते हैं।

(४) इस सत्र में छात्रों ने दो शैक्षणिक सरस्वती यात्रायें की हैं। वायो ग्रुप के छात्रों ने शैक्षणिक यात्रा दक्षिण भारत की की है, जिसमें जन्तु विज्ञान तथा वनस्पति विज्ञान के छात्रों ने ज्ञान प्राप्त किया। दूसरी शैक्षणिक यात्रा में गणित ग्रुप के छात्रों ने दिल्ली में विज्ञान मेला प्रदर्शनी में विज्ञान में होने वाली प्रगति का ज्ञान प्राप्त किया।

इस समय कालेज में पांच विभाग कार्य कर रहे है। जिनका विस्तृत विवरण आगे के पृष्ठों में दिया गया है।

इस कालेज के ही अधिकतर छात्र खेलकूद मे विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करते हैं। महाविद्यालय मे गंगा के समन्वित अध्ययन की योजना प्रारंभ है। कालेज के सभी प्राध्यापक उसमें भाग ले रहे है। यह योजना भारत सरकार के पर्यावरण विभाग ने स्वीकृत की है। डॉ० विजयशंकर, अध्यक्ष, वनस्पति विभाग इस योजना के निदेशक है। कालेज की पत्रिका आर्यभट्ट का सम्पादन भी डॉ० विजयशंकर जी द्वारा किया जा रहा है।

—**सुरेशचन्द्र त्यागी**
प्रिंसिपल

गणित विभाग

(विज्ञान महाविद्यालय)

अगस्त मास के प्रारम्भ के साथ विज्ञान महाविद्यालय में कक्षाओं का शुभारम्भ हुआ। मेरिट के आधार पर द्वितीय श्रेणी तक के छात्रों को प्रवेश दिया गया। पाठ्य-पुस्तकों के चयनादि के बाद अध्यापन प्रारम्भ किया गया। छात्रों ने बड़ी रुचि से अध्ययन आरम्भ किया।

अक्तूबर तथा नवम्बर मास में छात्रों के क्लास टैस्ट लिये गये। उनमें यह पाया गया कि छात्र विषय को अच्छी तरह ग्रहण कर रहे है।

अनेक छात्र रुड़की विश्वविद्यालय, मोतीलाल नेहरु रीजनल इन्जीनियरिंग कालेज, आई.आई.टी, एयरफोर्स, नेवी तथा अन्य विविध प्रवेश प्रतियोगी परीक्षा में सम्मिलित हो रहे है। उनका अधिकतम पथ-प्रदर्शन किया गया। आशा है हमारे छात्र गत वर्षों की तरह इन परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। विभाग के शिक्षक छात्रों की कठिनाइयो का निराकरण करने को सदा तत्पर रहते है।

विभाग के शिक्षक शोध और प्रकाशन कार्यों में लगे हुए है।

छात्रों के लाभ के लिये पाठ्यक्रम के अनुसार नवीनतम प्रकाशित पुस्तकें पुस्तकालय में मंगवाने के लिए प्रस्तावित की गयी।

विभाग की ओर से संगणक विज्ञान में डिप्लोमा, गणित में बी०एस-सी० (आनर्स) तथा एम.एस-सी. (स्टेटिसटिक्स) के प्रस्ताव विश्वविद्यालय को प्रेषित किये गये जिनकी स्वीकृति की विभाग को प्रतीक्षा है। स्वीकृति के अनुसार नये पाठ्यक्रम आरम्भ करने की विभाग की योजना है।

समय-समय पर छात्रों को 'गणित की आधुनिक उपयोगिता' पर भाषण दिये गये तथा उन्हें रिसर्च आदि करने के लिये प्रेरणा दी गई। छात्रो में विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न करने हेतु उनको सरस्वती यात्रायें कराई गयी।

आने वाले सत्र में विभाग की विषय पर बाहर के विद्वानों के भाषण करवाने की योजना है। जिन विद्वानों को भाषण हेतु बुलाना है उनकी सूची विभाग द्वारा तैयार की गई है।

—सुरेशचन्द्र त्यागी
प्रिंसिपल एवं अध्यक्ष

भौतिक विज्ञान विभाग

भौतिक विज्ञान विभाग के भवन का निर्माण

यू०जी०सी० से प्राप्त अनुदान से हुआ। यू०जी०सी० से विभाग में तीन पद शिक्षक तथा एक लैब सहायक तथा एक भृत्य पद स्वीकृत है। सन् १९६५ से १९७० तक विभाग मे तीन शिक्षक तथा एक लैब सहायक तथा भृत्य कार्य करते रहे। १९७० मे एक शिक्षक विभाग छोड़कर चले गये। तब से इस विभाग में केवल दो शिक्षक कार्य कर रहे है। एक विभागाध्यक्ष और एक प्रवक्ता। विभाग में दो प्रयोगशाला बी०एस–सी प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष, एक अध्यक्ष रूम, एक स्टाफ रूम तथा दो श्याम प्रकोष्ट है। बी०एस–सी० के क्रियात्मक कार्य के लिये कोस सम्बन्धी सभी उपकरण विद्यमान है। तीन प्रयोगशाला एम०एस–सी० के लिये तैयार है। एम०एस–सी० के लिए अधिकतर उपकरण तथा पुस्तकें विद्यमान है।

भावी योजना

१–भौतिक विज्ञान विभाग में पोस्ट ग्रेजूएट कक्षाएँ चालू करना।

२–भौतिक विज्ञान विभाग मे रिसर्च प्रोग्राम।

स्टाफ–

१. श्री हरिश्चन्द्र ग्रोवर, अध्यक्ष

२. राजेन्द्र कुमार अग्रवाल, प्रवक्ता

३. श्री प्रमोद कुमार शर्मा, प्रयोगशाला सहायक

४. श्री ठकरासिंह, भृत्य

सन् १९८३-८४ में भौतिक विज्ञान विभाग में बी०एस–सी० प्रथम खण्ड में ७२ विद्यार्थियों ने तथा बी०एस–सी० द्वितीय खण्ड मे २२ विद्यार्थियो ने पंजीकरण कराया। सत्र का प्रारम्भ विधिवत् हुआ।

पाठ्यक्रम—

१. बी०एस–सी० प्रथम खण्ड

(अ) मैथेमेटिकल फिजिक्स

(ब) मैकनिक्स

(स) ओपटिक्स

२. बी०एस–सी० द्वितीय खण्ड

(अ) थर्मल फिजिक्स

(ब) इलविट्रसिटी एण्ड मैग्नैटिज्म

(स) अटोमिक फिजिक्स

शिक्षक छात्र अनुपात १ : ४७

विभागीय उपाध्यायों का लेखनकार्य

(१) हरिशचन्द्र ग्रोवर का आर्यभट्ट के विशेष अंक इनवोरनमैन्टल कनसरवेशन एण्ड एनरिच्मैन्ट में ए प्राईमरी स्टडी ऑव द गैजिज वाटर पोल्युशन एट ज्वालापुर (हरिद्वार) नामक लेख प्रकाशित हुआ, तथा शोध-कार्य भी कर रहे हैं। विज्ञान महाविद्यालय में "इन्टीग्रेटेड स्टडी आफ द गंगा" में पी०आई० के रूप में कार्य कर रहे हैं।

(२) श्री राजेन्द्रकुमार अग्रवाल ने इस वर्ष अपनी पी–एच०डी० थिसस रुड़की विश्वविद्यालय में प्रस्तुत कर दी है। इस वर्ष भौतिकी विभाग से श्री राजेन्द्र कुमार अग्रवाल फरवरी मास में कन्टीन्युईंग एण्ड डिसटन्स एजुकेशन के सेमीनार में पूना विश्वविद्यालय में भाग लेने के लिये गये थे।

इस वर्ष ५ अक्टूबर १९८३ में बोर्ड ऑव स्टडी की बैठक सम्पन्न हुई जिसमें प्रो० एण्ड डाइरेक्टर श्री कैलाशचन्द्र जी रुड़की विश्वविद्यालय तथा डॉ० एन०के० अग्रवाल इलैक्ट्रोनिस विभाग ने भी इस बैठक में भाग लिया। पाठ्य–क्रम निर्धारित करने में मार्गदर्शन किया।

परीक्षा परिणाम

पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा।

—**हरिशचन्द्र ग्रोवर**
अध्यक्ष

रसायन विभाग

इस वर्ष बी० एस-सी० प्रथम वर्ष में मेरिट के अनुसार तथा द्वितीय वर्ष में प्रथम वर्ष के उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया गया। तत्पश्चात नये वर्ष की पढ़ाई प्रारम्भ की गई। रसायन विभाग के लिये यह वर्ष उपलब्धियो का वष रहा है। अनेक क्षेत्रों में हुई गतिविधियों का सक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

रसायन विज्ञान की कक्षाओं मे विद्यार्थियों की उपस्थिति नियमित व सन्तोषजनक रही। छात्रों ने कक्षाओं से बाहर भी अपनी पठन–पाठन सम्बन्धी कठिनाइयो को प्रवक्ताओं से मिलकर दूर किया। विभाग के प्रवक्ताओ ने विद्यार्थियो को समय-समय पर विशिष्ट भाषणो से लाभान्वित किया। यह भाषण एप्लाइड केमिस्ट्री पर तथा जॉब आरियन्टेड थे।

रसायन विभागाध्यक्ष डॉ० रामकुमार पालीवाल ने कुलपति श्री हूजा जी की आज्ञा से "नई शिक्षा" पर अवध विश्वविद्यालय द्वारा लखनऊ में आयोजित सेमिनार में भाग लिया।

नियुक्तियां

१-३-८४ को डॉ० रजनीश दत्त कौशिक जी ने फिजिकल कैमिस्ट्री प्रवक्ता पद पर अपना कार्यभार ग्रहण किया। जिसके साथ विभाग में स्थिति निम्न प्रकार से है।

१—डॉ० रामकुमार पालीवाल, अध्यक्ष
२—श्री कौशल कुमार अग्रवाल, प्रवक्ता
३—डॉ० रजनीश दत्त कौशिक, प्रवक्ता

बलिदान दिवस आयोजन

२० सितम्बर, १९८३ को आदरणीय स्व० श्री ओमप्रकाश जी सिन्हा, भू० पू० अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, गु० का० विश्वविद्यालय का बलिदान

दिवस विभाग में प्रधानाचाय श्री सुरेश चन्द त्यागी जी की अध्यक्षता में मनाया गया। उक्त अवसर पर कुलपति महोदय ने यज्ञ के पश्चात् विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

विशिष्ट विद्वानों का आगमन व भाषण

विभाग में भारत के प्रमुख रसायन विज्ञानी डॉ० डब्ल्यू० यू० मलिक, कुलपति, काश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर, पधारे। डॉ० मलिक ने रसायन विभाग की भूरि- भूरि प्रशंसा की तथा विज्ञान महाविद्यालय के समस्त अध्यापको को, कुलपति श्री हूजा जी की अध्यक्षता मे, अपना विद्वतापूर्ण भाषण दिया।

इसी सत्र में विश्वविद्यालय विजिटर श्री०पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार एवं कुलपति श्री हूजा जी का रसायन कक्ष में विद्यार्थियों को सारगर्भित उपदेश सुनने का अवसर मिला।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को विजिटिग टीम ने रसायन विभाग का निरीक्षण किया तथा विशेष उपकरण, यन्त्र, रसायन भंडार, गैस प्लान्ट, रिसर्च प्रयोगशाला, आदि देखे व सराहे।

सामान्य गतिविधियां — दिल्ली मे हुई विज्ञान प्रदर्शनी को देखने हेतु बी. एस. सी. के विद्यार्थियो की एक सरस्वती यात्रा दिल्ली गई जिसमें रसायन प्रवक्ता ने छात्रो को विभिन्न पंडालो मे विशिष्ट रासायनिक उपलब्धियो तथा रसायन विज्ञान की संसार मे महत्ता व लाभ के सम्बन्ध मे बताया।

सत्र के बीच में समय-समय पर विद्यार्थियों को विभिन्न कम्पीटीशन्स के लिए प्रवक्ताओ द्वारा आवश्यक निर्देश दिये गये तथा उन्हे इसके लिए प्रोत्साहित किया गया।

शोध सम्बन्धी गतिविधियाँ

विभागाध्यक्ष डॉ० रामकुमार जी पालीवाल ने आर्यभट्ट पत्रिका में 'ऐन्जाइम" सम्बन्धी एक लेख प्रस्तुत किया। विभाग मे श्री कौशल कुमार जी प्रवक्ता अपने पी-एच०डी० के लिए शोध कार्यरत है। इन्होंने अपने शोध पत्र विभिन्न शोध पत्रिकाओ मे प्रकाशन हेतु भेजे।

रसायन विभाग में कार्यरत डॉ० रजनीश दत्त कौशिक जी को विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग ने उनके रिसर्च प्रोजेक्ट "ट्रान्जीशन मेटल केटेलिसिस ऑव परआयोडेट आक्सीडेशन ऑव कम्पाउन्ड्स ऑव फिजियोलोजिकल

इम्पोर्टेन्स" के लिए रु० ७५००/– का अनुदान देना स्वीकृत किया जिसके गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में स्थानान्तरण के लिए आवश्यक कार्यवाही की गई।

हिमालय योजना के अन्तर्गत डॉ० रामकुमार पालीवाल, अध्यक्ष रसायन विभाग, डॉ० बी०डी० जोशी, अध्यक्ष, जन्तु विज्ञान विभाग एवं डॉ० विजय शंकर जी, अध्यक्ष वनस्पति विज्ञान विभाग, अन्य सहयोगियों सहित पुण्य भूमि, कांगडी ग्राम गये जहा पर बाढ द्वारा गांव की भूमि का कटाव रोकने सम्बन्धी समस्या पर विचार किया गया व इसको हिमालय योजना का रूप देकर पर्यावरण विभाग भारत सरकार, दिल्ली को अनुदान हेतु भेजा गया।

गंगा योजना के अन्तर्गत डॉ० रामकुमार पालीवाल डॉ० विजय शंकर जी के साथ ऋषिकेश, चीला व सप्तर्षि आश्रम गये जहां के विभिन्न स्थानो से जल, मिट्टी, वनस्पति, व जन्तुओ के नमूने एकत्र किये गये जिनका विश्लेषण सम्बन्धी कार्य प्रयोगशाला में चल रहा है।

वार्षिक समारोह तथा दीक्षान्त समारोह

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिक समारोह तथा दीक्षान्त समारोह के अवसर पर विभाग के समस्त कर्मचारियो ने पूर्ण दायित्व के साथ कार्य करते हुए यज्ञादि कार्यक्रमो मे भाग लिया तथा विभिन्न विद्वानो व कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी, कुलपति श्री हूजा जी, विश्वविद्यालय विजिटर श्री पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, श्री पं० सत्यकाम जी विद्यालंकार (आचार्य, गुरुकुल) तथा मुख्य अतिथि श्री डॉ० सत्यप्रकाशानन्द जी महाराज के भाषणों का लाभ उठाया। उक्त सभी कार्य-क्रमो में विभाग के कर्मचारियो व छात्रो की उपस्थिति प्रभावशाली रही।

—रामकुमार पालीवाल
अध्यक्ष

जन्तु विज्ञान विभाग

जन्तु विज्ञान विभाग का वार्षिक कार्यक्रम अत्यन्त व्यवस्थित एवं सुचारु रूप से निरन्तर ही उच्चतर शैक्षिक मान्यताओं को प्राप्त करने की ओर अग्रसर है। इस सत्र में छात्रों की संख्या निम्नवत् रही—

१. बी० एस-सी० (प्रथम वर्ष)—३६
२. बी० एस-सी० (द्वितीय वर्ष)—११

गत वर्षों की तुलना में यह सत्र अधिक नियमित रूप से चला। बायलोजी वर्ग के चार छात्रों ने विज्ञान महाविद्यालय की बी०एस-सी० (द्वितीय) की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किये। बायोलोजी वर्ग के छात्र श्री प्रकाशचन्द्र ने ही विज्ञान वर्ग में प्रथम श्रेणी मे सर्वाधिक अंक प्राप्त किये।

दिसम्बर माह में, विभागाध्यक्ष डॉ० बी०डी० जोशी के निर्देशन में विज्ञान महाविद्यालय के पन्द्रह छात्रों का एक दल सरस्वती यात्रा पर दक्षिण भारत के अनेक स्थानों के दर्शनार्थ गया। यह यात्रा ग्यारह दिन की रही। छात्र भारत के अन्तिम छोर पर स्थित कन्याकुमारी के 'एक मेमोरियल टेम्पल' की रमणीयता से अत्यन्त प्रभावित हुये। छात्रों ने रामेश्वरम्, मद्रास, मद्रास बीच, जू, मद्रास विश्वविद्यालय, सर्प संग्रहालय, दिल्ली दर्शन आदि का विस्तृत भ्रमण किया। इस यात्रा से समस्त छात्र अत्यन्त लाभान्वित हुये और राष्ट्र की विविध संस्कृतियों के विभिन्न आयामो से परिचित हुये।

दिसम्बर २२ से ३१ तक, डॉ० बी०डी० जोशी के निर्देशन में ही राष्ट्रीय सेवा योजना का द्वितीय वार्षिक शिविर का सफल आयोजन संपूर्ण हुआ। इस वर्ष भी पचास सदस्यो ने शिविर में भाग लिया जिसमें से विज्ञान महाविद्यालय के ४३ छात्र थे। इस सत्र मे डॉ० बी०डी० जोशी ने निम्नलिखित राष्ट्रीय सेमिनारों मे भाग लिया और अपने शोध-पत्र अथवा निबन्धपत्र पढ़े।

सेमिनार	पढ़ा गया निबन्ध/शोध पत्र
१. जून १५-१६, १६८३ हिमालय की सम्पदा एवं पर्यावरण स्थान- गढ़वाल विश्वविद्यालय, पौढ़ी परिसर (डॉ० जोशी ने दो सत्रों की अध्यक्षता भी की)	१. "अकरेन्स आफ द ट्रिपैनोसोनस् इन द फ्रेश वाटर टिजीपोस्टस् आफ अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)"
२. अगस्त १२-१६, १६८३ नेशनल सेमिनार आन इन-वाइरनमेन्टल स्ट्रेटजिज : वनस्पति विज्ञान विभाग कश्मीर विश्व-विद्यालय श्रीनगर-कश्मीर।	"प्राब्लमस् एण्ड प्रोसपेक्टस् आफ एक्वा रिर्सोसेज मैनेजमेन्ट इन हिमालयास्"।
३. सितम्बर २०-२१, १६८३ नेशनल कान्फ्रेंस आन एडल्ट एजूकेशन, गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर।	———
४ अक्टूबर २४—नवम्बर १, १६८३ फोर्थ आल इंडिया सेमिनार ऑन इक्थियोजोजी।	"हिमेटोलोजिकल स्टडीज आन ए फिश इनफेक्टेड विद ट्रिपैनो सोमस्"

इस सत्र में डॉ० जोशी के निम्नलिखित शोध पत्र एवं निबन्ध प्रकाशित हुये—

१. ट्रिपैनोसोमा रुपिकोलाइ, फ्राम ए हिल स्ट्रीम फिश, एन० रुपिकोला (होरा) इन : करेन्ट साइन्स, १६८३ (५२) : १४१-१४२,

२. हिस्टोमोर्फोलोजी आफ द इन्टेग्यमेन्ट आफ ए हिल स्ट्रीम टिलीपोस्ट एन. रुपिकोला · इन : यू०पी० जरनल आफ जूलोजी १६८३ (३) : ४२-४८ आन सम हिमेटोलोजिकल वैल्यूज औफ एन. रुपिकोला इनफेक्टेड विद हेलमेन्थिक सिस्टस्। इन : इन्डियन जरनल आफ फिजिकल एण्ड नेचुरल साइन्सेज, १६८३ (३ ए) : ३८-३६

३. द कन्ट्रोवर्सियल युकेलिप्टस्। आर्यभट्ट, विज्ञान पत्रिका, सेप्टेम्बर १६८३ : ३६-४२

विभागीय कार्यों के अलावा 'जन्तु विज्ञान' विभाग के प्राध्यापकों एवं छात्रों ने सत्र में विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किये गये अनेक कार्यक्रमों यथा वर्ल्ड इनवाइरनमेन्ट डे, एडल्ट एजूकेशन डे आदि-आदि।

विभागीय व्यवस्था अत्यन्त सुव्यवस्थित रूप से चल रही है। गत वर्ष को 'बोर्ड आफ स्टडीज' ने भी पुनः यह संस्तुति की है कि विभाग में शीघ्रातिशीघ्र एम०एस-सी० एवं पी-एच०डी० कोर्सिस प्रारम्भ किये जाएँ। आशा है विश्व-विद्यालय प्रशासन विश्वविद्यालय की गरिमा संवर्न्धन हेतु इस ओर प्रयत्नशील ही होगा।

उपर्युक्त पत्रों को मिलाकर अब तक डॉ० जोशी के ५८ शोध-पत्र एवं ७ निबन्ध विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है।

—डॉ० बी०डी० जोशी
विभागाध्यक्ष

वनस्पति विज्ञान विभाग

शिक्षकगण

(१) डॉ० विजय शंकर, रीडर एवं अध्यक्ष

(२) डॉ० पुरुषोत्तम कौशिक, प्रवक्ता

शिक्षकेत्तर

(१) श्री रूद्रमणी, लैब असिस्टेन्ट

(२) श्री विजयसिह, लैब ब्वाय

(३) श्री सूरजदीन, माली

विद्यार्थियों की संख्या—

बी०एस-सी० प्रथम खण्ड—३५
बी०एस-सी० द्वितीय खण्ड—११

विभाग में पठन-पाठन का कार्य सुचारु रूप से चला। अध्यापकों ने विश्व-पर्यावरण दिवस के अवसर पर ५-६ जून को "पर्यावरण संरक्षण एवं समृद्धि" विषय पर एक कान्फ्रेन्स का आयोजन किया जिसमें भारत के विभिन्न शिक्षा व अनुसन्धान संस्थानो से अनेक वैज्ञानिकों ने भाग लिया। डॉ० वि० शंकर ने इस कार्यक्रम के आयोजन-सचिव का कार्य किया। डॉ० विजय शंकर व डॉ० पुरुषोत्तम कौशिक ने स्मारिका का सम्पादन कार्य किया।

विभाग मे वैदिक पौधो व औषधेय पौधों का हरबेरियम बनाने का कार्य हुआ। वाटिका मे कुछ नये औषधेय पौधों, कास्टस ब्राह्मी व कुछ फलदार पौधों के कल्टीवेशन ट्रायल्स किये।

विभाग में भारत सरकार के पर्यावरण विभाग का 'गंगा समन्वित योजना' प्रोजैक्ट पर कार्य चल रहा है। डॉ. विजय शंकर इसके प्रिंसिपल इन्वैस्टीगेटर हैं। इस योजना के लिये ६.३७ लाख रु० का अनुदान प्राप्त हुआ है।

डॉ० विजय शंकर

१—लेख—

डॉ० शंकर के निम्नलिखित लेख प्रकाशित हुए—

(१) पर्यावरण संरक्षण एवं समृद्धि—सम्पादकीय
(२) विश्व पर्यावरण समारोह पुस्तिका
(३) हमारी भूमि, बाढ, गरीबी एवं पर्यावरण प्रबन्ध
(४) गु०कां०वि० में वन महोत्सव
(५) घृतकुमारी
(६) भविष्य—संभावनाएं एवं संकेत
(७) हरे पत्तों का खाद्य मूल्य
(८) लाइफ स्टाईल एण्ड एनवायरनमेंट
(९) एनर्जी क्राइसिस—ए प्ली फोर पैडल पावर
(१०) गुरुकुल स्टडीज गंगा
(११) एनवायरनमेंटल कनजरवेशन—एडिटोरियल

२—कानफरेन्सेज

मान्य कुलपति जी के साथ निम्नलिखित कान्फ्रेंस में भाग लिया—

(१) फर्स्ट कांफ्रेंस ऑव द एशियन फोरम ऑव पार्लियामेन्टेरियन्स आन पापुलेशन एण्ड डेवेलपमेन्ट—फरवरी १७ से फरवरी २०, १९८४

(२) कांन्फ्रेंसिस आन एनवायरेनमेन्टल कन्जरवेशन एण्ड एनरिचमेन्ट का आयोजन किया एवं लेख प्रस्तुत किया। जून ५-६, १९८४

३—वार्ता

(१) मान्य कुलपति महोदय के साथ एवं विजिटर महोदय के साथ गंगा योजना एवं अन्य कार्यक्रमों पर ए.आई.आर. नजीबाबाद को इन्टरव्यू दिया।

(२) ए.आई.आर. नजीबाबाद को गंगा एवं गंगा योजना पर इन्टरव्यू दिया।

(३) विश्वविद्यालय में आयोजित वन महोत्सव के अवसर पर पर्यावरण संरक्षण एवं समृद्धि पर वार्ता प्रस्तुत की।

४—विभागीय कार्य के अतिरिक्त गुरुकुल और गुरुकुलके बाहर

विषय विशेषज्ञ के रूप में निम्नलिखित पदों पर कार्य किया—

(१) प्रिंसिपल, इन्वेस्टीगेटर इन्टीग्रेटिड गंगा स्कीम

(२) सदस्य, प्रौढ शिक्षा सलाहकार समिति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

(३) विषय-विशेषज्ञ, विज्ञान प्रगति सी०ए०आइ०आर० भारत सरकार

(४) कन्वीनर, बोर्ड ऑव स्टडीज, बोटेनी

(५) सम्पादक, आर्य भट्ट विज्ञान पत्रिका

(६) मेम्बर, सलेक्शन कमेटी एजूकेशनल मेनेजमेन्ट बोर्ड, बी० एच० ई० एल० हरिद्वार

(७) निर्णायक, उद्यान एवं फ्लावर शो बी०एच०ई०एल० हरिद्वार

५—किसान मेला—

वनस्पति विज्ञान विभाग एवं गंगा समन्वित योजना की ओर से प्रसार प्रशिक्षण केन्द्र गुरुकुल कांगडी (उ०प्र० सरकार) में आयोजित जिला स्तरीय किसान मेले में पर्यावरण सम्बन्धी एवं औषधीय पौधो की उपयोगिता दर्शाते हुए स्टॉल लगाया, जिसे प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

डॉ० पुरुषोत्तम कौशिक

विभाग में शिक्षा कार्य के अतिरिक्त डा० कौशिक ने निम्न कार्य किये—

(१) इन्वेंस्टीगेटर 'गंगा समन्वित योजना' पर्यावरण विभाग, भारत सरकार, का कार्य कर रहे हैं।

(२) विश्वविद्यालय परिसर में 'उद्यानीकरण व सौन्दर्यकरण कार्यक्रम' की देख-रेख की तथा माननीय कुलपति जी के साथ इस कार्यक्रम के अन्तर्गत श्रमदान भी किया।

(३) माननीय कुलपति जी के आदेशानुसार २४ फरवरी १९८४ को भारत के एमीनेन्ट आर्किडोलोजिस्ट्स की गोष्ठी जो विश्व प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक डॉ० बी०पी० पाल, एफ०आर०एस० की अध्यक्षता में नई दिल्ली में हुई, भाग लिया। इसी दौरान डॉ० कौशिक "दा आर्किड सोसायटी ऑव इण्डिया" के कौन्सिलर चुने गये।

(४) 'दा वैदिक पाथ' जर्नल के एडिटोरियल एडवाइजरी बोर्ड के सदस्य हैं।

(५) देश-विदेश के अनेक वैज्ञानिकों को तकनीकी जानकारी व ज्ञान के आदान-प्रदान हेतु सहयोग प्रदान किया।

(६) आर्य समाज मन्दिर देवपुरा, करोल बाग, नई दिल्ली में १४-६-८४ को विद्यार्थियों के लिये आयोजित एक प्रोग्राम में 'वेद एवं वनस्पति' विषय पर वक्तव्य दिया।

डॉ० पुरुषोत्तम कौशिक के निम्न प्रकाशन भी १९८३ में प्रकाशित हुये।

(१) "इकोलोजिकल एण्ड एनाटामिकल मावल्ज ऑव दा हिमालयन आर्किड्ज" शीर्षक का एक अनुसन्धान मोनोग्राफ प्रकाशित किया जो विश्व में इस प्रकार की प्रथम उपलब्धि है।

(२) "सम इनडैन्जर्ड प्लान्ट स्पीसिज ऑव इण्डिया" एनवार्यनमेन्टल कन्जरवेशन व इनरिचमैन्ट में प्रकाशित हुआ।

(३) "एनाटमी ऑव एइराइड्स एण्ड इट्स इकोलोजिकल एण्ड टैक्सोनोमिकल बीयरिंग" फाइटोमोर्फोलोजी में प्रकाशन हेतु प्रैस में है। ३२ (२, ३) : ११५–१६४

—डॉ० विजयशंकर
रीडर एवं अध्यक्ष

वैदिक पाथ

जरनल ऑव वैदिक इन्डोलोजिकल एण्ड साइन्टीफिक रिसर्च

गुरुकुल कांगड़ी की १६०६ से १६३५ तक चली पत्रिका वैदिक मैगजीन का नया नाम "वैदिक पाथ" देकर १६७६ से फिर प्रकाशन इस ध्येय से प्रारम्भ किया गया कि अंग्रेजी जानने वाले भारतीयों एवं विदेशियों को वैदिक शोध एवं भारतीय संस्कृति के उच्च एवं सत्य सिद्धान्तो मे अवगत कराया जाए। तब से प्रतिवर्ष यह जरनल नियमित प्रकाशित हो रहा है।

१६८३–८४ सत्र में चारों अंक ठीक समय पर प्रकाशित हुये जिनमें ४३ शोध-पत्र तथा २० पुस्तक समीक्षाये छपी। ग्राहक सख्या भी बढ़ी। प्रशंसा पत्र भी अधिक आये।

जरनल को और अधिक प्रभावकारी बनाने के लिये एडवाइजरी बोर्ड का पुनर्गठन किया गया जिसमें मैक्सिको विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ० मोरा को तथा धर्मयुग व नवनीत आदि प्रसिद्ध पत्रिकाओं के भूतपूर्व सम्पादक श्री सत्यकाम जी विद्यालंकार आदि को सदस्य बनाया गया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से वैदिक संदेश को देश-विदेशों, सरकारी कार्यालयो, विश्वविद्यालयों, उच्च वैज्ञानिक एवं साहित्य शोध संस्थानों तथा सामान्य जनता तक पहुँचाने मे वैदिक पाथ की भूमिका सराहनीय रही। इसकी लोकप्रियता का अन्दाज इस बात से भी पता चलता है कि इसमें छपी सामग्री विशेषकर सम्पादकीय को अन्य पत्र-पत्रिकायें अपने प्रकाशनो में सम्पादक की पूर्व स्वीकृत से प्रायः पुनरुत्पादित किया करते हैं।

—डॉ० हरगोपाल सिंह
सम्पादक

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एक रजिस्टर्ड संस्था है। इसका पंजीकरण गवर्नमेन्ट ऑव इण्डिया के एक्ट २१, १८६० ई० के अनुसार सन् १८८४ मे हुआ था। २६ नवम्बर १८६८ को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गुरुकुल खोलने का निश्चय किया।

सभा ने बालकों के लिये गुरुकुल कांगडी हरिद्वार स्थापित किया और उन्हीं नियमों के अनुसार बालिकाओ की शिक्षा के लिये २३ कार्तिक १९८० तदनुसार ८ नवम्बर १९२३ ई० को दीपावली के दिन दिल्ली में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना हुई थी। सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी विद्वान नेता श्री स्व० आचार्य रामदेव जी, जिनका गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के निर्माण मे महत्वपूर्ण योगदान है, इस संस्था के आदि संस्थापक थे। प्रथम् आचार्या विद्यावती जी सेठ थी।

कन्या गुरुकुल तीन साल के लगभग दिल्ली में रहकर १-५-१९२७ को देहरादून आ गया और तब से यही पुष्पित-पल्लवित हो रहा है।

प्राचीन ऋषि-मुनियो द्वारा प्रतिपादित आदर्शो के अनुरूप अलग-अलग जाति, वंश, संप्रदाय व धर्म की छात्राओ को बिना किसी भेद-भाव गुरुकुल आश्रम व्यवस्था मे रखकर दीक्षित करने, आर्य समाज के मंतव्यो के अनुसार वेद-वेदांग संस्कृत साहित्य, प्राचीन भारतीय संस्कृति के साथ-साथ अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान मे शिक्षित करने और इस प्रकार देश व मानव जाति की सेवा के लिये बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न आदर्श नारियां तैयार करने के उद्देश्य से इस संस्था की स्थापना की गई थी। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ आज एक विशाल बट वृक्ष की भांति पुष्पित एवं पल्लवित हो रहा है और गुरुकुल विश्वविद्यालय के अंगभूत महाविद्यालय के रूप में राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर रहा है। इस संस्था की गरिमा का सबसे बडा प्रभाव इसी से मिलता है कि यहां न केवल भारत के कोने-कोने से बल्कि विदेशो से भी छात्रायें शिक्षा ग्रहण करती है। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि इस संस्था में मुसलमान छात्रायें भी शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

परीक्षा परिणाम

पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी परीक्षा परिणाम उत्तम ही रहा। नवम् कक्षा से १४ कक्षा तक लगभग ६१ छात्रायें कांगड़ी विश्वविद्यालय की परीक्षा में बैठीं। परीक्षा परिणाम लगभग ६६ प्रतिशत रहा। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि सन् १६८३ मे विद्यालंकार की परीक्षा में यहां की छात्रा कु० विमला ने विभाग मे प्रथम तथा गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया।

स्व० आचार्य रामदेव पुस्तकालय तथा वाचनालय

पुस्तकालय में इस वर्ष पुस्तकों की संख्या पन्द्रह हजार रही। छात्राओं तथा शिक्षिकाओं ने लगभग सात हजार पुस्तको द्वारा लाभ उठाया।

ज्योति-समिति

इस वर्ष ज्योति समिति का कार्य-क्रम अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाया गया। कन्याओ ने विभिन्न प्रकार के ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक कार्य-क्रम प्रस्तुत किये। संस्कृत, अंग्रेजी एवं हिन्दी में वाद-विवाद प्रतियोगितायें, नाटक एवं टेब्लो सगीत के कार्य-क्रम प्रशंसनीय रहे। प्रतियोगिताओ का परिणाम निम्नलिखित रहा—

अलका एवं शैफालिका हाउस ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
शुभ्रा एवं राका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

श्री आचार्य रामदेव चिकित्सालय

श्री आचार्य रामदेव चिकित्सालय आश्रम, के समीप ४८,००० रु० की लागत से कन्याओ की चिकित्सा के लिये बना हुआ है। जिसमें २० शैय्याओ के योग्य एक बड़ा तथा दो छोटे रोगी गृह बने हुए हैं। साथ में लेडी डाक्टर का कमरा, औषधालय, ड्रैसिंग रूम, औषधभण्डार, कम्पाउण्डर तथा नर्स के रहने के कमरे, रसोई, स्नानगृह, फ्लस शौचालय आदि बने हुए हैं। चिकित्सालय के दोनों ओर सुन्दर हरी घास के मैदान हैं। यह चिकित्सालय उप-मेडिकल चिकित्सालय एडवाइजर तथा एक लेडी डाक्टर की अध्यक्षता में चल रहा है। इनके साथ दो योजिकायें कम्पाउण्ड परिचारिका (नर्स) तथा सेविका कार्य करती हैं। इस वर्ष चिकित्सालय में २६ हजार रोगियों की चिकित्सा की गई। इस वर्ष चिकित्सालय पर लगभग २६ हजार रुपया व्यय हुआ एवं उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से १५००) रु० का आवर्तक अनुदान भी प्राप्त हुआ।

विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगितायें

६ नवम्बर को लायन्स क्लब में जिला स्तर पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में यहां की छात्राओं ने सफलतापूर्वक भाग लिया। श्रेष्ठ छात्राओं ने पारितोषिक प्राप्त किया।

१२ नवम्बर को जिला स्तर पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इसमें भी यहां की छात्राओ ने सफलतापूर्वक भाग लिया।

१५ नवम्बर को जिला स्तर पर आयोजित अल्पना प्रतियोगिता में यहां की छात्राओं ने प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

२५ नवम्बर को देहरादून में जिला स्तर पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने १७ कालेजो मे सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करके चल विजयोपहार प्राप्त किया।

२५ नवम्बर को ही आयोजित कव्वाली प्रतियोगिता में भी भाग लिया।

२६ नवम्बर को गृह विज्ञान की प्रदर्शनी मे यहां की छात्राओ ने भी भाग लिया तथा प्रथम स्थान प्राप्त किया।

जिला स्तर पर आयोजित कविता प्रतियोगिता मे भी यहां की छात्राओं ने कविता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

नवम्बर मास में ही जिला स्तर पर आयोजित विज्ञान प्रतियोगिता में यहां की छात्राओं को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

क्रीड़ा तथा अन्य प्रतियोगितायें

२ अक्तूबर को गांधी जयन्ती कुलभूमि में अत्यन्त समारोहपूर्वक मनाई गई। प्रातःकाल ८ बजे झण्डा अभिवादन हुआ। तत्पश्चात् श्रीमती आचार्या जी की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया। छात्राओं ने गाधी जी के जीवन पर अत्यन्त मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद कार्यक्रम प्रस्तुत किये। एक घंटे तक मौन तथा कताई का भी कार्यक्रम हुआ। २४ घंटे का अखण्ड चरखा कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस वर्ष ५ अक्टूबर से ८ अक्टूबर तक प्रदेशीय स्तर पर खो-खो एवं कबड्डी प्रतियोगिता देहरादून में सम्पन्न हुई। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की निम्नलिखित चार छात्राओं ने भाग लिया।

(१) कु० रेणु (२) कु० सुमन (३) कु० सविता और (४) कु० रेखा। खो-खो प्रतियोगिता में पौड़ी मण्डल में तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस वर्ष देहरादून में जिला स्तर पर मद्य निषेध सप्ताह मनाया गया, जिसमें देहरादून जिले मे विभिन्न विद्यालय में कविता, नाटक, भाषण, कव्वाली आदि का आयोजन किया गया।

२ अक्टूबर को राजकीय बालिका विद्यालय में आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में विद्यालंकार को दो छात्राओ कु० प्रतिभा, कु० प्रेमा ने श्रेष्ठ निबन्ध लिखने में पारितोषिक प्राप्त किया।

५ अक्टूबर को मद्य-निषेध नाटक में भी सफलतापूर्वक भाग लिया।

८ अक्टूबर को आर्य समाज मन्दिर में जिला स्तर पर आयोजित संगीत प्रतियोगिता में यहां की छात्राओ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

४ नवम्बर को दिवाली के शुभावसर पर कन्या गुरुकुल का ६१वां जन्मोत्सव कुलभूमि में अत्यन्त समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रातःकाल एक वृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। १० बजे आश्रम के झण्डे के अभिवादन के साथ जन्मोत्सव का शुभारम्भ हुआ।

समस्त कुलवासियों ने अत्यन्त श्रद्धापूर्वक कुल-वन्दना का गायन प्रस्तुत किया। तत् पश्चात सभा हुई। छात्राओं ने विविध प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कविता, संगीत, नाटक एवं अभिनय के अत्यन्त रोचक एवं मार्मिक कार्यक्रमों ने दर्शकों को अत्यन्त प्रभावित किया।

९ नवम्बर से ११ नवम्बर तक जिला स्तरीय खेल-कूद प्रतियोगिता देहरादून में सम्पन्न हुई। जिसमें देहरादून के १७ कालेजों ने भाग लिया। कु० रेणू इस वर्ष सर्वश्रेष्ठ छात्रा घोषित हुई। इस छात्रा ने लम्बी कूद तथा ऊँची कूद दोनों में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस वर्ष कु० सुमन ने ८०० मीटर की दौड़ में अत्यन्त सराहनीय प्रदर्शन करके प्रथम स्थान प्राप्त किया।

कु० द्रौपदी ने लम्बी कूद में प्रथम स्थान तथा बाधा दौड़ में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कु० गुरदीप ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

मण्डलीय रैली

३ नवम्बर से २५ नवम्बर तक गढ़वाल मण्डल की रैली देहरादून में

सम्पन्न हुई। जिसमें कु० रेणु सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित हुई। विभिन्न प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये।

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

इस वर्ष में एक विशेष कार्यक्रम भी हुआ। कन्या गुरुकुल की छात्राओं द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना का एक शिविर तपोवन में जनवरी के अन्तिम सप्ताह में लगाया गया। इस दस दिवसीय शिविर का उद्घाटन तपोवन के पुनीत प्रांगण में हुआ। उद्घाटन श्री बलभद्र कुमार हूजा, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा सम्पन्न हुआ। छात्राओं ने ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमदान द्वारा सड़क बनाने का कार्य किया। ग्रामो में साक्षरता अभियान चलाया। ग्रामीण महिलाओं को सफाई, कढाई, बुनाई एवं पढाई का कार्य सिखाया। तपोवन के प्रागण में उक्त शिविर का समापन समारोह श्री दमयन्ती जी कपूर आचार्या द्वारा सम्पन्न हुआ। छात्राओं ने विधिवत् मुख्य अतिथि का स्वागत एवं अन्य कार्य-क्रम प्रस्तुत किये। श्री वीरेन्द्र जी अरोड़ा उद्घाटन एवं समापन दोनों में उपस्थित रहे।

—दमयन्ती कपूर
आचार्या

विद्यालय विभाग

१—स्टाफ की स्थिति

किसी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए स्टाफ की संख्या उचित अनुपात में होनी आवश्यक है। सत्रारम्भ में इस वर्ष मुख्य अध्यापक सहित सात अध्यापक, एक लिपिक, एक माली व दो भृत्य कार्यरत थे। सुव्यवस्थित रूप से विद्यालय चलाने के लिए साक्षात्कार के माध्यम से ६ अन्य अध्यापकों का चयन किया गया किन्तु अर्थाभाव के कारण केवल चार अध्यापको को ही नियुक्त किया जा सका। केवल तीन अधिष्ठाताओं की नियुक्ति की जा सकी, जो अपर्याप्त ही रही। एक अधिष्ठाता से अध्यापन कार्य व एक से कम्पाउण्डर का कार्य भी लिया जा रहा है। अर्थाभाव के कारण एक भृत्य को सेवामुक्त कर दिया गया तथा माली से ही भृत्य का कार्य भी लिया जा रहा है।

२—विद्यार्थियों की स्थिति

नवीन सत्र में नव-प्रविष्ट ब्रह्मचारियों की संख्या ११० रही। १०२ ब्रह्मचारी पूर्व से ही अध्ययनरत थे। विविध कारणों से २५ ब्रह्मचारियो के नाम पृथक् किए गए। आश्रमवासी ब्रह्मचारियो की कुल संख्या वर्तमान में १८७ है तथा कर्मचारियों के आश्रित छात्रों की संख्या ३५ है। कुल अध्ययनरत ब्रह्मचारी २२२ है। संख्या की दृष्टि से अभी न्यूनता है। सत्रारम्भ मे कुछ ब्रह्मचारियों को पलंगों की कमी के कारण प्रविष्ट न किया जा सका।

३—प्रगति एवं उपलब्धियाँ

(क) शैक्षणिक—पाठ्य सामग्री के समुचित प्रबन्ध के अनन्तर विषयानुक्रम से अध्ययन-अध्यापन प्रारम्भ हुआ। १८ अक्तूबर से २३ अक्तूबर तक त्रैमासिक व ७ जनवरी से १८ जनवरी तक अर्द्धवार्षिक परीक्षायें आयोजित की गईं। मार्च मास के अन्त तक पाठ्यक्रम के समापन एवं पुनरावृत्ति का प्रयास किया गया। वार्षिक परीक्षाएँ २१ अप्रैल से प्रारम्भ हुई तथा १५ मई को समाप्त हो गई।

(ख) क्रीड़ा—शिक्षा से बौद्धिक व क्रीड़ा से शारीरिक विकास करना गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य है। आश्रमाध्यक्ष श्री ईश्वर भारद्वाज ने योग

शिक्षा व पी०टी०आई० श्री रणजीतसिंह ने विभिन्न खेलों में ब्रह्मचारियों की रुचि उत्पन्न की तथा समय-समय पर विभिन्न प्रदर्शन किये। उच्चतर माध्यमिक स्तरीय ग्रीष्मकालीन क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में भाग लेकर विभिन्न स्थान प्राप्त किये। सीनियर व जूनियर फुटबाल तथा कबड्डी प्रतियोगिताओं में पूरी टीमें क्षेत्रीय स्तर पर चुनी गईं। हाकी की जूनियर टीम का चयन भी क्षेत्रीय स्तर पर हुआ। क्षेत्रीय व जिला स्तर तैराकी में ब्रह्मचारियों ने प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किये किन्तु अर्थाभाव के कारण आगे भाग न ले सके।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विभिन्न क्रीड़ा प्रतियोगितायें ब्रह्मचारियों के मध्य कराई गई, जिनका पारितोषिक वितरण भी वार्षिकोत्सव पर हुआ। इसी प्रकार बसंत पंचमी को भी क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। श्रद्धानन्द दिवस का कबड्डी टूर्नामेन्ट विशेष सराहनीय रहा।

(ग) सांस्कृतिक गतिविधियाँ—२ अक्टूबर १९८३ को पठानकोट में आयोजित संस्कृत श्लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में संस्कृत अध्यापक श्री बसन्त कुमार जी के नेतृत्व में चार ब्रह्मचारियो का एक दल द्वितीय स्थान प्राप्त कर लौटा। ७ मार्च को विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की ओर से आयोजित मन्त्र, श्लोक उच्चारण व वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में हमारे ब्रह्मचारियों ने विभिन्न विश्वविद्यालयो के एम.ए., पी–एच०डी० छात्रो के समकक्ष प्रदर्शन करके जो प्रशंसा प्राप्त की वह स्तुत्य है। वाद-विवाद प्रतियोगिता में दशम् कक्षा के ब्रह्मचारी हरिशंकर व प्रदीप ने 'यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीन' विषय पर वाद व प्रतिवाद में भाषण बोलकर चलविजयोपहार प्राप्त किया।

संघड विद्यासभा ट्रस्ट जयपुर के सौजन्य से १९ मार्च को आचार्य गोवर्धन शास्त्री स्मृति मन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर ने प्रथम व कन्या गुरुकुल कनखल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा हेतु एक शिक्षक दो मास के लिए नियुक्त किया गया। इसके अतिरिक्त एक संगीत शिक्षक को वार्षिकोत्सव की तैयारी हेतु पुनः नियुक्त किया गया। पद्मश्री श्री विनय कुमार मोद्गल (गांधर्व महा-विद्यालय, दिल्ली) को भी संगीत शिक्षण हेतु आमन्त्रित किया गया।

इस वर्ष वार्षिकोत्सव पर वेद मन्त्रों तथा कला की प्रदर्शनी लगाई जा रही है। बाल सभाओं का आयोजन करके ब्रह्मचारियों की वाक्-शक्ति संवर्धन का प्रयास किया जा रहा है। दर्शन विभाग के अध्यक्ष डॉ० जयदेव वेदालंकार

द्वारा ब्रह्मचारियों को श्लोक गायन सिखाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के लिए उनका हार्दिक धन्यवाद करना आवश्यक है।

(घ) सरस्वती यात्रा–नवम-दशम के ब्रह्मचारियों को चीला बिजलीघर ले जाया गया। पिकनिक के साथ-साथ वनस्पति विज्ञान हेतु वनस्पतियों का संग्रह किया गया।

(ङ) धर्मशिक्षा—प्रतिदिन संध्या-हवन के पश्चात् श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी (प्राध्यापक मनोविज्ञान विभाग) द्वारा एक-एक वेद मन्त्र माध्यमिक कक्षाओं के ब्रह्मचारियो को पढ़ाया गया। १०० वेदमन्त्रो का संकलन 'गोवर्द्धन ज्योति' पुस्तक की षष्ट रश्मि के रूप में संघड़ विद्यासभा के सहयोग से प्रकाशित किया गया तथा ११ मार्च को महात्मा आर्य भिक्षु द्वारा उसका विमोचन किया गया।

८२ ब्रह्मचारियो ने सत्यार्थ प्रकाश की रत्न, भूषण, विशारद व शास्त्र परीक्षाएं दी। गत तीन वर्षों से आश्रमाध्यक्ष श्री ईश्वर भारद्वाज इन परीक्षाओं का आयोजन करते है।

(च) प्रकाशन—विद्यालय विभाग की त्रैमासिक पत्रिका ध्रुव का 'नेताजो सुभाष अंक' उनके जन्म-दिवस पर प्रकाशित किया गया। सदाचार अंक आपकी सेवा मे प्रस्तुत है। इसके लिए सह-सम्पादक श्री महावीर 'नीर' बधाई के पात्र हैं।

(छ) आचार्य की नियुक्ति—पं० सत्यकाम विद्यालंकार को विद्यालय विभाग का पृथक् आचार्य नियुक्त किया गया है। वेदों के विद्वान व संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी के दौहित्र पं० सत्यकाम जी की जब से नियुक्ति हुई है विश्रालय निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा है। वार्षिकोत्सव के सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारी में ब्रह्मचारियों का दिशा निर्देशन किया गया। आशा है भविष्य में विद्यालय नवीन सत्र से प्राचीन परम्परा को पुनः प्रतिष्ठित करने में सफल होगा।

४—अनुशासन

अनुशासन की दृष्टि से ब्रह्मचारियों को परखा जा सकता है। ब्रह्मचारी प्रातः ४ बजे से रात्रि १० बजे पर्यन्त दिनचर्यानुसार कार्य करते हैं तथा पारिवारिक वातावरण बनाए रखते हैं। समय-समय पर अधिकारीगण आकर ब्रह्मचारियों का उत्साहवर्धन करते रहते हैं।

५—भोजन व्यवस्था

यद्यपि समय-समय पर भोजन व्यवस्था में व्यवधान उत्पन्न होता रहता है किन्तु आर्थिक स्थिति का अवलोकन करते हुए भोजन व्यवस्था सुचारु रूप से चल रही है।

समस्याएँ व आवश्यकताएँ

(१) विद्यालय में कम से कम तीन अध्यापकों, पांच अधिष्ठाताओं, एक भृत्य व एक सेवक की आवश्यकता है।

(२) विज्ञान प्रयोगशाला हेतु उपकरणों की आवश्यकता है।

(३) फ्लश शौचालयो की आवश्यकता।

(४) विद्यालय में शौचालय की आवश्यकता।

(५) भवन व दरवाजे-खिड़कियों की मरम्मत।

(६) तख्तों-पलगों की आवश्यकता।

(७) क्रीड़ा-सामग्री के अभाव की पूर्ति।

(८) अतिथि-निवास की व्यवस्था।

(९) कर्मचारियो को निर्धारित समय पर वेतन उपलब्ध कराना।

—डॉ० दीनानाथ शर्मा
मुख्याध्यापक

गुरुकुल परिसर

इस वर्ष गुरुकुल परिसर की सफाई पर विशेष ध्यान दिया गया। चारों तरफ सफाई कराई गई। अमन चौक से श्रद्धानन्द द्वार तक तथा अमन चौक से विश्वविद्यालय भवन तक सफाई पर विशेष ध्यान दिया गया।

ओ३म् परिवार से लेकर बुद्ध परिवार तक छायादार वृक्ष लगाये गये तथा उनकी सुरक्षा के लिए गमले भी बनवाये गये। गुरुकुल परिसर मे प्रकाश व्यवस्था नही थी, नई ट्यूब लाइटे लगाई गई।

१—विद्यालय विभाग

इस वर्ष विद्यालय की व्यवस्था में काफी सुधार किया गया। यद्यपि अर्थाभाव था फिर भी पढाई की ओर विशेष ध्यान देकर अर्थाभाव के होते हुए भी कार्य सुचारु रूप से चला।

किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए स्टाफ व विद्यार्थियों की संख्या उचित होना आवश्यक है। इस वर्ष सत्रारम्भ में मुख्याध्यापक सहित ७ अध्यापक थे, जो कि सर्वथा अपर्याप्त थे। एक लिपिक, एक माली व दो भृत्य कार्यरत थे। इस वर्ष साक्षात्कार के माध्यम से ६ अध्यापकों का चयन किया गया। अर्थाभाव के कारण चार अध्यापकों को नियुक्त किया गया। आश्रम में अधिष्ठाता भी तीन ही है जो कि अभी न्यून ही हैं।

विद्यार्थियों की स्थिति

(क) शैक्षणिक—पाठ्य सामग्री की व्यवस्था के उपरान्त विषयानुक्रम से सभी कक्षाओ की शिक्षा का प्रबन्ध समुचित रूप से किया गया। १८ अक्तूबर तक त्रैमासिक परीक्षाये सम्पन्न कराई गई तथा विद्यार्थियों की योग्यता का परीक्षण किया गया। ६ जनवरी ८४ से १८ जनवरी ८४ तक छमाई परीक्षा ली गई।

(ख) क्रीड़ा—शिक्षा के माध्यम से बौद्धिक व क्रीड़ा के माध्यम से शारीरिक विकास करना गुरुकुल की विशेषता है। आश्रमाध्यक्ष श्री ईश्वर

भारद्वाज ने योग शिक्षा व पी०टी०आई० श्री रणजीतसिंह ने अन्य खेलों में रुचि उत्पन्न कर के ब्रह्मचारियों के शारीरिक विकास का स्तुत्य प्रयास किया है। उच्चतर माध्यमिक स्तरीय ग्रीष्मकालीन क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में ब्रह्मचारियों ने विभिन्न खेलों में भाग लेकर उत्साह प्रदर्शित किया और सीनियर व जूनियर फुटबाल तथा कबड्डी प्रतियोगिताओं में पूरी टीमों का ही क्षेत्रीय स्तर पर चयन हुआ। क्षेत्रीय व जिला स्तरीय तैराकी प्रतियोगिताओं में भी ब्रह्मचारी प्रथम व द्वितीय आये। धनाभाव के कारण टीमें आगे भाग न ले सकी।

(ग) प्रकाशन—इस वर्ष ब्रह्मचारियो की त्रैमासिक पत्रिका 'ध्रुव' का अब तक केवल एक ही अंक प्रकाशित हो सका है जो नेताजी के जन्म-दिन २३ जनवरी १९८४ को 'सुभाष अंक' के रूप में प्रकाशित किया गया।

(घ) सांस्कृतिक कार्यक्रम—२ अक्तूबर १९८३ को पठानकोट (पंजाब) में आयोजित संस्कृत श्लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में श्री बसन्त कुमार के नेतृत्व में चार ब्रह्मचारियों का एक दल द्वितीय स्थान प्राप्त कर लौटा।

(ङ) धर्मशिक्षा—संध्या-हवन प्रतिदिन नियमित रूप से करने के साथ-साथ श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी प्राध्यापक विश्वविद्यालय ने षष्ट से दशम् कक्षा पर्यन्त १०० वेद-मन्त्र कण्ठस्थ कराये। ९२ ब्रह्मचारियो ने सत्यार्थ प्रकाश की रत्न, भूषण, विशारद व शास्त्री परीक्षा दी।

ब्रह्मचारियों द्वारा प्रातःकाल मधुर स्वर में वेद-मन्त्रों, श्लोकों का गायन तथा गीतों का प्रसारण भी निरन्तर अबाध गति से चल रहा है।

(च) सफाई व्यवस्था—इस बार आश्रम, विद्यालय, भण्डार में सफाई पर विशेष ध्यान देकर ब्रह्मचारियों ने स्वयं सफाई आदि में भाग लेकर विद्यालय, आश्रम और भण्डार में स्वच्छता का वातावरण पैदा किया।

(छ) श्रद्धानन्द सप्ताह—श्रद्धानन्द सप्ताह में विभिन्न खेलों की प्रतियोगितायें आयोजित की गई तथा श्रद्धानन्द स्मृति कबड्डी टूर्नामेन्ट का आयोजन किया गया इसमें भी ब्रह्मचारियों की दो-दो टीमों ने भाग लिया।

३—कृषि फार्म

इस वर्ष कृषि पर विशेष ध्यान दिया गया। भूमि जो गत गई वर्षों से बंजर पड़ी थी उसको खेती योग्य बनाया गया। फिर भी गेहूँ, धान की पैदावार औसत से अधिक हुई। गौशाला के लिए चारे की समुचित व्यवस्था की गई तथा शेष चारा बेचकर गुरुकुल को लगभग रु० ५०,००० की आय हुई।

इस बार कुछ जमीन पर सब्जी आदि लगाई गई। अब तक लगभग १४,००० रु० की आय हो चुकी है और अभी कुछ सब्जियां बेचनी हैं।

४—गौशाला

गौशाला में विद्यमान पशुओं की देख-रेख पर विशेष ध्यान दिया गया तथा दूध की मात्रा में वृद्धि की गई। इस महीने से दूध की मात्रा और बढने की आशा है क्योंकि पांच गाएँ इस समय बियाही हैं।

५—गोबर गैस प्लान्ट

विद्यालय भण्डार के साथ एक गोबर गैस प्लान्ट का निर्माण किया गया है जो कि पूर्ण रूप से तैयार हो चुका है और परीक्षण के रूप में कभी-कभी चलाया जाता है।

६—पुण्य भूमि

पुण्यभूमि पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस वर्ष भी वहां पर वर्षा ऋतु मे अनेक प्रकार के नये वृक्ष लगाये गये तथा इस वर्ष वहां की चकबन्दी भी हुई। पुण्यभूमि स्थित भवनों की भी समय-समय पर देखभाल की जाती है। वहां एक अस्थायी चौकीदार भी नियुक्त है जो कि भवन व भूमि की देखभाल रखता है।

७—कार्यालय

इस वर्ष कार्यालय को ओर विशेष ध्यान देकर गत वर्ष के अधूरे खाते आदि लिखवाकर कार्य को सुचारु रूप से किया गया तथा समय-समय पर बजट आदि बनाये गये। सन् १९८३-८४ का बजट अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।

समरी बजट १९८३-८४

क.सं.	मद का नाम	संशोधित आय १९८३-८४	संशोधित व्यय १९८३-८४
१.	कार्यालय प्रशासन	२,३१,७००-००	१,४५,५००-००
२.	विद्यालय	८०,७००-००	१,४४,५००-००
३.	कृषि फार्म	१,५२,५००-००	१,०१,७००-००
४.	गौशाला	३०,२५०-००	४८,८००-००
५.	पुण्यभूमि	११,०००-००	५,६५०-००
६.	दायाद्य	२,१५,०३०-००	२१,९००-००
७.	बिजली, जल प्रबन्ध	१,७५,०००-००	३,४७,४१४-००
		८,९७,१८०-००—१,३०,००० =७,६७,१८०	८,२५,४६४-००

आर्थिक अभाव के कारण यद्यपि हमें जो करना चाहिए था वह नही कर पाए। फिर भी इस स्थिति में गुरुकुल ने आर्थिक समस्याओ का सामना कर के इस संस्था पर किसी प्रकार की आंच नही आने दी।

—कैप्टन देशराज
सहायक मुख्याधिष्ठाता

पुस्तकालय विभाग

परिचय

गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरन्तर ८० वर्षों से पोषित यह पुस्तकालय आज वेद, वेदांग, आर्य साहित्य, तुलनात्मक धर्म संग्रह एवं मानवीय ज्ञान की विविध शाखाओं पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रन्थों से अलंकृत है। सहस्त्रों दुर्लभ ग्रन्थों एवं अनेक अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय अनेक भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य भण्डार को अपने गर्भ में समाहित किये हुए, आर्य संस्कृति की धरोहर के रूप में विद्या व्यसनियों का उपासना केन्द्र बना हुआ है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल की स्थापना जिन उच्च आदर्शों एवं वैदिक मूल्यों की रक्षा हेतु की थी, उन्ही भावनाओं से अनुप्राणित होकर बहुत से महानुभावों ने पुस्तकों के अपने निजी संग्रह गुरुकुल पुस्तकालय को प्रदान किये। स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र स्व० पं० इन्द्र जी ने अपना जीवन पर्यन्त संग्रहित सम्पूर्ण साहित्य गुरुकुल पुस्तकालय को अर्पित कर दिया। इस वर्ष गुरुकुल के सुप्रसिद्ध स्नातक स्व० धर्मदत्त जी आयुर्वेदालंकार की पुत्री कमला बहन ने गुरुकुल पुस्तकालय को उनके जीवन पर्यन्त आयुर्वेद पुस्तकों के संग्रह को भेंट स्वरूप प्रदान किया है। इस संग्रह में २०० अनमोल आयुर्वेद की पुस्तकें हैं।

पुस्तकालय की गतिविधियाँ

इस विपुल पुस्तकालय का लाभ केवल यहां के छात्र-प्राध्यापक वर्ग ही नही उठा रहे, बल्कि हरिद्वार क्षेत्र में रहने वाले सभी बुद्धिजीवी, विद्या उपासक सरस्वती के इस पुस्तक मन्दिर का लाभ उठाते हैं। देश के अन्य विश्वविद्यालय में शोध कर रहे अनेक छात्र भारतीय संस्कृति एवं ऋषि दयानन्द के तत्व दर्शन के अध्ययन हेतु इस पुस्तकालय का उपयोग उठाने सतत आते रहते हैं। वर्ष ८३-८४ में लगभग २२ हजार पाठकों ने इस पुस्तकालय की प्रचुर सामग्री का उपयोग किया है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह

पुस्तकालय का विराट संग्रह अपनी विविध विशिष्टताओं के लिये निम्न प्रकार से विभाजित किया हुआ है।

(१) संदर्भ संग्रह (२) पत्रिका संग्रह (३) आर्य साहित्य संग्रह (४) आयुर्वेद संग्रह (५) विभिन्न विषयों की हिन्दी पुस्तक संग्रह (६) विज्ञान संग्रह (७) अंग्रेजी साहित्य संग्रह (८) पं० इन्द्र जी संग्रह (९) दुर्लभ पुस्तक संग्रह (१०) पाडुलिपि संग्रह (११) गुरुकुल प्रकाशन संग्रह (१२) प्रतियोगितात्मक पुस्तक संग्रह (१३) शोध प्रबन्ध संग्रह (१४) रूसी साहित्य संग्रह (१५) आरक्षित पुस्तक संग्रह (१६) उर्दू संग्रह (१७) मराठी सग्रह (१८) गुजराती साहित्य संग्रह (१९) गुरुकुल स्नातक एव प्राध्यापक प्रकाशन संग्रह (२०) मानचित्र सग्रह ।

पुस्तकालय में उपर्युक्त पुस्तको के विशिष्ट संग्रह के अतिरिक्त इस समय इस पुस्तकालय में ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न विषयो पर ३५० पत्रिकाये एवं १३ समाचार पत्र नियमित रूप से आ रहे है । पुस्तकालय में आने वाले सभी नवीन प्रकाशनों की जानकारी संबंधित विभागाध्यक्ष को भी पुस्तकालय द्वारा समय-समय पर दी जाती है । शोध छात्रों को इस वर्ष से फोटो-स्टेट की सुविधा पुस्तकालय में उपलब्ध कराई जा रही है ।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार

विश्वविद्यालय में पढ रहे निर्धन छात्रों की सहायतार्थ विश्वविद्यालय पुस्तकालय के द्वारा शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना का सर्वथा नवीन कार्यक्रम वर्ष ८३-८४ से प्रारम्भ किया गया है । जिसमे छात्रों को पुस्तकालय मे दो घंटे प्रतिदिन कार्य करने के बदले में उन्हे पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है जिससे ये अपनी पढ़ाई का व्यय उठाने मे स्वावलम्बी बन सकें । इस वर्ष इस योजना के अन्तर्गत ५ छात्रो को लाभ प्रदान किया गया ।

ग्राम्य पुस्तकालय सेवा

विश्वविद्यालय पुस्तकालय के द्वारा ग्रामीण जीवन की बौद्धिक माग को पूरा करने हेतु मान्यवर कुलपति जी की प्रेरणा से ग्राम्य पुस्तकालय की स्थापना का कार्य प्रारम्भ किया जा रहा है । इस शृंखला मे प्रथम ग्राम्य पुस्तकालय की स्थापना गत वर्ष कागड़ी ग्राम मे गुरुकुल के पुराने ख्याति प्राप्त अध्यापक श्रद्धेय गोवर्धन जी शास्त्री की स्मृति में गोवर्धन शास्त्री स्मृति पुस्तकालय की स्थापना की गई । आज इस ग्राम्य पुस्तकालय मे १००० से अधिक पुस्तकें संग्रहीत है । लगभग २५-३० पाठक नित्य इस पुस्तकालय का लाभ उठाते हैं । पुस्तकालय में दैनिक समाचार पत्र एवं कुछ पत्रिकाएं भी नियमित आती हैं । इस पुस्तकालय का कार्य विश्वविद्यालय पुस्तकालय के कर्मचारी मदनपाल सिंह ही अतिरिक्त समय में देखते हैं । वर्ष १९८४-८५ में ग्राम्य पुस्तकालय के संग्रह हेतु ३००० रु० के व्यय की स्वीकृति प्रदत्त की गई।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा

विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं मे सफलता प्राप्त करने मे प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने हाल ही में प्रतियोगिता पुस्तक सग्रह की स्थापना की है। जिसमे इन परीक्षाओ की तैयारी हेतु छात्रो को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय मे प्रतियोगिता परीक्षाओ से सबद्ध १२ पत्रिकायें नियमित आ रही है। इस संग्रह माध्यम मे गुरुकुल के बहुत से छात्र प्रतियोगितात्मक सेवाओ मे सफलता प्राप्त कर रहे है।

प्राचीन पांडुलिपियों एव दुर्लभ ग्रन्थों की सुरक्षा

विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा पुस्तकालय में उपलब्ध लगभग २० हजार दुर्लभ पाडुलिपियो एवं ग्रन्थो को विशेष सुरक्षा प्रदान करने हेतु जहां इन ग्रन्थो की व्यापक जिल्दबदी कराई जा रही है, वहां प्राचीन पांडुलिपियों को माइक्रोफिल्म द्वारा सुरक्षित रखने का प्रयास किया जा रहा है। इस विशाल कार्य हेतु हमे नेहरू सग्रहालय एवं पुस्तकालय, नई दिल्ली तथा भारतीय पुरातत्व संरक्षण विभाग देहरादून का सतत् सहयोग प्राप्त हो रहा है। इन ग्रन्थो के विशेष रखरखाव एवं सूचीकरण करने हेतु दुर्लभ ग्रन्थ सग्रह के नाम से अलग संग्रह हाल ही बनाया गया है। हाल ही मे सस्कृति विभाग, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार ने प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थो को सुरक्षा हेतु इस पुस्तकालय को ३०,००० का अनुदान स्वीकृत किया है। १९८३-८४ मे ३०० जीर्ण-शीर्ण दुर्लभ ग्रन्थो की सुरक्षित रूप से जिल्दबंदी कराई गई।

पुस्तकालय कर्मचारी

इस विराट पुस्तकालय की सुव्यवस्था एवं उचित प्रबन्ध हेतु इस पुस्तकालय मे १७ कर्मचारी कार्यरत है। दो पद पुस्तकालय सहायक के रिक्त है। एक पद प्रोफेशनल सहायक का हाल ही मे स्वीकृत किया गया है।

पुस्तकालय के कमचारी वर्ग का विवरण निम्न प्रकार है।

नाम	पद	योग्यता
१. जगदीशप्रसाद विद्यालंकार	पुस्तकालयाध्यक्ष	एम.ए., एम. लाइब्रेरी साइन्स, बी०एड०
२. गुलजारसिंह चौहान	सहा० पुस्तकालयाध्यक्ष	एम.ए., बी. लाइब्रेरी साइन्स

३. उपेन्द्र कुमार झा	पुस्तकालय सहायक	एम. ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र
४. हरभजन	काउन्टर सहायक	———
५. प्रेमचन्द जुयाल	पुस्तकालय लिपिक	बी.ए., आई.जी.डी., इ.जी.डी. (बोम्बे)
६. जगपालसिंह	,, ,,	मैट्रिक
७. रामस्वरूप सिंह	,, ,,	इन्टर, प्रमाणपत्र पुस्त. विज्ञान
८. ललित किशोर	,, ,,	बी.ए.,, ,, ,,
९. कौस्तुभचन्द्र पाण्डेय	,, ,,	इन्टर, ,, स्टेनोग्राफी
१०. जयप्रकाश	बुक बाइन्डर	मिडिल
११. गोविन्दसिंह	बुक लिफ्टर	,,
१२. घनश्यामसिंह	भृत्य	,,
१३. शशिकान्त	,,	इंटर, बाइंडर प्रमाण-पत्र
१४. बुन्दु	,,	———
१५. मदनपाल सिंह	,,	इन्टर, आई०टी०आई०, प्रमाणपत्र पुस्तकालय विज्ञान
१६. रघुराज	,,	बी०ए०
१७. शिवकुमार	बुक लिफ्टर	मिडिल

प्रकाशन कार्य

इस वर्ष पुस्तकालयाध्यक्ष जगदीश प्रसाद विद्यालंकार के निम्न लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

प्रकाशित निबन्धों का विवरण

(१) "वेदों में पर्यावरण : एक समीक्षा" गुरुकुल पत्रिका जनवरी १९८३

(२) "अथर्ववेद में पर्यावरण संरक्षण संबन्धी तत्व" आर्यभट्ट पत्रिका १९८४

(३) "स्वामी श्रद्धानन्द के गुरुकुल का लक्ष्य—सर्वांगीण शिक्षा देना"।

साप्ताहिक आर्य संदेश : जनवरी १९८४ –

(४) "प्रौढ़ शिक्षा पर वैदिक दृष्टिकोण" आर्य मित्र मार्च १९८४

(५) "समुचित संस्कारों से सच्चा मानव बनायें" आर्य संदेश १४ फरवरी १९८४

(६) "प्रतिभा आंकलन में पुर्न निर्धारण" युनिवर्सिटि टुडे १५ मार्च ८४

उपर्युक्त निबन्धों के अतिरिक्त पुस्तकालयाध्यक्ष नियमित रूप से गुरुकुल पत्रिका में स्वामी श्रद्धानन्द जी की लेखनी से ७५ वर्ष पूर्व गुरुकुल बृत्तान्त नामक स्थाई स्तम्भ को प्रस्तुत करने का कार्य कर रहे हैं। वर्ष १९८३-८४ में दो राष्ट्रीय स्तर के सेमीनारों में भी पुस्तकालयाध्यक्ष ने भाग लिया। मान्यवर कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी की प्रेरणा से जगदीश विद्यालंकार ने ऋषि दयानन्द कृत व्यवहार भानु को सरलीकृत रूप मे जन साधारण के सम्मुख गोर्वधन ज्योति प्रकाशनमाला को पंचम रश्मि के रूप मे प्रस्तुत किया। इस पुस्तिका का उद्देश्य उन लोगो तक ऋषि दयानन्द के विचारो को पहुंचाना है जिन्हें संस्कृत का सामान्य ज्ञान भी नही है।

पुस्तकालय के विभिन्न विभाग –

पुस्तक क्रय विभाग

इस वर्ष अप्रेल ८३ से मार्च ८४ तक की अवधि में १५८ पुस्तकें विभिन्न संस्थाओं द्वारा भेंट स्वरूप प्राप्त की गई। इस अवधि में कुल १९२४ पुस्तकें नई क्रय की गयी।

गुरुकुल प्रकाशनों के बदले में पुस्तकालय को लगभग १००० रुपये की पुस्तकें विनिमय के रूप में भी प्राप्त हुई है। पुस्तकालय के द्वारा विभागाध्यक्षों की संस्तुति के आधार पर विभिन्न विषयों की लगभग १५०,००० रुपये की पुस्तकें क्रय की गई। इस बार दीक्षान्त समारोह पर पुस्तकालय के द्वारा गुरुकुल के प्रकाशनों को विक्रय करने हेतु पृथक से स्टाल लगाया गया। स्टाल के द्वारा गुरुकुल के बारे में जानकारी देने वाले विपुल साहित्य का निःशुल्क वितरण भी किया गया।

तकनीकी विभाग

पुस्तक विक्रेताओं से जो पुस्तकें पुस्तकालय में आती हैं वे आगत पंजिका में दर्ज होती हैं। उसके पश्चात् उन पुस्तकों का विषय के अनुसार वर्गीकरण होता है। प्रत्येक पुस्तक के औसत पांच केटेलोग कार्ड बनवाये जाते है। इस वर्ष ८३-८४ में इस विभाग के द्वारा लगभग ३४०० पुस्तकों का विषय

अनुसार वर्गीकरण किया गया तथा ३००० पुस्तकों की केटेलागिंग की गई। कुल ३५०० पुस्तकें तैयार की गई।

पत्र-पत्रिका विभाग

पुस्तकालय को १० स्थानीय पत्र निशुल्क प्राप्त होते हैं। दान द्वारा प्राप्त पत्रिकाओं की संख्या १४० है। इसके अतिरिक्त २१० पत्रिकाएं चंदे से मंगवाई जाती हैं। हाल ही में ३० नयी पत्रिकाओ के मंगवाये जाने के आदेश प्रदान किये गये हैं। उसी प्रकार इन पत्रिकाओं के अंक जो नियमित नहीं प्राप्त होते उनके प्रकाशकों को बार-बार स्मरण पत्र भेजने का कार्य भी नियमित किया जा रहा है। इस वर्ष पत्रिकाओं को नियमित मंगाने हेतु १६६ स्मरण पत्र पुस्तकालय द्वारा भेजे गये। इस वर्ष से विभिन्न विषयों की २२ अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाये मंगवाई जा रही हैं। इसी प्रकार सजिल्द पत्रिकाओ का संदर्भ विभाग से अलग करके पृथक पत्रिका विभाग बना दिया गया है। इस समय पुस्तकालय में सजिल्द पत्रिकाओं की कुल संख्या ३००० है। समाचार पत्रों की मासिक फाइले भी नियमित रूप से सुरक्षित रखी जाती हैं। इसी प्रकार समाचार पत्र कक्ष की अलग व्यवस्था भी इस वर्ष से विशेष रूप से की गई है।

संदर्भ विभाग

पुस्तकालय के संदर्भ कक्ष को सजीव बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। पुस्तकालय में प्रवेश करते हुए प्रधान हाल मे पूछताछ के कक्ष की स्थापना की गई है। जिसका कार्य पाठको एवं आगन्तुको को इस पुस्तकालय की संग्रहीत सामग्री की जानकारी देना है। इसी प्रकार सदर्भ कक्ष मे नित्य ही अनेक शोध-छात्र एवं पंचपुरी के प्रबुद्ध पाठक आकर लाभ उठाते है। इस समय संदर्भ विभाग में संदर्भ ग्रंथो की संख्या ५०,००० है। पाठको को उनकी रुचि के अनुरूप पाठ्य सामग्री प्रदान कराये जाने का कार्य इस विभाग द्वारा किया जाता है। संदर्भ विभाग मे हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत भाषा के संदर्भ ग्रन्थ पृथक-पृथक रखे गये है। इसके अतिरिक्त सजिल्द पत्रिका संग्रह भी सदर्भ विभाग मे है।

पुस्तक वितरण विभाग

इस पुस्तकालय का यहां के छात्र, प्राध्यापक तथा समीपस्थ रहने वाले निवासी भी पूर्ण उपयोग करते है। ८३-८४ के वर्ष में छात्रों को घरेलु उपयोग हेतु १५,००० पुस्तकें वितरित की गई। पुस्तकालय के कुल सदस्यों की संख्या ८३-८४ में ४०६ रही। इस बृहत् पुस्तकालय का लाभ केवल विश्वविद्यालय के छात्रों, प्राध्यापकों के अलावा पंचपुरी के निवासियों को भी प्राप्त हो इस हेतु वर्ष ८१-८२ से बाह्य सदस्यता देने का सिलसिला भी प्रारम्भ किया गया है।

आरक्षित पाठ्य पुस्तक विभाग

छात्रों को उनके विषयो की पाठ्य पुस्तक पुस्तकालय में किसी भी समय आने पर उपलब्ध हो, इस हेतु आरक्षित पाठ्य पुस्तको का संग्रह प्रत्येक विषय का बनाया जा रहा है। इन पाठ्य पुस्तको को छात्र पुस्तकालय भवन में ही परिचय पत्र देकर उपयोग में ले सकता है। छात्रो में शान्ति एवं मनोयोग से पुस्तकालय में ही पुस्तकें पढ़ने की मनोवृति का भी विकास होने में सहायता मिली है।

जिल्दबंदी विभाग

८३-८४ वर्ष में पुस्तकालय की लगभग ३००० पुस्तको की जिल्दबंदी एवं मरम्मत का कार्य किया गया। पुस्तकालय मे लगभग इस समय ३०,००० पुस्तके एव ३०० पत्रिकाओ की अविलम्ब जिल्दबदी की जानी आवश्यक है। पुस्तकों की सुरक्षा के इस कार्य को पूरा करने हेतु संस्कृति विभाग, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार की ओर से इस पुस्तकालय को ३०,००० रुपये का अनुदान भी इस वर्ष स्वीकृत किया गया है। अनुदान से इस वष १००० पत्रिकाओं की जिल्दबंदी की गई है।

पाठकों की संख्या में वृद्धि

पिछले कुछ मास मे पुस्तकालय का उपयोग करने वाले पाठकों में असाधारण वृद्धि हुई है जो उत्साह की बात है। इस वर्ष लगभग २२,००० पाठको ने इस पुस्तकालय की सामग्री का उपयोग किया।

पुस्तकालय कर्मचारियों का कार्य विवरण

जनवरी ८२ से सभी पुस्तकालय कर्मचारियो को यह निर्देश दिया गया है कि वे अपने दिन-प्रतिदिन के कार्य का विवरण मासिक कार्य विवरण प्रपत्र में भरा करें, जिसके अनुसार अब सभी कर्मचारियो के द्वारा किये जाने वाले कार्य का आकलन समय-समय पर होता रहता है। जिससे पुस्तकालय की व्यवस्था को सुन्दर बनाने में कर्मचारियों का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग हो रहा है।

फोटोस्टेट सेवा

विश्वविद्यालय के शोध छात्रों एवं प्राध्यापकों की सुविधा हेतु पुस्तकालय में फोटोस्टेट की सुविधा वर्ष ८३-८४ से उपलब्ध हो गई है। फोटोस्टेट की इस सुविधा से पुस्तकालय की अनेक दुर्लभ पाडुलिपियों की भी सुरक्षा हो सकेगी।

यू०जी०सी० विजिटिंग टीम का पुस्तकालय अवलोकन

यू०जी०सी की विजिटिंग टीम ने दिनांक ८-३-८४ को पुस्तकालय का अवलोकन किया। विजिटिंग टीम के सदस्य पुस्तकालय के भव्य संग्रह को देखकर गंभीर रूप से प्रभावित हुये। विजिटिंग टीम के सदस्यों ने गुरुकुल प्रकाशन संग्रह एवं गुरुकुल के स्नातकों एवं प्रध्यापकों के विपुल प्रकाशन संग्रह को देखकर हर्ष अभिव्यक्त किया।

छठी पंचवर्षीय योजना में पुस्तकालय को स्वीकृत धनराशि

पुस्तकालय को छठी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत १०,००,००० रु० से भी अधिक का अनुदान स्वीकृत किया गया है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालयाध्यक्ष, प्रोफेशनल असिस्टेंट तथा पुस्तकालय सहायक के भी क्रमशः एक, एक एवं दो पद स्वीकृत किये गये हैं। उक्त अनुदान का ब्यौरेवार विनियोजन निम्न प्रकार से किया जा रहा है।

(१)	विभिन्न विषयों की नवीन पुस्तकें मंगवाने में उपलब्ध धनराशि —	५,००,००० रु०
(२)	नवीन पत्रिकायें मंगवाने में व्यय	१,००,००० रु०
(३)	विगत वर्षों के पत्रिकाओं के अंक	१,५०,००० रु०
(४)	संदर्भ ग्रन्थों हेतु	१,००,००० रु०
(५)	पाठ्य पुस्तकों हेतु	५०,००० रु०
(६)	पुस्तकालय उपकरण एवं फर्नीचर हेतु आरक्षित राशि	१,००,००० रु०

विशिष्ट आगन्तुक

वर्ष १९८३-८४ में अनेक विशिष्ट व्यक्तियों ने इस पुस्तकालय का अवलोकन किया। जिनमें प्रमुख हैं श्री बलराम जाखड़, लोकसभाध्यक्ष, श्री दिग्विजय नारायणसिंह, उपमंत्री पर्यावरण विभाग, नवीन क्वेगेटा (वियतनाम के राजदूत), थमचान (कपूचिया के राजदूत), सेली खाम्से (लाओस के राजदूत)। इनके अतिरिक्त अनेक विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने भी इस पुस्तकालय का अवलोकन किया जिनमें प्रमुख है—कुलपति, काश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर, श्री आर०एल० पारीख, कुलपति गुजरात विद्यापीठ, डॉ० रमारंजन मुकर्जी, कुलपति बर्दवान विश्वविद्यालय, डॉ० एम० आराम, कुलपति गांधी ग्राम इत्यादि। लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने पुस्तकालय का ४० मिनट तक अवलोकन किया तथा यू०जी०सी० से उन्होंने आग्रह किया है कि इस पुस्तकालय के विकास में विशेष रुचि ली जाये।

पुस्तकालय कार्यवृत्त एक नजर में

	१९८२-८३	१९८३-८४
१. पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग	२०,०००	२२,०००
२. भेंट स्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	७९५	१५८
३. नवीन पुस्तकें क्रय की गई	८७०	१९२४
४. वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	१५००	३४००
५. पुस्तको की केटेलागिंग की गई	१५००	३०००
६. पत्रिकाओ की संख्या	२७०	३५०
७. पत्रिकाओ की नियमित आपूर्ति हेतु भेजे स्मरण पत्रों की संख्या	१३०	१९६
८. सजिल्द पत्रिकाओं की संख्या	२०३०	३०००
९. पत्रिकाओ की जिल्दबंदी की संख्या		१०००
१०. पुस्तको की जिल्दबंदी की संख्या	१५००	३०००
११. पुस्तकों का कुल संग्रह	८२,९४७	८५,०२९

—जगदीशप्रसाद विद्यालंकार
पुस्तकालयाध्यक्ष

क्रीड़ा रिपोर्ट

क्रीड़ा समिति

(१) श्री बलभद्र कुमार हूजा, कुलपति
(२) श्री रामप्रसाद वेदालंकार, उप-कुलपति
(३) प्रो० वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव
(४) श्री बृजमोहन थापर, वित्त अधिकारी
(५) डॉ० श्यामनारायण सिंह, उप-कुलसचिव
(६) डॉ० काश्मोर सिंह भिण्डर
(७) श्री कौशल कुमार
(८) डॉ० त्रिलोकचन्द
(९) श्री वृजेन्द्र कुमार
(१०) डॉ० राधेलाल वार्ष्णेय, जन-सम्पर्क अधिकारी एवं सचिव कुलपति
(११) श्री करतारसिंह
(१२) श्री ओमप्रकाश मिश्र (अध्यक्ष क्रीड़ा विभाग तथा संयोजक क्रीडा-समिति)

सत्र ८३-८४ के प्रारम्भ होते ही श्री करतार सिंह, क्रीड़ा कोच तथा अन्य प्रोफेसरों क सहयोग से विभिन्न खेलो की प्रैक्टिस प्रारम्भ हुई। इस वर्ष पिछले वर्ष की भांति योग-कक्षायें डॉ० त्रिलोकचन्द्र तथा श्री ईश्वर भारद्वाज की देख-रेख में प्रारम्भ हुई। पिछले वर्ष जिन ४६ विद्यार्थियो ने योग के पाठ्यक्रम को पास कर लिया था, उन्हे माननीय सत्यकाम जी, माननीय श्री बलभद्र कुमार हूजा, कुलपति द्वारा आशीर्वाद दिया गया तथा उन्हें प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। इस सत्र में ६५ विद्यार्थियों ने योग की कक्षाओं में प्रवेश लिया, जिनमें से ४४ विद्यार्थियों ने इस पाठ्यक्रम को पास कर लिया है।

इस सत्र में विद्यार्थियों ने हाकी की प्रैक्टिस अक्तूबर मास में प्रारम्भ कर दी थी तथा विभिन्न स्थानीय टीमों से मैच खेले। नवम्बर में बी०एच०ई०एल० की टीम से हमारी टीम २-१ गोल से विजयी रही तथा दिसम्बर मास में खेले गये एक दूसरे मैच में हमारी टीम ने बी०एच०ई०एल० की टीम को ३-२ से

पराजित किया। विश्वविद्यालय की टीम ने उत्तर क्षेत्रीय अन्तर-विश्वविद्यालय हाकी प्रतियोगिता, जो अलीगढ़ में सम्पन्न हुई, में भाग लिया। वहां पर हमारी टीम का प्रदर्शन सन्तोषजनक रहा।

विश्वविद्यालय की क्रिकेट-टीम की प्रैक्टिस भी डॉ० श्यामनारायण सिंह तथा डॉ० काश्मीर सिंह की देख-रेख में प्रारम्भ हुई। स्थानीय डिग्री कालेज से कुछ मैच हमारी टीम ने खेले और उनमें विजय प्राप्त की। इसी प्रकार अन्य स्थानीय क्लबों से भी मैच आयोजित किये गये और वहां भी हमारी टीम का प्रदर्शन सन्तोषजनक रहा। विश्वविद्यालय की टीम ने उत्तर-क्षेत्रीय क्रिकेट-प्रतियोगिता में भाग लिया। यह प्रतियोगिता पटियाला में आयोजित की गई थी।

विश्वविद्यालय की कबड्डी-टीम भी प्रो० ज्ञानचन्द जी के सहयोग से अच्छी तैयारी कर रही है। स्वामी श्रद्धानन्द कबड्डी टूर्नामेन्ट तथा महावीर क्लब हरिद्वार द्वारा आयोजित कबड्डी टूर्नामेन्ट में हमारी टीम का प्रदर्शन अच्छा रहा।

७ जनवरी १९८४ को विश्वविद्यालय की क्रिकेट-टीम ने स्थानीय एस०एम०जे०एन० डिग्री कालेज की टीम से मैच खेला, जिसमें विश्वविद्यालय की टीम विजयी रही।

२३ जनवरी ८४ को मोती क्लब, हरिद्वार द्वारा आयोजित कबड्डी टूर्नामेन्ट में विश्वविद्यालय की टीम ने भाग लिया, इसमें हमारी टीम का प्रदर्शन सन्तोषजनक रहा तथा सेमिफाईनल में पहुँच गई।

१७, १८ फरवरी को विश्वविद्यालय में बैडमिन्टन एवं टेबिल-टेनिस के टूर्नामेन्ट का आयोजन हुआ, जिसमें मनोज कुमार बी०एस-सी० का छात्र क्रमशः बैडमिन्टन में प्रथम एवं टेबिल-टेनिस में द्वितीय रहा। छात्र टेबिल-टेनिस प्रतियोगिता में अतुलकुमार सिंह प्रथम आये।

६, ७ मार्च को विश्वविद्यालय की एथेलेटिक मीट हुई, जिसमें विद्यालय, विज्ञान-महाविद्यालय तथा कला महाविद्यालय के छात्रों ने भाग लिया।

–ओमप्रकाश मिश्र
अध्यक्ष,

राष्ट्रीय छात्र-सेना [एन०सी०सी०]

इस वर्ष भी एन०सी०सी० छात्रों ने स्वतन्त्रता-दिवस समारोह में भाग लिया। वार्षिक प्रशिक्षण शिविर, रायपुर, देहरादून मे लगाया गया। इसमें छात्रों ने भाग लिया, अनुशासित रहते हुए प्रत्येक कार्य में रुचिपूर्वक भाग लिया। शिविर में वाद-विवाद प्रतियोगिता में क्रमशः हमारे छात्र श्री सूर्यप्रकाश एवं श्री ऋषिपाल ने प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

नवम्बर में एन०सी०सी० दिवस भल्ला कालेज के मैदान में बड़े जोर-शोर से मनाया गया, इसमें एक भव्य परेड का आयोजन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री बलभद्र कुमार हूजा, कुलपति थे। इस अवसर पर छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

गणतन्त्र–दिवस समारोह में एन०सी०सी० छात्रों ने भाग लिया। समारोह के मुख्य अतिथि माननीय कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा थे।

छात्रों ने ३०३ रेन्ज क्लासिफिकेशन फार्यरिंग मे भाग लिया। छात्रों ने बी० तथा सी० सर्टिफिकेट परीक्षा में भाग लिया।

सामाजिक सेवा के लिए छात्रों ने उत्तम कार्य किया।

—मेजर वीरेन्द्र अरोड़ा
अध्यक्ष

राष्ट्रीय सेवा योजना

इस सत्र में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की विज्ञान एवं कला वेद महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई द्वारा निम्नलिखित कार्य किये गये—

(१) छात्रों द्वारा विज्ञान एवं वेद तथा कला महाविद्यालय के चारों ओर फैले मैदानों, परिसर एवं सडकों और भवनों के चारो तरफ निरन्तर सफाई, स्वच्छता एवं रख-रखाव का कार्य लगातार किया जाता रहा। वास्तव में यह सब कार्य इतना अधिक होता था कि सेवा योजना के छात्रों को प्राय: आधा समय इन्ही कार्यों मे लगाना आवश्यक होता था।

(२) राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रो ने विश्वविद्यालय परिसर के बीचों-बीच जाती हुई सड़क के दोनो ओर उगी खरपतवार और गत वर्षों में लगाये गये पौधों की चारो ओर निरन्तर सफाई की।

(३) विद्यालय विभाग मे गुलाब की क्यारियो की गुडाई-निराई निरन्तर की गयी।

(४) अमृत वाटिका जो विगत कई वर्षो से झाड़-झंकार से भरी पड़ी थी, की सफाई की और यज्ञशाला के चारों ओर क्यारियां बनाई गयी।

(५) कुछ छात्रों ने स्थानीय अस्पतालों में जाकर रोगी व्यक्तियों की सेवार्थ कार्य किया।

(६) दिसम्बर ८३ माह में २२-१२-८३ से ३१-१२-८३ तक छात्रों का दूसरा वार्षिक शिविर का आयोजन पुण्यभूमि कांगड़ी ग्राम में किया गया। इसकी विस्तृत रिपोर्ट अलग से पहले ही दी जा चुकी है।

(७) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की टीम के यहां आने पर छात्रों ने वालन्टियर के रूप में कार्य किया।

(८) गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीक्षान्त समारोह सप्ताह के सातों दिन राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों ने दिन-रात स्वयं-सेवकों की तरह प्रत्येक स्थान में प्रशंसनीय कार्य किये।

(९) वेद तथा कला महाविद्यालय के कुछ छात्रों द्वारा कांगड़ी ग्राम में जाकर प्रौढ़ शिक्षा सम्बन्धी सर्वेक्षण किया गया।

(१०) जुलाई ८३ में वन महोत्सव सप्ताह में राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों द्वारा प्रशंसनीय कार्य किया गया।

उक्त सभी कार्यों के लिए विश्वविद्यालय अधिकारियों तथा कुलपति जी, कुलसचिव जी, वित्ताधिकारी, प्रधानाचार्य विज्ञान महाविद्यालय, वेद तथा कला महाविद्यालय के सहायक कोओर्डिनेटर का राष्ट्रीय सेवा योजना में योगदान सराहनीय रहा है एवं राष्ट्रीय सेवा योजना का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है।

—वीरेन्द्र अरोड़ा
प्रोग्राम कोआर्डिनेटर

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

एन०एस०एस० यूनिट वार्षिक रिपोर्ट

इस वर्ष के नियमित कार्यक्रम के अन्तर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयं-सेविकाओं ने चिडिया मंडी के आर्यनगर के साथ जुड़ती हुई बस्ती में कार्य आरम्भ किया। जिसमें उन्होंने स्थानीय महिलाओं को सिलाई-कढाई व बुनाई की शिक्षा दी। जिसमें १६ परिवारो की महिलाओ को बच्चों तथा महिलाओं के वस्त्र काटना व सिलना सिखाया। प्लास्टिक की तार से थैले, गुलदस्ते, टोकरियां व लैम्प शैड आदि बनाने भी सिखाये।

स्थानीय महिलाओ की सहायता से एक छोटी नाली बनाई गई, जिसे नगरपालिका के नाले के साथ मिलाया गया। बच्चो को तरह-तरह के खेल जैसे वॉलीबाल, खो-खो इत्यादि भी सिखाये गये।

स्वयं-सेविकाओ को ब्लाइन्ड स्कूल, रफल होम, लेपरोसी कालोनी में ले जाया गया। लेपरोसी कालोनी मे बच्चों को पढ़ाया। मूक बधिर और अंगहीन बच्चों के लिए खाना बनाया और उन्हें खिलाया तथा उनकी विवशताओं को समझने का प्रयास किया।

तत्पश्चात् वार्षिक शिविर जो कि "तपोवन आश्रम" में लगा जिसमें स्वय-सेविकाओं ने गन्दे पानी के निकास के लिए गड्ढे खोदे तथा पुराने गड्ढों को साफ किया। इस कार्य को लगभग ७० घरों में किया गया। पेड़ लगाने के लिए ५०० गड्ढे खोदे गये। सिलाई-कढाई व बुनाई की शिक्षा दी गई। कटाई का काम कागज व पुराने कपड़े पर सिखाया गया।

सामाजिक जागरूकता के लिए गोष्ठियां की गई जिसमें वहां की स्थानीय महिलाओं को एकत्रित करके बातचीत के माध्यम से सरकार द्वारा महिलाओ के उत्थान के लिए किये जाने वाले कार्यों से अवगत कराया गया। महिलाओं तथा बच्चों की व्यक्तिगत सफाई के लिए महिला डाक्टर का सहयोग लिया।

वातावरण को दूषित होने से बचाने के लिए चार्ट तथा मॉडल के माध्यम से गांव के लोगों को पेड़ लगाने तथा पेड़ों के विनाश को रोकने के लिए प्रेरित किया गया। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र से प्राप्त सामग्री को बांटा गया। ऊर्जा के नये साधनों का प्रचार किया। इसके अतिरिक्त तपोवन आश्रम के लिए सड़क से आने-जाने वाले रास्ते को मिट्टी व पत्थर डालकर ठीक किया गया। आश्रम के स्कूल में छात्राओं ने संगीत तथा नृत्य की शिक्षा दी।

वार्षिक शिविर के पश्चात् स्वयं-सेविकाओं ने नियमित कार्यक्रम में स्थानीय नेहरु युवक केन्द्र के यूथ लीडरशिप प्रोग्राम में भाग लिया। जिसमें जॉनसार बाबर से आई हुई लड़कियों के साथ मिलकर प्रौढ़ शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के कार्यक्रम किये।

रिस्पना नदी के साथ बसी हुई झुग्गी-झोंपड़ी में रहने वाले लोगों को बिना धुएँ का चूल्हा और सूर्य से पानी गर्म करना, ईंधन की बचत के विषय में जानकारी दी तथा प्रयोग करके दिखाए गए।

इस वर्ष के नियमित कार्यक्रम में आखिरी सत्र में स्वयं-सेविकाओं ने घरों में पिछले बनाये हुए गड्ढ़ों को साफ करवाया। पानी के निकास की नालियां ठीक की और कुछ घरों में सफाई और कुपोषण से बचने के तरीको से अवगत कराया। इस तरह से हमारे इस वर्ष के नियमित कार्य का समापन हुआ।

राष्ट्रीय सेवा योजना वार्षिक शिविर तपोवन (नालापानी)

दिनांक ६-१-८४ से १५-१-८४ तक

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की २५ छात्राओं तथा दो स्थानीय छात्राओं ने इस शिविर में भाग लिया। शिविर का उद्घाटन कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा ने किया। कार्यक्रम के अनुसार छात्राओं को विभिन्न समितियों में बांटा गया। १० दिन के शिविर में स्वयं-सेविकाओं ने गांव हरचावाला, सुन्दरवाला तथा डॉडी में लोगों के घरों में गन्दे पानी के निकास के लिए गड्ढे बनाये तथा पुराने गड्ढों को साफ करवाया। इस कार्यक्रम में लगभग ७० घरों में काम किया। ६ दिन स्वयं-सेविकाओं ने कढ़ाई, सिलाई व बुनाई की विभिन्न विधियां गांव की महिलाओं को सिखाई। छात्राओं ने कागज पर काटकर कटाई सिखाई, जिसे बहुत पसन्द किया गया।

महिलाओं में सामाजिक जागरूकता लाने के लिए स्वयं-सेविकाओं ने चार गोष्ठियां की। इसमें दोपहर पश्चात् जिस समय ग्रामीण महिलायें कुछ समय लिए खाली रहती थीं तो उनको एकत्रित करके बातचीत के माध्यम से सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए किये जाने वाले कार्यों से अवगत कराया गया। इसके साथ महिलाओं को व्यक्तिगत सफाई तथा बच्चों की देखभाल, बच्चों को अच्छा आहार और उनके स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी दी गई। इसमें हमने स्थानीय रेडक्रास की महिला डाक्टर का सहयोग लिया।

वातावरण को दूषित होने से बचाने के लिए स्वयं-सेविकाओं ने चार्ट तथा मॉडल के माध्यम से गांव के लोगों को पेड लगाने के लिए तथा पेड़ों का विनाश को रोकने के लिए प्रेरित किया। गांव के गरीब घरों में जाकर स्वयं-सेविकाओं ने उन्हें साक्षरता के लिए प्रेरित किया। इसके लिए स्थानीय प्रौढ़ शिक्षा विभाग से प्राप्त कुछ सामग्री का बंटन किया। स्वयं-सेविकाओ ने चार्टों के माध्यम से ऊर्जा के नये साधनों का प्रचार किया। गोबर गैस प्लांट लगाने के लिये अधिकतम जानकारी देने के लिए तपोवन आश्रम मे लगे प्लांट को दिखाया गया। स्वयं-सेविकायें प्रतिदिन शाम को स्थानीय महिलाओं के साथ वालीबाल, नेटबाल आदि खेलती थी।

इसके अतिरिक्त तपोवन आश्रम के लिए सड़क से आने वाले रास्ते को मिट्टी व पत्थर डालकर ठीक किया। आश्रम के स्कूल में छात्राओं ने संगीत तथा नृत्य की शिक्षा दी। इस शिविर में प्रतिदिन कोई न कोई विद्वान छात्राओं को व्याख्यान देने के लिए आते रहे।

इस तरह १० दिनों के इस शिविर में स्वयं-सेविकाओ ने अपना एक-एक क्षण राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम को सफल बनाने मे लगाया।

बलबीर कौर
प्रोग्राम ऑफिसर

कांगड़ी ग्राम विकास योजना

योजना के शुभारम्भ की घोषणा २५ जुलाई १९८१ को कांगडी ग्राम में विश्वविद्यालय के कुलपति श्री जी०बी०के० हूजा, आई०ए०एस० (रिटायर्ड) ने की। मुरादाबाद मंडल के आयुक्त श्री अरविंद वर्मा (आई०ए०एस०) ने योजना का उद्घाटन किया। तब से अब तक ग्राम में अनेक सामाजिक एव आर्थिक तथा शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम सफलतापूर्वक चलाए गए है।

वर्ष १९८३-८४ में जिन गणमान्य व्यक्तियों ने ग्राम में आकर विकास कार्यक्रमों को देखा और ग्रामवासियों को प्रोत्साहित किया वे इस प्रकार है—

(१) श्री बलराम जाखड़, अध्यक्ष लोकसभा, भारत सरकार

(२) श्री वेंकटरमन, सामुदायिक विकास एवं कृषि उत्पादन आयुक्त उत्तर-प्रदेश

(३) श्री बेन्स, जिलाधिकारी बिजनौर

इस अवधि मे ग्राम में अनेक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक प्रगति हुई। मान्य कुलपति जी की प्रेरणा से ग्राम मे प्रौढ शिक्षा केन्द्र स्थापित किया गया एवं विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण प्रदर्शनी एवं पर्यावरण शिक्षा तथा प्रसार के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। ग्रामवासियों को बैंक से ऋण दिलाने मे सहायता कर के उन्हे अनेक प्रकार के रोजगार प्रारम्भ करने एवं पशुपालन द्वारा उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार लाया गया। साग-सब्जी एवं फूलों के लिए गेंदा आदि बोने के लिए ग्रामवासियो को सुझाव दिए गए जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई। पिछले वर्ष जिन निर्बल आवास गृहों का निर्माण प्रारम्भ हुआ था वह प्रायः पूर्ण हो चुका है। चार पक्की दुकानों का निर्माण हुआ। मिलन केन्द्र एवं चबूतरे का निर्माण कार्य चल रहा है। छोटे बालकों के लिए ग्राम में एक नर्सरी स्कूल चलाया गया।

पूर्वी गंगा नहर के निर्माण से ग्राम को सिद्ध स्रोत के द्वारा हानि की संभावना का अध्ययन किया गया। ग्राम को बाढ़ से बचाने के लिए नदी के किनारे भूमि पर वृक्षारोपण के कार्यक्रम एवं नदी से पत्थर उठाने पर रोक लगाने की सिफारिश की गई। खण्ड विकास अधिकारी नजीबाबाद को इस स्थिति से अवगत कराया गया।

—**डॉ॰ विजयशंकर**
निदेशक
अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग

गंगा समन्वित योजना

भारत सरकार पर्यावरण विभाग

माननीय कुलपति श्री जी०बी०के० हूजा, आई०ए०एस० (अवकाश प्राप्त) की प्रेरणा से उपरोक्त योजना डॉ० विजयशंकर ने बनाकर भारत सरकार पर्यावरण विभाग नई दिल्ली को भेजी। पर्यावरण विभाग ने डॉ० विजयशंकर के निर्देशन में कार्य करने के लिए यह पर्यावरण एवं परिस्थिति की शोध योजना स्वीकार की और इसके लिए रु० ९.३७ लाख धनराशि का अनुदान स्वीकृत किया। योजना के लिए एक वैज्ञानिक, छः रिसर्च फैलोज़, दो अटेन्डैन्ट एवं एक माली का स्टाफ स्वीकृत हुआ। प्रिंसिपल इनवैस्टिगेटर के साथ/निर्देशन में जो टीम कार्य कर रही है उसका विवरण इस प्रकार है—

(१) प्रिंसिपल इनवैस्टिगेटर— डॉ० विजयशंकर
अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग
गु०कां०वि० हरिद्वार

(२) इनवैस्टिगेटर्स—
१. डॉ० रामकुमार पालीवाल
अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग
गु०कां०वि० हरिद्वार

२. डॉ० बी०डी० जोशी
अध्यक्ष, जन्तु विज्ञान विभाग

३. प्रो० एच०सी० ग्रोवर
अध्यक्ष, भौतिकी विभाग
गु०कां०वि० हरिद्वार

४. डॉ० पुरुषोत्तम कौशिक
प्रवक्ता, वनस्पति विज्ञान विभाग

(३) रिसर्च साइन्टिस्ट— डॉ० आर०पी०एस० संगू

(४) सीनियर रिसर्च फैलो— दो स्थान (रिक्त)

(५) जूनियर रिसर्च फैलोज— १. श्री अनिल कुमार
२. श्री महेन्द्र पांडे
३. श्री केदार शर्मा
४. श्री जी०पी० जोशी

(६) लैब/फील्ड अटेन्डेन्ट— १. श्री चन्द्रप्रकाश
२. श्री पोक पाल

(७) माली— श्री रामअजोर

(८) ड्राइवर— श्री श्रीराम

उद्देश्य

(१) गंगा क्षेत्र में वनस्पतियों, जन्तुओं, फाइटोप्लांकटन एवं जूप्लांक्टन की सूची बनाना ।

(२) गंगा को प्रदूषित करने वाले स्रोतों का पता लगाना एवं उनकी प्रकृति की जानकारी प्राप्त करना।

(३) मिट्टी के गुणों में गिरावट, बाढ एवं भूमि अप्रर्दन के कारणों का पता लगाना एवं उनके निवारण के उपाय ।

(४) गंगा और गंगा बेसिन के फिजियो केमिकल एवं बाइलोजिकल केरेक्टर्स का अध्ययन ।

(५) उपयुक्त प्रयोगो द्वारा पौधों की उन प्रजातियों का पता लगाना जो फैक्टरी एवं शहर के नालों के गंदे पानी पर उग सकती हों एवं उनके प्रदूषकों को सोख कर प्रदूषण की समस्या को हल करने में भी कारगर हों।

(६) हरित-नील शैवाल एवं एजोला आदि पादपों को जलप्लावित भूमि में उगा कर देश की उर्वरक समस्या को हल करने में योगदान देना ।

(७) नदी द्वारा भूमिकटाव को रोकने के लिए वृक्षारोपण करना। इसके लिये उपयुक्त प्रयोगों द्वारा एवं नदी तट पर उगने वाली प्राकृतिक वनस्पतियों की पहचान एवं अध्ययन करके उपयुक्त पौधों का पता लगाना एवं उन्हें नर्सरी में उगाना।

(८) गंगा के किनारे बसे ग्रामों का सामाजिक-आर्थिक सर्वे एवं अध्ययन।

—**डॉ० विजयशंकर**
निदेशक
अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग

प्रौढ़ तथा सतत शिक्षा विभाग

विश्वविद्यालय की सर्वांगीण प्रगति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील आदरणीय कुलपति जी ने विश्वविद्यालय के द्वारा प्रौढ शिक्षा एवं साक्षरता कार्य-क्रम संचालन के लिए मास अगस्त ८३ में आरम्भिक प्रयास किया। उनके प्रयास से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने मास अगस्त ८३ में २५०० रु० का अनुदान प्रदान कर इस कार्य-क्रम को प्रारम्भ करने की अनुमति प्रदान की। माननीय कुलपति जी प्रौढ़ शिक्षा को मिशन के रूप में चलाना चाहते हैं। जिसके लिए उन्होने यू० जी० सी० से प्रौढ शिक्षा का पृथक् विभाग खोलने की मांग की और इस दिशा में कार्यालय द्वारा निरन्तर कार्यवाही की जाती रही। २ अक्टूबर ८३ को गांधी जयन्ती के अवसर पर ग्राम कांगडी में साक्षरता दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साक्षरता आयोजन को महत्ता एवं अनिवार्यता पर विभिन्न वक्ताओं ने प्रकाश डाला। सभा मे कुल सचिव डॉ० बी० डी० जोशी, डॉ० विजयशकर आदि ने अपने विचार रखे। मान्य कुलपति जी ने साक्षरता की आवश्यकता निरुपित करते हुए प्रौढ शिक्षा को सामाजिक अभियान बनाने का आह्वान किया। कार्य-क्रम का सफल संचालन प्रौढ शिक्षा के कोर्डिनेटर डॉ० त्रिलोकचन्द ने किया। दिसम्बर ८३ में ३० केन्द्रो की एक योजना की स्वीकृति प्राप्त हुई एवं जनवरी ८४ में गुरुकुल कागड़ी, कनखल, ज्वालापुर, कांगड़ी ग्राम तथा आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रो मे इन ३० केन्द्रो को प्रारम्भ किया गया। इन केन्द्रो मे प्रारम्भिक रूप में विश्वविद्यालय के छात्रों को नियुक्त किया गया जिन्होने पूर्ण निष्ठा व लगन से केन्द्रों को प्रारम्भ किया व चला रहे हैं। ग्रामवासियों ने प्रौढ़ शिक्षा के प्रति पर्याप्त उत्साह व उत्सुकता प्रकट की है एवं उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है। मास मार्च ८४ में केन्द्रों को सुव्यवस्थित व सुचारु रूप से चलाने के लिए सुपरवाईजर के पद पर श्री अशोक त्रिपाठी की नियुक्ति की गई तथा अप्रैल मास में कार्यालय प्रबन्ध के लिए श्री कालूराम त्यागी की अंशकालिक नियुक्ति की गई। इस अवधि में प्रौढ शिक्षा कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली में एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया तथा कानपुर में उत्तर-प्रदेश प्रौढ़ शिक्षा सोसायटी की बैठक मार्च ८४ में सम्पन्न हुई एवं बनारस में अप्रैल मास में सामुदायिक शिक्षा पर अखिल भारतीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इन सभी

आयोजनों मे विश्वविद्यालय के कोआर्डिनेटर डॉ० त्रिलोक चन्द ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और सम्बन्धित विषय पर अपने विचार भी प्रस्तुत किये जिनकी सर्वत्र सराहना की गई। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने ३० और केन्द्रो की स्वीकृति जुलाई ८४ को प्रदान की है। कुलपति जी के मार्ग निर्देशन में डॉ० त्रिलोक चन्द एवं उनके विभाग की तथा विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियो की कृपा तथा जनता के सहयोग को देखते हुए वह दिन दूर नही जब प्रौढ़ शिक्षा का कार्य-क्रम एक पृथक संकाय के रूप में विश्वविद्यालय द्वारा संचालित किया जाएगा।

स्टाफ—

(१) डॉ० त्रिलोकचन्द, कोर्डिनेटर, एम०ए०, पी-एच०डी०

(२) श्री अशोक त्रिपाठी, सुपरवाईजर, एम०ए०

(३) श्री कालूराम त्यागी, लेखक, एम०ए०

—डॉ० त्रिलोकचन्द
कोर्डिनेटर

विकास योजना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में प्रगति की लहर २ जुलाई सन् ८० को एक नए उत्साह के साथ विद्युत प्रवाह की भांति शुरु हो गयी है। कुलपति श्री हूजा जी के भागीरथ प्रयास से विश्वविद्यालय के प्रत्येक विभाग में निर्माण व विकास योजनाओं का जहां बनना प्रारम्भ हुआ वहीं साथ ही उनका क्रियान्वयन भी शुरु कर दिया गया।

श्री कुलपति जी के प्रयास से काफी अंतराल के बाद विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रोफेसर्स क्वाटर्स के निर्माण के लिए सन् १९८३ में २० लाख रु० स्वीकृत किया गया। इन भवनों का निर्माण श्रद्धानन्द द्वार के बाहर की भूमि पर २ फरवरी सन् ८४ को यज्ञ कर श्री सत्यव्रत (विजिटर), श्री वीरेन्द्र कुलाधिपति, श्री कुलपति जी, श्री उपकुलपति जी, समस्त उपाध्यायगण व कर्मचारियों की अपार खुशियों के साथ प्रारम्भ किया गया। यह निर्माण कार्य मार्च ८५ तक उ० प्र० सा०नि०वि०, निर्माण खण्ड, रुड़की द्वारा पूर्ण होना संभावित है।

विश्वविद्यालय में विद्युत का कनैक्शन न होना आज के युग में काफी हास्यास्पद सा लगता था। इसको देखते हुए श्री कुलपति जी ने सन् ८३ में उ०प्र०रा०वि० परिषद् से विश्वविद्यालय के लिए स्वतंत्र विद्युत कनैक्शन लेने की स्वीकृति दी। जिस पर प्रोफेसर डॉ० विनोदचन्द सिन्हा जी ने अथक प्रयास कर उ०प्र०रा०वि० परिषद के चेयरमैन से ५० के०वी० का विद्युत कनैक्शन स्वीकृत करवा कर प्रकाश का नया अध्याय जोड़ने में सफलता प्राप्त की। उ०प्र०रा०वि०प० हरिद्वार ने विश्वविद्यालय को ११ अप्रैल ८४ को कनैक्शन दिया जिसका उद्घाटन माननीय कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी ने ११ अप्रैल ८४ को किया।

उपरोक्त के अतिरिक्त मार्च १९८५ तक निम्न कार्य भी पूर्ण होना संभावित है जिनके लिए भी वि०वि०अ० आयोग ने अनुदान स्वीकृत किया है—

(१) अतिथि भवन का पुर्ननिर्माण।

(२) विश्वविद्यालय भवन को व्यवस्थित करना।

(३) शिक्षेकत्तर कर्मचारियों के आठ क्वाटर्स का निर्माण।

इन कार्यों के साथ सड़कों को सुन्दर बनाने के लिए फूलदार वृक्षारोपण, वेदकला म०वि०, पुस्तकालय, विज्ञान महाविद्यालय, संग्रहालय को लिंक रोड बनाकर मुख्य सड़कों से जोड़ना।

मार्च ८५ तक विश्वविद्यालय में अब तक आई समस्त चल व अचल सामग्री का विधिवत् रूप से एक स्थान पर रिकार्ड तैयार करना अपेक्षित है।

श्री कुलपति जी के रात-दिन परिश्रम व लगन को देखते हुए लगता है कि एक दिन समस्त इन्सानियत को यहीं से प्रेम व शांति के साथ वैदिक संदेश प्राप्त होगा।

ओ३म् शांति

—डॉ० कश्मीरसिंह भिंडर
सम्पदा व विकास अधिकारी

अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र

स्थापना—मान्य कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा जी की प्रेरणा से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में १ नवम्बर, १९८२ को अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र की स्थापना हुई जिसका उद्घाटन श्री कृष्णलाल आर्य, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, हिमाचल प्रदेश द्वारा किया गया।

स्टाफ

(१) डॉ० त्रिलोकचन्द्र—निदेशक

योग्यता : एम०ए०, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से योग में पी-एच०डी०, योग मे एक मास का सर्टिफिकेट कोर्स, तीन मास का डिप्लोमा, एक वर्ष का कोर्स।

लंदन से 'हिन्दुइज्म' त्रैमासिक पत्रिका मे योग पर लेख प्रकाशित।

विश्व योग सम्मेलन, पूना (पचगनी) मे योग पर लेख पढा। आकाशवाणी दिल्ली से योग पर वार्ता प्रसारित।

दिल्ली, मेरठ, लुधियाना कृषि विश्वविद्यालय, शिवानन्द आश्रम ऋषिकेश, आदि संस्थाओ मे योग पर व्याख्यान व क्रियात्मक प्रशिक्षण।

(२) श्री ईश्वर भारद्वाज शास्त्री—प्रशिक्षक

योग्यता : बी०ए० (आनर्स), शास्त्री, एम०ए०
योग का त्रैमासिक डिप्लोमा कोर्स (अपर्णा आश्रम मानतलाई, जम्मू-कश्मीर)।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में योग-शिक्षण का लगभग दो वर्ष का अनुभव।

गुरुकुल कण्वाश्रम में योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन।
विभिन्न प्रकार के रोगियों का योग-चिकित्सा द्वारा उपचार।

(३) श्री वासुदेव मिश्र—सेवक

यह सम्पूर्ण स्टाफ योग केन्द्र में पूर्णतया अवैतनिक रूप से कार्य कर रहा है।

कार्य विवरण

१ नवम्बर, ८२ से योग के त्रैमासिक कोर्स का आरम्भ हुआ। कुछ अभावों के कारण केवल ५२ प्रशिक्षार्थियों को प्रवेश दिया जा सका। जबकि प्रार्थनापत्र एक सौ से अधिक थे। यह कोर्स ८ फरवरी ८३ को समाप्त हुआ। इसमें ५२ में से ४६ विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। विद्यार्थियों की लिखित व क्रियात्मक तथा मौखिक परीक्षाएं ली गई थी। उत्तीर्ण छात्रों को २६ दिसम्बर, ८३ को प० सत्यकाम विद्यालंकार द्वारा प्रमाण-पत्रों का वितरण किया गया।

दूसरा त्रैमासिक कोर्स १५ सितम्बर, १९८३ से आरम्भ हुआ जिसका उद्घाटन मान्य कुलपति जी द्वारा किया गया। इसमे ६५ विद्यार्थियो को प्रवेश दिया जा सका। इन विद्यार्थियो की भी लिखित, क्रियात्मक व मौखिक परीक्षाएँ ली गई। ६५ मे से ४३ विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। कुछ विद्यार्थी उपस्थिति पूर्ण न होने के कारण परीक्षाओ से वंचित करने पड़े। यह कोर्स १५ दिसम्बर, ८३ को समाप्त हुआ।

द्वितीय त्रैमासिक कोर्स के मध्य विद्यार्थियों को ऋषिकेश व हरिद्वार के योगाश्रमो का भ्रमण व अध्ययन कराया गया। जिससे विद्यार्थियों में योग के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हुई।

विश्वविद्यालय द्वारा पूर्व स्थापित इस केन्द्र को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विजिटिंग कमेटी द्वारा भी मान्यता प्रदान कर दी गई है, जिसके सुझाव पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने योग केन्द्र के लिये निदेशक व प्रशिक्षक आदि की स्वीकृति प्रदान कर दी है। आशा है भविष्य में यह केन्द्र निरन्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर होता रहेगा।

—डॉ० त्रिलोक चन्द्र
निदेशक

दीक्षान्तोत्सव १९८४ पर दी गई उपाधियों का विवरण

कक्षा का नाम		पुरुष	महिलायें	योग
पी-एच०डी०	—	०१	—	०१
एम०ए०	—	३२	३०	६२
एम०एस-सी०	—	३८	०४	४२
बी०एस-सी०	—	३२	—	३२
विद्यालंकार	—	०६	१०	१६
वेदालंकार	—	०१	—	०१
			योग =	१५४

पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों का विवरण

अनुसंधानकर्त्ता का नाम	विभाग	सुपरवाइजर का नाम	विषय
एम०के० नाराब	प्रा०भा० इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व	डॉ० बी०सी० सिन्हा प्रोफेसर तथा हैड	हिस्टोरिकल एण्ड कल्चरल स्टडी ऑव प्रतिहार इन्सक्रिप्शन्स

दीक्षान्त समारोह १९८४ पर एम०ए० के छात्र/छात्राओं को प्रदत्त उपाधि की सूची

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
१.	३५५	८१०००२	अनुराग कुमार चतुर्वेदी	श्री गिरिराज कुमार चतुर्वेदी	द्वितीय	वैदिक साहित्य
२.	३५६	८२००४२	स्वामी धीरज दास	,, स्वामी गोविन्दानन्द	द्वितीय	वैदिक साहित्य
३.	३५७	७७००५१	मनुदेव	,, हीरालाल	प्रथम	वैदिक साहित्य
४.	३५८	८१०१५८	मोईरार्जम इबोटोन सिंह	,, एम० बिरचन्द्र सिंह	प्रथम	दर्शन शास्त्र
५.	३५९	८१०१६१	नामदेव दुघाटे	,, हीरामण दुघाटे	प्रथम	दर्शन शास्त्र
६.	३६०	७७००३४	प्रमोद कुमार शर्मा	,, हुक्मचन्द्र शर्मा	प्रथम	दर्शन शास्त्र
७.	३६१	७१०१६७	दीनानाथ शर्मा	,, रामेश्वर शर्मा	द्वितीय	दर्शन शास्त्र
८.	३६२	८१०१४९	बसन्त कुमार	,, शेरसिंह	प्रथम	संस्कृत साहित्य
९.	३६४	८१०१४३	कीर्तिदेव शर्मा	,, पतिराम शर्मा	द्वितीय	संस्कृत साहित्य
१०.	३६५	८१०१३५	सुरेन्द्र कुमार	,, बेनीराम	प्रथम	संस्कृत साहित्य
११.	३६६	८१००२३	कु० राजवन्ती आर्या	,, कंवलसिंह	प्रथम	संस्कृत साहित्य
१२.	३६७	८१०१०१	कु० मन्जूलता	,, रघुराजसिंह	द्वितीय	संस्कृत साहित्य
१३.	३६८	८०००१३	कमला	,, ओम्प्रकाश	द्वितीय	संस्कृत साहित्य
१४.	३६९	७६००३२	श्रीमती पुष्पलता देवी	,, अमरसिंह	प्रथम	संस्कृत साहित्य
१५.	३७०	७६००६८	कु० सुषमा देवी	,, हरिशचन्द्र	द्वितीय	संस्कृत साहित्य
१६.	३७१	८०००१५	कु० पूनम रानी	,, रामचन्द्र सिंह	,,	संस्कृत साहित्य
१७.	३७३	७९०११७	अनिल कुमार शर्मा	,, वेदप्रकाश	,,	प्रा.भा. इतिहास
१८.	३७४	७९००१०	अनिल कुमार	,, कालूराम	,,	,,
१९.	३७५	८१०१४७	दिनेशचन्द्र गौतम	,, पूरनचन्द्र	,,	,,
२०.	३७६	८१०१३३	कृष्णलाल	,, बिहारीलाल	,,	,,

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
२१.	३७७	८१०१६२	मुख्तार हसन कुरेशी	श्री ग्यास मुहम्मद	द्वितीय	प्रा.भा इतिहास
२२.	३७८	७९०११४	नन्दकिशोर	,, भैरव दत्त	,,	,,
२३.	३७९	७९०१५२	नरेन्द्रसिंह ग्वीराला	,, केशरसिंह ग्वीराला	,,	,,
२४.	३८०	८१०१४६	प्रदीप कुमार	,, जगदीश प्रसाद	,,	,,
२५.	३८१	८१०१५४	शिशिर कुमार पाण्डेय	,, देवी दत्त पाण्डेय	,,	,,
२६.	३८२	८१०१५७	विश्वबन्धु शर्मा	,, रामेश्वर शर्मा	,,	,,
२७.	३८३	८१००९९	कु० बीना कुमारी	,, कृष्ण बलदेव	,,	,,
२८.	३८४	८१००१४	कु० गीता	,, नन्दकिशोर गुप्ता	,,	,,
२९.	३८५	८१०१३२	श्रीमती कमलेश	,, टीकमसिंह	,,	,,
३०.	३८६	८१०१७१	मंजूरानी	,, रणजीतसिंह	,,	,,
३१.	३८८	८१००१३	कु० रीता शर्मा	,, सुदर्शन कुमार शर्मा	,,	,,
३२.	३८९	८१००२६	कु० रेखा	,, भगतराम बांगा	,,	,,
३३.	३९०	७९०१२७	कु० रेखा रानी	,, ईश्वर दास	,,	,,
३४.	३९१	८१००९४	श्रीमती शयिस्ता रफ्त	,, मौ० इस्हाक	प्रथम	,,
३५.	३९२	७९०१२८	कु० सरोज	,, प्रेमसिंह बिष्ठ	द्वितीय	,,
३६.	३९३	८१००१९	कु० सुधा शर्मा	,, हुक्मचन्द्र शर्मा	,,	,,
३७.	३९४	८१००२०	श्रीमती विनोद कुमारी शर्मा	,, दयाराम शर्मा	,,	,,
३८.	५१४	८१०१७०	श्रीमती पुष्पलता	,, ओम्प्रकाश भारद्वाज	,,	,,
३९.	३९७	८१०१३७	चमनलाल	,, रूपराम	तृतीय	अंग्रेजी साहित्य
४०.	३९८	७९००१२	जुगल किशोर	,, भैरव दत्त शास्त्री	,,	,,
४१.	४००		राजेन्द्र		द्वितीय	,,

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
४२.	४०१	८१०१५९	विवेक नारंग	श्री प्रकाश लाल नारंग	द्वितीय	अंग्रेजी साहित्य
४३.	४०२	८१०१४८	विनय कुमार गोयल	,, ईश्वर दयाल गोयल	तृतीय	,,
४४.	४०३	८१०१०९	कु० अर्चना शर्मा	,, सरदार ओम् दत्त	द्वितीय	,,
४५.	४१२	७८००३२	भरतसिह	,, भगवानाराम	,,	गणित
४६.	४३८	८१०१६४	गिरीशचन्द्र पुनेठा	,, जयदेव पुनेठा	,,	हिन्दी साहित्य
४७.	४४१	८१०१५०	सन्तोष कुमार	,, रामानारायण	,,	,,
४८.	४४२	८१००१७	कु० अनुज कुमारी	,, मदनलाल	,,	,,
४९.	४४३	८१००१२	कु० जयन्ती उप्रेती	,, हेमचन्द्र उप्रेती	तृतीय	,,
५०.	४४४	८१०१०२	कु० मंजू गुप्ता	,, बनारसी दास गुप्ता	प्रथम	,,
५१.	४४५	८१००९७	कु० निर्मला देवी	,, रमेशचन्द्र	द्वितीय	,,
५२.	४४७	८१०११६	कु० पूनम कुमारी	,, श्री मोहन	द्वितीय	,,
५३.	४४८	८१०१६५	कु० सुषमा रानी	,, रामेश्वर प्रसाद	तृतीय	,,
५४.	४४९	८१०१०८	कु० सुशीला देवी	,, विक्रमसिह	द्वितीय	,,
५५.	४५०	८१००९६	कु० ऊषा रानी	,, सदानन्द शर्मा	द्वितीय	,,
५६.	४५४	८१००९५	ब्रह्मानन्द द्विवेदी	,, जटाशंकर द्विवेदी	तृतीय	,,
५७.	४५६	८१०१४०	अनिल कुमार	,, जितेन्द्र	द्वितीय	मनोविज्ञान
५८.	४५९	८१०१४२	हरपालसिह	,, महावीर सिह	द्वितीय	,,
५९.	४६०	८०००२७	इलमसिह	,, गिरधारी लाल	तृतीय	,,
६०.	४६६	८१०१०७	श्रीमती बिन्देश्वरी देवी	,, आर०बी० लाल शुक्ल	द्वितीय	,,
६१.	४६७	८१०१०३	कु० किरणबाला मदान	,, रामरंग मदान	द्वितीय	,,
६२.	४७०	८१००२४	कु० तजिन्दर कौर	,, बलवन्त सिह सूद	द्वितीय	मनोविज्ञान

दीक्षान्त समारोह १९८४ पर एम०एस–सी० की उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
१.	४५५	७६००५१	अवधेश कुमार अग्रवाल	श्री राजेन्द्र कुमार अग्रवाल	प्रथम	मनोविज्ञान
२.	४५७	८१०१४४	आनन्द बल्लभ जोशी	,, नारायण दत्त जोशी	,,	,,
३.	४५८	८१०१३४	दीपक वर्मा	,, साईंदास वर्मा	द्वितीय	,,
४.	४६१	७५००५०	नरेश मोहन	,, शेखरानन्द रतूड़ी	,,	,,
५.	४६२	७६००७४	प्रविन्द्र कुमार	,, चण्डी प्रसाद	,,	,,
६.	४६३	८००१५१	प्रेम प्रकाश	,, हुक्म चन्द्र	,,	,,
७.	४६४	७६००५७	राज किशोर	,, भैरव दत्त शास्त्री	,,	,,
८.	४६५	८१०१५६	योगेश कुमार	,, नरेन्द्र कुमार	,,	,,
९.	४६८	८१००१६	श्रीमती कुसुम	,, चन्द्रशेखर तिवारी	,,	,,
१०.	४६९	७६००५४	कु० मीनाक्षी छाबड़ा	,, शिव कुमार छाबड़ा	प्रथम	,,
११.	४७१	८००००१	दिलीप कुमार शर्मा	,, नाथीराम शर्मा	द्वितीय	,,
१२.	४०५	८१०१३८	अरुण कुमार शर्मा	,, सूबेदार सिह	प्रथम	गणित
१३.	४०६	८१०१६०	अनिरुद्ध कुमार	,, कमलेश्वर वशिष्ठ	,,	,,
१४.	४०७	७६००२१	अजय चन्द्र वर्मा	,, प्रताप चन्द्र वर्मा	,,	,,
१५.	४०८	७६००१९	अनिल कुमार छाबड़ा	,, शेर सिह छाबड़ा	,,	,,
१६.	४०९	७६००२३	अशोक कुमार	,, चतर सैन	द्वितीय	,,
१७.	४१०	७६००८९	आशुतोष शर्मा	,, विष्णु दत्त शर्मा	प्रथम	,,
१८.	४११	७६००२४	बृजेश कुमार शर्मा	,, जिया लाल शर्मा	द्वितीय	,,

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
१९.	४१४	८१०१५२	हरबंश सिंह	श्री महेन्द्र सिंह	द्वितीय	गणित
२०.	४१५	८१०१५५	जगपाल सिंह चौहान	,, तुंगल सिंह	प्रथम	,,
२१.	४१६	७६०१०४	मुकेश कुमार	,, सत्यप्रकाश शर्मा	द्वितीय	,,
२२.	४१७	७६००३३	नरेन्द्र कुमार यादव	,, जयरामसिंह यादव	प्रथम	,,
२३.	४१८	७६००७०	नवनीत कुमार चौहान	,, कबूलसिंह	,,	,,
२४.	४१९	७६०१००	प्रमोद कुमार शर्मा	,, जियालाल शर्मा	द्वितीय	,,
२५.	४२०	७६००३४	प्रदीप कुमार यादव	,, हरिराम यादव	,,	,,
२६.	४२१	७६००३७	प्रदीप कुमार	,, बलबीरसिंह	प्रथम	,,
२७.	४२२	७६००३६	रजनीश कुमार कौशिक	,, जगदीश प्रसाद कौशिक	,,	,,
२८.	४२३	७६००६३	रामकेश्वर मिश्र	,, रामसूरत मिश्र	,,	,,
२९.	४२४	८१०१३९	राजीव लोचन गुप्ता	,, श्यामलाल	,,	,,
३०.	४२५	८१०१६८	राजेश कुमार सैनी	,, सीताराम सैनी	द्वितीय	,,
३१.	४२६	७६००३८	राकेश कुमार	,, कैलाशचन्द्र	प्रथम	,,
३२.	४२७	७६००३७	रविकान्त सिंह	,, रामप्यारे सिंह	द्वितीय	,,
३३.	४२८	७६००७५	ऋषिकेश चन्द्र प्रसाद	,, उमेशचन्द्र प्रसाद	प्रथम	,,
३४.	४२९	७६००६१	रामसिंह	,, मेहरसिंह	,,	,,
३५.	४३०	८१०१६७	सहीराम	,, मंगलसिंह	,,	,,
३६.	४३१	८१०१६३	संजय कुमार	,, चन्द्रपाल सिंह	,,	,,
३७.	४३२	८०००७२	सौ सिंह	,, ज्योती प्रसाद	द्वितीय	,,
३८.	४३३	८१०१६७	साधूराम	,, अमीरसिंह	प्रथम	,,

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
३९.	४३४	७९००४९	वीरेन्द्र कुमार जैन	श्री सुरेन्द्र कुमार जैन	प्रथम	गणित
४०.	४३५	८१०१५३	विनोद कुमार	श्री शिवचरण	,,	,,
४१.	४३६	७९००३५	कुमारी पूनम	श्री रहतूलाल शर्मा	,,	,,
४२.	४३७	७९००४०	कुमारी रेनू कुमारी	श्री रामकुमार गुप्ता	,,	,,

दीक्षान्त समारोह १९८४ के अवसर पर बी०एस-सी० की उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों का विवरण

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
१.	३१९	८१,००८८	अनूप कुमार	श्री रामकुमार	II	गणित ग्रुप
२.	३२०	८१,००९२	अनिल कौशिक	,, जे०पी० कौशिक	II	,,
३.	३२१	८१,०१०९	दिनेश कुमार	,, ओमप्रकाश	II	,,
४.	३२३	८१,००८४	दुर्गेशमोहन पैन्यूली	,, महाबीर प्रसाद पैन्यूली	III	,,
५.	३२४	८१,००८३	दीपक श्रीवास्तव	,, अखिलेश्वर प्रसाद	II	,,
६.	३२६	८१,००७७	घनश्याम सिंह	,, लोकनाथ सिंह	II	,,
७.	३२७	८१,००७६	हिमांशु कुमार जैन	,, दिनेश चन्द्रा	III	,,
८.	३२८	८१,००७५	जितेन्द्र भवकू	,, बैजनाथ भवकू	II	,,
९.	३२९	८१,००७१	नीरज	,, प्यारेलाल	II	,,
१०.	३३१	८१,००६७	परज सिन्हा	,, ओमप्रकाश सिन्हा	II	,,
११.	३३२	८१,००७०	प्रदीप कुमार	,, विवेकानन्द शर्मा	II	,,
१२.	३३३	८१,००६४	राकेश कुमार	,, धीरसिंह	II	,,
१३.	३३४	८१,००६५	राजीव कुमार	,, प्राणनाथ	II	,,
१४.	३३५	८१,००६०	राजीव कुमार गोयल	,, सलेकचन्द्र गोयल	II	,,
१५.	३३६	८१,००६३	राजपाल सिंह	,, कुन्दनसिंह नेगी	II	,,
१६.	३३८	८१,००४७	विजय श्रीवास्तव	,, एम०पी० श्रीवास्तव	II	,,
१७.	३३९	८१,००४८	विमल कुमार	,, कृपालदत्त पन्त	प्रथम	,,
१८.	३४०	८१,००४६	योगेश जी राजे	,, सुरेशचन्द्र राजे	III	,,

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	श्रेणी	विषय
१९.	३४१	८१,००४५	अखिल कपूर	श्री जगन्नाथ कपूर	III	बायो० ग्रुप
२०.	३४२	८१,००४३	देवाशीष लाल	,, नरेन्द्र लाल	II	,,
२१.	३४३	८१,००४५	दिनेशचन्द्र थपलियाल	,, अयोध्याप्रसाद थपलियाल	III	,,
२२.	३४४	८१,००३६	प्रमोद कुमार	,, जगराम	II	,,
२३.	३४५	८१,०१४४	प्रकाश चन्द्र	,, महादेव प्रसाद जोशी	I	,,
२४.	३४६	८१,००३७	प्रभाकर सिंह	,, परसराम थापा	II	,,
२५.	३४७	८१,००३५	राजेश कुमार	,, होरीलाल	II	,,
२६.	३४८	८१,००३४	राजगोपाल	,, लीलाधर	II	,,
२७.	३४९	८१,००३३	संदीप गुप्ता	,, भूपेन्द्र कुमार गुप्ता	II	,,
२८.	३५०	८१,००३२	तेजवंश सिंह बेदी	,, इकबालसिंह बेदी	I	,,
२९.	३५१	८१,००३०	वीरेन्द्र कुमार	,, मंगल प्रसाद	I	,,
३०.	३५२	८१,००३१	वीरेन्द्रसिंह नेगी	,, प्रतापसिंह नेगी	II	,,
३१.	३५३	८१,००४०	ललितमोहन वत्स	,, सुखबीर सिंह	I	,,
३२.	३५४	८१,००४१	हरिप्रकाश	,, बीरबल	II	,,

दीक्षान्त महोत्सव १९८४ के अवसर पर अलंकार उपाधि प्राप्त करने वाली छात्राओं का विवरण

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	कक्षा
१.	२३०	८१,०११७	कु० चन्द्रप्रभा	श्री मोहनचन्द्र	I	अलंकार
२.	२३१	८१,०११८	कु० हरदीप कौर	,, मोहनसिंह	I	अलंकार
३.	२३२	८१,०११९	कु० जसबीर कौर	,, महेन्द्रसिंह	I (प्रथम)	अलंकार
४.	२३३	८१,०१२०	कु० नायब कौर	,, अजमेरसिंह	I	अलंकार
५.	२३४	८१,०१२१	कु० नीरू	,, रामकृष्ण	II	अलंकार
६.	२३५	८१,०१२२	कु० पूनम	,, जटाशंकर उपाध्याय	I	अलंकार
७.	२३६	८१,०१२४	कु० रीना	,, मदनलाल	I	अलंकार
८.	२३७	८१,०१२५	कु० सन्तोष	,, बंसीलाल	II	अलंकार
९.	२३८	८१,०१२६	कु० शुभा	,, वशिष्ठ पाण्डेय	I	अलंकार
१०.	२३९	८१,०१२७	कु० विमला	,, औतारसिंह	I	अलंकार

Gurukula Kangri Vishwavidyalaya
Hardwar

Annual Report—1984-85

AN ABSTRACT

—VIRENDRA ARORA
Registrar

Vice-Chancellor Shri G.B.K. Hooja with Smt. Madhuri Shah, Chairman, U.G.C. during her visit to G.K.V. on 13th Oct., 1984.

Vice-Chancellor Shri G. B K. Hooja welcoming Shri T. N. Chaturvedi, Auditor and Comptroller General, Govt. of India, at the Inaugural Session of the Vice-Chancellors' Conference (North Zone) held on 19-20 Jan. '85. Sitting in the Chair is Shri R.S. Misra, Vice-Chancellor, Lucknow University.

Annual Report of Gurukula Kangri Vishwavidyalaya

(1984-85)

AN ABSTRACT

During 1984-85 the GKV registered constant growth and consolidated step by step the programmes envisaged and launched in the Plan Document approved by the UGC.

Ten years ago GKV was immersed in a grave crisis. The UGC had said in no uncertain terms that the Institution had failed to develop and nourish the ideals of its founder, Swami Shraddhananda and had not come upto the expectation of the UGC in acquiring excellence in its special field. Consequently, it had recommended its de-recognition as a deemed university and the merger of its colleges with Meerut University as affiliated colleges. At that time, the Ayurveda College was a part of the Gurukula but as the management failed to pay to its teachers and other employees their salaries for months together, there were disturbances in the Ayurveda College and this nationally famous college slipped out of the hands of the Arya Samaj and was taken over by the Government.

Caught in the eddies of economic and ethical difficulties, it was found that the VV could not go ahead in its work of teaching, research and extension without amending the

Constitution. Consequently, suitable amendments were made in the Constitution in 1981. It is a matter of satisfaction that now the VV has a Constitution which is capable of protecting and stabilizing its original form. For this, the then Education Secretary, Shri T.N. Chaturvedi deserves our grateful thanks.

At the same time it was found that the *guru-shishya* tradition in the Gurukula had completely waned. The *gurus* were, afraid of entering the *ashramas* of the *brahmacharis*. In 1973, Prof. Om Prakash Sinha was murdered because he had caught a student using unfair means. Hence it was decided that for the restoration of *guru-shishya parampara*, Houses should be named after Dayananda, Shraddhananda, Lajpat Rai, Bhagat Singh, Jawaharlal Nehru etc, and daily *sandhya-havan* should be started in the hostels. This tended to change the atmosphere of the hostels but the VV was again engulfed in a fierce storm from 1977 to 1980. This ended with the judgement of the learned District and Sessions Judge of Saharanpur, dated the 2nd July, 1980 and the Gurukula entered into a new phase. The University Grants Commission and the Ministry of Education recognized the valid officers and authorities of the VV, and it began to function regularly again. Restoration work was taken in hand and everybody had a sigh of relief economically and from the point of view of security in the campus. Long due salaries to the staff were paid.

For the Convocation of 1981, Justice Shri H.R. Khanna of the Supreme Court of India came to the Gurukula. Whereas he mentioned the great traditions and contributions of this institution towards national service, he expressed satisfaction at the new turn of events. Thereafter three consecutive Convocations were addressed by the Speaker of Lok Sabha, Hon'ble Shri Balram Jhakar; President of India, Shri Giani Zail Singh and the famous Arya Sannyasi Dr. Satyaprakash Saraswati, D.Sc. respectively and this helped in retrieving the glory of the institution.

The year 1984-85 may be termed a year of new horizons and new sights. In all the postgraduate departments in the Veda, Arts and Science Faculties, GKV was able to institute Professorships. The Departments of Botany and Zoology are also running

two significant projects in addition to teaching (i) Integrated Study of the Ganga (Pollution), and (ii) Himalayan Project to study the Ecology of the region.

There was never any doubt that the Gurukula had a great deal to contribute towards nation-building by imparting value oriented education and by participating in the programmes of social service, rural uplift, adult education and economic amelioration through its scholars engaged in Vedic and ecological researches and extension work. It is this type of activity which, according to the Chairman of UGC, Mrs Madhuri Shah is expected of the universities in fulfilling the objectives of national unity, social and emotional integration, service of the disadvantaged classes, unity of mankind, international amity, character-building, self-discipline, social and democratic justice, inculcation of co-operative spirit, search for knowledge and extension of the frontiers of awareness. GKV has undertaken to search and establish these values during these past few years.

In spite of financial constraints and other obstacles created by adversative elements, the *ashrama* system for the *brahmacharis* has been improved and for their physical and spiritual development *yogabhyasa*, *vratabhyasa* and daily recitation of the Vedic *mantras* are being continued. The *mantras* memorized by the *brahmacharis* are published as *Govardhan Jyoti Rashmis* with the financial assistance provided by the Sanghar Vidya Sabha Trust, Jaipur and distributed free of cost. This year the publication of the *Vedic Suktas* and *Brahmacharya Sukta* in Hindi has been made possible through the good offices of Pandit Satyakam Vidyalankar and Rajpal & Sons.

In the bygone century Professor Gurudutta had brought out the *Vedic Magazine*. Later on it was revived by Acharya Ram Deva. Through it, GKV was able to establish contact with internationally famous thinkers and scholars. With the passage of time this magazine ceased publication. Now under the editorship of Dr. Hargopal Singh it has been revived as the *Vedic Path*. For the children, the *Dhruva*, for the well-wishers of the Gurukula, the *Gurukula Patrika*, for the spread of science, the *Aryabhatta* and

for oriental sciences, the *Prahlada* are being brought out under the editorship respectively of Dr. Dinanath, Dr. Jai Deva, Dr. Vijay Shanker and Dr. Vishnudutta Rakesh.

Through the grants given by the U.G.C. this year three research dissertations "Swami Satyadeva Parivrajak", "Bhavabhuti : Unka Vyaktitva aur Patra" and "Kambuj ka Prachin Itihas" were published. Dr. Gangaram's English work entitled *World Perspectives on Dayananda* and Acharya Priyavrata's three volumes "Ved Ke Rajnitik Sidhanta" *(Principles of Polity in the Vedas)* added to the contribution of the VV. Pt. Priyavrata's book was released by Smt. Indira Gandhi, the late Prime Minister of India on 16.5.1984, and Dr. Ganga Ram's book was released by Shri Rajiv Gandhi, the Prime Minister of India on 26.4.1985.

The Archaeological Museum of GKV which was established 35 years ago, displays rare material on archaeology and India's ancient past and contains the following sections : (1) Terracotta Section, (2) Sculpture Section, (3) Coins Section, (4) Painting Section, (5) Pottery Section, (6) Copper-hoard Section, (7) Arms Section, (8) Ashtadhatu Section, (9) Manuscript Section, and (10) Miscellaneous Section.

The Shraddhanand Gallery attached to the Museum is indeed very inspiring. It contains the *padukas* (shoes), clothes, *Kamandala* and rare photographs of the varied facets of Swamiji's colourful life and forms an important link in the history of Indian Freedom Struggle. Swamiji is known to have laid his chest bare before British soldiers in the Chandani Chowk, Delhi while leading a procession of Satyagrahis on the call of Mahatma Gandhi in April 1919 and had the unique privilege for a non-Muslim Sannyasi to have been invited to speak and pay homage to the martyrs of the historic movement from the pulpit of the prestigious Jama Masjid of Delhi.

His tell-tale photograph when he later acted as the Chairman of the Reception Committee of the 1919 Amritsar Congress Session is a proud possession of the GKV Museum. With him are seated stalwarts of the national movement such as Pandit

Motilal Nehru, Mahamana Madan Mohan Malaviya, Mrs Annie Besant and also Jawaharlal Nehru, then a youngman on the threshold of his political career

A beginning has been made in the Sixth Five Year Plan to start an Excavation Department too. Additionally we propose to establish in the Seventh Plan, a Ganga Museum. It is a matter of gratification that the Head of the A. I. History Department, Dr. B.C. Sinha has been appointed National Fellow and he would take charge of this post from the next session.

Here mention may also be made of Dr. R.L. Varshney, Reader in English, who was sent on an academic trip to the USSR in 1984. The visit of Prof. V. Shanker to USA is in the offing.

Shri Bhagwatdutta Vedalankar, a revered product of GKV has been nominated by the Ministry of Education to work as a Vedic Scholar in this Vishwavidyalaya for two years. Thus the Veda Department of GKV has been strengthened. He was also the recipient of the 1985 Acharya Govardhan Shastri Award instituted by the Sanghar Vidya Sabha Trust, Jaipur for services rendered in the cause of spread of Vedic culture.

Gurukula Library is one of the prominent libraries of Indology in India. Here are preserved and available rare books and manuscripts on Oriental *Vidyas*, Religion, Philosophy, History, Humanities and Sciences. Here are more than a lakh of books on various subjects. These are used by scholars and researchers within and outside the country. The UGC has granted Rs 10 lakhs in the recent years for the development of the library. The library has had the benefit of the guidance of Dr. D.R. Kalia, Ex-Librarian, Calcutta National Library, as a Visititng Fellow and is looking up for active service of the community.

Under the Adult Education Programme Dr. A. K. Indrayan is running 60 Adult Education Centres in the region. He has recently run a very useful Training Camp for the Instructors with Shri S. U. Ansari of Talimghar, Lucknow as the Resource person.

The work of Yoga Centre is being looked after by Shri Ishwar Bhardwaj, of Games and Sports by Prof. O. P. Mishra and of the Ganga Integrated Study by Dr. Vijay Shanker.

To Dr. V. Shanker and his enthusiastic team goes the credit of organizing the World Environment Day on the 5th & 6th June. The two-day national seminar was inaugurated by Shri B. K. Goswami, Commissioner Meerut Division, at a function presided over by Acharya Bhagwan Dev, Ex-MP. It is proposed to plant one lakh trees during the coming monsoon with the aid of PAC jawans under the command of Battalion Commander Shri Milkiat Ram. Shri Goswami has undertaken the project of beautification of Hardwar and the tract between the Jwalapur Railway bridge and the Singh Dwar bridge has been allotted to GKV. On this occasion they also set up a Ganga Pollution Exhibition at Har-, Ki-Pouri which was inaugurated by Shri V. K. Sinha, Collector, Saharanpur and attracted thousands of visitors, including pilgrims.

It may be noted here that this massive programme was initiated at a solem function held on the 27th May on the occasion of the Death Anniversary of our beloved leader Pt. Jawaharlal Nehru by Shri A. C. Dubey, Administrative Officer, Hardwar Municipal Committee.

Major Virendra Arora is looking after the work of NCC and Dr. B. D. Joshi is looking after the work of NSS. Under the Himalayan Study Project, Dr. B. D. Joshi has received a special grant of about Rs. 10 lakhs from the Ministry of Environment.

M.Sc. course in Microbiology has also been started in the Vishwavidyalaya. GKV will be a pioneer university in the country to start at the PG level the Credit System of teaching and examinations under the Minimum Examination Reforms Scheme.

Similarly, from the coming session GKV proposes to start a Girls Degree Gurukula in Hardwar. In the beginning arrangement shall be made to impart education in Home Science upto Vidya-lankar (first degree) level. We have been able to locate a competent and experienced Director-Principal for this institution and hope to organize it from the next session.

We would like to take this opportunity to thank the Tamilnadu Government for providing funds to start classes to teach Tamil from the next session. We are in correspondence with the West Bengal Government to sanction funds for a Chair in Bengali. This programme has heen launched to acquaint the northern scholars with the rich heritage of the Southern and Eastern India and vice-versa and thus to build bridges of understanding across the length and breadth of our great country.

We have now made a request to the Tamil Nadu Govt. to donate funds to construct a Tamil House on our campus for housing the teachers of Tamil as well as to serve as a centre for Tamil culture. Similar reouests shall go to other State Governments as soon as positive response is received from them.

To provide to the students information regarding opportunities of employment, an Employment Exchange Office has been opened in the Vishwavidyalaya through the courtesy of the U. P. Government. Also a Health Centre has been opened in the Vishwavidyalaya which is being run under the supervision of an experienced medical officer.

The ninth principle of the Arya Samaj is that man should not remain satisfied with his own progress only. He should deem his progress inherent in the progress of all. In pursuance of this principle, the GKV decided to undertake extension work in 1981 and to begin with it started development operations in the Kangri Village which is literally its mother village as the GKV was initially established here. This village has a population of about 750 souls, a large majority of whom live below the poverty line and belong to the scheduled and other backward classes. Programmes such as construction of roads, tree-plantation, installation of Gobar Gas Plants, Literacy Movement, Women's Education, Family Welfare, establishment of a Library and Reading Room etc., were undertaken for mass uplift. As a result, a sense of self-reliance is discernible amongst the village-folk.

NSS Camps are also organised here every year. This has brought the students in direct touch with the problems of the village life and when they work together with the village youths, this tends to develop a feeling of emotional integration and identification in them.

In April, the Vice-Chancellor held a three-day camp at Shyampur Kangri to assess the progress made and to develop personal contact with the village - folk with a view to indentifying their felt needs and delineating future line of action. It goes without saying that these programmes have broken down the isolating walls of the GKV, as it were, and have brought the Faculty and the students face to face with the reality of the poor and deprived India. They are now gradually but surely begining to appreciate that :

A University should serve as a Light House
Faculty as the Source
And Youth as the Medium
For dissemination of knowledge
As a catalytic agent for change,
Growth of awareness,
Peace and Progress and Universalism.

It is now being realized that the GKV has an important role to play in the service of the poor and the disadvantaged classes, specifically the Deans and the students can bring together the village folk, Govt. officers, social workers and bankers to work for the amelioration of the conditions of the deprived classes. This is the Extension Culture which Dr. Madhuri Shah, Chairman, UGC advocates and which a vibrant University must wholeheartedly adopt.

The UGC Visiting Committee that came to visit the VV agreed to the establishment of a Lajpat Rai Chair for research in the Indian Renaissance and Freedom Struggle with particular reference to the role of Arya Samaj, and steps are afoot to locate a competent scholar to adorn this Chair.

The Registrar; Shri Satyadeva Vedalankar, Chief Guest (second from right), Shri Virendra (Chancellor) and Acharya performing Yajna at the Convocation—the 13th April, 1985.

Shri A. K. Singh, S. D. M. Haridwar, delivering Inaugural Address at the Inaugural Ceremony of the Training Camp organised by the Adult and Continuing Education and Extension Deptt. Sitting in the Chairs (from left) are Dr. Indrayan (Convener); S.C. Tyagi, Principal Science College and the Vice-Chancellor Shri Hooja.
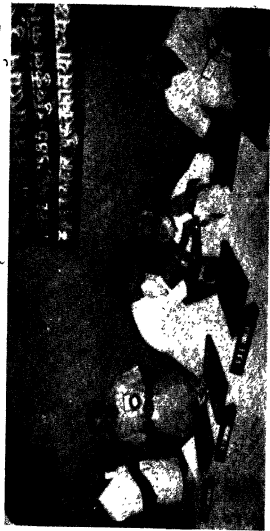
Vice-Chancellor Shri Hooja being presented with a badge at the Inaugural Session of the All India Library Association Conference held on 23rd–26th May '85.
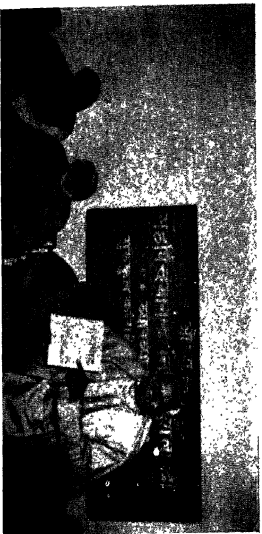
Padmashri Pt. Kshem Chandra Suman releasing 'Acharya Shukla Issue' of the research journal 'Prahlad'. Sitting in the chairs are (from left) Acharya Ram Prasad, Shri Hooja, the Vice-Chancellor and Dr. Shyam Sunder Dass, Secretary, Bharat Sadhu Samaj.

The UGC has also provided a grant of about Rs. 18 lakhs for the construction of 8 Teachers' quarters. These houses with modern amenities are now almost completely ready. Similarly, 6 quarters for the non-teaching staff have also been sanctioned.

Through the courtesy of the UGC, a colour TV set has been installed in the Physics Department for transmission of National Lectures and a Computer is in the pipe line.

For the benefit of the Faculty, students and intelligentia, a series of lectures, discussions, workshops, seminars and conference on a national scale have recently been organised in the Vishwavidyalaya. To mention a few, National Workshop on Vedic Education; XVIII Annual Conference of the Indian Association for American Studies; All India Conference of the Society of Farmers; Workshop on Syllabus and Examination Reforms; National Philosophical Conference on Human Values and Social Interaction V Annual Convention of Govt. of India Librarians Association X Annual Meeting of the UP Darshan Parishad, etc.

Besides these, eminent scholars like Dr. Bhawani Lal Bhartiya, Head of the Dayananda Peeth. Punjab University, Chandigarh; Dr. Prabhakar Machave, the well-known Marxist and Director of Bharatiya Bhasha Parishad, Calcutta; Shri Madan Gopal, former Editor of the Tribune; Shri Kshemchandra Suman, former Secretary of Sahitya Academy, Delhi; were invited to deliver lectures on 'Dayananda Sarswati ke Vichar: Samay ki Kasoti Par', 'Dayananda, Gandhi aur Marx', 'Dayananda aur Premchand' and 'Dayananda aur Hindi Patrakarita' respectively in connection with the Dayananda Nirvan Centenary Celebrations.

This year an eminent scholar of Hindi, Dr. Ganpati Chandra Gupta, former Vice-Chancellor, Kurukshetra University was also invited as a Visiting Professor.

In the month of December, 1984, the VV organized the North Zone Inter University Badminton Tournament in which about 40 universities participated.

In January 1985, under the aegis of the Association of Indian Universities a North Zone Vice-Chancellors' Seminar was held at GKV to consider the question of educational facilities and concessions being available to the Scheduled Caste and Scheduled Tribe students. This was the fourth in the series of such regional seminars organized by the AIU, the other three having been held at Shanti Niketan, Pune and Thanjavur. The inaugural session was chaired by Dr. RS Mishra, Vice-Chancellor, Lucknow University and the inaugural address was delivered by Shri T. N. Chaturvedi, Auditor and Comptroller General of India. The keynote address was delivered by Shri Anjani Kumar, Joint Secretary of AIU. This seminar recommended that for the next ten years the Reservation Policy should be followed in its present form. It endorsed the Gurukula system of education which guarantees equal opporunities; equal boarding, lodging and clothing facilities to all. It also noted that the cultural values advocated by Swami Dayananda and Swami Shraddhananda in accordance with the Vedic way of life did not envisage distinctions and stratification based on caste, creed, colour or status in the social polity. Shri C. M. Gupta, G.G.M., B.H.E.L. and Shri Chandrakant Sardana, Public Relations Officer, B.H.E.L. deserve our grateful thanks for the co-operation extended by them in this connection.

Amongst the distinguished visitors who visited the GKV during this period, mention may be made of Hon'ble Shri Balram Jhakar, Speaker of Lok Sabha; Shri T.N. Chaturvedi Auditor and Comptroller General, Dr. Trigun Sen, Ex-Union Education Minister; Shri B.K. Goswami, Commissioner, Meerut Division; Shri V. K. Sinha Collector, Saharanpur; Shri Sunderlal Bahuguna of **Chipco fame**; Prof. Kripa Narain, Vice-Chancellor, Pantnagar; Prof L.D. Kataria, VC, HAU, Hissar; Dr. R. S. Mishra, VC, Lucknow University; Dr. Daya Krishna, Jaipur University, Shri B.R. Kwatra of UGC; Shri Anjani Kumar of AIU; Prof. K K Tiwari, VC, Gwalior; Prof. D.R. Sharma, VC, Ujjain; Dr. Bhuvan Chandel; Dr. Roop Rekha; Dr. A. Dhan, former Vice-Chancellor Ranchi University; Shri Ram Rahul of JNU; Dr. Upendra Thakur of Magadha University; Dr. Rama Ranjan Mukherjee, Vice-Chancellor, Burdwan University; Dr. Raja Ram Shastri, former Vice-Chancellor of Kashi Vidyapeeth; Dr. Satyavrat Shastri, Vice-

Chancellor, Jaganath Puri; Dr. Ram Lal Pareekh, Vice-Chancellor, Gujrat Vidyapeeth; Dr. Waheed Malik, Vice-Chancellor, Kashmir University; Dr. Harbans Lal Sharma, VC, Jhansi University; Dr. Shiv Mangal Singh Suman, Director, Hindi Institute & former Vice-Chancellor, Ujjain University; Dr. M. Aram, Vice-Chancellor Gandhigram Rural Institute; Dr L P. Sinha, Vice-Chancellor Himachal University; Dr. Kanahya Lal Nandan, Editor Dinman; Dr. B. B. Lal, Ex-Director General, Archaeological Survey of India and Prof. Lallan Ji Gopal, Prof. & Head Deptt. of A.I. History Culture and Archaeology, B H U.

The Chairman of the University Grants Commission Dr. Mrs Madhuri Shah also visited the Gurukula in October, 1984. She observed with satisfaction the various schemes and projects being run by the VV and expressed the hope that along with the teaching-learning of Vedic literature, Aryan Principles, and Oriental subjects, Modern Sciences would also be studied. She desired the Faculty to develop a 25 year perspective plan for the Vishwavidyalaya.

On the occasion of Vivekananda Day, GKV organized the Youth Day with the collaboration of the AIR Najibabad at which the students of this Vishwavidyalaya alongwith the students of other local institutions presented delightful cultural programmes. For this thanks are due to Shri Haryanvi, Director AIR Najibabad.

Shri Virendra, the Chancellor of GKV has recently come up with an appeal to Aryas (a) to donate 1% of their income to Arya Samaj funds (b) to find time for the service of the Samaj (c) to produce literature for the propagation of Vedic values Who else can lead in this programme if not the *gurus* of this celebrated institution who are on par with the staff of other universities in matters of status, pay-scales and other benefits. It is, therefore, now proposed to lay down that they shall work for at least 250 days in a year and 40 hours in a week. For this it would be necessary to abolish the summer vacation and why not ? After all in the earlier days the masters of the Gurukula worked for 365 days a year and 24 hours per day. The HAu,

Hissar observes no summer vacation. At the same time all the employees of the VV shall be asked to contribute as a tax one per cent of their earning to the GKV Arya Samaj fund for the propagation and promotion of the cause as ordained by Swami Dayananda. Wearing the attributes of Truth, Non-violence, Non-acquisition, Non-theft, Cleanliness, Austerity, Self-study, Contentment and Submission to God, they should serve the students of Gurukula and the disadvantaged classes in the neighbourhood as national missionaries. We long for the day when each teacher and student of Gurukula shall speak Sanskrit, shall attain proficiency also in English and other international languages so that he can convey the Vedic message of peace, progress and universalism to the bewildered humanity. In this endeavour, the Faculty of GKV is expected to translate the works of Swami Dayananda and ancient rishis in other languages. This is an international challenge and it is hoped that the Faculty shall give a positive response.

We are naturally concerned with the deteriorating relations between the students and the teachers. Teacher-taught harmony was a special feature of Gurukula System of Education. It is now being realised that a student is the Most Important Person on the campus and the *guru* is there to guard and guide him. The nucleus of an educational institute is the student. His education, service and up bringing is the first and foremost duty of the Faculty. Properly discharged it shall earn the love, affection and respect of students which is due to the *gurus*. The wages of neglect shall be severe and no alibi shall be acceptable from the teachers.

Some of the 'well-wishers' of the Gurukula think that the foundation of the Gurukula is the *brahmachari*, the student. But we humbly beg to disagree with them. *The foundation of the Gurukula is the teacher*. As teachers so the students. For the restoration and renovation of GKV mere lecturing and writing articles would not do. To raise a building, the engineers need bricks, stones, steel, cement, etc. Similarly for the rejuvenation of an old institution

are needed responsible officers, dedicated teachers and other members of the staff who may discharge their duties sincerely and with devotion; for no educational institution can rise above the standard of its teachers. To this end we propose to organise teachers orientation workshops on our campus during the next session for which we shall invite participants from neighbouring universities.

At the Convocation of 1985 the Benedictory Address was delivered by Pt. Satyadeva Bharadwaj Vidyalanakar, a *Snataka* of Gurukula, a philanthropist and an industrialist. Giving his blessings to the new graduates, he wished to see the Gurukula Kangri develop as a world university of the Aryas. We share his dreams.

As we look forward and peep into the 21st Century, we envision the Gurukula Kangri emerging as an International centre of excellence for—

. (1) advanced studies and research in Vedic thought including aesthetics (Gandharva Veda) and propagation of Vedic values (Satyam, Shivam and Sundaram)

(2) inter-disciplinary studies and research in modern sciences with a view to developing scientific temper (Pakhand Khandan) in the perspective of Vedic knowledge and Sanskrit Literature.

(3) archaeologic research and advancement of frontiers of knowledge in the field of ancient Indian Civilization and Culture.

(4) reinterpretation of medieval and modern Indian History culminating in the growth of a federal polity and Indian nationhood.

(5) microleval studies and research in problems of rural poverty and the problems of disadvantaged sections including Scheduled castes/tribes and urban slum-dwellers (Arth Veda) with a view to preparing cadres of rural/social workers to man thousands of strategic points in the vast hinterland of India as one

of the four modern *dhams* conducting this programme the other three being Shantiniketan in the east Gujrat Vidya Peeth in the West and Gandhigram Rural Institute in the South

(6) studies and research in the problems of world peace and disarmament

(7) development of physical education sports and science of Health (Ayurveda Yoga and Dhanurveda) with a view to pre paring cadres of physical instructors ard candidates seeking entry into armed forces space experiments and competitive sports and last but not the least as a centre for

(8) education of women for the development and healthy growth of mother power (matri shakti)

In the Vedic National Anthem our ancient ancestors sang as follows —

Oh Supreme Lord !
Let eminent scholars
Possessing lustre of spiritual knowledge
Be born in our state
And may brave warriors and statesmen
Capable of ruling the people
Be born in our state
Let expert archers and marksmen
Be born in our state
May we have cows
Giving plentiful milk
Stout oxen and swift horses
And may there be born v rtuous women
And various men
Hero c youth and chariotcers
Fighters with the will to victory
And fit to shine in the assemblies
May clouds shower profuse rains
To our utmost fulfilment
May fruit bearing trees and herbs ripen
May we be able to safeguard
And protect our earnings and savings

Production of such scholars, soldiers, businessmen and craftsmen and of course such mothers is the main purpose of GKV

In the end we would like to pay our homage to Rashtra mata Bharat Ratna Priya Darshini Indira Gandhi the late Prime Minister of India We were priviledged to meet her on May 16 1984 when at a brief ceremony we requested her to release three volumes of Principles of Polity in the Vedas the scholarly work of research by Veda Martanda Acharya Priyavrata We were all naturally worried about the worsening Punjab situation and mentioned this to her She asked us to be fearless and steadfast and assured us that the Govt would do its duty A fortnight later came the Blue Star instrument of the Raja Danda Several valorous lives were lost in retrieving the sanctity of the Golden Temple and the most precious was her own life

Her dastardly assassination by her Body Guards was a national tragedy. Evidently, the foreign hand to which she had often referred, even at the cost of being ridiculed, had struck fatally. The nation was stunned, shocked and rocked for a while, but soon recovered and gathered its calm and resilience under the sober and dynamic leadership of the new Prime Minister, Rajiv Gandhi who ordered all the mourning Chief Ministers to go back to the States and control the levers of law and order.

This was no time for mourning. This was the time to pick up the bow and arrows, dropped by the great leader and to carry on her unfinished task, as ordained by the Vedic Scriptures.

Indiraji had stood for national progress, unity and integrity. She had stood for international brotherhood and amity, peace and service of humanity. She was the Messiah of the poor. She wanted to ameliorate their condition; she wanted to eradicate poverty and fight against the disruptive and adverse forces wokring inside and outside the country. She stood firm like a rock and

fell like Joan of Arc as she often used to muse. She dreamt of a new order, informed by social justice, peace and stability. She fell a martyr to the cause of democratic values and national glory. She was the symbol of Bharat Mata. In the manner of her dying, she has joined the immortals and has left a stern warning for us to remain ever vigilant against the evil forces operating with in and without the country.

It is for us to carry on and to try to accomplish her unfinished task.

Shri B K. Goswami, Commissioner, Meerut Division, inaugurating the Tree Plantation Programme during Environment Day Celebrations the 5th June' 85.

Shri V.K. Sinha, D.M. Saharanpur, being welcomed at the Exhibition on Ganga Pollution displayed by the Department of Integrated Study of Ganga Pollution

OFFICERS OF THE VISHWAVIDYALAYA

1.	*Visitor*	Dr. Satyavrat Siddhantalankar, Vidya Martand	
2.	*Chancellor*	Shri Virendra President, Arya Pratinidhi Sabha, Panjab.	
3.	*Vice-Chancellor*	Shri Balbhadra Kumar Hooja, IAS (Retd)	
4.	*Hon. Legal Advisor*	Shri Som Nath Marwaha	
5.	*Treasurer*	Shri Sardari Lal Verma	
6.	*Acharya & Pro-Vice-Chancellor*	Shri Ram Prasad Vedalankar	
7.	*Principal, Science College*	Shri Suresh Chandra Tyagi	
8.	*Acharya, Kanya Gurukula, Dehra Dun*	Smt. Damyanti Kapoor	
9.	*Registrar*	Maj Virendra Arora	
10.	*Dy. Registrar*	Dr. S.N. Singh	
11.	*Finance Officer*	Shri B.M. Thapar	(2. 2. 81 to 15. 9 84)
		Shri H.C. Grover	(16.9.84 to 12.10.84)
		Shri D.N. Shukla	(13.10.84 to 22. 4. 85)
		Shri B.D. Bhardwaj	(23. 4. 85 to date)
12.	*Librarian*	Shri Jagdish Vidyalankar	
13.	*Director, Archaeological Museum*	Dr. B.C. Sinha	
14.	*Public Relations Officer & Secretary to V.C.*	Dr. Radhey Lal Varshney	

Printed at the Jaina Printers, Jwalapur

ओ३म्

८५वाँ

वार्षिक विवरण

१९८४-८५

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रकाशक :
वीरेन्द्र अरोड़ा
कुलसचिव
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उ०प्र०)

मुद्रक :
जैना प्रिन्टर्स, ज्वालापुर

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

विजिटर	—डॉ॰ सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, विद्यामार्तण्ड
कुलाधिपति	—श्री वीरेन्द्र, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब
कुलपति	—श्री बलभद्रकुमार हूजा
विधि परामर्शदाता	—श्री सोमनाथ मरवाहा
कोषाध्यक्ष	—श्री सरदारीलाल वर्मा
उपकुलपति एवं आचार्य	—श्री रामप्रसाद वेदालंकार
प्रिंसिपल, विज्ञान महाविद्यालय	—श्री सुरेशचन्द्र त्यागी
आचार्या, कन्या गुरुकुल, देहरादून	*—श्रीमती दमयन्ती कपूर*
कुलसचिव	—श्री वीरेन्द्र अरोड़ा
उप-कुलसचिव	—डॉ॰ श्यामनारायण सिंह
वित्त अधिकारी	—श्री बृजमोहन थापर (२-२-८१ से १५-६-८४) —श्री हरिशचन्द्र ग्रोवर (१६-६-८४ से १२-१०-८४) —श्री डी॰एन॰ शुक्ला (१३-१०-८४ से २२-४-८५) —श्री बी॰डी॰ भारद्वाज (२३-४-८५ से)
पुस्तकालयाध्यक्ष	—श्री जगदीशप्रसाद विद्यालकार
संग्रहालयाध्यक्ष	—डॉ॰ बी॰ सी॰ सिन्हा
जन-सम्पर्क अधिकारी एवं सचिव-कुलपति	—डॉ॰ राधेलाल वार्ष्णेय

सम्पादक मंडल

विषय—सूची

अक्टूबर, १९८४ में विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्ष श्रीमती माधुरी शाह पधारीं। (चित्र मे) विश्वविद्यालय की प्रगति का विवरण देते हुए कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा।

आमुख

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अपने स्थापना-काल के ८५ वर्ष पूरे कर रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जिन भारतीय जीवनमूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए इस सस्था की स्थापना की थी, उनके प्रचार-प्रसार में इसके सरक्षक, कुलपति, प्राध्यापक तथा ब्रह्मचारी निरन्तर यत्नशील रहे हैं। उच्चतम अध्ययन और अनुसन्धान के अलावा गुरुकुल सामाजिक पुनरुत्थान, ग्रामोद्धार, प्रसार-कार्य तथा राष्ट्र की मौलिकता की रक्षा के लिए अपनी परिधियाँ छोड़कर बाहर निकला है और आज उसके कार्यों की दिशाएँ बहुमुखी हुई है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा श्रीमती माधुरी शाह गुरुकुल पधारीं। विश्वविद्यालय द्वारा सचालित योजनाओं और शैक्षिक गतिविधियों तथा अनुशासित परिसर को देखकर उन्होंने संतोष प्रकट किया। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य, प्राच्य विद्या तथा पुरातात्विक अध्ययन के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के विषयों का भी उच्च-अध्ययन और शोधकार्य होना चाहिए। कुलपति प्रो० बलभद्रकुमार हूजा (अवकाशप्राप्त आई०ए०एस०) ने यही सकल्प लेकर विश्वविद्यालय को प्राचीन और नवीन का अपूर्व संगम बनाया है। उनकी प्रेरणा से विश्वविद्यालय को पर्यावरण विभाग, भारत सरकार से गगा के समन्वित अध्ययन के लिए, डा० विजय शंकर के निर्देशन में शोध-कार्य के लिए ९.३७ लाख रुपये का अनुदान मिला है तथा प्रौढ़ शिक्षा के लिए भारत सरकार से ६० केन्द्र चलाने के लिए सहायता राशि प्राप्त हुई है। डा० ए०के० इन्द्रायण इस कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं। हरिद्वार के निकटवर्ती गावों—बहादुरपुर जट्ट, जमालपुर, अम्बूवाला, सराय, जगजीतपुर, कागड़ी, श्यामपुर, गाजीवाली, पीली, कनखल तथा बी०एच०ई०एल० के केन्द्रों पर साक्षरता का कार्य तेजी से चल रहा है। विश्वविद्यालय के प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं प्रसार कार्य के तहत प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करनें के लिए २ जून से ७ जून, १९८५ तक एक शिविर विश्वविद्यालय में लगाया गया जिसका उद्घाटन हरिद्वार के एस०डी०एम० श्री अशोककुमार सिह ने किया। ग्राम विकास योजना के फलस्वरूप कांगड़ी ग्राम के अनेक ग्रामवासियों की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति में आशातीत सुधार हुआ। इसके लिए बिजनौर के जिलाधीश श्री दर्शन सिह बेंस विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। गंगा योजना के द्वारा ऋषिकेश से गढ़

मुक्तेश्वर तक गंगा के दोनों तटों पर बसे हुए ग्रामों के समन्वित विकास की संभावनाओं का अध्ययन किया जा रहा है। जहाँ जल, भूमि, प्रदूषण एवं अपरदन आदि समस्याओं का वैज्ञानिक समाधान खोजा जा रहा है। इसी प्रकार हिमालय प्रोजेक्ट के लिए लगभग ६ लाख रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ है। यह प्रोजेक्ट डा० वी०डी० जोशी के निर्देशन में होगा। जून के प्रथम सप्ताह में विश्व पर्यावरण दिवस पर दो-दिवसीय अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन विश्व-विद्यालय में डा० विजय शंकर के संयोजन में हुआ। इसका उद्घाटन मेरठ के उच्चायुक्त श्री गोस्वामी ने तथा अध्यक्षता पूर्व-सांसद आचार्य भगवानदेव ने की। २३-२६ मई तक विश्वविद्यालय में भारत सरकार पुस्तकालयाध्यक्ष संघ का पाँचवां अखिल भारतीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ जिसे पुस्तकालय के विजिटिंग फैलो श्री डी०एन० कालिया ने सोत्साह सम्पन्न कराया।

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि सितम्बर '८४ में उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् के दशम वार्षिक समारोह पर विश्वविद्यालय ने 'मानवीय मूल्य और समाज में अन्त:सम्बन्ध' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इसके लिए अनुदान आयोग तथा इन्डियन कौंसिल ऑव फिलासिफिकल रिसर्च नई दिल्ली से सहयोग प्राप्त हुआ। इसका उद्घाटन रुड़की विश्वविद्यालय के कुलपति डा० भरतसिंह ने किया।

२६-२७ जुलाई, १९८४ को परीक्षा-सुधार पर एक कार्यशाला का आयोजन अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ के प्रो० वी० नटराजन के सान्निध्य में हुआ। इस कार्यशाला की महत्त्वपूर्ण संस्तुतियाँ तथा प्रतिवेदन 'व्हाइ एग्ज़ामिनेशन रिफॉर्म्स' नाम से विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कर दिये गए है। इसका संयोजन प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र ने किया। उत्तरक्षेत्रीय विश्वविद्यालय बेडमिंटन टूर्नामेंट सफलतापूर्वक आयोजित हुआ। अनुसूचित और जनजातियों के विद्यार्थियों के आरक्षण के प्रश्न पर १८, १९, २० जनवरी '८५ को आयोजित कुलपति सम्मेलन की अध्यक्षता विख्यात गणितज्ञ पद्मश्री डा० आर०एस० मिश्र, कुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय तथा उद्घाटन श्री टी०एन० चतुर्वेदी, महालेखा नियन्त्रक भारत सरकार ने किया। मुख्य भाषण श्री अजनीकुमार ने किया।

छठी योजनान्तर्गत अनुदान-आयोग ने दस विभागों में प्रोफेसर पद निर्मित करने की स्वीकृति दी। प्रोन्नति-योजना के अधीन वरिष्ठ प्राध्यापक रीडर तथा रीडर प्रोफेसर पद पर प्रोन्नत हुए। प्रोफेसर पदों पर योग्य विद्वानों की नियुक्तियाँ की गईं।

इस वर्ष दीक्षान्त समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय के स्नातक तथा केनिया के उद्योगपति आर्यरत्न श्री सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार ने दीक्षान्त-

भाषण किया तथा समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी ने की। वेद-सम्मेलन की अध्यक्षता परिद्रष्टा डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार तथा राष्ट्र-निर्माण सम्मेलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध विधिवेत्ता श्री सोमनाथ मरवाह ने की। इस अवसर पर कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी ने श्री बलभद्रकुमार हूजा की पुस्तक 'शिक्षा, मूल्य और समाज' तथा सघड विद्या-सभा ट्रस्ट, जयपुर से प्रकाशित पुस्तकें—ब्रह्मचर्येण तपसा, वेद सुभाषित, वेद सौरभ, वैदिक सध्या तथा अग्निहोत्र के साथ मानवीय मूल्य और समाज में अन्त:सम्बन्ध तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय : शोध तथा प्रकाशन संदर्भ का विमोचन किया। इस वर्ष का आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री भगवद्दत्त वेदालंकार को दिया गया। श्री भगवद्दत्त को वेदानुसन्धान के लिए विश्वविद्यालय में दो वर्ष के लिए शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रदत्त पूजाराशि पर इस वर्ष नियुक्त किया गया। पुरातत्व विभाग में उत्खनन के लिए भारत सरकार से स्वीकृति मिली तथा तमिल भाषा के अध्यापन के लिए तमिलनाडु सरकार से २० हजार रुपये की राशि प्राप्त हुई। अब तमिल सरकार से प्रार्थना की गई है कि विश्वविद्यालय में तमिलघर की स्थापना की जाये।

पत्रिकाओं के प्रकाशन में विश्वविद्यालय ने उल्लेखनीय कार्य किया। वैदिक पाथ, गुरुकुल पत्रिका, प्रह्लाद, आर्यभट्ट तथा ध्रुव का नियमित प्रकाशन हुआ। दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर, ३० अगस्त '८४ को डा० भवानीलाल भारतीय, अध्यक्ष दयानन्द पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय, ३१ अक्तूबर '८४ को डा० प्रभाकर माचवे, निदेशक भारतीय भाषा परिषद् कलकत्ता, ८ फरवरी '८५ को पद्मश्री क्षेमचन्द्र सुमन तथा ६ फरवरी को ट्रिब्यून के पूर्वसम्पादक श्री मदन गोपाल ने नगर के शिक्षा-शास्त्रियों, बुद्धिजीवियों, पत्रकारों तथा सांस्कृतिक मंचों के प्रतिनिधियों की भारी सभाओं में क्रमश: *दयानन्द की प्रासंगिकता; दयानन्द, गाँधी और मार्क्स, दयानन्द और हिन्दी पत्रकारिता तथा दयानन्द और प्रेमचन्द* पर व्याख्यान दिए। विश्वविद्यालय ने इन व्याख्यानों का सुरुचिपूर्ण प्रकाशन करवाकर जनहित में इन्हें नि:शुल्क वितरित कराया। इस व्याख्यानमाला का सयोजन डा० विष्णुदत्त राकेश, प्रोफेसर हिन्दी विभाग ने किया।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विश्वविद्यालय में कार्यरत सेवा-योजना केन्द्र तथा योग केन्द्र द्वारा संचालित योग कक्षाओं से भी विद्यार्थियों तथा प्रौढ़ों ने लाभ उठाया। डा० वी०डी० जोशी ने राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर कागड़ी ग्राम में लगाया तथा विवेकानन्द जयन्ती पर आकाशवाणी नजीबाबाद के सहयोग से अन्तर्राष्ट्रीय युवा-वर्ष समारोह का आयोजन किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर परिवर्तन की दिशाओं तथा सम्भावनाओं की खोज के लिए एक समिति का गठन डा० जयदेव विद्यालंकार, रीडर, दर्शन विभाग के संयोजकत्व में किया गया। कुलाधिपति

श्री वीरेन्द्र जी की प्रेरणा से गठित इस समिति ने अपना प्रतिवेदन तैयार कर लिया है जो शीघ्र शिक्षामंत्री श्री कृष्णचन्द्र जी पंत की सेवा में प्रेषित किया जायेगा।

विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद्, कार्य परिषद्, शिक्षा पटल, वित्त समिति, योजना पटल तथा विकास समिति की बैठके नियमित रूप-से सम्पन्न हुईं। शिक्षा पटल में राजस्थान के रसायनशास्त्री एवं पूर्व कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय डा० आर० सी० मेहरोत्रा, काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति डा० राजाराम शास्त्री तथा योजना पटल में श्री आर०के० छाबड़ा, पूर्व-सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान-आयोग मनोनीत हुए।

विश्वविद्यालय का अगभूत कालेज कन्या गुरुकुल, देहरादून सर्वांगीण विकास के लिए कटिबद्ध है। आचार्या श्रीमती दमयन्ती कपूर के सुदक्ष नेतृत्व में कन्या गुरुकुल निरन्तर प्रगति करता रहा है। यह हर्ष का विषय है कि शिक्षा मत्रालय की ओर से विजिटिग कमेटी ने परिसर का निरीक्षण कर उसे विश्वविद्यालय का द्वितीय कैम्पस बनाने की संस्तुति कर दी है।

अन्त में, मैं भारत सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान-आयोग एव आर्य प्रतिनिधि सभा, पजाब के अधिकारियों तथा स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारू रूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति की ओर बढते रहे है।

—**वीरेन्द्र अरोड़ा**
कुलसचिव

गुरुकुल कांगड़ी-संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवी शताब्दी की ऊषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी प्रारम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नयी स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलो से एक नये पौधे का रोपण किया। यही नन्हा-सा पौधा आज ८५ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओ को पुन: धरती में सजो लिया और फिर उन्ही शाखाओं से नयी टहनिया फूट आई। यह पौधा गुरुकुल कागड़ी, जिसकी स्थापना गगा के पूर्वी तट पर, हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धि एव उपयोगिता से भारतवर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१९ वी शताब्दी में लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा-पद्धति चलाई जो उनके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहाँ इंग्लैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहाँ भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षा-स्थलों पर पाठशालायें चल रही थी। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत-साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया, जिसमें दोनो शिक्षा-पद्धतियो का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलाजलि दी जा सके। अत: गुरुकुल की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत-साहित्य और वेदांग की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्सदेह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आई इस मानसिक क्रान्ति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी विचार थे जिन्हें वे मूर्त्त रूप प्रदान करना चाहते थे। इनमें ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धों पर बल था।

कुछ वर्षों बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृ-भाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिल्कुल नहीं थीं। गुरुकुल के उपाध्यायों ने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो० महेशचरण सिंह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो० रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन की भौतिकी और रसायन, प्रो० सिन्हा का वनस्पति शास्त्र, प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान, हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रन्थ हैं। प्रो० रामदेव ने मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध "भारतवर्ष का इतिहास" प्रकाशित किया।

१९१२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनों स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नहीं, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुकों में सी०एफ०ए० एन्ड्रज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत सिडनी वेब और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मैक्डानेल्ड उल्लेखनीय है।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नही हुआ, जब तक सयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आँखों से देखने नही गये। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९०७ के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह सग्राम मे गुरुकुल ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान किया। इसी भावना को देखकर महात्मा गांधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है जिसमें महात्मा गांधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गये।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप मुलतान, कुरुक्षेत्र, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानों पर गुरुकुल खोले गये। बाद में झज्जर, देहरादून, भटिंडा, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गये। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा-सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार करके गुरुकुल के ढ़ंग के शिक्षणालय खोलने शुरू किये।

१४ वर्ष तक, अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से

स्वामी श्रद्धानन्द हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१९२१ में गुरुकुल, विश्वविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे।

(१) वेद महाविद्यालय।

(२) साधारण (कला) महाविद्यालय।

(३) आयुर्वेद महाविद्यालय।

(४) कृषि महाविद्यालय।

बाद में एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमें जोड़ दिया गया।

बाढ़—१९२४ में गंगा में भयंकर बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गई। अतः निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाये, जहाँ पर इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। इसके लिये हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर, ज्वालापुर के समीप गंगा नहर के किनारे, हरिद्वार बाई पास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

१९२७ का वार्षिकोत्सव, रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक यात्री विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुये। इनमें महात्मा गांधी, प० मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ जमुनालाल बजाज, डा० मुंजे साधुवर, वासवानी आदि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता रहा। १९२१ से पं० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए, पर १९२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गये।

प० विश्वम्भरनाथ जी के बाद १९२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १९०५ में गुरुकुल आये थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्न से लाखों रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारतें बननी शुरू हुईं। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान् और प्रचारक पं० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १९३५ में सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं० देव शर्मा जी विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १९४२ में स्वास्थ्य खराब होने के कारण

पं० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। प० बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १६४३ में चले गये। उनके स्थान पर प० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १६५० में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने किया। इस अवसर पर पधारने वालों में श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, प० ठाकुर दास जी, महाशय कृष्णजी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, प० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, कुंवर चांदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय है। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १६५३ में पं धर्मपाल विद्यालंकार, सहायक मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १६५७ को प० जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे और उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १६६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस वर्ष पर एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई, जिसका नाम है "गुरुकुल कांगड़ी के ६० वर्ष"। २० वर्ष से भी अधिक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् प० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एव मुख्याधिष्ठाता बने। इन्ही के समय १६६२ मे गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। ८ विषयों में एम०ए० कक्षाए विधिवत् शुरू हुई। अब चार विषयों में पी-एच०डी० (शोध-व्यवस्था) भी है। इन्ही के समय १६६६ में डा० गंगाराम जी प्रथम पूर्णकालिक कुलसचिव, जो अंग्रेजी विभाग में १६५२ से कार्य कर रहे थे, नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी, जो १६४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १६६६ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पच-वर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों में संशोधन हुआ। इनके बाद श्री रघुवीरसिंह शास्त्री तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति बने।

गुरुकुल को स्थापित हुए ८५ वर्ष हो गये हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान किया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्य मे आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकाओं के माध्यम से हम शैक्षिक एवं सास्कृतिक क्षेत्र में काफी योगदान कर रहे हैं। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपने मातृग्राम कांगड़ी को अगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिये कुलपति श्री हूजा जी ने ५००/- रुपये का दान भी संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एवं ग्राम जगजीतपुर को भी अंगीकृत किया है और स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही है।

विद्यालय—प्रथम कक्षा से १० वी कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाण-पत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय—प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक। उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद और सस्कृत में एम० ए० और पी–एच० डी० की उपाधियाँ प्राप्त करने की व्यवस्था है।

साधारण कला महाविद्यालय—इसमें प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालकार की स्नातक उपाधि दी जाती है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास एव सस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अंग्रेजी में एम०ए० तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी–एच०डी० उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी दर्शन तथा अग्रेजी विषयो मे प्राप्त की जा सकती है।

विज्ञान महाविद्यालय—इसमें प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी०एस–सी० की उपाधि प्रदान की जाती है। सम्प्रति भौतिकी, रसायन, वनस्पति शास्त्र, जन्तु विज्ञान, माइक्रोबायोलाजी और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी—यह आयुर्वेदिक औषधियो के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ी फार्मेसी है। बिक्री ६० लाख रुपये से ऊपर है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों तथा जनकल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय जो गुरुकुल के भवन हैं, उनका अनुमानतः मूल्य १ करोड़ रुपये से कही ऊपर है। इन भवनों मे वेद तथा साधारण महाविद्यालय, **विज्ञान**

महाविद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, टेरूचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियों के आवास-गृह सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त जो भूमि है, इसका भी अनुमानतः मूल्य १ करोड़ रुपये से कम नहीं है।

(४) १९७५ से श्री बलभद्रकुमार हूजा, आई. ए. एस. (अवकाशप्राप्त) कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता का कार्य कर रहे हैं। सम्प्रति डा० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विज़िटर हैं और श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब, कुलाधिपति।

विश्वविद्यालय के विजिटर महोदय को भी राष्ट्रपति पुरस्कार तथा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी से अपने लेखन-कला के क्षेत्र में पुस्तकों पर पुरस्कार मिल चुका है। श्री कुलपति जी भी इस संस्था को बनाने में जो अथक् प्रयत्न कर रहे हैं वें आज हमारे सामने हैं और उससे काफी प्रतिष्ठा मिली है एवं गुरुकुल प्रगति की ओर द्रुतगामी गति से अग्रसरित हो रहा है। कुलपति श्री हूजा के सद्प्रयत्नों के फलस्वरूप विश्वविद्यालय आन्तरिक रूप से सुदृढ़ हुआ है एवं राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय रूप से इसे ख्याति मिली है। कुलपति जी की सबसे बड़ी उपलब्धि रही है विश्वविद्यालय में आठ पीठों की स्थापना और इन सभी विभागों में प्रोफेसर पद की स्वीकृतियां एवं पचास लाख रुपये का विशेष अनुदान। कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी का भी इस सस्था के हित में वरद्-हस्त प्राप्त है। वे अपना अमूल्य समय निकालकर विश्वविद्यालय की समय-समय पर सेवा करते रहते है।

— रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उप-कुलपति

दीक्षान्त-समारोह पर

कुलपति का प्रतिवेदन

अर्चनीय संन्यासीवृन्द, मान्यवर कुलाधिपति जी, परिद्रष्टा महोदय, श्री भारद्वाज जी, माताओं, सज्जनो तथा ब्रह्मचारियो !

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के ८४वें वार्षिकोत्सव और दीक्षान्त पर आप सबका हार्दिक स्वागत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस प्रसन्नता का एक कारण यह भी है कि आज नव-स्नातकों को आशीर्वाद देने हमारे मध्य इस विश्वविद्यालय के लब्ध-प्रतिष्ठ स्नातक श्री सत्यदेव भारद्वाज विद्यालंकार पधारे हैं। आपने चौदह वर्ष तक गुरुकुल में रह कर वेद-वेदागों का अध्ययन किया और फिर लुधियाना में सरकारी शिक्षणालय से नीटिंग इन्डस्ट्री में डिप्लोमा लेकर व्यावसायिक क्षेत्र में प्रवेश किया। १६३४ में आप केनिया के नैरोबी शहर में गए और फिर १६४६ में 'सन फ्लैग नीटिंग वर्क्स' के नाम से उद्योग की स्थापना की। आपकी दूरदर्शिता, लगन, कर्मठता तथा व्यावसायिक पैनी दृष्टि का ही परिणाम है कि आज सन फ्लैग उद्योग के केन्द्र भारत, केनिया, तन्जानिया, नाइजीरिया, केमरून तथा लंदन में स्थापित होकर निरन्तर प्रगति कर रहे हैं। वेद भगवान् के इस आदेश का कि सौ हाथों से एकत्र करो तथा हजार हाथों से दान करो, आपने अक्षरशः पालन किया है। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार तथा लोक-कल्याण के लिए आपके द्वारा स्थापित 'भारद्वाज वैलफेयर ट्रस्ट' अनेक उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। २० मार्च १६७८ को नैरोबी में आर्य महासम्मेलन का विराट् आयोजन आपके ही सहयोग से सम्पन्न हुआ। लंदन में होने वाले सार्वभौम आर्य महासम्मेलन की सफलता में भी आपका अविस्मरणीय योगदान रहा है। श्री भारद्वाज ने समग्र भारत का भ्रमण कर जहाँ इसकी सांस्कृतिक विरासत का गहरा अध्ययन किया, वहाँ बर्मा, स्याम, सिंगापुर, इन्डोनेशिया, हांगकांग, टाइवान, जापान, नेपाल, अफ्रीका, अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैण्ड, जर्मनी, नार्वे, स्विट्जरलैण्ड तथा इटली आदि देशों का पर्यटन कर, प्रचुर अनुभव अर्जित किए हैं। आर्य-सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के लिए यायावरीवृत्ति ग्रहण करने वाले 'परिव्राजक' श्री भारद्वाज को अपने बीच पाकर हमारा गौरवान्वित होना स्वाभाविक ही है।

श्रीमन् !

गुरुकुल विश्वविद्यालय भारतीयतामूलक पद्धति पर आधारित संपूर्ण शिक्षा की आदर्श प्रयोगशाला है। आज हमारे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी तथा शिक्षा-

मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पंत शिक्षा के परम्परित ढाँचे में आमूल-चूल परिवर्तन के लिए कृत संकल्प हैं। अनुभव किया जा रहा है कि विश्वविद्यालय शिक्षा का वर्तमान ढाँचा राष्ट्रीय समस्याओं की पूर्ति नहीं कर सकता। समाज-सेवा, ग्रामोत्थान तथा प्रसार की धारा से विच्छिन्न होकर वह समाज से कट गया है। गत मार्च मास में दिल्ली में होने वाले एशिया के कुलपतियों के सम्मेलन में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा श्रीमती माधुरी शाह ने मानवीय मूल्यों पर आधारित राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की रूप-रेखा प्रस्तावित की और कहा कि यही प्रणाली वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय अखण्डता, समाज-सेवा, मानवजाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्र-निर्माण, आत्मानुशासन, सामाजिक तथा लोकतान्त्रिक न्याय, सामूहिक कार्य-चेतना, ज्ञान की खोज एवं प्रसार जैसे उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकती है।

महोदय !

गुरुकुल में, विगत वर्षों में, हम इन्हीं मूल्यों की खोज का यत्न करते रहे हैं। अपने सीमित साधनों के बावजूद जहाँ एक ओर यहाँ आश्रम-व्यवस्था का सुधार किया गया वहाँ ब्रह्मचारियों के आध्यात्मिक विकास के लिए व्रताभ्यास, योगाभ्यास तथा वेदमन्त्र पाठ पर अधिकाधिक बल दिया गया। ब्रह्मचारियों ने प्रतिवर्ष जो सौ मन्त्र याद किए उनको 'गोवर्धन ज्योति रश्मियों' के नाम से सघड विद्यासभा ट्रस्ट, जयपुर की ओर से मुद्रित करवाकर निःशुल्क वितरित कराया गया। इस बार वैदिक-सूक्तियों तथा ब्रह्मचर्य-सूक्त का प्रकाशन श्री सत्यकाम विद्यालंकार ने दिल्ली के राजपाल एण्ड सन्स ने करवाया है। इनका विमोचन गत मास लुधियाना में पण्डित सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार कर चुके हैं। पिछली शताब्दी में प्रोफेसर गुरुदत्त ने वैदिक मैगजीन नामक एक पत्रिका निकाली थी। बाद में इसकी उपयोगिता समझते हुए आचार्य रामदेव ने पुनः इसका प्रकाशन आरम्भ किया। इस पत्रिका के माध्यम से ही आचार्य रामदेव ने टालस्टॉय तथा रोमियां रोला जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध साहित्यकारों से पत्रव्यवहार किया था। कालान्तर में यह पत्रिका बंद हो गई थी। अब डा० हरगोपाल सिंह के सम्पादन में वैदिक पाथ नाम से इसे पुनः जीवित किया गया है। बच्चों के लिए ध्रुव, गुरुकुल हितैषियों के लिए गुरुकुल पत्रिका, विज्ञान के प्रसार के लिए आर्यभट्ट तथा पुराविद्याओं की गवेषणा के लिए प्रह्लाद पत्रिकाएँ निकाली गई, जो क्रमशः डा० दीनानाथ, डा० मानसिंह, डा० विजय शंकर तथा डा० विष्णुदत्त राकेश के सम्पादन में नियमित प्रकाशित हो रही हैं। अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त राशि से इस वर्ष तीन शोध-ग्रन्थ 'स्वामी सत्यदेव परिव्राजक', 'भवभूति : उनका व्यक्तित्व तथा पात्र' एवं 'कम्बुज का प्राचीन इतिहास' ग्रन्थ भी राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली तथा मीनाक्षी प्रकाशन से प्रकाशित हुए हैं। अंग्रेजी में डा० गगाराम

की पुस्तक 'वर्ल्ड पर्सपैक्टिव्स आन दयानन्द' तथा पण्डित प्रियव्रत वेदवाचस्पति की हिन्दी में तीन खण्डों में प्रकाशित 'वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त' ग्रन्थों से विश्वविद्यालय का सम्मान बढ़ा है। पण्डित प्रियव्रत जी की पुस्तक का विमोचन स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रधानमन्त्री, भारत सरकार ने किया था।

गुरुकुल का एक प्रमुख दर्शनीय स्थान गुरुकुल का पुरातत्व सग्रहालय है। इसमें पुरातत्व, अभिलेखशास्त्र तथा मुद्राशास्त्र की विविध दुर्लभ तथा रोचक सामग्री प्रदर्शित है। जनसाधारण को दिखाने के उद्देश्य से प्रचुर ऐतिहासिक सामग्री वीथिकाओं में सजाई गई है। राजस्थान सरकार के पूर्व-पुरातत्व निदेशक तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय के विजिटिंग प्रोफेसर डा० आर० सी० अग्रवाल ने डा० विनोदचन्द्र सिन्हा तथा उनके सहयोगियों के साथ कागड़ी के सिद्धस्रोत स्थान से ललितासनस्थ अग्निदेव, दिक्पाल ईशान या यम, सप्त-मातृकाएँ, सर्वतोभद्रिका, सिहवाहिनी देवी तथा शिरविहीन कुबेर की मूर्तियाँ खोज कर इस वर्ष सग्रहालय को दी। कुण्डी सोटा नामक स्थान से अन्वेषित महिषमर्दिनी मूर्ति तो ईसा की नवी शती की है। कला सौष्ठव की दृष्टि से नव-अन्वेषित कुबेर की प्रतिमा देश में उपलब्ध अन्य कुबेर मूर्तियों से भिन्न तथा स्वतन्त्र अस्तित्व रखती है।

सग्रहालय के साथ जुड़ा हुआ श्रद्धानन्द कक्ष भी दर्शनीय है। इसमें पूज्य स्वामी जी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमण्डल तथा दुर्लभ चित्र सुरक्षित है। भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास की एक स्वर्णिम कड़ी है स्वामी जी का व्यक्तित्व और इसका दर्शन होता है इस स्मृति-कक्ष में, सजीव रूप में। स्वामी जी का वह चित्र तो अत्यन्त प्रेरणाप्रद है जब १६१६ में अमृतसर में होने वाले राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन के वह स्वागताध्यक्ष थे। उनके साथ पण्डित मोतीलाल नेहरू, महामना मदनमोहन मालवीय, श्रीमती ऐनी बेसेन्ट तथा पाद-पक्ति में पण्डित जवाहरलाल नेहरू बैठे हुए हैं। अब यहाँ अष्टधातु तथा चित्रकक्ष की भी स्थापना हो गई है। छटी योजना के अन्तर्गत गुरुकुल विश्वविद्यालय में उत्खनन विभाग खोलने की स्वीकृति भी हमें वि०अ० आयोग से प्राप्त हुई है। अत: आगामी योजना में हम इस ओर दत्तचित्त होकर अग्रसर होगे। इसके साथ ही सातवी योजना में गंगा सग्रहालय स्थापित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। आप यह जानकर प्रसन्न होंगे कि पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष डा० विनोद चन्द्र सिन्हा को अनुदान आयोग ने राष्ट्रीय प्रोफेसर नियुक्त करके सम्मानित किया है और वह आगामी जुलाई से अपना पद-भार सभालेंगे।

यहाँ मैं अंग्रेजी विभाग के रीडर डा० राधेलाल वार्ष्णेय का भी जिक्र करना चाहूँगा जिन्हें गत वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने रूसी विश्व-

विद्यालयों की यात्रा पर भेजा। वहाँ जाकर उन्होंने गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली का प्रतिपादन किया और रूसी शिक्षा-जगत् के समक्ष एक नया दृष्टिकोण उपस्थित किया। जुलाई '८४ में राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षा-शिक्षा सुधार के लिए एक कार्यशाला प्रोफेसर वी० नटराजन को अध्यक्षता में विश्वविद्यालय संघ के संकेत पर हुई। उसका संयोजन भी डा० वार्ष्णेय ने किया। उसकी विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित हो गई है। डा० वार्ष्णेय बधाई के पात्र हैं।

मित्रों!

आपको यह जानकर भी प्रसन्नता होगी कि हमारे वयोवृद्ध वैदिकविद्वान् पण्डित भगवद्दत्त वेदालकार को इस वर्ष शिक्षा मन्त्रालय ने हमारे यहा वैदिक स्कॉलर के रूप में दो वर्ष तक कार्य करने की अनुमति प्रदान की है। उन्होंने पहली अप्रैल से अपना कार्य-भार संभाल लिया है। इस प्रकार हमारे वेद विभाग को बल मिला है। इसके साथ उन्हे सघड विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर ने इस वर्ष का आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार देकर सम्मानित किया है। मै उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

गुरुकुल पुस्तकालय तो उत्तर भारत के गिने-चुने पुस्तकालयों में एक है। यहाँ प्राच्य विद्याओं, धर्म, दर्शन, इतिहास तथा मानविकी और विज्ञान की दुर्लभ पुस्तकें तथा पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित हैं। विभिन्न विषयों पर एक लाख से ऊपर पुस्तके यहाँ विद्यमान हैं जिनका उपयोग देश-विदेश के शोधार्थी करते रहते हैं। अनुदान आयोग ने इस वर्ष छटी योजनान्तर्गत पुस्तकालय के विभिन्न संघटकों के विकास हेतु साढ़े दस लाख रुपये की राशि दी है। विविध उपकरणों के साथ इस वर्ष १६ स्वाध्याय-कक्ष स्थापित किए गए हैं। पाँच हजार नई पुस्तके, ३५० पत्रिकाएँ तथा शोध-सामग्री मंगाई गई हैं। राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता के निर्देशक तथा गुरुकुल के विजिटिंग फैलो श्री डी० आर० कालिया के अनुभव से लाभ उठाकर पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जगदीश विद्यालंकार, पुस्तकालय को पूर्णतया अप-टू-डेट (अद्यतन) करने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। इस वर्ष हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व-कुलपति डा० गणपतिचन्द्र गुप्त भी विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में हमारे बीच कार्य कर रहे है। उनसे हमारे विद्यार्थी लाभान्वित हुए हैं।

प्रौढ़ शिक्षा का कार्य डा० ए०के० इन्द्रायण, योग केन्द्र का कार्य श्री ईश्वर-दत्त भारद्वाज, क्रीड़ा का कार्य प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र तथा श्री खट्टर एवं गंगा समन्वित विकास योजना का कार्य डा० विजय शंकर देख रहे हैं। राष्ट्रीय कैडेट कोर का कार्य मेजर वीरेन्द्र अरोड़ा देख रहे हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्य का श्रीगणेश मेजर अरोड़ा ने किया था जिसे डा० वी० डी० जोशी देख रहे हैं।

हिमालय योजना के तहत, डा० जोशी के निर्देशन में जन्तु-विज्ञान विभाग को भारत सरकार के पर्यावरण विभाग से लगभग दस लाख रुपये की अनुदान राशि अभी-अभी प्राप्त हुई है। एम० एस-सी० माइक्रोबायोलाजी का विषय भी विश्वविद्यालय में खुल गया है। इस दृष्टि से देश का यह पहला विश्वविद्यालय होगा जहाँ स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान के एक विषय का 'शिक्षा-परीक्षा सुधार नीति' के अन्तर्गत नूतन क्रेडिट प्रणाली के अनुसार अध्यापन होगा। इसी प्रकार आगामी सत्र से हरिद्वार में अनुदान आयोग के सहयोग से गुरुकुल कन्या महाविद्यालय खोलने की भी योजना है। आरम्भ में यहाँ गृह-विज्ञान में विद्या-लकार तक की शिक्षा का प्रबन्ध रहेगा।

मित्रों, आपको यह जानकर भी प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष तमिल कक्षाएँ खोलने हेतु तमिलनाडु सरकार की ओर से यथेष्ट धनराशि उपलब्ध कराई गई है। आशा है इस दिशा में आगामी सत्र से कार्यारम्भ हो जाएगा।

आर्य समाज का नवाँ नियम है कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। इस भावना को मूर्त्तरूप देने के लिए प्रयोगरूप में १९८१ में कांगड़ी ग्राम को अंगीकृत किया गया था। सड़कों का निर्माण, वृक्षारोपण, गोबर गैस संयन्त्र की स्थापना, साक्षरता अभियान, नारी शिक्षा, परिवार कल्याण, गोवर्धन पुस्तकालय तथा वाचनालय की स्थापना ग्रामोत्थान के लिए किए गए महत्वपूर्ण कार्य हैं। जिला प्रशासनाधिकारी श्री दर्शनसिंह बैंस तथा स्टेट बैंक ऑव इण्डिया के सहयोग से ग्रामवासियों ने कुटीर उद्योग-धन्धे शुरू किए हैं। अब वे आत्मविश्वासी होते जा रहे हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविर भी यहीं लगाये जाते हैं। इससे विद्यार्थियों का ग्रामीण जीवन की समस्याओं से परिचय होता है और जब वह स्थानीय नवयुवक मगल दल के सदस्यों के साथ मिलकर ग्राम सफाई तथा अन्य निर्माण के कार्य करते हैं तो एक समां-सा बंध जाता है। विद्यार्थियों को रोजगार दिलाने के लिए रोजगार ब्यूरो की इकाई की भी विश्वविद्यालय में स्थापना की गई है तथा डा० डी०एन० तनेजा की देखरेख में "स्वास्थ्य केन्द्र" का कार्य भी सुचारू रूप से चल रहा है।

छटी योजनान्तर्गत अनुदान आयोग ने दस विभागों में दस प्रोफेसर पद निर्मित करने की स्वीकृति भी दी। प्रोन्नति योजना के तहत वरिष्ठ प्रवक्ताओं को रीडर तथा रीडरों को प्रोफेसर पद पर प्रोन्नत किया गया। प्रोफेसरों का चयन भी हुआ। अनुदान आयोग की जो समिति गुरुकुल पधारी उसने लाजपत-राय पीठ की स्थापना का अनुमोदन किया। भारतीय इतिहास की पुनर्रचना तथा स्वाधीनता आन्दोलन के मूल्यांकन का कार्य यह पीठ करेगी।

विश्वविद्यालय के आचार्यों के क्वार्टर्स के लिए आयोग ने लगभग १८ लाख रुपये की राशि प्रदान की। आधुनिक सुविधासम्पन्न ये आवास-गृह बनकर लगभग तैयार है। इस योजना का प्रारम्भ परिद्रष्टा डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने किया था। शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के आवास-भवनों का शिलान्यास कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र के हाथों सम्पन्न हो चुका है।

विश्वविद्यालयीय सकायों के विद्यार्थियों तथा प्रबुद्ध नागरिकों के ज्ञान-वर्धन के लिए भारतीय विश्वविद्यालयों के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों के व्याख्यानों, परिचर्चाओं, कार्यशालाओं तथा सम्मेलनों का आयोजन भी विश्वविद्यालय परिसर में समय-समय पर होता रहा। वैदिक शिक्षा, राष्ट्रीय कार्यशाला, मानवमूल्य और समाज में अन्तःसम्बन्ध विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, अमेरिकन अध्ययन के अखिल भारतीय सगठन का अधिवेशन, परीक्षा सुधार कार्यशाला तथा दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला का आयोजन विश्वविद्यालय की शैक्षिक, गवेषणात्मक तथा प्रसार-कार्य की उपलब्धियाँ है। उत्तरक्षेत्रीय, ४० के लगभग, विश्वविद्यालयों के खिलाड़ी-दलों का बैडमिटन टूर्नामेन्ट जिस धूम-धाम से सम्पन्न हुआ, उसका उल्लेख करते हुए मुझे हर्ष होता है। गत जनवरी में अखिल भारतीय विश्वविद्यालय सघ के तत्वावधान में विश्वविद्यालय में अनुसूचित तथा जन-जातियों के आरक्षण के प्रश्न को लेकर उत्तरक्षेत्रीय कुलपतियों का दो-दिवसीय सम्मेलन यहाँ हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता पद्मश्री डा० आर० एस० मिश्र, कुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय ने की तथा उद्घाटन-भाषण भूतपूर्व गृहसचिव तथा वर्तमान महालेखा नियन्त्रक, भारत सरकार श्री टी०एन० चतुर्वेदी ने किया। अखिल भारतीय विश्वविद्यालय सघ के संयुक्त-सचिव श्री अंजनी कुमार ने प्रस्तावना भाषण किया। इस सम्मेलन में निश्चय किया गया कि आरक्षण-नीति का पुनर्मूल्यांकन होना चाहिए। दस वर्ष तक आरक्षण की नीति का पालन वर्तमान पद्धति से ही किया जाये और फिर इसे समाप्त कर दिया जाये। इस अवसर पर यह बात विशेष रूप से उभर कर आई कि यदि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली स्वीकार कर ली जाए तो आरक्षण का प्रश्न ही नही उठेगा। इस प्रणाली में सबके लिए समान वस्त्र, भोजन तथा समान शिक्षा का प्रावधान है। जात-पाँत तथा स्तरगत विषमता के भेद से ऊपर उठकर समस्त जन को शिक्षा देने की बात महर्षि दयानन्द और श्रद्धानन्द ने की थी, उसे विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने तहेदिल से स्वीकार किया। इस सम्मेलन की सुचारू व्यवस्था के लिए जहाँ इसके संयोजक प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र, अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग बधाई के पात्र है, वहाँ बी०एच०ई०एल० के महा-प्रबन्धक श्री सी०एम० गुप्ता तथा जन-सम्पर्क अधिकारी श्री चन्द्रकांत सरदाना विशेष रूप से धन्यवाद के अधिकारी है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त-समारोह की एक झांकी।

(चित्र में) बाएँ से—डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, परिद्रष्टा; श्री वीरेन्द्र जी, कुलाधिपति; श्री सत्यदेव भारद्वाज वेदालङ्कार, मुख्य अतिथि, श्री बलभद्रकुमार हूजा, कुलपति तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, सीनेट, सिंडीकेट तथा शिक्षा-पटल के मान्य सदस्यो तथा प्राध्यापको के साथ कुलवन्दना करते हुए।

उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन के उद्घाटन-सत्र में मुख्य अतिथि श्री टी०एन० चतुर्वेदी का अभिनन्दन करते हुए कुलपति बलभद्रकुमार हूजा। साथ में प्रसन्नमुद्रा में डा० आर० एस० मिश्र, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय (सभापति)।

बन्धुओ !

आर्य समाज की उपलब्धियों और अपेक्षाओं से जन-सामान्य का परिचय कराने के लिए इस वर्ष हमने महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला का आयोजन भी किया। स्वामी जी के निर्वाण के सौ वर्षों के लम्बे समय में देश ने कई उतार-चढ़ाव देखे और जिन विस्फोटक परिस्थितियों में आज देश खड़ा हुआ है, उनमें स्वामी जी की प्रासंगिकता बढ़ गई है। नव-जागरण के युग में उन्होंने राष्ट्रीय एकता, सामाजिक जाग्रति, भारतीय शिक्षा, सामाजिक न्याय, स्वदेशी और स्वभाषा का जो शंख फूँका उसने समृद्ध, रूढिमुक्त तथा आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण में अहम भूमिका अदा की। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने मनु आदि धर्मशास्त्रकारों का युगानुरूप नवीन भाष्य प्रस्तुत किया। दयानन्द की दयालु तथा अन्त:भेदिनी दृष्टि ह्रासोन्मुखी सामन्ती समाज, पिछड़ी हुई दलित जातियों तथा नारी परतन्त्रता की ओर भी गई। प्रचारक होने के नाते दयानन्द पत्रकारिता की सम्भावनाओं के प्रति भी पूर्णतया जागरूक थे। अतः उन्होने हिन्दी पत्रकारिता के प्रारम्भिक युग में पत्रकारिता को टकसाली हिन्दी और नये विचारणीय विषय दिए। अजमेर में प्रैस स्थापित किया तथा मेरठ से आर्य समाचार, फर्रुखाबाद से भारत सुदशा प्रवर्त्तक, शाहजहाँपुर से आर्य दर्पण तथा राजस्थान समाचार जैसे पत्र उन्ही की प्रेरणा से निकले। फिर तो आर्य समाज, और विशेष रूप से गुरुकुल के स्नातको ने हिन्दी के मासिक, साप्ताहिक तथा दैनिक पत्रों के सम्पादन का एक युग ही खड़ा कर दिया। स्वामी जी के इस बहुआयामी व्यक्तित्व के उद्घाटन के लिए हमने दयानन्द पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय के आचार्य डा० भवानीलाल भारतीय, सुप्रसिद्ध मार्क्सवादी तथा गाँधीवादी विचारक और भारतीय भाषा परिषद् कलकत्ता के निदेशक डा० प्रभाकर माचवे, ट्रिब्यून के पूर्व-सम्पादक श्री मदनगोपाल तथा साहित्य अकादमी दिल्ली के पूर्व-सचिव पद्मश्री प० क्षेमचन्द सुमन के क्रमश: 'दयानन्द सरस्वती के विचार समय की कसौटी पर,' 'दयानन्द, गाँधी और मार्क्स,' 'दयानन्द और प्रेमचन्द' तथा 'दयानन्द और हिन्दी पत्रकारिता' पर व्याख्यान कराए तथा उन्हे पुस्तकाकार प्रकाशित कर नि:शुल्क वितरित कराया। इससे नगर के सभी वर्गों के लोगों तथा साधु-समाज के विभिन्न सम्प्रदाय के आचार्यों को दयानन्द के कार्यों की जानकारी मिली। इस व्याख्यानमाला की सफलता के लिए इसके संयोजक डा० विष्णुदत्त राकेश, प्रोफेसर हिन्दी विभाग साधुवाद के पात्र हैं।

इसके अतिरिक्त जिन विद्वानों ने अभ्यागत आचार्य अथवा नियुक्ति और विशेष बैठकों के सिलसिले में यहाँ आकर हमारे आचार्यो और ब्रह्मचारियों का मार्ग-दर्शन किया, उनमें जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के श्री राम राहुल, मगध विश्वविद्यालय के डा० उपेन्द्र ठाकुर, राँची विश्वविद्यालय के कुलपति डा०

अनुजकुमार धान, बर्दवान के कुलपति डा० रमारंजन मुखर्जी, काशी विद्यापीठ के पूर्व-कुलपति डा० राजाराम शास्त्री, जगन्नाथपुरी वि०वि० के कुलपति डा० सत्यव्रत शास्त्री, गुजरात विद्यापीठ के कुलपति डा० रामलाल पारीख, काश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति डा० वहीद मलिक, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के पूर्व-कुलपति डा० हरवंशलाल शर्मा, उज्जैन के पूर्व-कुलपति तथा उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष पद्मभूषण डा० शिवमंगल सिंह सुमन, मदुरई के कुलपति डा० एम० आराम, हिमाचल विश्वविद्यालय के कुलपति डा० एल० पी० सिन्हा, राजस्थान विश्वविद्यालय के डा० दयाकृष्ण तथा दिनमान के सम्पादक और प्रसिद्ध साहित्यकार श्री कन्हैयालाल नन्दन के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

अध्यक्ष जी !

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा श्रीमती माधुरी शाह भी इस वर्ष गुरुकुल में पधारी। विश्वविद्यालय द्वारा संचालित योजनाओं और शैक्षिक गतिविधियों को देखकर उन्होंने सन्तोष व्यक्त किया। परिसर में शांति, व्यवस्था, अनुशासन तथा अध्ययन-अध्यापन का वातावरण देखकर उन्होने आचार्यो और अन्तेवासियों को बधाई दी। उन्होंने आशा प्रकट की, जहाँ इस विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य, आर्य सिद्धान्त तथा प्राचीन भारतीय विद्याओं का उच्चतर अध्ययन, शोध और प्रसार का कार्य सम्पन्न हो, वहाँ इसमें सगणक विज्ञान जैसे आधुनिक पाठ्यक्रमों का समावेश भी होना चाहिए। आपने विश्वविद्यालय को एक कम्प्यूटर देने का भी आश्वासन दिया।

इस अवसर पर चूँकि यह मेरा अन्तिम प्रतिवेदन होगा, इसलिए मैं विश्वविद्यालय के आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों से भी कुछ कहना चाहूँगा। गुरुदेव महर्षि विरजानन्द जी ने जैसे महर्षि दयानन्द से गुरुदक्षिणा माँगी थी, इस अवसर पर मैं श्रद्धानन्द जी का नाम लेकर आपसे कुलदक्षिणा की माँग करता हूँ। आज आप स्तर, वेतनमान तथा अन्य सुविधाओं की दृष्टि से देश के अन्य विश्वविद्यालयो के समकक्ष खड़े हैं। मैं चाहूँगा कि आप वर्ष में कम-से-कम २५० दिन तथा एक सप्ताह में चालीस घंटे विश्वविद्यालय के लिए कार्य करने का व्रत लें। गुरुकुल के कर्मचारी आर्य समाज के कोष में अपनी आय का एक प्रतिशत दें तथा जन-साधारण तक कल्याणी वेद-वाणी का सदेश पहुँचाएँ। सत्य, ऋत, दीक्षा, दृढ़-सकल्प, तप, आस्तिकता और यज्ञ का व्रत लेकर मन, कर्म और विचार से समाज और राष्ट्र की सेवा करे तभी गुरुकुल शब्द अपनी सार्थकता प्रमाणित कर सकेगा। मुझे संतोष तब होगा जब यहाँ का प्रत्येक आचार्य तथा शिष्य संस्कृत में सम्भाषण करेगा, अंग्रेजी तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में दक्षता प्राप्त करेगा तथा संस्कृत का सन्देश पूर्वोत्तर भारत में तथा विदेशों में विदेशी भाषा के माध्यम से पहुँचायेगा। दयानन्द की व्याख्याएँ विदेशी भाषाओं में करें आप—आप लोगों को यह अन्तर्राष्ट्रीय चुनौती है।

मान्यवर !

यह युवावर्ष है। हम सचेष्ट हैं कि हमारे विद्यार्थी सामूहिक उत्साह के साथ खेल के मैदान में भी उतरे। आस्ट्रेलिया में विश्व क्रिकेट चैम्पियन मैच जीतकर तथा शरजाह में रॉथमैंस कप जीतकर भारत के खिलाड़ियों ने युवावर्ष का मगलाचरण किया है। वे हमारी बधाई के पात्र हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे विद्यार्थी भी कपिलदेव और गावस्कर से प्रेरणा लेते हुए जीवन के मैदान में अच्छे खिलाड़ियों की तरह उतरेंगे तथा भावात्मक संगठन और शारीरिक संतुलन का परिचय देंगे।

इसी संदर्भ में विवेकानन्द जयन्ती पर हमने युवा-वर्ष समारोह का आयोजन किया जिसमें विश्वविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने नगर की शिक्षण-संस्थाओं के प्रतिनिधि-कलाकारों के साथ अनेक रोचक कार्यक्रम दिए। आकाशवाणी नजीबाबाद के अधिकारी और मुख्यरूप से युवा कार्यक्रम के संचालक श्री हिन्दवान धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस कार्यक्रम का आकाशवाणी से प्रसारण कराया। वेद-मन्दिर में पण्डित सत्यव्रत जी की सन्निधि में आकाशवाणी ने भक्ति संगीत सम्मेलन का भी आयोजन किया। इसकी व्यवस्था के लिए श्री कमलेश नैथानी को मैं आशीर्वाद देता हूँ।

आचार्यों और ब्रह्मचारियों के टूटते हुए सम्बन्धों को देखकर हमारा चिन्तित होना स्वाभाविक है। गुरुकुलीय शिक्षा का यह 'सम्बन्ध' दृढ अंग है। ब्रह्मचारी जहाँ राष्ट्र की मूल्यवान निधि है, आचार्य वहाँ उसका निष्काम रक्षक। हमारे कुल का मूल-केन्द्र ब्रह्मचारी ही तो है। वह इस आश्रम का अपरिहार्य अंग है। उसकी शिक्षा-दीक्षा, सेवा तथा पोषण गर्भस्थ शिशु की तरह आचार्यों को करना है, तभी ब्रह्मचारी आचार्य के अनुकूल कर्म करने वाला बनेगा, तभी कुल-माता के समान वह सद्भाव रखेगा। यदि वह आचार्य तथा कुल का अनुव्रती नहीं बन सका तो इसे आचार्य की विफलता मानिए।

गुरुकुल के बहुत से हितैषी गुरुकुल की भावी रूप-रेखा के बारे में यदा-कदा यत्र-तत्र अपने विचार प्रकट करते रहते है। मैं उन्हें बड़े ध्यान से पढ़ता हूँ। कइयों का विचार है कि गुरुकुल की नीव ब्रह्मचारी है। मैं विनम्रतापूर्वक इससे मतभेद रखता हूँ। गुरुकुल की नीव है गुरुजन। जैसे गुरुजन होंगे, वैसे ही शिष्य होंगे और यह भी कि किसी भी सस्था को उभारने, खड़ा करने या पुनर्जीवित करने के लिए केवल भाषणों या लेखों से ही काम नहीं चलेगा। किसी इमारत को खड़ा करने के लिए ईंट-पत्थर, सीमेन्ट इत्यादि इकट्ठा करना पड़ता है, व्यावहारिक साधन जुटाने पडते हैं जिससे कि सस्था को चलाने के लिए जिम्मेदार अधिकारी, कर्मचारी, गुरुजन दत्तचित्त होकर, मनोयोग से अपने-अपने कर्त्तव्यों का पालन कर सकें।

जैसे कि मैंने ऊपर कहा है कि प्रत्येक शिक्षा-संस्था की नींव गुरुजन होते है। इसके लिए योग्य गुरुजन का चुनाव हो और जो गुरुजन संस्था में विद्यमान हों उनके लिए पुर्नाशिक्षण की व्यवस्था हो। इस हेतु गुरुजन एवं कर्मचारियों को यथेष्ट वेतन एवं श्रद्धा देनी पड़ेगी।

जहाँ तक विश्वविद्यालय का सम्बन्ध है, वेतनों के सम्बन्ध में तो अब कोई चिन्ता की बात नही लेकिन विद्यालय विभाग में गुरुजनों को यथोचित वेतन प्राप्त नही हो रहे है। जब तक इसका प्रबन्ध नही होता, सुयोग्य शिक्षक कैसे उपलब्ध होंगे और विद्यार्थियों का स्तर कैसे ऊँचा होगा ?

आज का विद्यार्थी हमारे जमाने के विद्यार्थी से कही अधिक सचेत एवं जागरूक है। वह अपना भविष्य बनाने के लिए हमारे पास आया है, उसकी शिक्षा-दीक्षा के लिए हम उत्तरदायी हैं। हम स्वयं भी सचेष्ट एवं जागरूक हों और आधुनिक विज्ञान द्वारा उपलब्ध साधनों का पूर्ण उपयोग करें जिससे कि हमारे ब्रह्मचारी किसी भी सस्था के विद्यार्थियों के समकक्ष खड़े हो सकें।

आचार्यों तथा ब्रह्मचारियों !

प्रतिज्ञा करो कि आप लोग अपने देश तथा अपने कुल की गौरवमयी परम्पराओं का, ऋषि-मुनियों की विचार-सरणियों का, राष्ट्रीय और सामाजिक मूल्यों का तथा स्वकीय विकास के साथ मानव-मात्र के कल्याण और सेवा का व्रत कभी नहीं तोड़ोगे। आगामी वर्ष हरिद्वार में कुम्भ हो रहा है। स्वामी जी ने हरिद्वार में कुम्भ पर ही पाखंड-खण्डिनी पताका फहराई थी। देश में अभी भी पाखंड और अज्ञान का कुशासन व्याप्त है। कितना ही अच्छा हो कि गुरुकुल के आचार्य तथा ब्रह्मचारी और सार्वदेशिक सभा के अधिकारी इस अवसर पर एक वेद-विज्ञान शिविर लगाकर देवदयानन्द की पताका की पुनः प्रतिष्ठा करें। साथ में समाजकल्याण और सम्पूर्ण उत्थान हेतु अपने समीपस्थ ब्लाकों नजीबाबाद और बहादराबाद की सेवा का व्रत लें।

आपको यह भी स्मरण होगा कि सन् १९८१ में हमें तीन वर्ष के लिए अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ की अस्थायी मान्यता प्राप्त हुई थी। अब उसकी अवधि दो वर्ष और बढा दी गई है। आगामी सत्र में उनकी जाँच समिति विश्वविद्यालय के मूल्यांकन हेतु इस आशय से आयेगी कि इसे स्थायी मान्यता दी जाए अथवा नही। आशा है, आप गुरुजन, ब्रह्मचारीगण तथा कर्मचारी इस परीक्षा में यश के साथ उत्तीर्ण होंगे।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि हमारे आचार्यकुल ने करवट बदली है और अब इसके कतिपय सदस्य जागरूक होकर मनोयोग से पुर्ननिर्माण की

दिशा में कार्य करने लगे हैं। उनके लिए मेरे आशीर्वाद। शेष प्रभु-इच्छा से इसके लिए तैयार होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। उनकी सद्बुद्धि के लिए परमेश्वर से प्रार्थना। मैं चाहूँगा कि गुरुकुल अब फिर रोगग्रस्त न हो, इस कुल के सभी लोग हृष्ट-पुष्ट हों।

विश्व पुष्ट ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।

देवियों और सज्जनों !

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद् ने श्री सत्यदेव भारद्वाज जी को विद्यामार्तण्ड की मानद-उपाधि से अलंकृत करने का अनुमोदन किया है। मैं उन्हे विद्यामार्तण्ड की उपाधि प्रदान करने की घोषणा करता हूँ।

मैं एक बार फिर गुरुकुल की गत वर्ष की उपलब्धियों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, आकाशवाणी नजीबाबाद, विश्वविद्यालय की शिष्ट-परिषद्, कार्य-परिषद् तथा शिक्षा-पटल के मान्य सदस्यगण के प्रति आभार प्रकट करना चाहूँगा जिन्होने समय-समय पर हमें अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया तथा हमारा मार्ग-प्रदर्शन किया। इसके साथ ही मैं स्थानीय प्रशासन को भी धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्होंने यहाँ व्यवस्था बनाये रखने में अपना सहयोग दिया।

मैं इस अवसर पर अपने आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों को भी साधुवाद देना चाहूँगा जिन्होने मेहनत और लगन से ये सब उपलब्धियाँ प्राप्त की।

मान्यवर भारद्वाज जी !

इस वर्ष पी-एच०डी० की ८, एम०ए० की ५०, एम०एस-सी० की १८, बी०एस-सी० की ३० तथा अलकार की १३ उपाधियाँ प्रदान की गई हैं।

अब आपसे निवेदन है कि नव-स्नातकों को आशीर्वाद देने की कृपा करें।

———

श्री आर्यरत्न पं० सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार

द्वारा

दीक्षान्त-भाषण

ओ३म्

"तत्सत्"

"सत्यं शिवं सुन्दरम्"—"सत्यं परं धीमहि"

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुंधरा पुण्यवती च तेन ।
अपारसंवित्सुखसागरेऽस्मिन् लीनं परे ब्रह्मणि यस्य चेतः ।।

इन शब्दों के साथ, सौम्य-स्वभाव नवदीक्षित नवस्नातको ! मेरा स्नेह और सत्कार तुम्हें स्वीकृत हो।

विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी के अधिकारिगण ने इस वर्ष दीक्षान्त भाषण देने के लिए निमन्त्रित कर मुझे आदृत किया है; इसके लिए मैं सब का आभारी हूँ। मुझे अपने गुरुकुलों से विशेष स्नेह है, जो स्वाभाविक है, क्योंकि मैं भी आपकी तरह से ही, गुरुकुलों में ब्रह्मचारी रहते हुए, इसी कुलभूमि से स्नातक रूप में दीक्षित हुआ था। मेरे मन, बुद्धि और आचार-विचार पर गुरुकुल शिक्षा का अमिट प्रभाव रहा है और उसके द्वारा संसार की सब तरह की भिन्न-भिन्न विपदाओं, संकटों और आधि-व्याधियों में से गुजरते हुए, प्रभु में अगाध विश्वास रखते हुए, किसी भी रूप में सदा कर्मयोगी-निःश्रेयस् मार्ग का दर्शन करता रहा हूँ। जीवन-यात्रा में समय-समय पर गुरुकुल बन्धुओ से मिलते हुए सदा ऐसा अनुभव हुआ है जैसे अपने सगे-जैसे गुरु-भाइयों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। इस मिलन में कितना स्नेह, श्रद्धा, सरलता और पारस्परिक विश्वास प्राप्त होता है, इसके बारे में तो यही कहूँगा—"स्वयं तदन्तःकरणेन गृह्यते।"

जब गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्ययन किया तो वैदिक ब्रह्मचर्य जीवन में 'भगवद्गीता' ने अद्भुत जीवन-ज्योति के लिए वैदिक कर्मयोग का अमिट आलोक प्रदान किया। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में भारत की राजधानी दिल्ली या इन्द्रप्रस्थ के उत्थान और पतन का इतिहास सदा सामने रहा और जब गुरुकुल कांगड़ी की पुरानी और नई भूमि में आवास हुआ तो गंगा का वातावरण सदा के लिए जीवन पर छा गया। गंगा अपने साधारण स्वरूप को छोड़कर 'ज्ञान-गंगा' के प्रवाह में हमें तैराती थी, डुबकियाँ दिलाती थी और अनमोल जीवन-प्रवाह का मधुर सन्देश देती थी। यहाँ पर ही अनुभव होता था कि गंगा के साथ खड़े पर्वत, जंगल, नदी-नीर, सभी अपना-अपना संदेश लिए हमें जीवन के विशाल रूप को दे रहे थे। गुरुजनों की कृपा से हमें कर्तव्य का उद्‌बोधन होता था और जिस कुलमाता की गोद में हम प्रेम से पल रहे थे उसके संवेदन से सहसा हृदय की धड़कनों में एक गूँज उठती अनुभव होती थी, जिसके स्वर थे :-

वन पर्वत में नदी नीर में माता जो पाया संदेश।
तेरो पुण्यपताका लेकर फैला दूँगा देश-विदेश।।

सचमुच यह भावना सदा साथ में रही और तदनुसार भारत तथा विश्व के विविध प्रदेशों में यथाशक्ति और यथासम्भव वैदिक पुनीत सन्देश पहुँचाने में मैंने तन, मन, धन आदि सभी साधनों से कार्य किया है। आर्य संस्कारों के पले सभी अपने पारिवारिक जनों से भी पर्याप्त सहायता मिली।

यह सब कुछ गुरुजनों की कृपा का फल था। गुरुजनों का प्रेम तथा जिज्ञासाओं में उद्‌बोधन सदा आनन्दप्रद रहा है। उनके आशीस् वचनों का वरदान भी मिलता रहा है, इसी से नतमस्तक होकर अपने सब गुरुजनों का विशेष श्रद्धा के साथ अभिनन्दन करता हूँ। यथायोग्य रूप से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के परमोत्कर्ष की भी हृदय से कामना करता हूँ।

अपने इस कुल की आत्मा का स्वरूप कुलपिता श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व से अनुप्राणित था। वैदिक ज्ञान की विशुद्ध धारा, गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा, शिक्षा-दीक्षा की सरस्वती के प्रवाह रूप में अक्षुण्ण रूप से प्रवाहित हुई थी। परन्तु बीच में आ गयी बहुत-सी चट्टानों से टकरा गई और भिन्न-भिन्न धाराओं में बहने लगी। मुख्य धारा कुछ विलुप्त-सी प्रतीत होती है—जब से भारत विप्लव या विभाजन की अवस्थाओं में से गुजर रहा है, भविष्य ने इस सबका निर्णय करना है। इसी से यह कहने का साहस करता हूँ कि महर्षि दयानन्द की वैदिक श्रद्धा फिर से किस रूप में उभरेगी, यह अब भविष्य का विषय हो गया है। वर्तमान तो धूलधूसरित या धूमिल है।

वैदिक वाङ्मय में, "व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षया दक्षिणामाप्नोति, दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते" इस मन्त्र का सन्देश हमारी सम्पूर्ण शिक्षा का उपसहार बता रहा है। ब्रह्मचर्य व्रत से आगे बढ़ते-बढ़ते श्रद्धा की प्राप्ति और उससे परम सत्य का दर्शन या अनुभव, यही परमार्थता है जिससे अभ्युदय और निःश्रेयस् का मार्ग प्रशस्त होता है। "यो यच्छ्रद्धः स एव सः।"

इन दिनों में ससार विशेष रूप से दो विभागों में बंट गया है। दोनों का स्वरूप दक्षिणपक्ष (Right Wing) और वामक या वामपक्ष (Left Wing) में है। निःश्रेयस् मार्ग की तरफ सदा दक्षिणपक्षीय आते है और क्रांतिमय लौकिक प्रेयमार्गी वामक पक्ष के हैं। ये सत् और असत् की विचारधारायें हैं। एक तरफ दैवीय प्रवृत्ति उभरती है और दूसरी तरफ आसुरी प्रवृत्ति। परिणाम दैवी सपत् का संचय या आसुरी सपत् की प्राप्ति होता है। इस पर गीता के विशेष प्रवचन ध्यान देने योग्य हैं। ससार को इन दो दृष्टियों में आसानी से समझा जा सकता है। दीक्षा से दक्षिण पथ का अनुसरण करना ही वैदिक वाङ्मय का आदेश है। श्रेय मार्ग अभ्युदय को समुचित रूप से स्वयं ही खीच लाता है और इससे 'धर्मसिद्धिः' प्राप्त हो जाती है—"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।" अतः धर्म का सदा ध्यान रखना उचित है—"धर्मो धारयते प्रजाः।"

निराहार रहने में लोगों ने व्रत-दीक्षा को समझ लिया है। यह आरोग्य का एक साधन है। हमारी महान् शिक्षाये इससे बहुत आगे वढ जाती है। योग दर्शन में महर्षि पतञ्जलि ने यम-नियमो के विवेचन मे यमों को अर्थात् "अहिंसा-सत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः, एताः जातिदेशकालसमयानवच्छिन्ना सार्वभौमाः महाव्रतम्", कहकर ससार को सार्वभौम महाव्रत का सन्देश दिया है जिससे संयमित ससार सुख और शान्ति को आसानी से प्राप्त कर सकता है। ससार को सार्वभौम महाव्रत में दीक्षित किया जाना शिक्षा का सार्वभौम यौगिक अंग माना है जिससे शिक्षा की पूर्णता होती है। योगिराज पतञ्जलि के यम-नियम (Law and Order) एक शाश्वत सनातन आर्य-धर्म हैं। इनके प्रति निरपेक्षता तो आत्महत्या के रूप मे ही समझी जानी चाहिए। यही वैदिक धर्म मार्ग है।

ससार के प्रथम कानूनदाता महर्षि मनु के "दशक धर्मलक्षणम्" एव "आचारः प्रथमो धर्मः", "न हि सत्यात् परो धर्मः", व्रतपते...अनृतात् सत्यमुपैमि" आदि वचन तथा वैदिक धर्म का मानव धर्म सदा ही मनुष्यो को "सर्वभूतहिते रताः", "वसुधैव कुटुम्बकम्", "सर्वजनसुखाय", "सर्वजनहिताय", "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे" आदि से मनुष्यो की सार्वभौम विचारधारा की ओर ध्यान खीचता है। हमारे ऋषियो ने या धर्मग्रन्थों ने दैशिक दृष्टि (Nationalist View) को तुच्छ समझते हुए मानवमात्र को भाई-बन्धु रूप में

ही पहिचाना है। "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः", "पृथिव्यै अकरं नमः", "नमो मात्रे पृथिव्यै" आदि वैदिक पृथिवी सूक्त के मन्त्रोपदेश और निर्देश हमारी संस्कृति को संसार के उच्चतम शिखर पर ले जाते हैं।

भौतिक विज्ञान की उपलब्धियों से संसार एक बहुत छोटी इकाई बन गया है। रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, कम्प्यूटर आदि के आविष्कार तथा तेज रफ्तार से उड़ने वाले हवाई जहाजों से दुनिया अब एकदेशीय है। हमारे सब विचार अब सार्वभौम दृष्टि से ही होने चाहिएँ। संसार को विनष्ट करने वाली प्रवृत्तियों—बड़े-बड़े एटम बम, मिसाईल्स, जगी जहाज, विषैली गैसें, कीटाणु बम आदि के हथियारों—का सम्बन्ध प्राणिमात्र के जीवनों से है। आवश्यकता है कि जीवनमात्र को नष्ट करने वालों—आसुरी प्रवृत्ति वालों—के प्रति विरोध भावना बचपन से ही बच्चों की शिक्षा का अभिन्न अंग हो। इससे जहाँ सदाचार या धर्मसंस्थापना होती है और नैतिकता के धर्मचक्र का प्रवर्तन होता है, मनुष्यों को संरक्षा पाने में जनता के नैतिक प्रभाव का बल प्राप्त हो जाता है। पृथिवी सूक्त के वैदिक संदेश को एक सार्वभौम शाश्वत धर्म के रूप में ससार की सब सस्थाओं, शिक्षणालयों, धर्मस्थानो में गर्व से रख सकते हैं। कोई भी मतमतान्तर इससे उच्च रूप में नेतृत्व न दे सकेगा। शब्द स्पष्ट हैं :—

"सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवी धारयन्ति, सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्नी, उरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।" "मा नो द्विक्षत कश्चन मा नो द्विक्षत कश्चन।"

नवदीक्षित स्नातको, यहाँ पर 'दीक्षा' शब्द पर विशेष ध्यान देना। साथ के शास्त्र वचनों को भी याद रखना—

माता मे पृथिवी देवी, पिता देवो महेश्वरः।
मनुजाः भ्रातरः सर्वे स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥

इसके बाद मैं आपको याज्ञिक-दीक्षा की तरफ भी आकर्षित करना चाहूँगा। हमारी शिक्षा-दीक्षा में यज्ञ की प्रधानता है— "यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म।" हमें पञ्चमहायज्ञों पर चिन्तन को समाप्त नही करना चाहिए। राष्ट्रीय दृष्टि से राजसूय तथा राष्ट्रमेध यज्ञों का भी नवीन रूप में विधान समझना चाहिए। इससे हम चक्रवर्ती राज्य (One-World Welfare State) की दिशा को भी दृष्टि में रख सकते है। भिन्न-भिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संगठन संगतिकरण रूप से यज्ञ रूप में प्रवृत्त हो रहे हैं। हमें भी इस तरफ आगे बढ़ना है। इन यज्ञों में लौकिकता का विशेष प्रभाव न हो सके परन्तु आध्यात्मिकता पनपती हो, इसे ध्यान में रखना चाहिए।

संसार में आधुनिक वैज्ञानिक युग में मनुष्य आकाश में दूर से दूर पहुँच रहा है। चन्द्रमा पर तो वह अपने पैर भी फैला चुका है। धरती के विस्तृत भू-खंडों पर, उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों के विशाल प्रदेशों पर भी पर्यवलोकन हो रहा है। समुद्रों और धरती की गहराइयाँ भी मापी जा रही हैं। इन सब बड़ी-बड़ी दूरियों और गहराइयों को मापते हुए लौकिक पुरुषों ने अपनी बड़ी से बड़ी विजयों के झण्डे गाड़े हैं। परन्तु इस धरती पर बसने वाले मानवों के हृदयों, मनों और बुद्धियों की गहराइयों को मापना अभी तक सीखा नहीं गया है। मनुष्य के मन और हृदय को अन्दर से जीतने में और उसमें प्रेम, सहानुभूति, उत्साह, सहायता तथा धीरता आदि का शांतिमय सन्देश नहीं दिया जा सका है। यह मार्ग अभी तक प्रशस्त नहीं हुआ। यहाँ पर आकर भौतिक विज्ञान असफल हो गया है। यही से हमें श्रेयमार्ग को प्रशस्त करना है और यह यज्ञ-मय जीवन से प्रारम्भ होता है। "बहुविधा यज्ञाः वितताः ब्रह्मणो मुखे" का ध्यान रखते हुए हमें वर्तमान में द्रव्य-यज्ञों के प्रति बढती प्रवृति को अन्ध-श्रद्धा की तरफ जाने से रोकना होगा। हमें यज्ञों की विविधता तथा विशालता को भी समझना चाहिए। सयतेन्द्रियता से ये यज्ञ ज्योतिर्मय हो जाते है। समझना चाहिए कि—

द्रव्ययज्ञा तपोयज्ञा योगयज्ञा तथापरे ।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ॥
श्रेयान् द्रव्यमयात् यज्ञात् ज्ञानयज्ञः परंतप ।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ।
श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥

श्रद्धापूर्वक विभिन्न यज्ञों से, यज्ञमय जीवन से, ज्ञान प्राप्त करते हुए शान्ति की प्राप्ति सहज हो जाती है। हमारे भूतकाल में ज्ञानयज्ञ का अनुष्ठान सदा तीव्र रूप में अग्रसर होता हुआ, सामाजिक जीवनों में विशुद्ध दृष्टि (Vision) या चिन्तन को प्रदान करता था। ज्ञान की धारा लौकिक और अलौकिक, प्रेय और श्रेय, आसुरी तथा दैवी, वामकपक्षी या दक्षिणपक्षी आदि द्वंद्वों में संघर्षात्मक दृष्टि से आगे बढ़ी थी। दर्शन शास्त्र या आन्वीक्षिकी विद्या का इसमें विशेष भाग है। बड़े-बड़े ऋषि, मुनि और आचार्य जब उपरोक्त असत् और सत् विचारधाराओं पर गम्भीर मन्थन करते थे तो जातियों के जीवन परिवर्तित हो जाते थे। धर्म, संस्कृति, सभ्यता और समाज-रचना के नये-नये स्रोत बह निकलते थे और संसार को नवजीवन प्राप्त होता था। मैं वर्तमान युग में ज्ञानी पुरुषों में भारतीय आन्वीक्षिकी विद्या या दर्शन शास्त्र की पूर्ण चर्चा का

किया जाना आवश्यक समझता हूँ । यह विश्वविद्यालयों की पुण्यस्थली में ही समुचित रूप से हो सकेगा । जब 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द बार-बार सुना जाता है तो लौकिक दृष्टि से धर्म शब्द तिरस्कृत हो जाता है । जब वैदिकी ज्ञानधारा "आचार: प्रथमो धर्म:", "धर्म चर" का उद्‌घोष करती है तो 'Secular' शब्द धर्मनिरपेक्षता के अर्थो में 'आचारनिरपेक्षता' की तरफ खीच ले जाता है । यही कारण है कि वर्तमान भारतीय समाज में 'भ्रष्टाचार' बुरी तरह से फैलता जा रहा है और नैतिक मूल्य गिर रहे हैं। 'धर्मसस्थापन' या 'धर्मचक्रप्रवर्तन' एक हँसीमात्र दिखाई देते है । धर्म शब्द महान् है—यह कर्तव्य, पुण्यकार्य, कानून तथा व्यवस्था आदि में मुख्यत: प्रयुक्त होता है । 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द को सरकारी रूप से तिलाञ्जलि दी जानी चाहिए । भिन्न-भिन्न मतों या सम्प्रदायों के साथ धर्म शब्द का व्यवहार हमारी अशिक्षा का परिचायक है । सब सम्प्रदायों के प्रति उदारता का परिचय देना, विभिन्न मतभेदों में भी पारस्परिक आदरभाव रखना, मानवमात्र को भाईचारे से वर्तना, ईश्वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखना 'Secular' शब्द का अर्थ नही है । भारत में इस विषय में अर्थ का अनर्थ किया जाना रोकना चाहिए । 'Secular' विचारधारा वामपक्षीय लौकिक विचारधारा है जो अनीश्वरवादी नास्तिक विचारों से ओतप्रोत हो जाती है ।

जब वैदिक परम्पराओं मे याज्ञिक हिसा और दुराचार प्रवृत्त हुए और लौकिक दृष्टि ही प्रमुख हो गयी तो बौद्ध धर्म ने पुरानी सदाचार की धर्म-मर्यादाओं को स्थापित किया था । नये-नये विचारो से दृष्टि परिवर्तन भी हुआ । करीबन डेढ हज़ार वर्ष पूर्व से हमारे वैदिक और अवैदिक—सत् और असत्—दार्शनिकों का ज्ञानचर्चा-द्वद्व अत्यन्त गम्भीरता से चलता रहा है । वैदिक आर्य दर्शनों पर बौद्ध आचार्यो के घात-प्रतिघात थे । इस सघर्ष में कई सदियाँ बीत गयी । आर्य दर्शनों के ऋषि कपिल, कणाद, गौतम, पतञ्जलि, व्यास, जैमिनी आदि का सम्पोषण समन्वयात्मक दृष्टि से अग्रसर करने में वात्स्यायन, उद्योतकाचार्य, शकर, वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्य आदि थे तो दूसरी तरफ असत् विचारधारा मे बौद्ध दार्शनिको ने भी प्रतिघात किए । इनमें नागार्जुन, दिङ्नाग, धर्मकीर्ति, कल्याणरक्षित, अतिशा, वसुबधु, आसग आदि प्रौढ विद्वानों द्वारा गभीर चिन्तन होता रहा और ज्ञान का चतुर्मुखी प्रवाह बहता रहा । इस तरह से दीर्घ काल के सघर्ष में अन्त में वैदिक विचारधारा ने ही 'सत्पक्ष' में भारत की विजय को स्थापित किया । अब वही विचारधारा आगे सैमेटिक विचारों से टकरा गई है । इसमें महर्षि दयानन्द का प्रकाण्ड साहस, दूरदर्शिता, गम्भीर चिन्तन तथा सार्वभौम संस्कृति, धर्म, सभ्यता को समन्वय रूप से वैदिक धर्म के मानववाद में पाना अभी गम्भीर चिन्तन का विषय है जिसे भविष्य ने अपनी कसौटी पर परखना है ।

भारत की सम्पूर्ण विचारधारायें गुरु-शिष्य परम्पराओं द्वारा बड़े-बड़े गुरुकुलों या विहारों में पनपी थी। भगवद्गीता की वैदिक कर्मयोग की राजविद्या भी गुरु-शिष्य परम्परा से ही विकसित हुई थी।

> **इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।**
> **विवस्वान् मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवे॥**

इत्यादि परम्पराप्राप्त ज्ञान है। क्षत्रविद्या के लिए हमें तक्षशिला गुरुकुल के आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य के शिष्य सम्राट् चन्द्रगुप्त को भूलना नही चाहिए। इसी तरह से महर्षि पतञ्जलि द्वारा शिक्षित सेनापति पुष्यमित्र को भी भुलाया नहीं जा सकता। नवरत्नविभूषित उज्जयनी के महाराजा विक्रमादित्य को भी सदा याद रखना चाहिए। इन्होंने भूतकाल में आर्य जाति की स्वतन्त्रता को अखण्ड रूप से स्थापित किया था और भारत को शिरोमणि राज्य का स्थान दिलाया था। उस समय ब्रह्म और क्षत्र के समन्वय से भारत पुण्यलोक बन गया था।

राजधर्म को समझाने में जो कार्य रामायण तथा महाभारत ने किया है एवं भारतीय स्मृतिग्रन्थों ने जो ज्ञान भारतीय मनीषियों को समय-समय पर दिया है, उस सबका भी पुनः भारतीय दृष्टि से चिन्तन आवश्यक है। वर्तमान सांस्कृतिक या राजनैतिक विचारधारायें भारतीय चिन्तन में से न आकर विदेशी या पराये रूप में हम पर लद-सी गयी है। यह गम्भीर चिन्तन भारतीय समाजशास्त्रियों का अब विशेष विषय है। हम सब कुछ अंग्रेजी की ऐनक से देखते हैं और जैसा दिखता है उसी में सत्य का दर्शन समझते है। अपनी स्वयं की आँखों की विशुद्ध दृष्टि ही अन्ततः यथार्थ होगी, इसे जानना चाहिए।

सम्पूर्ण भारत की भौगोलिक एकता को कविकुलगुरु कालिदास ने 'कुमार-सम्भव' के प्रारम्भ में अत्यन्त मधुरता से दिया है :—

> **अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः।**
> **पूर्वापरौ तोयनिधी विगाह्य, स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥**

इसी तरह से 'रघुवंश' में रघु की सेनाओं ने जिस स्वराज्य की स्थापना की थी और जिसके द्वारा सूर्यवंश या रघुवंश ने भारतीय राजतन्त्र में 'रामराज्य' की विचारधारा को सनातन रूप दिया था, वह भी भुलाया नहीं जा सकता। रघुवंश ने भारत के भौगोलिक स्वरूप को स्थायी दृष्टि दी थी। राघव वंश के रामराज्य की दृष्टि से भारत का केन्द्रीकरण सदा ही हमारा उद्देश्य रहना चाहिये।

अयोध्या से निकलकर जब महाराजा रघु ने केन्द्रीकृतार्थ (for integration) महाभारत निर्माण में जो सेना-प्रस्थान किया था वह पहिले पूर्व की तरफ बढा था। मगध राज्य और सुह्य राज्यों को परास्त करते हुए बंगदेश के अन्तिम किनारे तक रघु के झंडे गड़ गए थे। इसी तरह से गंगासागर के सब द्वीपों को वश में कर उड़ीसा और कलिंग देश को वशवर्ती किया। पास के सब पहाड़ी प्रदेशों पर भी अपना झंडा फहराते हुए रघु ने महेन्द्र पर्वत पर अधिकार जमाया। इस तरह से पूर्वीय भारत पर विजयपताका फहरा कर वे दक्षिण दिशा की तरफ समुद्रतट के साथ-साथ चले। कावेरी नदी के सब भूभागों को—पाण्ड्य राजाओं सहित—वशवर्ती करते हुए केरल प्रदेश को जीतकर वे भारत के सम्पूर्ण पश्चिमी प्रदेश पर छा गए। उधर से स्थल मार्ग से ही पारस देश (पर्शिया) में प्रविष्ट होकर उसके बड़े भाग को समेटते हुए सिन्धु नदी के पश्चिमी प्रदेशों में उन्होंने प्रवेश किया, जहाँ अपगणस्थान के कम्बोज या काबुल के राज्य को अपने साथ मिलाया। इसके बाद हिमालय के महान् प्रदेशों में सब राज्यों को वशवर्ती करते हुए अपने पराक्रम का सिक्का बिठा दिया। हिमालय की लौहित्य नदी को पार कर वे प्राग्ज्योतिष या आसाम में आ पहुँचे थे। इस तरह से महाभारत भूमि की पूरी परिक्रमा विजय द्वारा स्थापित कर उसका स्थायी मानचित्र बना दिया गया था। इस तरह से आर्य साम्राज्य की पूर्ण स्थापना कर वे वापिस अयोध्या में आ गए थे। विकेन्द्रित भारत एक महान् केन्द्रित (integrated) महाभारत में बदल कर 'रामराज्य' में चरमोत्कर्ष पर पहुँचा था जिसका वर्णन महाभारत के शांतिपर्व में 'रामे राज्य प्रशासति" प्रकरण में देखा जा सकता है। इन सब विजयों में रघु ने आर्य मर्यादाओं का कभी त्याग नहीं किया। जिसे जीता उसे सन्मार्ग पर लगा कर राज्य उसे ही सुराज्य स्थापना के लिए दे दिया। कोई बदले की भावना न थी। कोई ईर्ष्या या द्वेष न था। रघु ने विशाल स्वराज्य या धर्मराज्य को पैदा किया और राम ने 'सुराज्य' रूप में परमार्थता का दर्शन दिया। साम्राज्य स्थापना में दिग्विजय के बाद रघु ने 'विश्वजित्' यज्ञ को किया और "परोपकाराय सतां विभूतयः", "सर्वभूतहिते रताः", "सर्वजनसुखाय" के वैदिक आर्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सब कुछ दक्षिणा रूप से दान में देकर उन सब राजाओं को सम्मानित किया जो रघु से युद्ध में हार जाने से अपने को लज्जित तथा तिरस्कृत समझते थे। सभी को पूर्ववत् मान-मर्यादा देते हुए स्वयं एक तपस्वी, निर्धन, वानप्रस्थी बन कर ऋषि आश्रमों में चले गए, क्योंकि "योगेनान्ते तनुत्यजाम्' का उद्देश्य जो पूरा करना था।

इस तरह से मैंने भारत की प्राचीन गौरवगाथा आपके सामने रक्खी है। इससे संसार की महान् शक्तियों को बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है। रघुवीर और यदुवीर जैसे आर्यवीर भारत को सदा चमकते सूर्य और चाँद की तरह प्रकाश और जीवन देने वाले हैं। महर्षि दयानन्द के सामने भारत की यह

गौरवगाथा सदा ज्योति-स्तम्भ की तरह भविष्य का पथ-प्रदर्शन करने वाली रही है।

भारत में बहुत से साम्राज्य आए और उजड़ गए। उनमें भिन्न-भिन्न संस्कृतियाँ या सभ्यतायें बनी और उजड़ती रही। परन्तु आयत्व की महिमा पर और उसके उच्च आदर्शों पर कभी आंच न आ सकी। शरीर मर गया, परन्तु आत्मा सदा अपनी अमरता का सन्देश देती रही। ऐसी भावना को ही हमने गुरुकुल संस्थाओं में फिर से धीमे-धीमे पनपाना है। हमारे शिक्षा केन्द्र या गुरुकुल, शिक्षा की व्यापारी दुकानें न बनें, परन्तु पुण्यभूमियाँ बने; जहाँ पहुँचते ही मनुष्य को सुख, शांति, साहस, धैर्य और ईश्वरीय जीवन का आनन्द मिलता हो, जहाँ मनुष्य नतमस्तक होकर आता हो और अपनी झोली को 'दैवी सपत्' से भर कर ससार में यह संपत् बाँटता हो या बिखेर देता हो। यही हमारी लक्ष्मी पूजा है, इसी में हमारी सरस्वती वन्दना है और पुण्यभूमि की अर्चना है—"इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः।"

इस सबके बाद मुझे आपको वैदिक धर्म, आर्य सपाज तथा महर्षि दयानन्द के विषय में भी कुछ कहना है। यद्यपि ये तीनों अलग-अलग है परन्तु तीनों में एक समन्वय भी है।

वैदिक धर्म हमारी सभ्यता, सस्कृति, दर्शन, आचार, मर्यादाओं आदि का आधार है, जिसके बिना हम खड़े नही हो सकते। आर्य समाज या आर्य राष्ट्र एक समाज-रचना या राष्ट्र-रचना का विशिष्ट विधान है जो सब ससार को, प्राणिमात्र के उपकार के उद्देश्य से, मानव को मानव से भाईचारे मे जोड़ देता है। यहाँ "वसुधैव कुटुम्बकम्" का आदर्श सामने आ जाता है। इस दिशा को दिखाने वाला महान् नेता दयानन्द है, जिसने हमें अपने भूत, वर्तमान और भविष्य के लिए उद्बोधित किया है। हम औरों की दृष्टि में बहुत पिछड़ गए प्रतीत होते है। इसी से जागरूक होने की हमारी आवश्यकता है। हमारी वाणी में, हमारे आर्य नेता जागरूक नही, इसी से कहता हैं—"वय राष्ट्रे जागृयाम स्याम पुरोहिताः", "अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु", "देवसेनाः सूर्यकेतवः प्रचेतस अमित्रान् नो जयन्तु", "कृतं (सत्य) मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः" इत्यादि, इत्यादि।

निरुक्त में महर्षि यास्क ने, जो एक पारसी ऋषि थे, हमें परमात्मा के दो विशेष वैदिक नामों का परिचय दिया है—प्रथम 'राष्ट्री' और द्वितीय 'अर्य'। ब्रह्माण्ड राष्ट्र का राष्ट्रपति राष्ट्री परमात्मा है और 'अर्य' अर्थात् संसार का स्वामी या मालिक। "अर्यस्यापत्यं आर्यः", अर्थात् ईश्वरपुत्र हम 'अर्य'

परमात्मा के पुत्र हैं। इसी से आर्य मानव हैं। सारा संसार हमारे पिता का राष्ट्र है, इसी से सब ससार हमारा राष्ट्र है। उसके उत्तराधिकारी हम 'राष्ट्रीय आर्य' हैं। इसी से कहता हूँ—

"श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः।" "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।"

आर्यत्व में भद्रता है, उच्च चारित्र्य है, Nobility है। संसार को इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। भौतिक विज्ञान की तरक्की ने लौकिक अभ्युदय में महान् सिद्धियों को प्राप्त करते हुए अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त किया है, परन्तु आर्यत्व या निःश्रेयस् को नहीं दिया है। यही अब भारतीय सस्कृति में पोषित शिक्षणालयों से अपेक्षित है।

इस समय हमने शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति के मार्ग पर चलना है। हमारे कुछ स्नातकों को जर्मनी, फ्रांस, इटली आदि प्रदेशों में मान्यता मिली थी, जिससे स्नातक बनने के बाद कुछ स्नातकों ने सीधे ही उन प्रदेशों के विश्व-विद्यालयों से उच्चतम उपाधियाँ प्राप्त की थी। अब हमें भारत सरकार से मान्यता प्राप्त होने से दूसरे देशों में भी मान्यता प्राप्त हो रही है। इसमें अधिकारिवर्ग धन्यवाद के पात्र है। हमारा उद्देश्य महान् होना चाहिए। हमारा विश्वविद्यालय "सार्वभौम आर्य विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी" के रूप में पनपे। संसार के सब देशों के विश्वविद्यालयों से हमारा सम्पर्क बढ़े, उनसे सहायता प्राप्त करने में कभी सकोच न होना चाहिए। ससार की भिन्न-भिन्न राज्य-सस्थाओं और राज्याधिकारियों को भी सम्मानित कर उनसे सब तरह की सहायता लेनी चाहिए। प्रत्येक देश की अपनी विशाल शाला (Wing) हो, जिसमें उस देश की सर्वोत्कृष्टता को ग्रहण करने में कभी संकोच न हो। उनकी भाषा, दर्शन, विज्ञान आदि हमें सहज में प्राप्त होते हों। ससार के बड़े परोपकार कृत्यों को करने वाले सस्थानों (Foundations) से सम्पर्क कर उनसे विशिष्ट आर्थिक सहायता भी हमें लेनी चाहिए, क्योंकि हमारे उद्देश्यों में 'सारे ससार का उपकार करना' भी हमारा उद्देश्य है। इसमें, सक्षेप से, उन्नति-पथ की तरफ आपका ध्यान खीच रहा हूँ। आशा है, आर्य समाज तथा गुरुकुल के अधिकारिगण इस पर विशेष ध्यान देंगे।

जब हम गुरुकुल में पढते थे तो जामिया मिलिया, देवबन्द आदि विद्यालयों के विद्यार्थी हमारे यहाँ आते थे, हम उनके स्थानों पर जाते थे, आपस में वाग्प्रतियोगितायें होती थी, कभी कोई प्रथम होता था कभी कोई। कभी कोई वैमनस्य पैदा नहीं हुआ। क्या यह प्रथा अब अपनी विशालता को पनपा नहीं सकती? हमने समन्वयात्मक धर्म, संस्कृति, सभ्यता आदि को सार्वभौम दृष्टि

से पैदा करना है— "एष कामः, एष निर्देशः, एष सन्देशः, एषा वैदिकी उपनिषद्।"

प्रिय स्नेहपूर्ण नवस्नातको ! अन्त में "सत्यं वद", "धर्मं चर" के ऋषियों के सनातन शिक्षा-आदेश या दीक्षा की तरफ ध्यान दिलाते हुए यह कहकर समाप्त करता हूँ कि 'सत्यस्वरूप परमात्मा के विषय में प्रवचन करना और चिन्तन करना, सत्य के दर्शन से धर्म के स्वरूप को समझते हुए उससे कभी निरपेक्ष न होना, परन्तु सदा उस पर आचरण करते रहना" यही "सत्यं शिवं सुन्दरं" का प्रशस्त मार्ग है। यह तुम्हें सदा प्राप्त होता रहे। अपने प्रेम, सद्भावना, सहृदयता तथा शिक्षा-संस्थान (गुरुकुल) की उन्नति में सदा अग्रसर रहने में सहायक होना—यह कहते हुए तुम्हारा बहुत सस्नेह अभिनन्दन करता हूँ। गुरुकुल विश्वविद्यालय के सब अधिकारिवर्ग तथा गुरुजनों के सामने नत-मस्तक होकर अपनी श्रद्धा के सुमन उपस्थित करता हूँ। स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्म-ज्योति आपको सदा प्रकाश देती रहे। प्रभु का सब पर सदा वरद हस्त बना रहे।

हिमालय की सुपुत्री पार्वती कहूँ या गंगामाता से कुलमाता को याद करूँ—कुछ भी हो—अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए कहना चाहूँगा—

जन्म यहीं मृत्यु यहीं खेलूँ यहीं आ-आ कर।
हँसना रोना हो यहीं माता तेरे चरणों में॥

समाप्त करने से पूर्व 'कुलमाता की पताका' पर ध्यान दिलाता हूँ। यह सूर्य-ज्योति से उज्ज्वलित है। यही 'ओ३म्' की सच्ची ध्वजा है—"सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।" इसका संदेश भी सामने रक्खो। इसमें श्रद्धा प्राप्त करो, सविता या सूर्यदेव के गुरुमन्त्र का भी मनन करो। इसे हम 'वेदमाता' से पुकारते हैं। यही हमारी 'बन्देमातरम्' है।

"श्रद्धया सत्यमाप्यते।"
"सत्यमेव जयते नानृतम्।"

ओ३म् शम्! **ओ३म् स्वस्ति!!** **ओ३म् शान्तिः!!!**

दीक्षान्त-समारोह में यज्ञ-वेदी पर कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी, मुख्य अतिथि श्री सत्यदेव वेदालंकार तथा कुलसचिव ।

विश्वविद्यालय परिसर में प्रौढ़ सतत शिक्षा संगोष्ठी के अवसर पर प्रतिनिधियों के बीच पौधा रोपते हुए परगनाधिकारी श्री ए० के० सिंह।

प्रौढ़ शिक्षा पर्यवेक्षक प्रशिक्षण शिविर में उद्घाटन भाषण करते हुए परगनाधिकारी श्री अशोककुमार सिंह। कुलपति श्री हूजा, प्राचार्य सुरेश त्यागी तथा डा० इन्द्रायण (संयोजक) कुर्सियों पर विराजमान है।

विश्वविद्यालय के शिक्षकेतर कर्मचारी, प्राध्यापक वृक्षारोपण करते हुए। पौदा लगा रहे हैं श्री वी० डी० भारद्वाज, वित्ताधिकारी। पास में खड़े हुए नगरपालिका के प्रभारी अधिकारी श्री ए० सी० दुबे, प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र तथा कुलसचिव श्री वीरेन्द्र अरोडा।

वित्त एवं लेखा

अगस्त, सितम्बर 1984 में विश्वविद्यालय का संशोधित बजट बनाया गया। इसे वित्त समिति की बैठक दिनांक 20-10-84 में प्रस्तुत किया गया, जिसे समिति ने निम्न प्रकार पारित किया।

बजट सारांश

	संशोधित अनुमान 84-85	बजट अनुमान 85-86
वेतन व भत्ते आदि	24,27,000·00	25,55,000·00
अंशदायी भविष्य निधि	76,000·00	91,000·00
अन्य व्यय	8,84,000·00	8,25,000·00
योग व्यय	33,87,000·00	34,71,000·00
आय	—1,14,000·00	1,19,000·00
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त अनुदान	32,73,000·00	33,52,000·00

समीक्षाधीन वर्ष में 84-85 में 32,73,000·00 रु० के अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है उसका विवरण निम्न प्रकार है।

क्रम सं०	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
1.	10,000·00	वि०वि० अनुदान आयोग	अमेरिकन कान्फ्रेंस
2.	10,000·00	वि०वि० अनुदान आयोग	मानवीय मूल्य और समाज में अन्त: सम्बन्ध पर राष्ट्रीय कान्फ्रेंस
3.	10,000·00	आई.सी.पी आर. नई दिल्ली	मानवीय मूल्य और समाज में अन्त: सम्बन्ध पर राष्ट्रीय कान्फ्रेंस
4.	15,000·00	वि०वि० अनुदान आयोग	अनएसाइन्ड ग्रान्ट
5.	1,12,000·00	भारत सरकार	गंगा बेसिन
6.	11,143·00	भारत सरकार	एन०एस०एस०
7.	3,19,000·00	भारत सरकार	हिमालयन प्रोजेक्ट

इस वर्ष संस्था को नियमित अनुदान मिलता रहा है जिसके कारण कर्मचारियों को वेतन का नियमित भुगतान तथा अन्य मदों में व्यय की प्रगति संतोषजनक रही। वित्त समिति ने अपनी बैठक दिनांक 23-6-84 तथा 23-3-85 में वित्त सम्बन्धी जो निर्णय लिये उनके क्रियान्वयन सम्बन्धी कार्यवाही की गई।

—वित्त अधिकारी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

आय का विवरण

1984-85

क्रम संख्या	आय का मद		धनराशि
(क) दान और अनुदान—			
1.	वि०वि० अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान—		32,73,000·00
		योग—	32,73,000·00
(ख) शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय—			
1.	पंजीकरण शुल्क		3,500·00
2.	पी-एच०डी० रजिस्ट्रेशन शुल्क		1,030 00
3.	पी-एच०डी० मासिक शुल्क		4,420·00
4.	परीक्षा शुल्क		37,889·00
5.	अंक पत्र शुल्क		1,825·00
6.	पड़ताल शुल्क		238·00
7.	विलम्ब दण्ड—टूट-फूट		8,676·00
8.	माइग्रेशन शुल्क		1,381·00
9.	प्रमाण-पत्र शुल्क		769·00
10.	नियमावली पाठ विधि तथा फार्मों आदि का शुल्क		1,070·00
11.	सेवा आवेदन पत्र		2,019·00
12.	रद्दी व पुराने पर्चे		161·00
13.	शिक्षा शुल्क		16,489·00
14.	प्रवेश व पुनः प्रवेश शुल्क		5,296·00
15.	भवन शुल्क		481 00
16.	क्रीड़ा शुल्क		1,300 00
17.	पुस्तकालय शुल्क		2,252·00
18.	परिचय पत्र शुल्क		204·00
19.	एसोसियेशन शुल्क		378·00

20.	मनोविज्ञान लैब	138·00
21.	मंहगाई शुल्क	3,591·00
22.	विज्ञान शुल्क	3,665·00
23.	पुस्तकालय से आय	3,752·00
24.	पत्रिका शुल्क	3,067·00
25.	साइकिल स्टैण्ड	1,380·00
26.	अन्य आय	1,292·00
	योग—	1,06,263·00
	क+ख सर्वयोग—	33,79,263·00

—वित्त अधिकारी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

1984-85

क्रम सख्या	व्यय की मद	राशि
(क) वेतन—		
1.	शिक्षक एव शिक्षकेतर कर्मचारियों का वेतन	24,67,473·00
2.	भविष्य निधि पर संस्था का अंशदान	94,491·00
3.	ग्रेच्युटी	6,039·00
	योग—	25,68,003·00
(ख) अन्य—		
1.	विद्युत व जल	83,792·00
2.	टेलीफोन	22,726·00
3.	मार्ग व्यय	90,359 00
4.	लेखन सामग्री व छपाई	25,891·00
5.	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	29,588·00
6.	डाक व तार व्यय	6,882·00
7.	वाहन अनुरक्षण तथा पेट्रोल	45,574·00
8.	विज्ञापन	15,167 00
9.	न्यायिक व्यय	20,874·00
10.	अतिथ्य व्यय	18,302·00
11.	दीक्षान्तोत्सव	12,882·00
12.	लोन संरक्षण	4,762·00
13.	भवन मरम्मत	46,873·00
14.	उपकरण	42,444·00
15.	फर्नीचर एवं साज-सज्जा	47,313·00

16.	राष्ट्रीय छात्र सेवा	354·00
17.	निर्धनता फण्ड	500·00
18.	छात्रों को छात्रवृत्ति	28,816·00
19.	खेल-कूद एवं क्रीड़ा	24,576·00
20.	गोष्ठी एवं संभाषण	2,658·00
21.	सरस्वती यात्रा	3,656·00
22.	वाग् वर्धिनी सभा	2,201·00
23.	छात्र एसोसियेशन	54·00
24.	मनोविज्ञान प्रयोगशाला	3,407·00
25.	रसायन प्रयोगशाला	18,612·00
26.	भौतिकी प्रयोगशाला	15,738·00
27.	वनस्पति विज्ञानशाला	8,710·00
28.	जन्तु विज्ञानशाला	7,524·00
29.	गैस प्लान्ट	3,735·00
30.	साइन्स जरनल आर्य भट्ट	8,945·00
31.	वनस्पति वाटिका ग्रीन हाउस	161·00
32.	साइकिल स्टेंड	50·00
33.	समाचार-पत्र	37,716·00
34.	पुस्तकें	1,046·00
35.	जिल्दबन्दी व पुस्तक सुरक्षा	18,039·00
36.	केटेलॉग व इन्डेक्सिग	911·00
37.	वैदिक पाथ, प्रह्लाद, आर्य भट्ट, गुरुकुल पत्रिका छपाई	35,775·00
38.	मिश्रित व्यय	6,155·00
39.	आकस्मिक व्यय	2,552·00
40.	सदस्यता शुल्क व अंशदान	22,500·00
41.	पुस्तकालय कांगड़ी ग्राम योजना	
42.	पढ़ते समय कमाओ	1,383·00
43.	आडिट व्यय	45,092·00
44.	कुलपति कान्फ्रेंस	14,060·00
45.	परिचय-पत्र शुल्क	390·00
	योग—	8,28,745·00

क्रम संख्या	व्यय की मद		राशि
(ग) परीक्षा व्यय -			
1.	परीक्षकों का पारिश्रमिक		20,971·00
2.	मार्ग व्यय परीक्षक		11,397·00
3.	निरीक्षण व्यय		1,581·00
4.	प्रश्नपत्रों की छपाई		22,986·00
5.	उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्य		
6.	डाक-तार व्यय		6,177·00
7.	लेखन सामग्री		1,589·00
8.	नियमावली, पाठविधि व फार्मों की छपाई		7,323·00
9.	अन्य व्यय		1,348·00
		योग	73,372·00
		योग ख+ग	9,02,117·00
		योग क+ख+ग	34,70,120·00

—वित्त अधिकारी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

VI PLAN DEVELOPMENT GRANT EXPENDITURE UPTO MARCH, 1985

Sl. No.	Name of the Project	Grant Sanctioned	Grant received	Amount utilised
1.	Salary to additional staff	9,41,000/-	2,55,000/-	2,66,103.00
2.	Books and staff grants	9,75,000/-	7,50,000/-	7,52,547.00
3.	Construction of 3 Professors' Quarters	16,64,800/-	7,00,000/-	7,00,000.00
4.	Health Centre	1,30,000/-	50,000/-	55,096.00
5.	Completion of Guest House	50,000/-	25,000/-	50,000.00
6.	Rennovation of University Hall	50,000/-	—	50,000.00
7.	Construction of Non-teaching staff quarters	5,00,000/-	1,00,000/-	1,00,000.00
8.	Replacement of University Transport	1,00,000/-	80,000/-	87,909.00
9.	Junior Research Fellowship	50,000/-	—	—
10.	Grants for equipment	—	2,50,000/-	—
11.	Library	50,000/-	—	49,400.00
12.	English	30,000/-	—	25,538.00
13.	Psychology	50,000/-	—	54,610.00
14.	Maths	10,000/-	—	9,864.00
15.	Chemistry	1,00,000/-	—	99,980.00
16.	Physics	50,000/-	—	51,649.00
17.	Zoology	50,000/-	—	48,014.00
18.	Botany	50,000/-	—	51,037.00
19.	Honorarium Scholars	25,000/-	—	3,351.00
20.	Visiting Faculty	50,000/-	—	16,141.00
21.	Publication	50,000/-	—	40,000.00
22.	Museum	50,000/-	40,000/-	43,055 00
	Total :	50,00,000/-	22,50,000/-	25,50,943.00
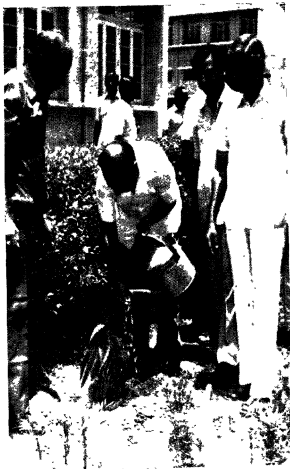
पर्यावरण दिवस तथा गंगा प्रदूषण संगोष्ठी पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे हुए मेरठ के आयुक्त श्री बी० के० गोस्वामी वृक्षारोपण करते हुए। डा० विजय शंकर, डा० बी० डी० जोशी तथा कुलसचिव निकट खड़े हैं।

गंगा-प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए सहारनपुर के जिलाधीश श्री वी० के० सिन्हा। पूर्वसांसद् आचार्य भगवानदेव माल्यार्पण कर श्री सिन्हा का स्वागत कर रहे है।
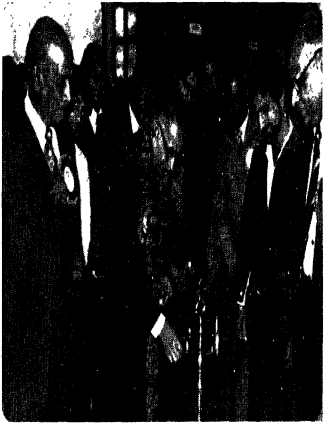
उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन के अवसर पर वृहत् पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए श्री टी०एन० चतुर्वेदी; हिसार कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डा० कटारिया, डा० आर०एस० मिश्र, कुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय तथा भारतीय विश्वविद्यालय संघ के सचिव श्री अंजनी कुमार ।

र्यावरण दिवस तथा गंगा प्रदूषण संगोष्ठी के अवसर पर हरि की पैड़ी पर विश्वविद्यालय द्वारा गाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए पूर्वसांसद् आचार्य भगवानदेव, कुलपति श्री हूजा, गा-सभा के अधिकारी तथा यात्रीगण।

वेद तथा कला महाविद्यालय

१—वेद महाविद्यालय शिक्षक वर्ग—

प्रोफेसर–१
रीडर–२
प्रवक्ता–४

२—शिक्षकेत्तर कर्मचारी—

वीरेन्द्र सिंह–लिपिक, हंसराज जोशी–सेवक, बलवीरसिंह–सेवक, ननकू–माली

३—कला महाविद्यालय शिक्षक वर्ग—

प्रोफेसर–५
रीडर–७
प्रवक्ता–१३

४—शिक्षकेत्तर कर्मचारी—

ईश्वर भारद्वाज–प्र० शा० शि०, लालनरसिंह–प्रयोगशाला सहा०, महेन्द्रसिंह नेगी–लिपिक, कुंवरसिंह–सेवक, हरेन्द्रसिंह–सेवक, प्रेमसिंह, रामपद राय–सेवक, मानसिंह–पहरेदार, जगन–सफाई कर्मचारी।

५—इस वर्ष सत्र १७–७–८४ से आरम्भ हुआ। दिनांक १–८–८४ से नये सत्र की पढ़ाई आरम्भ हुई। अलकार तथा विद्याविनोद में छात्र-संख्या निम्न प्रकार से है—

६—कक्षा	विषय	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	योग
विद्याविनोद	वेद वर्ग	१	३	४
विद्याविनोद	कला वर्ग	१	१	२
विद्यालंकार		२	१	३
वेदालंकार		३	७	१०

दिनांक १–८–८४ को प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया।

७—इस वर्ष स्वतन्त्रता-दिवस अमृत वाटिका में मनाया गया।

८—दि० २७ से २८ अगस्त '८४ को शाह इंस्टीट्यूट ऑव न्यूक्लियर फिजिक्स कलकत्ता के प्रो० डा० ए० एस० चक्रवर्ती जी ने 'वेदाज एण्ड मार्डन साइंस' विषय पर व्याख्यान दिया।

९—५-९-८४ को विद्यालय विभाग में शिक्षक-दिवस मनाया गया।

१०-दि० ७ व ८ सितम्बर '८४ को मानवीय मूल्य और समाज में अंत:सम्बन्ध विषय पर एक राष्ट्रीय कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन रुडकी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० भरतसिंह जी ने किया। इसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्वानों ने भाग लिया, इसके निदेशक डा० जयदेव वेदालंकार थे।

११-दि० २४-९-८४ को गुरु विरजानन्द दिवस मनाया गया। इसके संयोजक श्री वेदप्रकाश जी थे।

१२-इस वर्ष वेद तथा कला महाविद्यालय के छात्रों का टूर गोवा तथा काठमांडू गया।

१३-दि० १०-१२-८४ से १७-१२-८४ तक विद्याविनोद तथा अलंकार कक्षाओं की अर्द्धवार्षिक परीक्षा सम्पन्न हुई।

१४-दि० २०-१२-८४ से कांगड़ी ग्राम में एन०एस०एस० के छात्रों का कैम्प लगा। इस कैम्प का उद्घाटन मान्य कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी ने किया।

१५-दिनांक ३०-१२-८४ से ८-१-८५ तक विश्वविद्यालय में उत्तरक्षेत्रीय अन्तर-विश्वविद्यालय बैडमिंटन टूर्नामेंट आयोजित किया गया, जिसमें वेद तथा कला महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों तथा कर्मचारियों ने सक्रिय रूप में भाग लिया और टूर्नामेन्ट को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया।

१६-दि० १८ से २० जनवरी '८५ तक उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इसमें भी सभी प्राध्यापकों तथा कर्मचारियों ने सहयोग प्रदान किया।

१७-दि० २६-१-८५ को गणतन्त्र दिवस विद्यालय विभाग के प्राँगण में सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण मान्य कुलपति जी ने किया।

१८-दि० ८, ९ तथा १० फरवरी '८५ को दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान-माला का आयोजन किया गया। इसमें श्री पण्डित क्षेमचन्द्र सुमन, श्री मदन गोपाल जी ने अपने व्याख्यान दिये। इसकी अध्यक्षता कुलपति जी ने की।

१९–दिनांक १४-३-८५ को सरस्वती परिषद् की ओर से वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इसमें विभिन्न विश्वविद्यालय तथा अन्य महा–विद्यालयों के छात्र/छात्राओं ने भाग लिया।

२०–दिनांक १९, २१, २३, २५ तथा २७ मार्च '८५ को संस्कृत विभाग में संप्रति विजिटिंग प्रोफेसर डा० कृष्णलाल जी का व्याख्यान हुआ।

२१–दिनांक २९–४–८५ से १८–५–८५ तक विश्वविद्यालय की वार्षिक परीक्षा सम्पन्न हुई।

२२–दिनांक १९–५–८५ से ग्रीष्मावकाश हुआ।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उप-कुलपति

वेद विभाग

विभाग का सामान्य परिचय :—

वेद विभाग वैसे तो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की १९०० में स्थापना से ही विद्यमान है। पर इस रूप में इसकी स्थापना तभी हुई जब कि १९६२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय के समकक्ष मान्यता प्रदान की। इससे पूर्व इस विभाग में पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, पं० दामोदर सातवलेकर, आचार्य अभयदेव, प० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति एवं आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति आदि कार्य कर चुके हैं।

छात्र संख्या :—

एम० ए० प्रथम वर्ष	१
एम० ए० द्वितीय वर्ष	४
अलंकार प्रथम वर्ष	६
अलंकार द्वितीय वर्ष	९
विद्याविनोद प्रथम वर्ष	२
विद्याविनोद द्वितीय वर्ष	४
कुल—	२७

विभागीय उपाध्याय :—

(१) आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा आचार्य एवं उप-कुलपति।

(२) डा० भारतभूषण विद्यालंकार—वेदाचार्य, एम० ए०, पी-एच०डी०—रीडर।

(३) डा० सत्यव्रत राजेश—विद्यावाचस्पति, शास्त्री, प्रभाकर, सिद्धान्त-भूषण, सिद्धान्त-शिरोमणि, वेद-शिरोमणि, एम०ए०, पी-एच०डी०—प्रवक्ता।

(४) श्री मनुदेव 'बन्धु' —एम०ए० (वेद, संस्कृत, हिन्दी), व्याकरणाचार्य, साहित्य-रत्न, सिद्धान्त शिरोमणि—प्रवक्ता।

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य :—

(१) आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार :—

१–वैदिक विषयों पर ३० पुस्तकें (१ प्रकाशनाधीन) पूर्व ही प्रकाशित हो चुकी हैं तथा इस वर्ष ४ अन्य पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

२–दिनांक ५ मई '८५ को भगवानदीन आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखीमपुर खीरी में दीक्षान्त-भाषण एवं पारितोषिक वितरण।

३–दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, बम्बई आदि प्रान्तों में जाकर वैदिक साहित्य का प्रचार–प्रसार किया।

४–गुरुकुल पत्रिका व प्रह्लाद पत्रिका में इस वर्ष निम्न लेख प्रकाशित हुए :–

(१) "छान्दोग्योपनिषद् का महत्त्व" – प्रह्लाद (अक्टू०–दिस० '८४ अंक)

(२) "उपनिषदों के भाष्य" - गुरुकुल पत्रिका (जनवरी '८५ अक)

(३) "उपनिषदों की लोकप्रियता"-गुरुकुल पत्रिका (नव०-दिस० '८४ अंक)

(४) "वैदिक साहित्य में उपनिषदों का स्थान"

–गुरुकुल पत्रिका (मई '८४ अंक)

५–७ सितम्बर '८४ से ६ सितम्बर '८४ तक सम्पन्न "मानवीय मूल्य और समाज में अन्तःसम्बन्ध" पर राष्ट्रिय कान्फ्रेन्स में भाग लिया और भाषण दिया।

६–१८–२० जनवरी '८५ तक सम्पन्न उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन में शोधपत्र का वाचन किया।

(२) डा० भारतभूषण विद्यालंकार :—

१–गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर के प्राच्य विद्या अकादमी के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार के योगदान से "पुरालेख प्रशिक्षण" हेतु आमन्त्रित होकर तीन दिन तक शोध सम्बन्धी व्याख्यान दिए। इसके अतिरिक्त गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर में "वैदिक-भूगोल" पर शोध–पत्र वाचन किया।

२–१८–२० जनवरी '८५ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन में "आरक्षण का इतिहास एवं उसका प्रभाव" पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया। विश्व पर्यावरण - दिवस "संगोष्ठी" में गंगा परियोजना में "गंगा और उसकी भौगोलिक स्थिति" पर लेख पढ़ा।

३–गढ़वाल विश्वविद्यालय में सेमिनार में "गढ़वाल और उसकी सांस्कृतिक परम्पराएँ" शीर्षक शोध-पत्र प्रस्तुत।

४–गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के शोध-पत्र प्रह्लाद का सहायक सम्पादन

एवं लेख तथा समीक्षा लेखन। गुरुकुल-पत्रिका में "विदेशेषु संस्कृतम्" आदि लेख प्रकाशित।

५-७-६ सितम्बर '८४ तक सम्पन्न "मानवीय मूल्य और समाज में अन्तः-सम्बन्ध" पर राष्ट्रिय कान्फ्रेन्स तथा उ० प्र० दर्शन परिषद् के वार्षिक समारोह में भाग लिया।

६-परीक्षा सुधार संगोष्ठी में सक्रिय योगदान। "अन्तःविश्वविद्यालय एसोशियेसन के सचिव श्री अन्जनि कुमार की अध्यक्षता में गोष्ठी में विभागीय योजनाओं की विवरणिका प्रस्तुत करके नवीन योजनाओं पर विचार-विमर्श किया। देवबन्द में "संस्कृत-उसका भूत एवं भविष्य तथा महत्त्व" पर व्याख्यान तथा दार-उल-उलूम डीम्ड विश्वविद्यालय में वहाँ के विद्वानों के साथ पुनर्जन्म, आत्मा के स्वरूप, मोक्ष का स्वरूप, वेदान्त (वेदानियत्) पर विचारों का आदान-प्रदान तथा आर्य एवं इस्लामिक संस्कृति पर चिन्तन।

७-पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में "वैदिक शोध प्रक्रिया," "शोध-पद्धति," "वैदिक देवता", "वैदिक भाषा चिन्तन", आदि विषयों पर व्याख्यान।

८-उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली एवं बिहार आदि प्रान्तों में वेद-प्रचार। विदेशी छात्रों को हिन्दी-संस्कृत का अध्यापन।

६-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव के वेद-सम्मेलन में "वेदों में आधुनिक वैज्ञानिक सूचनाएँ" विषय पर व्याख्यान। गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय में ही १२-१५ अप्रैल के मध्य विशिष्ट वैदिक व्याख्यानों का संयोजन एवं वेदपाठ।

१०-गत वर्षों की भाँति सहायक परीक्षाध्यक्ष का कार्य सम्पादन। एन०एस०एस० कैम्प में सक्रिय योगदान। विभिन्न राजकीय योजनाओं के अन्तर्गत वृद्धों, अपंगों एवं विधवाओं को आर्थिक सहायता प्राप्त कराने आदि शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एव धार्मिक क्षेत्रों में निर्माणात्मक योगदान।

(३) डा० सत्यव्रत राजेश :—

१-शोध निबन्ध :—

(क) वृक्षों में जीव और हिंसा, एक विवेचन—आर्य समाज करनाल की शताब्दी पर प्रकाशित स्मारिका के लिए लिखा लेख।

(ख) वेद में गंगा-वर्णन।

(ग) यजुर्वेद—एक परिचय।

२-प्रकाशित पुस्तक —यमयमी सूक्त की आध्यात्मिक व्याख्या।

३-संगोष्ठी में भाग—"मानवीय मूल्य और समाज में अन्त:सम्बन्ध" पर राष्ट्रिय कान्फ्रेन्स (७ सित० से ६ सित० '८४) में सक्रिय भाग लिया। उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन (१८-२० जनवरी '८५) मे भाग लिया।

४-सांस्कृतिक प्रचार :—

अहमदाबाद, बम्बई, उज्जैन, मेरठ, मुजफ्फरनगर, रुड़की, विकासनगर, देहरादून, हरिद्वार, ज्वालापुर, कोटद्वार (गढवाल), बिजनौर, आर्यवान-प्रस्थाश्रम ज्वालापुर, गीता आश्रम, आदि विभिन्न स्थानों में भाषण तथा वैदिक यज्ञ।

५—गुरुकुल भैंसवाल में विश्वविद्यालय की ओर से पर्यवेक्षक।
सरस्वती-यात्रा में छात्रों के साथ उज्जैन, बम्बई, पूना तथा गोवा की यात्रा।

६—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर वेद-पाठ तथा वेद-सम्मेलन में भाषण।

अनुसन्धान-कार्य :—

१—आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार जी के निर्देशन में निम्न छात्र शोध-कार्य कर रहे हैं।

(१) श्री जगदीशप्रसाद विद्यालंकार – "अथर्ववेदीय मनोविज्ञान"।
(२) श्री मनुदेव 'बन्धु' – "बृहदारण्यकोपनिषद् : एक अध्ययन"।
(३) श्री सुरेन्द्र कुमार – "ऋग्वेद में प्रतिपादित विभिन्न विद्याओं का संकलन एवं विवेचनात्मक अध्ययन"।
(४) श्री सत्यप्रकाश रामबहल को इस वर्ष "महर्षि दयानन्द की बृहत्त्रयी का आलोचनात्मक अध्ययन" विषय पर पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हो चुकी है।

२—डा० भारतभूषण विद्यालंकार जी के निर्देशन में निम्न छात्र शोध-कार्य कर रहे हैं :—

(१) श्री हरिश्चन्द्र – "आयु संवर्धन"।
(२) श्री अनुराग चतुर्वेदी – "छान्दोग्य के भाष्यकारों का तुलनात्मक अध्ययन"।
(३) श्री रामेश्वरदयाल गुप्त – "वैदिक साहित्य में आत्मा की विवेचना"।
(४) श्री रामनारायण रावत (प्रज्ञाचक्षु) – "वैदिक एवं औपनिषदिक दर्शन : एक तुलनात्मक अध्ययन"।
(५) श्री सूर्यप्रकाश पाठक – "वैदिक जीव-जगत"।

(६) श्रीमती देवराज त्रिपाठी – "इन्दिरा गांधी चरितम्" ।
"नारद कात्यायन एवं बृहस्पति स्मृतियों का तुलनात्मक अध्ययन" विशेषतः दाय-भाग, (महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में) पर श्री भगतसिंह नामक छात्र को पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हो चुकी है ।

३—डा० सत्यव्रत राजेश जी के निर्देशन में निम्न छात्र शोधकार्य कर रहे हैं :-

(१) कु० कामजित् – "महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में अग्निदेवता का अध्ययन" ।

(२) कु० सुमेधा–"महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में इन्द्र देवता का अध्ययन" ।

(३) श्री रविदत्त शास्त्री – "गृह्यसूत्रों के परिप्रेक्ष्य में संस्कारविधि का अध्ययन" ।

(४) **श्री मनुदेव बन्धु :-**

१—निम्नलिखित पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित हुए :—

(१) "वेद भाष्य में दयानन्द की सूक्ष्म दृष्टि" – परोपकारी मई ८४ अंक में

(२) "वैदिक शिक्षा दर्शन" – प्रह्लाद में (अक्टूबर-दिसम्बर '८४ अंक)

(३) "वेदों के संदर्भ में मानवीय मूल्य" – राष्ट्रिय कान्फ्रेन्स, सित० '८४

(४) "पं० बनारसीदास चतुर्वेदी (जीवन-दर्शन)–समाज सन्देश, मई '८५ अंक

(५) "औपनिषदिक सृष्टि विद्या" – गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशनार्थ दिया है ।

२—उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन (१८-२० जनवरी '८५) में भाग लिया ।

३—दिल्ली, मेरठ, मुरादाबाद, ज्वालापुर, सहारनपुर, रुड़की, रोहतक तथा अन्य स्थानों पर वैदिक विषयों पर उपदेश तथा प्रचार कार्य किया ।

४—त्रैतवादीय आर्यपीठ (आर्य नगर, ज्वालापुर) द्वारा संचालित परीक्षाओं का संचालन तथा अध्यापन-कार्य ।

५—"पशु-पक्षियों पर दया की भावना" विषय पर आकाशवाणी नजीबाबाद से २६-१-८४ को वार्ता प्रसारित हुई ।

६—७ सितम्बर से ६ सितम्बर '८४ तक "मानवीय मूल्य और समाज में अन्तः-सम्बन्ध" पर राष्ट्रिय काम्फ्रेन्स में भाग लिया तथा निबन्ध प्रस्तुत किया ।

७–मई '८४ में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) में पर्यवेक्षक के रूप में सुचारु रूप से कार्य किया । मई '८५ में गुरुकुल भैंसवाल (हरियाणा) में पर्यवेक्षक के रूप में छात्रों की परीक्षा शान्तिमय वातावरण में सम्पन्न कराई ।

विभागीय कार्यक्रम :—

१—श्री आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार जी १ अप्रैल १९८५ से प्रोफेसर पद पर नियुक्त हुए तथा डा० भारतभूषण विद्यालंकार जी १-१-८३ से रीडर पद पर प्रोन्नत हुए।

२—इस वर्ष वार्षिकोत्सव के अवसर पर वेद-विभाग की ओर से "वेद-सम्मेलन" हुआ जिसकी अध्यक्षता पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, परिद्रष्टा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने की और संयोजक का कार्य आचार्य रामप्रसाद वेदालकार जी ने किया। मुख्य-अतिथि के रूप में उद्घाटन भाषण आचार्य प्रियव्रत जी ने दिया। डा० भारतभूषण जी ने व डा० सत्यव्रत राजेश ने भी वैदिक विषयों पर व्याख्यान दिये। इनके अतिरिक्त डा० सत्यदेव आर्य (जयपुर) ने तथा ब्र० सुरेन्द्रकुमार ने क्रमश: "वेदों में जनस्वास्थ्य विज्ञान" व "वेद और आधुनिक विज्ञान" विषय पर व्याख्यान दिये। अन्त में माननीय कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी ने "वैदिक साहित्य के महत्त्व" पर अपने विचार व्यक्त किये। इसी अवसर पर आचार्य रामप्रसाद वेदालकार जी की "अनन्त की ओर" पुस्तक का अनुवाद "क्विस्ट फार इन्फिनिट" के रूप में श्री डा० चमनलाल लूथरा, यू०एस०ए० के सहयोग से प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक का विमोचन पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार जी के कर-कमलों द्वारा १२ अप्रैल '८५ को हुआ।

—रामप्रसाद वेदालंकार
प्रोफेसर-अध्यक्ष तथा
आचार्य एवं उप-कुलपति

संस्कृत विभाग

विभागीय अध्यापक—

(१) डा० मानसिंह, एम०ए०, पी-एच०डी० (प्रोफेसर एवं अध्यक्ष) १५ अप्रेल, १९८५ तक

(२) डा० निगम शर्मा, एम०ए०, साहित्याचार्य, पी-एच०डी० (प्रवक्ता)

(३) आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री, एम०ए०, साहित्याचार्य (रीडर)

(४) डा० रामप्रकाश शर्मा, एम०ए०,पी-एच०डी०, डी०लिट्० (प्रवक्ता)

(५) डा० राकेश शास्त्री, एम०ए०,पी-एच०डी० (प्रवक्ता) अस्थायी

विभागीय गतिविधि—

(१) ११ अगस्त '८४ को संस्कृत-दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया।

(२) १९ नवम्बर '८४ को स्व० श्रीमती इन्दिरा गाधी के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में वि०वि० शिक्षक कक्ष में आयोजित सभा की डा० मानसिंह ने अध्यक्षता की तथा सयोजन प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री ने किया।

(३) १ दिसम्बर '८४ को संस्कृत-विभाग की अनुसन्धान समिति की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें चार शोधार्थी निम्न प्रकार से शोधकार्य करने के लिए अनुमोदित किए गये।

नाम शोधार्थी	विषय	निर्देशक
श्री सत्यदेव	औचित्य सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में बाल्मीकि रामायण : एक समालोचनात्मक अध्ययन।	आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री
श्री रणबादरसिंह	महर्षि दयानन्दकृत वेदभाष्य : एक दार्शनिक अध्ययन	डा० मानसिंह
श्री तारानाथ	न्यासकार के परिप्रेक्ष्य में काशिकावृत्ति के प्रथम-द्वितीय अध्यायस्थ पदकृत्यों का समीक्षात्मक अध्ययन।	डा० रामप्रकाश शर्मा
कु० राजिन्द्रा शर्मा	आचार्य वामन का काव्यदर्शन	डा० मानसिंह

(४) १४ मार्च '८५ को संस्कृत विभाग के निर्देशन में सरस्वती परिषद् द्वारा सस्कृत-मन्त्रोच्चारण सद्योभाषण एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

(५) १४ मार्च '८५ से २८ मार्च '८५ तक संस्कृत विभाग में डा० कृष्णलाल जी (प्रोफेसर संस्कृत विभाग, दिल्ली वि०वि०) विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में रहे तथा उनके निम्न विषयों पर व्याख्यान हुए—

(१) अथर्ववेद के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों द्वारा किया गया कार्य (१६ मार्च '८५)

(२) संस्कृत गद्य का आदि रूप (२१ मार्च '८५)

(३) वेद व्याख्या और निर्वचन (२३ मार्च '८५)

(४) कालिदासस्य राष्ट्रकवित्वम् (२५ मार्च '८५)

(५) राष्ट्रियास्मिता संस्कृतं च (२६ मार्च '८५) (वेदानुपलक्ष्य)

(६) ८ अप्रैल '८५ को डा० मानसिंह जी को भावपूर्ण विदाई दी गई।

विभागीय उपाध्याय विवरण—

डा० मानसिंह—

शोध निदर्शन—दो शोधार्थी शोधकार्य कर रहे हैं।

लेख प्रकाशन— जून-अक्टूबर '८४ के गुरुकुल पत्रिका के अंक में 'यजुर्वेद और आधुनिक जीवन' (हिन्दी) लेख प्रकाशित।

२– नवम्बर-दिसम्बर '८४ में गुरुकुल पत्रिका के अक में "वेदों में राष्ट्रिय भावना" हिन्दी लेख प्रकाशित।

३– जनवरी '८५ में गुरुकुल पत्रिका के अक में 'अथर्ववेद और मातृ-भक्ति' हिन्दी लेख प्रकाशित हुआ।

सगोष्ठी मे भाग—

फरवरी में जयपुर में हुए सस्कृत सम्मेलन मे भाग लिया।

डा० निगम शर्मा—

शोध निदर्शन—इस वर्ष तीन शोध-छात्रों का निदर्शन किया।

शोध लेख प्रकाशन—

१– प्रभुदत्त स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ में 'पच शिक्षाचार्य' हिन्दी लेख प्रकाशित हुआ।

२– डा० निरूपण विद्यालंकार अभिनन्दन ग्रन्थ में 'सौन्दर्य' हिन्दी लेख प्रकाशित हुआ।

३– गुरुकुल पत्रिका में 'वेद एवं भाष्यकार:' संस्कृत लेख प्रकाशित हुआ।
४– विश्वात्मा पत्रिका में 'तम' एवं 'वज्र' हिन्दी लेख प्रकाशित हुआ।

संगोष्ठी में भाग—

१– २१-२२-२३ नवम्बर '८४ में संस्कृत अकादमी, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रायोजित संस्कृत सम्मेलन में हरिद्वार में भाषण दिया।

२– २७ फरवरी '८५ को भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय में 'रस-गोष्ठी' की अध्यक्षता की।

३– ६ अप्रैल '८५ को देवबन्द में हुए संस्कृत सम्मेलन में उद्घाटन भाषण दिया।

रेडियो वार्ता—

१– अप्रेल में रेडियो स्टेशन रामपुर से 'चन्द्र' कविता एव सरस्वती वन्दना का पाठ किया।

२– ६ अगस्त '८४ को रामपुर रेडियो स्टेशन से संस्कृत के नीति साहित्य पर सस्कृत में वार्ता प्रसारित की।

अन्य—

आर्य समाज देहरादून, रुड़की, आर्य वानप्रस्थाश्रम, गीताश्रम, हरिद्वार, बी० एच० ई० एल० आदि आर्य समाजों में लगभग ६० भाषण विभिन्न विषयों पर दिए।

सस्कृत भाषा मे निपुणता प्राप्त करने हेतु छात्रो को प्रशिक्षण दिया।

आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री—

शोध निर्देशन—इस समय तीन शोध-छात्रों का निर्देशन कर रहे है।

शोध लेख प्रकाशन—

१–गुरुकुल पत्रिका के जून-अक्टूबर '८४ के अंक में "बाल्मीकि-कालिदासयो: प्रावृड्वर्णनम्' (संस्कृत) लेख प्रकाशित हुआ।

२– गुरुकुल पत्रिका के नवम्बर-दिसम्बर '८४ के अंक में 'नामकेभ्योऽति-रिच्यन्ते कालिदासस्य नायिका:' (संस्कृत) लेख प्रकाशित हुआ।

३– प्रह्लाद पत्रिका अक्टूबर-दिसम्बर '८४ के अंक में 'आचार्य का स्वरूप' (हिन्दी) लेख प्रकाशित हुआ।

४– प्रह्लाद पत्रिका जनवरी-मार्च '८५ के अंक में 'उपाध्याय का स्वरूप' (हिन्दी) लेख प्रकाशित हुआ।

५– गुरुकुल पत्रिका जनवरी '८५ के अंक में 'विशाखदत्तस्य मन्तव्यम्' (संस्कृत) लेख प्रकाशित हुआ ।

६– १९८४-८५ मे प्रकाशित आचार्य प्रभुदत्त स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ मे 'कविरूपनिरूपणम्' (सस्कृत) लेख प्रकाशित हुआ ।

७– मानव मूल्य एव समाजमें अन्त:सम्बन्ध पुस्तक मे 'वेद आधुनिक जीवन-मूल्यो के सन्दर्भ में' (हिन्दी) लेख प्रकाशित हुआ ।

८– भारतोदय जनवरी '८५ के अंक में 'कालिदासस्य कृतिषुयज्ञपरम्परा' (सस्कृत) लेख प्रकाशित हुआ ।

संगोष्ठी मे भाग—

१– २७ फरवरी '८५ को भगवानदास आदर्श सस्कृत महाविद्यालय में 'रस चर्चा' विषय पर आयोजित विद्वत्गोष्ठी मे प्रमुख वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया । (संस्कृत माध्यम से)

२– २१,२२,२३ नवम्बर '८४ में निर्धन निकेतन, हरिद्वार मे सम्पन्न सस्कृत सम्मेलन में भाग लिया ।

३– ६ अप्रैल '८५ को देवबन्द में हुए संस्कृत सम्मेलन में सस्कृत में प्रमुख भाषण दिया ।

सास्कृतिक प्रचार—आर्य समाज देहरादून, आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, गीताश्रम, आर्य समाज ज्वालापुर, आर्य समाज हापुड, आर्य समाज अम्बाला कैन्ट, आर्य समाज मुरादाबाद तथा आर्य समाज बढापुर आदि मे लगभग ५० भाषण विभिन्न विषयों पर गम्भीर चिन्तनपूर्वक दिए ।

अन्य—

१– ६ अगस्त को गुरुकुल टटेसर जोन्ती को स्थायी मान्यता देने हेतु निरीक्षण कार्य करने हेतु उक्त गुरुकुल गये ।

२– छात्रों को समय-समय पर संस्कृत प्रतियोगिताओं में भाग ग्रहण करने के लिए प्रेरित करना तथा प्रशिक्षित करना ।

३– गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर 'वेदपाठी' के रूप में कार्य किया ।

४– आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार वितरण समारोह का संयोजन किया ।

५– १८,१९,२० जनवरी '८५ को उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन मे स्वागत समिति के संयोजक के रूप में कार्य किया ।

६– २ मई '८५ को गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर की संस्कृत

विभाग की अनुसन्धान समिति की बैठक में विषय-विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

डा० रामप्रकाश शर्मा—

शोध निर्देशन—पाँच शोधार्थी इस समय निर्देशन प्राप्त कर रहे हैं।
प्रकाशन—शोध-प्रबन्ध प्रकाशनाधीन है।

डा० राकेश शास्त्री—

प्रकाशन—(१) वेदों में राजनीतिक सिद्धान्त, लेखक- आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति की समीक्षा, गुरुकुल पत्रिका, मार्च-अप्रैल, १९८४

(२) ऋग्वेद में 'हिन' निपात, वही, मई १९८४

(३) अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, वही, जून-अक्टूबर, १९८४

(४) सत्यदेव परिव्राजक : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, लेखक— डा० दीनानाथ शर्मा की समीक्षा, वही, एवं प्रह्लाद, अक्टूबर, १९८४

(५) आचार्य रामदेव, गुरुकुल पत्रिका, नवम्बर-दिसम्बर, १९८४

(६) संस्कृत साहित्य में राष्ट्रिय भावना, लेखक— डा० हरिनारायण दीक्षित की समीक्षा, वही।

(७) उपनिषद्कालीन समाज एव सस्कृति, लेखक—डा० राजेन्द्र कुमार त्रिवेदी की समीक्षा, वही, जनवरी, १९८५

(८) एकोरसः करुण एव, वही, फरवरी-अप्रैल, १९८५

(९) 'विकासशील बालक पर जीवन-मूल्यों का प्रभाव' शोधलेख (मानवीय मूल्यों और समाज में अन्तःसम्बन्ध, एक समालोचनात्मक शोध संकलन में प्रकाशित)

अन्य—(१) जुलाई १९८३ से मई १९८४ तक गुरुकुल-पत्रिका का प्रबन्ध : सम्पादन

(२) जून १९८४ से गुरुकुल पत्रिका का सह-सम्पादन

(३) मार्च १९८४ से वर्तमान तक गुरुकुल पत्रिका में गुरुकुल समाचार लेखन।

(४) २६, २७ फरवरी, १९८४ को प्राच्य-विद्या अकादमी श्रीनगर, गढ़वाल में पुरालिपि एवं पुरालेख विद्या विषय पर व्याख्यान।

(५) २१ अगस्त, १९८४ को योगेश्वर कृष्ण के जन्मदिवस पर कृष्ण जीवन के प्रेरक प्रसंगों पर सारगर्भित व्याख्यान।

(६) २४ सितम्बर, १९८४ को गुरु विरजानन्द दिवस पर उनके जीवन के अनेक प्रसंगों पर सारगर्भित व्याख्यान।

(७) २५ अगस्त, १९८४ से जनवरी, १९८५ तक विद्यालय विभाग के छात्रों को संस्कृत-सम्भाषण का अभ्यास।

—वेदप्रकाश शास्त्री
रीडर

दर्शन शास्त्र विभाग

(१) **स्थापना**—१९१० ई० में अलंकार और दर्शन वाचस्पति तक अध्ययन प्रारम्भ हुआ। १९६७ ई० में एम०ए० स्तर का अध्ययन प्रारम्भ हुआ। सस्थापक अध्यक्ष—स्व० प्रो० सुखदेव, दर्शन वाचस्पति।

अपने स्थापना-काल से ही दर्शन विभाग का यह लक्ष्य रहा है कि भारतीय दर्शनों के मूल-ग्रन्थों के पठन-पाठन को वरीयता दी जाए तथा पाश्चात्य दर्शन शास्त्र की अवधारणाओं से उसके स्नातकों का गहरा परिचय हो तथा वे विषय के ठोस विद्वान् सिद्ध हों।

दर्शन शास्त्र विभाग अपने इस दायित्व को समीचीनरूपेण निभा रहा है। इस विभाग से निकलने वाले स्नातक देश-विदेश में दर्शन के प्रचार-प्रसार एव अध्यापन आदि कार्यों में लगे हुए हैं।

(२) **छात्र संख्या**—

विद्याविनोद—	8
अलकार—	16
एम०ए०—	15
पी-एच०डी०—	7
योग—	46

(३) **वर्तमान अध्यापक**—

१- डॉ० जयदेव वेदालंकार—	रीडर एवं अध्यक्ष
२- डॉ० विजयपाल शास्त्री—	प्राध्यापक
३- डॉ० त्रिलोकचन्द्र—	प्राध्यापक
४- डॉ० भगवन्तसिंह—	प्राध्यापक (अस्थायी)

(४) **शोध कार्य (पी-एच०डी०)**—

इस विभाग में जुलाई १९८३ से शोध (पी-एच०डी०) कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

(५) *आई०ए०एस० और पी०सी०एस० के मार्गदर्शन की व्यवस्था—*

भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के लिये नि:शुल्क अध्यापन एवं मार्गदर्शन की व्यवस्था है। इस योजना के अन्तर्गत इस वर्ष बी०एच०ई०एल० एवं हरिद्वार के छात्र मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे हैं।

(६) प्राध्यापकगण—

(१) **डॉ० जयदेव वेदालंकार**—पद–रीडर एवं अध्यक्ष

नियुक्ति—अगस्त १९६८। वर्तमान पद पर—फरवरी '८४।

योग्यतायें—एम०ए० (दर्शन और मनोविज्ञान), दर्शनाचार्य, पी-एच०डी०, डी०लिट्० के लिये शोधग्रन्थ स्वीकृत (राची विश्वविद्यालय से)

विषय—वैदिक दर्शन : एक अध्ययन

१९८४–८५ का लेखन–कार्य

(१) महर्षि दयानन्द का आचार-शास्त्र (गुरुकुल पत्रिका में क्रमशः जौलाई-अगस्त में प्रकाशित)

(२) वैदिक विज्ञान, जीवन मूल्य– आर्य सन्देश साप्ताहिक, अगस्त में प्रकाशित

(३) मानवीय मूल्यों का तथ्यात्मक विवेचन—सितम्बर '८४ में कान्फ्रैन्स में वाचन किया। उसकी स्मारिका में प्रकाशित।

(४) "वैदिक सोशल फिलासफी"—इण्डियन फिलोसोफिकल कांग्रेस, जबलपुर मे शोधपत्र वाचन।

(५) वैदिक दर्शन : एक अध्ययन–रांची विश्वविद्यालय, बिहार द्वारा डी० लिट्० हेतु स्वीकृत।

(६) आरक्षण एवं अभिगर्हित जातिप्रथा— कुलपति सम्मेलन, जनवरी '८५ में शोध-पत्र वाचन किया। गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित।

इससे पूर्व इनकी चार पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं।

(७) अन्य शैक्षणिक कार्य—

(१) "मानवीय मूल्य और समाज में अन्त:सम्बन्ध" विषय पर आयोजित राष्ट्रिय कान्फ्रेंस के निदेशक पद पर कार्य किया। इसमें लगभग १०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

(२) "मानवीय मूल्य और समाज में अन्त: सम्बन्ध" एक समालोचनात्मक **शोध संकलन** का सम्पादन।

(३) जबलपुर विश्वविद्यालय में आयोजित 'इण्डियन फिलासोफिकल कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में भाग लिया तथा शोध-पत्र वाचन किया।

(४) उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन गु०कां०वि०वि० हरिद्वार, जनवरी '८५ में स्वागताधिकारी के रूप में कार्य किया तथा शोधपत्र पढ़ा।

(८) अन्य कार्य—

(क) आर्य समाज धर्मपुरा, देहरादून
२४ मई से २६ मई तक धर्म और दर्शन पर ५ व्याख्यान दिये।

(ख) महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी हिमाचल प्रदेश (कागडा) आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में २६ मई '८४ से ३ जून '८४ तक ६ व्याख्यान।

विषय : * अज्ञान कैसे दूर हो ?
* तत्त्वज्ञान के उपाय
* मोक्ष के साधन
* धर्म का वास्तविक लक्षण
* जातिप्रथा के दोष
* आर्य समाज के नियम

(ग) माडल टाऊन, अम्बाला

आर्य समाज अम्बाला में १७ अक्टूबर '८४ से २२ अक्टूबर तक सात व्याख्यान हुये।

विषय : * सृष्टि प्रक्रिया
* आत्मतत्त्व विवेचन
* प्राचीन शिक्षा दर्शन
* बच्चों का समन्वित विकास
* कर्म और पुरुषार्थ तथा भाग्य
* ओ३म् शब्द की व्याख्या
* स्वामी महर्षि दयानन्द के दार्शनिक सिद्धान्त

(घ) आर्य कन्या हाईस्कूल समाना (पंजाब) २३ अक्टूबर से २६ अक्टूबर तक आर्य कन्या हाई स्कूल की आर्य समाज में चार भाषण हुये।

विषय : * महिला और शिक्षा दर्शन
* यज्ञ दर्शन मीमांसा
* यज्ञोपवीत महत्त्व
* व्यक्तित्व का समन्वित विकास

(ड.) आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में नवम्बर '८४ में ६ व्याख्यान।
विषय : * साधना का दार्शनिक निरूपण
* महर्षि दयानन्द और उपासना विधि
* कर्म और ज्ञान का दर्शन
* योग का वास्तविक स्वरूप
* योग दर्शन का क्रिया योग
* तप और शम का विवेचन

(६) निर्देशाधीन शोध विषय
* स्वामी दयानन्द और श्री अरविन्द का तुलनात्मक दार्शनिक अध्ययन
* गांधी और दयानन्द : एक दार्शनिक विवेचन
* सांख्य दर्शन और चरक शास्त्र में दार्शनिक तत्त्व
* शंकर मध्व और स्वामी दयानन्द : तुलनात्मक दर्शन
* जैन, बौद्ध और न्याय दर्शन : प्रमाण मीमांसा
* भारतीय और पाश्चात्य दर्शनों में अन्त:करण
* आचार्य उदयवीर शास्त्री के विद्योदय भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन

(१०) राष्ट्रीय शिक्षा नीति समिति के सयोजक के नाते राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रारूप तैयार कराया।

(२) **डॉ० विजयपाल शास्त्री**— पद-प्राध्यापक; नियुक्ति-१९८१
योग्यता-एम०ए० (संस्कृत, दर्शन शास्त्र और हिन्दी)
पी-एच०डी० दर्शनशास्त्र
साहित्याचार्य (वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी)
दर्शनाचार्य (पंजाब वि०वि०, चण्डीगढ़)
शास्त्री (वाराणसी)
शास्त्री (पंजाब)
साहित्यरत्न (प्रयाग)

प्रकाशित लेख—

१—स्फोटवाद (१)
स्फोटवाद (२)
(गुरुकुल पत्रिका के अक्टूबर '८४ और मई '८४ अंक में प्रकाशित)

२—"बसै बुराई जासु तन"—
प्रह्लाद पत्रिका के जनवरी-मार्च अंक में प्रकाशित।

३—शिक्षित और अशिक्षित पुरुषों के जीवन-मूल्यों में तारतम्य।

४—पुस्तक समीक्षा—

गुरुकुल पत्रिका जनवरी '८५ अंक में प्रकाशित।

अन्य कार्य—शिष्य परिवार बनाया जिनके साथ लगभग २५ बैठके लेकर उन्हें सच्चारित्र्य और जीवनदर्शन की शिक्षा दी।

३ - **डॉ० त्रिलोकचन्द्र**—पद-प्राध्यापक; नियुक्ति १९८२।

योग्यतायें—एम०ए०, पी-एच०डी०

१९८४-८५ में किये कार्य—

१-दो से आठ जून तक जिला सोलन (हि०प्र०) में आध्यात्मिक विषयों पर व्याख्यान।

२-ग्यारह जून से पन्द्रह जून तक आर्य समाज मेरठ शहर में योगदर्शन पर व्याख्यान एवं क्रियात्मक कार्य।

३-आर्य समाज मेरठ शहर की मासिक पत्रिका में योग विषय पर लेख प्रकाशित।

४-बाईस जून से चौबीस जून तक हैदराबाद में प्रौढ शिक्षा सम्मेलन में भाग लिया।

५-एक व दो जुलाई को आर्य समाज साकेत-मेरठ में व्याख्यान।

६-योग केन्द्र, साकेत-मेरठ की पत्रिका में प्राणायाम के महत्व पर लेख प्रकाशित।

७-पाँच अगस्त को बी०एच०ई०एल० आर्य समाज में व्याख्यान।

८-उन्नीस अगस्त '८४ को आर्य सन्देश में 'सेना ने स्वर्ण मन्दिर को पवित्र कर दिया' नामक शीर्षक से लेख प्रकाशित।

९-इक्तीस अगस्त '८४ को गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर की प्रौढ शिक्षा के प्रोग्राम आफीसर के प्रशिक्षण में **प्रौढ़शिक्षा में प्रेरणा** पर व्याख्यान।

१०-बाईस नवम्बर को श्री अरविंद योग मन्दिर ज्वालापुर के समारोह में श्री अरविंद दर्शन में 'भक्तियोग' पर व्याख्यान।

११-चौबीस जनवरी को हरिराम आर्य इन्टर कालिज में योग और संगीत पर कार्यक्रम जिसमें हरिद्वार के काफी सख्या में लोग एकत्रित हुए। यह २९ जनवरी को नवभारत टाइम्स में, ७ फरवरी, १३ फरवरी व १३ मार्च को हिन्दुस्तान में प्रकाशित। इसके अतिरिक्त दून दर्पण देहरादून, राष्ट्र वेदना बिजनौर, हिन्दू, अपने लोग, बद्रीविशाल, लोकार्थ आदि स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशित।

१२-२५ फरवरी '८५ को बी०एच०ई०एल० क्लब में योगदर्शन पर व्याख्यान।

१३– ३ अप्रैल को आकाशवाणी नजीबाबाद से 'भारतीय संस्कृति दर्शन के परिप्रेक्ष्य में' नामक विषय पर वार्ता प्रसारित।

१४– १४ फरवरी '८५ तक प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के सहायक निदेशक के रूप में और योग केन्द्र के निदेशक के रूप में भी कार्य किया।

४ —**डॉ० भगवन्तसिंह**— पद-प्राध्यापक (अस्थायी); नियुक्ति-१९८४

योग्यतायें —एम०ए०, पी-एच०डी०

शैक्षणिक कार्य– उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन में सक्रिय भाग लिया। शोधपत्र वाचन किया। वैदिक पाथ में प्रकाशनार्थ लेख स्वीकृत।

५—विभागीय अन्य कार्य—

मानवीय मूल्य और समाज में अन्तःसम्बन्ध पर राष्ट्रिय कान्फ्रेंस तथा उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् का दसवाँ वार्षिक समारोह दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ। इस कार्य हेतु विभाग को दस हजार रुपये का अनुदान आई०सी०पी०आर० नई दिल्ली और दस हजार रुपये की राशि यू०जी०सी० से प्राप्त हुई। विभाग के समस्त प्राध्यापकगण एवं छात्रों ने दिन-रात परिश्रम करके इस समारोह को सफल किया। इसके लिये डा० डी०पी० चट्टोपाध्याय और यू०जी०सी० का दर्शन विभाग विशेष आभारी है।

—डा० जयदेव वेदालंकार
रीडर तथा अध्यक्ष

मनोविज्ञान विभाग

स्टाफ–(१) प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
(२) डा० हरगोपालसिंह-प्रवक्ता
(३) श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी-प्रवक्ता
(४) श्री सतीशचन्द्र घमीजा-प्रवक्ता
(५) श्री लालनरसिंह नारायण-प्रयोगशाला सहायक
(६) श्री कुंवरसिंह नेगी-भृत्य

सत्र १९८४–८५ मनोविज्ञान विभाग के लिए नई उपलब्धि का वर्ष रहा। इस वर्ष विभाग में एम० ए० प्रथम वर्ष में ९ विद्यार्थियों ने तथा एम० ए० द्वितीय वर्ष में ६ विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया। एम० ए० द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी श्री प्रमोदकुमार ने डा० हरगोपाल सिंह जी के निर्देशन में "पचतन्त्र का विश्लेषणात्मक अध्ययन" नामक विषय पर एक शोध प्रबन्ध लिखा। विभाग के विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय की गतिविधियो में सक्रिय योगदान दिया। क्रीड़ा के क्षेत्र में विभाग के विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया, विभागीय पुस्तकालय को सुनियोजित ढग से चलाया, सरस्वती यात्रा पर गये एवं विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित बैडमिटन टूर्नामेन्ट, कुलपति सम्मेलन आदि के संगठन में प्रशसनीय योगदान दिया।

इस वर्ष विभाग में पी–एच० डी० का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। डा० बी०एस० गुप्ता, प्रोफेसर बनारस विश्वविद्यालय को श्रद्धेय कुलपति जी ने शोध-समिति का विशेषज्ञ मनोनीत किया। शोध–समिति ने निम्नाकित प्रस्तावों का अनुमोदन किया।

विषय	शोध छात्र/छात्रा	निर्देशक
(1) A Psycho-Social study of the Attitude of Accepters and Non-Acceptors towards family planning programme.	डा० कमला पाण्डेय	प्रो० ओ० पी० मिश्र

(2) A study of breathing patterns of high and how anxiety persons. डा० मदनसिंह डा० हरगोपाल सिंह

शोध समिति की कार्यवाही की सपुष्टि शिक्षापटल द्वारा की गई।

इस वर्ष विभाग में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की प्रोन्नत योजना के अन्तर्गत श्री ओम्प्रकाश मिश्र को प्रोफेसर पद पर १-१-८३ से प्रोन्नत किया गया। इस वर्ष गढवाल विश्वविद्यालय की रिसर्च डिग्री कमेटी में प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र ने विषय-विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया। गढ़वाल विश्वविद्यालय ने उनको अपने यहाँ शोध-कार्य कराने के लिए निर्देशक के रूप में मान्यता प्रदान की। उनके निर्देशन में दो छात्रों का पंजीकरण गढवाल विश्वविद्यालय में हुआ। उन्होंने गढवाल विश्वविद्यालय की बोर्ड ऑव स्टडीज में भी बाह्य विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया और उनके बी०ए० व एम०ए० के पाठ्य को सशोधित किया। प्रो० मिश्र ने मेरठ में आयोजित उ०प्र० मनोविज्ञान परिषद् के वार्षिक अधिवेशन में भाग लिया और उसकी एक संगोष्ठी का सभापतित्व किया। गत् वर्षो की भाँति इस वर्ष भी उन्होंने यू० पी० ए० के रिसर्च जनरल के सम्पादक के रूप में कार्य किया। वह ऑल इण्डिया कान्फ्रन्स ऑन एप्लाइड साइकोलोजी में भाग लेने कलकत्ता गये।

इस वर्ष माननीय कुलपति जी ने प्रो० मिश्र को डीन, स्टूडैन्ट वैलफियर के पद पर नियुक्त किया। इसके अतिरिक्त उन्हें विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना का कोआर्डिनेटर तथा विश्वविद्यालय में स्थापित विश्वविद्यालय सेवा योजना सूचना एवं मन्त्रणा केन्द्र का प्रमुख मनोनीत किया गया है। इसके अतिरिक्त उन्हें प्रौढ़ शिक्षा योजना की सलाहकार समिति तथा चयन समिति में सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया है। इन सभी नियुक्तियो की सपुष्टि सिण्डीकेट से हो गयी है। प्रो० ओ० पी० मिश्र ने इस वर्ष भी क्रीड़ा विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और उत्तरक्षेत्रीय अन्तर विश्वविद्यालय बैडमिंटन टूर्नामेन्ट का आयोजन किया। उन्होंने जुलाई मास में आयोजित परीक्षा सुधार वर्कशाप के कन्वीनर के रूप में कार्य किया। इसकी रिपोर्ट प्रकाशित हो चुकी है। उन्होंने उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन में कोआर्डिनेटर के रूप में कार्य किया। इसकी रिपोर्ट भी प्रकाशित हो चुकी है। इसके अतिरिक्त उन्होंने रा०से०यो० गुरुकुल कांगड़ी वि० वि० के कैम्प में भाग लिया तथा भाषण दिया तथा देहरादून यूनिट के कैम्प के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। गत वर्षो की भाँति इस वर्ष भी उन्होंने १९८५ की वार्षिक परीक्षा में परीक्षाध्यक्ष का कार्य किया।

डा० हरगोपाल सिंह ने विभागीय कार्य के अतिरिक्त वैदिक पाथ नामक शोध पत्रिका का गत वर्षो की भाँति सम्पादन किया। उनकी नजीबाबाद से तीन बार श्री रामकृष्ण परमहंस तथा संत तुलसीदास पर वार्ता प्रसारित हुईं। वह सागर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सेमीनार में भाग लेने सागर गये और क्रॉस कलचरर रिसर्च इन क्लीनिकल साइकोलोजी विषय पर निबन्ध पढ़ा। कुलपति सम्मेलन में उन्होंने रिजेवेशन इन यूनिवर्सिटीज एण्ड इनफीरियरटि काम्पलैक्स विषय पर निबन्ध पढ़ा। उनके लेख वैदिक पाथ के जून '८४ और मार्च '८५ के अंकों में छपे। इस वर्ष इटली सरकार ने उन्हें साइकेटरी एवं साइकोलोजी के मानव शास्त्रीय विकासात्मक क्षेत्र विषय पर इटली के मनोवैज्ञानिकों के साथ काम करने हेतु आमन्त्रित किया। उनकी पुस्तक का इटली और स्पेनिश भाषा में अनुवाद हो रहा है। उन्होंने विभाग में यन्त्रों तथा पुस्तकों की खरीदारी में सक्रिय योगदान दिया।

प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी ने पठन-पाठन के अतिरिक्त विभाग में पुस्तकों की खरीददारी में सहयोग प्रदान किया।

प्रो० धमीजा ने पठन-पाठन के अतिरिक्त दो पुस्तकें प्रकाशित कराई जिनके नाम है :

(१) शिक्षा एव मनोविज्ञान में प्रारम्भिक साँख्यिकी (२) शिक्षा मनोविज्ञान

उन्होंने विभागीय यन्त्रों की एवं पुस्तकों की खरीददारी में सहयोग प्रदान किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने कुलपति सम्मेलन में सक्रिय योगदान दिया। वि० वि० की एथलेटिक्स टीम के प्रबन्धक के रूप में वह वि०वि० की टीम को ग्वालियर ले गये।

श्री लालनरसिंह नारायण ने अपने विभागीय दायित्व के अतिरिक्त कुलपति सम्मेलन में एक निबन्ध पढ़ा तथा विश्वविद्यालय योग पाठ्यक्रम के अन्तर्गत डिप्लोमा कोर्स के विद्यार्थियों से सम्बन्धित विषयों पर व्याख्यान दिये। आजकल उन्हे फोटोग्राफी के डिप्लोमा कोर्स से संबंधित पाठ्यक्रम को बनाने का दायित्व सौंपा गया है जिसे वे उत्तरदायित्व के साथ निभा रहे हैं।

—ओ० पी० मिश्र
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय का यह स्नातकोत्तर विभाग निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहा। वर्तमान में विभाग में एक प्रोफेसर, दो रीडर तथा दो लेक्चरर पूर्ण निष्ठा के साथ कार्यरत हैं।

विभाग में कार्यरत प्राध्यापक

१. डा० विनोदचन्द्र सिन्हा, एम. ए, पी-एच. डी., प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
२. डा० जबरसिंह सेंगर, एम. ए., पी-एच. डी., रीडर
३. डा० श्यामनारायण सिंह, एम. ए., पी-एच. डी., रीडर
४. डा० काश्मीरसिंह, एम. ए, पी-एच. डी., लेक्चरर
५. डा० राकेशकुमार शर्मा, एम. ए., पी-एच. डी., लेक्चरर

स्नातकोत्तर कक्षाओं में परीक्षार्थियों की संख्या

एम. ए. प्रथम वर्ष	१८
एम. ए. द्वितीय वर्ष	१८
शोध छात्र संख्या	१४

शोध कार्य—

१५ वर्ष के अल्प समय में विभाग १८ महत्त्वपूर्ण विषयों पर शोध-कार्य करा चुका है। इस वर्ष के दीक्षान्त समारोह में चार शोध छात्रों को पी-एच. डी. की उपाधि से विभूषित किया गया। ये नाम निम्नत: हैं—प्रथम श्री राकेशकुमार शर्मा जिनका विषय है "प्राचीन भारत में सम्प्रभुता का विकास" द्वितीय इन्डोनेशिया के बाली प्रान्त के श्री आई.जी.पी. फलगुनादि हैं जिनका विषय है, "इवालूशन ऑव इंडियन कल्चर इन बाली"; तृतीय कु० उषा भसीन जिनका विषय है "उत्तर भारत की शासन-संस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन"; अन्तिम तथा चतुर्थ है श्रीमती साधना सिपाहा जिनका विषय है "मौर्यकाल में राजनैतिक चिन्तन" (स्वामी दयानन्द के राजदर्शन के परिप्रेक्ष्य में)। उपरोक्त चारों शोध-छात्रों ने अपना

कार्य विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० विनोदचन्द्र सिन्हा के निर्देशन में सम्पन्न किया।

शोध-कार्य विभाग मे सफलतापूर्वक चल रहा है। जिन शोध-छात्रों के कार्य सन्तोषजनक ढंग से प्रगति पर है, वे निम्नतः है।

नाम	निर्देशक का नाम	विषय
१. श्री विनोद कुमार शर्मा	डा० वी० सी० सिन्हा	गुप्तकाल में आयुर्वेद का विकास
२. कु० अंजली महरोत्रा	,,	प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन
३. श्री बृजमोहन खन्ना	,,	भारत और ईरान के प्राचीन सांस्कृतिक सम्बन्ध
४. श्रीमती बीना शर्मा	,,	प्राचीन भारत में सन्यास आश्रम
५. श्री सुधाकर शर्मा	,,	
६ कु० अरुणा मिश्रा	डा० जबरसिह सेंगर	प्राचीन भारत में नारी शिक्षा एवं स्वामी दयानन्द का योगदान
७. श्री शिशिरकुमार पाण्डेय	,,	प्राचीन भारत में सैन्य संगठन
८. श्री धर्मसिह सैनी	,,	भारत और मध्य एशिया के प्राचीन सम्बन्ध
९. श्री अनिल कुमार	,,	वैदिक युग में नारी
१०. श्री सुखबीरसिह	डा० श्यामनारायण सिह	पुरातत्व संग्रहालय की मृण्मूर्तियों तथा पाषाण-मूर्तियों का अध्ययन
११. श्री जसवीरसिह मलिक	,,	प्राचीन भारत में पौरोहित्य
१२. श्रीमती उषा आनन्द	,,	टीचिंग इन एनशीयन्ट इण्डिया
१३. श्री केवलकृष्ण	डा० कश्मीरसिह	पूर्व मध्यकाल में राज-नैतिक संस्थाएँ
१४. श्री जयकिशोर	,,	प्राचीन भारतीय समाज में पददलितों का अध्ययन

डा० सिन्हा—नेशनल फैलो

यह सत्र विश्वविद्यालय तथा विभाग दोनों को विशेष सम्मान मिलने वाले सत्र के रूप में याद किया जायेगा। इस सत्र में विभाग के प्रोफेसर एव अध्यक्ष डा० सिन्हा को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से नेशनल फैलो घोषित किया गया है। इस प्रोजेक्ट का कार्य डा० सिन्हा अगस्त '८५ से आरम्भ करने वाले हैं। उल्लेखनीय है कि सम्पूर्ण देश में यह सौभाग्य एक समय में मात्र ३० व्यक्तियों को ही प्राप्त होता है।

विजिटिंग प्रोफेसर का आगमन

इस सत्र में विभाग में भारत के प्रसिद्ध पुरातत्वविद् डा० आर० सी० अग्रवाल, भूतपूर्व निर्देशक, पुरातत्व एव सग्रहालय राजस्थान सरकार का आगमन विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में हुआ। वह अक्टूबर से दिसम्बर तीन माह तक विश्वविद्यालय में रहे। डा० आर० सी० अग्रवाल का आगमन विभाग को पुरातत्व के क्षेत्र में सुदृढ तथा नवीन जानकारियाँ देने के सन्दर्भ में अत्याधिक लाभदायक रहा।

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा लेखन कार्य

विभाग के प्रोफेसर एव अध्यक्ष डा० विनोदचन्द्र सिन्हा की पुस्तक "ग्लोरियस आर्ट ऑव शुंग एज" प्रकाशित हुई। इससे पूर्व प्रो० सिन्हा की ९ पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है। डा० सिन्हा के निम्न लेख भी प्रकाशित हुए—प्राचीन भारत में मन्त्रिपरिषद्, भारतीय सस्कृति के नैतिक मूल्य तथा ओरिजन एण्ड ग्रोथ ऑव कास्ट इन एनशियन्ट इन्डिया।

विभाग के रीडर डा० जबरसिह सेंगर के निम्न लेख प्रकाशित हुए—

कुमारजीव: एन इन्डियन ह्यूमीनरी ऑव चाइना, **आर्यन हेरिटेज**, नवम्बर '८४
कौडिन्य, दी फाउन्डर ऑव हिन्दू कोलोनीज, **आर्यन हेरिटेज**, जनवरी '८५
दी आईडेन्टिटी ऑव कोडिन्य, दी फाउन्डर ऑव हिन्दू कोलोनीज,
वैदिक पाथ, सितम्बर १९८४

कौडिन्य – **वैदिक लाइट**, जन० '८५
वैदिक युग में प्रजातन्त्र, **प्रह्लाद**, सितम्बर '८४
वैदिक युग में ससदीय प्रणाली – **गुरुकुल पत्रिका**, जून-अक्टूबर '८४
निर्गुट आन्दोलन एव विश्व शान्ति, **गुरुकुल पत्रिका**, जून-अक्टूबर '८४
गल्मपिसिज फ्राम दी साऊथ इण्डिया, **वैदिक लाइट**, नवम्बर '८४

विश्व शान्ति में स्व० श्रीमती इन्दिरा गान्धी की एक लम्बी यात्रा, **शक्ति संदेश** २६ जनवरी '८५,

इस सत्र में उत्तर भारत के कुलपतियों के सम्मेलन में डा० सेंगर ने एक लेख "वर्ण-व्यवस्था के दोष एवं उचित समाधान" भी पढ़ा। इस सत्र में डा० सेंगर की पुस्तक "भारत-कम्बूज सम्बन्ध" मेरठ से प्रकाशित हुई।

विभाग के प्राध्यापक डा० राकेशकुमार शर्मा का एक लेख गुरुकुल पत्रिका के जनवरी अंक में "गुप्तकाल में धार्मिक सहिष्णुता" नामक शीर्षक से प्रकाशित हुआ। जर्नल ऑव बिहार उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी से भी डा० शर्मा के एक लेख "गुप्तों की उत्पत्ति" को प्रकाशित होने की स्वीकृति मिल चुकी है।

इतिहासविज्ञों का आगमन

इस सत्र में अनेक प्रमुख इतिहासविज्ञ विश्वविद्यालय विभाग के आग्रह पर पधारे। सर्वप्रथम प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता डा० रतनचन्द्र अग्रवाल का आगमन विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में हुआ। पुरातत्व के दृष्टिकोण से डा० अग्रवाल का आगमन विभाग के लिये अत्यन्त प्रेरणादायी सिद्ध हुआ। रिसर्च डिग्री कमेटी में भाग लेने डा० उदयवीर सिंह, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय तथा डा. एल. पी. पाण्डे, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिमाचल विश्वविद्यालय पधारे। विभाग के अन्य महत्त्वपूर्ण क्रियाकलापों में भाग लेने के लिये दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डी एन झा, लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एव अध्यक्ष वी. एन. श्रीवास्तव, अलीगढ़ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर आर. सी. गौड पधारे। इसी सत्र से एम. ए प्रथम वर्ष में मौखिकी परीक्षा आरम्भ की गई। परीक्षा लेने डा० भूपेशचन्द्र, अध्यक्ष, मेरठ कालेज, मेरठ पधारे।

नई नियुक्तियाँ

अप्रैल माह में विभाग में डा० राकेशकुमार शर्मा की नियुक्ति प्रवक्ता पद पर हुई। डा० शर्मा पिछले दो सत्रों से विभाग में तदर्थ रूप में अध्यापन कार्य कर रहे थे। इसी श्रेणी में पुरातत्व संग्रहालय में क्यूरेटर के पद पर श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव एवं म्यूजियम असिस्टेन्ट के पद पर श्री विजयेन्द्र कुमार जयरथ की नियुक्ति भी हुई।

अन्य गतिविधियाँ

विभाग के प्राध्यापक अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त विश्वविद्यालय में होने वाले अन्य कार्यों में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देते रहे हैं। विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० विनोदचन्द्र सिन्हा विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका प्रह्लाद के संयुक्त सम्पादक के रूप में कार्यरत हैं।

डा० श्यामनारायण सिह विश्वविद्यालय के उपकुलसचिव के पद पर सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। डा० कश्मीरसिह भिन्डर डेवलपमेन्ट अधिकारी के पद पर कार्यरत है। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण विभाग ने विश्वविद्यालय में होने वाले दीक्षान्त समारोह, उत्तर प्रदेश के कुलपतियों के सम्मेलन, नार्थजोन बैड-मिन्टन टूर्नामेन्ट जैसे कार्यों में पूर्ण तत्परता के साथ सहयोग किया।

—**डा० विनोदचन्द्र सिन्हा**
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

पुरातत्व संग्रहालय

पुरातत्व सग्रहालय अपने स्थापना-वर्ष से उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर है। गंगा के बायें तट पर स्थित पुण्यभूमि कांगड़ी ग्राम से गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार होता हुआ वर्तमान में गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के परिसर में विद्यमान है। विश्वविद्यालय के अंग के रूप में इसे वर्ष १६७२ में स्वीकारा गया। तब से प्रो० विनोदचन्द्र सिन्हा के मार्गदर्शन में उत्तरोत्तर नये आयामो को प्रतिष्ठापित कर रहा है। प्रति वर्ष की भाँति वर्तमान सत्र १६८४-८५ की उप-लब्धियों की सक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत है।

संग्रहालय को तकनीकी दृष्टिकोण से नियोजित करने की आवश्यकता दृष्टिगत करते हुये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने षष्ट पचवर्षीय योजना के अन्तिम चरण में सग्रहालयाध्यक्ष एव सहायक-सग्रहालय के पद स्वीकृत किये। फलस्वरूप सग्रहालयाध्यक्ष पद पर श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव, जो गत वर्षो से अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त पुरातत्ववेत्ता प्रो० ब्रजवासी लाल, भूतपूर्व महानिदेशक पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, भारत सरकार के साथ भारतीय उच्च अध्ययन सस्थान शिमला में राष्ट्रीय परियोजना "रामायणकालीन पुरातत्व" पर शोध सहायक के पद पर कार्यरत थे, ने ३१ दिसम्बर १६८४ को पदभार ग्रहण किया। सग्रहालय-सहायक के पद पर श्री बृजेन्द्र कुमार जैरथ की नियुक्ति हुयी।

संग्रहालय के विकास के लिये भी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने ५०,०००-०० रुपये की राशि स्वीकृत की। इस अनुदान में संग्रहालय विकास के साथ ही पुरातात्विक सर्वेक्षण एव उत्खनन के लिये भी प्रावधान किया गया था। यहाँ यह कहना अनुपयुक्त नही होगा कि कुछ तकनीकी एवं प्रशासनिक कारणोंवश इस अनुदान का शत-प्रतिशत उपयोग नही हो सका। प्रशासन ने मात्र ४०,०००-०० रुपये की राशि व्यय के लिये उपलब्ध करायी। उपरोक्त राशि पुरातात्विक सर्वेक्षण, उत्खनन उपकरणों का क्रय एव सग्रहालय विकास में खर्च की गयी। उपरोक्त राशि व्यय के पश्चात् वर्तमान में सग्रहालय पुरातात्विक उत्खनन करने में सक्षम है, तथा किसी भी अन्य अराजकीय या राजकीय संग्रहालय के स्तर को प्राप्त करने योग्य बन गया है।

वर्ष १६८५ के आरम्भ में संग्रहीत वस्तुओं का वर्गीकरण कर विभिन्न

कक्षों में प्रदर्शित किया गया है। वर्तमान में संग्रहालय में निम्न कक्ष एव वीथि-कायें दर्शकों के लिये नियोजित है।

पुरासंस्कृति कक्ष—(एक)

इस कक्ष में सिन्धु सभ्यता (लगभग ५०००–४००० वर्ष पूर्व) से लेकर ११वी शताब्दी की मृण्मूर्तियाँ अवलोकनार्थ रखी गयी है। इनके अतिरिक्त प्रागैतिहासिक काल की विभिन्न सस्कृतियों के मृद्भाण्ड यथा–सिन्धुकालीन काले-लाल मृद्भाण्ड, गेरुये रंग के मृद्भाण्ड, चित्रित धूसर मृद्भाण्ड प्रदर्शित किये गये है—मुस्लिम काल में आयी और मुगलकाल में पल्लवित चमकदार मृद्भाण्ड (Glazed Ware) भी दर्शाये गये है। कक्ष के मध्य में ईसा पूर्व २००० से १५०० वर्ष पूर्व के गगा घाटी मे पाये जाने वाले विशिष्ट ताम्रसजय उपकरण भी अवलोकनार्थ रखे गये है। पुरातात्विक सर्वेक्षण मे सरसावा नामक स्थान से प्राप्त महाभारतकालीन चित्रित धूसर मृद्भाण्ड से १५वी शताब्दी तक के मृद्भाण्ड भी प्रदर्शित है।

पुरासंस्कृति कक्ष—(दो)

इस कक्ष में भारत की प्राचीनतम मुद्राये प्रदर्शित की गयी है। विदेशी मुद्रायें भी अवलोकन के लिये प्रदर्शित हैं। कागजी मुद्रा भी प्रदर्शन के लिये रखी गयी हैं। कक्ष के एक भाग में सस्कृत, फारसी, गुरुमुखी एवं तिब्बती भाषा की पाण्डुलिपियाँ प्रदर्शन के लिये नियोजित हैं। मध्यभाग में ईसा पूर्व ६वीं शताब्दी से लेकर गुप्तकाल तक के मनके प्रदर्शित हैं।

३–पाषाण प्रतिमा कक्ष :—इस कक्ष में कुषाण काल से लेकर १६वीं शताब्दी तक की प्रतिमायें प्रदर्शित की गयी हैं। प्रायः सभी प्रतिमायें हरिद्वार के आस-पास के क्षेत्र की हैं।

४–स्वामी श्रद्धानन्द कक्ष :—सस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर आधारित छायाचित्रो के माध्यम से उनके त्याग एव तपस्या को दर्शाया गया है। कक्ष में स्वामी जी द्वारा उपयोग में लायी जाने वाली वस्तुयें एवं उनके द्वारा संग्रहीत वस्तुयें जो संग्रहालय को प्रदत्त हैं, भी प्रदर्शित है।

५–विविधा वीथिका :—इस कक्ष का मुख्य आकर्षण है भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू द्वारा संग्रहालय को प्रेषित वस्तुयें। इसके अतिरिक्त भारत में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के पाषाण नमूने, वनों से प्राप्त

सामग्री के नमूने तथा विभिन्न कलात्मक वस्तुओं की प्लास्टर अनुकृतियाँ हैं।

६–धातु प्रतिमा कक्ष :—इस कक्ष में विभिन्न काल की धातु प्रतिमायें अवलोकन हेतु रखी गयी हैं।

७–चित्रकला वोथिका :—इस वीथिका में नाथद्वारा, कांगड़ा शैली एवं १९वी शताब्दी के कनखल से प्राप्त भित्तिचित्रों की अनुकृतियाँ प्रदर्शित हैं।

८–अस्त्र–शस्त्र कक्ष :—द्वितीय महायुद्ध में उपयोग में आने वाले विभिन्न जर्मन एवं ब्रिटिश अस्त्र–शस्त्र इस कक्ष के मुख्य आकर्षण हैं।

९–लिपि वीथिका :—भारतीय प्राचीन भाषालिपि ब्राह्मी, एव उससे विकसित अन्य भाषाओं का क्रमिक विकास चार्टों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। यह वीथिका वेद मन्दिर के प्रथम तल पर नियोजित है।

गुरुकुल के ८५ वर्ष :—गुरुकुल एवं गुरुकुल महाविद्यालय का गत ८५ वर्षों का सफर उपलब्ध छायाचित्रों के माध्यम से वेद मन्दिर के प्रथम तल पर दाहिनी ओर की वीथिका में प्रदर्शित है।

संग्रहालय में शोधार्थियों की सुविधा के लिये शोध–कक्ष की व्यवस्था भी की गयी है। विभिन्न प्रदर्शित वस्तुओं पर विस्तृत जानकारी हेतु सहायक संग्रहालयाध्यक्ष श्री सुखबीर सिंह की सुविधायें उपलब्ध हैं।

संग्रहालय में लगभग ११०० पुस्तकों का अपना संग्रहालय भी है जिसकी देख–रेख संग्रहालय-सहायक श्री बृजेन्द्रकुमार जैरथ कर रहे हैं। पुस्तकालय की सुविधायें शोधार्थियों को उपलब्ध हैं। ३१ मार्च १९८५ को समाप्त होने वाले वर्ष में संग्रहालय आने वाले दर्शकों की संख्या पिछले वर्षों से अधिक रही। संग्रहालय देखने आने वाले विशिष्ट दर्शकों का उल्लेख भी आवश्यक है। यथा—

१–श्रीमती माधुरी शाह, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
२–श्री एम० राय, अध्यक्ष, आश्वासन समिति, पश्चिम बंगाल विधानसभा।
३–श्री सतीश चन्द्र गुप्ता, निदेशक, उच्चशिक्षा उत्तर प्रदेश शासन।
४–श्री के० के० तिवारी, कुलपति, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर।
५–श्री डी० आर० शुक्ला, कुलपति, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन।

संग्रहालय के पदेन निदेशक एव अध्यक्ष प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग एवं संग्रहालयाध्यक्ष सूर्यकान्त श्रीवास्तव के निर्देशन में

हरिद्वार के आस-पास के क्षेत्र का पुरातात्विक सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण में सहायक संग्रहालयाध्यक्ष श्री सुखबीरसिंह, संग्रहालय सहायक श्री बृजेन्द्र कुमार जैरथ के अतिरिक्त प्राचीन भारतीय इतिहास सस्कृति एव पुरातत्व विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक, प्रवक्ता एवं पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध स्नातकोत्तर छात्रो ने भाग लिया।

सर्वेक्षण श्यामपुर, कुण्डीसोटा, मण्डावर (जिला बिजनौर), इमलीखेड़ा, झीवरहेड़ी, सुलतानपुर, नसीरपुर, सरसावा, मायापुर एव सतीकुण्ड (जिला-सहारनपुर) गेरुये रग के मृद्भाण्ड (Ochire Colour Ware) के लिये उल्लेखित है। सरसावा से प्राप्त महाभारतकालीन चित्रित धूसर मृद्भाण्ड (Painted Grey Ware) अभी तक की खोज मे पूर्णतः नवीन योग है। कालसी क्षेत्र में भूरे मृद्भाण्ड एव काले ओपदार मृद्भाण्डो के समकालीन लाल मृद्भाण्ड की प्राप्ति भी इस क्षेत्र का योगदान है।

सग्रहालय सामान्यतः प्रातः १० बजे से सायंकाल ५ बजे तक दर्शकों के लिये खुला रहता है, किन्तु विशिष्ट परिस्थितियों में अवकाश के दिन में भी खोला गया है यथा— विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह।

वर्तमान में सग्रहालय मे निम्नलिखित कार्यकर्ता कार्यरत है :

प्रो० विनोद चन्द्र सिन्हा	पदेन निदेशक
श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव	सग्रहालयाध्यक्ष
श्री सुखवीरसिह	सहायक-संग्रहालयाध्यक्ष
श्री बृजेन्द्रकुमार जैरथ	सग्रहालय-सहायक
श्री बालकृष्ण शुक्ल	लिपिक
श्री रमेशचन्द्र पाल	भृत्य
श्री ओमप्रकाश	भृत्य
श्री वासुदेवी मिश्र	चौकीदार।

—**प्रो० विनोद चन्द्र सिन्हा**
पदेन निदेशक

अंग्रेजी विभाग

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के इतिहास में १६८४-८५ सत्र को यदि विकास एवं निर्माण वर्ष कहें तो अतिश्योक्ति न होगी। हर दिशा में निर्माण, विकास एवं प्रसार की दृष्टि से वर्त्तमान सत्र एक स्वर्णिम वर्ष रहा है। अंग्रेजी विभाग के लिए तो निश्चित रूप से यह सत्र कई अर्थों में उपलब्धि-वर्ष के रूप में स्मरणीय रहेगा।

अभी तक गत २१ वर्षों से विभाग में केवल चार शिक्षक रहे जिनके ऊपर छह कक्षाओं (विद्याविनोद, अलंकार एवं एम०ए०) में अध्यापन का कार्य-भार रहा। इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने एक नये शिक्षक का पद स्वीकार कर विभाग की शिक्षण-शक्ति को बल दिया है। इस पद पर नये प्रवक्ता डा० श्रवणकुमार शर्मा की नियुक्ति सत्र के प्रारम्भ में ही हो गई थी जिससे शिक्षण-कार्य बड़ी सुगमता से चलता रहा।

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित प्रोन्नति योजना के अन्तर्गत विभाग के दो प्रवक्ताओं, डा० राधेलाल वार्ष्णेय एवं डा० नारायण शर्मा, को रीडर पद पर प्रोन्नत किया गया।

ज्ञान-प्रसार की दृष्टि से विभाग में दो और महत्त्वपूर्ण कार्य हुए। अभी तक विभाग में विद्यार्थियों के लिए शोधकार्य की सुविधा नहीं थी, किन्तु इस सत्र से अंग्रेजी में पी-एच०डी० का कार्य विधिवत् प्रारम्भ हो गया। सदाशिव भगत (रीडर-अध्यक्ष) एवं डा० नारायण शर्मा (रीडर) के निर्देशन में कुल चार शोधार्थी पी-एच०डी० के लिए इस सत्र में कार्यरत हुए।

विभाग की प्रगति का दूसरा विशिष्ट चरण रहा—लैंग्वेज लेबॉरेटरी का खोला जाना। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत ३०,०००) रु० द्वारा इस हेतु उपकरण खरीदे गये जिनमें विशेषतया बी०बी०सी० द्वारा निर्मित अंग्रेजी भाषा सिखाये जाने के लिए कॅसेट्स, रेकार्ड्स, कॅसेट-प्लेयर, रेकार्ड-प्लेयर आदि उपकरण हैं।

इस वर्ष लगभग २५,०००) रु० की विषय-सम्बन्धी पुस्तकों का क्रय विभाग के लिए हुआ।

१८-२० जनवरी १९८५ में विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित उत्तर भारत के कुलपतियों के सेमिनार में विभाग के सभी शिक्षकों का समुचित योगदान रहा।

३० जनवरी १९८५ को अंग्रेजी अनुसधान समिति की बैठक में भाग लेने आये कानपुर विश्वविद्यालय के अवकाशप्राप्त प्रोफेसर एस०पी० सिंह ने विभाग के छात्रों को सम्बोधित किया।

१३ मई १९८५ को गोरखपुर विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर-अध्यक्ष डा० प्रतापसिंह ने 'साहित्यक मूल्य' विषय पर विभागीय छात्रों के समक्ष वार्ता दी।

२० मई १९८५ को विभाग की ओर से 'महर्षि अरविन्द की साहित्यिक कृति' विषय पर एक गोष्ठी हुई जिसमें विभाग के सभी शिक्षकों ने शोधपत्र प्रस्तुत किये। नगर के अन्य कालेजों के शिक्षकगण भी गोष्ठी में उपस्थित थे।

वर्त्तमान सत्र में विभागीय शिक्षकों के व्यक्तिगत कार्य-विवरण :—

१- **सदाशिव भगत**, रीडर एवं अध्यक्ष

शोध निर्देशन एवं कार्य :—

(क) "द इमेज ऑव वुमन इन द नौवल्स ऑव इन्डो-एंगलियन राइटर्स" विषय पर शोधकार्य करवा रहे हैं। शोधार्थी : श्री पी०एस० चौहान, अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, एस०एम०जे०एन० डिग्री कालेज, हरिद्वार।

(ख) पटना विश्वविद्यालय में प्रस्तुत शोधप्रबन्ध "जेम्स ऐलरौय फ्लैकर्स औरियन्टलिज्म" का मूल्यांकन किया।

(ग) अवध विश्वविद्यालय के अंग्रेजी अनुसंधान समिति के सदस्य मनोनीत।

(घ) "श्री अरविन्दोज फ्यूचर पोइट्री" विषय पर शोधलेख 'वैदिक पाथ' पत्रिका में छपने हेतु स्वीकृत।

२—स्थानीय केन्द्रीय विद्यालय द्वारा आयोजित केन्द्रीय विद्यालय लखनऊ क्षेत्र के टीचर्स रिफ्रेशर्स कोर्स में भाग ले रहे शिक्षकों के समक्ष १० मई को "चिल्ड्रेनज़ लिट्रेचर" विषय पर व्याख्यान दिया।

आर०एल० वार्ष्णेय—एम०ए०, पी-एच०डी०, पी०जी०सी०टी०ई०, डिप०टी०ई०
रीडर

१—**शोध-निर्देशन**—चार शोधार्थियों को अनुसंधान करा रहे है।

२—**विदेश-यात्रा**—अक्टूबर-नवम्बर मास में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के माध्यम से सोवियत रूस की यात्रा की और मास्को तथा लेनिनग्राड में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, अंग्रेजी का भारत में विभिन्न स्तरों पर अध्यापन, भारत की प्रगति, वेदों का महत्त्व आदि विषयों पर व्याख्यान दिये। उनके कुछ व्याख्यान टेपरिकार्ड भी किये गये।

३ - **कान्फ्रेंसिस तथा व्याख्यान**—

(अ) मेरठ विश्वविद्यालय में २८-३० नवम्बर १९८४ में हुई "डा० जानसन शताब्दी कान्फ्रेंस" में भाग लिया तथा "डा० जानसन प्रैफिस टु शेक्सपियर" नामक पेपर पढ़ा जो प्रकाशित भी हो रहा है।

(ब) केन्द्रीय विद्यालय लखनऊ रीजन के केन्द्रीय विद्यालय टीचर्स रिफरैशर्स कोर्स, जो केन्द्रीय विद्यालय नं० २, रानीपुर में हुआ, में ८ मई १९८५ को "हाउ टु टीच इंगलिश" विषय पर व्याख्यान दिया।

(स) गुरुकुल विद्यालय में अंग्रेजी के स्तर सुधारने हेतु कक्षा ८ और ९ को मिश्रित करके १५ दिन व्याख्यान दिये और छात्रों की 'स्पोकन इंगलिश' सुधारने का यत्न किया।

(द) १८-२० जनवरी १९८५ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में नार्थ जोन वाइस चांसलर्स सेमिनार का सह-समायोजन किया तथा उसके जौइन्ट कोऔर्डीनेटर के रूप में कार्य किया। इस कान्फ्रेंस में "Socio-Psycho Pressures on SCs STs" नामक लेख पढ़ा।

४—**लेखन, सम्पादन, प्रकाशन**—

[अ] प्रकाशित पुस्तकें :

१-जार्ज ऑरवैड : इनसाइड द ह्वेल एण्ड अदर एसेज

२-जेन आस्टिन : मैन्सफील्ड पार्क—ए क्रिटिकल स्टडी

[ब] कवितायें :

१-'मन्की मैन', द हॉक, अगस्त १५, १९८४

२-'वैलकम टु द वाइस-चांसलर्स एण्ड डेलीगेटस',
द हॉक, जनवरी १८, १९८५

३-'डेज इन द सोवियत यूनियन', द हॉक, जनवरी १५, १९८५
४-'इन्दिरा इम्मोर्टलाइज्ड', द हॉक, फरवरी १, १९८५
५-'द होली गंगा', द हॉक, मार्च १, १९८५
६-'कलिकी', द हॉक, मार्च १, १९८५
७-'एन ओड टू हैप्पीनॅस', द हॉक, मार्च १५, १९८५

[स] लेख :

१-'एजूकेशन इन द यू०एस०एस०आर०', द हॉक, फरवरी १, १९८५
२-'एजूकेशन इन द यू०एस०एस०आर०', यूनिवर्सिटी टूडे, मार्च १५, १९८५
३-'रसियन विमन', द हॉक, अप्रैल १५, १९८५
४-'मेरी रूस यात्रा', वीर प्रताप, फरवरी १६ तथा २६, १९८५ तथा क्रमशः
५-'आर्य समाज स्टैण्ड आन पंजाब', द हिन्दुस्तान टाइम्स, मई १०, १९८५

[द] सम्पादन :

१-स्वामी श्रद्धानन्द;
२-गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय—ए प्रोफाइल
३-वैदिक पाथ
४-वार्षिक विवरण १९८३-८४, गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय
५-इग्जैमिनिशन रिफोर्म्स वर्कशाप प्रोसीडिंग्स—गु०कां०वि०
६-वाइस-चांसलर्स सैमीनार—ए रिपोर्ट—गु०कां०वि०

५—अन्य कार्य :

सचिव कुलपति तथा जनसम्पर्क अधिकारी ।

३—डा० नारायण शर्मा, एम०ए०, पी-एच०डी०, एल-एल०बी०—रीडर

१–फरवरी १९८५ में सम्पन्न वाइस-चांसलर्स कान्फ्रेंस में एक पेपर पढ़ा जिसका शीर्षक था–'रिजर्वेशन ऑव सीट्स फॉर शीड्यूल्ड कास्टस् एण्ड शीड्यूल्ड ट्राइब्स इन यूनिवर्सिटीज' ।

२–तीन शोध विद्यार्थी पी-एच.डी. के लिए पंजीकृत । इनके विषय टैगोर के काव्य, राजा राओं की उपन्यास-कला एवं अंग्रेजी और भारतीय कवियों की अंग्रेजी कविता में स्वतन्त्रता, समानता और सौहार्द्र की भावनाओं से सम्बन्धित हैं ।

३-दो समालोचनात्मक पुस्तकें—एक आल्डस हक्स्ले पर और दूसरी साहित्य में प्रतीकवाद पर—प्रकाशनाधीन।

इसके अतिरिक्त सभी विभागीय गतिविधियों में सक्रिय योगदान।

४—अजय शर्मा, एम.ए., एम. फिल., पी-एच.डी. (कार्यरत)
पी.जी.सी.टी.ई. (कार्यरत)—प्रवक्ता

प्रकाशन—

१-ह्यूमन रिलेशनशिप इन द नॉवल्स ऑव टॉमस हार्डी
२-ए स्टडी ऑव उर्वशी—वैदिक पाथ, श्री अरविन्दो ईशू

पेपर-वाचन—

१-'ए स्टडी ऑव वेनिटि ऑव ह्यूमन विशिज', डा. जानसन्स सेमिनार, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ

२-'रिजर्वेशन एंड शीडयूल्ड कास्ट'—नार्थ जोन वी०सी० कान्फ्रेंस, गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय।

५—डा. श्रवणकुमार शर्मा, एम.ए. पी-एच.डी.—प्रवक्ता

[अ] मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित डा. जॉनसन पर सेमिनार में एक शोध-लेख पढ़ा।

[ब] उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन में 'कमजोर वर्ग का उच्चशिक्षा में आरक्षण' विषय पर निबन्ध पढ़ा।

[स] विश्वविद्यालय क्रिकेट टीम के मैनेजर के रूप में जयपुर गये।

—सदाशिव भगत
रीडर तथा अध्यक्ष

हिन्दी विभाग

प्रस्तावना :

इस विभाग में प्रारम्भ से आर्यभाषा विभाग के नाम से कार्य चल रहा था परन्तु १९६३ से इस विभाग का नाम हिन्दी विभाग हो गया। विद्या-विनोद (Intermediate) तथा अलंकार (degree course) कक्षाएँ तो पहले से थी अब एम.ए. कक्षाएँ भी प्रारम्भ हो गई। उत्तम शिक्षण-व्यवस्था एवं परिणाम के कारण इस विभाग की ख्याति फैली तथा इसकी एम ए की उपाधि को अन्य विश्वविद्यालयों ने अपनी एम ए उपाधि के समकक्ष मान्यता प्रदान की। आगे चलकर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से इस विषय में पी-एच.डी. उपाधि हेतु शोधकार्य कराने की अनुमति भी प्राप्त हो गई है। जब से अनुमति प्राप्त हुई है तब से इस विषय मे इतना प्रामाणिक शोधकार्य हो चुका है कि इस विश्वविद्यालय का मस्तक गौरव से ऊँचा हुआ है।

विभागीय शिक्षक—

इस विभाग में निम्नांकित शिक्षक कार्य कर रहे है—

१. डा. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, डी. लिट्.	:	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
२. डा. विष्णुदत्त राकेश, डी. लिट्.	:	प्रोफेसर
३. डा. ज्ञानचन्द, पी-एच. डी.	:	प्रवक्ता
३. डा भगवानदेव पाण्डेय, पी-एच. डी.	:	प्रवक्ता

विजिटिंग प्रोफेसर—

इस सत्र में हिन्दी में विख्यात विद्वान तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व-कुलपति डा. गणपतिचन्द्र जी गुप्त, डी. लिट्. को विजिटिंग प्रोफेसर नियुक्त किया गया। उनके सम्पर्क से शिक्षकों तथा छात्रों को बहुत लाभ हुआ। उनके विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों एव विचारों से नई दिशा तथा प्रेरणा प्राप्त हुई।

विभाग में छात्रों की स्थिति तथा अनुशासन—

इस सत्र मे हिन्दी के छात्रों का कार्य उत्साहपूर्ण रहा। उन्होंने विश्वविद्यालय में अनुशासन का आदर्श प्रस्तुत किया तथा अनुशासन का पालन करते हुए अनेक कार्यक्रम भी आयोजित किए जिनसे अध्ययन को प्रेरणा प्राप्त हुई।

सख्या की दृष्टि से उनका रेकार्ड गत वर्ष की भांति ही रहा।

शिक्षकों का योगदान—

विभागीय शिक्षकों ने पठन-पाठन का कार्यक्रम बड़ी तत्परता से चलाया। बीच-बीच में जो समस्याएँ आई उनमें अधिकारियों की सहायता की, यथा कुलपति-सम्मेलन तथा वार्षिक कार्यक्रमों आदि में भी यथोचित भाग लिया।

डा. विष्णुदत्त राकेश की निगमागम सम्बन्धी धारणाओं पर 'दश महा-विद्या मीमांसा' पुस्तक इस वर्ष प्रकाशित हुई। प्रह्लाद के 'हिन्दी दिवस विशेषाङ्क', 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, स्वामी श्रद्धानन्द तथा इन्दिरा गाधी स्मृति अक' विशेष रूप से प्रकाशित हुए। हिन्दी, उर्दू, दयानन्द, मूल्योन्मुखी शिक्षा, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, भवानीप्रसाद मिश्र, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, काग्रेस शताब्दी समारोह, पद्मभूषण डा. बनारसीदास चतुर्वेदी तथा डा. हरिवश राय बच्चन पर सम्पादकीय लिखे। नागार्जुन, ब्रह्मसूत्रशाकरभाष्य भामती व्याख्या, कामायनी एक सह-चिन्तन तथा बौद्ध कापालिक साधना और साहित्यग्रन्थों की विशद् आलोचनात्मक समीक्षाएँ लिखी। तुलनात्मक हिन्दी आलोचना और हिन्दी व्याकरण की जन्मभूमि (नवभारत टाइम्स), शब्द साधना के अनिकेत शिखर (महर्षि में ही जन्म शताब्दी ग्रन्थ), आचार्य शुक्ल का समीक्षा निकाय (रामचन्द्र शुक्ल) एव 'रिलीजन, द पाथ ऑव दी मास्टर्स, यूनिवर्सल' (फोरम फार यूनिवर्सल रिलीजन, जर्मनी) निबन्ध प्रकाशित हुए। सस्कृति और साहित्य पर आकाश-वाणी नजीबाबाद से वार्ता प्रसारित हुई। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के तत्वावधान में आयोजित प्रादेशिक केन्द्रीय विद्यालय प्राध्यापकों के शिविर के समापन समारोह की अध्यक्षता की तथा 'मूल्य और शिक्षा' पर व्याख्यान दिया। स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुडकी में सम्पन्न आचार्य शुक्ल शताब्दी समारोह में 'आचार्य शुक्ल और हिन्दी समीक्षा' पर व्याख्यान दिया। उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन के उद्घाटन-सत्र का संचालन किया तथा दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला का संयोजन-संचालन किया।

नवीन शोधकार्य—

इस वर्ष विभाग के निम्नांकित तीन शोधार्थियों ने पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त की—

१. **ज्ञानचन्द**—प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

(इनका शोध-विषय था "हरिऔध के महाकाव्यों का शास्त्रीय एव सामाजिक अध्ययन"। इसका निर्देशन विभागाध्यक्ष डा० वाजपेयी ने किया था।)

२. **(श्रीमती) आभा तिवारी**

(इनका शोध-विषय था "गोस्वामी तुलसीदासकृत गीतावली में काव्य, संस्कृति तथा दर्शन"। इसका निर्देशन डा. राजपति दीक्षित, डी. लिट्. (वाराणसी) तथा हिन्दी-विभागाध्यक्ष डा. वाजपेयी ने किया था।)

३. **अरुणप्रकाश वाजपेयी**-प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, जे.वी. जैन कालेज, सहारनपुर।

(इनका शोध-विषय था "कवितावली में काव्य, समाज और संस्कृति"। इसका निर्देशन डा. राजपति दीक्षित, डी. लिट्. (वाराणसी) तथा हिन्दी-विभागाध्यक्ष डा. वाजपेयी ने किया था।

इससे पूर्व लगभग तीस छात्रों को हिन्दी में पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त हो चुकी है।

शिक्षकों की सफलताएँ एवं बधाई—

इस सत्र में विभागाध्यक्ष डा. वाजपेयी को रीडर से प्रोफेसर तथा प्रवक्ता डा. विष्णुदत्त राकेश को पहले रीडर फिर प्रोफेसर पद प्राप्त हुआ। प्रवक्ता ज्ञानचन्द को पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त हुई। सभी को सफलताओं हेतु बधाई प्राप्त हुई।

—**डा० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी**
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

———

गणित विभाग

(कला एवं वेद महाविद्यालय)

प्राध्यापक—

डा. एस. एल. सिंह (प्रोफेसर, दिनांक अप्रैल १, १९८५ से)
श्री वी. पी. सिंह (रीडर)
श्री महिपाल सिंह (प्रवक्ता)
श्री राजेश पाण्डेय (प्रवक्ता, तदर्थ, दिनांक १८ अगस्त, १९८५ से)

गणित विभाग के छात्रों ने विभिन्न शिक्षणेतर कार्य-कलापों में भाग लिया तथा सहयोग दिया यथा क्रिकेट, बैडमिन्टन आदि।

पठन-पाठन के अतिरिक्त प्राध्यापकों ने विश्वविद्यालय में समय-समय पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया एव सहयोग किया यथा— दर्शन कान्फ्रेंस, कुलपति सम्मेलन आदि।

गणित की विभिन्न विधाओं को लोकप्रिय बनाने, अंतर्विषयी समझ को बढ़ावा देने तथा वैश्लेषिक चिन्तन के प्रति रुझान पैदा करने के उद्देश्य से कुलपति श्री जी० बी० के० हूजा जी की प्रेरणा से विश्वविद्यालय में **रामानुजम् गणित परिषद्** की स्थापना की गई। उल्लेख्य है कि विश्वस्तर के महान् भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजम् अइयगर (दिसम्बर १८८७-अप्रैल १९२०) की स्मृति में परिषद् का नाम रखने का सुझाव भी कुलपति जी ने दिया। परिषद् का उद्घाटन दिनाक ८ मई, १९८५ को कुलपति जी के उद्बोधन से हुआ। परिषद् की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए श्री हूजा जी ने ऐसी और भी परिषदें स्थापित करने पर बल दिया। इस शुभ अवसर पर प्रौद्योगिकी संस्थान बम्बई के विजिटिंग प्रोफेसर डॉ० मोहन सी० जोशी द्वारा "Computer Approach towards Calculus" पर दिये गये लोकप्रिय भाषण की कुलपति, उपकुलपति एव प्रधानाचार्य (विज्ञान महाविद्यालय) तथा कला व विज्ञान महा-विद्यालय के प्राध्यापकों, छात्रों, शोधछात्रों एवं मेहमान श्रोताओं द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। इसी कड़ी में प्रोफेसर जोशी का दूसरा भाषण "Theory of Monotone operators and its Applications" दिनांक ९ मई, १९८५ को हुआ।

रामानुजम् गणित परिषद् के संरक्षक कुलपति श्री जी०बी०के० हूजा हैं। परिषद् की तदर्थ कार्यकारिणी इस प्रकार है—

अध्यक्ष—	*डॉ० एस०एल० सिंह*
सचिव—	*सर्वश्री विजयपाल सिंह तथा बी० शर्मा*
कोषाध्यक्ष—	श्री महिपाल सिंह
पार्षद—	सभी प्राध्यापक (गणित) एवं दो छात्र नामांकन द्वारा।

रामानुजम् संस्थान, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास की डॉ० (श्रीमती) गीथा श्रीनिवास राव तथा गणितीय विज्ञान संस्थान, मद्रास के डॉ० के० श्रीनिवास राव ने भी इस विश्वविद्यालय में पधारने का प्रस्ताव किया है।

प्रोफेसर एस०एल० सिंह को Seminar on Functional Analysis and its Applications (Sponsored by the UGC) मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर में भाग लेने व भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया है। प्रो० सिंह के भाषण का शीर्षक है–Approximating Fixed Points। इससे पूर्व आपको १३-१४ अप्रैल, १९८५ अवधि में History of Mathematics पर आयोजित सिम्पोजियम (UGC Sponsored) में भाग लेने के लिए इलाहाबाद गणित सोसायटी द्वारा आमंत्रित किया गया था, किन्तु विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह (१३ अप्रैल) के कारण सिम्पोजियम में भाग नहीं लिया जा सका।

प्रो० एस० एल० सिंह
प्रोफेसर–अध्यक्ष

—**—

गणित विभाग

(विज्ञान महाविद्यालय)

बी० एस-सी० प्रथम वर्ष की कक्षाएँ अगस्त मास के प्रारम्भ में आरम्भ हुईं। मेरिट के आधार पर प्रवेश मिलने के कारण अच्छे स्तर के छात्र आये। पाठ्य-पुस्तकों के चयनादि के बाद अध्यापन प्रारम्भ किया गया। छात्रों ने बड़ी रुचि से अध्ययन प्रारम्भ किया।

अक्टूबर तथा नवम्बर मास में छात्रों के साधारण क्लास-टैस्ट लिए गए। बाद में छात्रों के 'सरप्राइज-टैस्ट' भी लिए गए। यह पाया गया कि छात्र विषय को अच्छी तरह ग्रहण कर रहे हैं।

छात्र रुड़की विश्वविद्यालय, मोतीलाल नेहरू रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, आई० आई० टी०, एयरफोर्स, नेवी तथा अन्य विविध प्रवेश-प्रतियोगी परीक्षा में सम्मिलित हो रहे हैं। उनको श्रेष्ठतम मार्गदर्शन प्रदान किया गया। आशा है हमारे छात्र गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। विभाग के शिक्षक छात्रों की कठिनाइयों के निराकरण में सदा तत्पर रहते हैं।

विभाग के शिक्षक शोध और प्रकाशन कार्यों में लगे हुए है। श्री सुरेश चन्द्र त्यागी (प्रोफेसर) के निम्न लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं—

१. अब चुप नहीं रहा जाता।
२. मेरे समय का गुरुकुल (१६३७)
३. वेदों में गणित।
४. भास्कराचार्य की गणित को देन।
५. Will Power and Character

श्री विजयेन्द्र कुमार (रीडर) के निम्न लेख इस वर्ष प्रकाशित हुए हैं—

१. आधुनिक विज्ञान को वैदिक चुनौती।
२. हमारे गणितज्ञ।
३. उत्तर प्रदेश में परिगणित जातियों तथा पिछड़ी जातियों की स्थिति।

श्री हरवंशलाल गुलाटी (प्राध्यापक) के निम्न लेख प्रकाशित हुए हैं—

१. डेवलपमेन्ट, इक्वल अपोरच्युनिटी एण्ड रिजर्वेशन।
२. हिन्दू गणितज्ञों की महान उपलब्धि "शून्य"।
३. कुछ भारतीय गणितज्ञों का योगदान।

विभाग की ओर से संगणक विज्ञान में डिप्लोमा तथा एम०एस-सी० स्टेटिसटिक्स के प्रस्ताव प्रेषित किये गये हैं। स्वीकृति प्राप्त होने पर ये पाठ्य-क्रम आरम्भ किये जा सकेंगे।

छात्रों में विषय के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए गणित के आधुनिक क्षेत्रों से उनका परिचय कराया गया। इंडियन इस्टीट्यूट ऑव टैक्नोलोजी बम्बई के गणित के प्रोफेसर सी.एम. जोशी के दो व्याख्यान विभाग की ओर से कराये गये जो इस प्रकार है—

(१) चलन कलन के अध्यापन में संगणक का प्रयोग।
(२) मोनोटोनिक आपरेटर्स का सिद्धान्त।

छात्रों के उपयोग की पुस्तकों की सूची पुस्तकालयाध्यक्ष को प्रेषित की गयी।

पाठ्यक्रम को कुछ और आधुनिक बनाने की विभाग की योजना है। यह कार्य निकट-भविष्य में पूरा कर लिया जायेगा।

"रामनुजम मैथमेटिक्स एसोसियेशन" का गठन किया गया। कुलपति महोदय इसके संरक्षक है। अन्य अधिकारी, कुछ शिक्षकों में से तथा कुछ छात्रों में से बनाये जायेंगे। इसकी प्रक्रिया जारी है।

—एस० सी० त्यागी
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष

भौतिक विज्ञान विभाग

भौतिक विज्ञान विभाग का निर्माण यू० जी० सी० से प्राप्त अनुदान से हुआ। विभाग में २ रीडर तथा २ प्रवक्ता कार्य कर रहे हैं। विभाग में दो प्रयोगशाला-बी० एस-सी० प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष, एक अध्यक्ष रूम, एक स्टाफ रूम तथा दो श्याम प्रकोष्ठ हैं। बी० एस-सी० के क्रियात्मक कार्य के लिए कोर्स संबन्धी सभी उपकरण विद्यमान हैं। तीन प्रयोगशाला एम० एस-सी० के लिए तैयार हैं जिनमें बिजली की फिटिंग भी हो चुकी है। एम० एस-सी० के लिए अधिकतर उपकरण तथा पुस्तकें विद्यमान हैं। इस वर्ष यू०जी०सी० से प्राप्त अनुदान से रु० ५४,०००/- के उपकरण तथा रु० २५,०००/- की पुस्तकें खरीदी गई हैं। इसके साथ ही साथ बरामदे में ग्रिल लगवा दी गई है। इस वर्ष एक Colour T.V., U.G.C. के अनुदान से विभाग में खरीदा गया। जिसके कारण U.G C. के प्रोग्राम से छात्र लाभान्वित हुए।

भावी योजना

U.G.C. के पत्र सं० F. 13-3/81 (D-1), 5th May 1984 के अनुसार

(१) भौतिकी विभाग में पोस्ट ग्रेजूएट कक्षाएँ चालू करना।
(२) भौतिक विज्ञान विभाग में रिसर्च प्रोग्राम शुरु करना।
(३) रेडियो, टेलीविजन, फ्रिज, ट्रांजिस्टर आदि की मरम्मत सम्बन्धी डिप्लोमा/सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरु करना।
(४) भौतिकी विभाग में फोटोग्राफी सम्बन्धी डिप्लोमा/सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरु करना।
(५) भौतिक विज्ञान विभाग में एक V.C.R. खरीदना।

स्टाफ— १. प्रो० हरिशचन्द्र ग्रोवर, रीडर एव अध्यक्ष
२. डा० पी० एन० राम, रीडर
३. डा० राजेन्द्रकुमार अग्रवाल, प्रवक्ता
४. डा० परमानन्द प्रकाश पाठक, प्रवक्ता
५. श्री प्रमोदकुमार शर्मा, प्रयोगशाला सहायक
६. श्री ठाकुरसिंह, भृत्य

सत्र १९८४–८५ में भौतिक विज्ञान विभाग में बी० एस–सी० प्रथम खण्ड में ६६ तक बी० एस-सी० द्वितीय खण्ड में २४ विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया। सत्र का प्रारम्भ विधिवत् हुआ।

पाठ्यक्रम— बी० एस-सी० प्रथम खण्ड

(a) Mathematical Physics
(b) Mechanics & Sound
(c) Optics

बी० एस-सी० द्वितीय खण्ड

(a) Thermal Physics
(b) Electricity & Magnetism
(c) Atomic Physics

शिक्षक-छात्र का अनुपात
१ : २२.५

विभागीय उपाध्यायों का लेखन-कार्य

विभाग के सभी अध्यापकों के कई लेख विभिन्न पत्रिकाओं एवं रिसर्च जनरल में प्रकाशित हुए हैं। इस वर्ष राजेन्द्रकुमार अग्रवाल ने रुड़की विश्व-विद्यालय से पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त की। इसके साथ ही साथ विज्ञान महाविद्यालय में Integrated Study of Ganga में P.I. के रूप में हरिशचन्द्र ग्रोवर कार्य कर रहे हैं। इस वर्ष लगभग ४ माह तक हरिशचन्द्र ग्रोवर ने अपने विभाग के साथ-साथ Finance Officer का भी कार्य किया।

परीक्षा परिणाम

पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा।

—हरिशचन्द्र ग्रोवर
रीडर एवं अध्यक्ष

रसायन विभाग

इस वर्ष बी० एस-सी० प्रथम वर्ष में मेरिट के अनुसार तथा द्वितीय वर्ष में प्रथम वर्ष के उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया गया। तत्पश्चात् नये सत्र की पढ़ाई प्रारम्भ हुई। इस उपलब्धियों भरे वर्ष में रसायन विभाग की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

नियुक्तियाँ :—

इस सत्र में डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण की रीडर पद पर तथा डा० रणधीरसिंह की प्रवक्ता पद पर नियुक्ति ,हुई। इस प्रकार विभाग में कुल कर्मचारी निम्न प्रकार से हैं :

१–डा० रामकुमार पालीवाल, रीडर एवं अध्यक्ष (कार्बनिक-रसायन)

२–डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण, रीडर (कार्बनिक-रसायन)

३–श्री कौशलकुमार, प्रवक्ता (अकार्बनिक–रसायन)

४–डा० रजनीशदत्त कौशिक, प्रवक्ता (भौतिक–रसायन)

५–डा० रणधीरसिंह, प्रवक्ता (अकार्बनिक-रसायन)

६–श्री शशिभूषण, लैब सहायक

७–श्री मानसिंह, गैस मैन

८–श्री नरेशकुमार, लैब ब्वाय

इसके अतिरिक्त श्री जयपाल सिंह की नियुक्ति तदर्थ एवं पूर्ण अस्थायी रूप से कुछ समय के लिए, विभागीय कार्याधिक्य के कारण की गयी।

उपरोक्त कर्मचारियों में से डा० रजनीशदत्त कौशिक को दिनांक २४.३.८५ से तथा श्री शशिभूषण को दिनांक ८-२-८५ से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सेवा में क्रमश: प्रवक्ता (भौतिक-रसायन) व लैब सहायक के पद पर स्थायी किया गया। इस प्रकार कुल स्थायी कर्मचारियों का विवरण निम्नलिखित है :

१–डा० रामकुमार पालीवाल, रीडर एवं अध्यक्ष

२–डा० रजनीशदत्त कौशिक, प्रवक्ता

३–श्री शशिभूषण, लैब सहायक
४–श्री मानसिंह, गैस मैन

एप्लाइड कोर्स :–

इस सत्र में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्वीकृति के अनुसार एप्लाइड रसायन में एक सर्टिफिकेट कोर्स "कॉमर्शियल मेथड्स ऑव कैमिकल एनेलिसिस" प्रारम्भ किया जिसमें मेरिट के आधार पर १० छात्रों को प्रवेश दिया गया तथा निम्न एप्लाइड विषयों में विशेषता प्राप्त करने हेतु सुविधाएँ प्रदान की गई।

१–एनेलिसिस ऑव वाटर
२–एनेलिसिस ऑव फूड्स एण्ड एडल्ट्रेन्टस
३–एनेलिसिस ऑव मिनेरल्स, एलॉयज, सीमेन्ट एण्ड मोरटार।

उक्त कोर्स के लिए नये उपकरणादि सामग्री क्रय की गयी तथा छात्रों को उपकरणों का प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया गया।

अगले सत्र में एप्लाइड रसायन में डिप्लोमा कोर्स प्रारम्भ करने के लिए तैयारियाँ की गयी।

शोध–कार्य गतिविधियाँ :—

(क) शोध प्रोजेक्ट्स :—

१—डा० रामकुमार पालीवाल ने गंगा समन्वित परियोजना में इन्वेस्टिगेटर के रूप में कार्य किया तथा विभिन्न स्थानों के जल, मिट्टी, वनस्पति व जन्तुओं के नमूनों के प्रयोगशाला–विश्लेषण में योगदान दिया।

२—डा० रजनीशदत्त कौशिक, प्रवक्ता, भौतिक–रसायन को स्वतन्त्र रूप से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा रु० ७५००) की राशि शोध प्रोजेक्ट **"ट्रान्जीशन मेटल केटेलिसिस ऑव परआयोडेट आक्सीडेशन ऑव कम्पाउन्डस ऑव फिजियोलोजिकल इम्पोर्टेन्स"** पर कार्य करने हेतु स्वीकृत किया गया। डा० कौशिक इस प्रोजेक्ट पर अगस्त, १९८४ से कार्य कर रहे हैं। इस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत डॉ० कौशिक ने विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा स्थानों पर जाकर शोध सम्बन्धी कार्य किया व शोध से सम्बन्धित सामग्री क्रय की। यह प्रोजेक्ट २ वर्ष की अवधि का है तथा इससे अच्छे परिणाम प्राप्त होने की सम्भावना है।

(ख) शोध-पत्रों का प्रकाशन

१—**डा० रामकुमार पालीवाल,** विभागाध्यक्ष के अब तक कुल तीन शोधपत्र प्रकाशित हैं।

२—**डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण** स्वतन्त्र शोधकार्य कर रहे हैं। उनके अब तक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध जर्नलों में कुल १० शोध-पत्र प्रकाशित हैं। अन्य लेख शीघ्र प्रकाशनार्थ भेजने जा रहे हैं।

३—**श्री कौशलकुमार,** प्रवक्ता, पी-एच०डी० के लिए शोध-कार्य कर रहे हैं। उन्होंने इस सत्र में चार शोध-पत्र प्रकाशनार्थ भेजे।

४—**डा० रजनीशदत्त कौशिक,** प्रवक्ता के अभी तक १२ शोधपत्र राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध जर्नलों में प्रकाशित हो चुके हैं। गत वर्ष में निम्नलिखित शोधपत्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

(i) "फिजिको-कैमिकल स्टडीज ऑव द इन्टरएक्शन ऑव बेन्जेमिडो थायो सेमिकार्बेजाइड विद कोबाल्ट (II) एण्ड निकिल (II)" एक्टा सिन्सिया इन्डिका, वोल्यूम **१० सी,** नम्बर २, पृष्ठ ११३–११८, वर्ष १९८४.

(ii) "स्टोइशियोमीट्रिक एण्ड स्ट्रक्चरल स्टडीज ऑव काम्प्लेक्सेस ऑव ३-डी मेटल्स विद २-हाइड्रोक्सी ४-बेन्जेमिडोथायो सेमी कारबेजाइड" जर्नल ऑव इन्डियन कैमिकल सोसाइटी, वोल्यूम **६१,** पृष्ठ ४८४ से ४८६, वर्ष १९८४

(iii) "काइनेटिक्स एण्ड मैकेनिज्म ऑव आक्सीडेशन ऑव एरोमेटिक एमीन्स बाइ पर आयोडेट आयन—ऑक्सीडेशन ऑव एनिलीन एण्ड एन-एन-डाइमिथाइल एनिलीन", आक्सीडेशन कम्यूनिकेशन्स (एम्स-टर्डम), वोल्यूम ७ **(३–४),** पृष्ठ ४०९ से ४२३, वर्ष १९८४.

५—**डा० रणधीरसिंह,** प्रवक्ता के विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में कुल १४ शोधपत्र प्रकाशित हैं जिनमें से निम्नलिखित एक पत्र गत सत्र में प्रकाशित हुआ :—

"सिन्थेसिस एण्ड केरेक्टराइजेशन ऑव सम न्यू मेक्रोसाइक्लिक कॉम्प्लेक्सेस" जर्नल ऑव कोआर्डिनेशन केमिस्ट्री (लन्दन), वर्ष १९८५.

(ग) कान्फ्रेन्स आदि में योगदान :—

१—डा० रामकुमार पालीवाल, डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण तथा डा० रजनीशदत्त

कौशिक ने रुड़की विश्वविद्यालय में २३ से २५ फरवरी, १९८५ तक हुई सिम्पोजियम "रीसेन्ट ट्रेन्ड्स इन इन्सट्रूमेन्टल मेथड्स ऑव एनेलिसिस" में भाग लिया। डा० रणधीरसिंह भी २४ फरवरी को उक्त सिम्पोजियम में गये।

२—श्री कौशलकुमार ने रुड़की विश्वविद्यालय के रसायन विभाग में हुए डा० स्वामीनाथन के विशिष्ट भाषण "कैमिकली मोडिफाइड इलेक्ट्रोड्स" में भाग लिया।

३—डा० रणधीरसिंह ने ३ से ८ जनवरी, १९८५ तक लखनऊ में हुई विज्ञान कांग्रेस में अपना लेख पढ़ा।

एक्सटेंशन कार्य-गतिविधियाँ

(क) विभाग में प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों का आगमन व भाषण

१—डा० एस. एन. टंडन, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, रसायन विभाग, रुड़की वि० वि० का विशेष भाषण "रेडियोएक्टिविटी एण्ड सम ऑव इट्स मार्वल्स" पर भाषण दिया जिसकी अध्यक्षता श्री हूजा जी, कुलपति, गु०का०वि० ने की।

२—डा० एस० के० श्रीवास्तव, रसायन विभाग रुड़की वि० वि० का सारगर्भित भाषण "मनुष्य एवं पर्यावरण" पर हुआ।

३—डा० एस० के० श्रीवास्तव ने विभाग में विजिटिंग फैलो के रूप में कार्य किया।

(ख) श्री ओमप्रकाश सिन्हा बलिदान-दिवस आयोजन :—

२० सितम्बर, १९८४ को रसायन विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश सिन्हा जी की स्मृति में बलिदान दिवस पर यज्ञादि का आयोजन हुआ जिसमें कुलपति जी का सारगर्भित भाषण हुआ व अन्य विद्वानों ने भाग लिया।

(ग) विभागीय शिक्षकों के एक्सटेंशन कार्यसम्बन्धी लेखों का प्रकाशन

लेखक का नाम	लेख का नाम, पत्रिका, पृष्ठ, वर्ष
१—डा० रामकुमार पालीवाल	"ऊर्जा के नये आयाम", आर्यभट्ट पत्रिका, पृष्ठ ४१, वर्ष-सितम्बर, १९८४
२—डा० रामकुमार पालीवाल एवं डा० रजनीशदत्त कौशिक	"नमक से लाभ एव हानि", आर्यभट्ट पत्रिका, पृष्ठ २२ से २४, वर्ष-सितम्बर, १९८४.

३—डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण	"रासायनिक युद्धकर्मक", प्रह्लाद, पृष्ठ ४७, वर्ष जनवरी–मार्च, १९८५.
४—डा० रजनीशदत्त कौशिक एवं डा० रामकुमार पालीवाल	"इम्पेक्ट ऑव साइन्स ऑन सोशल वेल्यूज", मानवीय मूल्य और समाज में अन्तःसम्बन्ध, एक समालोचनात्मक शोध संकलन, पृष्ठ १२९-१३१, वर्ष मार्च, १९८५.
५—डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण	"एविल्स ऑव कास्ट सिस्टम", वाइस चान्सलर्स कांफ्रेन्स, गु० का० वि० वि० १९८५ की प्रोसीडिंग्स
६ डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण	"पोपुलेशन एजूकेशन थ्रू एडल्ड एजूकेशन", अलीगढ़ मुस्लिम वि०वि० की कान्फ्रैन्स, १९८५ की प्रोसीडिंग्स

इसके अतिरिक्त डा० रामकुमार पालीवाल ने ३ तथा डा० रजनीशदत्त ने दो लेख प्रकाशनार्थ भेजे।

(घ) शिक्षकों द्वारा कान्फ्रेन्स/सेमिनार आदि में योगदान

१—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में "मानवीय मूल्य व समाज में अन्तःसम्बन्ध" पर हुई राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स में डा. रामकुमार पालीवाल तथा डा. रजनीश दत्त कौशिक ने अपने लेख प्रस्तुति हेतु दिए।

२—विश्वविद्यालय में एसोसिएशन ऑव इण्डियन यूनिवर्सिटोज द्वारा "शिक्षा में सुधार" पर की गई वर्कशॉप में डा० रामकुमार पालीवाल, श्री कौशलकुमार तथा डा० रजनीशदत्त कौशिक ने भाग लिया व सुझाव दिये।

३—वेद एवं कला महाविद्यालय में हुए विभिन्न विषयों पर विशेष भाषणों में विभागीय सदस्यों की उपस्थिति प्रशसनीय रही।

४—विश्वविद्यालय में हुए कुलपति सम्मेलन में सभी शिक्षकों ने योगदान दिया। डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण ने अपना लेख पढ़ा। डा० रामकुमार पालीवाल व श्री कौशलकुमार जी ने परिवहन व्यवस्था का कार्य सम्भाला।

५—डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण ने अलीगढ़ मुस्लिम वि० वि० में हुए सेमीनार में अपना लेख पढ़ा।

अन्य गतिविधियाँ

१—श्री कौशलकुमार द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए "ध्यान"

की कक्षाएँ चलाई जा रही हैं जिससे उनका शारीरिक, मानसिक व आध्या-त्मिक विकास हो सके।

२—डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण ने एडल्ट एजूकेशन के कोआर्डिनेटर का कार्यभार १५ फरवरी, १९८५ को ग्रहण किया।

३—पुण्य भूमि कांगड़ी ग्राम में लगाये गये राष्ट्रीय सेवा योजना के कैम्प में डा० रामकुमार पालीवाल, श्री कौशलकुमार, डा. रजनीशदत्त कौशिक तथा डा. रणधीरसिंह ने भाग लिया तथा वहाँ निवास कर छात्रों को सम्बोधित किया।

४—सातवी पंचवर्षीय योजना में नये विषयों में कक्षाएँ चलाने हेतु विस्तृत योजना (कुल रु० ६६, २७, ४६२/–) रजिस्ट्रार कार्यालय में भेजी गयी। तथा विभागीय उपकरणों के साथ पुस्तकों की खरीद की गई और शोध जर्नल उपलब्ध कराने के लिए कार्यवाही की गई।

—**डा० रामकुमार पालीवाल**
रीडर एवं अध्यक्ष

डा० रजनीशदत्त कौशिक, प्रवक्ता रसायन विभाग, को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दी गयी शोध परियोजना की

प्रगति रिपोर्ट

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा डा० रजनीशदत्त कौशिक, प्रवक्ता रसायन विभाग, को अगस्त, १९८४ से **"ट्रान्जीशन मेटल केटेलिसिस ऑव परआयोडेट आक्सीडेशन ऑव कम्पाउन्ड्स ऑव फिजियोलोजिकल इम्पोर्टेन्स"** नामक शोध प्रोजेक्ट पर कार्य करने के लिए निम्न प्रकार से धन स्वीकृत किया गया।

१—रसायन	...	रु० ४०००.००
२—उपकरण	...	रु० १०००.००
३—फील्ड वर्क	...	रु० १५००.००
४—कॉन्टिन्जेन्सी	...	रु० १०००.००
	कुल	रु० ७५००.००

प्रोजेक्ट की अवधि :—दो वर्ष

उक्त प्रोजेक्ट ट्रान्जीशन मैटलों द्वारा उत्प्रेरित, फिजियोलोजिकल महत्त्व के कार्बनिक रसायनों का, परआयोडेट द्वारा आक्सीडेशन करा इन क्रियाओं का महत्त्व खोजने के लिए दिया गया है। इन क्रियाओं को मॉडल क्रियाओं के रूप में स्थापित कर, मानव शरीर में चल रही विभिन्न क्रियाओं की क्रियाविधि समझने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। इस कार्य के लिए रासायनिक काइनेटिक स्टडीज के अतिरिक्त परिणामी पदार्थों के विश्लेषण सम्बन्धी सभी आधुनिक तकनीकें प्रयोग की जा रही हैं, यथा-अल्ट्रावायलेट, इन्फ्रा रेड, एन.एम. आर०, मास स्पेक्ट्रम व तत्व विश्लेषण आदि।

उक्त प्रोजेक्ट पर डा० कौशिक १ अगस्त, १९८४ से कार्यरत हैं। इस सन्दर्भ में अभी तक विषय पर उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया गया जिससे

कार्य की मौलिकता स्पष्ट होने के साथ २ अन्य जानकारी भी प्राप्त हुई। यह कार्य विभिन्न शोध स्थानों के पुस्तकालयों में जाकर किया गया।

प्रोजेक्ट हेतु मिली धनराशि से विशिष्ट रसायन साम्रग्री व उपकरण क्रय किये गये। साथ ही अन्य विभागीय उपकरणों को उपलब्ध कराने के लिए डा० रामकुमार पालीवाल, विभागाध्यक्ष का सहयोग सराहनीय रहा है। वे इसके लिए धन्यवाद के पात्र हैं। उक्त प्रोजेक्ट के सन्दर्भ में भारत तथा इसके बाहर प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों से पत्राचार किया गया।

प्रोजेक्ट का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। अब तक किया गया शोध-कार्य प्रकाशनार्थ अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में भेज दिया गया है। उक्त प्रोजेक्ट से उपयोगी परिणामों के प्राप्त होने की आशा है।

—डा० रजनीशदत्त कौशिक
इन्वेस्टिगेटर-इन्चार्ज

जन्तु विज्ञान विभाग

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि जन्तु विज्ञान विभाग निरन्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर है। इस सत्र में विभाग को कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं। विभाग का वार्षिक कार्यक्रम अत्यन्त व्यवस्थित एवम् सुचारु रूप से चलता रहा। छात्रों की संख्या निम्नवत् रही :—

१—बी० एस-सी० (प्रथम वर्ष) — २७
२—बी० एस-सी० (द्वितीय वर्ष)— २३

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की संस्तुति तथा कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा जी के सद्प्रयत्नों के फलस्वरूप जन्तु विज्ञान विभाग में वनस्पति विज्ञान विभाग के सहयोग से माइक्रोबायलोजी विषय में स्नातकोत्तर कक्षाओं का शुभारम्भ हुआ। एम०एस–सी० माइक्रोबायलोजी में इस वर्ष ११ छात्रों को प्रवेश दिया गया।

विभाग में एम०एस–सी० के छात्रों के लिये सेमीनार आयोजित किये गये जिनमें प्रत्येक छात्र ने दिये गये विषयों पर व्याख्यान दिये।

प्रोन्नति-योजना के अन्तर्गत डा० टी०आर० सेठ ने रीडर पद प्राप्त किया। दिसम्बर १९८४ में विभाग में हुयी नई नियुक्ति के आधार पर डा० दिनेश भट्ट ने कार्यभार ग्रहण किया। डा० भट्ट काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पी–एच०डी० प्राप्त किये हुए हैं। इसी श्रृंखला में डा० जोशी, विभागाध्यक्ष का चयन प्रोफेसर पद पर हुआ जिस पर उन्होंने १ अप्रैल १९८५ से कार्यभार ग्रहण किया।

दिसम्बर माह में विभागाध्यक्ष डा० जोशी के नेतृत्व में, जो कि राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रोग्राम आफिसर भी है, राष्ट्रीय सेवा योजना के तृतीय वार्षिक शिविर का संयोजन सम्पन्न हुआ। इस शिविर में विज्ञान महाविद्यालय के ५५ छात्रों ने हिस्सा लिया। विभागीय अध्यापकों ने भी समय-समय पर शिविर-स्थल में आकर सहयोग प्रदान किया।

जनवरी १९८५ में जन्तु विज्ञान विभाग में कुमायूं विश्वविद्यालय में जन्तु विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो० आर०एस० टंडन का एक–दिवसीय व्याख्यान का

कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। डा० टडन ने "मैन, माइक्रोब्स एण्ड इनवायरनमेंट" विषय पर एक अत्यन्त रोचक व सार-गर्भित व्याख्यान दिया।

१७ जनवरी १९८५ को हमारे विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय युवावर्ष के अन्तर्गत "युवा दिवस समारोह" का भव्य आयोजन भी समग्र रूप से जन्तु विज्ञान विभाग के सहयोग एवं विभागाध्यक्ष डा० जोशी के संयोजन में सम्पन्न हुआ। उत्तरक्षेत्रीय कुलपतियों के सम्मेलन में डा० जोशी ने एक निबन्ध प्रस्तुत किया व गोष्ठी में सक्रिय भाग लिया।

विभागीय प्राध्यापकों के कार्य-कलाप :—

विभागाध्यक्ष डा० जोशी ने माननीय कुलपति जी तथा विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा समय-समय पर दिये गये अनेक महत्वपूर्ण कार्यों का उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक वहन किया। जिनमें से कुछ मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं :

१– संयोजक, बी०एस–सी० होम साइन्स प्लान कमेटी।

२– संयोजक, राष्ट्रीय युवा दिवस समारोह।

३– सह-संयोजक, शिक्षा-परीक्षा सुधार समिति।

४– रेपोंटियर, उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन, उद्घाटन सत्र।

५– सदस्य, चयन-समिति प्रौढ़-शिक्षा कार्यक्रम।

६– संयोजक, दीक्षान्त समारोह-आवास व्यवस्था।

सत्र के अन्तर्गत विभागाध्यक्ष डा० जोशी ने निम्नलिखित ४ सेमीनार/कान्फ्रेंसिस में सक्रिय रूप से भाग लिया और अपने शोधपत्र/निबन्ध प्रस्तुत किये :

१– आल इण्डिया सेमीनार इन इक्योलोजी : एक शोध निबन्ध
रा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय महू (म०प्र०)
अक्टूबर ११-१६ (१९८४)

२– आल जोलौजिकल कांग्रेस, : दो शोध निबन्ध
जिवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर
अक्टूबर १९-२२ (१९८४)

३– उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन : एक निबन्ध
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
जनवरी १९-२१ (१९८५)

डा० जोशी के निम्नांकित शोधपत्र प्रकाशित हुये :

१– द हिस्टोमौरफोलॉजी ऑव पिटीथ्यूरी ग्लैन्ड ऑव अ फ्रेश वाटर टिलियोस्ट, एम० आरमेटस, सेकेन्डरली एडाप्टेड टू हिल स्ट्रीम्स, इन : जनरल आफ फ़िजीकल एण्ड नेचूरल साइन्सेज (१९८४) : ४ बी—६-११.

२– इफैक्ट ऑव एसफिक्सीयेसन आन सम हियेटोलौजिक वैल्यूस ऑव एन० रूपीकोला, इन : प्रोसीड, एब्स्ट्रेक्ट फिफ्थ आल इण्डिया सेमीनार इन इक्योलॉजी, (१९८४) : ४९

३– चैन्जेज इन सम हियेटोलौजीकल वैल्यूस ऑव ए हिल स्ट्रीम फिश, गारा गोटायला इन्फेक्टेड वीद ट्रिपेनोसोम । इन : सीक्स्थ ए० आई० सी० जूलौजी, एब्स्ट्रेक्ट, (१९८४) : १४८-१४९.

४– इफैक्ट ऑव सीजनल वैरीयेशन आन सम हियेटोलौजिकल वैल्यूस ऑव हिल स्ट्रीम फिश, एन० रूपीकोला, इन : आइबिड (१९८४) : १४९.

५– पुस्तक समीक्षा : "इन्डियन फीसेस वाइ टी०ए० कुरैसी एण्ड एन०ए० कुरैसी" (१९८४), प्रकाशक व्रिज ब्रदर्स, सुल्तानिया रोड भूपाल, इन : वैदिक पाथ, मार्च १९८५.

६– **अन्य लेख :—**

१– जिम कौर्बेट एक साधु शिकारी, आर्यभट्ट सितम्बर (१९८४) : २५-३० ।

२– गुरुकुल विश्वविद्यालय में माइक्रोबायलोजी, प्रह्लाद, (१९८४), ३ : ६३-६८ ।

३– राष्ट्रीय सेवा योजना : तृतीय शिविर वृतान्त, गुरुकुल पत्रिका (१९८५), ३७ : ३५-३८ ।

४– ए हिमालयन ईको डेवलेपमेंट रिसर्च प्रोजेक्ट । आर्यभट्ट विज्ञान पत्रिका, मार्च (१९८५) : ४९-५० ।

५– गुरुकुल यूनिवर्सिटी प्रजेन्ट प्रोजेक्टस एण्ड फ्यूचर प्लान्स, द हाक : ६ (३७) १९८५ : २५-३० ।

डा० टी०आर० सेठ ने विश्वविद्यालय में हुये विभिन्न आयोजनों में विश्व-विद्यालय द्वारा गठित अनेक समितियों में सक्रिय रूप से अपना योगदान दिया।

डा० दिनेश भट्ट, जिन्होंने दिसम्बर १९८४ में कार्यभार ग्रहण किया, विभागीय पुस्तकालय का कार्यभार देख रहे हैं। साथ ही विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित अनेक समितियों में अपना सक्रिय सहयोग देते रहे हैं। डा० भट्ट के वर्तमान सत्र में निम्न प्रकाशन हैं :

१– सरकैनियूल रिदम इन फूड इनटेक इन स्पाटेड मुनिया एण्ड इट्स फेज रिलेशनशिप वीद रिप्रोडक्शन एण्ड फैटनिंग साइकिल्स : इन : जनरल ऑव कम्पेरेटिव फिजियोलोजी, ए० मार्च (१९८५)

२– इनवोल्वमेंट ऑव पाइनियल ग्लैण्ड इन द रिप्रोडक्टिव साइकिल ऑव स्पौटेड मुनिया : टेन्थ इन्टर-नेशनल सिम्पो० ऑन कम्पेरेटिव इन्डोक्रायनोलोजी।

सातवीं पंचवर्षीय योजना हेतु विभागीय योजनाओं को अन्तिम रूप देकर विश्वविद्यालय कार्यालय को भेजा जा चुका है और आशा की जाती है कि विश्व-विद्यालय, प्रशासन के सहयोग से आने वाले वर्षों में विभाग में अन्य नये विषयों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम तथा नियमित रूप से शोधकार्य संचालित हो सकेंगे।

—डा० बी०डी० जोशी
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

राष्ट्रीय सेवा योजना

सन् १६८४-८५ में राष्ट्रीय सेवा योजना का कार्य अत्यन्त सुचारू रूप से चलता रहा। छात्रों ने नियमित कार्यकाल पूर्ण करने की अवधि में अनेक समाजोपयोगी तथा विश्वविद्यालय से सम्बन्धित कार्यकलापों में हिस्सा लिया। संक्षिप्त में छात्रों ने निम्नलिखित कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लिया एवं योगदान दिया—

(१) छात्रों ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित मार्गों, उद्यानों, अमृत वाटिका तथा विज्ञान महाविद्यालय के परिसर में सफाई, निराई, बागवानी, गुड़ाई एवं सिचाई के कार्य समय-समय पर किये।

(२) छात्रों ने व्यक्तिगत स्तर पर निकट के अस्पतालो में जा-जाकर रोगियों की सामान्य सेवा-सुश्रुषा कार्यों में हाथ बटाया।

(३) छात्रों ने दस-दिवसीय विशेष शिविर के दौरान कागड़ी ग्राम में अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये जिनमें प्रमुख थे–

(क) पगडडियों का निर्माण (ख) खडंजे की सड़क की मरम्मत (ग) किचन के पीछे / निकट सोक पिटों का निर्माण। (घ) गांव मे कुओं की सफाई।
(ङ) कुएं तथा घरों-मकानों के पीछे निकास-नालियों का निर्माण
(च) पुण्यभूमि में लगे फलदार वृक्षों की निराई-गुड़ाई।
(छ) किसानों को उनके खेतों में कृषिकार्य में सहायता।
(ज) प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में सहयोग। (झ) ग्रामवासियों को स्वास्थ्य, परिवार नियोजन सम्बन्धी प्रेरणा। (ञ) ग्रामवासियों से पर्यावरण सुरक्षा पर विचार-विनिमय। (ट) ग्रामवासियों का स्वास्थ्य एवं आर्थिक सर्वेक्षण।
(ठ) ग्रामवासियों से नये-नये रोजगारों हेतु प्रार्थना-पत्र लिखवाना।
(ड) खाद के गड्ढों की सफाई।

(४) इस बार कांगड़ी ग्राम में एक एक-दिवसीय कैम्प के दौरान भी छात्रों ने रूचिपूर्वक कार्य किया।

(५) ३०-१-८५ को छात्रों ने कांगड़ी ग्राम में आकाशवाणी नजीबाबाद के साथ अपनी भेंट-वार्ता दी थी। जो ५-२-८५ को प्रसारित की गई।

(६) छात्रों ने स्पोर्ट्स टूर्नामिन्ट, कान्फ्रेन्सेज, सेमिनार तथा दीक्षान्त समारोह के दौरान विभिन्न कार्यों में विश्वविद्यालय प्रशासन का हाथ बंटाया।

(७) इसी शृंखला में कुलपति जी की विशेष रुचि के अनुकूल रा० से० यो० ने युवा दिवस समारोह का आयोजन १७-१-८५ को किया, जिसमे आकाशवाणी नजीबाबाद का विशेष सहयोग रहा और पूरा प्रोग्राम २१-१-८५ को रात्रि मे आकाशवाणी नजीबाबाद से प्रसारित किया गया।

(८) युवा दिवस समारोह मे हरिद्वार के विभिन्न विद्यालयों के छात्रों ने सक्रिय रूप मे भाग लिया जिसमे आनन्दमयी सेवा सदन इन्टर कालेज, हरिद्वार, कृषि संस्कृत महाविद्यालय, विद्यामन्दिर बी० एच० ई० एल०, हरिद्वार, गुरुकुल कागड़ी विद्यालय विभाग का योगदान विशेष रूप से सराहनीय था।

(९) सत्र के दौरान राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों को समय-समय पर प्रधानाचार्य श्री सुरेशचन्द्र त्यागी, प्रो० विजयशंकर जी, प्रो० विष्णुदत्त राकेश, श्री वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव, डा० भारतभूषण, डा० पुरषोत्तम कौशिक तथा अन्य अनेक प्राध्यापक, सहयोगियों के व्याख्यान एव भाषण, कवितायें आदि ज्ञानवर्धक वार्तायें सुनने को मिलती रही।

(१०) इस वर्ष समन्वयक प्रो० ओ०पी० मिश्र जी की ओर से कार्यक्रम अधिकारी प्रो० जोशी को कुलपति जी के निर्देशानुसार तथा प्राचार्या श्रीमती दम्यन्ती कपूर जी के निमन्त्रण पर कन्या गुरुकुल देहरादून के राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के समापन समारोह में सम्मिलित होने का अवसर भी मिला। छात्राओं के कार्यक्रम अत्यन्त सुव्यवस्थित तथा सुन्दर रहे।

वर्ष भर समय-समय पर हमें अपने संयोजक प्रो० ओ०पी० मिश्र तथा कुलपति श्री हूजा जी से स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन, सहयोग और दिशानिर्देशन प्राप्त होते रहे।

—डा० बी०डी० जोशी
प्रोग्राम आफिसर

हिमालय शोध-योजना

जन्तु विज्ञान विभाग

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि जन्तु विज्ञान विभाग अपने नियमित पठन-पाठन के क्षेत्र से बाहर निकल कर समाज एवम् राष्ट्र की वर्तमान पर्यावरण की समस्या के निदान एवम् शोध कार्यों से अपने को अत्यन्त गौरवपूर्ण ढंग से जोड़ने में समर्थ हुआ है। इसी परिप्रेक्ष्य में माननीय कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा जी की सतत् सद्प्रेरणा के फलस्वरूप जन्तु विज्ञान विभाग को भारत सरकार के पर्यावरण एवम् वन मन्त्रालय ने, हरिद्वार के निकट हिमालय की शिवालिक शृंखलाओं में स्थित कर्णवआश्रम क्षेत्र में पर्यावरण शोध एवम् सुधार हेतु ९.६८ लाख रुपये की एक बड़ी योजना स्वीकृत की है। इस योजना के निदेशक विभागाध्यक्ष डा० बी०डी० जोशी है।

योजना में ११ व्यक्तियों का स्टाफ होगा जो निम्नवत् है :

१- रिसर्च साइन्टिस्ट	—	एक पद
२- इंजीनियर (सिविल/पर्यावरण)	—	एक पद
३- सीनियर रिसर्च फेलो	—	दो पद
४- जूनियर रिसर्च फेलो	—	तीन पद
५- ड्राईवर	—	एक पद
६- लैब ब्याय	—	एक पद
७- फील्ड अटैन्डेन्ट	—	दो पद

इस योजना के निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य हैं :

१- हिमालय की पर्वतीय घाटियों में विभिन्न प्रकार के वनों की भूमि की उपजाऊ शक्ति आदि का तुलनात्मक रासायनिक विश्लेषण।

२- हिमालय शृंखला में बिगड़ते अथवा नष्ट होते पर्यावरण संरक्षण तथा सम्वर्धन हेतु शोधकार्य तथा फील्डवर्क एवं नये संरक्षण उपायों का सृजन।

३- भूमिक्षरण की रोकथाम।

४- बाढ नियन्त्रण सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के उपायों का प्रभावी क्षेत्रों में आयोजन।

५- वनहीन क्षेत्रों में वृक्षारोपण हेतु शिविरों का आयोजन।

६- क्षेत्र में वानिकी एवम् उद्यानों के प्रचार एवम् प्रसार हेतु नर्सरी की स्थापना।

७- यूकेलिप्टस के पौधों के रोपण से स्थानीय क्षेत्र की भूमि की उर्वरकता, रासायनिक बनावट तथा सम्बद्ध पर्यावरण पर अनुकुल अथवा प्रतिकूल प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन।

८- पर्यावरण की वर्तमान परिस्थितियों के आलोक में भविष्य की योजनाओं तथा आवश्यकताओं का एक पूर्वमूल्याकन।

९- पहाड़ी नदियों से उत्पन्न नदी तट के कटाव को रोकने हेतु बन्ध निर्माण।

१०- सामान्य जनता मे पर्यावरण-सरक्षण के सम्बन्ध में जागरूकता पैदा करना।

इस शोध योजना हेतु अनुदान की प्रथम किश्त ३ १९ लाख रुपया प्राप्त हो चुकी है। विभिन्न पदों पर विज्ञापन के माध्यम से नियुक्तियाँ की जा रही हैं। आशा है कि शीघ्र ही शोधकार्य में तीव्र प्रगति होगी।

—**डा० बी० डी० जोशी**
प्रिन्सीपल इन्वेस्टीगेटर

वनस्पति विज्ञान विभाग

स्टाफ :

शिक्षक :

१– डा० विजय शंकर, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

२– डा० पुरुषोत्तम कौशिक, प्रवक्ता

३– डा० अरुण आर्य, प्रवक्ता

शैक्षणिक कर्मचारी

१– रूद्रमणि, लैब एसिस्टैन्ट

२– सूरजदीन, माली

३– विजय सिंह, लैब ब्वाय

विभाग में पठन-पाठन का कार्य सुचारू रूप से चला। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की डैवलपमैन्ट ग्रान्ट से कुछ आधुनिक वैज्ञानिक उपकरण आये। एम. एस-सी. माइक्रोबायलोजी की कक्षाएँ प्रारम्भ हुईं। क्रेडिट सिस्टम के अनुसार पाठ्यक्रम बनाया गया।

शोध एवं प्रगति के प्रेरणास्रोत माननीय कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा की प्रेरणा से *"द जे० सी० बोस बोटैनिकल सोसायटी" का गठन किया* गया। सोसायटी की जनरल बाड़ी की मीटिंग १०-५-८५ को प्रोफेसर सुरेशचन्द्र त्यागी, प्रिंसिपल विज्ञान महाविद्यालय की अध्यक्षता में हुई। विभाग के शिक्षकों ने North Zone Vice-Chancellors' Conference on Reservation for SC & ST में भाग लिया एवं लेख प्रस्तुत किये।

डा० विजय शंकर

प्रकाशन की सूची :

Reports

1. Ganga Environment I—Rishikesh

2. Ganga Environment II—Hardwar
3. Ganga Environment III—Bijnor

Articles/Poems

1. Forests—A Plea for Conservation
2. Plant Biotechnology
3. Kangri Village Development
4. Ganga—Khele Hein Jiski Goad Mein
5. Threatened Medicinal Plants of Ganga Shivalik
6 Economic Plants of Vyasi
7. Environmental Pollution—Melody & Remedy.
8. Water—Valuable factor.

Positions held

1 Professor & Head, Botany Department
2 Director, Microbiology
3. Director, Kangri Village Development Project
4. Principal Investigator, Integrated Study of the Ganga (Government of India, Department of Environment).
6. Convener, Board of Studies in Botany
6 Convener, Joint Meeting of Board of Studies of Botany & Zoology (for Microbiology Syllabus etc).
7. Editor, Arya Bhatt Vigyan Patrika.

Conferences

Participated in North Zone Vice-Chancellors' Conference on Reservation for S.C. & S.T. & contributed a Paper.

Tree Plantation

Organised Tree Plantation on Ganges Banks for checking soil erosion.

Research

Guided the research team of Ganga Project on multiple aspects of Ganga Pollution and prepared reports on the state of environment in the Ganga Zone.

डा० पुरुषोत्तम कौशिक ने शिक्षा - शिक्षण कार्य के अतिरिक्त निम्न कार्य किये—विश्वविद्यालय के उद्यानों की देख-रेख की व सुधार किया। दिसम्बर १९८४ में कुछ दिन विद्यार्थियों के साथ एन.एस.एस के कैम्प में पुण्य भूमि में कार्य करने में लगाये। नवम्बर १९८४ में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के माइक्रोबायलोजी विभागाध्यक्ष के निमन्त्रण पर दो व्याख्यान दिये। एक व्याख्यान हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के हार्टिकलचर विभाग के अध्यक्ष के निमन्त्रण पर दिया। उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन में साइलैन्ट वैली के ट्राइबल्ज की समस्याओं पर शोधपत्र पढ़ा। नेशनल सेमीनार आन करेन्ट ट्रैन्ड्ज इन सोयल बायलोजी, जो २८ से २९ फरवरी १९८५ तक हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के माइक्रोबायलोजी विभाग में हुआ, में "माइक्रो राहिजा एण्ड न्यूट्रीनट्स अपटेक" विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया। पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में हुये "नेशनल सैमिनार आन बायलोजी, कलचर एण्ड कन्जरवेशन ऑव आर्किड्ज" की राष्ट्रीय सयोजन कमेटी के सदस्य के रूप में नामांकित किया गया। इसी सैमिनार मे दो शोधपत्र भी पढ़े। विश्वविद्यालय के अनेक कार्यों में श्रमदान किया।

—डा० विजय शंकर
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष

पुस्तकालय विभाग

परिचय

गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरन्तर ८० वर्षों से पोषित यह पुस्तकालय आज वेद, वेदांग, आर्य साहित्य, तुलनात्मक धर्म संग्रह एवं मानवीय-ज्ञान की विविध शाखाओं पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रन्थों से अलंकृत है। सहस्रों दुर्लभ ग्रन्थों एवं अनेक अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय अनेक भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य भण्डार को अपने गर्भ में समाहित किए हुए, आर्य संस्कृति की धरोहर के रूप में विद्याव्यसनियों का केन्द्र बना हुआ है। गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय का स्थान भारत के सर्वाधिक पाँच पुस्तकालयों में से एक है।

वर्ष १९८४-८५ में लगभग २३ हजार पाठकों ने इस पुस्तकालय की प्रचुर सामग्री का उपयोग किया है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह

पुस्तकालय का विराट संग्रह अपनी विविध विशिष्टताओं के लिये निम्न प्रकार से विभाजित किया हुआ है।

१. संदर्भ ग्रन्थ, २ पत्रिका संग्रह, ३ आर्य साहित्य संग्रह, ४. आयुर्वेद संग्रह, ५. विभिन्न विषयों की हिन्दी पुस्तक संग्रह, ६. विज्ञान संग्रह, ७. अंग्रेजी साहित्य संग्रह, ८. पं० इन्द्रजी संग्रह, ९. दुर्लभ पुस्तक संग्रह, १०. पांडुलिपि संग्रह, ११ गुरुकुल प्रकाशन संग्रह, १२. प्रतियोगितात्मक पुस्तक संग्रह, १३. शोध प्रबन्ध सग्रह, १४. रूसी साहित्य संग्रह, १५. आरक्षित पुस्तक संग्रह, १६. उर्दू संग्रह, १७. मराठी सग्रह, १८. गुजराती साहित्य संग्रह १९. गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक प्रकाशन संग्रह, २०. मानचित्र संग्रह।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार

विश्वविद्यालय में पढ़ रहे निर्धन छात्रों की सहायतार्थ विश्वविद्यालय पुस्तकालय के द्वारा शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना का सर्वथा नवीन कार्यक्रम वर्ष १९८३-८४ से प्रारम्भ किया गया है। जिसमें छात्रों को पुस्तकालय में

दो घंटे प्रतिदिन कार्य करने के बदले में पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है। जिससे ये अपनी पढ़ाई का व्यय उठाने में स्वावलम्बी बन सकें। इस वर्ष इस योजना के अन्तर्गत ४ छात्रों को लाभ प्रदान किया गया।

ग्राम्य पुस्तकालय सेवा

विश्वविद्यालय पुस्तकालय के द्वारा ग्रामीणजीवन की बौद्धिक माँगो को पूरा करने हेतु मान्यवर कुलपति जी की प्रेरणा से ग्राम्य पुस्तकालय की स्थापना का कार्य प्रारम्भ किया जा रहा है। इस शृंखला में प्रथम ग्राम्य पुस्तकालय की स्थापना गत् वर्ष कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल के पुराने ख्यातिप्राप्त अध्यापक श्रद्धेय गोवर्धनजी शास्त्री की स्मृति में गोवर्धन शास्त्री स्मृति पुस्तकालय की स्थापना की गई। इस ग्राम्य पुस्तकालय में १००० से अधिक पुस्तकें संग्रहीत है। लगभग २५-३० पाठक नित्य इस पुस्तकालय का लाभ उठाते हैं। पुस्तकालय में दैनिक समाचारपत्र एवं कुछ पत्रिकाएँ भी नियमित आती है। इस पुस्तकालय का कार्य विश्वविद्यालय पुस्तकालय के कर्मचारी मदनपाल सिह ही अतिरिक्त समय में देखते हैं। मान्यवर कुलपति जी की प्रेरणा से ग्राम शामपुर में भी ग्राम्य पुस्तकालय हेतु लगभग २५० पुस्तकें पुस्तकालय द्वारा प्रदत की गई है। इसके अतिरिक्त प्रौढ़ शिक्षा प्रसार हेतु भी पुस्तकालय की पुस्तकें प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर भिजवाने की व्यवस्था की जा रही है।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा

विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने में प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने हाल में प्रति-योगितात्मक पुस्तक संग्रह की स्थापना की है, जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रों को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षाओं से संबद्ध १२ पत्रिकाएँ नियमित आ रही हैं। इस सग्रह के माध्यम से गुरुकुल के बहुत से छात्र प्रतियोगितात्मक सेवाओं में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। वर्ष १९८३-८४ में ३०० पुस्तकें इस संग्रह में पृथक से जोड़ी गईं।

पुस्तकालय कर्मचारी–

इस विराट पुस्तकालय की सुव्यवस्था एवं उचित प्रबन्ध हेतु इस पुस्तकालय में १९ कर्मचारी कार्यरत हैं।

पुस्तकालय के कर्मचारीवर्ग का विवरण निम्न प्रकार है :

नाम	पद	योग्यता
१. जगदीशप्रसाद विद्यालंकार	पुस्तकालयाध्यक्ष	एम.ए.,एम. लाइब्रेरी साइंस, बी.एड.

नाम	पद	योग्यता
२. गुलजारसिंह चौहान	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	एम.ए.,बी. लाइब्रेरी साइस
३. ऋषिकुमार कालरा	प्रोफेशनल सहा.	बी.ए.,बी. लाइब्रेरी साइंस
४. उपेन्द्रकुमार झा	पुस्तकालय सहा.	एम.ए., पुस्तकालय वि. प्रमाण-पत्र, योग प्रमाणपत्र
५. ललितकिशोर	,,	बी.ए. पु. वि. प्रमाणपत्र
६. मिथलेशकुमार	,,	,, ,, ,,
७. हरभजन	काउन्टर सहायक	मिडिल
८. प्रेमचन्द्र जुयाल	पुस्तकालय लिपिक	बी.ए , आई.जी.डी., ई.जी डी. बोम्बे
९. जगपालसिंह	,, ,,	मैट्रिक
१०. रामस्वरूप	,, ,,	इण्टर, प्रमाणपत्र पुस्तकालय विज्ञान।
११. कौस्तुभचन्द्र पाण्डेय	पुस्तकालय लेखक	इण्टर, हिन्दी आशुलिपि, पु० वि० प्रमाणपत्र
१२. मदनपालसिंह	,,	इण्टर, आई. टी. आई. पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र
१३. जयप्रकाश	बुकबाइन्डर	मिडिल
१४. गोविन्दसिंह	बुक लिफ्टर	,,
१५. घनश्यामसिंह	सेवक	,,
१६. शशिकान्त	,,	इण्टर, बाइन्डर प्रमाणपत्र
१७. बुन्दू	,,	
१८. रघुराज	,,	बी० ए०
१९. शिवकुमार	बुकलिफ्टर	मिडिल

प्रकाशन कार्य—

इस वर्ष पुस्तकालयाध्यक्ष, जगदीशप्रसाद विद्यालंकार के द्वारा प्रकाशन के क्षेत्र में निम्न कार्य किए गए :

प्रकाशित पुस्तकें —

१— गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय- "शोध एवं प्रकाशन सन्दर्भ"-उक्त पुस्तक में गुरुकुल के द्वारा स्थापना से लेकर अब तक किये गये सभी शोध एवं प्रकाशन कार्यों का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत कृति के द्वारा एक ऐसा प्रयत्न किया गया है जिससे गुरुकुल के प्रकाशन के क्षेत्र में योगदान को सर्व सामान्य को दिग्दर्शित किया जा सके।

२– "शिक्षा, मूल्य एवं समाज"—यूनाईटेड बुक हाउस, चांदनी चौक, देहली।

लेखक– बलभद्रकुमार हूजा, सम्पादक—डा० विष्णुदत्त राकेश एवं जगदीश विद्यालंकार।

प्रकाशित निबन्ध–१९८४-८५

१– अथर्ववेद में पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी तत्व, आर्य भट्ट पत्रिका, १९८४।
२– प्रौढ़ शिक्षा पर वैदिक दृष्टिकोण, आर्य मित्र, मार्च, १९८४।
३– समुचित संस्कारों से सच्चा मानव बनायें, आर्य संदेश–१४ फरवरी, १९८४।
४– बदलते सन्दर्भ में पुस्तकालय की भूमिका, गुरुकुल पत्रिका, नवम्बर–दिसम्बर, १९८४।
५– गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय में सन्दर्भ सेवा, आर्य संदेश, मार्च, १९८५।

पुस्तक समीक्षा—

"वेदों में योग विद्या", योगेन्द्र पुरुषार्थी, गुरुकुल पत्रिका, नवम्बर-दिसम्बर, १९८४।

फोटोस्टेट सेवा—

विश्वविद्यालय के शोध छात्रों एवं प्राध्यापकों की सुविधा हेतु पुस्तकालय में फोटोस्टेट की सुविधा वर्ष ८३-८४ से उपलब्ध हो गई है। फोटोस्टेट की इस सुविधा से पुस्तकालय की अनेक दुर्लभ पांडुलिपियों की भी सुरक्षा हो सकेगी।

पुस्तकालय कार्यवृत्त एक नजर में—

		१९८३–८४	१९८४–८५
१. पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग	–	२२,०००	२३,०००
२. भेंटस्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	–	१५८	७८
३. नवीन पुस्तकें क्रय की गई	–	१९२४	७२००
४. वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	–	३४००	३५००
५. पुस्तकों की कैटेलागिंग की गई	–	३०००	३२००
६. पत्रिकाओं की संख्या	–	३५०	३५५
७. पत्रिकाओं की नियमित आपूर्ति हेतु भेजे स्मरणपत्रों की संख्या	–	१९६	१२०
८. सजिल्द पत्रिकाओं की संख्या	–	३०००	६०००
९ पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की संख्या	–	१०००	३०००
१०. पुस्तकों की जिल्दबन्दी	–	३०००	३५००
११. पुस्तकों का कुल संग्रह	–	८५,०२९	९२,३०७

प्रगति के आयाम

१. प्रतियोगितात्मक पुस्तकों के संग्रह में ३०० और अधिक पुस्तकें जोड़ी गईं।

२. विभागीय पुस्तकालय की स्थापनाओं में प्रगति की गई। जीव विज्ञान विभाग एवं वनस्पति विज्ञान विभाग के विभागीय पुस्तकालय के विस्तार हेतु बहुत-सी पुस्तकें पुस्तकालय से उन्हें स्थानान्तरित की गईं।

३. ३००० पुरानी पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की गई। उर्दू की लगभग ५०० दुर्लभ पुस्तकों की जिल्दबन्दी का कार्य किया गया।

४. २७ अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाएँ आने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ तथा तीस अन्य पत्रिकाओं के आदेश दिए गए।

५. विद्यालय विभाग पुस्तकालय को सुदृढ किये जाने हेतु कई कदम उठाए गए जिसके अन्तर्गत दो अल्मारियाँ उनको दी गईं। २०० पुस्तकें पुस्तकालय द्वारा दी गई तथा विद्यालय विभाग की ४०० पुस्तकों की जिल्दबन्दी कराई गई।

६. यू.जी. सी. द्वारा उपलब्ध धनराशि का तेज गति से समुचित उपयोग हो रहा है। ५०,००० रुपये पत्रिकाओं के पिछले वर्षों के अंक मगवाने में व्यय किए गये। इस अवधि में विभिन्न विषयों की ७२०० नई पुस्तके क्रय की गई।

७. दिनांक १३-१०-८४ को यू.जी.सी. अध्यक्षा श्रीमती माधुरी शाह ने पुस्तकालय का अवलोकन किया तथा उन्होंने पुस्तकालय में गुरुकुल स्नातकों के वैदिक साहित्यसृजन का संग्रह भी देखा। उन्होंने पुस्तकालय की बहुमूल्य पाण्डुलिपियों के माइक्रोफिल्मिंग किये जाने का भी सुझाव दिया।

८. योजना भवन, नई दिल्ली में दिनांक १५-१०-८४ से २०-१०-८४ तक भारत सरकार पुस्तकालयाध्यक्ष संघ द्वारा पुस्तकालय विज्ञान के एब्सट्रेक्टिंग एवं इन्डेक्सिग तकनीक का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें पुस्तकालयाध्यक्ष जगदीश विद्यालंकार ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का निर्देशन राष्ट्रीय विज्ञान प्रलेखन संस्थान, नई दिल्ली के वैज्ञानिक डा० बी० गुहा ने किया।

९. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पुस्तकालय के लिए यह गौरव की बात है कि भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध पुस्तकालय वैज्ञानिक श्री डी० आर० कालिया जी का निर्देशन इस पुस्तकालय को मार्च '८५ से मई '८५ तक की अवधि में प्राप्त हुआ। श्री कालिया जी राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता के निर्देशक एवं केन्द्रीय सचिवालय के भूतपूर्व निदेशक रह चुके हैं। गुरुकुल पुस्तकालय में

कालिया जी ने ३ माह विजिटिंग फैलो के रूप में अपना मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्होंने उक्त अवधि में पुस्तकालय में अनेक प्रकार की गतिविधियों का जायजा लिया। संदर्भ विभाग को उन्होंने नया रूप प्रदान किया। सभी प्रकार के कोशों, विश्वकोशों, वार्षिक रिर्पोटों, निर्देशिका, गजिटियर्स आदि को अब एक ही स्थान पर एकत्रित किया गया है। पुस्तकालय में श्री कालियाजी के प्रशासनिक व्यवस्था के सम्बन्ध में व्याख्यान संगोष्ठी का आयोजन दिनांक ७ मई से ६ मई तक किया गया। ये व्याख्यान प्राध्यापकों में काफी लोकप्रिय रहे। भारत सरकार पुस्तकालयाध्यक्ष सघ की ओर से श्री डी. आर. कालिया जी को उनकी जीवनपर्यन्त पुस्तकालय की सेवाओं के संदर्भ में एक मानपत्र भी भेंट किया गया। उन्होंने विश्वविद्यालय पुस्तकालय की सुव्यवस्थित सेवाओं के लिये पुस्तकालयाध्यक्ष जगदीशप्रसाद विद्यालंकार को महत्वपूर्ण परामर्श प्रदान किया।

१०. पुस्तकालय में दिनांक ७-६-८४ से १०-६-८४ तक विशाल पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन मान्यवर विजिटर महोदय श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार जी ने किया। प्रदर्शनी को दर्शन परिषद् के दशम अधिवेशन में आये प्रतिनिधियों ने भी रुचिपूर्वक देखा। इस पुस्तक प्रदर्शनी में गुरुकुल के विभिन्न विभागों के प्राध्यापकमण्डल द्वारा एक लाख रुपये मूल्य की पुस्तकों का चयन किया गया।

११. गुरुकुल पुस्तकालय में आयोजित उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन के अवसर पर भी पुस्तकालय में देश के सुप्रसिद्ध पुस्तकविक्रेताओं द्वारा विशाल पुस्तक-प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन महालेखा नियत्रक श्री टी. एन. चतुर्वेदी ने किया। इस प्रदर्शनी में १९८४-८५ की नवीनतम पुस्तकों का चयन सम्बद्ध विभागाध्यक्षों, कुलपतियों एव विशिष्ट विद्वानों द्वारा किया गया। विश्वविद्यालय पुस्तक भण्डार द्वारा लगभग १,५०,००० रुपये की विभिन्न विषयों की पुस्तकें व्यापारिक छूट के आधार पर क्रय की गई।

१२. जनवरी १९८५ में ही विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों हेतु १६ पृथक अध्ययन कक्षों का निर्माण किया गया जिससे वह पुस्तकालय में बैठ कर अध्ययन एव शोध कार्य कर सकें।

१३. विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा यू. जी. सी. द्वारा स्वीकृत अनुदान के अन्तर्गत ५०,००० रुपये की स्टील रैक्स मंगाई गई। मानविकी एवं समाज विज्ञान की सभी अंग्रेजी पुस्तकों को अब खुले परिवेश में रखने की व्यवस्था कर दी गई है।

विश्वविद्यालय में प्रथम बार आयोजित अखिल भारतीय पुस्तकालयाध्यक्ष सम्मेलन के उद्घाटन कुलपति जी का स्वागत करती हुई सम्मेलन की प्रतिनिधि सदस्या। साथ में श्री कालिया एवं के अध्यक्ष तथा सचिव श्री ओ०एस० सचदेव एवं श्री एम०के० जैन।

दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला में "दयानन्द और हिन्दी पत्रकारिता" पर भाषण के लिए पधारे साहित्यकार पद्मश्री पण्डित क्षेमचन्द्र 'सुमन', 'प्रह्लाद' के आचार्य शुक्ल अङ्क का विमोचन करते हुए। साथ में श्री रामप्रसाद वेदालंकार, उपकुलपति, श्री बलभद्रकुमार हूजा, कुलपति तथा डा० श्यामसुन्दर दास शास्त्री, मन्त्री भारत साधु समाज (सभापति)।

१४. भारत सरकार पुस्तकालयाध्यक्ष संघ की ओर से राष्ट्रीय पुस्तकालय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक २३ मई से २५ मई १९८५ तक किया गया। इस सम्मेलन में विभिन्न शोध पुस्तकालयों के लगभग ६० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उक्त संगोष्ठी का उद्घाटन श्री टी. आर. चन्द्रशेखरन, महा-प्रबन्धक, भेल, रानीपुर द्वारा किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री सी. पी. गुप्ता, कुलपति रुड़की विश्वविद्यालय थे।

१५. विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर पुस्तकालय में दिनांक १३ अप्रैल '८५ से १५ अप्रैल '८५ तक की अवधि हेतु बाहर से आये आर्य भक्तों के दर्शनार्थ आर्य साहित्य की दुर्लभ पुस्तकों को प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। उक्त प्रदर्शनी का उद्घाटन कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी द्वारा पुस्तकालय में दिनाक १३ अप्रैल '८५ को सीनेट की मीटिंग के अवसर पर किया गया। उक्त प्रदर्शनी में १८वीं एवं १९वी शताब्दी के दुर्लभ आर्य साहित्य के ग्रन्थों का प्रदर्शन किया गया।

१६. छठी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय पुस्तकालय को यू.जी.सी. से १०.२५ लाख रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ था। तथा उक्त अनुदान से इस वर्ष पुस्तकालय हेतु विभिन्न विषयों की ७२०० पुस्तकें विश्वविद्यालय पुस्तक भण्डार द्वारा व्यापारिक छूट के आधार पर क्रय की गई। उक्त व्यापारिक छूट पर क्रय किये जाने से पुस्तकालय को एक लाख रुपये का लाभ प्राप्त हुआ जिसका उपयोग और अधिक नई पुस्तकें क्रय किये जाने में किया गया।

१७ गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित साहित्य को विभिन्न विश्वविद्यालयों में सीनेट, सिंडिकेट, शिक्षापटल तथा अन्य सम्बद्ध सदस्यों को वितरण करने की जिम्मेदारी का निर्वाह व्यवसाय प्रबन्धक कार्यालय द्वारा किया जाता है। व्यवसाय प्रबन्धक का कार्य पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा ही देखे जाने के कारण पुस्तकालय द्वारा इस वर्ष देश के सभी विश्वविद्यालयों में गुरुकुल प्रकाशनों की ५,००० प्रतियाँ भेजी गई। देश के सभी विश्वविद्यालयों में गुरुकुल के प्रकाशन अब नियमित रूप से भेजे जा रहे हैं। इस कार्य में पुस्तकालय कर्मचारी मदनपाल सिंह एवं जयप्रकाश का विशेष योगदान है।

जगदीश विद्यालंकार
पुस्तकालयाध्यक्ष

क्रीड़ा रिपोर्ट

क्रीड़ा समिति :—

१—श्री बलभद्रकुमार हूजा, कुलपति

२—श्री रामप्रसाद वेदालंकार, आचार्य एवं उप-कुलपति

३—श्री वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव

४—श्री डी० एन० शुक्ला, वित्त अधिकारी

५—डा० श्यामनारायण सिंह, उप-कुलसचिव

६—डा० राधेलाल वार्ष्णेय, जन-सम्पर्क अधिकारी एवं सचिव, कुलपति

७—डा० काश्मीरसिंह भिण्डर

८—श्री बृजेन्द्र शर्मा

९—श्री कौशलकुमार

१०—श्री करतारसिंह, हाकी कोच

११—श्री कृष्णकान्त खट्टर, निदेशक शारीरिक शिक्षा

१२—प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र, अध्यक्ष क्रीड़ा विभाग तथा संयोजक क्रीड़ा समिति।

सत्र १९८३–८४ के प्रारम्भ होते ही निदेशक शारीरिक शिक्षा तथा अन्य प्रोफेसरों के सहयोग से विभिन्न खेलों की प्रेक्टिस आरम्भ हुई। इस वर्ष भारतीय विश्वविद्यालय संगठन, नई दिल्ली ने उत्तरक्षेत्रीय अन्तर्विश्वविद्यालय बैडमिंटन पुरुष एवं महिला टूर्नामिन्ट का आयोजन करने का भार हमारे विश्वविद्यालय को दिया। इस टूर्नामिन्ट में २९ पुरुष वर्ग की टीमों ने तथा २३ महिला वर्ग की टीमों ने प्रविष्टि भेजी किन्तु पांच टीमें किसी कारणवश न आ सकीं। टूर्नामिन्ट का आयोजन खेल-भवन, बी. एच. ई. एल. में किया गया। इस टूर्नामिन्ट का उद्घाटन ३० दिसम्बर '८४ को मान्यवर कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा के कर-कमलों द्वारा हुआ। उन्होंने विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये प्रतिनिधियों तथा खिलाड़ियों से परिचय किया तथा आशीर्वाद दिया कि खिलाड़ी, खेल को खेल की भावना से ही खेलें और अन्तर्विश्वविद्यालय के टूर्नामिन्ट के नियमों का पालन करें।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के इतिहास में प्रथम बार अन्तर्विश्वविद्यालय टूर्नामेन्ट का आयोजन किया गया। इस टूर्नामेन्ट में निम्नलिखित रैफरी नियुक्त किये गये, जिन्होंने टूर्नामेन्ट को बड़ी सफलता से संचालित किया। यह बड़े गर्व की बात है कि किसी विश्वविद्यालय की टीम ने कोई प्रोटेस्ट नही किया।

१—श्री सुरजीतसिंह, बैडमिन्टन कोच, इन्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली।

२—श्री महेन्द्र कृष्ण, बैडमिन्टन कोच, डी. डी. ए.।

३—श्री कंवर मंगलसिंह, निदेशक शारीरिक शिक्षा, हंसराज कालेज, दिल्ली।

४—श्री ओमप्रकाश मल्होत्रा, निदेशक शारीरिक शिक्षा, पी.जी. डी.ए.वी. कालेज, दिल्ली।

इस टूर्नामेन्ट में श्रीमती दमयन्ती ताम्बे, क्रीड़ाधिकारी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली को पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया किन्तु उन दिनों वह भारतीय महिला बैडमिन्टन टीम को प्रशिक्षण दे रही थीं अतः वह टूर्नामेन्ट में नही पहुँच सकीं।

टूर्नामेन्ट का समापन एव पुरस्कार वितरण ८ जनवरी '८५ को श्रीमती सुशीला धर्मपत्नी ग्रुप जनरल मैनेजर, बी. एच. ई. एल, के कर-कमलों द्वारा हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता श्री अन्जनि कुमार, सहसचिव अन्तर्विश्वविद्यालय संगठन ने की। अन्त में मान्यवर कुलपति जी ने खिलाडियों को आशीर्वाद दिया। इस टूर्नामेन्ट में गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर व देहली विश्वविद्यालय (पुरुष एवं महिला वर्ग) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने महिला एवं पुरुष वर्ग में प्राप्त किया। तृतीय स्थान देहली विश्वविद्यालय तथा राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने पुरुष एव महिला वर्ग में प्राप्त किया।

हम बी. एच. ई. एल. के अधिकारियों के बहुत आभारी है जिन्होने इस टूर्नामेन्ट के आयोजन में हमारी बहुत मदद की। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की बैडमिन्टन टीम का भी बड़ा अच्छा प्रदर्शन रहा। इन्होंने नरेन्द्रदेव कृषि विश्वविद्यालय, फैजाबाद को हराया।

इस वर्ष विश्वविद्यालय की क्रिकेट-टीम ने उत्तरक्षेत्रीय अन्तर्विश्वविद्यालय क्रिकेट टूर्नामेन्ट में जयपुर में भाग लिया और डा० श्रवणकुमार शर्मा टीम के मैनेजर के रूप में टीम के साथ गये। टीम का वहाँ पर बहुत ही सराहनीय प्रदर्शन रहा।

इस वर्ष श्री राधेमोहन ने भारोत्तोलन में अखिल भारतीय भारोत्तोलन चैम्पियनशिप में भाग लिया और अपने वर्ग में पाचवे स्थान को प्राप्त किया। श्री ईश्वर भारद्वाज, योग प्रशिक्षक इनके साथ मैनेजर के रूप में गये।

नवम्बर मास में विश्वविद्यालय की क्रिकेट-टीम ने गुरुकुल विद्यालय से २५ ओवर का मैच खेला और उसमें विजय प्राप्त की।

इस वर्ष विद्यालय की एथलेटिक टीम ने अन्तर-विश्वविद्यालय टूर्नामेन्ट में भाग लिया और सराहनीय प्रदर्शन किया। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून की महिला टीम ने भी एथेलेटिक तथा बैडमिन्टन अन्तर्विश्वविद्यालय टूर्नामेन्ट में भाग लिया और सराहनीय प्रदर्शन किया।

—कृष्णकान्त खट्टर
निदेशक

राष्ट्रीय छात्र सेना (एन०सी०सी०)

एन०सी०सी० के छात्रों ने इस वर्ष उत्साहपूर्वक स्वतन्त्रता दिवस समारोह में भाग लिया। वार्षिक प्रशिक्षण शिविर रायपुर, देहरादून में लगाया गया। इसमें छात्रों ने अनुशासित रहते हुए प्रत्येक कार्य में रूचिपूर्वक भाग लिया।

विश्वविद्यालय के छात्र श्री ऋषिपाल ने एडवान्स लीडरशिप कैम्प कालर्स। में उत्साहपूर्वक भाग लिया और पुरस्कार भी प्राप्त किया।

गणतन्त्र दिवस समारोह में एन० सी० सी० छात्रों ने विशेष रूप से भाग लिया, जिसमें मुख्य अतिथि कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा थे। छात्रों ने गार्ड ऑव आनर पेश किया।

छात्रों ने बी० तथा सी० सर्टिफिकेट परीक्षा में भाग लिया।

छात्रों ने समर्पण भाव से सामाजिक कार्यों में भाग लिया तथा आदर्श उपस्थित करते हुए उत्तम कार्य किए।

—मेजर वीरेन्द्र अरोड़ा
अध्यक्ष

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

प्रगति रिपोर्ट

१—६ दिसम्बर को आचार्य रामदेव दिवस मनाया गया जिसमें सभी अध्यापिकाओं और छात्राओं ने भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

२—२३ दिसम्बर श्री स्वामी श्रद्धानन्द दिवस मनाया गया जिसमें समस्त छात्राओं एवं कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया तथा श्रद्धांजलि अर्पित की।

३—१२ जनवरी से २ फरवरी '८५ तक – अर्धवार्षिक परीक्षाएँ सम्पन्न हुई।

क्रीडा प्रतियोगिताएँ—

२७ दिसम्बर से २ जनवरी तक ग्वालियर में इण्टरयुनिवर्सिटी की प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुईं। जिसमें कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की तीन छात्राओं ने भाग लिया :

कुमारी जसबीर कौर—४०० मीटर दौड़ में सेमिफाइनल तक पहुँची।

कुमारी गुरदीप कौर—१०० मीटर बाधा दौड़ में अपनी हीट को क्वालिफाई किया।

कुमारी रेणू तोमर —ऊंची कूद प्रतियोगिता में आठवें स्थान पर रही।

३१ दिसम्बर से ५ जनवरी तक "बैडमिण्टन प्रतियोगिता" (उत्तरक्षेत्रीय) गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुई। इसमें कन्या गुरुकुल की चार छात्राओं ने भाग लिया :

१–कुमारी प्रेमा, २–कुमारी प्रतिमा, ३–कुमारी सेवा, ४–कुमारी सविता

ऊपर लिखित छात्राओं ने बैडमिण्टन नार्थ जॉन इण्टरयुनिवर्सिटी प्रतियोगिता में भाग लिया।

दिसम्बर '८४ में जिला तथा मण्डलीय खेलकूद प्रतियोगिता (एथैलिटिक्स) सम्पन्न हुई, जिसका परिणाम इस प्रकार है :

कु० रेणू	: सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित (ऊंची कूद, लम्बी कूद तथा बाधा दौड़)
कु० सुमन	: सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित (४०० मी०, ८०० मी० तथा १५०० मी० दौड़)
कु० द्रौपदी	: ऊंची कूद में प्रथम, बाधा दौड में द्वितीय।
कु० गुरदीप कौर	: बाधा दौड़ में प्रथम रही।
कु० ऋचा	: २०० मी० दौड़ मे द्वितीय रही।
कु० सीमा	: ४०० मी० दौड़ में द्वितीय रही।

जिला स्तर की तथा मण्डलीय स्तर की वरिष्ठ वर्ग की चैम्पियनशिप कन्या गुरुकुल विद्यालय की छात्राओं ने प्राप्त की।

प्रदेशीय स्तर पर खेलकूद प्रतियोगिताएँ जो कि रुड़की में सम्पन्न हुई, भाग लेने वाली छात्राएँ निम्न हैं :

कुमारी रेणू, कुमारी सुमन, कुमारी द्रौपदी
कुमारी गुरदीप, कुमारी ऋचा, कुमारी सीमा

कुमारी रेणु उत्तर प्रदेश की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित।
(ऊंची कूद, लम्बी कूद, बाधा दौड़ में प्रथम)

कुमारी द्रौपदी ऊंची कूद में द्वितीय रही।

कुमारी सुमन १५०० मीटर तथा ८०० मी० में तृतीय रही।

राष्ट्रीय स्तर पर कुमारी रेणू ने उतर प्रदेश की टीम में भाग लिया। ये प्रतियोगिताएँ त्रिवेन्द्रम में सम्पन्न हुई। कु० रेणू ऊची कूद में चतुर्थ रही।

—दमयन्ती कपूर
आचार्या

कांगड़ी ग्राम विकास योजना

कांगड़ी ग्राम में विकास कार्यं में निम्नलिखित प्रगति हुई :

१—मिलन केन्द्र का निर्माण

२—चबूतरे का निर्माण

३—जिला विकास अधिकारी बिजनौर ने ग्राम की गलियों को पक्का करने एव कुएँ के निर्माण कार्य को पूर्ण करने के लिये कार्यवाही प्रारम्भ की है।

४—कांगड़ी एवं निकटवर्ती ग्रामों को बाढ़ से बचाने के लिये भी जिला-स्तर पर कार्यवाही चल रही है।

—डा० वि० शंकर
निदेशक

आर्य भट्ट विज्ञान पत्रिका

पत्रिका के द्वारा सरल भाषा में वैज्ञानिक ज्ञान जनसाधारण तक पहुँचाने का कार्य पूर्व की भाँति सम्पन्न हुआ। इस वर्ष से एक अक अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित हो रहा है। पत्रिका के द्वारा पर्यावरण शिक्षा का कार्य भी सम्पन्न हो रहा है।

—डा० वि० शंकर
सम्पादक

प्रौढ सतत शिक्षा एवं विस्तार सगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मंगलाचरण करते हुए—प्राचार्य त्यागी, श्री ए० के० सिंह, कुलपति श्री हूजा, श्री एस० यू० अन्सारी (दिल्ली), कुलसचिव अरोड़ा तथा श्री कालिया, वि० फं० गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय।

ग ा प्रदूषण सगोष्ठी के उद्‌घाटन सत्र में मुख्य अतिथि श्री बी० के० गोस्वामी, आयुक्त मेरठ का अभिनन्दन करते हुए कुलसचिव श्री अरोड़ा। माइक के पास पूर्वसांसद् आचार्य भगवानदेव (अध्यक्ष समारोह) तथा भावविभोर कुलपति श्री हूजा।

प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं विस्तार कार्यक्रम विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार द्वारा संचालित प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम सफलतापूर्वक अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा साक्षरता अभियान में जो सहयोग प्रदान किया गया, वह सराहनीय है। सत्र १९८३-८४ की प्रगति आख्या निम्न है—

१—श्री बलभद्रकुमार हूजा, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा १ अगस्त, १९८४ को प्रौढ़ शिक्षा प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन डा० त्रिलोकचन्द्र की देख-रेख में किया गया। इस अवसर पर माननीय कुलपति महोदय ने प्रशिक्षकों को सम्बोधित करते हुए कहा— "आपने एक बहुत बड़े कार्य का बीड़ा उठाया है। यह कार्य केवल आजीविका प्राप्त करने का नहीं। मात्र सौ रुपए माहवार वजीफा प्राप्त किया और आपके कार्य की इतिश्री हो गई। नहीं, यह एक क्रान्तिकारी कार्य है। आप सबको क्रान्तिकारियों की भाँति इसमें जुटना होगा। मैं जानता हूँ कि यह एक मुश्किल कार्य है लेकिन असम्भव नहीं। किसी भी कार्य के करने के लिए साहस की आवश्यकता होती है। साहस से ही मुश्किल कार्य आसान होता है। जितना आप में साहस होगा उतना ही कार्य आसान होगा। वेद में कहा गया है कि उत्तम मनुष्य वही है जो कार्य को आरम्भ करके बीच में नहीं छोड़ता। हमारा यह ध्येय होना चाहिए कि इस शताब्दी के अन्त तक हम पूर्णरूपेण निरक्षरता को समाप्त करदें और जब २१वीं शताब्दी में प्रवेश करें तो हमारा एक नया अध्याय शुरू हो। हम सब शिक्षित हों, हम सब साक्षर हों। हम सबमें विवेक हो। हम सब ऊर्ध्वगामी हों।"

इसके साथ-ही-साथ माननीय कुलपति महोदय ने स्वच्छता एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम पर विशेष बल दिया। उन्होंने प्रशिक्षकों को बताया कि "आप ग्रामीणों को स्वच्छता के प्रति भी जागरूक रखिए। स्वच्छता से जहाँ आत्म-सन्तुष्टि होती है वहाँ स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।" उन्होंने कहा कि गाँव की गलियाँ व सड़कें सप्ताह में एक बार अवश्य साफ हों।

माननीय कुलपति महोदय ने कहा कि जिस केन्द्र में आप पढ़ा रहे हों उस केन्द्र का प्रत्येक शिक्षार्थी और बल्कि उस शिक्षार्थी के परिवार का प्रत्येक सदस्य हर वर्ष एक पेड़ अवश्य लगाए।

२ - प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के सुचारू रूप से संचालन हेतु दो पर्यवेक्षकों की नियुक्ति नवम्बर मास सन् ८४ में की गई जिससे कार्यक्रम को आशातीत सफलता प्राप्त हुई।

३— १७ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का कार्यकाल विधिवत् रूप से दिसम्बर '८४ में पूरा हो गया था। उन पर आने वाले जिन शिक्षार्थियों ने साक्षरता का ज्ञान प्राप्त कर लिया है उनके नाम प्रशिक्षकों से प्राप्त कर लिये गये हैं। साक्षरता ग्रहण करने वालों को शीघ्र ही साक्षर प्रमाण-पत्र दिये जायेंगे। इस प्रकार के शिक्षार्थियों का "फोलो-अप" कार्यक्रम में भी समावेश किया जाएगा।

४— कांगडी ग्राम में २७ जनवरी '८५ को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति श्री हूजा एव कुलसचिव श्री अरोड़ा सहित अनेक गणमान्य विद्वानों एवं पदाधिकारियों ने भाग लिया। जिला बिजनौर के जिलाधीश महोदय इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित थे। प्रौढ शिक्षा के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्राम कांगड़ी, गाजीवाली, श्यामपुर तथा पीली की जनता ने भाग लिया। उपरोक्त कार्यक्रम में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला गया।

५— चयनित परियोजना अधिकारी श्री प्रभातकुमार सक्सैना ने ७ फरवरी '८४ को अपना कार्यभार ग्रहण कर लिया।

६ - १३ फरवरी '८५ को इस विभाग को गति एव संवेग प्राप्त कराने के लिए समन्वयक के पद पर डा० ए०कें० इन्द्रायण की नियुक्ति की गई एव उन्होंने भी अपना कार्यभार १५-२-८५ को ग्रहण कर लिया।

७—परियोजना अधिकारी ने विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन एवं भारतीय विश्वविद्यालय सतत शिक्षा संघ, नई दिल्ली के तत्वावधान में 'महाविद्यालय के माध्यम से सतत शिक्षा' विषय पर २२ से २४ फरवरी तक आयोजित तीन-दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

८— समन्वयक डा० इन्द्रायण ने अलीगढ़ विश्वविद्यालय में ३ से ५ मार्च तक 'जनसंख्या शिक्षा' विषय पर आयोजित सेमीनार में एक लेख 'प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से जनसख्या शिक्षा' प्रस्तुत किया।

१० — दिनांक २१ मार्च '८५ से १७ नये प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोल दिये गये हैं। इनके लिये प्रशिक्षकों की नियुक्ति की जा चुकी है।

१०—माननीय कुलपति श्री जी०बी० के० हूजा की अध्यक्षता में दिनांक १८ अप्रैल १९८५ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा संचालित प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम सम्बन्धित एक बैठक श्यामपुर के डाक बंगले पर हुई जिसमें कांगड़ी, श्यामपुर व पीली ग्रामों में चल रहे प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के प्रशिक्षकों तथा ए. एस. डी. ओ, नायब तहसीलदार नजीबाबाद तथा ग्राम प्रधानों ने भाग लिया। इसमें यह निर्णय लिया गया कि शिक्षार्थी को साक्षर बनाने के उपरान्त उसको दोबारा निरक्षर होने से रोकने के लिये विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का एक विभाग श्यामपुर के जूनियर हाईस्कूल में खोला जाए। बैठक मे निरक्षरता को दूर करने, बेरोजगारी को समाप्त करने तथा जनसख्या नियन्त्रण पर विशेष बल दिया गया। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पर अन्य ग्रामवासियों की उपस्थिति में शिक्षाप्रद चल-चित्र दिखाने के प्रबन्ध का निर्णय लिया गया। प्रशिक्षकों को महापुरुषों व देश के लिये शहीदों की जीवनियाँ पढ़ाने तथा शिक्षार्थियों को समय-समय पर इन्हे सुनाने के लिये प्रेरित किया। यह भी निर्णय लिया गया कि प्रत्येक प्रशिक्षक स्वय की डायरी लिखे तथा अपने गांव के विकास के लिये पचवर्षीय योजना तैयार करे। यह भी निश्चित हुआ कि प्रत्येक प्रशिक्षक अपने घर के बाहर अपना नाम लिखे ताकि शिक्षार्थियों को साक्षरता ग्रहण करने मे सहायता मिले तथा गाव के मुख्य-मुख्य स्थानों का नाम भी उन स्थानों पर प्रशिक्षकों द्वारा लिखा जाए। यह निर्णय लिया गया कि ग्रामोण महिलाओं को सिलाई व कढाई की सुविधा उपलब्ध कराने के लिये प्रयास किए जाएँ। हरिजनों के चहुँमुखी विकास के लिये भी एक योजना बनाने का निर्णय लिया गया।

११—प्रौढ़ शिक्षा विभाग के बहादरपुर, जट्ट सराय, जमालपुर व जगजीतपुर गावों में चल रहे प्रौढ शिक्षा केन्द्रों के प्रशिक्षकों की बैठक विश्व-विद्यालय के पुस्तकालय भवन में दि० २३-४-८५ को १० बजे माननीय कुलपति महोदय की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई जिसमें निर्णय लिया गया कि को-ऑडिनेटर व परियोजना अधिकारी साक्षर शिक्षार्थियों का प्रति-परीक्षण करेंगे। एवं वह सभी निर्णय भी इस बैठक में लिये गये जो कि श्यामपुर के डाक बंगले पर दि० १८-४-८५ को हुई बैठक में लिये गये थे।

१२. दिनाक १ जून '८५ को २७ नए प्रशिक्षकों को नियुक्त किया गया।

१३. दिनांक २ से ७ जून '८५ तक प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर नियुक्त सभी प्रशिक्षकों एवं दोनों पर्यवेक्षकों के प्रशिक्षण हेतु एक प्रशिक्षण शिविर विश्व-विद्यालय परिसर में आयोजित किया गया। इसमें देहली से आये विशेषज्ञ द्वारा प्रौढ़ों को शिक्षा देने का कठोर प्रशिक्षण दिया गया तथा कार्यक्रम के अन्य पहलुओ पर अनेक विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण वार्ताएँ दी गई। इनमें मानवमूल्यों पर आचार्य श्री रामप्रसाद वेदालंकार, स्वास्थ्य एवं आहार पर डा० डी० एन० तनेजा,

शिक्षा के उद्देश्य पर प्राचार्य श्री एस०सी० त्यागी, नैतिक मूल्यों पर आचार्य भगवानदेव, गांव की सामाजिक समस्याओं के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर प्रोफेसर ओ०पी० मिश्र एवं प्रौढ़ शिक्षा में प्रचार माध्यमों की भूमिका पर आकाशवाणी के कार्यक्रम अधिकारी श्री एस०पी० हिन्दवान की वार्ताएँ प्रमुख हैं। शिविर में वृक्षारोपण का कार्यक्रम भी रखा गया तथा पर्यावरण में रुचि उत्पन्न करने के लिए प्रतिभागियों को पर्यावरण पर हो रही गोष्ठी में भी भाग दिलवाया गया। संगीत प्रशिक्षण के कार्यक्रम में राष्ट्रीय एकता गीत भी तैयार कराया गया। शिविर के समापन पर प्रतिभागियों ने श्रेष्ठ नागरिक बनने एवं अपने कर्त्तव्यों को यथासम्भव निभाने की शपथ ग्रहण की।

कार्यक्रम को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से लगभग रु० ६७,०००/- का अनुदान पहले प्राप्त हुआ था तथा रु० १,०००,००/- इस वर्ष प्राप्त हुआ है।

विभाग में निम्न स्टाफ कार्यरत है :

१. को-आर्डिनेटर–	डा० ए०के० इन्द्रायण, रीडर, रसायन विभाग एम०एस-सी०,पी-एच०डी०
२. परियोजना अधिकारी	श्री प्रभातकुमार सक्सैना, बी०एस-सी०, एम०एस० डब्ल्यु०
३. पर्यवेक्षक	श्री जसबीर सिंह मलिक, एम०ए०,बी०एड० श्री राजपाल सिंह, एम०ए०,बी०एड०
४ लेखक	श्री कालुराम त्यागी, एम०,ए०
५. लिपिक	श्री कमलेश नैथानी, बी०ए०
६. भृत्य	श्री माताप्रसाद

इसके अतिरिक्त लगभग ६० प्रशिक्षक हैं।

—डा० ए० के० इन्द्रायण
कोआर्डिनेटर

योग केन्द्र

माननीय कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा की सतत् प्रेरणा और अथक प्रयासों के फलस्वरूप १ नवम्बर '८२ को शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक उन्नति हेतु इस विश्वविद्यालय में योग केन्द्र की स्थापना सम्भव हो सकी। उक्त केन्द्र का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा, हिमाचल प्रदेश के मंत्री श्री कृष्णलाल आर्य के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

क्रीड़ा विभाग के तत्वावधान में, प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र के नेतृत्व में, डा० त्रिलोकचन्द्र, प्रवक्ता दर्शन विभाग व श्री ईश्वर भारद्वाज शास्त्री योग प्रशिक्षक विद्यालय विभाग द्वारा अवैतनिक रूप से कार्य करते हुए दो त्रैमासिक प्रशिक्षण कोर्स पूर्ण किए गए।

प्रथम प्रशिक्षण कोर्स—

१ नवम्बर '८२ से प्रारम्भ इस प्रशिक्षण में ५२ प्रशिक्षणार्थियों को प्रविष्ट किया गया। सीमित साधनों के कारण अनेक प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित नहीं किए जा सके। ८ फरवरी '८३ को यह प्रशिक्षण समाप्त हुआ। विद्यार्थियों की लिखित, क्रियात्मक व मौखिक परीक्षाएँ ली गईं। ४६ विद्यार्थी उत्तीर्ण घोषित किए गए। २६ दिसम्बर '८३ को मान्य कुलपति जी की अध्यक्षता में पं० सत्यकाम विद्यालंकार के कर-कमलों द्वारा प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

द्वितीय प्रशिक्षण कोर्स—

१५ सितम्बर, १९८३ से दूसरा प्रशिक्षण कोर्स आरम्भ हुआ। इसमें ६५ छात्रों को प्रविष्ट किया गया। पूर्व नियमानुसार लिखित, क्रियात्मक व मौखिक परीक्षाएँ ली गई। ४३ छात्र उत्तीर्ण हुए। ५ सितम्बर '८४ को शिक्षक-दिवस के अवसर पर मान्य कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी के कर-कमलों द्वारा प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

शैक्षिक यात्रा—

द्वितीय प्रशिक्षण कोर्स के मध्य विद्यार्थियों को ऋषिकेश व हरिद्वार के विभिन्न योग केन्द्रों का भ्रमण कराया गया । छात्रों ने केन्द्रों में प्रशिक्षण-प्रणाली का अध्ययन किया । इससे रुचि में परिवर्द्धन हुआ तथा ज्ञानवृद्धि हुई ।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता —

विश्वविद्यालय की शिक्षा पटल, सिंडीकेट व सीनेट द्वारा इस केन्द्र को प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम चलाने की स्वीकृति दी गई थी । इन्हीं परिषदों की संस्तुति पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विजिटिंग कमेटी ने निरीक्षण के उपरान्त केन्द्र के कार्य को प्रशंसनीय बताया तथा विधिवत् कार्य संचालन हेतु एक प्रशिक्षक की नियुक्ति की सिफारिश की ।

चयन समिति की संस्तुति पर श्री ईश्वर भारद्वाज को प्रशिक्षक पद पर नियुक्त कर लिया गया । श्री भारद्वाज ने ६ नवम्बर '८४ से अपने पद का कार्यभार संभाल लिया ।

बोर्ड ऑव स्टडीज् की बैठक—

पाठ्यक्रम निर्माण हेतु १५ जनवरी '८५ को सम्पन्न बोर्ड ऑव स्टडीज की बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिए गए । इस समिति में स्थानीय सदस्यों के अतिरिक्त श्री ए के. चतुर्वेदी, रुड़की विश्वविद्यालय, विषय-विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए ।

१– योग प्रशिक्षण की अवधि चार मास होगी । इस प्रकार वर्ष में चार-चार मास के दो सत्र होंगे । सत्र निम्न प्रकार होंगे–
प्रथम– १ सितम्बर से ३१ दिसम्बर
द्वितीय– १५ जनवरी से १४ मई

२– उत्तीर्ण विद्यार्थियों को 'डिप्लोमा योग शिक्षा' (डिप्लोमा इन योगा एजूकेशन) प्रदान किया जायेगा ।

३– पाठ्यक्रम—सैद्धान्तिक, क्रियात्मक व मौखिक परीक्षाएँ ली जाएँगी, जिनमें ५० प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा ।
सैद्धान्तिक—चार प्रश्नपत्र १००-१०० अंकों के होंगे, जिनमें निम्नवत् पाठ्यक्रम होगा ।

प्रथम पत्र– योग का इतिहास, महत्व, प्रकार आदि
द्वितीय पत्र– योग का दार्शनिक व मनोवैज्ञानिक अध्ययन

तृतीय पत्र– शरीर विज्ञान व यौगिक चिकित्सा
चतुर्थ पत्र– शोधन क्रियाएँ व अष्टांग योग

क्रियात्मक—षट्कर्म, आसन, प्राणायाम, मुद्रा तथा मौखिक परीक्षा ३०० अंकों की होगी।

४. प्रवेश— एक सत्र में अधिक से अधिक ५० छात्र प्रविष्ट किए जा सकेंगे। इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष न्यूनतम योग्यता होगी।

वर्तमान सत्र—

वर्तमान सत्र १५ जनवरी से १४ मई '८५ तक प्रशिक्षित किया गया। इसमें ४५ छात्रों को प्रवेश दिया गया था किन्तु अनियमितताओं एव उपस्थितियों की कमी के कारण १३ छात्रों का नाम पृथक कर दिया गया। ३२ विद्यार्थियों ने विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त किया। दिनांक १७ मई '८५ से इनकी परीक्षाओं का आयोजन किया गया।

प्रथम बार पाठ्यक्रम का विशद् रूप देखते हुए अध्यापन में काफी असुविधाएँ उपस्थित हुई किन्तु निम्नलिखित महानुभावों के सक्रिय सहयोग द्वारा इन असुविधाओं पर भी नियन्त्रण किया जा सका—

१– श्री एम० के० चतुर्वेदी, रुड़की विश्वविद्यालय
२– श्री ओ० पी० मिश्र (विभागाध्यक्ष)
३– श्री डा० अशोककुमार शुक्ल (चिकित्साधिकारी योग, ऋषिकुल राज०आयु० कालेज, हरिद्वार)
४– डा० हरगोपाल सिंह (मनोविज्ञान विभाग)
५– श्री लालनरसिंह (मनो० विभाग)

केन्द्र उपर्युक्त सभी महानुभावों का हृदय से आभारी है।

उपकरण क्रय—वर्तमान सत्र में आवश्यकता के अनुरूप लगभग १२००/- रुपये के उपकरण क्रय किये गए।

विभागाध्यक्ष श्री ओ० पी० मिश्र के नेतृत्व में योग केन्द्र को उत्साह से विकसित किया जा रहा है। आशा है भविष्य में यह केन्द्र गुरुकुल के अनुरूप शिक्षण व्यवस्था में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

—ईश्वर भारद्वाज
प्रशिक्षक/निर्देशक

————

परीक्षा-सुधार कार्यशाला

राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षाओं के स्तर में सुधार के लिए २६, २७ जुलाई, १९८४ को एक कार्यशाला का आयोजन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में किया गया। अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ के प्रो० वी० नटराजन के नेतृत्व में सम्पन्न इस कार्यशाला में महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गए। क्रेडिट सिस्टम की आवश्यकता को अनुभव किया गया और प्रयोग के तौर पर एम० एस-सी० माइक्रोबायोलाजी में क्रेडिट पद्धति शुरु कर दी गई। इस पद्धति की सफलता अन्य विश्वविद्यालयों का मार्गदर्शन करेगी। मूल्यांकन, प्रश्नपत्र निर्धारण, प्रश्नों के प्रकार, ऐच्छिक प्रश्न, परीक्षा का भाषा-माध्यम, प्रश्न बैंक, आन्तरिक मूल्यांकन, ग्रेडिंग, परीक्षा परिणाम, अध्यापक और विद्यार्थियों की तैयारी जैसी अनेक समस्याओं पर विचार-विमर्श हुआ। कार्यशाला का उद्घाटन कुलपति श्री हूजा ने किया। कार्यशाला में भाग लेने वाले तीन दलों में विभाजित हो गए। प्रथम वर्ग गणित, वनस्पति शास्त्र तथा जन्तु विज्ञान; दूसरा वर्ग मनोविज्ञान, दर्शन तथा वैदिक साहित्य और तीसरा वर्ग भाषा तथा साहित्य के अध्यापकों का था। इस कार्यशाला के संयोजक प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र थे। 'Why Examination Reforms ?' नाम से इस कार्यशाला का विस्तृत प्रतिवेदन विश्वविद्यालय ने प्रकाशित किया है और इसका सम्पादन डा० राधेलाल वार्ष्णेय ने किया है। कार्यशाला में विचार-विमर्श का निष्कर्ष इस प्रकार है—

सुझाव—

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में परीक्षाओं में नवीनतम सुधार लाये, जिन्हें १९८५-९० के पंचक में विस्तृत रूप दिया जाये। इस हेतु विश्वविद्यालय में एक परीक्षा सुधार समिति का गठन किया जाये।

१-इंगित दिशा में पाठ्यक्रमों में परिवर्तन।

२-प्रश्न-पत्रों के सामान्य ग्लोबल चोइस न देकर प्रश्न के अन्दर निहित चोइस दी जाये।

३-अध्यापकों को वस्तुनिष्ठ प्रश्न-पत्र बनाने हेतु आवश्यक रूप से तैयार और प्रशिक्षित किया जावे।

४-विद्यार्थियों और अध्यापकों के लाभ हेतु ग्रेडिंग सिस्टम लागू करने हेतु तैयारी की जावे।

५-जो विभाग क्रेडिट सिस्टम लागू करना चाहें उनमें पायलट प्रोजेक्ट प्रारम्भ की जावे।

६-विश्वविद्यालय परीक्षा सुधार पर कार्यशालाएँ आयोजित करने के लिए तथा परीक्षा सुधार यूनिट स्थापित करने के लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनुदान मांगा जाये।

१९८९-९० के लिए कार्ययोजना

१-प्रसिद्ध विषयों में Question Bank बनाये जायें।

२-सेमेस्टर सिस्टम में आने वाली बाधाओं का अध्ययन।

३-परीक्षाओं को पूर्ण करने में वैज्ञानिकों विधियों का प्रयोग।

४-मूल्यांकन में आंतरिक मूल्यांकन को उचित स्थान।

वृक्षारोपण समारोह

दि० २७ मई, १९८५ को भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री भारतरत्न पण्डित जवाहरलाल नेहरू जी की २१वीं पुण्यतिथि के अवसर पर कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा जी की गहन निष्ठा एवं सतत प्रेरणा के फलस्वरूप 'गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय' ने अमर आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए, वेद-मन्दिर के प्रांगण में वृक्षारोपण अभियान का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकेतर कर्मचारी उपस्थित थे। हरिद्वार नगरपालिका के प्रभारी अधिकारी श्री ए०सी० दुबे जी इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अमलतास का पौधा लगातार विश्वविद्यालय के वृक्षारोपण अभियान का श्रीगणेश किया। पण्डित नेहरू को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, इस अवसर पर बोलते हुए कार्यवाहक कुलपति प्रोफेसर रामप्रसाद वेदालंकार एवं कुलसचिव श्री वीरेन्द्र अरोड़ा जी ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वृक्षों और वनों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। तदुपरान्त समस्त कर्मचारियों ने अनेक प्रकार के वृक्षों के पौधे लगाए। इस समारोह का संयोजन डा० बी०डी० जोशी, प्रमुख अन्वेषक 'हिमालय शोध योजना', जो 'राष्ट्रीय सेवा योजना' कार्यक्रम के परियोजना अधिकारी हैं, के द्वारा किया गया।

गुरुकुल कांगड़ी में कुलपति सम्मेलन

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में १८, १९, २० जनवरी' ८५ को आयोजित उत्तर-क्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन के सम्पन्न होने से महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा गांधी की वह चिर-आकांक्षा साकार हुई कि अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों को समाज में समान स्तर प्रदान कर उन्हें राष्ट्र की मूल-धारा के साथ जोड़ दिया जाय। आर्य समाज अपने स्थापना काल से ही इस दिशा में प्रयत्नशील रहा पर विश्वविद्यालयीय स्तर पर आर्य समाज के इस कार्य को सार्वजनिक तौर पर समर्थन इस सम्मेलन में मिला। महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के रचनात्मक अभियानों में यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। इस सम्मेलन मे लखनऊ, फैजाबाद, गोरखपुर, पंतनगर-नैनीताल, काशी विद्यापीठ, कृषि विश्वविद्यालय हिसार, पंजाब विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, जामिया मिलिया, मेरठ, गढ़वाल तथा रुड़की विश्वविद्यालयों के कुलपतियों तथा कुलपति-प्रतिनिधियों ने भाग लेकर जहाँ अनुसूचित तथा पिछड़े वर्गो की समस्याओं पर शैक्षिक तथा आर्थिक संदर्भों में विचार-विमर्श किया, वहाँ गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की बुनियादी विशेषताओं तथा उनकी पूर्ति के लिये कुलपति बलभद्रकुमार हूजा द्वारा उठाए गए कदमों की भी भरपूर सराहना की।

भारतीय विश्वविद्यालय संघ की प्रेरणा से सम्पन्न इस सम्मेलन में शिक्षा के क्षेत्र में आरक्षण की नीति को दस वर्ष तक जारी रखने की सिफारिश करने के साथ-साथ, आरक्षण नीति के पुनर्मूल्यांकन की माँग की गई। विचारकों की दृष्टि में आरक्षण नीति का पुनर्मूल्यांकन आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, मनोवैज्ञानिक तथा राष्ट्रीय दबावों और उनके प्रभावों के तहत किया जाना चाहिए। सम्मेलन की यह आम राय थी कि आरक्षण का आधार आर्थिक पिछड़ापन, व्यवहारिकता, आवश्यकता तथा पर्याप्तता होने चाहिएँ, केवल जातिगत आधार नहीं। काशी विद्यापीठ के पूर्व-कुलपति, पूर्व सांसद तथा प्रसिद्ध समाजशास्त्री डा० राजाराम शास्त्री ने विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में इस सिफारिश पर अपनी सहमति व्यक्त की। सम्मेलन द्वारा की गई अन्य मुख्य सिफारिशों में आरक्षित वर्ग के छात्रों के लिए तकनीकी तथा व्यवसायोन्मुखी शिक्षा अनिवार्य करने, मातृभाषाओं में प्रतियोगी परीक्षाओं में छूट देने, पूर्ण शिक्षा के लिए प्रोत्साहन

देने, अलग शिक्षा संस्थाएँ खोलने, इस वर्ग के छात्रों को मुफ्त भोजन, पुस्तकें, कपड़े, वजीफे, प्रशिक्षण के लिए विशेष कक्षाएं तथा अन्तरिम पाठ्यक्रम चालू करने की योजनाएँ उल्लेखनीय हैं। सम्मेलन ने यह भी माँग की कि विश्व-विद्यालयों में शिक्षक तथा विद्यार्थी अपने नाम के साथ जातिसूचक शब्दों का प्रयोग न करें तथा समान स्तर और व्यवहार पर शिक्षा प्रदान करें। इसके लिए भावात्मक वातावरण भी बनाना होगा और एक मजबूत प्रचार तंत्र की स्थापना करनी होगी।

इस तीन-दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन बी० एच० ई० एल० के कम्प्यू-टर हाल में श्री टी० एन० चतुर्वेदी, नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक, भारत सर-कार ने दीपदान में दीप जलाकर तथा उद्घाटन भाषण देकर किया। श्री चतु-र्वेदी ने आरक्षण को सभी वर्गों के बिपुल किन्तु विपन्न लोगों के बच्चों के लिए आवश्यक बताते हुए कहा कि आरक्षण को प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर विशेष रूप से लागू करना चाहिए। उन्होंने कहा कि विकास किसको कितना मिला, इसी बात से माना जा सकता है और शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसमें हमें अधिक से अधिक विकास मिल सकता है। इस माध्यम के सुधार की बडी आवश्यकता है। शिक्षा आज हमें जाति, धर्म, वर्ग, भाषा आदि परिस्थितियों से मुक्ति न दिलाकर हमारे स्वार्थों को तार्किक आधार दे रही है। विकास के लिए शिक्षा का न्यायपूर्ण बंटवारा जरूरी है। सम्मेलन के उद्घाटन-सत्र की अध्यक्षता लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति डा० आर० एस० मिश्र ने की तथा सगोष्ठियों के लिए प्रस्तावना-भाषण दिया श्री अंजनीकुमार, संयुक्त सचिव भारतीय विश्वविद्यालय संघ ने।

गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलपति बलभद्रकुमार हूजा ने स्वागत भाषण में गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को प्रतिपादित करते हुए कहा कि इस पद्धति को स्वीकार कर लेने से आरक्षण की समस्या ही नहीं रह जाती। गुरुकुल जाति-पाँत तथा असमानता से रहित समान स्तर, समान शिक्षा तथा समान विकास की धारा में क्रियात्मक विश्वास रखता है तथा पिछले ८५ वर्षों से राष्ट्र के भिभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत स्नातकों पर गर्व करता है जिनकी जाति-पाँत का पता आज भी किसी को नहीं है और जो उद्देश्य के साथ राष्ट्रीय विकास के लिए समर्पित हैं। गुरुकुल विद्यालय के छात्र तथा कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने सस्वर मंत्र पाठ कर मंगलाचरण किया।

मुख्य समारोह में, जिसका संचालन डा० विष्णुदत्त राकेश, प्रोफेसर हिन्दी विभाग गुरुकुल कांगड़ी कर रहे थे, वक्ताओं ने बार-बार इस बात पर जोर दिया कि वर्तमान परिस्थितियों में आरक्षण जरूरी है, पर इसे अनिश्चित काल के लिए लागू रखना न्यायसंगत नहीं।

सम्मेलन के समन्वयक प्रो० ओमप्रकाश मिश्र तथा सह-समन्वयक डा० राधेलाल वार्ष्णेय ने कुलसचिव श्री वीरेन्द्र अरोड़ा के सुदक्ष सहयोग से इस आयोजन को सफल बनाने में अथक् परिश्रम किया। सम्मेलन के प्रतिनिधियों ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कुलपति, कुलसचिव तथा समन्वयक को उनके व्यवस्थित आयोजन तथा आतिथ्यसत्कार के लिये मुक्तकंठ से बधाई दी।

विविध परिचर्चा सत्रों में जातिगत असमानता के आधार, जाति की अवधारणा तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आरक्षण की आवश्यकता और पुनर्मूल्यांकन की सम्भावनाओं पर विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। एक परिचर्चा सत्र की अध्यक्षता पंतनगर के कुलपति डा० कृपानारायण, पूर्व सचिव उत्तर प्रदेश सरकार, द्वितीय सत्र की अध्यक्षता हिसार के कुलपति डा० एल० डी० कटारिया तथा समापन सत्र की अध्यक्षता आचार्य प्रियव्रत वेदमार्तण्ड, पूर्व कुलपति गुरुकुल विश्वविद्यालय ने की। विभिन्न सगोष्ठियों की बहस में हिस्सा लेने वालों में जामिया मिलिया के डा० गांधी, फैजाबाद के डा० वाशी, गोरखपुर के डा० एल० बी० त्रिपाठी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की डा० शान्ता कृष्णन, पंजाब विश्वविद्यालय के डा० वी० बी० भनोत तथा श्री एम० एल० भाटिया, रुड़की विश्वविद्यालय के डा० भरतसिंह, भारतीय विश्वविद्यालय संघ के सयुक्त सचिव श्री अंजनीकुमार, मेरठ विश्वविद्यालय के डा० ब्रजेन्द्र शर्मा, डा० कमल-कान्त बुधकर तथा कु० निर्मल त्रेहन, काशी के डा० जी० शंकर, गुरुकुल के डा० हरगोपाल सिंह, प्रो० सदाशिव भगत, डा० विजय शंकर, डा० बी०डी० जोशी, डा० कृष्ण अवतार अग्रवाल, डा० सेंगर, श्री लालनरसिंह नारायण, डा० नारायण शर्मा आदि विद्वान् प्रमुख रहे।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी द्वारा शिक्षा की नीतियों में आमूल परि-वर्तन करने की घोषणाओं के कारण यह सम्मेलन और इसके द्वारा की गई संस्तुतियाँ काफी महत्वपूर्ण सिद्ध होंगी। इससे पूर्व शान्ति निकेतन कलकत्ता, पूना तथा तंजौर में भी इस तरह के सम्मेलन हो चुके हैं। उत्तर भारत में इसी क्रम में चौथा सम्मेलन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुआ।

सम्मेलन में हिन्दुस्तान दैनिक, नवभारत टाइम्स दैनिक, जागरण, आज, पंजाब केसरी तथा पी० टी० आई० के संवाददाता भी उपस्थित हुए। सुप्रसिद्ध साहित्यकार तथा दिनमान के सम्पादक श्री कन्हैयालाल नन्दन, आकाशवाणी दिल्ली के श्री रमानाथ अवस्थी एवं आकाशवाणी नजीबाबाद के एस० हिन्दुवान ने तो बहस में भाग लेकर उसे प्राणवन्त बना दिया।

कुलपतियों तथा सम्मेलन के प्रतिनिधियों के सम्मान में बी०एच०ई०एल० के महाप्रबन्धक श्री सी० एम० गुप्ता, उनके जन-सम्पर्क अधिकारी श्री चन्द्रकान्त

सरदाना तथा अन्य अधिकारियों ने रात्रिभोज का आयोजन किया। तथा उससे पूर्व एक सांस्कृतिक सन्ध्या में दिल्ली पब्लिक स्कूल, केन्द्रीय विद्यालय, विद्या मन्दिर इण्टर कालेज तथा आनन्दमयी सेवा सदन इण्टर कालेज के छात्र-छात्राओं ने राष्ट्रीय अखण्डता, भावात्मक एकता तथा युग निर्माण की आकांक्षा को जागृत करने वाले मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

इस सम्मेलन में लिए गए निर्णयों के आधार पर प्रस्तावित संस्तुतियाँ इस प्रकार हैं—

देश की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों को देखते हुए विश्वविद्यालयों में अनुसूचित और जनजातियों के लिए आरक्षण की वर्तमान नीति को दस वर्ष तक और जारी रखा जाय। यह इसलिए कि उनके दीर्घकालिक शोषण का प्रायश्चित हो सके, उनकी आर्थिक-सामाजिक समृद्धि की जा सके, उनके पिछड़ेपन को दूर करने के लिए उन्हें समान सुविधाएं तथा अवसर उपलब्ध कराए जा सके तथा सामाजिक अन्याय का उन्मूलन हो सके। इस दिशा में किए गए कार्यों की प्रगति की समीक्षा के लिए एक प्रभावी तंत्र की स्थापना होनी चाहिए। हाई स्कूल तक की शिक्षा सबके लिए अनिवार्य हो। उन्हें हस्तकौशल तथा तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के लिए सुविधाएँ तथा अवसर मुहैया कराए जाएँ। समाज के दुर्बल वर्ग के बच्चों के लिए विशेष शिक्षण की व्यवस्था हो तथा विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा के साथ-साथ निःशुल्क भोजन भी दिया जाए। वैदिक मान्यताओं को बढ़ावा देते हुए गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्ण का निश्चय किया जाए, जन्म के आधार पर नहीं। विद्यालय में प्रवेश लेते हुए जातिसूचक नामों के उल्लेख पर प्रतिबन्ध हो, जिससे वे सच्चे अर्थों में मनुष्य सिद्ध हो सके। स्कूली शिक्षा समाप्त होने पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्ण, व्यवसाय के आधार पर प्रदान किए जाएँ। गरीबी की रेखा से ऊपर उठकर जिन्होंने उच्च सामाजिक स्तर प्राप्त कर लिया है, उन्हें यह सुविधा प्रदान न की जाए। जातिवाद, छुआछूत, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रीयतावाद, जनजाति विरोधी दृष्टिकोण, धर्म तथा अन्य सामाजिक पूर्वाग्रहों के विरुद्ध लगातार जन-जागरण का अभियान चलाया जाए। दस वर्ष बाद पुनः आरक्षण नीति का मूल्यांकन तथा पुनरीक्षण किया जाए।

दीक्षान्तोत्सव १९८५ पर उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	कक्षा	विषय	संस्था का नाम
१.	२५९	८२००३८	कु० देवेन्द कौर	श्री महेन्द्रसिंह	प्रथम	विद्यालकार		कन्या गु० महा० देहरादून
२.	२६०	८२००५१	कु० कृष्णा	,, पृथ्वीसिंह	द्वितीय	,,		,,
३.	२६१	८२००३९	कु० मनजीत कौर	,, हरदयालसिंह	प्रथम	,,		,,
४.	२६२	८२००४७	ब्रह्मदेव	,, प्रतापसिंह	प्रथम	,,		गुरुकुल भैंसवाल
५.	२६४	८२००३४	कर्मवीरसिंह	,, रामसिंह	प्रथम	,,		,,
६.	२६५	८२००३३	रमेशचन्द्र	,, पृथ्वीसिंह	द्वितीय	,,		,,
७.	२६६	८२००३५	योगेन्द्रसिंह	,, हुक्मचन्द्र	द्वितीय	,,		,,
८.	२६७	८२०१२५	भोपालसिंह	,, बाबूराम	द्वितीय	,,		गुरुकुल कांगड़ी वि०वि०
९.	२६८	७९००११	बालकिशन	,, सुगनचन्द्र	द्वितीय	,,		,,
१०.	२६९	८२०१२४	महेन्द्रप्रसाद ध्यानी	,, मंगलानन्द ध्यानी	प्रथम	,,		,,
११.	२७०	८१०००७	नरेशकुमार चौहान	,, अलबेलसिंह	तृतीय	,,		,,
१२.	२७२	८२०१५१	कौस्तुबानन्द	,, मनोहरदत्त	द्वितीय	वेदालंकार		,,
१३.	२७३	८२०१५५	रवीन्द्रसिंह आर्य	,, मोहकम सिंह	प्रथम	वेदालंकार		,,
१४.	३७३	८२००६८	अरुण गौड़	,, आर०एस० गौड़	द्वितीय	बी एस-सी.	गणित ग्रुप	,,
१५.	३७४	८२००७०	अरुण कुमार शर्मा	,, शिवनन्दन शर्मा	द्वितीय	,,	,,	,,
१६.	३७५	८२००७२	अखिलेश कुमार	,, ऋषिराज शर्मा	द्वितीय	,,	,,	,,
१७.	३७६	८२००७४	आदेश कुमार	,, श्यामलाल	द्वितीय	,,	,,	,,
१८.	३७७	८२००७३	आदित्यकुमार चौहान	,, केहरसिंह चौहान	द्वितीय	,,	,,	,,

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	कक्षा	विषय	संस्था का नाम
१९.	३७८	८१००८६	देशप्रित सिंह	श्री गुरमेलसिह	द्वितीय	बी.एस-सी.	गणित ग्रुप	गु०कां०वि०वि०
२०.	३७९	८२०००८१	कुशलपाल सिंह	,, रणवीरसिह	प्रथम	,,	,,	,,
२१.	३८०	८२०००८४	मनोजकुमार सक्सेना	,, ब्रह्मस्वरूप सक्सेना	प्रथम	,,	,,	,,
२२.	३८२	८२०००८२	मनोजकुमार	,, जयप्रकाश	द्वितीय	,,	,,	,,
२३.	३८३	८२०००९७	प्रदीपकुमार	,, लालचन्द्र सैनी	द्वितीय	,,	,,	,,
२४	३८४	८२०००९४	राजीव आहूजा	,, हरबशलाल आहूजा	प्रथम	,,	,,	,,
२५.	३८५	८२०१०७	राकेशकुमार	,, सीताराम	द्वितीय	,,	,,	,,
२६.	३८६	८२०००९३	राजेश भसीन	,, रामलुभाया भसीन	द्वितीय	,,	,,	,,
२७.	३८७	८२०१०३	ऋषिपाल सिंह	,, कृष्णसिंह	प्रथम	,,	,,	,,
२८.	३८८	८२०१०९	संजय द्विवेदी	,, ओ०पी० द्विवेदी	द्वितीय	,,	,,	,,
२९.	३९०	८२०१०६	शरदकुमार सिंह	,, ओमप्रकाश सिंह	द्वितीय	,,	,,	,,
३०.	३९१	८२०११३	तेजासिंह	,, अजीतसिंह	द्वितीय	,,	,,	,,
३१.	३९२	८२०१११	विनोदकुमार	,, सुन्दरलाल दरगन	द्वितीय	,,	,,	,,
३२.	३९३	८२०११४	योगेशकुमार शर्मा	,, रामनाथ शर्मा	द्वितीय	,,	,,	,,
३३.	३९४	८२०११५	योगेशकुमार त्यागी	,, सुमेरचन्द्र त्यागी	द्वितीय	,,	,,	,,
३४.	३९५	८२०००६६	अजयशंकर	,, विजयशंकर सक्सेना	प्रथम	बी.एस-सी.	बायोलोजी ग्रुप	,,
३५.	३९६	८२०००६२	अरुणकुमार	,, मामचन्द्र	द्वितीय	,,	,,	,,
३६.	३९७	८२०००६३	अनुराग मित्तल	,, कमलेश्वर मित्तल	प्रथम	,,	,,	,,
३७.	३९८	८२०००६०	मुश्ताक अहमद	,, ईद मुहम्मद अंसारी	द्वितीय	,,	,,	,,

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पजीकरण स०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	कक्षा	विषय	सस्था का नाम
३८.	३९९	८२००६१	मनोजकुमार अग्रवाल	श्री रामतीर्थ अग्रवाल	द्वितीय	बी.एस-सी.	बायोग्रुप	गु०कां०वि०वि०
३९.	४००	८२००५८	पुरुषोत्तमकुमार सिह	,, वकीलसिह	द्वितीय	,,	,,	,,
४०.	४०१	८२००५७	राघवेन्द्रसिह	,, विजयस्वरूप	प्रथम	,,	,,	,,
४१.	४०२	८२००५४	सुनीलदत्त पंवार	,, सत्यपाल सिह	द्वितीय	,,	,,	,,
४२.	४०३	८२००५५	सुरेन्द्र कुमार	,, काशीराम	द्वितीय	,,	,,	,,
४३.	४०४	८२००५३	तरुणकुमार रिखरा	,, पुरुषोत्तमलाल रिखरा	द्वितीय	,,	,,	,,
४४.	५३७	८२००२७	रामेश्वरदयाल गुप्ता	,, बाबूराम गुप्ता	प्रथम	एम.ए.	वैदिक साहित्य	,,
४५.	५३८	८२०१३९	सूर्यप्रकाशार्य पाठक	,, ओमनाथ पाठक	द्वितीय	,,	,,	,,
४६.	५३९	८२०१५३	विद्यानन्द गिरी	,, स्वामी पचम गिरी	द्वितीय	,,	,,	,,
४७.	५४०	८२०१२९	बाबूराम	,, अफलातून	प्रथम	,,	दर्शनशास्त्र	,,
४८.	५४१	८२०१४१	परेशानन्द यति	,, बालकृष्ण यति	द्वितीय	,,	दर्शनशास्त्र	,,
४९.	५४३	८००१६६	हरिश्चन्द्र	,, कर्मसिह	प्रथम	,,	संस्कृत साहित्य	,,
५०.	५४४	८२००२८	रणधीरसिंह	,, सुखबीरसिंह	द्वितीय	,,	,,	,,
५१.	५४५	८२०१५२	सत्यदेव	,, धर्मवीरसिंह आर्य	प्रथम	,,	,,	,,
५२.	५४६	८२०१३८	सुभाषचन्द्र	,, नाथूराम	द्वितीय	,,	,,	,,
५३	५४७	८२००२३	तारानाथ मैनाली	,, मोहनलाल मैनाली	द्वितीय	,,	,,	,,
५४.	५४८	८२००२९	तेजो मित्र	,, ठाकुर नाथ	द्वितीय	,,	,,	,,
५५.	६२२	८१०१६६	हरिकृष्ण	,, द्वारिकाप्रसाद	तृतीय	,,	,,	,,
५६.	५४९	८२०००५	कु० जनकरानी	,, निहालचन्द्र मनोचा	द्वितीय	,,	,,	,,

क्रम सं०	अनुक्रमाक	पंजीकरण स०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	कक्षा	विषय	संस्था का नाम
५७.	५५०	८२०००३	कु० नम्रता	श्री सत्यपाल	तृतीय	एम.ए.	संस्कृत साहित्य	गु.कां.वि.वि.
५८.	५५१	८२०१३५	श्रीमती राजेश्वरी	,, प्रेमदत्त सकलानी	द्वितीय	,,	,,	,,
५९.	५५२	८२०००७	श्रीमती विमला	,, सूरजभान	प्रथम	,,	,,	,,
६०.	५५४	७२००२७	चन्द्रप्रकाश शर्मा	,, मनीराम शर्मा	द्वितीय	,,	,,	,,
६१.	५५५	८३०११४	ललिताप्रसाद पोखिरियाल	,, मोहनलाल पोखिरियाल	द्वितीय	,,	हिन्दी साहित्य	,,
६२.	५५६	८०००९४	पवन कुमार	,, सिताबसिह	द्वितीय	,,	,,	,,
६३.	५५७	८२००२०	सभाबहादुर सिंह	,, हंसराजसिह	द्वितीय	,,	,,	,,
६४.	५५८	८२००२२	शिरोमणि भट्ट	,, चूडामणि भट्ट	तृतीय	,,	,,	,,
६५.	५५९	८२०१४९	विक्रमसिंह	,, तुंगलसिह	द्वितीय	,,	,,	,,
६६.	५६८	८१०१६४	गिरीशचन्द्र पुनेठा	,, जयदेव पुनेठा	द्वितीय	,,	,,	,,
६७.	५६०	८२००१७	कु० ममता	,, रामचरण दास	द्वितीय	,,	,,	,,
६८.	५६१	८२००४९	श्रीमती मंजुला सिंह	,, राधाकृष्ण प्रतापसिंह	द्वितीय	,,	,,	,,
६९.	५६३	८०००६४	कु० पूर्णिमा	,, ओम्प्रकाश	तृतीय	,,	,,	,,
७०.	५६४	८२०००१	कु० रीता कुमारी	,, हुक्मचन्द्र	तृतीय	,,	,,	,,
७१.	५६५	८२०१२०	कु० शशि	,, लाहौरसिंह	तृतीय	,,	,,	,,
७२.	५६६	८२०००२	कु० सरोज	,, हरस्वरूप सिंह	तृतीय	,,	,,	,,
७३.	५६७	८३०१७२	कु० उमा दीक्षित	,, सर्वेश्वर दीक्षित	तृतीय	,,	,,	,,
७४.	५६९	७८००१८	ओम्प्रकाश	,, राम समुझ	द्वितीय	,,	,,	,,
७५.	५७०	७३००३२	यशपालसिंह राठौर	,, डी०पी० सिंह	द्वितीय	,,	,,	,,

क्रम सं०	अनुक्रमाक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	कक्षा	विषय	संस्था का नाम
७६.	५७३	८२०१५७	शुभानन्द शर्मा सिंह	श्री रामअवतार सिंह	द्वितीय	एम.ए.	अंग्रेजी साहित्य	गु.कां.वि.वि.
७७.	५७१	८२०१४०	जितेन्द्रकुमार गोयल	,, नरेन्द्रनिवास गोयल	द्वितीय	,,	,,	,,
७८.	५७२	८२००१६	प्रदीपकुमार जोशी	,, नारायणदत्त जोशी	द्वितीय	,,	,,	,,
७९.	५७६	८२००२६	विक्रान्त चड्ढा	,, बनारसीदास चड्ढा	द्वितीय	,,	,,	,,
८०.	६२३	८२०१५६	नीरज कुमार	,, सत्यपाल कुमार	तृतीय	,,	,,	,,
८१.	५७८	८०००८८	अशोककुमार डे	,, स्नेहमय डे	द्वितीय	,,	प्रा.भा. इतिहास	,,
८२.	५७९	८२०१५०	भारतभूषण शर्मा	,, रामदयालू शर्मा	प्रथम	,,	,,	,,
८३.	५८०	८२००२५	विनोदकुमार शर्मा	,, वेदप्रकाश शर्मा	द्वितीय	,,	,,	,,
८४.	५८१	८२००४५	कु० अलका भटनागर	,, पी०एस० भटनागर	द्वितीय	,,	,,	,,
८५.	५८२	८२०००९	श्रीमती अनीता	,, भीमसिंह त्यागी	द्वितीय	,,	,,	,,
८६.	५८३	८२००१०	कु० आशारानी शर्मा	,, वेदप्रकाश शर्मा	तृतीय	,,	,,	,,
८७.	५८४	८१००१०	कु० मधूलिका श्रीवास्तव	,, राजेश्वरनाथ श्रीवास्तव	प्रथम	,,	,,	,,
८८.	५८६	८२०१३७	कु० तृप्तीरानी	,, जयप्रकाश	तृतीय	,,	,,	,,
८९.	५८७	८२०१२८	श्रीमती यशोधरा	,, गिरधारीलाल	द्वितीय	,,	,,	,,
९०.	५८९	८००१७२	प्रभातकिशोर	,, भैरवदत्त	तृतीय	,,	,,	,,
९१.	६०७	७९००७३	भीमसैन	,, अमरदीना मल	द्वितीय	,,	एम.एस-सी. मनोविज्ञान	,,
९२.	६०८	८००१३०	चन्द्रप्रकाश	,, रामप्रसाद	द्वितीय	,,	,,	,,
९३.	६०९	८२०१४७	मदनपाल सिंह पुण्डीर	,, बलसिंह	द्वितीय	,,	,,	,,
९४.	६१२	८२००२१	विनोदकुमार वर्मा	,, हरिशचन्द्र वर्मा	द्वितीय	,,	,,	,,

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	कक्षा	विषय	संस्था का नाम
९५.	६१४	८२००१८	कु० अंजू मिश्रा	श्री श्रीनाथ मिश्रा	द्वितीय	एम०ए०	मनोविज्ञान	गु०कां०वि०वि०
९६.	६१५	८२०१४२	कु० आशा लूथरा	,, हंसराज लूथरा	प्रथम	एम०एस-सी०	,,	,,
९७.	६१६	८२००१५	कु० मंजूरानी	,, प्रीतमदास	द्वितीय	एम०ए०	,,	,,
९८.	६२०	८२००१४	कु० रूपा	,, कबूलचन्द	द्वितीय	एम०ए०	,,	,,
९९.	५९०	८०००३४	अनिलकुमार	,, किशनसिह सैनी	द्वितीय	एम.एस-सी.	गणित	,,
१००.	५९१	७९००२२	अनिलकुमार शर्मा	,, करणसिंह शर्मा	द्वितीय	एम.एस-सी.	गणित	,,
१०१.	५९२	७९००२५	भूषणलाल	,, धर्मपाल सिंह	प्रथम	,,	,,	,,
१०२.	५९३	८००१०७	देवाशी भट्टाचार्य	,, सुबलचन्द्र भट्टाचार्य	द्वितीय	,,	,,	,,
१०३.	५९४	८००१०८	दिनेशकुमार	,, महेन्द्रपालसिह	द्वितीय	,,	,,	,,
१०४.	५९५	८०००९९	दिनेश वर्मा	,, साईंदास वर्मा	प्रथम	,,	,,	,,
१०५.	५९७	८२०१३१	मनोहरलाल	,, पिशोरीलाल	प्रथम	,,	,,	,,
१०६.	५९८	८०००४२	राजीवकुमार	,, हरवशलाल सचदेवा	प्रथम	,,	,,	,,
१०७.	५९९	८००१०३	राजेशकुमार गुप्ता	,, रामलाल गुप्ता	द्वितीय	,,	,,	,,
१०८.	६००	८०००४३	रामेश्वरदयाल सिह	,, बाबूलाल	प्रथम	,,	,,	,,
१०९.	६०१	७९००४२	शिवकुमार	,, धर्मसिंह धीमान	प्रथम	,,	,,	,,
११०.	६०२	८०००५६	विकास मेहता	,, देवीप्रसाद मेहता	द्वितीय	,,	,,	,,
१११.	६०३	८०००५७	विनोदकुमार	,, चिरञ्जीलाल	द्वितीय	,,	,,	,,

दीक्षान्तोत्सव १९८५ पर उपाधि पाने वाले शोधार्थियों/शोधार्थिनियों की सूची

क्रम सं०	पंजीकरण स०	शोधार्थी का नाम विभाग, निर्देशक	पिता का नाम शोध शीर्षक
१–	८१०२६	श्री सत्यप्रकाश रामबहल वैदिक साहित्य आचार्य रामप्रसाद जी	श्री हरदेव गोपी महर्षि दयानन्द जी की बृहत्त्रयी आलोचनात्मक अध्ययन।
२–	८१०२०	श्री राकेशकुमार प्राचीन भारतीय इतिहास-सस्कृति एवं पुरातत्व डा० बी० सी० सिन्हा	श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा प्राचीन भारत में सम्प्रभुता का विकास (वैदिक काल से गुप्त काल तक)।
३–	८१००२	श्री आई०गुस्ती. पुतू फल्गुनादि प्रा०भा०इ०, सं० एव पुरा० डा० बी० सी० सिन्हा	श्री आई. गुस्ती पुतूओका मानेक दि इवोल्यूशन ऑव इण्डियन कल्चर इन बाली।
४–	७९०१५३	कु० उषारानी प्रा०भा०इ०, स० एव पुरा० डा० बी० सी० सिन्हा	श्री श्यामसुन्दर उत्तर भारत की शासन संस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन।
५–	८१०१५	श्रीमती साधना सिपाहा प्रा०भा०इ०, सं० एवं पुरा० डा० बी० सी० सिन्हा	श्री बी० पी० अ ाल मौर्यकालीन राजनीतिक चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में ऋषि दयानन्द के राजदर्शन का अध्ययन।
६–	८१०११	श्री ज्ञानचन्द्र रावल हिन्दी साहित्य डा० ए० पी० बाजपेयी	श्री हरनाम सिंह हरिऔध के महाकाव्यों का सामाजिक एवं शास्त्रीय अध्ययन।
७–	८१०२८	श्रीमती आभा तिवारी हिन्दी साहित्य डा० ए० पी० बाजपेयी	श्री ए० पी० बाजपेयी गोस्वामी तुलसीदासकृत गीतावली में काव्य, संस्कृति और दर्शन
८–	८१०२७	श्री अरुणप्रकाश बाजपेयी हिन्दी साहित्य डा० ए० पी० बाजपेयी	श्री ए० पी० बाजपेयी कवितावली में काव्य, समाज और संस्कृति।

ओ३म्

ANNUAL REPORT

1985-86

AN ABSTRACT

Gurukula Kangri Vishwavidyalaya

Hardwar (U.P.)

Officers of Vishwavidyalaya

Visitor —Dr. Satyavrat Sidhantalankar Vidyamartand

Chancellor —Sri Virendra, President Arya Pratinidhi Sabha Punjab (upto 31-8-85)
—Dr. Satyaketu Vidyalankar (From 1-9-85)

Vice-Chancellor —Sri Balbhadra Kumar Hooja, I.A.S. (Retd.) (upto 1-9-85)
—Sri Satyakam Verma (from 2-9-85 to 1-2-86)
—Sri Ram Prasad Vedalankar (From 2-2-86 to 21-3-86 Atg.)
—Sri Ram Chandra Sharma, I.A.S. (Retd.) (from 22-3-86)

Legal Advisor —Sri Som Nath Marwaha, Senior Advocate

Treasurer —Sri Sardari Lal Verma

Pro Vice-Chancellor & Acharya —Sri Ram Prasad Vedalankar

Principal, Science College —Sri Suresh Chand Tyagi

Principal, Kanya Gurukula Dehra Dun —Smt. Damyanti Kapoor

Registrar —Sri Virendra Arora

Dy-Registrar —Dr. Shyam Narayan Singh

Finance Officer —Sri B. D. Bhardwaj

Director, Museum —Dr. B. C. Sinha

Librarian —Sri Jagdish Prasad Vidyalankar

Published by :
Sri Virendra Arora
Registrar
Grukula Kangri Vishwavidyalaya
Hardwar

July 1986 : 500 Copies

Printed at .
Jaina Printers
Jwalapur

There was never any doubt that the Gurukula had a great deal to contribute towards nation-building by imparting value-oriented education and by participating in the programmes of social services, rural uplift, adult education and economic amelioration through its scholars engaged in Vedic and ecological researches and extension work. It is this type of activity which, according to the Chairman of U.G.C., is expected of the Universities in fulfilling the objectives of national unity, social and emotional integration, service of the disadvantaged classes, unity of mankind, international amity, character-building, self-discipline, social and democratic justice, inculcation of co-operative spirit, search for knowledge and extension of the frontiers of awareness. GKV has undertaken to search and establish these values during these past few years.

In spite of financial constraints and other obstacles, the *ashrama* system for the *brahmacharis* has been improved and for their physical and spiritual development *yogabhyasa*, *vratabhyasa* and daily recitation of the Vedic *mantras* are being continued.

The Vishwavidyalaya has been presenting its image and vision, its academic growth and achievements, its literary and intellectual pursuits through its various forums, magazines and journals. *The Gurukula Patrika*, a monthly news magazine is being published regularly under the editorship of Dr. Jaidev Vedalankar; *The Vedic Path*, a quarterly journal of Vedic and Indological Researches, is published under the editorship of Dr. H.G. Singh; *Arya Bhatta* is edited by Dr. Vijay Shankar, and *Prahlad* by Dr. Vishnu Dutta Rakesh. Most of these magazines remained suspended for a few months but these have now been revived and are being published regularly.

In the field of publication, the teachers of this Vishwavidyalaya have established new records. Almost all the departments of the Vishwavidyalaya were engaged in publication of books, articles and research papers. The outstanding volume was the Special Issue of the *Vedic Path* on Sri Aurobindo. Dr. Jai Dev Vedalankar, Dr. Vishnu Dutta Rakesh and Dr. R. L. Varshney did commendable

work by getting their works published. GKV also published a small booklet on New Education Policy entitled *Rashtriya Shiksha Neeti Ke Mool Siddhanta.*

Gurukula Library is one of the prominent libraries of Indology in India. Here are preserved rare books and manuscripts on Oriental *Vidyas*—Religion, Philosophy, History, Humanities and Sciences. More than a lakh of books on various subjects are available in the library. These are used by the scholars and researchers within and outside the country. The UGC has sanctioned a grant-in-aid of Rs. 10 lakhs in the recent years for the development of this library. The library has had the benefit of the guidance of Dr. D.R. Kalia, Ex-Librarian, Calcutta National Library, as a Visiting Fellow. It is looking up for active service of the community. This year, books worth Rs. 24,000/- have been added to the Library. An amount of Rs. 32,000/- was spent on newspapers and magazines. A rural library at Kangri village also functioned under the aegis of GKV library.

The Yoga Centre is being run by Shri Ishwar Bhardwaj, while Games and Sports and N.S.S. are being looked after by Prof. O.P. Mishra and Dr. B.D. Joshi.

Tree plantation programme was set off on 16-07-85; a large number of trees was planted in the campus. Most of the trees are growing. Trees were also planted at Kanwa Ashrama.

The Himalaya Ecological Environment Research Project was inaugurated on 29-08-85 by the then Chancellor Shri Virendra. The function was presided out by the eminent ecologist and winner of numerous awards, Shri Chandiprasad Ji. The Himalayan project has received from the Central Government grants amounting Rs. 319,700/- in the first phase. For this project a jeep and various other necessary instruments have been purchased. A team of competent young scientists is engaged in the onerous task under the direction of Dr. B. D. Joshi, Prof. and Head of Zoology. The

scientists of Eroject participated in the National Seminar on Himalayan Ecology held at Kotdwar from 19th to 21st February, 1986.

The Vishwavidyalaya made all round progress. It got two extension projects, the Integrated Study of the Ganga (Pollution) and the Himalayan Project to study the Ecology of the region. These projects functioned successfully under the Departments of Botany and Zoology respectively. During the period of Kumbha, the pollution of Ganga was studied at various places and the degree and quantum of pollution established at various ghats and bathing places due to baths, immersion of the dead, human excreta, city drains and the like This work was done under the direction of Dr. Vijay Shankar Saxena, Professor & Head Department of Botany, and was conducted by Dr. Sanghu.

Through the grants given by the U.G.C. this year, research dissertations were also published.

The construction of 8 Professors' residences has been completed. The construction of flats for non-teaching staff has been taken up and is progressing steadily. In the whole campus electric tubes were fitted and fixed thereby giving a bright look to the campus. The guest house was also completed and furnished. W.C.s were constructed in the VC lodge and the front portion was made pacca. The Employment Exchange Office set up by the U.P. Govt. has been running and guiding the students in securing suitable jobs. Games have improved; the hockey tournaments organised at the time of Shraddhanand Week were of a fairly high order. Shri Ishwar Bhardwaj was sent for getting intensive coaching in sports and games to the Sports Institute, Patiala.

Under the Adult Education Programmes, 55 Adult Education Centres were running, mainly in the rural areas. This work is at present being looked after by Dr. J.S. Senger, the newly appointed

co-ordinator. This programme has proved to be a boon for the removal of illiteracy in the neighbourhood of Hardwar.

Besides the removal of illiteracy, this programme also disseminates information regarding cleanliness, hygiene, environment, family planning, national integration, and great men of India. About one thousand illiterate persons are becoming literate under this programme. Under this project the U.G.C. has sanctioned a special grant-in-aid of Rs. 50,000/- for purchase of audio-visual aids and other items which have already been purchased.

The work of sample analysis of the Integrated Study of the Ganga Project reached new heights. During the Maha-Kumbha mela, samples of water from various bathing ghats were collected and pollution caused by bathing, excertion of human waste, immersion of the dead, drainage, etc. was studied and the degree and quantum of pollution established. The programme of planting new trees also progressed. These trees have been planted with a view to reducing. pollution. A nursery of plants has also been developed. In future this Project is planning to study the effect of animals found in water on water pollution.

Impressed by her personal observations, Mrs. Shah fulfilled the long-standing demand of Gurukula to treat the Kanya Gurukula (a degree level college for women only) at Dehradun as the second campus of Gurukula Kangri Vishwavidyalaya and officially grant it the status of a Constituent College of the Vishwavidyalaya. The Kanya Gurukula,Dehradun has now become a Constituent College and the second campus of Gurukula Kangri. Consequently, the Kanya Gurkula will extend its dimenions and activities, thereby adding to the strength of Aryan philosophy of education by opening new vistas for the would be mothers of India.

Mrs Madhuri Shah, the then Chairman of U.G.C., tried to impress upon the Gurukula authorities the urgent need of providing more facilities for women students who are not admitted to the

Vishwavidyalaya on the ground of Arya Samaj principles of not permitting co-education This year there was greater participation of private women students in the University examinations. They regularly utilized the University library and laboratories.

Extra-mural lectures of eminent scholars in the country were arranged in various departments through out the academic session, especially in the Science Faculty. A series of learned and informative lectures was delivered by Dr. Vimla Agarwal, Ex-Professor and Head of Psychology Department, Lucknow University. She also worked as a Fellow in the Department of Psychology.

Prof. Suresh Chandra Trivedi of Sardar Patel University, Ballabh Vidyanagar gave illuminating talks in the Department of Hindi on two days.

The Department of Philosophy also arranged a series of illustrious lectures by Dr. Harsh Narayan, Retd. Professor of Philosophy, Lucknow University, who was on the campus for about a month as a Visiting Fellow.

This winter, the Vishwavidyalaya organised a three-day All India Debate Competition in three languages, *viz.* Hindi, Sanskrit and English, to promote the art and skill of public speaking amongst the students. Some sixty outside teams from different Universities took part in the debate competitions.

Our Vishwavidyalaya team bagged the prestigious Kalidas Shield at the famous Ujjain All India Elocution Contest. The Vishwavidyalaya team of students has won this award several times in the past also. Shri Doodhpuri Goswami, a student of M.A. (Previous) in Philosophy of this Vishwavidyalaya got the first prize. Dr. Nigam Sharma, Reader of Sanskrit Department accompanied this team as a friend, philosopher, and guide.

On 27-02-1986 the students of this Vishwavidyalaya participated in the Sanskrit Debate held at Ambala. The GKV team got the Shield and Shri Harishankar Gahtori, a student of Vidyavinod (Part II) won the first prize.

On 20-02-1986 a Sanskrit Debate was organized in the Vishwavidyalaya on behalf of the Saraswati Parishad in which students from various Universities participated.

From time to time students from foreign countries join GKV as regular scholars for earning degrees and gathering knowledge in various disciplines. This year Mr. Jack Lewllyn, a Divinity Research Scholar of the Chicago University, has been sponsored by that University to carry research work on the topic *"The Fundamentalism of Arya Samaj and the present social relevance and involvement of the Arya Samaj in Indian Society."* Mr. Lewllyn is working for his Ph D. degree in the Department of Vedic Studies. Dr.Bharat Bhushan, Reader in Veda Department is guiding him and also teaching him Hindi.

Two students of Guyana joined the PG Departments of Vedic Studies and English Literature as regular students and successfully completed their courses earning their Master's Degree in the respective subjects. Thus Gurukula is playing a significant role in establishing a link with foreign universities and is making planned efforts to disseminate knowledge, particularly in the areas of Indology.

The academic life of Gurukula was enlivened and intellectually enriched by the three big conferences held during the session under the auspices of various departments.

In February, the Department of Ancient Indian History, Archaeology and Culture organized a National Conference on an exclusive and vital theme : *'The Original Homeland of the Aryans'*; The conference was attended by many eminent scholars of the subject from all over the country.

In the same month another Seminar on a large scale was organised by the Vishwavidyalaya on the current topic : *New Education—A Policy Perspective.*

A two-day paper reading session on *Challenge of Education* was organised in the beginning of the session in which almost all the teachers of the Vishwavidyalaya participated actively and read useful papers on the subject.

Another notable academic event of the session was the "All India Philosophical Conference' held for 3 days. It was attended by a large number of research scholars and professors from all over the country. Dr. Jai Dev Vedalankar, Head of the Philosophy Department as the local Secretary of the Conference was mainly responsible for the large participation of delegates and the over-all success of the conference. This conference was held from 6th March to 9th March 1986.

Yet a greater milestone was the first ever held UGC Summer Institute in Gurukula Kangri Vishwavidyalaya on "Psychological Traditions in India" which started from 25th June, 1986. It was inaugurated by Visitor Dr. Satyavrata Sidhantalankar, Ex-M.P and Vice-Chancellor. In his inaugural address he emphasized that whereas the psychologists of the West concentrated only on sex and money as the motivations and desires of human life, the Indian psychologists looked at life much more wholesomely. They incorporated in their theories a balance between mind and spirit and spoke of *dharma*, *artha*, *kama*, and *moksha*. The western psychologist Freud was of the opinion that suppression of sex instincts was harmful to human personality and created psychic problems in men and women and thus he recommended a kind of free sex. But Indian *munis* and *rishis*, the *Upanishads*, the *Vedas* and *Vedangas*, in brief, the Indian psychologists differed from him sharply. They held that human beings were the only animals that could control sex and could live a life of *brahmacharya*. So he urged upon the eminent psychologists and Professors of Psychology gathered from a number of Indian universities to emphasize before the modern world the well-established and healthy traditions of the Indian psychologists. This Summer Institute which was funded by UGC was a success mainly because of Dr. H.G. Singh, Professor of Psychology, who acted as its Director and took all possible pains to ensure its success.

There were some adverse currents too, because of rampant factionalism, leading to unpleasantness and litigation, thereby unnecessarily hampering the free flow of academic and administrative life at the campus. The services of the Vice-Chancellor (Shri S.K. Verma) had to be dispensed with.

Except these the campus remained calm and quiet. The academic work and examinations, teaching and research, extension and consolidation of educational work went on normally.

Established about thirty-five years ago the Archaeological Museum has in the recent years been elevated and upgraded. With the appointment of a Curator and a Museum Assistant, the Museum under the guidance of its Director Dr. B. C. Sinha has been given a face-lift. This year it was visited by about 13,000 people. Pacca pedestals, wooden and glass show-cases were built by spending about Rs. 20,000/-. A dozen new fans have been installed, and electricity arrangements improved at a cost of Rs. 15,000/-. An amount of about Rs. 70,000/- has been spent on its modernization and maintenance. Swami Shraddhananad Gallery is a recent and unique addition to the Museum. The Museum contains ocher coloured wares, copper hoards, painted grey wares, rare manuscripts, coins, idols, statues, weapons and other exhibits of India's past and present. The Museum contains the following sections : (1) Terracotta Section, (2) Sculpture Section, (3) Coins Section, (4) Painting Section, (5) Pottery Section, (6) Copper-hoard Section, (7) Arms Section, (8) Astadhatu Section, (9) Manuscript Section, and (40) Miscellaneous Section.

The Shraddhanand Gallery attached to the Museum is indeed very inspiring. It contains the *Padukas* (shoes), clothes, *Kamandala* and rare photographs of the varied faces of Swamiji's colourful life and forms an important link in the history of Indian Freedom Struggle. Swamiji is known to have laid his chest bare before British soldiers in the Chandni Chowk, Delhi while leading a procession of *Satyagrahis* on the call of Mahatma Gandhi in April 1919. As a non-Muslim, Swamiji had also the unique privilege to have been invited to pay homage to the martyrs of historic movement from the pulpit of the prestigious Jama Masjid of Delhi.

His tell-tale photograph when he later acted as the Chairman of the Reception Committee of the 1919 Amritsar Congress Session is a proud possession of the GKV Museum. With him are seated stalwarts of the national movement such as Pandit Motilal Nehru, Mahamana Pandit Madan Mohan Malvidya, Mrs. Annie Besant and also Pt. Jawaharlal Nehru, then a young man, on the threshold of his political career.

During 1985-86 the GKV registered constant growth and consolidated step by step the programmes envisaged and launched in the Plan document approved by the U.G.C. It went ahead firmly towards a qualitative change. It was out of the eddies of economic and ethical difficulties of the past and could go ahead in its work of teaching, research and extension without any kind of disturbances, strikes or *dharnas*. The Annual Examinations of 1985 were conducted peacefully and results were announced in time, giving a clean start for the new academic session. Similarly the Exams of 86 were over in time. Towards the close of the session Professorships in the Departments of English and Psychology through selection were instituted. Dr. R. L. Varshney was appointed Professor of English and Dr. H. G. Singh was appointed Professor of Psychology in June, 1986. Besides Dr. J. S. Senger's appointment as the Co-ordinator of Adult Education, a few other appointments were also made in the teaching and non-teaching sections of the University to tone up the administration and bring about efficiency. Dr. Tandon, Professor of Botany left the University to join his parent Pantnagar University and Dr. Bhagwant Kumar, Lecturer in Philosophy, left the University to join Ravi Shankar University, Raipur. Shri S. K. Verma, after having served the GKV as its Vice-Chancellor for about five months, was no more in the saddle, he joined Delhi University as Professor of Sanskrit in March 1986. He was succeeded by Sri R. C. Sharma, a senior retired I.A S. Officer of Uttar Pradesh.

For the Convocation of 1981, Justice Shri H. R. Khanna of the Supreme Court of India came to the Gurukula. Whereas he mentioned the great traditions and contributions of this institution towards national service, he expressed satisfaction at the new turn of events. Thereafter three consecutive Convocations were

addressed by the Speaker of Lok Sabha, Hon'ble Shri Balram Jhakar; President of India, Shri Giani Zail Singh and the famous Arya Sanyasi Dr. Satyaprakash Saraswati, D. Sc., respectively and this helped in retrieving the glory of the institution. Whereas the Convocation of 1985 was addressed by Shri Bhardwaj, the Convocation of 1986 was addressed by the Visitor of GKV, Dr. Satyavrata Sidhantalankar, Ex-M.P., Ex-Vice-Chancellor of GKV and a scholar of repute. In his convocation address he wanted the Gurukulites to spread Gurukula culture, the culture of ancient India and bring into eminence the features of Gurukula system of education such as the close relationship between the teacher and the taught, *brahmacharya* and character-building. He also wished for a transition in accordance with the change of time, hence to produce graduates who would enter various professions and would establish high ideals of honesty and efficiency and would uproot corruption. Self-reliance and fairness should be hall-marks of our graduates. He also advised to lay emphasis on vocationalization.

ओ३म्

८६वाँ

वार्षिक विवरण

१९८६-

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

विजिटर	—डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, विद्यामार्तण्ड
कुलाधिपति	—श्री वीरेन्द्र, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (३१-८-८५ तक)
	—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार (१-९-८५ से)
कुलपति	—श्री बलभद्रकुमार हूजा, आई०ए०एस०(अ.प्रा.) (१-९-८५ तक)
	—श्री सत्यकाम वर्मा (२-९-८५ से १-२-८६ तक)
	—श्री रामप्रसाद वेदालंकार (२-२-८६ से २१-३-८६ तक—का०बा०)
	—श्री रामचन्द्र शर्मा, आई० ए० एस० (अ०प्रा०) (२२-३-८६ से)
विधि परामर्शदाता	—श्री सोमनाथ मरवाहा, सीनियर एडवोकेट
कोषाध्यक्ष	—श्री सरदारीलाल वर्मा
उपकुलपति एवं आचार्य	—श्री रामप्रसाद वेदालंकार
प्रिंसिपल, विज्ञान महाविद्यालय	—श्री सुरेशचन्द्र त्यागी
आचार्या, कन्या गुरुकुल देहरादून	—श्रीमती दमयन्ती कपूर
कुलसचिव	—श्री वीरेन्द्र अरोड़ा
उप-कुलसचिव	—डा० श्यामनारायण सिंह
वित्त अधिकारी	—श्री बी०डी० भारद्वाज
संग्रहालयाध्यक्ष	—डा० बी०सी० सिन्हा
पुस्तकालयाध्यक्ष	—श्री जगदीशप्रसाद विद्यालंकार

सम्पादक मण्डल

विषय-सूची

क्र०सं०	विषय	पृष्ठ सं०
१.	आमुख	अ
२.	गुरुकुल कांगड़ी—संक्षिप्त परिचय	१
३.	दीक्षान्त-समारोह पर कुलपति का प्रतिवेदन	८
४.	विजिटर डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार द्वारा दीक्षान्त-भाषण	१५
५.	वेद तथा कला महाविद्यालय	२०
६.	वेद विभाग	२४
७.	संस्कृत विभाग	२६
८.	दर्शन शास्त्र विभाग	३४
९.	मनोविज्ञान विभाग	३९
१०.	प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग	४२
११.	पुरातत्व संग्रहालय	४६
१२.	अंग्रेजी विभाग	५२
१३.	हिन्दी विभाग	५६
१४.	गणित विभाग	५८
१५.	भौतिक विज्ञान विभाग	६०
१६.	रसायन विभाग	६२
१७.	जन्तु विज्ञान विभाग	६९
१८.	हिमालय शोध योजना	७६
१९.	वनस्पति विज्ञान विभाग	८०
२०.	राष्ट्रीय सेवा योजना	८२
२१.	पुस्तकालय विभाग	८४
२२.	कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून	९०
२३.	राष्ट्रीय छात्र सेना (एन०सी०सी०)	९३
२४.	क्रीड़ा एवं योग विभाग	९४
२५.	कांगड़ी ग्राम विकास योजना	९७

आमुख

(वार्षिक विवरण १ जुलाई १९८५ से ३० जून १९८६ तक)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अपने स्थापना-काल के ८६ वर्ष पूरे कर रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जिन भारतीय जीवन-मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए इस संस्था की स्थापना की थी, उनके प्रचार-प्रसार में इसके संरक्षक, कुलपति, प्राध्यापक तथा ब्रह्मचारी निरन्तर यत्नशील रहे हैं। उच्चतम अध्ययन और अनुसन्धान के अलावा गुरुकुल, सामाजिक पुनरुत्थान, ग्रामोद्धार, प्रसार-कार्य तथा राष्ट्र की मौलिकता की रक्षा के लिए अपनी परिधियाँ छोड़कर बाहर निकला है और आज उसके कार्यों की दिशाएँ बहुमुखी हुई हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की तत्कालीन अध्यक्षा ४ नवम्बर, १९८५ को गुरुकुल पधारीं। विश्वविद्यालय द्वारा संचालित योजनाओं और शैक्षिक गतिविधियों तथा अनुशासित परिसर को देखकर उन्होंने संतोष प्रकट किया। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य, प्राच्य विद्या तथा पुरातात्त्विक अध्ययन के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के विषयों का भी उच्च अध्ययन और शोधकार्य होना चाहिए तथा विश्वविद्यालय को २५ साल लम्बी दीर्घकालीन विकास योजना बनानी चाहिए।

१ फरवरी १९८६ को डा० सत्यकाम वर्मा को कुलपति पद से पदच्युत कर दिया गया। [illegible] फरवरी से २१ मार्च तक प्रो० रामप्रसाद कुलपति के पद पर कार्यरत रहे। विधिवत नियुक्त होने पर श्री रामचन्द्र शर्मा (अवकाशप्राप्त आई० ए० एस०) ने विश्वविद्यालय को प्राचीन और नवीन का अपूर्व संगम बनाने हेतु २२ मार्च, १९८६ को कुलपति का पद-भार सम्भाला। इस वर्ष का दीक्षान्त समारोह श्री शर्मा जी ने अपने कुलपतित्व में सफलतापूर्वक सम्पन्न कराया।

विश्वविद्यालय को पर्यावरण विभाग, भारत सरकार से गंगा के समन्वित अध्ययन के लिए, डा० विजय शंकर के निर्देशन में शोधकार्य के लिये ६,३७,०००/- रुपये का अनुदान मिला है तथा प्रौढ़ शिक्षा के लिये भारत सरकार से ६० केन्द्र चलाने के लिए सहायता राशि प्राप्त हुई है। हरिद्वार के निकटवर्ती गांवों—बहादुरपुर जट्ट, जमालपुर, अम्बूवाला, सराय, जगजीतपुर, कांगड़ी, श्यामपुर, गाजीवाला, पीली, कनखल तथा बी०एच०ई०एल० के केन्द्रों पर साक्षरता का कार्य तेजी से चल रहा है। विश्वविद्यालय के प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं प्रसार कार्य के लिए यू०जी०सी० से पचास हजार रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ, जिससे आडियो-विजुअल उपकरण खरीदे गये। योजना के अन्तर्गत ऋषिकेश से गढ़मुक्तेश्वर तक गंगा के दोनों तटों पर बसे हुए ग्रामों के समन्वित विकास की सम्भावनाओं

का अध्ययन किया जा रहा है। साथ ही जल, भूमि, प्रदूषण एव अपरदन आदि समस्याओ का वैज्ञानिक समाधान खोजा जा रहा है। इस वर्ष कुम्भ के अवसर पर अनेक स्नान-घाटों से जल के नमूने एकत्र करके, स्नान करने से उत्पन्न गगा मे प्रदूषण का अध्ययन किया गया। इसी प्रकार हिमालय प्रोजेक्ट के लिए इस वर्ष लगभग ३ लाख १६ हजार ७०० रुपये का अनुदान, प्रथम किस्त के रूप मे प्राप्त हुआ है। यह प्रोजेक्ट डा० बी०डी० जोशी के निर्देशन में गतिशील है। इसमें एक जीप और अन्य उपकरण खरीद लिये गये हैं। इस योजना का श्रीगणेश २६ अगस्त, १९८५को श्री वीरेन्द्र जी, तत्कालीन कुलाधिपति के द्वारा किया गया। इसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध पर्यावरणशास्त्री श्री चण्डीप्रसाद जी ने की।

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि इस वर्ष विश्वविद्यालय मे तीन मुख्य सम्मेलन हुए। फरवरी मे इतिहास विभाग ने 'आर्यों के मूल स्थान पर' एक राष्ट्रीय सम्मेलन किया। इसी माह "नई शिक्षा नीति" पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। सत्र के प्रारम्भ मे "वेलज ऑव एजुकेशन" पर एक पेपर-रीडिंग सेशन हुआ। एक अन्य महत्वपूर्ण सम्मेलन–"अखिल भारतीय दार्शनिक कान्फ्रेन्स" मार्च ८६ में डा० जयदेव वेदालंकार के निर्देशन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ (५-८ मार्च)।

इस बार विश्वविद्यालय मे पहली बार "भारत मे मनोवैज्ञानिक परम्पराएँ" पर १५ दिन का एक यू०जी०सी० समर इन्स्टीट्यूट मनोविज्ञान विभाग के प्रोफेसर हरगोपाल जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इन सभी सम्मेलनो के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने धनराशि दी।

छठी योजनान्तर्गत अनुदान आयोग ने दस विभागो मे प्रोफेसर पद निर्मित करने की स्वीकृति दी थी। अधिकाश पदों पर योग्य विद्वानो की नियुक्तियाँ की गयी। अग्रेजी विभाग मे डा० राधेलाल वार्ष्णेय प्रोफेसर नियुक्त किये गये और मनोविज्ञान विभाग मे डा० हरगोपालसिंह को नियुक्ति की गई। इसी प्रकार शिक्षकेतर विभाग मे भी नवीन नियुक्तियाँ की गई।

इस वर्ष दीक्षान्त समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, भू०पू० कुलपति तथा भू० पू० ससद्-सदस्य ने भाषण दिया। इस समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालकार जी ने की। वेद सम्मेलन, राष्ट्र-निर्माण सम्मेलन भी हुए। दीक्षान्त समारोह में श्री सोमनाथ मरवाह, एडवोकेट तथा श्री सरदारीलाल जी वर्मा भी उपस्थित थे।

माइक्रोबायलोजी में एम०एस-सी० को कक्षाएँ प्रारम्भ की गईं। विश्व-विद्यालय के रसायन विभाग में एकवर्षीय कार्मेशियल मेथडस् ऑव कैमिकल

एनालिसिस का भी पी०जी० डिप्लोमा कोर्स प्रारम्भ किया गया है। इसके साथ ही योग का डिप्लोमा कोर्स भी चल रहा है। पुस्तकालय का विकास एव आधुनिकीकरण किया गया तथा पुस्तकों एवं पत्रिकाओं की संख्या में वृद्धि की गई। विश्वविद्यालय के कैम्पस में बिजली की ट्यूब लगवाकर रोशनी का प्रबन्ध किया गया। प्रोफेसरों के लिए मकान बनवाये गये और उनमें बिजली-पानी की व्यवस्था हुई। अब वे आवास के लिए तैयार हैं। शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के मकान भी निर्माणाधीन हैं। अतिथि-भवन का निर्माण-कार्य और साज-सज्जा पूर्ण हुई।

अपार हर्ष का विषय है कि कन्या गुरुकुल देहरादून इस वर्ष से इसी विश्व-विद्यालय का दूसरा कैम्पस बन गया है। नवम्बर मास में मण्डलीयस्तर पर गढ़वाल में सम्पन्न राष्ट्रीयगान प्रतियोगिता में कन्या गुरुकुल देहरादून की छात्राओं ने प्रथम स्थान प्राप्त करके रनिंग शील्ड प्राप्त की। दिसम्बर मास में जिलास्तर पर आयोजित पल्लव-भाव-गीत प्रतियोगिता में छात्राओं ने प्रथम स्थान प्राप्त करके शील्ड प्राप्त की। इसी प्रकार अनेक छात्राओं ने जिलास्तर, मण्डलीयस्तर तथा प्रादेशिकस्तर पर अनेक खेल-कूद प्रतियोगिताओं में भाग लिया और विजयश्री प्राप्त की। २५ छात्राओं ने राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत शिविर में भाग लिया और स्वयं-सेविकाओ के कार्यक्रम पूरे किये। इस शिविर में छात्राओं ने सड़क का निर्माण और सफाई अभियान भी चलाया।

विश्वविद्यालय के छात्रों ने उज्जैन की प्रसिद्ध 'कालिदास शील्ड', संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में प्राप्त की और विश्वविद्यालय के छात्र श्री दूधपुरी गोस्वामी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार अम्बाला में हुई संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के छात्रों ने शील्ड प्राप्त की और श्री हरिशंकर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। शिकागो विश्वविद्यालय के एक शोधार्थी श्री जैक लैबलिन विश्वविद्यालय में अनुसन्धान कर रहे हैं।

इसी प्रकार विश्वविद्यालय में वन-महोत्सव, एन० एस० एस० तथा एन०सी०सी० के प्रोग्राम सफलतापूर्वक चले तथा विद्यार्थियों ने शिविरों में भाग लिया।

इस वर्ष प्राध्यापकों के प्रकाशित ग्रन्थों और लेखों में वृद्धि हुई। उन्होंने अनेक सेमिनारों तथा सम्मेलनों में भाग लिया। डा० विनोदचन्द्र सिन्हा ने यू०जी०सी० के राष्ट्रीय फेलो का कार्य समाप्त करके पुनः इतिहास विभाग में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद सम्भाल लिया। साथ-ही पत्रिकाओं के प्रकाशन भी पुनः प्रारम्भ कर दिये गये हैं। विश्वविद्यालय के अध्यापकों ने आल इण्डिया रेडियो से अपने भाषण भी प्रसारित किये।

दर्शन विभाग में इस वर्ष अनेक प्रकार की शैक्षणिक उपलब्धियाँ रही हैं। ६ मार्च से ६ मार्च तक अखिल भारतीय दर्शन परिषद् का ३०वाँ अधिवेशन इसी विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुआ। इसी विभाग में राष्ट्रीय दार्शनिक सम्मेलन "विश्व की प्रमुख ज्वलन्त समस्याओं का दार्शनिक निदान" विषय पर सम्पन्न हुआ। दर्शन विभाग में डा० हर्ष नारायण, रिटायर्ड प्रोफेसर, शिलांग, विजिटिंग फेलो के रूप में पधारे और उनके कई व्याख्यान अनेक दार्शनिक विषयों पर हुए। इन आयोजनों के लिए डा० जयदेव वेदालंकार विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र हैं।

वेद विभाग में अनुसन्धान के क्षेत्र में आशातीत प्रगति हुई। वेद विभाग, वैदिक मन्त्रों के उच्चारणों और यज्ञ के वैज्ञानिक परीक्षणों के कार्य का आधुनिक-वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर अध्ययन कर रहा है। वैदिक यज्ञों, यज्ञपात्रों तथा याज्ञिक सामग्री के प्रदर्शन के लिए वेद संग्रहालय बनाया जा रहा है। संस्कृत विभाग में बाहर के विद्वानों ने भाषण दिये तथा अनुसन्धान कार्य में प्रगति हुई।

इस वर्ष हिन्दी विभाग में केन्द्रीय निदेशालय द्वारा संचालित, अहिन्दी-क्षेत्रीय विद्वानों द्वारा हिन्दी क्षेत्र में दी जाने वाली भाषणमाला योजना के अन्तर्गत गुजरात के हिन्दी आचार्य डा० सुरेशचन्द्र त्रिवेदी के चार व्याख्यान हुए। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के आचार्य डा० त्रिभुवनसिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी आचार्य तथा अध्यक्ष डा० महेन्द्र कुमार एवं पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० धर्मपाल मैनी विश्वविद्यालय में पधारे तथा विद्यार्थियों को अनुसन्धान प्रक्रिया से परिचित कराया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय सगोष्ठी में "भारतेन्दु और दयानन्द" पर हमारे हिन्दी के प्रोफेसर डा० विष्णुदत्त राकेश ने विशेष वक्ता के रूप में भाषण दिया।

विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद्, कार्य परिषद्, शिक्षा पटल, वित्त समिति, योजना पटल तथा विकास समिति की बैठकें नियमित रूप से सम्पन्न हुई। शिक्षा पटल में राजस्थान के रसायनशास्त्री एवं पूर्व कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय डा० आर० सी० मेहरोत्रा, काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति डा० राजाराम शास्त्री तथा योजना पटल में श्री आर०के० छाबड़ा, पूर्व-सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मनोनीत हुए। चयन समिति में विजिटर के नोमिनी के रूप में श्री आर०एस० चितकारा को सदस्य बनाया गया।

अन्त में, मैं भारत सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों तथा स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारू रूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ते रहे हैं।

—वीरेन्द्र अरोड़ा
कुलसचिव
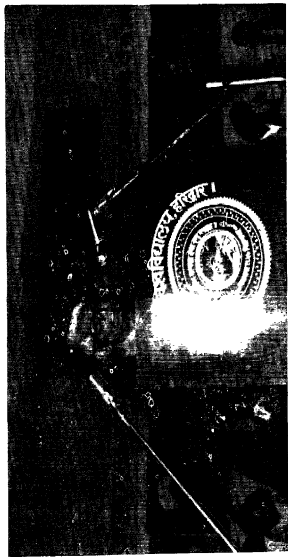
मुख्य अतिथि डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, विजिटर विश्वविद्यालय दीक्षान्त-भाषण देते हुए।

कुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार दीक्षान्त-समारोह में नवस्नातकों को आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं।
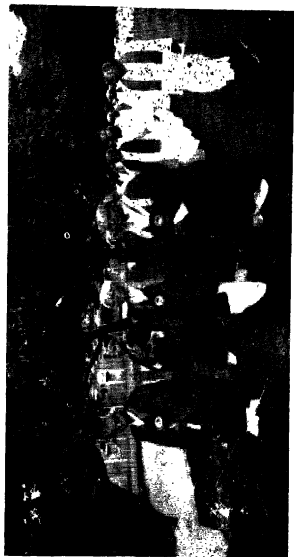
दीक्षान्त समारोह के अवसर पर शोभा-यात्रा का एक दृश्य ।

नवस्नातक और अधिकारीगण दीक्षान्त-यज्ञ करते हुए ।

गुरुकुल कांगड़ी—संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवी शताब्दी की उषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी आरम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नयी स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १६०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलों से एक नये पौधे का रोपण किया। यही नन्हा-सा पौधा आज ८६ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुन: धरती में सँजो लिया और फिर उन्हीं शाखाओं से नयी टहनियाँ फूट आई। यह पौधा गुरुकुल कांगडी, जिसकी स्थापना गंगा के पूर्वी तट पर, हरिद्वार के निकट कागड़ी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धि एव उपयोगिता से भारतवर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१६वी शताब्दी में लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा-पद्धति चलाई जो उनके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहाँ इंग्लैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहाँ भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढे हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षा-स्थलों पर पाठशालायें चल रही थी। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत-साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया जिसमें दोनों शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनो के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलाञ्जलि दी जा सके। अत: गुरुकुल की प्रारम्भिक योजना में सस्कृत-साहित्य और वेदाग की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्सन्देह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र मे आई इस मानसिक क्रान्ति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी विचार थे जिन्हें वे मूर्त्तरूप प्रदान करना चाहते थे। इनमें ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धों पर बल था।

कुछ वर्षों बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिल्कुल नहीं थी। गुरुकुल के उपाध्यायों ने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो० महेशचरण सिह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो० रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन की भौतिकी और रसायन, प्रो० सिन्हा का वनस्पति शास्त्र, प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान, हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रन्थ हैं। प्रो० रामदेव ने मौलिक अनुसधान कर अपना प्रसिद्ध "भारतवर्ष का इतिहास" प्रकाशित किया।

१९१२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनों स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नहीं, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुकों में सी०एफ०ए० एन्ड्रूज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत सिडनी वेब और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मैक्डानेल्ड उल्लेखनीय है।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नहीं हुआ जब तक संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आँखों से देखने नहीं गये। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९०७ के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष, और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह संग्राम में गुरुकुल ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान किया। इसी भावना को देखकर महात्मा गांधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है जिसमें महात्मा गाधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गये।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप मुलतान, कुरुक्षेत्र, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानों पर गुरुकुल खोले गये। बाद में झज्जर, देहरादून, भटिंडा, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गये। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा-सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार करके गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरु किये।

१४ वर्ष तक, अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१९२१ में गुरुकुल, विश्वविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे :

(१) वेद महाविद्यालय
(२) साधारण (कला) महाविद्यालय
(३) आयुर्वेद महाविद्यालय
(४) कृषि महाविद्यालय

बाद में एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमें जोड़ दिया गया।

(१) **बाढ़**—१९२४ में गंगा में भयंकर बाढ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गई। अतः निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाये जहाँ पर इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। इसके लिये हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर, ज्वालापुर के समीप गंग नहर के किनारे, हरिद्वार बाई पास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

१९२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक आगन्तुक विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गांधी, पं० मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ जमनालाल बजाज, डा० मुंजे साधुवर, वासवानी आदि उल्लेखनीय है। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता रहा। १९२१ से प० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए पर १९२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गये।

पं० विश्वम्भरनाथ जी के बाद १९२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १९०५ में गुरुकुल आये थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्न से लाखों रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारतें बननी शुरु हुई। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक प० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १९३५ में सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार

गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं० अभयदेव जी शर्मा विद्यालकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १९४२ में स्वास्थ्य खराब होने के कारण पं० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर प० इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १९४३ मे चले गये। उनके स्थान पर प० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १९५० में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालों में श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुर दास जी, महाशय कृष्णजी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार, कुँवर चाँदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय है। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १९५३ में प० धर्मपाल विद्यालकार, सहायक मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं० जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे और उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस वर्ष पर एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई, जिसका नाम है "गुरुकुल कांगड़ी के ६० वर्ष"। २० वर्ष से भी अधिक कुलपति एव मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्ही के समय १९६२ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। ८ विषयों मे एम०ए० कक्षाएँ विधिवत् शुरू हुई। अब चार विषयों में पी-एच०डी० (शोध-व्यवस्था) भी है। इन्ही के समय १९६६ में डा० गगाराम जो प्रथम पूर्णकालीन कुलसचिव, जो अग्रेजी विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी, जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६९ मे गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों में संशोधन हुआ। इनके बाद श्री रघुवीरसिंह शास्त्री तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति बने।

गुरुकुल को स्थापित हुए ८५ वर्ष हो गये हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान किया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्य में आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकाओं के माध्यम से हम शैक्षिक एवं सास्कृतिक क्षेत्र में काफी योगदान कर रहे है। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपने मातृग्राम कागड़ो को अगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिये पूर्व कुलपति श्री हूजा जी ने ५००/- रुपये का दान भी सघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एव ग्राम जगजीतपुर को भी अंगीकृत किया है और स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक चेतना, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही है :

विद्यालय—प्रथम कक्षा से १०वीं कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाण-पत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय—प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक। उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद और संस्कृत में एम० ए० और पी-एच० डी० की उपाधियाँ प्राप्त करने की व्यवस्था है।

साधारण महाविद्यालय—इसमें प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालकार की स्नातक उपाधि दी जाती है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास एव सस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अंग्रेजी में एम०ए० तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी-एच०डी० उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी, मनोविज्ञान तथा अंग्रेजी विषयों में प्राप्त की जा सकती है।

विज्ञान महाविद्यालय—इसमें प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी०एस-सी० की उपाधि प्रदान की जाती है। सम्प्रति भौतिकी, रसायन, वनस्पति शास्त्र, जन्तु विज्ञान, माइक्रोबायोलाजी और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है। स्नातकोत्तर कक्षाएँ केवल गणित एवं माइक्रोबायलोजी मे चल

रही हैं। इसके अतिरिक्त रसायन विज्ञान द्वारा रासायनिक विश्लेषण पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाया जा रहा है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून—यू०जी०सी० द्वारा इस वर्ष से कन्या गुरुकुल महाविद्यालय को विश्वविद्यालय का एक अंगभूत महाविद्यालय स्वीकृत कर लिया गया है। अब इसका निकट भविष्य में तेजी से विस्तार होने की सम्भावना है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी—यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ी फार्मेसी है। बिक्री लगभग एक करोड़ रुपये है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों तथा जनकल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय जो गुरुकुल के भवन है उनका अनुमानतः मूल्य डेढ़ करोड़ रुपये से कही ऊपर है। इन भवनों में वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियों के आवास-गृह सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त जो भूमि है इसका भी अनुमानतः मूल्य १ करोड़ रुपये से कम नहीं है।

(४) सम्प्रति डा० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय के विजिटर हैं और डा० सत्यकेतु विद्यालंकार गुरुकुल कागड़ी विश्व-विद्यालय के कुलाधिपति है तथा श्री आर०सी० शर्मा, आई०ए०एस० (अवकाश प्राप्त) इसके कुलपति हैं।

विश्वविद्यालय के विजिटर महोदय को भी राष्ट्रपति पुरस्कार तथा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी से अपने लेखन-कला के क्षेत्र में पुस्तकों पर पुरस्कार मिल चुका है। श्री कुलाधिपति जी भी इस संस्था को बनाने में जो अथक् प्रयत्न कर रहे है वे आज हमारे सामने है और उससे काफी प्रतिष्ठा मिल रही है एवं गुरुकुल प्रगति की ओर द्रुतगामी गति से अग्रसर हो रहा है।

विश्वविद्यालय परिसर में श्री बलभद्र कुमार हूजा का कुलपति के रूप में सेवाकाल समाप्त होने पर दिनांक २-९-८५ को उनको भावभीनी विदाई दी गई तथा उनके स्थान पर श्री सत्यकाम वर्मा का कुलपति के रूप में हार्दिक स्वागत हुआ तथा उनकी कार्य अवधि ३१-१-८६ तक रही। इसके अनन्तर कुलपति का दायित्व श्री रामप्रसाद वेदालंकार ने सम्भाला। वे इस पद पर १-२-८६ से २१-३-८६ तक रहे।

सम्प्रति कुलपति श्री आर०सी० शर्मा के नेतृत्व में विश्वविद्यालय अपनी नानाविध योजनाओं से निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

विश्वविद्यालय द्वारा योग का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र भी गत दो वर्षों से चल रहा है। इसके अतिरिक्त क्रीडा विभाग द्वारा छात्रों को विभिन्न अन्तर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु भी प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त वेद, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय के निर्धन छात्रों को आंशिक रोजगार देने का कार्यक्रम भी पुस्तकालय के माध्यम से गत दो वर्षों से चल रहा है।

भारत सरकार के पर्यावरण विभाग द्वारा विश्वविद्यालय को दो प्रोजेक्ट भी स्वीकृत किये गये है। गंगा समन्वित योजना एवं हिमालय पर्यावरण योजना, जिसके अन्तर्गत पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया जा रहा है। साथ ही शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रदत्त प्रौढ़-शिक्षा का कार्यक्रम भी निष्ठा एवं सफलता के साथ चल रहा है।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उप-कुलपति

दीक्षान्त-समारोह पर

कुलपति का प्रतिवेदन

अर्चनीय संन्यासीवृन्द, मान्यवर परिद्रष्टा महोदय, श्रद्धेय कुलाधिपति जी, माताओं, सज्जनों तथा ब्रह्मचारियों :

मुझे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की इस पुण्य-भूमि में आप सभी का स्वागत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। इस महाकुम्भ के अवसर पर जहाँ एक ओर लाखों नर-नारी पतित पावनी गंगा के किनारे आध्यात्मिक लाभ उठाने के लिए एकत्र हो रहे हैं, वही दूसरी ओर सरस्वती की ज्ञान-गंगा में डुबकी लगाकर हमारे १३० नव-स्नातक कार्य-क्षेत्र में पदार्पण कर रहे है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये नव-दीक्षित स्नातक अपने जीवन-क्षेत्र में अपने आचार, व्यवहार और कृतित्व द्वारा गुरुकुल माता और भारत माता का सिर सदा ऊँचा उठाए रखने की चेष्टा करते रहेंगे।

प्रिय बन्धुओ,

इस वर्ष दीक्षान्त भाषण के लिये हमारे मध्य सुप्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री एवं वैदिक विद्वान डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार उपस्थित है । श्री सिद्धान्तालंकार ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के श्रीचरणों में बैठकर विद्याध्ययन किया है। गुरुकुल के विख्यात स्नातकों में वे अग्रणी रहे हैं। समाज-सेवा, स्वतन्त्रता आन्दोलन, अध्यापन तथा बहुआयामी लेखन के क्षेत्र मे उनकी सेवाएँ उल्लेखनीय हैं। सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन ने उनकी असाधारण विद्वत्ता से प्रभावित होकर उन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया था। समाजशास्त्र तथा नृतत्व शास्त्र जैसे विषयों पर हिन्दी मे विश्वविद्यालय स्तर के ग्रन्थ लिखने वाले वे पहले व्यक्ति है। आपके एकादशोपनिषद् भाष्य की प्रशंसा डा० राधाकृष्णन तथा गीता भाष्य की प्रशसा प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने की थी। पजाब सरकार ने आपकी साहित्यिक सेवाओं के लिये चण्डीगढ में एक दरबार आयोजित कर आपका सार्वजनिक सम्मान किया। वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार तथा संस्कार चन्द्रिका आपके अन्य विशिष्ट ग्रन्थ है। राजगोपालाचार्य पुरस्कार, मंगलाप्रसाद पुरस्कार, गंगाप्रसाद उपाध्याय

कुलपति प्रो० आर०सी० शर्मा (अवकाशप्राप्त आई०ए०एस०) नवस्नातकों को उद्बोधित कर रहे है।
साथ में प्रो० वीरेन्द्र अरोड़ा कुलसचिव खड़े हैं।

विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार तथा विश्वविद्यालय के कानूनी सलाहकार श्री सोमनाथ मरवाहा के साथ कुलसचिव श्री वीरेन्द्र अरोड़ा तथा उपकुलसचिव डा० श्यामनारायण सिंह

कुलपति जी दीक्षान्त समारोह पर उपाधि-वितरण करते हुए ।

दीक्षान्त समारोह पर यज्ञ का एक दृश्य ।

कुलपति श्री आर०सी० शर्मा, कुलसचिव श्री वीरेन्द्र अरोड़ा से विचार-विमर्श मे सलग्न ।

विश्वविद्यालय के उच्च-अधिकारी—कुलाधिपति, उपकुलपति, कुलपति तथा कुलसचिव-दीक्षान्त वेला पर ।

पुरस्कार तथा राष्ट्रपति पुरस्कारों से सम्मानित होने वाले ऐसे अद्भुत मनीषी को अपने बीच पाकर हमारा प्रसन्न होना स्वाभाविक ही है। गुरुकुल को विश्वविद्यालय का दर्जा दिलाने में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। गुरुकुल के उत्थान के लिये आपके हृदय में विशेष तड़प है। हमारे नव-स्नातक सौभाग्यशाली है कि उन्हें आशीर्वाद देने के लिये इस विश्वविद्यालय के पुराने स्नातक, जो कुलपति भी रहे और परिद्रष्टा भी, आज यहाँ पधारे है। मैं डा० सत्यव्रत जी का विशेष रूप से आभारी हूँ कि उन्होंने हमारी प्रार्थना स्वीकार की।

विश्वविद्यालय की वार्षिक प्रगति और विकास के अवलोकन का यह उचित अवसर है। पूर्व में विश्वविद्यालय की बहुमुखी प्रगति हुई। इस संस्था को समन्वित गंगा योजना तथा हिमालय इकलोजोकल योजनाएँ प्राप्त हुई। प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ और माइक्रोबायलोजी मे एम.एस-सी. की परीक्षाएँ प्रारम्भ की गई। इसके साथ ही योग का डिप्लोमा कोर्स भी प्रारम्भ किया गया। पुस्तकालय का विकास एव आधुनिकीकरण किया गया। प्रोफेसरों के लिये मकान बनाये गये। जिमनाजियम हाल बनाया गया और खेल-कूद के क्षेत्र में विशेष प्रगति हुई। अनेक राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन तथा विचार सगोष्ठियां आयोजित की गई।

इस वर्ष फिजिक्स में एम. एस-सी. कक्षाएँ इसी जुलाई से खोलने का प्रयास किया जा रहा है। हमारी योजना रोजगारी पाठ्यक्रम चलाने की है ताकि यहाँ से शिक्षा पाने के बाद छात्र, जीवन में रचनात्मक कार्यो के साथ-साथ रोजगार भी प्राप्त कर सकें और साथ ही साथ अपनी संस्कृति की रक्षा और चरित्र-निर्माण में भी सलग्न रहे। जुलाई १९८६ से 'डिप्लोमा कोर्स इन कम्प्यूटर साइन्स' खोलने की योजना है। शिक्षा का तात्पर्य छात्र का बहुमुखी विकास है, अस्तु छात्रों के शारीरिक और मानसिक विकास हेतु सभी सम्भव प्रयत्न किये जा रहे हैं। मान्य कुलाधिपति डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार के अथक परिश्रम, ज्ञान और अनुभव के आधार पर विश्वविद्यालय में 'वैदिक तथा इण्डोलोजिकल अध्ययन तथा अनुसंधान संस्थान' खोलने का सकल्प लिया गया है। इसका उद्देश्य वेदों तथा सम्बन्धित साहित्य की व्याख्या करना है; प्राचीन भारतीय इतिहास, दर्शन तथा संस्कृति में अनुसधान की सुविधा प्रदान करना है, संस्कृत भाषा, व्याकरण तथा साहित्य के उच्चतम अध्ययन की सुविधाएँ प्रदान करना तथा विश्व के महान धर्मो का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। इस संस्थान द्वारा प्रकाशन, अनुवाद, वैदिक शब्दार्थकोष आदि की भी व्यवस्था की जाएगी। वैदिक संस्थान के प्रारम्भ करने का अनुग्रह पूर्व कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा पजाब का भी रहा है।

मुझे आप सबको सूचित करते हुए अपार हर्ष होता है कि कन्या गुरुकुल देहरादून इस वर्ष से इसी विश्वविद्यालय का दूसरा कैम्पस बन गया है। इसकी मान्यता भारत सरकार तथा यू. जी. सी. से प्राप्त हो गई है। मैं शिक्षा मन्त्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को इस स्वीकृति के लिये आप सबकी ओर से धन्यवाद देता हूँ। इसी सत्र से कन्या गुरुकुल में बी. एड. कक्षाओं की स्वीकृति हेतु यू. जी. सी. से पुन: अनुरोध किया जा रहा है।

हरिद्वार की जनता की माँग को दृष्टिगत रखते हुए हरिद्वार में ही विश्वविद्यालय से बाहर विज्ञान की शिक्षा हेतु एक कन्या महाविद्यालय खोलने के लिये प्रयास जारी रहेगा।

जैसा कि आपको विदित है, कुछ वर्ष पूर्व गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वेद कालेज, उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने आधीन ले लिया था। हमारा प्रयास यह होगा कि इस कालेज का इन्तजाम सरकार से वापिस लेकर यहाँ एक उच्चतम आयुर्वेद पीठ की स्थापना करें जिसमें स्नातकोत्तर अध्ययन के अतिरिक्त उच्चकोटि के अनुसंधान की व्यवस्था हो।

विश्वविद्यालय का प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम लगातार प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है। निरक्षरता उन्मूलन के अतिरिक्त यह कार्यक्रम सफाई, पर्यावरण का महत्त्व, परिवार नियोजन के लाभ, देश की स्वतन्त्रता और अखण्डता बनाये रखने में महापुरुषों द्वारा किए गए योगदान आदि की सूचना भी देता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के ५४ केन्द्र यथा-सम्भव कार्य कर रहे है। इस कार्यक्रम की सफलता को देखकर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विश्व-विद्यालय को ५०,००० रुपये का विशेष अनुदान आडियो विजुअल एडस् खरीदने हेतु दिया है, जिससे वी. सी. आर., रंगीन टेलीविजन, स्लाइडस्, प्रोजेक्टर आदि क्रय किये गये है।

फरवरी माह में अनुदेशकों हेतु एक रिफरेशर प्रशिक्षण भी आयोजित किया गया। इस कार्य को अधिक गति देने के लिये यह योजना भी बनायी गई कि सलाहकार समिति के ७-७, ८-८ सदस्य केन्द्रों पर जाकर अभिभावक की तरह निरीक्षण करें तथा आवश्यक सुझाव दें।

गंगा समन्वित योजना का सैम्पलिंग, विश्लेषण आदि कार्य दिन-प्रतिदिन उन्नति पर है। कुम्भ मेले को दृष्टिगत रखते हुए गंगाजल का, विशेषकर स्नान-स्थानों का सैम्पलिंग प्रत्येक स्नान-पर्व पर लिया जाता रहा है। नये पौधे उगाने का कार्यक्रम भी प्रगति पर है। यह पौधे प्रदूषण कम करने की दृष्टि से उगाए गए

हैं। इस विभाग द्वारा एक नर्सरी भी विकसित की गई है। गंगा के विभिन्न प्रदूषण स्रोतों का पता लगाया गया है तथा अनेक स्थानों से जल के नमूने एकत्रित करके प्रयोगशाला में उनका विश्लेषण किया गया है। भविष्य में जल के अन्दर पाए जाने वाले जीव-जन्तुओं का जल के प्रदूषण में क्या स्थान है—इस विषय पर अनुसधान करने की योजना है। गंगा के किनारे स्थित श्मशान घाटों की राख तथा अधजले शरीर के हिस्से जो गगा में फेंक दिये जाते है, उनके प्रभाव से गंगा-जल की गुणता किस सीमा तक प्रभावित होती है, इस पर आधारित एकत्र किए गये आंकड़ों की समीक्षा की जा रही है।

'हिमालय इकलोजिकल योजना' के अन्तर्गत आवश्यक उपकरण और एक जीप खरीद लिये गये है। इस पर लगभग २.२० लाख रुपये खर्च किये जा चुके है। विश्वविद्यालय तथा कण्वाश्रम में वन महोत्सव मनाया गया, पेड़ लगाये, तथा कोटद्वार में १९ फरवरी से २१ फरवरी तक हिमालय पर्यावरण विषय पर राष्ट्रीय गोष्ठी में विश्वविद्यालय के हिमालय शोध योजना के निदेशक डा० जोशी सहित योजना के अन्य शोधकर्मियों ने भाग लिया।

नवम्बर मास में मण्डलीय स्तर पर गढ़वाल में होने वाली राष्ट्रीय गान प्रतियोगिता में कन्या गुरुकुल देहरादून की छात्राओं ने प्रथम स्थान प्राप्त करके रनिग शील्ड प्राप्त की। दिसम्बर मास में जिला स्तर पर आयोजित पल्लव भावगीत प्रतियोगिता में छात्राओं ने प्रथम स्थान प्राप्त करके शील्ड प्राप्त की। इसी प्रकार अनेक छात्राओं ने जिला स्तर, मण्डलीय स्तर तथा प्रादेशिक स्तर पर अनेक खेल-कूद प्रतियोगिताओं में भाग लिया और विजयश्री प्राप्त की। २५ छात्राओं ने राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत शिविर में भाग लिया और स्वयं-सेविकाओं के कार्य पूरे किये। इस शिविर में छात्राओ ने सड़क का निर्माण और सफाई अभियान भी चलाया।

विश्वविद्यालय के रसायन विभाग में एकवर्षीय कार्मशियल मैथडस् ऑव कैमिकल एनेलिसिस का भी पी०जी० डिप्लोमा कोर्स प्रारम्भ किया गया है। रसायन विभाग के प्रवक्ता डा० रणधीरसिंह को रुड़की विश्वविद्यालय का वार्षिक खोसला पुरस्कार अन्य वैज्ञानिकों के साथ सामूहिक रूप से १-३-८६ को केन्द्रीय मन्त्री श्री पी०वी० नरसिम्हाराव द्वारा प्रदान किया गया। डा०अक्षय कुमार इन्द्रायण का आकाशवाणी नजीबाबाद से ४-३-८६ को एक्सटेन्शन कार्य सम्बन्धी एक क्विज प्रोग्राम प्रसारित हुआ।

हेली पुच्छल तारा देखने हेतु विश्वविद्यालय को एक तीन इंच को दूरबीन भी केन्द्रीय सरकार द्वारा दी जा रही है।

वेद विभाग ने अनुसंधान के क्षेत्र में आशातीत प्रगति की। वेद विभाग वैदिक मन्त्रों के उच्चारण और यज्ञ के वैज्ञानिक परीक्षणों के कार्य का आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर अध्ययन कर रहा है। वैदिक यज्ञों, यज्ञपात्रों तथा याज्ञिक सामग्री के प्रदर्शन के लिए वेद-संग्रहालय बनाया जा रहा है। संस्कृत विभाग में बाहर के विद्वानों ने भाषण दिए तथा अनुसंधान कार्य में प्रगति हुई।

दर्शन विभाग में इस वर्ष अनेक प्रकार की शैक्षणिक उपलब्धियाँ रही हैं। ६ मार्च से ६ मार्च तक अखिल भारतीय दर्शन परिषद् का ३०वां अधिवेशन इसी विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुआ। इसी विभाग में राष्ट्रीय दार्शनिक सम्मेलन 'विश्व की प्रमुख ज्वलन्त समस्याओं का दार्शनिक निदान' विषय पर सम्पन्न हुआ। दर्शन विभाग में डा० हर्ष नारायण, रिटायर्ड प्रोफेसर शिलाग, विजिटिंग फेलो के रूप में पधारे और उनके कई व्याख्यान अनेक दार्शनिक विषयों पर हुए। इन आयोजनों के लिये डा० जयदेव वेदालकार विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र है।

इस वर्ष हिन्दी-विभाग में केन्द्रीय निदेशालय द्वारा सचालित अहिन्दी क्षेत्रीय विद्वानों द्वारा हिन्दी-क्षेत्र में दी जाने वाली भाषणमाला योजना के अन्तर्गत गुजरात के हिन्दी आचार्य डा० सुरेशचन्द्र त्रिवेदी के चार व्याख्यान हुए। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के आचार्य डा० त्रिभुवन सिह, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी आचार्य तथा अध्यक्ष डा० महेन्द्र कुमार एव पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० धर्मपाल मैनी विश्वविद्यालय में पधारे तथा विद्यार्थियों को अनुसंधान प्रक्रिया से परिचित कराया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय सगोष्ठी मे 'भारतेन्दु और दयानन्द' पर हमारे हिन्दी के प्रोफेसर डा० विष्णुदत्त राकेश ने विशेष वक्ता के रूप में भाषण दिया।

मनोविज्ञान विभाग में क्लीनिकल कोर्सेस खोलने की योजना है। अंग्रेजी विभाग मे एक लैंग्वेज लेबोरेटरी की स्थापना की गई है। अग्रेजो विभाग के रीडर डा० आर०एल० वार्ष्णेय का एक भाषण 'सोवियत संघ में हिन्दी का स्थान' ४ अगस्त को आल इण्डिया रेडियो से प्रसारित हुआ। इस विभाग में अनुसधान में भी प्रगति हुई और विभाग के डा० श्रवण कुमार एव श्री अजय शर्मा ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग समर इन्स्टीट्यूट मेरठ में भाग लिया। इसी विभाग के डा० वार्ष्णेय तथा डा० श्रवण कुमार ने मेरठ विश्वविद्यालय में डी०एच० लारेंस पर हुए एक सेमिनार में भी भाग लिया। विश्वविद्यालय के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक सर्वश्री डा० हरगोपाल सिह,

डा० विजय शंकर, डा० विष्णुदत्त राकेश आदि बधाई के पात्र हैं। वैदिक पथ तथा अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन पुनः शुरु कर दिया गया है।

इस वर्ष गणित विभाग का प्रसार किया गया। इस विभाग में अब दो प्रोफेसर है। इसमें पी-एच०डी० खोलने की योजना है। वनस्पति विभाग मे भी दो प्रोफेसर है। इस विभाग के अन्तर्गत गंगा समन्वित योजना भी चल रही है। भौतिक विभाग में एम०एस-सी० के अतिरिक्त कम्प्यूटर कोर्स भी शुरु किया जा रहा है। जूलोजी विभाग में माइक्रोबायलोजी की एम०एस-सी० कक्षाएँ प्रारम्भ कर दी गई है और पर्यावरण तथा इकालोजी पर सराहनीय कार्य हो रहा है।

गुरुकुल का एक प्रमुख दर्शनीय खण्ड गुरुकुल का पुरातत्त्व संग्रहालय है। इसमें अभिलेख शास्त्र तथा मुद्राशास्त्र की विविध दुर्लभ तथा रोचक सामग्री प्रदर्शित है। जनसाधारण को दिखाने के उद्देश्य से प्रचुर ऐतिहासिक सामग्री वीथिकाओं में सजाई गई है।

संग्रहालय के साथ जुड़े हुए श्रद्धानन्द कक्ष की प्रगति भी उल्लेखनीय है। इसमें पूज्य स्वामी जी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमण्डल तथा दुर्लभ चित्र सुरक्षित है। इस स्मृति कक्ष में भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास की एक स्वर्णिम कड़ी के रूप में स्वामी जी के भव्य व्यक्तित्व की अद्भुत झाँकी मिलती है। अब यहाँ अष्टधातु तथा चित्रकक्ष की भी स्थापना हो गई है। छटी योजना के अन्तर्गत गुरुकुल विश्वविद्यालय में उत्खनन विभाग खोलने की स्वीकृति हमें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त हुई है। अतः आगामी योजना मे हम इस ओर दत्तचित्त होकर अग्रसर होंगे। इसके साथ ही इस योजना मे गंगा संग्रहालय स्थापित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। पुरातत्त्व विभाग के अध्यक्ष डा० विनोद चन्द्र सिन्हा को अनुदान आयोग ने राष्ट्रीय प्रोफेसर नियुक्त करके सम्मानित किया है।

गुरुकुल पुस्तकालय तो उत्तर भारत के गिने-चुने पुस्तकालयों में एक है। यहाँ धर्म, दर्शन, इतिहास तथा मानविकी और विज्ञान की दुर्लभ पुस्तकें तथा पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित हैं। विभिन्न विषयो पर एक लाख से अधिक पुस्तकें विद्यमान है जिनका उपयोग देश-विदेश के शोधार्थी करते है। राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता के निदेशक तथा गुरुकुल कागड़ी के पूर्व विजिटिंग फेलो डा० डी०आर० कालिया के अनुभव से लाभ उठाकर पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जगदीश विद्यालंकार पुस्तकालय को अप-टू-डेट बनाने की दिशा में प्रयत्नशील है।

एन०सी०सी० का कार्य मेजर वीरेन्द्र अरोड़ा कर रहे है। पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी एन०सी०सी० का सफल कैम्प उनके नेतृत्व में लगा।

आपको यह जानकर भी प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष तमिल कक्षाएँ खोलने हेतु तमिलनाडु सरकार से यथेष्ट धनराशि उपलब्ध कराई गई है। आशा है इस दिशा में आगामी सत्र से कार्यारम्भ हो जायेगा।

गुरुकुल सिस्टम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय अखण्डता, समाज-सेवा, मानव जाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन, सामाजिक तथा लोकतान्त्रिक न्याय, सामूहिक कार्य चेतना, ज्ञान की खोज एव प्रसार जैसे उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकता है। गुरुकुल में विगत वर्षों में हम इन्ही मूल्यों की खोज का यत्न करते रहे हैं। इस दिशा में अपने सीमित साधनों के बावजूद जहाँ एक ओर आश्रम व्यवस्था का सुधार किया गया वहाँ ब्रह्मचारियों के आध्यात्मिक विकास के लिये व्रताभ्यास, योगाभ्यास तथा वेदमन्त्र पाठ पर अधिकाधिक बल दिया गया।

गुरुकुल की उपलब्धियों के लिए मैं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, आकाशवाणी नजीबाबाद, विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद, कार्य-परिषद तथा शिक्षा पटल के मान्य सदस्यगण के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। उन्होंने समय-समय पर हमें अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया तथा हमारा मार्ग-दर्शन किया। इसके साथ ही मैं स्थानीय प्रशासन को भी धन्यवाद देता हूँ, उन्होंने यहाँ व्यवस्था बनाये रखने मे अपना पूर्ण सहयोग दिया।

मैं इस अवसर पर अपने आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा स्टाफ को भी धन्यवाद देना चाहूँगा जिनकी मेहनत और लगन से ये सब उपलब्धियाँ हो सकीं। मैं कुलसचिव, उपकुलसचिव तथा वित्ताधिकारी एवं उनके स्टाफ के सहयोग का भी आभारी हूँ।

इस वर्ष पी-एच० डी० की ५, एम० ए० की ५, एम० एस-सी० की ६७, बी०एस–सी० की ४१ तथा अलंकार की १७ उपाधियाँ प्रदान की गई है।

—आर० सी० शर्मा
आई० ए० एस० (रिटायर्ड)
कुलपति

विजिटर डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार (पूर्व संसद्-सदस्य)

द्वारा

दीक्षान्त-भाषण

श्री कुलाधिपति जी, श्री कुलपति जी, अध्यापकवृन्द, उपस्थित महानुभावो, देवियों तथा नवदीक्षित युवास्नातकवृन्द !

आप सभी तथा समस्त मानव जाति के सुख और समृद्धि की कामना करते हुए मैं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, कुलपति एवं अधिकारियों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ कि आपने मुझे दीक्षान्त-भाषण देने के लिए आमन्त्रित किया। मेरा सम्बन्ध इस विश्वविद्यालय से अत्यन्त लम्बा तथा पुराना है। मैं यहाँ विद्यार्थी के रूप में सात वर्ष की आयु में आया था। मैंने यहाँ १४ वर्ष अध्ययन किया, दो बार मैं इसका कुलपति तथा पिछले ६ वर्षों से इसका परिद्रष्टा रहा हूँ। इसलिए मुझे गुरुकुल से विशेष प्रेम है। मेरी आधी से अधिक आयु गुरुकुल से सम्बन्धित रही है। मुझे यहाँ की एक-एक ईंट प्रिय है। मेरे मन, बुद्धि और आचार-विचार पर गुरुकुल का अमिट प्रभाव रहा है।

वैदिक-धर्म हमारी सभ्यता, संस्कृति, दर्शन, आचार, मर्यादाओं आदि का आधार है जिसके बिना हम खड़े नहीं रह सकते। यही हमें विश्वबन्धुत्व का सन्देश मिलता है। आप बड़े सौभाग्यशाली हैं कि आपकी शिक्षा-दीक्षा इस सुरम्य संस्था में हुई है। गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली की स्थापना वैदिक आदर्शों को आधार बना कर हुई है। गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली भी अन्य शिक्षा-प्रणालियों की तरह अपने ढंग की एक विशेष शिक्षा-प्रणाली है। जिस प्रकार मौन्टसरी शिक्षा-प्रणाली, वर्धा-योजना या प्रोजेक्ट-सिस्टम नाम से विविध शिक्षा-प्रणालियाँ हैं, उसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द ने ऋषि दयानन्द से प्रेरणा लेकर इस प्रणाली की स्थापना की थी। गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं—गुरु-शिष्य का दिन-रात का घनिष्ठ सम्बन्ध, ब्रह्मचर्य तथा चरित्र-निर्माण। गुरुकुल-प्रणाली के अतिरिक्त अन्य किसी शिक्षा-प्रणाली में चरित्र-निर्माण को

इतनी अधिक प्राथमिकता तथा महत्ता नहीं दी गई। यह कहना कि अन्य शिक्षा-प्रणालियों मे चरित्र-निर्माण को कोई स्थान नही, गलत होगा, परन्तु इसमें सन्देह नही कि गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली ही ऐसी प्रणाली है जिसके विषय में कहा जा सकता है कि इस शिक्षा-प्रणाली का मुख्य उद्देश्य पुस्तक-शिक्षा के साथ-साथ चरित्र-निर्माण करना है।

गुरुकुल का अर्थ है गुरु का कुल, गुरु का परिवार। यहां विद्यार्थी माता-पिता के 'कुल' से 'गुरु' के कुल में प्रवेश करता है। एक छोटे और सीमित परिवार से निकल कर एक विशद् और सार्वभौम परिवार में प्रविष्ट होता है, जहाँ वह माता-पिता के परिवार की सीमाओं को लाँघकर समाज के हर युवा को अपना समकक्ष तथा परिवार का अंग समझता है। क्योंकि आपकी शिक्षा-दीक्षा उक्त आदर्शों की सर्वश्रेष्ठ संस्था में हुई है अतः आप पुनः-पुनः बधाई के पात्र हैं। आपके कुलपति और कुलाधिपति और अधिकारियों से भी कहूँगा कि आप अपने अन्तेवासियों को वैदिक-संस्कृति के आदर्शो को जीवन मे उतारने की प्रेरणा दें और ऐसे छात्र उत्पन्न करे जो जात-पाँत जी सीमाओं को लाँघकर, ऊँच-नीच के भेद को भुलाकर एक ऐसे समाज का निर्माण करे जिसमें 'संगच्छध्वं-संवदध्वं' का आदर्श क्रियात्मक रूप धारण करे और जिसमें चरित्र-निर्माण को शिक्षा का आदर्श समझा जाये।

परिवर्तन प्राकृतिक नियम है। बीज अंकुरित होकर वृक्ष बनता है, पुष्पित-फलित होकर शीतलता, छाया, फूल-फल प्रदान करता है। अतः संस्थाओं में भी युगानुरूप परिवर्तनों की आवश्यकता होती है। गुरुकुल की स्थापना के समय हमारी शिक्षा क्रान्तिकारी वातावरण में हुई थी जिसमें शिक्षा का उद्देश्य ऐसे युवक उत्पन्न करना था जो स्वावलम्बी हो और स्वतन्त्रता के लिए विदेशी सरकार से लोहा ले सके। परन्तु आज स्थिति बदल गई है। इस स्वतन्त्रता के युग में हमें ऐसे युवक उत्पन्न करने की आवश्यकता है जो ऊँचे सरकारी पदो पर आसीन होकर अपनी उत्कृष्ट चारित्रिक विशेषताओं के कारण सरकार के सहयोगी बनकर देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, अन्धकार, पारस्परिक कलह-द्वेष को दूर करके, राष्ट्र की एकता और समृद्धि में सहायक बनें। इसलिए जहां एक ओर चारित्रिक उच्चता तथा वैदिक-संस्कृति के जन-जन के जीवन मे व्याप्त होने की आवश्यकता है, वहाँ इस प्रकार के पाठ्यक्रमों और अध्ययन-अध्यापन की आवश्यकता है जिसमे यहाँ के छात्र हर प्रकार के सरकारी पदों पर आसीन हों, वे आई०ए०एस०, पी०सी०एस०, भारतीय रक्षा-सेवाओं, डाक्टरी, इंजीनियरी तथा अन्य क्षेत्रों में उच्च स्थान प्राप्त कर, देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर कर सकें।

स्वतन्त्रता से पूर्व गुरुकुल सरकारी अनुदान नहीं लेता था। वह आत्मनिर्भर था। यह आत्मनिर्भरता विद्यार्थियों को भी मिली थी। उन्होंने अपने पैरों पर खड़े होना सीखा। जब व्यक्ति आत्मनिर्भर होता है, दूसरे के सहारे पर नहीं, अपने सहारे पर खड़ा होता है, तब उसके भीतर से शक्ति उत्पन्न होती है जो उसे सब बाधाओं से लड़ने की शक्ति प्रदान करती है। यही कारण है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व के समय के गुरुकुल के छात्र अनेक क्षेत्रों में उच्च स्थान और अप्रत्याशित ख्याति प्राप्त कर सके। पत्रकारिता के क्षेत्र में प इन्द्र विद्यावाचस्पति, आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार, अवनीन्द्रकुमार विद्यालकार, कृष्णचन्द्र विद्यालंकार, आनन्द विद्यालंकार, क्षितीश विद्यालंकार, सतीश विद्यालकार जैसे अनेक प्रकाश-स्तम्भ गुरुकुल ने दिए। आयुर्वेद के क्षेत्र मे गुरुकुल का जितना योगदान है उतना ससार की किसी भी शिक्षण-सस्था का नही है। मेरी मनोकामना है कि हमारे हाथ से निकल गया आयुर्वेद महाविद्यालय फिर हमारे विश्वविद्यालय का अंग हो और यहाँ आयुर्वेद मे उच्चतम अनुसधान हो। मुझे पूर्ण आशा है कि हमारे नवीन कुलपति इस दिशा मे उद्योग करेंगे और इस उद्योग में शीघ्र ही सफल होंगे। इतिहास के क्षेत्र में डा० प्राणनाथ विद्यालकार, श्री जयचन्द्र विद्यालकार, डा० सत्यकेतु विद्यालकार तथा प्रोफेसर हरिदत्त वेदालकार जैसे प्रकाण्ड पण्डित गुरुकुल ने प्रदान किये है। इनके द्वारा लिखी गई पुस्तकें समस्त भारत मे पढ़ाई जाती हैं। सस्कृत तथा वैदिक अध्ययन के क्षेत्र मे भी गुरुकुल ने अनेक प्रतिभाये दी है। स्वामी अभयदेव विद्यालकार, पं जयदेव विद्यालंकार, बम्बई के सत्यकाम विद्यालकार, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, रामनाथ वेदालंकार तथा अन्य अनेक स्नातक वेद के उच्च कोटि के विद्वान् है। उपन्यास तथा कहानी के क्षेत्र में भी हमारे स्नातकों प० इन्द्र विद्यावाचस्पति, प चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, सत्यपाल विद्यालंकार, प० विद्यानिधि विद्यालकार, श्री विराज विद्यालंकार, डा० सत्यकेतु विद्यालकार, की देन चिरस्मरणीय है।

पुरातन स्नातकों ने जो कार्य किया है उसकी तुलना यदि किसी-भी विश्वविद्यालय के स्नातकों के कार्य से की जाये तो स्पष्ट हो जायेगा कि उनकी देन प्रतिशत की दृष्टि से अत्यधिक तथा विशिष्टतम है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व गुरुकुल के छात्र परिस्थिति से लड़ते हुए आत्म-निर्भर हुए और उन्होंने जीवन में अपने आत्म-बल से जीवन का रास्ता सफलता-पूर्वक बनाया तथा तय किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद यद्यपि हमारे रास्ते तथा उद्देश्यों में बदलाहट हुई, और इस बदलाहट में मेरा ही मुख्य हाथ रहा है, तथापि मैं अनुभव करने लगा हूँ कि हम गुरुकुल के मुख्य आधारभूत सिद्धान्तों से दूर होते जा रहे है। आप क्षमा करे, गुरुकुल का जो वर्तमान रूप होता जा रहा है वह अन्य कालेजों से भिन्न नहीं रहा। गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के जिन आधारभूत

सिद्धान्तों को लेकर इस संस्था की स्थापना हुई थी, हम उन्हें भूलते जा रहे हैं। कहाँ है वह गुरु-शिष्य का दिन-रात का आधारभूत सम्बन्ध ? कहाँ है वह 'कुल' की, 'परिवार' की भावना ? कहाँ है वह हमारी प्राचीन परम्परा ? कहाँ है वह लगन ? गुरुकुल में परिस्थितिवश परिवर्तन आना आवश्यक है, इसमें सन्देह नही, परन्तु अपने आधारभूत सिद्धान्तो को खाकर नही। उन सिद्धान्तों को सप्राण तथा सजग रखते हुए हमें परिवर्तन लाना है। गुरुकुल को ऐसा रूप देना है जिससे यहाँ के कार्यकर्त्ता सिर्फ बाहर के छात्रों की भर्ती कर सन्तुष्ट न हो जायें, परन्तु अपने बच्चों को भी यहीं भर्ती करें। मुझे यह देखकर दुःख होता है कि गुरुकुल की सभा के संचालक भी अपने बच्चों को यहाँ भर्ती नही करते, न यहाँ के अध्यापक ही अपने बच्चों को यहा भर्ती करते हैं। दिल्ली पब्लिक स्कूल या सैन्ट्रल स्कूलों की बसें गुरुकुल के कार्यकर्त्ताओं के बच्चों के लिये यहाँ आती हैं और उन्हे गुरुकुल से बाहर के स्कूलों में शिक्षा के लिये ले जाती हैं। इसका यह अर्थ है कि गुरुकुल की सभा के सचालक तथा गुरुकुल के अध्यापक भी स्वयं यहाँ की शिक्षा से सतुष्ट नही हैं। मैं गुरुकुल के सचालकों से अनुरोध करूँगा कि जो कमी वे यहाँ अनुभव करते हैं, उसे वे स्वयं दूर क्यों नही कर देते। अगर यहाँ की पाठविधि में कोई कमी है तो उसे दूर करना आपके हाथ में है। अब तो विदेशी शासन नहीं है, अपना शासन है, आप अपनी सरकार से भरपूर सहायता लेते है, जो सहायता आपको नहीं मिलती वह भी यत्न करने पर मिल सकती है। अपना दृष्टिकोण बदलिये और ऐसा पग उठाइये ताकि हर व्यक्ति गुरुकुल में अपने बच्चे की भर्ती ही न करे, अपितु भर्ती करने के लिये उत्सुक हो जाये।

गुरुकुल को सरकारी मान्यता प्राप्त हुई है, परन्तु यह मान्यता उस गुरुकुल को नही दी गई जिसमें बी०ए०, एम०ए० की डिग्री दी जाती है। बी०ए०, एम०ए०, पी०एच–डी० की डिग्री दीजिये, परन्तु यत्न कीजिये कि यहाँ से जो छात्र निकलें वे इन डिग्रियों के साथ गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के आधारभूत सिद्धान्तों से ओत-प्रोत हों। यह आपका लक्ष्य होना चाहिये।

मेरे सामने भविष्य के गुरुकुल का यह सपना है कि गुरुकुल से ऐसे स्नातक निकलें जिनका तपस्यामय जीवन हो, जो हिन्दी में पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी की तरह शुद्ध हिन्दी लिख-बोल सकें, जो सस्कृत में उव्वट तथा ऋषि दयानन्द जैसा उच्चतम संस्कृत का ज्ञान रखते हों, जो अंग्रेजी में शेक्सपीयर तथा मैकाले की कोटि के हों, जो विज्ञान में श्री सतीश धवन तथा प्रो० यशपाल सरीखे वैज्ञानिक हों, जो हर क्षेत्र में उच्च से उच्चतर शिखर को छू सकें। उड़ान लीजिये तो ऊँची उड़ान लीजिये। सब कुछ संभव है। जो आज असभव तथा कठिन प्रतीत होता है वह प्रयत्न करने पर कालान्तर में संभव तथा सुगम हो जाता है। एक भव्य भवन को बनाने के लिए उसकी नींव को दृढ़ करना होता

है। अगर हम मानव-समाज के भवन को सुदृढ नींव पर खड़ा करना चाहते हैं, तो उसकी नींव को सबसे पहले दृढ़ करना होगा। हमारी शिक्षा-संस्था की नींव वह है जहाँ से बालक शिक्षा-जगत में बाल्यकाल में प्रवेश करता है। आप अगर अपने विद्यालय विभाग को दृढ़ कर सकें तो सम्पूर्ण संस्था अपने आप उन्नति के मार्ग पर चल पड़ेगी। गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के आधारभूत सिद्धान्तों को आदर्श तक पहुँचाने के लिए आपको विद्यालय विभाग को दृढ़ करना होगा। गुरुकुल का विश्वविद्यालयीय रूप तभी उभरेगा जब आपका विद्यालय विभाग इतना उन्नत हो जायेगा कि लोग अपने बच्चों को यहाँ भर्ती ही नहीं करेंगे, भर्ती करने के लिये उत्सुक होंगे, तब हमें बाहर से एक छात्र भी नहीं लेना पड़ेगा। हमारे विश्वविद्यालय में वही छात्र होंगे जो हमारे विद्यालय विभाग की शिक्षा-दीक्षा में से गुजर कर आयेंगे।

मेरा अनुरोध है कि आज के बदलते युग में आप गुरुकुल के रूप को ऐसा बदलिये कि यहाँ के आदर्शों, यहाँ की भावनाओं, यहाँ के रंग में रंगे हुए छात्र ही आपके महाविद्यालय विभाग में प्रविष्ट हों, आपको बाहर से छात्र लेने की आवश्यकता न हो, और वे ही छात्र स्नातक बन कर समाज में प्रविष्ट हों, जो हिन्दी—संस्कृत के पण्डित हों, अंग्रेजी के उच्चकोटि के विद्वान हों, और इस योग्यता के साथ-साथ वे किसी जिले में मजिस्ट्रेट बनें, किसी जगह इन्सपैक्टर जनरल आँव पुलिस हों, किसी जगह कर्नल हों, कमाण्डर हों और किसी जगह सरकारी उच्च पदों पर आसीन हों। देश की माँग है और आवश्यकता है कि ऐसी शिक्षा में दीक्षित व्यक्ति ही देश के कोने-कोने में व्याप्त हो जाये। जैसे किसी युग में विदेशी सरकार से विद्रोह करने वाले स्वतन्त्रता-सेनानियों की आवश्यकता थी जिसे गुरुकुल ने पूरा किया, वैसे ही आज देश को ऐसे सरकारी-सेनानियों की आवश्यकता है जो देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, ईर्ष्या-द्वेष, कलह, भेद-भाव को अपने आदर्श क्रियात्मक-जीवन से दूर कर सकें जिसे गुरुकुल जैसी प्राचीन आदर्शों से ओत-प्रोत संस्था ही पूरा कर सकती है। परन्तु इस स्थिति पर पहुँचने के लिए हमें अपने आपको बदलना होगा। खड़ा पानी सड़ जाता है, बहता पानी तरोताज़ा रहता है और गन्दगी को दूर कर देता है। इस बदलाहट के विषय में किसी ने ठीक ही कहा है—

'तू भी बदल ए गाफिल जमाना बदल गया।'

वेद तथा कला महाविद्यालय

१—वेद महाविद्यालय (शिक्षक)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
वेद	१	२ (१ पद रिक्त)	२	५
संस्कृत	२(रिक्त)	२	२	५

२—कला महाविद्यालय (शिक्षक)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
इतिहास	१	२	२	५
हिन्दी	२	१ (रिक्त)	२	५
मनोविज्ञान	२	१	२	५
दर्शन	१ (रिक्त)	१	३	५
अंग्रेजी	१	२	३ (१ पद रिक्त)	६

३—वेद महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर)

(१) श्री वीरेन्द्रसिह असवाल, लिपिक
(२) श्री हंसराज जोशी, सेवक
(३) श्री बलवीरसिह, सेवक
(४) श्री रामसुमत, माली

४—कला महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर)

(१) श्री ईश्वर भारद्वाज, प्र० शा० शि० (२) श्री महेन्द्रसिह नेगी, कनिष्ठ सहायक (३) श्री लालनर सिह, प्रयोगशाला सहायक (४) श्री कुंवर सिंह, सेवक (५) श्री हरेन्द्रसिह, सेवक (६) श्री प्रेमसिह, सेवक (७) श्री रामपद राय, सेवक (८) श्री मानसिह, पहरेदार (९) श्री जगन, सफाई कर्मचारी (१०) श्री संतोष राय, फील्ड अटेंडेंट।

५—इस वर्ष सत्र १६-७-८५ से आरम्भ हुआ। दि० १-८-८५ से नये सत्र की पढ़ाई आरम्भ हुई। अलंकार तथा विद्याविनोद में छात्र-संख्या निम्न प्रकार से है :-

कक्षा	विषय	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	योग
विद्याविनोद	वेद वर्ग	५	१	६
विद्याविनोद	कला वर्ग	७	३	१०
विद्यालंकार		८	३	११
वेदालंकार		३	३	६

६—दि० ५-८-८५ को प्रातः ११-१५ बजे विश्वविद्यालय भवन में वृक्षारोपण समारोह सम्पन्न हुआ।

७—दि० १५-८-८५ को स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष में ध्वजारोहण समारोह मनाया गया। इसके मुख्य अतिथि तत्कालीन कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी हूजा थे।

८—दि० २७-८-८५ को मनोविज्ञान विभाग के तत्वावधान में डा० विमला अग्रवाल का भाषण 'सामाजिक विकास एवं युवा मूल्य' पर हुआ।

९—दि० २९-८-८५ को विश्वविद्यालय भवन में हिमालय पर्यावरण शोध योजना का उद्घाटन तत्कालीन कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इसके मुख्य अतिथि प्रख्यात पर्यावरण शास्त्री एव १९८२ में मेगसेयसे पुरस्कार विजेता श्री चण्डीप्रसाद जी थे। सभा की अध्यक्षता तत्कालीन कुलपति श्री हूजा जी ने की।

१०-दि० ५-९-८५ को विश्वविद्यालय भवन में शिक्षक-दिवस मनाया गया। इसके संयोजक श्री वेदप्रकाश शास्त्री, रीडर संस्कृत विभाग थे।

११-दि० १०-९-८५ को मनोविज्ञान विभाग के तत्वावधान में डा० विमला अग्रवाल, भूतपूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग लखनऊ का व्याख्यान "मतदाता-व्यवहार का मनोविज्ञान" विषय पर व्याख्यान हुआ।

१२-दि० ७-१०-८५ को हिन्दी विभाग के तत्वावधान में प्रोफेसर सुरेशचन्द्र त्रिवेदी, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बल्लभ विद्यानगर का "गुजराती साहित्य और संस्कृति" विषय पर एक व्याख्यान हुआ। दि० ८-१०-८५ को "इतिहास और साहित्य इतिहास" विषय पर भी व्याख्यान हुआ।

१३-दि० ४-११-८५ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा श्रीमती माधुरी शाह पधारीं। उनके सम्मान में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारी उपस्थित हुए।

१४-दि० ७-११-८५ को विश्वविद्यालय में "शिक्षा की चुनौती" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकों, कर्मचारियों तथा छात्रों ने भाग लिया।

१५-दि० २३-११-८५ से होने वाले उज्जैन विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में इस विश्वविद्यालय के छात्र भाग लेने गये, जिसमें श्री दूधपुरी गोस्वामी, एम०ए०-प्रथम वर्ष (दर्शन) ने प्रथम स्थान प्राप्त कर व्यक्तिगत पुरस्कार प्राप्त किया। इनके साथ विभाग के प्राध्यापक डा० निगम शर्मा भी संरक्षक के रूप उज्जैन में गये।

१६-दि० २३-१२-८५ को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष में श्रद्धानन्द द्वार से शोभा-यात्रा निकली और वेद मन्दिर में एक सभा के रूप में परिवर्तित हुई। इसके पश्चात् अन्य वर्षों की भाँति इस वर्ष भी हाकी टूर्नामेंट का आयोजन किया गया।

१७-दि० ३१-१-८६ को प्रा० भा० इतिहास विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

१८-दि० १५-२-८६ को डी० ए० वी० शताब्दी समारोह समिति नई दिल्ली की ओर से एक भव्य शोभा-यात्रा का आयोजन किया गया, इसमें विश्वविद्यालय के शिक्षकों तथा छात्रों ने भाग लिया।

१९-दि० २०-२-८६ को सरस्वती परिषद् की ओर से संस्कृत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इसमें विभिन्न विश्वविद्यालय तथा कालेज के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

२०-दि० २७-२-८६ को अम्बाला में सम्पन्न संस्कृत प्रतियोगिता में इस विश्व-विद्यालय के छात्रों ने भाग लिया, जिसमें श्री हरिशंकर गहतोड़ी विद्या-विनोद-द्वितीय वर्ष ने प्रथम स्थान प्राप्त कर शील्ड प्राप्त की।

२१-दि० ६-३-८६ से ९-३-८६ तक दर्शन विभाग के तत्वावधान में एक कान्फ्रेन्स का आयोजन किया गया। इसके संयोजक डा० जयदेव वेदालंकार, अध्यक्ष दर्शन विभाग थे।

२२–दि० २०-३-८६ को दर्शन विभाग के तत्वावधान में विभाग में नियुक्त विजिटिंग फेलो डा० हर्षनारायण का 'भारतीय दर्शन की पुनः व्यवस्था' विषय पर व्याख्यान हुआ।

२३–दि० २२-३-८६ को नव-नियुक्त कुलपति श्री आर० सी० शर्मा (आई०ए०एस० अवकाश प्राप्त) का स्वागत-समारोह विश्वविद्यालय भवन में किया गया। जिसमें कि सभी शिक्षकों, कर्मचारियों तथा छात्रों ने भाग लिया। छात्रों की ओर से मान्य कुलपति का स्वागत एम० ए० द्वितीय वर्ष (हिन्दी) के छात्र श्री चन्द्रशेखर पन्त ने माल्यार्पण द्वारा किया।

२४–दि० २१-४-८६ से अलंकार, विद्याविनोद तथा १-५-८६ से एम०ए० कक्षाओं की परीक्षाएँ आरम्भ हुई तथा १३-५-८६ को समस्त विषयों की परीक्षाएँ सम्पन्न हुई।

२५–अंग्रेजी विभाग में डा० राधेलाल वार्ष्णेय ने अंग्रेजी के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष का पद ११ जून १९८६ से ग्रहण किया तथा मनोविज्ञान विभाग में डा० हरगोपाल सिंह ने प्रोफेसर का पद १४ जून १९८६ से ग्रहण किया।

२६–दि० २५ जून से मनोविज्ञान विभाग में एक पाक्षिक यू. जी. सी. समर इन्सट इन्स्टीट्यूट—"भारत में मनोवैज्ञानिक परम्पराएँ" विषय पर प्रो० (डा०) हरगोपाल सिंह के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उप-कुलपति

वेद विभाग

विभाग का सामान्य परिचय—

वेद विभाग वैसे तो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सन् १६०० में स्थापना से ही विद्यमान है, पर इस रूप में इसकी स्थापना तभी हुई जब कि १६६२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय के समकक्ष मान्यता प्रदान की। इससे पूर्व इस विभाग में पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, पं० दामोदर सातवलेकर, आचार्य अभयदेव, प० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति एवं पं० रामनाथ वेदालकार आदि कार्य कर चुके है।

छात्र संख्या—

कक्षा	विषय	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	योग
एम०ए०	वेद	५	३	८
वेदालंकार		३	३	६
विद्याविनोद		५	१	६
			योग—	२०

विभागीय उपाध्याय—

(१) आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा आचार्य एवं उप-कुलपति।

(२) डा० भारतभूषण विद्यालंकार—वेदाचार्य, एम०ए०, पी-एच०डी०—रीडर।

(३) डा० सत्यव्रत राजेश—शास्त्री, एम०ए०, पी-एच०डी०—प्रवक्ता।

(३) डा० मनुदेव बन्धु—एम०ए०, पी-एच०डी०—प्रवक्ता।

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य—

(१) आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार—

१–वैदिक विषयों पर ३४ पुस्तकें (२ प्रकाशनाधीन) पूर्व ही प्रकाशित हो चुकी हैं तथा २-३ प्रकाशित होने जा रही हैं)।

२–शिवानन्द आश्रम ऋषिकेश में २६-७-८५ को 'आदर्श मानव तथा उसका जीवन तथा अन्त' पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

३–'शिक्षा की चुनौती' इस विषय पर शिक्षा और उसका उद्देश्य पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

४–राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली में ५ व ६ सितम्बर ८५ को पाठ्यक्रम पर पुनः विचार सम्बन्धी मीटिंग में भाग लिया।

५–'वेद में अग्नि और उसके अर्थ तथा मानव-जीवन के साथ उसका सम्बन्ध' विषय पर दिनांक ४ व ५ सितम्बर ८५ को पूना में व्याख्यान दिया।

६–अरबन (करनाल) क्षेत्र में यज्ञ का कार्यक्रम तथा मानव-जीवन के उत्थान में उसकी उपयोगिता, राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में दिनांक १४-९-८५ को भाषण दिया।

७–ऋषिनगर सोनीपत में वेदाध्ययन, उसका आचरण या वेद का स्वाध्याय और अनुकूल आचरण का परिणाम (अभ्युदय एवं निःश्रेयस) विषय पर दिनांक २२-९-८५ को व्याख्यान दिया।

८–दिनांक २६-१०-८५ को दयानन्द मठ जालन्धर में 'अग्निहोत्र और उसके लाभ' विषय पर व्याख्यान दिया।

९–२-३ नवम्बर ८५ को रोहतक में अपनी ही अध्यक्षता में शिक्षा सम्मेलन में भाषण दिया।

१०–नवम्बर मास में ही देहरादून व्याख्यान दिया।

११–नवम्बर मास में ही वेद सम्मेलन रोहतक में "वेद ज्ञान की उपयोगिता" विषय पर व्याख्यान दिया।

१२–जनवरी मास में स्वरूपनगर कानपुर में विभिन्न वैदिक विषयों पर व्याख्यान दिये।

१३–४-२-८६ को चण्डीगढ़ में थीसिस की मौखिक परीक्षा हेतु गए।

१४–कोटा राजस्थान में 'वेदों में क्या है ? मनुष्य जीवन के निर्माण में उसका क्या महत्त्व है ?' विषय पर व्याख्यान दिया।

१५–महिला आय पोस्ट ग्रेजुएट कालेज लुधियाना मे १७-३-८६ को दीक्षान्त भाषण दिया तथा पुरस्कार वितरण किया ।

१६–व्यास आश्रम हरिद्वार मे सामवेद पारायण यज्ञ तथा विभिन्न मन्त्रो पर प्रवचन ।

१७–दीक्षांन्त समारोह मे वेद सम्मेलन की कार्यवाही सम्पन्न की तथा इसमे श्री सुभाष वेदालकार को विशेष आमन्त्रित किया गया ।

१८–आय वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर मे योग विषय पर व्याख्यान दिया ।

१९–'वेदानुसार एव योगी का जीवन' पर व्याख्यान ।

२०–कुछ पत्रिकाओ मे लेख ।

२१–वार्षिक परीक्षाओ को तत्परता व शुद्धता से सम्पन्न कराने का प्रयास ।

२२–प्रशासन/शोध-निर्देशन को शुद्ध रूप मे चलाए रखने का हार्दिक प्रयास ।

२३–इस वर्ष भी एक छात्र ने 'बृहदारण्यकोपनिषद् एक अध्ययन' नामक शीर्षक पर शोध काय किया तथा उपाधि प्राप्त की है। कुछ अन्य आपके निर्देशन मे शोध-कार्य कर रहे हैं ।

२–डॉ० भारतभूषण विद्यालकार के निर्देशन मे निम्न छात्र शोध काय कर रहे है

(१) सूर्यप्रकाश पाठक—"वैदिक जीव-जगत" ।

(२) रामनारायण रावत (प्रज्ञाचक्षु) 'वैदिक एव औपनिषदिक दशन एक तुलनात्मक अध्ययन' ।

(३) स्वामी हरिश्चन्द्र—"आयु सवर्धन" ।

(४) रामेश्वर दयाल गुप्त को पी-एच०डी० हेतु निर्देशन ।

(५) श्री भगतसिह को शोध उपाधि प्राप्त हो चुकी है।

(६) अमेरिकन वि०वि० शिकागो के छात्र जान अल लुवलोन को पी-एच०डी० हेतु माग-निर्देशन । इसके अतिरिक्त गढवाल आदि विश्वविद्यालयो मे शोध निर्देशक एव परीक्षक आदि ।

(७) गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय में वैदिक प्रयोगशाला के निर्माण मे रत। वैदिक कर्मकाण्ड को सिखाने व उसकी व्यवस्था के लिए प्रयत्नशील ।

(८) एमनेस्टी इन्टरनेशनल के सदस्य ।

(९) विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ में लेख ।

(१०) गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के इतिहास परिषद् द्वारा आयोजित सेमिनार "आर्यों के आदि देश" पर शोध-पत्र वाचन ।

(११) गुरुकुल प्रभाताश्रम मे "वैदिक सृष्टि विद्या" पर शोध-पत्र वाचन ।

(१२) नेपाल, प० बगाल, सिलिगुडी बिहार (गया, पटना, जोगबनी, पूर्णिया) उत्तर प्रदेश, हरियाणा मे वैदिक साहित्य एव संस्कृति का प्रचार-प्रसार।

(१३) गुरुकुल भैसवाल मे गुरुकुल कागडी वि० वि० की ओर से पर्यवेक्षक।

(१४) "आथर्वणिक राजनीति" नामक ग्रन्थ प्रैस में छप रहा है।

३—डा० सत्यव्रत राजेश —

(१) रविदत्त शास्त्री, कु० कामजित् कु० सुमेधा तथा आनन्द कुमार को पी-एच०डी० के लिए दिशा-निर्देश ।

(१) आर्य जगत् (साप्ताहिक) तथा दयानन्द सन्देश (मासिक) में लेख।

(३) जम्मू बास्टा, किरतपुर, खेडी भोजपुर (बिजनौर), कोल्हापुर, चालीस गाव (महाराष्ट्र), उत्तरकाशी, इलाहाबाद, सच्चा आश्रम मे वेद सम्मेलन पर निबन्धवाचन। रुडकी, नजीबाबाद, हरपाल (गाव) ज्वालापुर, भेल हरिद्वार, गुरुकुल गौतम नगर नारसन (गाव) दतियाना (गाव) मतलूबपुर (गाव) आदि म वेद प्रचार तथा वैदिक सस्कृति प्रसार।

(४) अखिल भारतीय सस्कृत परिषद् (गु० का० वि० वि) के समारोह मे निर्णायक।

(५) गुरुकुल भैसवाल मे गु०का०वि०वि० की ओर से पर्यवेक्षक।

(६) स्वामी विद्यानन्द सरस्वती के आग्रह पर ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के वेद सज्ञा विषय विचार पर विस्तृत व्याख्यापरक निबन्ध, आय प्रतिनिधि करनाल की शताब्दी स्मारिका के लिए 'वृक्षो मे जीव और हिंसा एक विवेचन' नामक विवेचनात्मक निबन्ध। "यम-यमी सूक्त की आध्यात्मिक व्याख्या" नामक लघु-पुस्तिका प्रकाशित।

४—डा० मनुदेव बन्धु :—

१—इस वर्ष "बृहदारण्यकोपनिषद् . एक अध्ययन" विषय पर पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।

२—व्याकरणाचार्य मे सर्वप्रथम आने पर श्रीमद् दयानन्दार्ष विद्यापीठ, गुरुकुल झज्जर (रोहतक) की ओर से स्वर्ण-पदक प्रदान किया गया ।

३—अब तक साठ से अधिक संस्कृत और हिन्दी भाषा में वैदिक साहित्य, दर्शन, संस्कृत साहित्य, दयानन्द दर्शन, आर्य समाज तथा पुराणों पर भारत की विभिन्न पत्रिकाओं में निबन्ध प्रकाशित हुए।

४—"वेदोखिलो धर्ममूल:" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। "मानवता की ओर" नामक पुस्तक पहले ही प्रकाशित हो चुकी है। "बृहदारण्यकोपनिषद् एक विवेचनात्मक अध्ययन" नामक पुस्तक प्रकाशनाधीन है।

५—गुरुकुल कांगड़ी वि० वि० द्वारा आयोजित विभिन्न सम्मेलनों में निम्नलिखित निबन्ध वाचन किया—उत्तरक्षेत्रीय कुलपति सम्मेलन में "वर्ण व्यवस्था और शूद्र" विषय पर; शिक्षा नीति सम्मेलन में "प्रस्तावित शिक्षा नीति के सन्दर्भ में वेदों की प्रासंगिकता विषय पर युगों से चली आ रही शिक्षा, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उपनिषद्युगीन शैक्षणिक जीवन" विषय पर निबन्ध वाचन किया।

६—मुरादाबाद में माथुर वैश्य महासभा के महिला सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि का पद ग्रहण करते हुए महिलाओं के सम्बन्ध में वैदिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया। वहाँ की स्मारिका में "नारी एक अध्ययन" (शास्त्रीय दृष्टि से) लेख भी प्रकाशित हुआ।

७—१९८५-८६ में १६ निबन्ध संस्कृत व हिन्दी भाषा में प्रकाशित हुए।

८—कन्या गुरुकुल हसनपुर (हरियाणा) में पर्यवेक्षक बनकर गए तथा निर्विघ्न वातावरण में परीक्षा सम्पन्न कराई।

९—हरिद्वार, ज्वालापुर, मुरादाबाद, रामपुर, हसनपुर, रुड़की, आगरा, मेरठ आदि स्थानों पर वैदिक धर्म का प्रचार कार्य किया तथा विद्वत्स्तरीय व्याख्यान दिये।

१० आचार्य जी के आदेशानुसार विश्वविद्यालय की सम्पूर्ण गतिविधि में सहर्ष भाग लिया।

—**रामप्रसाद वेदालंकार**
आचार्य एवं उप-कुलपति

संस्कृत विभाग

विभागीय उपाध्याय :—

(१) डा० निगम शर्मा (रीडर-अध्यक्ष)
(२) आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री (रीडर)
(३) डा० रामप्रकाश शर्मा (प्रवक्ता)
(४) डा० महावीर अग्रवाल (प्रवक्ता)

विभागीय गतिविधि—

(१) २० अगस्त १९८५ को संस्कृत-दिवस के उपलक्ष में विद्वानों के सारगर्भित भाषण हुए तथा संस्कृत के विस्तार के विषय में अनेक परामर्श स्वीकृत हुए।

(२) ९ दिसम्बर १९८५ को अनुसन्धान-समिति की बैठक सम्पन्न हुई जिसमें निम्न विषय पर शोध-कार्य करने के लिए शोधार्थियों को अनुमोदित किया गया :

नाम शोधार्थी	विषय	निर्देशक
१- श्रीमती वीना विश्नोई	भास, कालिदास एवं भवभूति के नाटकों में वैदिक-संस्कृति का विवेचनात्मक अध्ययन।	आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री

वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं प्रतिनिधित्व—

(१) १९ नवम्बर १९८५ को देहली विश्वविद्यालय में "इन्द्र विद्यावाचस्पति प्रतियोगिता" में आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री के निर्देशन में श्री रवीन्द्र सिंह, एम० ए०-द्वितीय वर्ष तथा श्री दिनेशचन्द्र, एम० ए०-प्रथम वर्ष ने भाग लिया।

(२) २१-३० नवम्बर ८५ में उज्जयिनी विश्वविद्यालय में कालिदास-समारोह में डा० निगम शर्मा के निर्देशन में श्री दूधपुरी तथा श्री दिनेशचन्द्र ने भाग लिया। श्री दूधपुरी ने प्रथम स्थान और स्वर्ण-पदक प्राप्त किया।

(३) २४-२५ दिसम्बर ८५ को संस्कृत-विभाग के तत्वावधान में आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री जो के संयोजकत्व में त्रिभाषा-भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जो बहुत-ही सराहनीय और अनुकरणीय रहा।

(४) २० फरवरी ८६ को सरस्वती-परिषद् द्वारा संस्कृत विभाग के संरक्षण में मन्त्रोच्चारण, सद्योभाषण एव वाद-विवाद का आयोजन किया गया जो बहुत सफल और सराहनीय रहा।

(५) २६ फरवरी १९८६ को संस्कृत-विभाग में श्री डा० महावीर अग्रवाल ने प्रवक्ता-पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

विभागीय उपाध्यायों का कार्य-विवरण—

१- डा० निगम शर्मा—

(१) शोध-निर्देशन – (अ) ५ छात्रों को पी-एच० डी० मिल चुकी है।
(ब) ३ छात्र शोध-कार्य कर रहे हैं।

(२) शोध-निबन्ध— (१) सृष्टि प्रक्रिया—प्रभात आश्रम, मेरठ (प्रकाशनाधीन)
(२) शिक्षा-समीक्षा—संगोष्ठी में पढ़ा गया (प्रकाशनाधीन)।
(३) ऋग्वेदस्य कालिदासे प्रभावः—विक्रम विश्वविद्यालय से प्रकाशनाधीन।
(४) मंत्रार्थ प्रक्रिया—भारतोदय (प्रकाशनाधीन)
(५) वेद-सम्मेलन, विशेष सम्मेलन में भाग लिया।
(६) हिमालय वर्णनम् (रामपुर राजकीय पत्रिका में प्रकाशनाधीन)
(७) रस-निष्पत्तिः " "
(८) सुपरिवार " "

(३) संगोष्ठी—

(१) २१ नवम्बर से ३० नवम्बर तक विक्रम विश्वविद्यालय—कालिदास समारोह के विभिन्न समारोहों में प्रतिदिन भाग लिया।

(२) १३ जनवरी को गुरुकुल, प्रभात आश्रम में संस्कृत-संगोष्ठी में भाग लिया।

(३) आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, अवधूत मण्डल में २१ मार्च १९८६ को संस्कृत-संगोष्ठी की अध्यक्षता की।

(४) २५ अप्रैल १९८६ को सप्त-सरोवर में आयोजित संस्कृत-सम्मेलन में संस्कृत में प्रमुख भाषण दिया।

(५) २६ अप्रैल १९८६ को देवबन्द सहारनपुर में संस्कृत-सम्मेलन की अध्यक्षता की।

(४) **रेडियो वार्ता—**

१७ अप्रैल १९८६ को "अयमिश्रित खाद्यानं विषमेव हि घातकम्" विषय पर वार्ता प्रसारित (आकाशवाणी-रामपुर)।

(५) अन्य—

आर्य समाज रुड़की, देहरादून, वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, आर्यसमाज बी० एच० ई० एल०, आर्यसमाज हरिद्वार में विभिन्न विषयों पर लगभग ५० भाषण दिये।

(२) छात्रों को लेखन-भाषण पटुता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण दिया।

२—आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री—

(१) **शोध-निर्देशन—**४ छात्र शोध-कार्य कर रहे हैं।

(२) **शोध-निबन्ध—**(१) सितम्बर ८५ में "गुरु का स्वरूप" प्रह्लाद पत्रिका में प्रकाशित।
(२) "जीवन - पद्धति के लिए वेद के आदेश" (प्रकाशनाधीन)
(३) "वेदानुसरणं धर्मः" (प्रकाशनाधीन)
(४) 'औपनिषदिक सृष्टि-प्रक्रिया' (प्रकाशनाधीन)

(३) **संगोष्ठी—** (१) ९-१० नवम्बर '८५ में "शिक्षा की चुनौती" विषय पर आयोजित सेमिनार में लेख-वाचन किया।
(२) ७-८ फरवरी १९८६ में इलाहाबाद में वेद-सम्मेलन में भाषण दिया।

(३) १८ फरवरी को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में पौरोहित्य प्रशिक्षण-शिविर में उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार पर गवेषणात्मक व्याख्यान दिया जो बहुत सराहा गया ।

(४) २१ मार्च, १९८६ को आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, अवधूत मण्डल कनखल में आयोजित संस्कृत-संगोष्ठी में 'धर्मो राजनीतिश्च' विषय पर प्रमुख वक्ता के रूप में भाषण दिया ।

(५) २५ अप्रैल, १९८६ को सप्त-सरोवर में आयोजित संस्कृत-संगोष्ठी में प्रमुख-वक्ता के रूप में भाषण दिया ।

(६) २६ अप्रैल, १९८६ को देवबन्द में संस्कृत-सम्मेलन में उद्घाटन-भाषण दिया ।

(४) **सांस्कृतिक प्रचार**—आर्यसमाज देहरादून, वानप्रस्थाश्रम, विकास नगर, गीताश्रम, आर्यसमाज रुड़की, आर्यसमाज सहारनपुर आदि में लगभग ३० भाषण विभिन्न विषयों पर दिए ।

(५) **अन्य**— (१) १९-२० अगस्त, १९८५ में गुरुकुल भैंसवाल, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा गुरुकुल हसनपुर का निरीक्षण किया ।

(२) संस्कृत की विविध प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए छात्रों को प्रशिक्षित और प्रोत्साहित किया ।

(३) गुरुकुल कांगड़ी के दीक्षान्त-समारोह में वेदपाठी के रूप में कार्य किया ।

(४) गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव-महोत्सव में कई सम्मेलनो का संयोजन किया ।

(५) २२ मार्च, १९८६ को गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर में अनुसन्धान-समिति में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया ।

३—डा० रामप्रकाश शर्मा—

(१) शोध-निर्देशन—५ छात्र शोध-कार्य कर रहे हैं ।

(२) शोध-प्रबन्ध का प्रकाशन हुआ है ।

४—डा० महावीर अग्रवाल—

(१) २६ फरवरी, १९८६ से विभाग में प्रवक्ता-पद पर कार्य कर रहे हैं।

(२) २१ मार्च, ८६ को आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, अवधूत-मण्डल आश्रम में आयोजित संस्कृत-संगोष्ठी में भाग लिया।

(३) कुम्भ-पर्व पर "वेदों में आध्यात्मिक तत्त्व" विषय पर व्याख्यान दिए। ज्वालापुर में अनेक सामाजिक समारोहों में व्याख्यान दिए।

(४) आकाशवाणी से "धर्मो रक्षति रक्षितः" विषय पर वार्ता प्रसारित—(आकाशवाणी रामपुर से)।

—डा० निगम शर्मा
रीडर-अध्यक्ष

दर्शन शास्त्र विभाग

(१) **स्थापना**—१९१० ई० में अलंकार और दर्शन वाचस्पति तक का अध्ययन प्रारम्भ हुआ। १९६७ ई० में एम० ए० स्तर तक का अध्ययन प्रारम्भ हुआ।

अपने स्थापना-काल से ही दर्शन विभाग का यह लक्ष्य रहा है कि भारतीय दर्शन के मूल ग्रन्थों के पठन-पाठन को वरीयता दी जाये तथा पाश्चात्य दर्शन शास्त्र की अवधारणाओं से गहरा परिचय हो जिससे छात्र विषय के ठोस विद्वान सिद्ध हों।

दर्शन शास्त्र विभाग अपने इस दायित्व का समीचीन रूप में निर्वाह कर रहा है। इस विभाग से निकलने वाले स्नातक देश-विदेश में दर्शन के प्रचार-प्रसार एवं अध्यापन आदि कार्यों में संलग्न है।

(२) **छात्र संख्या**—

विद्या विनोद	१०
अलकार	८
एम० ए०	१०
पी-एच०डी०	७
योग—	३५

(३) **वर्तमान अध्यापकगण**—

१—डॉ० जयदेव वेदालंकार	रीडर एवं अध्यक्ष
२—डॉ० विजयपाल शास्त्री	प्राध्यापक
३—डॉ० त्रिलोकचन्द्र	प्राध्यापक
४—डॉ० भगवन्तसिंह	प्राध्यापक

(४) शोध कार्य (पी–एच०डी०)—

इस विभाग में जौलाई १९८३ से पी–एच०डी० हेतु शोध कार्य सुचारु रूप से चल रहा है।

(५) आई०ए०एस० और पी०सी०एस० के मार्गदर्शन की व्यवस्था—

भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के लिये निःशुल्क अध्यापन एवं मार्गदर्शन की व्यवस्था है। इस योजना के अन्तर्गत इस वर्ष बी०एच०ई०एल० एवं हरिद्वार के छात्र मार्ग-दर्शन प्राप्त करते रहे है।

(६) अखिल भारतीय दर्शन परिषद् का ३०वां अधिवेशन ६ मार्च से ९ मार्च ८६ तक सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय सम्मेलन भी विभाग में सम्पन्न हुआ।

(७) प्राध्यापकगण—

(१) **डॉ० जयदेव वेदालंकार**—पद—रीडर एवं अध्यक्ष।
नियुक्ति—अगस्त, १९६८। वर्तमान पद पर—फरवरी, १९८४।
शैक्षणिक योग्यतायें—एम० ए० (दर्शन और मनोविज्ञान), दर्शनाचार्य, पी–एच०डी० और डी०लिट्०।
पी–एच०डी० का शीर्षक—उपनिषदों में यथार्थवादी दर्शन।
डी०लिट् का शीर्षक—वैदिक दर्शन : एक अध्ययन।

लेखन कार्य—१९८५-८६

(१) मुक्ति से पुनरावर्तन—प्रह्लाद शोध-पत्रिका में प्रकाशित।
(२) जातिप्रथा उन्मूलन—गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित।
(३) वैदिक एथिक्स—इण्डियन फिलासोफिकल कांग्रेस में वाचन।
(४) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मूल सिद्धान्त—लघु पुस्तिका प्रकाशित। भारत सरकार को प्रेषित।
(५) भारतीय दर्शन : एक समस्यात्मक विश्लेषण (प्रेस में २५० पृष्ठ छप चुके है)।
(६) विश्व की प्रमुख ज्वलन्त समस्याओं का दार्शनिक निदान (राष्ट्रीय संगोष्ठी) "विश्व समस्याएँ और समाधान" में पठित शोध।
(७) गुरुकुल पत्रिका का सम्पादन—सभी अंकों के सम्पादकीय।

(८) अन्य शैक्षणिक कार्य—

(१) अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के ३०वें अधिवेशन के स्थानीय सचिव के रूप में कार्य किया तथा पूरे परिश्रम एवं लगन से उसे ६ मार्च से ९ मार्च ८६ तक सम्पन्न किया। इसमें ११० प्रतिनिधिगण सम्मिलित हुए।

(२) "विश्व की प्रमुख ज्वलन्त समस्याओं का दार्शनिक निदान" विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन के निदेशक पद पर कार्य किया। यह ज्ञातव्य है कि उक्त राष्ट्रीय सम्मेलन दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में यू०जी०सी० और आई०सी०पी०आर०, महरौली मार्ग, नई दिल्ली के सौजन्य से सम्पन्न हुआ।

(३) इण्डियन फिलॉसोफिकल कांग्रेस के ६०वें अधिवेशन में केन्द्रीय विश्व-विद्यालय हैदराबाद में सक्रिय भाग लिया।

(८) **अन्य कार्य**—

(क) आर्य समाज, जयपुर (राजस्थान)

अगस्त मास में आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर में आठ व्याख्यान दिए :

विषय : * शिक्षा दर्शन
* महर्षि दयानन्द और शिक्षा दर्शन
* वैदिक तत्त्व दर्शन
* आचार और विज्ञान
* मुक्ति के उपाय
* धर्म और विज्ञान
* ईश्वर का स्वरूप
* इस युग में दर्शन शास्त्र की उपयोगिता

(ख) आर्य समाज, पटियाला

अक्टूबर मास में आर्य समाज, पटियाला में पाँच व्याख्यान हुए :

विषय : * महर्षि दयानन्द की दार्शनिक देन
* मायावाद प्रत्याख्यान
* भाग्य और पुरुषार्थ
* शिक्षा और आर्य समाज
* नैतिकता और विज्ञान

(ग) आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर

जनवरी १९८३ में वानप्रस्थाश्रम में आठ व्याख्यान हुए—

* योग की दार्शनिक व्याख्या
* चित्त की पाँच भूमियाँ
* योग और उसके अन्तराय (विक्षेप)

* योग के अङ्ग
* योग साधना और वेद
* वेद में मोक्षधारा
* क्रिया योग
* योग और विभूतियाँ

(घ) युग-युगीन शिक्षा संगोष्ठी में शोध-पत्र वाचन।

(ङ.) शोध-कार्य—

दर्शन विभाग में डॉ० जयदेव वेदालंकार के निर्देशन में निम्नलिखित छात्र शोधरत है—

नाम	विषय
१. श्री दयानन्द शर्मा	"सांख्य दर्शन और चरक शास्त्र : एक दार्शनिक तुलनात्मक अध्ययन"।
२. श्री नामदेव दुघाटे	"शंकर, मध्व और दयानन्द के दर्शन का तुलनात्मक परिशीलन"।
३. श्री चक्रधर जोशी	"दयानन्द और गांधी के दार्शनिक विचार"।
४. श्री रघुवीरसिंह	"महर्षि दयानन्द और श्री अरविन्द का दर्शन का तुलनात्मक अनुशीलन"।
५. श्री ओम शर्मा	"न्याय, जैन और बौद्ध दर्शन में ज्ञान मीमांसा"।
६. श्री बाबूराम	"भारतीय और पाश्चात्य दर्शनों में अन्तः-करण"।
७. श्री सत्यपाल	"आचार्य उदयवीर शास्त्री के विद्योदय भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन"।

(२) डॉ० विजयपाल शास्त्री—पद—प्राध्यापक
नियुक्ति—१९८१
योग्यता—एम०ए० (संस्कृत, दर्शन और हिन्दी)
पी-एच०डी०—शीर्षक—सांख्य में वाचस्पति मिश्र और विज्ञानभिक्षु।
साहित्याचार्य—संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
दर्शनाचार्य—पंजाब विश्वविद्यालय

प्रकाशित लेख—
१—मुक्ति और दयानन्द
प्रह्लाद पत्रिका में प्रकाशित

२—राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध-पत्र वाचन
विषय—दर्शन और समस्याएँ

३—बृहत्त्रयी—एक अध्ययन की समीक्षा : गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित।

अन्य कार्य—अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के ३०वें अधिवेशन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रबन्ध में सक्रिय भाग लिया।

(३) **डा० त्रिलोकचन्द्र**—पद—प्राध्यापक, नियुक्ति—१९८२।
योग्यताएँ—एम०ए०, पी-एच०डी०।

शैक्षणिक कार्य—

(क) योग से रोग निवारण—पुस्तक प्रकाशित।
(ख) दशहरे के अवसर पर साहिबाबाद में योग पर पाँच व्याख्यान।
(ग) नवम्बर में श्री अरविन्द योग मन्दिर में कर्मयोग पर भाषण हुआ।
(घ) ३ मार्च को अखिल भारतीय दर्शन परिषद् एवं राष्ट्रीय सम्मेलन के प्रबन्ध में सक्रिय भाग लिया।

(४) **डॉ० भगवन्तसिंह**—पद—प्राध्यापक, नियुक्ति—१९८४।
योग्यताएँ—एम०ए०, पी-एच०डी०
विषय—श्री अरविन्द और शंकराचार्य का दर्शन।

शैक्षणिक कार्य—

१-स्वामी दयानन्द का दार्शनिक चिन्तन—वैदिक पाथ में प्रकाशित।
२-पुस्तक समीक्षा—वैदिक पाथ में प्रकाशित।
३-पुस्तक समीक्षा—गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित।
४-शिक्षा प्रणाली—प्रह्लाद पत्रिका में प्रकाशित।
५-तुलनात्मक तत्त्व मीमांसा—शोध-पत्र वाचन। (अखिल भारतीय दर्शन परिषद् में)
६-मानवीय स्वभाव और यथार्थता—वैदिक पाथ में प्रकाशित।

अन्य कार्य—

युग-युगीन शिक्षा—राष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय भाग लिया।
आर्यों का मूल स्थान—राष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय भाग लिया।

—डा० जयदेव वेदालंकार
रीडर एवं अध्यक्ष

मनोविज्ञान विभाग

स्टाफ—

(१) प्रो० ओमप्रकाश मिश्र, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
(२) डा० हरगोपाल सिंह, प्रोफेसर
(३) प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी, रीडर
(४) प्रो० सतीशचन्द धमीजा, प्रवक्ता
(५) श्री लाल नरसिंह नारायण, प्रयोगशाला सहायक
(६) श्री कुंवरसिंह, प्रयोगशाला भृत्य।

सत्र १९८५-८६ मनोविज्ञान विभाग के लिए नई उपलब्धियों का वर्ष रहा। इस वर्ष स्नातकोत्तर कक्षाओं में १२ विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया। उनके पठन-पाठन, क्रियात्मक कार्य तथा ट्यूटोरियल आदि की उत्तम व्यवस्था की गई। विभाग के विद्यार्थियों ने अनुशासन में रहकर अपना अध्ययन-कार्य किया तथा विश्वविद्यालय के अन्य क्रियाकलापों, जैसे एन० सी० सी० आदि में सक्रिय भाग लिया। क्रीड़ा के क्षेत्र में भी विभाग के विद्यार्थियों का सक्रिय योगदान रहा। एम० ए० द्वितीय वर्ष के छात्र श्री विनोद कुमार पाण्डेय ने विश्वविद्यालय की क्रिकेट-टीम का नेतृत्व किया।

इस वर्ष विभाग में लखनऊ विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डा० विमला अग्रवाल एक माह के लिए विजिटिंग फेलो के रूप में आई। उनके ज्ञान तथा अनुभव से शोध-छात्रों को विशेष लाभ मिला। उनके भाषणों से मनोविज्ञान के अतिरिक्त अन्य विभाग भी लाभान्वित हुए। इस वर्ष विभाग की विशेष उपलब्धि यह रही कि विभाग के अन्तर्गत डा० स्वर्ण आतिश की शोध-परियोजना को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने मान्यता दी तथा इस कार्य हेतु 39,000/-रु० की धनराशि स्वीकृत की। डा० स्वर्ण आतिश का कार्य "रोल ऑव चेयर पर्सन्स इन सेन्ट्रल यूनिवर्सिटीज" प्रगति पर है।

इस वर्ष विभाग को मान्य कुलपति ने "नई शिक्षा नीति" के ऊपर संगोष्ठी आयोजित करने का कार्य सौंपा। इसके संयोजक प्रो० ओमप्रकाश मिश्र बनाये गए। इस संगोष्ठी में विभिन्न विश्वविद्यालयों से विद्वान आये और इसकी सर्वत्र प्रशंसा हुई।

इस वर्ष रिसर्च डिग्री कमेटी में बाह्य विद्वान के रूप में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० वी० ए० गुप्ता पधारे। शोध-समिति ने दो प्रस्तावित शोध-कार्यो को अपनी स्वीकृति प्रदान की जिसका ब्यौरा निम्नांकित है—

शोधार्थी का नाम–	विषय	निर्देशक
१. कु० ममता श्रीवास्तव	'A study of personality, value system and aspiration of working & non - working women'	—प्रो. ओ. पी. मिश्र
२. कु० मोनाक्षी छाबड़ा	"A psycho–social study of retired people"	—प्रो. ओ. पी. मिश्र

उल्लेखनीय है कि कु० ममता श्रीवास्तव के प्रस्तावित शोध-प्रस्ताव पर आई० सी० एस० एस० आर० ने उनकी परीक्षा लेने के पश्चात् रिसर्च फेलोशिप प्रदान कर दी है। इस फेलोशिप के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयो के छात्र आवेदन करते हैं और यह मेरिट के आधार पर ही दी जाती है। इस वर्ष प्रो० ओमप्रकाश मिश्र के निर्देशन में दो छात्रों ने अपना शोध-कार्य पूरा करके गढ़वाल विश्वविद्यालय में पी-एच० डी० उपाधि हेतु जमा कराया। प्रो० ओमप्रकाश मिश्र गढ़वाल विश्वविद्यालय की बोर्ड ऑव स्टडीज तथा रिसर्च डिग्री कमेटी में विषय-विशेषज्ञ हैं तथा वहां पर एक्सटर्नल रिसर्च गाईड हैं।

इस वर्ष कानपुर विश्वविद्यालय ने प्रो० ओमप्रकाश मिश्र को उनके यहाँ आयोजित एक संगोष्ठी में भाग लेने हेतु आमन्त्रित किया। उन्होने वहाँ पर मानव-मूल्य सम्बन्धी विचारगोष्ठी की अध्यक्षता की और एक शोध-पत्र पढ़ा। उन्होंने दिल्ली में आयोजित "इण्डियन साइकोलोजी एशोसियेशन" की बैठक में भाग लिया। इस वर्ष उन्हें मेरठ से प्रकाशित साइकोलोजी के एक रिसर्च जरनल में कन्सल्टिंग एडिटर के रूप मे मनोनीत किया गया। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में क्रीड़ा-विभाग, योग विभाग तथा विश्वविद्यालय सूचना एवं मन्त्रणा केन्द्र का कार्य भी प्रो० ओमप्रकाश मिश्र के निर्देशन में चल रहा है तथा वे डीन, स्टुडेन्ट वैलफेयर के रूप में भी कार्य कर रहे है।

विभाग के प्रोफेसर डा० हरगोपाल सिंह ने इस वर्ष विभिन्न पत्रिकाओं में सात लेख लिखे तथा उनकी दो वार्ताएँ आकाशवाणी नजीबाबाद से प्रसारित हुई। उन्होंने गत वर्षों की भाँति वैदिक पाथ का कुशलतापूर्वक

सम्पादन किया जिसमें उन्होंने दो पुस्तकों की समीक्षा की तथा सम्पादकीय में इन्टर डिसिप्लेनरी रिसर्च इन वेदा, 'कुम्भ', तथा नेशनल कान्फ्रेन्स आन स्प्रिच्वलिटी पर प्रकाश डाला। उन्होंने इन्स्टीट्यूट ऑव क्रिमिनालोजी एण्ड फोरेन्सिक साइन्सेज के तत्वावधान में दो भाषण दिए तथा मनोचिकित्सा के रूप में भूतविद्या नामक विषय पर गवेषणात्मक लेख लिखा। डा० सिंह योगी फार्मेसी द्वारा निकाली जा रही दो पत्रिकाओं 'मेडिसिन तथा क्वाटर्ली जरनल ऑव साईंस रिसर्च इन प्लान्ट्स' का भी सम्पादन कर रहे हैं। उन्होंने इण्डियन साईंस कांग्रेस में इस वर्ष भाग लिया।

विभाग के रीडर प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी की विषय के अतिरिक्त वैदिक एवं संस्कृत वांगमय में निष्ठा सर्वत्र विदित है। वह निःशुल्क विद्यालय के छात्रों को सस्वर वैदिक मन्त्रों का पाठ करने का अभ्यास वर्षों से कराते हैं। कुछ समय से इसमें व्यवधान आ गया था। प्रसन्नता की बात है कि उन्होने अधिकारियों के विशेष आग्रह पर अगले सत्र से इस कार्य को पुन: करना स्वीकार कर लिया है। इस वर्ष उन्होंने रोटरी क्लब द्वारा आयोजित एक्सटेन्शन प्रोग्राम के अन्तर्गत तीन सीरीज में अनेक विद्वत्तापूर्ण भाषण दिये। उन्होंने एक शोध-पत्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सगोष्ठी में नई शिक्षा नीति पर पढ़ा। उन्हे इस वर्ष रिस्ट्रचरिंग ऑव एजूकेशन कमेटी का अध्यक्ष भी बनाया गया। उन्हें कुछ समय के लिए उप-कुलसचिव (प्रशासन) के पद पर भी नियुक्त किया गया।

विभाग में कार्यरत श्री लाल नरसिंह का भी शैक्षणिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गत वर्षो की भाँति अध्यापन-कार्य करने के साथ उन्होंने विश्वविद्यालय में आयोजित "युगों से चली आ रही शिक्षा" कान्फ्रेन्स में शोध-पत्र पढ़ा। इसके अतिरिक्त उन्होंने दर्शन-परिषद् के अधिवेशन में योग के महत्व पर शोध-पत्र पढ़ा। कुम्भ के अवसर पर संवाद-प्रेषण पर उन्होने शोध-कार्य किया। श्री लाल नरसिंह का पत्रकारिता के क्षेत्र में अच्छा योगदान रहा। कुम्भ के अवसर पर उन्होंने 'अपने लोग', 'दैनिक जागरण', 'दून दर्पण', तथा 'जनसत्ता' में विशेष लेख लिखे तथा उनके विशेष संवाददाता के रूप में कार्य किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने विश्वविद्यालय की गतिविधियों का छायांकन, दीक्षान्त-समारोह पर बनी फिल्म का निर्देशन तथा फोटोग्राफी सम्बन्धित समस्त व्यवस्थाओं का संचालन एवं निर्देशन किया।

—**ओमप्रकाश मिश्र**
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय का यह स्नातकोतर विभाग निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहा। वर्तमान मे विभाग में एक प्रोफेसर, दो रीडर तथा दो लेक्चरर पूर्ण निष्ठा के साथ अध्ययन-अध्यापन में कार्यरत है।

विभाग में कार्यरत प्राध्यापक :

१—डा० विनोदचन्द्र सिन्हा,	एम०ए०,	पी-एच०डी०	प्रोफेसर एव अध्यक्ष
२—डा० जबरसिह सेंगर,	,,	,,	रीडर
३—डा० श्यामनारायण सिह	,,	,,	,,
४—डा० कश्मीरसिह	,,	,,	प्रवक्ता
६—डा० राकेशकुमार शर्मा	,,	,,	,,

स्नातकोत्तर कक्षाओं में परीक्षार्थियों की संख्या :

एम० ए० प्रथम वर्ष	२१
एम० ए० द्वितीय वर्ष	१३
शोध छात्र	१३

शोध कार्य :—१६ वर्ष के अल्पकाल में विभाग में २० महत्त्वपूर्ण विषयो पर शोध कार्य हो चुके है। इस वर्ष दीक्षान्त समारोह पर दो शोध छात्रो को पी-एच०डी० की उपाधि से विभूषित किया गया है।

१—श्रीमती अजलि—निर्देशक डा० विनोदचन्द्र सिन्हा, प्रोफेसर एव अध्यक्ष, विषय - प्राचोन भारत में स्थानीय स्वशासन।

२—कु० अरुणा मिश्रा—निर्देशक डा० जबरसिह सेंगर, विषय—प्राचोन भारतीय नारी-शिक्षा एव महर्षि दयानन्द का योगदान।

शोध कार्य विभाग में सफलतापूर्वक चल रहा है। जिन शोध-छात्रों के कार्य सन्तोषजनक ढंग से प्रगति पर हैं, वे निम्न हैं :—

नाम शोधकर्ता	निर्देशक का नाम	विषय
१—श्री सुधाकर शर्मा	डा० विनोदचन्द्र सिन्हा	बुद्धिस्ट स्कल्पचर अंडर दि पालाजा
२—श्री अनिल कुमार	डा० जबरसिंह सेंगर	वैदिक युग में नारी
३—श्री सुखबीरसिंह	डा० श्यामनारायण सिंह	पुरातत्व संग्रहालय की मृण्मूर्तियों तथा पाषाण मूर्तियों का अध्ययन।
४—श्री जसबीरसिंह मलिक	,, ,,	प्राचीन भारत में पौरोहित्य।
५—श्री जगदीशचन्द्र ग्रोवर	,, ,,	ब्रह्मनीकल स्कल्पचरस अडर दि पालाज
६—श्री केवलकृष्ण	डा० कश्मीरसिंह	पूर्व मध्यकाल में राजनैतिक संस्थाएँ।
७—श्री विनोदकुमार शर्मा	,, ,,	प्राचीन भारत में आर्थिक संस्थाएँ (प्रारम्भ से कुषाण काल तक)
८—श्री भारतभूषण शर्मा	,, ,,	गुप्तकाल मे ब्राह्मण धर्म

आर० डी० सी० द्वारा स्वीकृत नवीन विषय

१—श्री जितेन्द्र नाथ	डा० विनोदचन्द्र सिन्हा	द ध्यानी बुद्धाज, देयर प्रजनाज एण्ड बोधिसत्व इन इण्डियन आर्ट।
२—श्री धर्मवीरसिंह	,, ,,	प्राचीन भारत मे ज्योतिष का विकास (वैदिक काल से गुप्त काल तक)
३—श्री फैयाज अहमद	डा० जबरसिंह सेंगर	गुप्तकाल कलात्मक गौरव
४—श्री सुरेशचन्द्र चौहान	,, ,,	पश्चिम उ०प्र० मे चौहान जाति का इतिहास (एक क्षेत्रीय अध्ययन)
५—कु० मधूलिका	,, ,,	प्राचीन भारत में कर व्यवस्था
६—कु० मधुबाला	,, ,,	महाभारत में युद्ध प्रणाली

नेशनल फेलोशिप :—डा० विनोदचन्द्र सिन्हा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष ने १२ अगस्त ८५ से १२ मार्च ८६ तक सफलतापूर्वक उक्त कार्य सम्पन्न किया। इस बीच वे विभाग के महत्त्वपूर्ण कार्यों को भी देखते रहे हैं। विभाग तथा विश्वविद्यालय के लिए यह गौरव की बात है।

सेमिनार, सिम्पोजियम :—विभाग ने यू०जी०सी० एवं आई०सी०एच०आर० की सहायता से दो सेमिनार सम्पन्न किये।

१—"युगों से चली आ रही शिक्षा" ३१ जनवरी से १ फरवरी १९८४ तक।

२—"आर्य समस्या एवं नागर सभ्यताएँ" १ फरवरी से ४ फरवरी १९८६ तक।

इन सेमिनारों में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, मेरठ विश्वविद्यालय, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, आगरा विश्वविद्यालय, आदि अनेक विश्वविद्यालयों से विद्वानों ने भाग लिया एवं अपने-अपने शोध-पत्र पढ़े। इनमें से डा० राजकुमार, आई०सी०एच०आर०; डा० हर्षनारायण, लखनऊ, डा० हरिदत्त शास्त्री, डा० जयदेव विद्यालंकार, रोहतक विश्वविद्यालय; डा० आर०सी० गौड, अलीगढ़ विश्वविद्यालय; डा० एस०पी० वसु, इण्डियन म्यूजियम कलकत्ता; डा० चक्रवर्ती, कलकत्ता; डा० एस०बी० सिंह, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय; डा० के०पी० नोटियाल, गढवाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर; डा० भूपेश चन्द्र, मेरठ विश्वविद्यालय; डा० विजय कुमार, पटना विश्वविद्यालय; डा० के०बी० कौशिक गोरखपुर; डा० प्रशान्त वेदालकार, दिल्ली; कु० ललितावती, आगरा के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उक्त सेमिनारों का सचालन डा० विनोदचन्द्र सिन्हा, प्रोफेसर एव अध्यक्ष ने अपने विभागीय सहयोगियों से मिलकर किया। विभाग मे से डा० सिन्हा ने 'गांधी और गुरुकुल शिक्षा' एव डा० सेंगर ने 'युगों-युगो में नारी शिक्षा' पर निबन्ध पढ़े।

विभाग के रीडर डा० जबरसिंह सेंगर के निम्न लेख प्रकाशित हुए :—

१—स्वामी श्रद्धानन्द की शैक्षणिक मण्डली—गुरुकुल पत्रिका

२—मध्य एशिया एव चीन में भारतीय बौद्ध प्रचारक—विश्व ज्योति, होशियारपुर

३—वैदिक युग में ससदीय प्रणाली—'संस्कृति, भारत सरकार शिक्षा मन्त्रालय का हिन्दी जर्नल।

विभाग के प्राध्यापक डा० राकेशकुमार शर्मा के निम्न लेख प्रकाशित हुए :—

१—गुप्तकालीन साहित्यिक विकास—गुरुकुल पत्रिका, अगस्त, १९८५।

२—सावरनिटी इन मौर्य पीरिएड—जर्नल ऑव बिहार उडीसा रिसर्च सोसाइटी पटना में स्वीकृत।

३—महायान सम्प्रदाय का उत्कर्ष—गुरुकुल पत्रिका, अप्रैल १९८६।

इतिहासविज्ञों का आगमन :—डा० लल्लन गोपाल, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय; डा० कृष्णदत्त बाजपेई; टंगोर, प्रोफेसर सागर विश्वविद्यालय; डा० उदयभान सिंह, प्रोफेसर एव अध्यक्ष, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने विभाग में पधार कर छात्रों का उत्साहवर्द्धन किया।

सातवीं योजना का प्रारूप :—विभाग ने सातवीं पंचवर्षीय योजना के लिये कुछ नवीन योजनाएँ तैयार की हैं। इनके अन्तर्गत पुरातत्व के पठन-पाठन को और महत्त्व देना तथा उत्खनन किये जाने की योजनाएँ प्रमुख हैं। टूरिज्म के लिये एक डिप्लोमा कोर्स भी तैयार किया गया है। सग्रहालय के विकास की ओर भी विशेष ध्यान दिया गया है।

अन्य गतिविधियाँ :—विभाग के प्राध्यापक अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त विश्वविद्यालय में होने वाले अन्य कार्यों में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देते रहे। विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० विनोदचन्द्र सिन्हा विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका 'प्रह्लाद' के संयुक्त सम्पादक के रूप में कार्यरत है।

डा० श्यामनारायण सिंह अपने अध्यापन कार्य के साथ-साथ विश्वविद्यालय के उप-कुलसचिव के पद पर सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। अन्य शिक्षक भी अधिकारियों द्वारा समय-समय पर सौपे गये कार्यों को सम्पन्न करते आ रहे है।

—डा० विनोदचन्द्र सिन्हा
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

पुरातत्व संग्रहालय

सन् १९०७ में स्थापित संग्रहालय निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है। विश्वविद्यालय की देख-रेख मे गत कुछ वर्षों में इसमें पर्याप्त सुधार सम्पन्न हुए है। षष्ठ पचवर्षीय योजना के अन्तिम वर्ष में प्राप्त क्यूरेटर एवं संग्रहालय-सहायक के पद पर नियुक्त तकनीकी व्यक्तित्वों के कारण सग्रहालय मे परिवर्तन एवं सुधार को एक नयी दिशा मिली है।

सत्र १९८५-८६ में विश्वविद्यालय सग्रहालय को विश्वविद्यालय के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से प्राप्त अनुदान राशि से सग्रहालय में विभिन्न कार्य सम्पन्न हुए है :

अ- भारत सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा अशासकीय संग्रहालयों के विकास हेतु मद के अन्तर्गत २०,०००/- रुपये की राशि प्रदान की गयी। जिसका उपयोग ईंट द्वारा निर्मित आधार स्तम्भ (पैडस्टलस), लकड़ी एवं शीशे के शो केस बनवाने में किया गया। इसी राशि से स्वचालित पारदर्शियाँ प्रदर्शक क्रय किया गया।

ब- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अशासकीय संग्रहालयों के विकास पद के अन्तर्गत प्राप्त १५,०००/- रुपये की राशि से १३ सीलिंग फैन्स, प्रकाश व्यवस्था एवं शो केसेज का निर्माण आदि व्यवस्था की गयी।

स- सग्रहालय भवन में दीमक प्रकोप, पेन्ट्स एव समुचित प्रकाश व्यवस्था हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से ७०,०००/- रुपये का विशेष अनुदान प्राप्त हुआ। इस राशि से सग्रहालय भवन को निर्माणेत्तर दीमक उपचार संग्रहालय के तीन बड़े कक्षों, प्रस्तर कक्ष में पेन्ट्स एवं कुछ वीथिकाओं में डिस्टेम्पर का कार्य तथा विभिन्न वीथिकाओं में समुचित प्रकाश व्यवस्था एवं आकस्मिक प्रकाश व्यवस्था का कार्य सम्पन्न किया गया।

वर्तमान समय मे संग्रहालय दर्शकों के लिये प्रातः १० बजे से सायं ५ बजे तक खुला रहता है। संग्रहालय संकलन निम्नलिखित रूप से प्रदर्शित है—

स्वामी श्रद्धानन्द कक्ष—

विश्वविद्यालय, गुरुकुल एवं सग्रहालय के संस्थापक, महान आत्मा स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन-विषयक छायाचित्रों के आधार पर सन् १९७७ में इस

कक्ष की स्थापना को गयी। छायाचित्रों के अतिरिक्त इस वीथिका में स्वामी जी के उपयोग की वस्तुएँ एवं वस्त्र भी प्रदर्शित हैं। स्वामी जी को भेंटस्वरूप प्राप्त वस्तुओं का संकलन भी दर्शकों के लिये वीथिका में नियोजित है।

पुरासंस्कृति कक्ष—

(मृण्मूर्तियाँ एवं मृद्भाण्ड) पुरासंस्कृति कक्ष में भारतीय संस्कृति के विभिन्न चरणों की उपलब्ध सामग्री प्रदर्शित है।

मोहन जोदडो (पाकिस्तान) एवं कालीबगान (भारत) में उत्खनित सिन्धु सभ्यता के स्थानों से प्राप्त सामग्री नियोजित है। हरियाणा प्रदेश के विभिन्न स्थानों से सर्वेक्षण द्वारा एकत्रित सिन्धु सभ्यता के मृद्भाण्ड एव मृण वस्तुएँ भी प्रदर्शित है।

कालक्रमानुसार सिन्धु सभ्यता के पश्चात् की कुछ सभ्यताएँ यथा गेरुयेरंग के मृद्भाण्ड (Ochre coloured wares), ताम्रनिधि उपकरण (copper hoards) चित्रित धूसर मृद् भाण्ड (Painted grey wares) क्रमश: नसीरपुर एवं सरसावा (दोनों ही सहारनपुर में स्थित) स्थानों से प्रदर्शित है। वीरभद्र में हुए उत्खनन से प्राप्त कुषाण एवं गुप्तकालीन मृद्भाण्डों का भी नियोजन किया गया है।

वीथिका में मथुरा से प्राप्त मौर्य शुग काल, कुषाण काल एवं गुप्त काल की मृण्मूर्तियां, कौशाम्बी से प्राप्त कुषाण एवं गुप्तकाल की मृण्मूर्तिया प्रदर्शित है। मध्यकाल की मृण्मूर्तियाँ भी प्रदर्शित है।

पुरासंस्कृति कक्ष— (पाण्डुलिपियाँ एव मुद्रायें)

इस कक्ष में सस्कृत, फारसी, गुरुमुखी, शारदा, बगला एवं तिब्बती भाषा की पाण्डुलिपियाँ प्रदर्शित की गयी है। सस्कृत की कुछ पाण्डुलिपियाँ सचित्र है।

प्राचीनतम भारतीय आहत मुद्राये, कुषाण, गुप्त एवं मध्यकाल की विभिन्न ताम्र मुद्राये दर्शन हेतु नियोजित है। भारतीय देशी रियासतो के सिक्के मुख्य आकर्षण हैं। विदेशी सिक्को को भी प्रदर्शित किया गया है। वर्तमान प्रचलित कागजी मुद्रा भी प्रदर्शित है।

अस्त्र-शस्त्र कक्ष—

द्वितीय महायुद्ध में ब्रिटिश एवं जर्मन सेनाओं द्वारा उपयोग में लाये गये कुछ अस्त्र तथा हल्की तोपें, मशीनगनें, बन्दूकें, रिवाल्वर आदि प्रदर्शित है। विभिन्न प्रकार की तलवारे, ढालें एव युद्ध के समय काम आने वाले बाजे आदि प्रदर्शित है।

प्रस्तर प्रतिमा कक्ष—

इस कक्ष में प्रतिमाओं का संकलन दर्शकों के लिये नियोजित है। मथुरा कला की प्रतिमायें जो शुंग, कुषाण एवं गुप्त काल की है, को प्रदर्शित किया गया है। सातवीं शताब्दी की कन्नौज से प्राप्त बौद्ध प्रतिमा-ग्राम झींवरहेड़ी-सहारनपुर से प्राप्त समुद्र मन्थन का विशेष आकर्षण है। कांगड़ी ग्राम-बिजनौर से प्राप्त जैन एवं हिन्दू परम्परा की मूर्तियाँ, हरिद्वार के आस-पास के क्षेत्र से प्राप्त ९-१० वीं शताब्दी की विभिन्न मूर्तियाँ तथा कनखल से प्राप्त भित्ति-चित्र प्रदर्शित किये गये है।

विविध वीथिका—

इस वीथिका में भारतीय पाषाण कला, मृण्मूर्तिकला, धातुकला के उत्कृष्ट अमूल्य वस्तुओं के प्लास्टर कास्ट दर्शकों के लिये प्रदर्शित किए गये हैं। भारत में पाये जाने वाले विभिन्न जातियों के प्लास्टर कास्ट नमूने, पत्थरों के नमूने, वनों से उपलब्ध वस्तुयें भी प्रदर्शित हैं। देहरादून के समीप जोनसर बावर से प्राप्त महत्वपूर्ण वस्तुये जिनमें राजकीय मुद्रा अंकित पाथा मुख्य है, प्रदर्शित हैं। भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरु द्वारा संग्रहालय को उपहार-स्वरूप भेंट की गई वस्तुयें अपना विशेष महत्व रखती हैं।

धातु प्रतिमा कक्ष—

सन् १२०० से १८०० के मध्य की अष्टधातु एवं पीतल की विभिन्न मूर्तियाँ इस कक्ष में संग्रहीत हैं।

चित्रकला वीथिका—

चित्रकला वीथिका में कांगड़ा, नाथद्वारा एवं गुजरात शैली के चित्र प्रदर्शित हैं। कनखल के १९वी शताब्दी के भित्ति-चित्रों की अनुकृतियाँ भी नियोजित हैं।

संग्रहालय विषयगत शोध-विद्यार्थियों के लिये शोध-कार्य की सुविधा भी प्रदान करता है। प्रदर्शित विभिन्न वस्तुओं पर विस्तृत जानकारी हेतु असिस्टेन्ट क्यूरेटर श्री सुखवीरसिंह की सुविधायें प्राप्त हैं।

संग्रहालय में विषयगत ११०० पुस्तकों का भी संकलन है। संग्रहालय-सहायक श्री बृजेन्द्रकुमार जैरथ इस लघु पुस्तकालय की देख-रेख कर रहे हैं।

इस सत्र में लगभग १३०० दर्शकों ने संग्रहालय देखा। संग्रहालय आने वाले दर्शकों में कुछ विशिष्ट दर्शकों के नाम उल्लेखनीय हैं।

१- श्री विष्णुप्रसाद माथुर, संयुक्त निदेशक, सांस्कृतिक निदेशालय उ०प्र० शासन लखनऊ।

२—प्रो० बी०बी० लाल, भूतपूर्व महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग देहली, सम्प्रति भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला।

३—प्रो० लल्लन जी गोपाल, प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

४—श्री वी०पी० रामाराव, सेक्रेटरी, एजूकेशन, आन्ध्र प्रदेश शासन, आन्ध्र प्रदेश।

५—श्री एल०एस० वर्मा, निदेशक, ए०डी०आर०डी०ई०, आगरा।

६—प्रो० उदयवीर सिंह, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एव पुरातत्व विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

७—प्रो० कृष्णदत्त, भूतपूर्व प्रोफेसर, सागर विश्वविद्यालय, सागर।

वर्तमान समय में संग्रहालय में निम्नलिखित पदाधिकारी कार्यरत हैं :—

प्रो० विनोदचन्द्र सिन्हा — पदेन निदेशक
(सम्प्रति—अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एव पुरातत्व विभाग)

श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव	क्यूरेटर
श्री सुखवीरसिह	सहायक क्यूरेटर
श्री बृजेन्द्र कुमार जैरथ	संग्रहालय सहायक
श्री बालकृष्ण शुक्ल	लिपिक
श्री रमेशचन्द्र पाल	वीथिका अधिकारी
श्री ओमप्रकाश	भृत्य
श्री वासुदेव मिश्र	चौकीदार

वर्तमान सत्र में संग्रहालय के पदाधिकारियों के उल्लेखनीय कार्य—

निदेशक :—

प्रोफेसर विनोदचन्द्र सिन्हा ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्राप्त नेशनल फेलोशिप के अन्तर्गत अगस्त १९८५ से मार्च १९८६ तक **बौद्ध धर्म में प्रतीक चिन्ह पर शोधकार्य किया।**

३१ जनवरी से १ फरवरी १९८६ तक भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद् के सौजन्य से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "युगों से चली आ रही शिक्षा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में" के सह-निदेशक के रूप में कार्य किया। इसी संगोष्ठी में **'गुरुकुल एज्युकेशन थ्रू गांधीज आइज'** विषय पर लेख प्रस्तुत किया।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सौजन्य से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "आर्य समस्या एवं नागर सभ्यतायें" के सह-निदेशक नियुक्त हुए। लेकिन दिनाक

१ फरवरी से ४ फरवरी तक संगोष्ठी प्रो० सिन्हा के पूर्ण निर्देशन में सम्पन्न हुई।

"बिखरे हुये प्राचीन सांस्कृतिक अवशेष" लेख क्यूरेटर सूर्यकान्त श्रीवास्तव के सह-लेखन में प्रह्लाद, सितम्बर अंक ३, १९८५ पृष्ठ संख्या ३६ से ४० पर प्रकाशित।

क्यूरेटर :—

श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव ने राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली के रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर संग्रहालय के तत्वावधान में आयोजित आल इण्डिया म्यूजियम एसोसिएशन की वार्षिक बैठक एवं आयोजित संगोष्ठी **"संग्रहालय के माध्यम से शिक्षा"** एवं इण्डियन आर्केलियोजिकल सोसाइटी ऑव इण्डिया की वार्षिक बैठक एवं आयोजित संगोष्ठी में क्रमशः २७ दिसम्बर से ३० दिसम्बर १९८५ एवं ३ जनवरी से ६ जनवरी १९८६ तक में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के तत्वावधान मे विश्वविद्यालय ने भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद् एव विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सौजन्य से दिनांक ३१ जनवरी, १९८६ से ४ फरवरी, १९८६ तक कमशः युगों से चली आ रही शिक्षा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में एवं आर्य समस्या एवं नागर सभ्यतायें विषयों पर राष्ट्रीय सगोष्ठियाँ आयोजित की। दोनों ही संगोष्ठियों में स्थानीय सचिव का कार्य किया।

दोनों ही संगोष्ठियों में क्रमशः '**ऋग्वेदिक समाज में शिक्षा की परिकल्पना** एवं **ऋग्वेदिक आर्य एवं पुरातात्विक साक्ष्य**' विषयों पर शोध-लेख प्रस्तुत किये।

प्रकाशन :—

१– हरिद्वार : **गुरुकुल पत्रिका** अप्रैल अंक १, १९८६।

२– महाभारत : साहित्यिक एवं पुरातात्विक मूल्यांकन, **प्रह्लाद**, सितम्बर अंक २, १९८५, पृष्ठ संख्या ३४ से ४७।

३– **बिखरे हुये** प्राचीन सांस्कृतिक अवशेष, **प्रह्लाद**, सितम्बर, अंक ३, १९८६, पृष्ठ संख्या ३६ से ४०।

पुस्तक समीक्षा—

४- श्रीमती इन्दुमति मिश्रा द्वारा रचित "प्रतिमा विज्ञान" मध्य प्रदेश ग्रन्थ एकादमी द्वारा प्रकाशित की समीक्षा प्रह्लाद सितम्बर, अंक ३, १९८५।

सहायक क्यूरेटर—

श्री सुखवीर सिंह द्वारा "गुरुकुल संग्रहालय में सुरक्षित गुप्तकालीन महत्वपूर्ण मृण्मूर्तियाँ" विषय पर प्रह्लाद मार्च, अंक १, १९८५, पृष्ठ संख्या ५२ से ५६ में प्रकाशित।

—डा० विनोदचन्द्र सिन्हा
पदेन निदेशक

अंग्रेजी विभाग

विभागीय प्राध्यापक—

१–डा० राधेलाल वार्ष्णेय, एम०ए०, पी–एच०डी०, पी०जी०सी०टी०ई०, डिप०टी०ई० (सी०आई०एफ०एल०), प्रोफेसर एवं अध्यक्ष।

२–श्री सदाशिव भगत, एम०ए०, रीडर।

३–डा० नारायण शर्मा, एम०ए०, पी–एच०डी०, रीडर।

४–श्री अजय शर्मा, एम०ए०, एम०फिल०, प्रवक्ता।

५-डा० श्रवण कुमार, एम०ए०, पी–एच०डी०, प्रवक्ता।

विभागीय गतिविधियाँ तथा अनुसंधान में प्रगति—

विभाग में एम०ए० तथा पी–एच०डी० तक अध्ययन की व्यवस्था है। एम०ए० प्रथम वर्ष में ५५ प्रतिशत अंक प्राप्त होने पर, द्वितीय वर्ष में लघु-प्रबन्ध (Dissertation) लेने की तथा दोनों ही वर्षों में मौखिक परीक्षाओं का प्रावधान है। विभाग में वर्तमान समय में पाँच में से तीन प्राध्यापक पी–एच०डी० है, तथा अन्य दो पी–एच०डी० उपाधि हेतु शोध-कार्य में संलग्न है और शीघ्र ही डाक्टरेट की उपाधियाँ प्राप्त कर लेंगे।

विभाग में भाषा-विज्ञान प्रयोगशाला का भी विकास किया जा रहा है।

विभाग में अनुसन्धान की विशेषता यह है कि इसमें भारतीय आंग्ल-साहित्य (Indo-English) तथा भारतीय विचार और विषयों (Indian thoughts and themes) एवं तुलनात्मक साहित्य (Comparative literature) को प्राथमिकता दी जाती है। इस समय विभाग के विभिन्न अध्यापकों के अधीन लगभग ६ शोधार्थी शोध कर रहे हैं। कुछ अन्य अभ्यार्थियों के अनुसन्धान हेतु आये हुए प्रस्ताव और आवेदन-पत्र विभाग की रिसर्च डिग्री कमेटी ने अस्वीकृत कर दिये थे। अंग्रेजी विभाग की ओर से अनुसन्धान की उन्नति हेतु पुस्तकालय में नवीन पुस्तकें तथा अनुसन्धान-पत्रिकाएँ एवं सन्दर्भ-ग्रन्थ भी मँगवाये गये हैं।

विभागीय शिक्षकों के व्यक्तिगत कार्य विवरण—

(१) डा० राधेलाल वार्ष्णेय—

विभागाध्यक्ष डा० राधेलाल वार्ष्णेय ने १९८४ में सोवियत संघ की यात्रा की, मास्को और लेनिनग्राद के विश्वविद्यालयों तथा अन्य उच्च संस्थानों में भाषण दिए। यू० जी० सी० समर इन्स्टोट्यूट इंगलिश में उच्च स्तर का कार्य करने के कारण, यू० जी० सी० फेलोशिप प्राप्त की। रोटरी डिस्ट्रिक्ट ३१० में अंग्रेजी निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान तथा शील्ड प्राप्त की। लगभग १०० पुस्तकें, ५० लेख और कविताएँ प्रकाशित। अनेक पुस्तकों की समीक्षा लिखी। उच्च-स्तरीय सम्मेलनों का संचालन किया। वैदिक पाथ के सम्पादन तथा प्रशासनिक कार्यों में सहयोग। अनेक साहित्यिक सम्मेलनों, सगोष्ठियों, टीचर्स ट्रेनिंग सम्मेलनों में सक्रिय योगदान तथा अंग्रेजी प्राध्यापकों को प्रशिक्षण एवं विभिन्न रिपोर्ट आदि का लेखन-सम्पादक।

(क) शोध निर्देशन—

चार शोधार्थियों को विभिन्न विषयों पर शोध करा रहे हैं :

१—पी०एस० नेगी	"एलीनेशन इन द पोइट्री ऑव कीटस"
२—ए० गुप्ता	"एक्सप्रेसिनिज्म एण्ड रिअलिज्म इन द प्लेज ऑव टिनैसी विलियमस"
३—पी० चौधरी	"इमेजरी इन द प्लेज ऑव क्रिस्टोफर फ्राई"
४—ए० मगन	"द थीम ऑव एलीनेशन इन द पोइट्री ऑव बाइरन।"

(ख) कान्फ्रेंस तथा व्याख्यान—

१-मेरठ विश्वविद्यालय में डी०एच० लौरेंस तथा टैगोर पर कान्फ्रेन्सिज मे भाग लिया।

२-ई० एम० बी०, बी० एच० ई० एल० की शिक्षण-संस्थाओं तथा केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों को अंग्रेजी-भाषा-अध्यापन की नवीनतम तकनीकी तथा रूस में अपनाई गई विधियों पर व्याख्यान दिये।

३-आल इण्डिया रेडियो, नजीबाबाद से रूसी भ्रमण के अनुभवों पर ४ अगस्त को वार्त्ता प्रसारित हुई।

(ग) लेखन, सम्पादन, प्रकाशन—

प्रकाशित पुस्तकें (१९८५-८६)—

१—ए स्टडी ऑव इन्डो-एंगलियन लिट्रेचर
२—बर्टन्ड रसल : अनपोपूलर एसेज

३—मेजर मूवमेन्टस इन इंगलिश लिट्रेचर
४—लौन्जाइनस : आन द सबलाइम
५—जान ऑसवार्न : लुक बैक इन एन्गर

लेख—"होली हरिद्वार", द हॉक, कुम्भ संस्करण।

(२) **श्री सदाशिव भगत**— रीडर एवं १० जून, १९८६ तक अध्यक्ष।

शोध निर्देशन एवं कार्य—

(क) "द इमेज ऑव वुमन इन द नौवल्स ऑव इन्डो एंगलियन राइटर्स" विषय पर शोधकार्य करवा रहे हैं।
शोधार्थी : श्री पी०एस० चौहान।

(ख) एक और शोधार्थी द्वारा स्वामी दयानन्द तथा अरविन्दो पर तुलनात्मक शोध-अध्ययन प्रारम्भ।

(ग) पी-एच०डी० शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन तथा मौखिकी परीक्षा लेना।

(घ) अवध विश्वविद्यालय के अंग्रेजी अनुसन्धान समिति की बैठकों में भाग।

(ङ) पटना विश्वविद्यालय में शोध-मूल्यांकन।

(च) जनवरी १९८६ में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में डी०एच० लौरेंस पर हुए सेमिनार में भाग लिया।

(३) **डा० नारायण शर्मा**—रीडर।

(क) तीन शोध विद्यार्थियों को पी-एच०डी० करा रहे है। इनके विषय टैगोर के काव्य, राजा राउ की उपन्यास-कला एवं अंग्रेजी और भारतीय कवियों की अंग्रेजी कविता में स्वतन्त्रता, समानता और सौहार्द्र की भावनाओ से सम्बन्धित हैं।

(ख) मेरठ विश्वविद्यालय में टैगोर पर हुई कान्फ्रैन्स में भाग।

(ग) निम्नलिखित लेख प्रकाशित होने वाले हैं :—

१-रिदम एण्ड इमेजरी इन द पोइट्री ऑव डी०एच० लौरेंस।
२-गीता एण्ड द पोइट्री ऑव श्री अरविन्दो।
३-श्री अरविन्दोज कन्सेप्ट ऑव ओवरहैड पोइट्री।

(घ) अन्य विभागीय गतिविधियों में पूर्ण सहयोग।

(४) श्री अजय शर्मा—प्रवक्ता ।

(क) पी०जी०सी०टी०ई० तथा पी-एच०डी० के अध्ययन में सलग्न।

(ख) सभी विभागीय गतिविधियों में योगदान ।

(ग) हार्डी पर एक पुस्तक तथा अरविन्दो पर एक लेख प्रकाशित ।

(घ 'ए स्टडी ऑव वेनिटी ऑव ह्यूमैन विशिज' पर मेरठ विश्वविद्यालय में डा० जानसन के सेमिनार में पेपर पढ़ा ।

(५) डा० श्रवणकुमार शर्मा—प्रवक्ता ।

(क) डी०एच० लौरेंस तथा टैगोर पर कान्फ्रेंसिस (मेरठ विश्वविद्यालय) में भाग ।

(ख) पी-एच०डी०, अनुसन्धान, "एलीमेशन इन द पोइट्री ऑव मैन्यू आरनल्ड" प्रबन्ध प्रकाशनाधीन ।

(ग) श्री अरविन्दो पर एक लेख प्रकाशित ।

(घ) अन्य विभागीय गतिविधियों में योगदान ।

(ङ) खेलों की टीमों के साथ बाह्य यात्रा । विश्वविद्यालय क्रिकेट टीम के मैनेजर के रूप में जयपुर गये ।

(च) सितम्बर-अक्टूबर, १९८५ में मेरठ विश्वविद्यालय में हुए अंग्रेजी के यू० जी० सी० समर इन्स्टीट्यूट में सक्रिय भाग ।

—डा० आर० एल० वार्ष्णेय
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष

३० जून, १९८६

हिन्दी विभाग

प्रस्तावना—

इस विभाग में प्रारम्भ से आर्यभाषा विभाग के नाम से कार्य चल रहा था परन्तु १९६३ से इस विभाग का नाम हिन्दी विभाग हो गया। विद्या-विनोद (Intermediate) तथा अलंकार (Degree course) कक्षाएँ तो पहले से थीं अब एम०ए० कक्षाएँ भी प्रारम्भ हो गई। उत्तम शिक्षण-व्यवस्था एवं परिणाम के कारण इस विभाग की ख्याति फैली तथा इसकी एम०ए० की उपाधि को अन्य विश्वविद्यालयों ने अपनी एम०ए० उपाधि के समकक्ष मान्यता प्रदान की। आगे चलकर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से इस विषय में पी-एच०डी० उपाधि हेतु शोधकार्य कराने की अनुमति भी प्राप्त हो गई है। जब से अनुमति प्राप्त हुई है तब से इस विषय में इतना प्रामाणिक शोधकार्य हो चुका है कि इस विश्वविद्यालय का मस्तक गौरव से ऊँचा हुआ है।

विभागीय शिक्षक —

इस विभाग में निम्नांकित शिक्षक कार्य कर रहे हैं—

१—डा० विष्णुदत्त राकेश, डी० लिट्० : प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
२—डा० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, डी० लिट्० : प्रोफेसर
३—डा० ज्ञानचन्द, पी-एच० डी० : प्रवक्ता
३—डा० भगवानदेव पाण्डेय, पी-एच० डी० : प्रवक्ता

विभागीय गतिविधियाँ—

१- स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं के पाठ्यक्रम को अद्यतन बनाने की प्रक्रिया चल रही है। पाठ्यक्रम समिति की निकट-भविष्य में होने वाली बैठक में इसे अन्तिम रूप दिया जायेगा।

२- हिन्दी साहित्य तथा मानविकी के कुछ सम्बद्ध विषयों में परस्पर अन्तर्वर्ती सम्बन्धों को लेकर विभाग में शोध विषय प्रदान किये जाने की योजना है।

३- स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों को प्रसिद्ध साहित्यकारों की जन्मभूमि दिखाने के लिये एक सरस्वती यात्रा विभाग के प्राध्यापक डा० भगवान देव पाण्डेय के निर्देशन में सम्पन्न हुई।

४– विभागीय प्राध्यापकों में डा० ज्ञानचन्द्र रावल ने फुटकर लेख लिखे। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्य में मानव - मूल्यों पर इनका शोध-कार्य चल रहा है। गुरुकुल महाविद्यालय, सिकन्दराबाद में आधुनिक शिक्षा तथा गुरुकुलीय शिक्षा पर उन्होंने व्याख्यान दिया। डा० भगवानदेव पाण्डेय व्युत्पत्ति विज्ञान पर शोध कार्य कर रहे हैं। उनके लेख तथा पुस्तक-समीक्षाएँ प्रकाशित हुईं। विभाग के पूर्व-अध्यक्ष प्रोफेसर डा० अम्बिकाप्रसाद जी वाजपेयी ने अध्यापन तथा शोध के क्षेत्र में योगदान किया।

५– विभागाध्यक्ष डा० विष्णुदत्त राकेश की दो पुस्तकें 'आचार्य श्री चन्द्र : सिद्धान्त, साधना और साहित्य' एवं 'वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त मेरी दृष्टि में' प्रकाशित हुईं। उत्तर प्रदेश धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नागरी प्रचारिणी पत्रिका तथा प्रह्लाद में लेख प्रकाशित हुए। आकाशवाणी नजीबाबाद से वार्ताएँ प्रसारित हुईं। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भारतेन्दु और दयानन्द पर व्याख्यान दिया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल शताब्दी पर स्नातकोत्तर विद्यालयों में व्याख्यान दिये। केन्द्रीय विद्यालयों के प्राध्यापकों के ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर तथा संस्कृत निदेशालय की सहायता राशि से सम्पन्न पुरोहित प्रशिक्षण शिविर में व्याख्यान दिए। रुद्र देवता, शिक्षा और जीवन मूल्य तथा सन्त गरीबदास—पुस्तकों की विस्तृत अनुशीलनात्मक भूमिकाएँ लिखीं। प्रह्लाद शोध पत्रिका का सम्पादन किया तथा रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम समिति में विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया।

६– केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की प्रसार व्याख्यानमाला योजना के अन्तर्गत बल्लभनगर, गुजरात के हिन्दी आचार्य डा० सुरेशचन्द्र त्रिवेदी के चार व्याख्यान विभाग में हुए तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० महेन्द्र कुमार, हिमाचल विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० राजदेव सिंह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के डा० त्रिभुवनसिंह एवं पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी आचार्य डा० धर्मपाल मैनी विभाग में पधारे तथा विद्यार्थियों का मार्ग-दर्शन किया।

—डा० विष्णुदत्त राकेश
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

गणित विभाग

जौलाई १९८५ में बी०एस-सी० प्रथम वर्ष गणित ग्रुप में प्रवेश लेने वाले छात्रों की भीड़ रही। २०० छात्रों में से मेरिट के आधार पर छाँट कर १२० छात्रों को प्रवेश दिया गया। इन छात्रों को भी मेरिट के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया गया।

बी०एस-सी० द्वितीय वर्ष में २६ छात्र थे। एम०एस-सी० गणित (प्रथम वर्ष) में सेकिण्ड डिविजन में पास २० छात्रों को प्रविष्ट किया गया। द्वितीय वर्ष में १२ छात्र थे।

बी०एस-सी० के छात्रों ने मनोयोग से वर्ष भर अध्ययन किया। लगभग सभी छात्र रुड़की विश्वविद्यालय, मोतीलाल नेहरू रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, आई० आई० टी० कानपुर, एयरफोर्स, आई० एम० ए०, नेवी आदि प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित हो रहे है। अध्यापक महानुभाव रुचि लेकर छात्रों का पथ-प्रदर्शन करते रहे है।

अधिकतर शिक्षक शोध-कार्यों में लगे हुए है। इस समय विभाग में ७ शिक्षक कार्य कर रहे है।

१—श्री सुरेशचन्द्र त्यागी — प्रिंसिपल एव अध्यक्ष
२—डा० श्यामलाल सिंह — प्रोफेसर
३—श्री विजयपाल सिंह — रीडर
४—श्री विजयेन्द्र कुमार — रीडर
५—श्री महीपाल सिंह — प्रवक्ता
६—श्री हरबन्सलाल गुलाटी — प्रवक्ता
७—श्री राजेश पाण्डे — प्रवक्ता

श्री एस०एल० सिंह ने भारतीय विज्ञान कांग्रेस के वार्षिक सम्मेलन में जनवरी १९८६ में भाग लिया तथा अनेक शोध-कार्य किये।

श्री हरबन्स लाल गुलाटी ने अपने शोध-पत्र विभिन्न शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ भेजे।

श्री विजयेन्द्र कुमार ने अपना लेख प्रकाशनार्थ भेजा।

विभाग की ओर से आगामी सत्र से पी-एच०डी०, स्टेटिसटिक्स (एम० एस-सी०), कम्प्यूटर कोर्स प्रारम्भ करने की योजना है।

छात्रों के ज्ञानवर्धन के लिए इस वर्ष गणित के निम्न प्रसिद्ध विद्वानों के लैक्चर कराये गये :

१-मैडम डा० एच० शिमर (कनाडा)
विषय : अलजबराइक टोपोलोजी

२-श्रीमती आशा रानी सिंघल (इस्टीट्यूट ऑव एडवान्स स्टडीज, मेरठ)
विषय : गणित मे नामों का महत्व

३-डा० एस० कानन (हैदराबाद विश्वविद्यालय)
विषय : ओरथोगोनलटी

४-डा० आर०के० राठी (इन्स्टीट्यूट ऑव एडवान्स स्टडीज, मेरठ)
विषय : वैज्ञानिक अनुसन्धान में कम्प्यूटरों का योगदान।

छात्रों के लाभ के लिए नवीनतम प्रकाशित पुस्तकें तथा शोध-पत्रिकाएँ विश्वविद्यालय पुस्तकालय में मगवाने के लिए प्रस्तावित की गई।

—**सुरेशचन्द्र त्यागी**
प्रिंसिपल एवं अध्यक्ष

भौतिक विज्ञान विभाग

भौतिक विज्ञान विभाग का निर्माण यू०जी०सी० से प्राप्त अनुदान से हुआ। विभाग में २ रीडर तथा २ प्रवक्ता कार्य कर रहे हैं। विभाग में दो प्रयोगशाला बी०एस-सी० प्रथम वर्ष एव द्वितीय वर्ष, एक अध्यक्ष रूम, एक स्टाफ रूम तथा दो श्याम प्रकोष्ठ है। बी०एस-सी० के क्रियात्मक कार्य के लिए कोर्स सम्बन्धी सभी उपकरण विद्यमान है। तीन प्रयोगशाला एम०एस-सी० के लिए तैयार है जिनमें बिजली की fitting भी हो चुकी है। एम०एस-सी० के लिए अधिकतर उपकरण तथा पुस्तकें विद्यमान हैं। इस वर्ष यू०जी०सी० से प्राप्त अनुदान से रु० ४०,०००/- के उपकरण तथा Library grant से पुस्तकें खरीदी जानी हैं। इस वर्ष यू०जी०सी०की सलाह पर Academic Council में एम०एस-सी० भौतिक विज्ञान खोलने पर विचार विमर्श किया गया तथा एक मत से जौलाई मास में खोलने की स्वीकृति प्रदान की गई। इसके साथ-साथ Computer Science में Diploma भी नये सत्र से खोलने का विचार है।

भावी योजना—

१—भौतिक विज्ञान में Post Graduate कक्षाएँ आरम्भ करना।

२—भौतिक विज्ञान में Research Programme शुरु करना।

३—भौतिक विज्ञान विभाग में Computer Science Diploma शुरु करना।

४—भौतिक विज्ञान विभाग में एक V.C.R. खरीदना।

स्टाफ—

१-प्रो० हरिशचन्द्र ग्रोवर	—	रीडर एवं अध्यक्ष
२-प्रो० बी०पी० शुक्ल	—	रीडर
३-डा० राजेन्द्रकुमार अग्रवाल	—	प्रवक्ता
४-डा० परमानन्द पाठक	—	प्रवक्ता
५-श्री प्रमोदकुमार शर्मा	—	प्रयोगशाला सहायक
६-श्री ठकुरासिह	—	भृत्य

सत्र १९८५-८६ में भौतिक विज्ञान विभाग में बी०एस-सी० प्रथम खण्ड में ११० तथा द्वितीय खण्ड में ३० विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया। सत्र का प्रारम्भ विधिवत् हुआ।

पाठ्यक्रम— बी० एस-सी० प्रथम खण्ड

(a) Mathematical Physics
(b) Mechanics & Sound
(c) Optics

बी० एस-सी० द्वितीय खण्ड

(a) Thermal Physics
(b) Electricity & Magnetism
(c) Atomic Physics

शिक्षक-छात्र का अनुपात

१ : ३५

विभागीय उपाध्यायों का लेखन-कार्य—

विभाग के सभी अध्यापकों के कई लेख विभिन्न पत्रिकाओं एवं रिसर्च जनरल में प्रकाशित हुए हैं। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुई सभी Conferences में सभी अध्यापकों ने भाग लिया तथा सभी ने पेपर पढ़े। हरिशचन्द्र ग्रोवर तथा बुद्धप्रकाश शुक्ल मेरठ विश्वविद्यालय एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में Ph. D. कार्य कर रहे हैं। इसके साथ ही साथ विज्ञान महाविद्यालय में Integrated Study of Ganga में P.I. के रूप में हरिशचन्द्र ग्रोवर कार्य कर रहे हैं। विभागाध्यक्ष ने इस वर्ष दिसम्बर माह में १८ दिन तक विभाग के साथ-साथ Finance Officer का भी कार्य किया। विभाग में डा० परमानन्द पाठक के फरवरी मास में गोहाटी विश्वविद्यालय में National Space Science Symposium में भाग लिया तथा लखनऊ में मार्च में Halli Comet के Seminar में भाग लिया।

परीक्षा परिणाम—

पिछले वर्षों की भाँति १९८४-८५ का परीक्षा परिणाम उत्तम रहा।

—प्रो० हरिशचन्द्र ग्रोवर
रीडर एवं अध्यक्ष

रसायन विभाग

इस वर्ष बी. एस-सी. प्रथम वर्ष मे मेरिट के आधार पर, बी. एस-सी. द्वितीय वर्ष मे प्रथम वर्ष के उत्तीर्ण छात्रों को तथा पी. जी. डिप्लोमा मे मेरिट व साक्षात्कार के आधार पर प्रवेश दिया गया। विभाग में छात्रों की प्रभावी संख्या लगभग २०० रही।

नियुक्तियाँ—

इस सत्र में श्री श्रीकृष्ण की प्रवक्ता, रसायन के रूप में तदर्थ रूप से नियुक्ति हुई जो १५ मई, १९८६ तक प्रभावी है। इस प्रकार विभाग मे कुल कर्मचारी निम्न प्रकार है :

क) शिक्षक—

१- डा० रामकुमार पालीवाल, रीडर एवं अध्यक्ष (कार्बनिक रसायन)
२- डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण, रीडर (कार्बनिक रसायन)
३- श्री कौशल कुमार, प्रवक्ता (अकार्बनिक रसायन)
४- डा० रजनीश दत्त कौशिक, प्रवक्ता (भौतिक रसायन)
५- डा० रणधीरसिंह, प्रवक्ता (अकार्बनिक रसायन)
६- श्री श्रीकृष्ण, प्रवक्ता (भौतिक रसायन)

ख) शिक्षकेत्तर:—

१- श्री शशीभूषण, लैब सहायक
२- श्री मानसिंह, गैस मैन
३- श्री नरेशकुमार, लैब ब्याय
४- श्री जयपाल सिंह, लैब ब्याय

डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण व डा० रणधीरसिंह को १६-२-८६ से क्रमशः रीडर, कार्बनिक रसायन तथा प्रवक्ता, अकार्बनिक रसायन पद पर गुरुकुल

कागड़ी विश्वविद्यालय की सेवा में स्थायी किया गया। श्री नरेशकुमार को लैब ब्वाय के पद पर स्थायी किया गया।

इस प्रकार विभाग में कुल स्थायी कर्मचारियों का विवरण निम्नवत है :

ग) **शिक्षक—**

१– डा० रामकुमार पालीवाल, रीडर एवं अध्यक्ष
२– डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण, रीडर
३– डा० रजनीशदत्त कौशिक, प्रवक्ता
४– डा० रणधीरसिंह, प्रवक्ता

घ) **शिक्षकेत्तर—**

१– श्री शशीभूषण, लैब सहायक
२– श्री मानसिंह, गैस मैन
३– श्री नरेशकुमार, लैब ब्वाय

नवीन कोर्स—

विभाग में इस सत्र से "पी०जी० डिप्लोमा इन कॉमर्शियल मेथड्स ऑव कैमिकल एनेलिसिस" कोर्स प्रारम्भ किया गया। यह एप्लाइड, नवीन तथा रोजगारोन्मुख एकवर्षीय कोर्स है। मेरिट व साक्षात्कार के आधार पर १० छात्रों को प्रवेश दिया गया। छात्रों को उक्त कोर्स के अन्तर्गत आधुनिक उपकरणो व तकनीकों पर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उक्त कोर्स मे छात्रों को निम्न विषयो मे प्रशिक्षित किया जा रहा है :

१—जल विश्लेषण
२—तेल, वसा व साबुन विश्लेषण
३—सोयल विश्लेषण
४—फर्टिलाइजर विश्लेषण
५—सीमेंट, मोर्टार, मिनरल एव एलॉय विश्लेषण
६—रसायनों का विश्लेषण
७—ड्रग्स व फार्मेस्यूटिकल्स विश्लेषण
८—क्लीनिकल विश्लेषण
९—सामान्य विश्लेषण विधियाँ।

उक्त कोर्स के अन्तर्गत छात्रों को निम्नलिखित लेबोरेट्रीज् में प्रशिक्षण दिलाया गया—

क) ड्रग टेस्टिंग लेबोरेटरी (उ. प्र. सरकार), रिषिकुल, हरिद्वार।
ख) पेथोलोजिकल लेबोरेटरी, रिषिकुल आयुर्वेदिक कालेज, हरिद्वार।
ग) "इण्डियन ड्रग्स एवं फार्मेस्यूटिकल्स लिमिटेड," क्वालिटी कन्ट्रोल एवं एनेलिटिकल लेबोरेट्रीज, वीरभद्र (रिषिकेश)।
घ) "पोल्यूशन कन्ट्रोल रिसर्च इन्स्टीट्यूट," बी०एच०ई०एल०, हरिद्वार (एक सयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम का संस्थान)।

शोधकार्य गतिविधियाँ—

(क) शोध प्रोजेक्ट्स—

१—डा० रामकुमार पालीवाल ने गंगा समन्वित परियोजना में इन्वेस्टिगेटर के रूप में कार्य किया तथा विभिन्न स्थानों के जल, मिट्टी आदि के नमूनों के प्रयोगशाला-विश्लेषण में योगदान दिया।

२—डा० रजनीशदत्त कौशिक, प्रवक्ता भौतिक-रसायन को स्वतन्त्र रूप से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत शोध प्रोजेक्ट का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। यह प्रोजेक्ट अगस्त, १९८४ से चल रहा है तथा इसके लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने रु० ७५००/- स्वीकृत किये। उक्त प्रोजेक्ट के अन्तर्गत अभी तक दो शोधपत्र तैयार कर प्रस्तुत किये जा चुके हैं तथा प्रकाशन हेतु प्रेस में हैं।

३—डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण तथा डा० रणधीरसिंह ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को स्वीकृति हेतु अपने-अपने शोध प्रोजेक्ट भेजे।

(ख) शोधपत्रों का प्रकाशन—

१—**डा० रामकुमार पालीवाल** के ३ शोधपत्र प्रकाशित हैं।

२—**डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण** के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध जर्नलों में कुल १२ शोधपत्र प्रकाशित हैं। उक्त में से निम्न दो गत वर्ष में प्रस्तुत हुए :

(i) "स्पेक्ट्रोफोटोमीट्रिक डिटरमिनेशन ऑव एनिलीन इन माइक्रोग्राम अमाउन्टस इन वाटर" प्रोसीडिंग्स, नेशनल सेमिनार आन गंगा पोल्यूशन, गु०कां०वि०, (In Press)

(ii) "स्पेक्ट्रोफोटोमीट्रिक डीटरमिनेशन ऑव फार्मेशन कोन्सटेन्ट ऑव वेरियस मेटल काम्पलेक्सेस एण्ड एस्टेब्लिशमेन्ट ऑव प्रोवेबल नम्बर ऑव ओवरलेपिंग सक्सेसिव काम्प्लेक्सेस यूजिंग काइनेटिक डाटा" प्रोसीडिंग्स ऑव एनुअल कन्वेशन ऑव केमिस्टस, एनेल—१६, पृष्ठ D7, वर्ष १९८५।

३—**श्री कौशल कुमार** ने "स्टडीज आन मेटल काम्प्लेक्सेस ऑव सब्स्टीट्यूटेड ३-एराइल, २-एराइल इमिनो (या पिरिडिलिमिनो) ४-थायोजोलिडीन्स" नामक शोध पत्र पी-एच०डी० की उपाधि के लिए गढ़वाल विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया।

४—**डा० रजनीश दत्त कौशिक** के अब तक १४ शोध पत्र राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शोध जर्नलों में प्रकाशित है। इनमें से निम्नलिखित दो गत वर्ष में प्रकाशित हुए :

(i) "स्पेक्ट्रोमीट्रिक डीटरमिनेशन ऑव एनिलीन इन माइक्रोग्राम अमाउन्ट्स इन वाटर", प्रोसीडिंग्स, नेशनल सेमिनार आन गंगा पोल्यूशन, गु०का०वि०, १९८५ (In Press)

(ii) "माइक्रोग्राम डीटरमिनेशन ऑव एन०एन० डाइमिथाइल एनिलीन इन वाटर बाइ स्पेक्ट्रोफोटोमीट्रिक मेथड", प्रोसीडिंग्स, नेशनल सेमिनार आन गंगा पोल्यूशन, गु०का०वि०, १९८५ (In Press)

५—**डा० रणधीरसिंह** के अब तक १५ शोधपत्र प्रकाशित हुए है जिनमें से एक गत वर्ष में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ :

"सिन्थेसिस एण्ड केरेक्टराइजेशन ऑव मेक्रोसाइक्लिक लिगेन्ड—हाइली सलेक्टिव एक्सट्रेक्टिव फॉर ट्रान्जीशनल मेटल्स", इटली में १९८६ मे होने जा रही अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत।

कान्फ्रेंसेस आदि में योगदान—

(i) "शिक्षा की चुनौती" राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स, गु०का०वि०, (९-१० नवम्बर, १९८५)—समस्त शिक्षक उपस्थित रहे। डा० इन्द्रायण, श्री कौशल कुमार व डा० रजनीशदत्त कौशिक ने शोधपत्र प्रस्तुत किये।

(ii) "गंगा प्रदूषण पर राष्ट्रीय सेमिनार", गु०कां०वि० (५-६ जून, १९८५)—समस्त शिक्षक उपस्थित रहे। डा० इन्द्रायण ने एक तथा डा० कौशिक ने दो शोधपत्र प्रस्तुति हेतु दिये।

(iii) "इन्टरनेशनल कान्फ्रेन्स आन न्यू टेक्नोलोजीज़ इन हायर एजूकेशन", IIT, दिल्ली, २८-२६ नवम्बर, १६८५—डा० इन्द्रायण ने एक शोधपत्र प्रस्तुत किया।

(iv) अखिल भारतीय दार्शनिक परिषद् की राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स, गु०कां०वि०—समस्त शिक्षक उपस्थित रहे।

एक्सटेंशन कार्य-गतिविधियाँ—

(क) विभाग में प्रतिष्ठित वैज्ञानिक का आगमन व भाषण—

राजस्थान विश्वविद्यालय के भूतपूर्व रसायन विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर युगल किशोर गुप्ता का सारगर्भित भाषण "व्हाइ डू केमिकल रिएक्शन्स अकर" विषय पर १७-८-८५ को हुआ जिसमें छात्रों व प्राध्यापकों की उपस्थिति प्रशंसनीय रही।

(ख) श्री ओमप्रकाश सिन्हा बलिदान दिवस आयोजन—

दिनांक २०-६-८५ को प्रोफेसर ओमप्रकाश सिन्हा बलिदान दिवस के अवसर पर यज्ञादि कार्यक्रमों का विभाग में आयोजन हुआ। छात्रों व प्राध्यापकों को उक्त अवसर पर श्रीरामप्रसाद वेदालंकार उपकुलपति, श्री सुरेशचन्द्र त्यागी प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय व अन्य वक्ताओं ने सम्बोधित किया एवं दिवंगत श्री सिन्हा जी को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

(ग) विभागीय शिक्षकों के एक्सटेंशन कार्य सम्बन्धो लेखों का प्रकाशन—

क्रम सं० लेखक का नाम	लेख का नाम, पत्रिका, पृष्ठ, वर्ष
१—डा० रामकुमार पालीवाल	"सम माइक्रोबियल कैमिकल प्रोडक्ट्स" (अंग्रेजी), आर्यभट्ट पत्रिका, पृष्ठ ३३-३५, वर्ष जून, १६८५।
२—डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण	"इज डी० एन० ए० सेल्फिश", (अंग्रेजी), आर्यभट्ट, पृष्ठ, ३६-३६, वर्ष जून, १६८५।
३—डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण	"एप्लीकेशन ऑव न्यू टेक्नोलोजी टू इम्प्रूव अपोन द एजूकेशनल एनवायरनमेन्ट" (अंग्रेजी) प्रोसीडिंग्स, इन्टरनैशनल कान्फ्रेंस आन न्यू टेक्नोलोजीज इन हायर एजूकेशन, IIT, दिल्ली, पेनल IV, पृष्ठ ४.५४ से ४.६४ (१६८५)

क्रम सं० लेखक का नाम	लेख का नाम, पत्रिका, पृष्ठ, वर्ष
४—डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण	"नीडस एण्ड वेज ऑव नेशनल एण्ड इन्टर-नेशनल अन्डरस्टेन्डिग", सेमिनार आन "शिक्षा की चुनौती" (प्रकाशनाधीन)
५—श्री कौशल कुमार	"नयी शिक्षा प्रणाली में आध्यात्मिक शिक्षा का योगदान", प्रोसीडिंग्स "शिक्षा की चुनौती" सेमिनार (प्रकाशनाधीन)
६—डा० रजनीशदत्त कौशिक एवं डा० रामकुमार पालीवाल	"सत्यार्थ प्रकाश डीनाउन्सेज कान्सेन्गुइनियस मेरिजेज्", (अंग्रेजी) वैदिक पथ, पृष्ठ ५९-६४, मार्च, १९८६।
७—डा० रजनीशदत्त कौशिक	"गुरुकुल सिस्टम ऑव एजूकेशन एण्ड न्यू एजूकेशन पॉलिसी", "शिक्षा की चुनौती", राष्ट्रीय सेमिनार, गु०कां०वि, प्रोसीडिंग्स (प्रकाशनाधीन)
८—डा० रजनीशदत्त कौशिक	"रासायनिक क्रिया भविष्य", प्रह्लाद, २, पृष्ठ ६९-७३, वर्ष १९८५।
९—डा० रजनीशदत्त कौशिक	"मेटल्स इन अवर बॉडी", आर्यभट्ट पत्रिका (अंग्रेजी), पृष्ठ २९-३२, वर्ष जून १९८५।

(घ) अन्य एक्सटेंशन गतिविधियाँ—

१—डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण ने आल इण्डिया रेडियो, नजीबाबाद से दो क्विज कार्यक्रम १३-९-८५ तथा ४-३-८६ को दिये।

२—डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण ने "इम्प्रुव्ड मेथड्स ऑव साइन्स एजूकेशन" नामक भाषण स्कूल शिक्षकों के समर स्कूल में दिया जो केन्द्रीय विद्यालय नं २, BHEL में लगाया गया।

३—डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण ने राष्ट्रीय सेवा योजना, एस०एम०जे०एन० कालेज के वार्षिक कैम्प में "प्रौढ़ शिक्षा एवं एन०एस०एस०" विषय पर अक्तूबर, १९८५ में भाषण दिया।

अन्य गतिविधियाँ—

१—डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण ने को-आर्डिनेटर, प्रौढ़ शिक्षा पद पर कार्य किया।

२—डा० रणधीरसिंह को रुड़की विश्वविद्यालय का वार्षिक खोसला पुरस्कार कुछ अन्य महानुभावों के साथ संयुक्त रूप से श्री वी०पी० नरसिम्हाराव द्वारा दिनांक १ मार्च, १९८६ को प्रदान किया गया।

३—इस वर्ष विभाग में, विभागीय पुस्तकालय की स्थापना की गई।

४—विभाग के लिए प्रदत्त ग्रान्ट से पुस्तकें खरीदी गयी।

५—लगभग रु० ४०,०००/- के उपकरणादि विभाग के लिए खरीदे गये।

६—बी०एस-सी० के पाठ्यक्रमों का पुनर्गठन किया गया।

७—सातवी पंचवर्षीय योजना में एम०एस-सी० कक्षाएँ प्रारम्भ करने हेतु योजना व पाठ्यक्रम तैयार किये गये। इसके लिए नवीन सामग्री क्रय करके इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार किया गया।

—डा० रामकुमार पालीवाल
रीडर एवं अध्यक्ष

जन्तु विज्ञान विभाग

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी जन्तु विज्ञान विभाग निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। विभाग का वार्षिक सत्र अत्यन्त व्यवस्थित एवं सुचारू रूप से चलता रहा तथा अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हुईं। इस सत्र में छात्रों की सख्या निम्नवत् रही :

१—एम०एस-सी० माइक्रोबायोलोजी (प्रथम क्रेडिट)	—	१०
२—एम०एस-सी० माइक्रोबायोलोजी (द्वितीय क्रेडिट)	—	११
३—बी०एस-सी० (प्रथम वर्ष)	—	२३
४—बी०एस-सी० (द्वितीय वर्ष)	—	१६

शिक्षक वर्ग—

१—डा० बी०डी० जोशी	:	प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
२—डा० टी०आर० सेठ	:	रीडर
३—डा० ए०के० चोपड़ा	:	रीडर
४—डा० डी० भट्ट	:	प्रवक्ता

शिक्षकेत्तर कर्मचारी—

१—श्री हरीशचन्द्र	:	प्रयोगशाला सहायक
२—श्री प्रीतमलाल	:	लैब बॉय

अगस्त, १९८५ में डा० ए०के० चोपड़ा ने नई नियुक्ति के आधार पर रीडर पद का कार्यभार ग्रहण किया। डा० चोपड़ा लखनऊ विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त किये हुए हैं। इससे पूर्व डा० चोपड़ा ने गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर में ८ वर्ष तक प्रवक्ता पद पर कार्य किया। उन्हें १६ वर्ष का शोधकार्य का अनुभव है। इनके ४४ शोधपत्र/वैज्ञानिक लेख राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

विभागीय क्रिया-कलाप—

अक्टूबर/नवम्बर, १९८५ में डा० बी०डी० जोशी के नेतृत्व में विज्ञान महाविद्यालय के १८ छात्र शैक्षणिक भ्रमण हेतु बम्बई, गोवा, आगरा, जयपुर, दिल्ली गये। वहाँ डा० जोशी ने छात्रों को शैक्षणिक तथा ऐतिहासिक महत्त्व के स्थानों से परिचित कराया। इसके अतिरिक्त छात्रों को विभिन्न समुद्री जन्तुओं एवं पौधों की इकॉलोजी से अवगत कराया।

दिसम्बर, १९८५ में प्रो० जोशी, जो कि राष्ट्रीय-सेवा योजना के प्रोग्राम आफीसर भी हैं, के संरक्षण में राष्ट्रीय-सेवा-योजना के चतुर्थ दस-दिवसीय वार्षिक शिविर का संचालन कांगड़ी ग्राम में हुआ। इस शिविर में विज्ञान महा-विद्यालय के ६३ छात्रों ने भाग लिया। विभागीय अध्यापकों ने भी समय-समय पर शिविर स्थल में अपना सहयोग प्रदान किया।

विभागीय प्राध्यापकों का कार्य-विवरण—

विभागाध्यक्ष प्रो० जोशी ने विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा समय-समय पर दिये गए अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों का उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक वहन किया। सत्र के अन्तर्गत प्रो० जोशी ने निम्नलिखित ६ सेमिनार/कान्फ्रेंसेस में भाग लिया और अपने शोधपत्र/निबन्ध प्रस्तुत किये :

१—गंगा प्रदूषण : दो शोधपत्र
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
जून ५-६, १९८५

२—शिक्षा की चुनौती : एक शोधपत्र
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
नवम्बर ८-१०, १९८५

३—इण्डियन साइन्स काग्रेस एशोसियेशन : एक शोधपत्र
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
जनवरी २-३, १९८६

४—न्यू डाइमेंशन्स इन पैरासाइटोलोजी : दो शोधपत्र
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
जनवरी १९-२०, १९८६
इस कान्फ्रेंस के एक सत्र में प्रो० जोशी ने अध्यक्ष पद पर कार्य किया।

५—स्टेट ऑव हिमालयन इनवाइरोनमेंट : एक शोधपत्र
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार
फरवरी १९-२१, १९८६

६—साइन्स डेवलेपमेंट एण्ड इनवाइरोनमेंट : एक शोधपत्र
डी०ए०वी० कालेज, मुजफ्फरनगर
फरवरी २२-२३, १९८६

प्रो० जोशी के निम्नांकित शोधपत्र प्रकाशित हुए —

१—इफैक्ट ऑव सीजनल वेरियेशन्स ऑन सम हिमेटोलौजीकल वैल्यूज ऑव हिलस्ट्रीम फिश टी० प्यूटीटौरा। जनरल ऑव एडवान्स जुलौजी, अंक ४ : ३९-४५ (१९८५)।

२—ऑन द अकरेंस ऑव ट्रिपैनोसोम्स फ्रॉम सर्टेन हिलस्ट्रीम फिशेज ऑव अल्मोड़ा एण्ड रिलेटेड अल्टे्शन्स इन सम ब्लड वैल्यूज ऑव ए फिश निमैकिलश रुपिकोला। यू०पी० जनरल ऑव जुलौजी, अंक ४ : २१-२६ (१९८५)

३—इफैक्ट ऑव डैसीकेशन ऑन सम हिमैटोलौजीकल वैल्यूज ऑव ए फ्रेशवाटर कैटफिश हैटेरोपिनिस्टिस फौसिलिस। कम्पेरेटिव फीजियोलोजी इकोलोजी, अंक ११ : १०-१२ (१९८६)

४—प्राब्लम्स एण्ड प्रोस्पेक्ट्स ऑव एक्वारिसोर्स मैनेजमेंट इन हिमालयाज। पुस्तक "द हिमालयाज : इनवाइरोनमेंट, रिसोर्सेज एण्ड डेवलेपमेंट", हिमालयन पब्लिकेशन, १९८६ में प्रकाशनार्थ स्वीकृत।

लेख—

१—बेसिक प्रिंसिपलस् ऑव नेशनल एजूकेशन पालिसी : शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार को एक ड्राफ्ट-प्लान प्रेषित।

२—ए हिमालयन ईको-डेवलपमेंट प्रोजेक्ट इन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय : आर्यभट्ट, अंक १ (१९८५)

३—तौगशा गाँव में सांख्य-आयोजन : गुरुकुल पत्रिका, अगस्त, १९८५, २०-२३ पृष्ठ।

४—हिमालयन : पर्यावरण समस्यायें एवं समाधान : आर्यभट्ट, अंक २ (१९८५)

५—कण्व-आश्रम एवं हिमालय शोध योजना : संक्षिप्त परिचय : आर्यभट्ट, अंक २, १९८५, ३७-४० ।

६—हिमालय : सम जियो-इनवाइरोनमेंटल आस्पेक्टस् : आर्यभट्ट, अंक २, १९८५, ७-११ ।

७—कन्सेप्ट ऑव इंडियन फिशरीज : ए बुक रिव्यू, आर्यभट्ट, अंक २, १९८५, ४२-४३ ।

८—द रिजर्वेशन मंडल : 'द हॉक' अंक ७ (१४६) १५ मई, १९८५, पृ० ४-५ ।

शोध निर्देशन—

चार शोध-छात्र कार्यरत है। कुमायूँ विश्वविद्यालय द्वारा एक शोध छात्र को पी-एच०डी० उपाधि प्रो० जोशी के निर्देशन में प्राप्त हुई है।

अन्य कार्य—

१—आल इण्डिया कांग्रेस ऑव इक्थायोलौजी की स्टीयरिंग समिति के विशिष्ट मत्स्य विज्ञानी के रूप में नामांकित किया गया ।

२—२७ मई, १९८५ को गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय में वृक्षारोपण कार्य का संचालन किया।

३—केन्द्रीय विद्यालय, संख्या १, बी०एच०ई०एल० में व्याख्यान दिया।

४—तगशा ग्राम, गोपेश्वर, जनपद चमोली में प्रौढ-शिक्षा समारोह में मुख्य अतिथि रहे।

५—सत्र १९८५-८६ में ए०आई०यू० में सांस्कृतिक कार्यक्रम अधिकारी के रूप में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

६—२९ अगस्त, १९८५ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हिमालय शोध योजना के उद्‌घाटन समारोह का संचालन किया।

७—अक्टूबर, १९८५ में बी०एस-सी० के छात्रों को शैक्षणिक भ्रमण कराया।

८—सत्र १९८५-८६ में गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय की अपेक्स समिति के सदस्य रहे।

९—विज्ञान महाविद्यालय की परीक्षाओं के लिए सहायक परीक्षाध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

१०—२३ जनवरी १९८६ को आकाशवाणी, नजीबाबाद से 'पहाड़ों में विकास और वन' विषय पर वार्त्ता प्रसारित हुई।

राष्ट्रीय सेवा योजना—

१—राष्ट्रीय सेवा योजना के विभिन्न कार्य-कलापों का सुचारू रूप से संचालन किया।

२—वार्षिक शिविर दिसम्बर २० से ३०, १९८५ का नेतृत्व किया।

हिमालय शोध योजना—

योजना पर शोधकार्य प्रगति पर है। विभिन्न आधुनिक उपकरणों से युक्त प्रयोगशाला विकसित की जा रही है।

माइक्रोबायलोजी का विशेष कोर्स—

माइक्रोबायोलोजी विभाग, कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर में आयोजित 'लेबोरेटरी ओरियन्टेशन कोर्स कम प्लानिंग' हेतु १५ दिन तक वहाँ कार्य किया।

कांगड़ी ग्राम-विकास-योजना—

१—राष्ट्रीय सेवा *योजना द्वारा कांगड़ी ग्राम में विभिन्न सामाजिक कार्य* किये गये।

२—हिमालय शोध-योजना के स्टाफ द्वारा कांगड़ी ग्राम का विस्तृत सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण किया गया। प्राप्त परिणामों पर कोटद्वार में आयोजित अखिल भारतीय सेमिनार में वार्ता प्रस्तुत की।

डा० चोपड़ा के वर्तमान सत्र में निम्नलिखित शोधपत्र प्रकाशित हुए :

१—इफैक्ट ऑव ए बायोटिक फैक्टर्स ऑन द इन्सीडेंस ऑव निमैटोडस् ऑव शीप। कम्परेटिव फीजियोलॉजी, इकोलॉजी अंक १०, १२९-१३१ (१९८५)

२—इन्सीडेंस ऑव स्पारोरिड निमैटोड इन्फैक्शन इन रिलेशन टु द वेट, लैंथ एण्ड सैक्स ऑव कोल्ड वाटर फिशेज। यू०पी० जनरल ऑव जुलौजी, अंक ५ : १४९-१५८ (१९८५)

लेख—

१—मछलियों को भी वाइरस सताते हैं। 'नवभारत टाइम्स', नई दिल्ली, २२ मई, पृष्ठ ४ (१९८५)।

२—समथिंग फिशी गोइंग ऑन, सनडे रिव्यू, टाइम्स ऑव इण्डिया, नई दिल्ली, सितम्बर १, पृष्ठ ४ (१९८५)

३—मछलियों में जीवाणुओं का प्रकोप। विज्ञान प्रगति, सी०एस०आई०आर० प्रकाशन, नई दिल्ली, फरवरी, पृष्ठ ५१-५२ (१९८६)

डा० चोपड़ा ने निम्नांकित सेमिनार/कान्फ्रेंसेज में भाग लिया :

१—शिक्षा को चुनौती	: गुरुकुल कांगड़ी वि०वि०, हरिद्वार नवम्बर, ८-१० (१९८५)
२—इण्डियन साइंस कांग्रेस एशोसियेशन :	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली जनवरी, २-३ (१९८६)
८—न्यू डाइमेंशन्स इन पैरासाइटोलौजी :	इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद जनवरी १९-२० (१९८६)

डा० दिनेश भट्ट को इस सत्र में निम्न अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय सम्मेलनों/वर्कशाप में व्याख्यान देने/भाग लेने हेतु आमन्त्रित किया गया :

१—इण्टरनेशनल मीटिंग ऑव दि "इण्टरनेशनल सोसाईटी फॉर क्रोनोबायलौजी" लिटिल रॉक, यू०एस०ए०, ३ से ६ नवम्बर (१९८५)

२—राजकीय आयुर्वेदिक कालेज, गुरुकुल कांगड़ी, अक्टूबर (१९८५)

३—कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा संचालित तथा यू०जी०सी० द्वारा स्पोन्सोर्ड "वर्कशाप फॉर कालेज टीचर्स इन डेवलेपमेंट बायोलोजी", ४ से १० मई, (१९८६)

डा० भट्ट विभागीय पुस्तकालय का कार्यभार भी देख रहे है। साथ ही विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित अनेक समितियों/कार्यक्रमों में अपना सक्रिय सहयोग देते रहे है।

डा० भट्ट ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित निम्न सम्मेलनों में भाग लिया :

१—गंगा प्रदूषण, राष्ट्रीय संगोष्ठी, जून, १९८५

२—शिक्षा की चुनौती, नवम्बर ८-१०, १९८५

सातवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विभाग को स्वीकृत धनराशि (रु० ३५,०००/-) के उपकरण विभागीय प्रयोगशाला हेतु क्रय किये जा रहे हैं।

हिमालय शोध-योजना के अन्तर्गत विभाग में आधुनिक संयन्त्रों/उपकरणों से युक्त प्रयोगशाला स्थापित की जा रही है। इस योजना में शोधकार्य प्रगति पर है।

अपेक्षा की जाती है कि आगामी सत्र में भी विश्वविद्यालय एवं प्रशासन के सहयोग से यह विभाग उत्तरोत्तर प्रगति करता रहेगा।

—डा० बी०डी० जोशी
प्रोफेसर एव अध्यक्ष

हिमालय शोध योजना

हरिद्वार के परिवर्ती क्षेत्रों में हिमालय एवं शिवालिक पर्वत अधित्यकाओं के पर्यावरण सम्बन्धित अध्ययन हेतु भारत सरकार की यह शोध-योजना अपने कार्यकाल का प्रथम वर्ष पूरा करने जा रही है। इस अवधि के शोधकार्य से प्राप्त परिणाम अत्यधिक सफल, रुचिकर एवं उत्साहवर्धक रहे है।

विभिन्न पदों पर नियुक्त निम्नांकित वैज्ञानिक एवं सहायकवर्ग गत वर्ष से कार्यरत हैं :

१—रिसर्च साइंटिस्ट	—	डा० जे० रमणमूर्ति
२—प्रोजेक्ट इंजीनियर	—	श्री एम०एस० नेगी
३—सीनियर रिसर्च फेलो	—	डा० टी० शर्मा
		श्री ओ०डी० गहतोड़ी
४—जूनियर रिसर्च फेलो	—	श्री एच०के० पुरोहित
५—लैब असिस्टेन्ट	—	श्री महेन्द्रप्रसाद ध्यानी
६—फील्ड असिस्टेन्ट	—	श्री सतोशकुमार सिन्हा
७—ड्राइवर	—	श्री सुरेन्द्रप्रसाद बहुखण्डी

हिमालय शोध-योजना का प्रमुख कार्यस्थल महाकवि कालिदास द्वारा वर्णित प्रसिद्ध पौराणिकस्थल 'कण्व-आश्रम' है। इसी आश्रम से होकर बहती हुई 'मालिनी नदी' के वर्तमान समय में विकृत-विध्वसंक स्वरूप को पुनः जीवन-दायिनी सरिता का रूप देना इस शोध-योजना का एक सकल्प है। बृहत् वनीकरण, भू-स्खलन एव बाढ़ नियन्त्रण, वनीकरण के लिए पौधशाला विकसित करना, ग्रामीणों में वनीकरण हेतु रुचि जागृत कर उन्हे पौध वितरित करना, 'यूकेलिप्टिस' वनीकरण का जलवायु एवं मृदा संरचना में प्रभाव का अध्ययन, विभिन्न हानिकारक कीट-वंशों के जीवन-चक्र, पारिस्थितिकी, रोकथाम इत्यादि का अध्ययन, योजना-क्षेत्र के अधिकाधिक ग्रामवासियों का सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणपरक अध्ययन इत्यादि इस शोध-योजना के प्रमुख उद्देश्य हैं।

योजना के प्रथम चरण में व्यापक रूप से 'कण्व-आश्रम' एवं उसके परिवर्ती ग्रामों में जनसभायें आयोजित की गईं। जिनमें ग्राम-प्रधान, जन-प्रतिनिधि, पत्रकार एवं अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के साथ विचार-विमर्श कर, क्षेत्रीय पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं की जानकारी ली गई। ग्रामीणों की आवश्यकता एवं रुचि के विविध प्रकार के फलदार, ईंधन, चारा और इमारती लकड़ी वाले वृक्षों की पौध, योजना की पौधशाला में विकसित कर उन्हें वितरित करने का निर्णय लिया गया।

मालिनी नदी द्वारा होने वाले विनाशकारी भू-कटाव तथा बाढ़-नियन्त्रण हेतु मण्डलीय आयुक्त, गढ़वाल मण्डल, जिला मजिस्ट्रेट पौड़ी, मण्डलीय वनाधिकारी, गढ़वाल मण्डल, इत्यादि के साथ सामूहिक तथा अलग-अलग बैठकें हुईं। इन बैठकों में शोध-योजना के निदेशक प्रो० बी०डी० जोशी ने योजना के उद्देश्यों तथा कार्यक्रम से स्थानीय प्रशासन को अवगत कराया तथा प्रशासन ने सभी स्तर पर मालिनी नदी की बाढ़-विभीषिका की रोकथाम के लिए योजना के साथ सहयोग कर, मिलकर कार्य करने का निर्णय लिया। वन-विभाग ने वृक्षारोपण हेतु भूमि तथा योजना के वैज्ञानिकों को शोधकार्य हेतु सुविधाएँ उपलब्ध कराना स्वीकार किया।

गुरुकुल विद्यालय 'कण्व-आश्रम' के निकट एक प्रमुख बृहत् पौधशाला विकसित की गई है। इसमें निम्नलिखित प्रजातियों की लगभग १ लाख पौध उगाई गई हैं :

१— आंवला	९— सू बबूल
२— सिरस	१०— सहजन
३— कचनार	११— हरसिंगार
४— खैर	१२— यूकेलिप्टिस
५— अमलताश	१३— गुलमोहर
६— बोतल ब्रश	१४— अमरूद
७— शीशम	१५— पपीता
८— भीमल	१६— कन्जु

आगामी मानसून में 'राष्ट्रीय-सेवा-योजना' कैम्प के विद्यार्थियों द्वारा इन पौधों का रोपण वन-विभाग से उपलब्ध भूमि पर तथा भू-स्खलन वाले क्षेत्रों में किया जायेगा। स्थानीय तथा परिवर्ती ग्रामीणों को उनकी सुविधा एवं

आवश्यकतानुसार पौध-रोपण हेतु वितरित की जायेगी। इस कार्य में स्थानीय विद्यार्थियों तथा वरिष्ठ अध्यापकों का सहयोग भी लिया जायेगा।

विश्वविद्यालय परिसर में इसी प्रकार 'पौपलर' जाति के वृक्षों की पौधशाला विकसित की जा रही है।

मालिनी नदी के तट पर बाढ़-नियन्त्रण तथा भूमि-संरक्षण के लिए 'कण्व-आश्रम' कलालघाटी के अत्यधिक प्रभावित क्षेत्र में कतिपय अभियान्त्रिक संरचनाओं (बन्ध, स्पर, सीमेंट ब्लाकस्) का निर्माण किया जायेगा। नदी के प्रवाह को नियमित/केन्द्रित करने के लिए 'ड्रेजिंग' का कार्य भी प्रस्तावित है।

पर्यावरण एवं वानिकी के परिप्रेक्ष्य में "यूकेलिप्टिस" वनीकरण एक विवादास्पद विषय रहा है। योजना के शोधकार्य के अन्तर्गत यूकेलिप्टिस वानिकी क्षेत्रों एवं प्राकृतिक वन-विभागों (चिड़ियापुर, जाफराबाद, गुलरभोज इत्यादि) का मृदा-स्वरूप सर्वेक्षण तथा तुलनात्मक अध्ययन करने की दिशा में कार्य प्रगति पर है।

इस योजना के तहत एक आधुनिक उपकरणों/संयन्त्रों से युक्त प्रयोगशाला विश्वविद्यालय के जन्तु विज्ञान विभाग में स्थापित की जा रही है। विभिन्न निरीक्षण/परीक्षणों हेतु फ्लेम फोटोमीटर, स्पक्ट्रोफोटोमीटर, कलरीमीटर, सौइल माइश्चरमीटर, पी०एच० मीटर, मफल फर्नेश, सौइल डेंसिटीमोटर इत्यादि उपकरण क्रय किये जा चुके है।

सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण हेतु चयनित प्रतीकमान ग्राम कागड़ी, जनपद बिजनौर में कार्य प्रारम्भ किया गया। पिछड़ी जाति एवं जनजातिबाहुल्य कागड़ी ग्राम के १४० परिवारों का सर्वेक्षण किया गया। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार यह गाँव सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है। रोजगार के साधनों की कमी तथा शिक्षण व्यवस्था की कमी होने से गाँव की जनता अत्यधिक निर्धन है। स्वास्थ्य सुधार की गाँव में कोई व्यवस्था नहीं है। परिवार बड़े है। परिवार नियोजन का प्रभाव नगण्य है।

सर्वेक्षण द्वारा स्पष्ट हुआ है कि सरकारी ऋण द्वारा स्वतः रोजगार-योजनायें यथा, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, भेड़-बकरी पालन इत्यादि प्रोत्साहित की जाये। ग्राम के आस-पास जंगलों में जड़ी-बूटी का पर्याप्त भण्डार है। यहाँ पर एक आयुर्वेदिक फार्मेसी खुल जाने से रोजगार के अवसर बढ़ेंगे तथा ग्रामवासियों का सामाजिक स्तर उन्नत हो सकता है।

गत फरवरी १६ से २१, १६८६ को राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार के तत्वावधान में सम्पन्न 'स्टेट ऑव हिमालयन इनवाइरोनमेंट' नामक गोष्ठी में हिमालय शोध योजना के निर्देशक एवं शोधकर्त्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। निर्देशक प्रो० जोशी द्वारा शोध-पत्र प्रस्तुत किया गया तथा पर्यावरण एवं सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों पर महत्वपूर्ण विचार-विनिमय किया गया।

—डा० बी० डी० जोशी
प्रिंसिपल इन्वेस्टीगेटर

वनस्पति विज्ञान विभाग

विभाग में पठन-पाठन का कार्य सुचारू रूप से चला। डा० अ० आर्य, प्रवक्ता के चले जाने से कार्य अधिक रहा। उनकी नियुक्ति एम० एस० विश्वविद्यालय, बरोदा में हुई है। डा० एस०एम० टण्डन की प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान के पद पर नियुक्ति हुई। सत्र के अन्त में उन्होंने यह पदत्याग दिया। इस समय निम्नलिखित सदस्य स्टाफ में हैं। M. Sc. (माइक्रोबायलोजी) में इस वर्ष १० विद्यार्थियों को प्रवेश दिया गया।

शिक्षक :

१—डा० विजय शंकर	—	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
२—डा० पी० कौशिक	—	प्रवक्ता

शिक्षकेत्तर :

१—श्री रुद्रमणि	—	लैब असिस्टेन्ट
२—श्री विजयसिंह	—	लैब ब्वाय
३—श्री सूरजदीन	—	माली

डा० विजयशंकर :

डा० शंकर ने निम्नलिखित गोष्ठियों में भाग लिया एवं लेख प्रस्तुत किये।

१—चेलेंज ऑव एजूकेशन — गु० कां० विश्वविद्यालय।

२—वर्कशाप ऑन गंगा एज ए रिसोर्स — नेशनल एकेडेमी ऑव साइन्सेज इलाहाबाद

३—नेशनल सेमिनार ऑन गंगा पोल्यूशन — गु० कां० विश्वविद्यालय।

४—गंगा पर कार्य करने वाले विश्वविद्यालयों के प्रिंसिपल इन्वेस्टीगेटर्स की गंगा प्रोजेक्ट डाइरेक्टरेट में आयोजित गोष्ठी (२८ अप्रैल, १९८६)

५—पोल्यूशन कन्ट्रोल एण्ड मेनेजमेन्ट, B.H.E.L. हरिद्वार ने निम्नलिखित लेख प्रकाशित / प्रस्तुत किये :

1—The Ganga.

2—Characteristics of major sewer drains entering Ganga at Hardwar.

3—Kangri Gram Marches Ahead

4—Environmental Degradation in Ganga
Shivaliks—Steps for amelioration
(Invited article National Academy of Seweries Allahabad)

5—Villages in Danger

6—Keeping the Ganga clean for Kumbh—Some observations.

7—गंगा को स्वच्छ कैसे रखा जाये ?

8—पर्यावरण हो जो शुद्ध ।

9—गंगा समन्वित योजना—एक रिपोर्ट ।

10—गंगा के सलिलीय कवक ।

11—कांगड़ी ग्राम विकास योजना—एक रिपोर्ट ।

12—राष्ट्रीय संगोष्ठी—गंगा प्रदूषण—संस्तुतियाँ ।

13-Seasonal variations in the water quality of river Song.

14-A short term study on pollution status of river Ganga in Rishikesh region.

(13, 14 — Pollution Control & Management — B.H.E.L. Hardwar)

15-Impact of distillery effluents on the water quality and eco system of river Reh. (Pollution Research).

डा० पी० कौशिक :

डा० कौशिक के ७ पत्र प्रकाशित हुए। उन्होंने निम्नलिखित सेमिनार में भाग लिया :

1—चेलेंज ऑव एजूकेशन—गु० कां० विश्वविद्यालय

2—एजूकेशन थ्रू दा एजेज़— " " "

—डा० विजय शंकर
प्रोफेसर एव अध्यक्ष

राष्ट्रीय सेवा योजना

छात्रों के शिक्षणेत्तर कार्यक्रमों में प्रमुख राष्ट्रीय सेवा योजना, सन् १९८५-८६ में अपने उद्देश्यों को लेकर सुचारू रूप से कार्यान्वित हुई। छात्रों की श्रम-शक्ति एवं सामूहिकता द्वारा अनेकानेक सामाजिक उत्थान हेतु कार्य किये गये। विश्वविद्यालय परिसर के विभिन्न कार्यकलापों से प्रारम्भ कर राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों ने निकटवर्ती ग्रामों, चिकित्सालयों एवं सार्वजनिक स्थलों में विभिन्न कार्यों में सोत्साह भाग लिया। कुछ विशेष कार्यक्रमों का संक्षिप्त में विवरण निम्नवत है—

(१) विश्वविद्यालय परिसर में समय-समय पर छात्रों द्वारा सफाई कार्यक्रम, उद्यानों एवं वाटिकाओं की बागवानी, गुड़ाई, निराई एवं सिचाई इत्यादि कार्य किये गये।

(२) विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित खेल समारोहों, टूर्नामेंट, दीक्षान्त समारोह तथा कतिपय गोष्ठियों में छात्रों ने आयोजन में सहयोग दिया।

(३) निकटवर्ती चिकित्सालयों में छात्रों ने व्यक्तिगत रूप से जाकर रोगियों की सेवा-सुश्रुषा मे सहयोग दिया।

(४) विगत वर्षों की भाँति राष्ट्रीय सेवा योजना का चतुर्थ वार्षिक शिविर पुण्यभूमि कांगड़ी ग्राम में वर्तमान सत्र में भी उत्साह और सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस दस-दिवसीय विशेष शिविर में अनेक महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए, जिसमें प्रमुख थे—

(क) ग्राम में लगभग ६० घरों के पीछे किचन सोकपिट बनाये गये।

(ख) गाँव को मुख्य सड़क से जोड़ने वाली २०० मीटर लम्बी खड़न्जे की सड़क को मिट्टी से पाटकर मरम्मत का कार्य किया गया।

(ग) गाँव में अव्यवस्थित १० बड़े-बड़े पानी के गड्ढों को मिट्टी से पाटा गया ताकि मच्छरों के पैदा होने के स्थान समाप्त हो सकें।

(घ) गाँव में कुछ किसानों की लगभग ५ बीघा भूमि में खाद का छिड़काब किया गया।

(ङ) छात्रों ने घर-घर जाकर परिवार नियोजन, प्राथमिक और प्रौढ शिक्षा, स्त्री शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरणपरक जानकारी ग्रामवासियो को दी तथा उक्त विषयों में गोष्ठियाँ आयोजित की गई।

(च) गाँव में तीन पेयजल के कुओं की सफाई की गई, कुओं के चारों ओर निकास नालियाँ बनाई गई तथा कुओं में लाल दवा डाली गयी।

(५) सत्र के दौरान राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों को समय-समय पर प्रधानाचार्य श्री सुरेशचन्द्र त्यागी, योजना समन्वयक प्रो० ओ० पी० मिश्र तथा अनेक प्राध्यापक, सहयोगियों से व्याख्यान, भाषण एवं ज्ञानवर्धक वार्ताएँ सुनने को मिलती रही।

—डा० बी०डी० जोशी
प्रोग्राम आफिसर

पुस्तकालय विभाग

परिचय—

गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरन्तर ८० वर्षों से पोषित यह पुस्तकालय आज वेद, वेदांग, आर्य साहित्य, तुलनात्मक धर्मसंग्रह एवं मानवीय ज्ञान को विविध शाखाओं पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रन्थों से अलंकृत है। सहस्रों दुर्लभ ग्रन्थों एवं अनेक अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय अनेक भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य भण्डार को अपने गर्भ में समाहित किये हुए, आर्य संस्कृति की धरोहर के रूप में विद्याव्यसनियों का केन्द्र बना हुआ है। गुरुकुल कागड़ी पुस्तकालय का स्थान भारत के सर्वाधिक पाँच पुस्तकालयों में से एक है।

वर्ष १९८५-८६ में लगभग २३,२०० पाठकों ने इस पुस्तकालय की प्रचुर सामग्री का उपयोग किया।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह —

पुस्तकालय का विराट संग्रह अपनी विविध विशिष्टताओं के लिये निम्न प्रकार से विभाजित किया हुआ है :

१. संदर्भ ग्रन्थ, २. पत्रिका संग्रह, ३. आर्य साहित्य संग्रह, ४. आयुर्वेदिक संग्रह, ५. विभिन्न विषयों की हिन्दी पुस्तक संग्रह, ६. विज्ञान संग्रह, ७ अंग्रेजी साहित्य संग्रह, ८. पं० इन्द्रजी संग्रह, ९. दुर्लभ पुस्तक संग्रह, १०. पाडुलिपि संग्रह, ११. गुरुकुल प्रकाशन संग्रह, १२. प्रतियोगितात्मक पुस्तक संग्रह, १३. शोध प्रबन्ध संग्रह, १४. रूसी साहित्य संग्रह, १५. आरक्षित पुस्तक संग्रह, १६. उर्दू संग्रह, १७. मराठी संग्रह, १८. गुजराती साहित्य संग्रह, १९. गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक प्रकाशन संग्रह, २०. मानचित्र संग्रह, २१. वेदमंत्र कैसेट संग्रह।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार—

विश्वविद्यालय में पढ़ रहे निर्धन छात्रों की सहायतार्थ विश्वविद्यालय पुस्तकालय के द्वारा शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना का सर्वथा नवीन

कार्यक्रम वर्ष १९८३-८४ से प्रारम्भ किया गया है। इसमें छात्रों को पुस्तकालय में दो घन्टे प्रतिदिन कार्य करने के बदले में पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है। जिससे ये अपनी पढ़ाई का व्यय उठाने में स्वावलम्बी बन सकें। इस वर्ष इस योजना के अन्तर्गत ५ छात्रों को लाभ प्रदान किया गया।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा—

विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने में प्रोत्साहन देने हेतु, विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने हाल में प्रतियोगितात्मक पुस्तक संग्रह की स्थापना की है। जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रों को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षाओं से सम्बद्ध १५ पत्रिकाएँ नियमित आ रही हैं। इस संग्रह के माध्यम से गुरुकुल के बहुत से छात्र प्रतियोगितात्मक सेवाओं में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। वर्ष १९८५-८६ में ५०० पुस्तकें इस संग्रह में पृथक् से जोड़ी गई।

ग्राम्य पुस्तकालय सेवा—

विश्वविद्यालय पुस्तकालय के द्वारा निकटवर्ती गाँवों में पुस्तकों के माध्यम से जनजाग्रति का कार्यक्रम भी चलाया जा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा चलाये जा रहे प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्रामवासियों को पिछले दिनों श्यामपुर गाँव में पुस्तकालय की लगभग १०० पुस्तके प्रदान की गई। नगर के हर क्षेत्र से लोग इस पुस्तकालय की पुस्तकों के उपयोग हेतु पुस्तकालय में आते रहते हैं। इसके अतिरिक्त कांगड़ी ग्राम में एक ग्राम्य पुस्तकालय भी विश्वविद्यालय द्वारा संचालित है।

पुस्तकालय कर्मचारी—

इस विराट पुस्तकालय की सुव्यवस्था एवं उचित प्रबन्ध हेतु इस पुस्तकालय में १९ कर्मचारी कार्यरत हैं। पुस्तकालय के कर्मचारियों का विवरण निम्न प्रकार है :

नाम	पद	योग्यता
१. जगदीशप्रसाद विद्यालंकार	पुस्तकालयाध्यक्ष	एम.ए.,एम. लाइब्रेरी साइंस, बी.एड. कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग
२. गुलजारसिंह चौहान	सह-पुस्तकालयाध्यक्ष	एम.ए, बी. लाइब्रेरी साइंस
३. ऋषिकुमार कालरा	प्रोफेशनल सहायक	बी.ए, बी. लाइब्रेरी साइंस

४. उपेन्द्रकुमार झा	पुस्तकालय सहायक	एम.ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र, योग प्रमाणपत्र
५ ललितकिशोर	,, ,,	बी ए, पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र
६. मिथलेश कुमार	,, ,,	बी.ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र
७. हरभजन	काउन्टर सहायक	मिडिल
८. जगपाल सिंह	पुस्तकालय लिपिक	मध्यमा
९. रामस्वरूप	,, ,,	इण्टर, प्रमाणपत्र पुस्तकालय विज्ञान
१०. कौस्तुभचन्द्र पाण्डेय	,, ,,	इण्टर, हिन्दी आशुलिपि, पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र
११ मदनपाल सिंह	,, ,,	इण्टर, आई.टी.आई., प्रमाण-पत्र पुस्तकालय विज्ञान
१२. जयप्रकाश	बुक बाइन्डर	मिडिल
१३. गोविन्दसिंह	बुक लिफ्टर	मिडिल
१४. घनश्यामसिंह	सेवक	मिडिल
१५. शशिकान्त	सेवक	इण्टर, बाइन्डर प्रमाणपत्र
१६ बुन्दू	सेवक	
१७. रघुराज	सेवक	बी.ए.
१८. शिवकुमार	बुक लिफ्टर	मिडिल
१९. सुशीलकुमार	सफाई कर्मचारी	मिडिल

प्रकाशन कार्य—

इस वर्ष पुस्तकालयाध्यक्ष जगदीश विद्यालंकार के द्वारा प्रकाशन के क्षेत्र में निम्न कार्य किये गये :

प्रकाशित पुस्तकें—

१—"गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय—शोध एवं प्रकाशन संदर्भ"—उक्त पुस्तक में गुरुकुल के द्वारा स्थापना से लेकर अब तक किये गये सभी शोध एवं प्रकाशन कार्यों का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत कृति के द्वारा एक ऐसा प्रयत्न किया गया है जिससे प्रकाशन के क्षेत्र में गुरुकुल के योगदान को सर्वसामान्य को दिग्दर्शित किया जा सके।

२—"शिक्षा मूल्य एवं समाज"—यूनाइटेड बुक हाउस, चाँदनी चौक, देहली।
लेखक—बलभद्रकुमार हूजा, सम्पादक—डा० विष्णुदत्त राकेश एवं जगदीश विद्यालंकार।

२—रेडियो वार्त्ता—"पुस्तकालय बदलते संदर्भ में", आकाशवाणी नजीबाबाद, तिथि एवं समय—३-११-८५, ८.०० बजे से ८.१५ पर प्रसारित।

विश्वविद्यालय के द्वारा पुस्तकालयाध्यक्ष जगदीश विद्यालंकार को कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के प्रशिक्षण हेतु ३ माह के लिये देहली उत्पादकता परिषद में भेजा गया। पुस्तकालय को निकट भविष्य में कम्प्यूटराइज करने में उनके इस प्रशिक्षण से काफी मदद मिलेगी।

पुस्तक समीक्षा—

"वेदों में योग विद्या", योगेन्द्र पुरुषार्थी, गुरुकुल पत्रिका, नवम्बर-दिसम्बर १९ ४।

फोटोस्टेट सेवा—

विश्वविद्यालय के शोध छात्रों एवं प्राध्यापकों की सुविधा हेतु पुस्तकालय में फोटोस्टेट की सुविधा वर्ष १९८३-८४ से उपलब्ध हो गई है। पुस्तकालय की कुछ दुर्लभ पुस्तकों को फोटोस्टेट के द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है। विश्वविद्यालय के सभी विभागों का लगभग २,४०० रु० का कार्य भी आलोच्य वर्ष में किया जा चुका है।

पुस्तकालय कार्यवृत्त एक नजर में—

		१९८४-८५	१९८५-८६
१. पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग	—	२३,०००	२३,३१५
२. भेंटस्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	—	७८	९५२
३. नवीन पुस्तकें क्रय की गईं	—	७,२००	२,६३१
४. वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	—	३,५००	२,१००
५. पुस्तकों की कैटेलागिंग की गई	—	३,२००	१,९५०
६. पत्रिकाओं की संख्या	—	३५५	५४७
७. पत्रिकाओं की नियमित आपूर्ति हेतु भेजे गये स्मरणपत्रों की संख्या	—	१२०	२१५
८. सजिल्द पत्रिकाओं की संख्या	—	६,०००	६५००
९. पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की संख्या	—	३,०००	५००
१०. पुस्तकों की जिल्दबन्दी	—	३,५००	—
११. पुस्तकों का कुल संग्रह	—	९२,३०७	९५,८९०

प्रगति के आयाम—

१. प्रतियोगितात्मक पुस्तकों के संग्रह में ५०० और अधिक पुस्तकें जोड़ी गई।

२. ५०० पुरानी पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की गई।

३. ४० नई पत्रिकाएँ आने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाएँ भी समाविष्ट है।

४. यू०जी०सी० द्वारा उपलब्ध धनराशि का समुचित रूप से उपयोग हो रहा है। जिससे विभिन्न विषयों की लगभग २,६३१ नई पुस्तकें, बुक डिपो के माध्यम से, अधिकतम व्यापारिक छूट के आधार पर क्रय की गई, जिससे पुस्तकालय को लगभग ५०,००० रुपये का लाभ हुआ।

५. पुस्तकालय में दिनांक ३१-१-८६ से ४-२-८६ तक पुस्तकालय में उपलब्ध इतिहास से सम्बद्ध एवं १९वी शती की पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया। इस पुस्तक प्रदर्शनी में राष्ट्रीय गोष्ठी में आये सभी महानुभावों ने इन पुस्तकों का अवलोकन किया। इसके साथ ही दिनाक ६-३-८६ से ९-३-८६ तक विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुई "दर्शन परिषद् गोष्ठी" के अवसर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस पुस्तक मेले मे लगभग १० पुस्तक-विक्रेताओं तथा प्रकाशकों ने भाग लिया तथा पुस्तकालय के द्वारा इनसे अधिकतम व्यापारिक छूट के आधार पर पुस्तकें, विभागाध्यक्षों की संस्तुति के आधार पर क्रय की गई।

११. भारत सरकार पुस्तकालयाध्यक्ष सघ की ओर से राष्ट्रीय पुस्तकालय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक २३ मई से २५ मई १९८५ तक किया गया। इस सम्मेलन में विभिन्न शोध पुस्तकालयों के लगभग ६० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उक्त सगोष्ठी का उद्‌घाटन श्री टी०आर चन्द्रशेखरन, महाप्रबन्धक, भेल-रानीपुर द्वारा किया गया।

१२. गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित साहित्य को विभिन्न विश्वविद्यालयों, सीनेट, सिडीकेट, शिक्षा पटल तथा अन्य सम्बद्ध सदस्यों को भेजने का कार्य भी व्यवसाय प्रबन्धक कार्यालय के माध्यम से पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा किया जाता है। इस वर्ष गुरुकुल प्रकाशनों की लगभग २,००० प्रतियाँ भेजी गई।

१३. संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वर्ष १९८५–८६ के लिये दुर्लभ पाण्डुलिपियों के सूचीकृत किये जाने हेतु गुरुकुल विश्वविद्यालय पुस्तकालय को चुना गया है। इस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत लगभग ५००० पुस्तकों के कैटलाग

बनाये जाने का कार्य सुप्रसिद्ध स्नातक डा० हरिदत्त जी वेदालंकार के द्वारा किया जा रहा है। इस प्रायोजन से गुरुकुल में उपलब्ध वैदिक साहित्य, आर्यसाहित्य संग्रह आदि की जानकारी देश के शोध-छात्रों को उपलब्ध हो सकेगी। गुरुकुल स्नातकों के प्रकाशनों को भी सूचीकृत करके प्रकाशित किये जाने का कार्य प्रगति पर है। इन कैटलागों के प्रकाशित हो जाने पर विश्वविद्यालय पुस्तकालय विश्व के पुस्तकालयों के नक्शे में समाविष्ट हो सकेगा।

—जगदीश विद्यालंकार
पुस्तकालयाध्यक्ष

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

१० नवम्बर, ८५ को दीपावली के अवसर पर कन्या गुरुकुल का ६२वां जन्मोत्सव (स्थापना दिवस) कुलभूमि में अत्यन्त समारोहपूर्वक मनाया गया। जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक समारोह आयोजित किये गये।

२७ अक्तूबर, ८५ को आर्य विद्यासभा को एक बैठक श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता में हुई, जिसमें कन्या गुरुकुल एव गुरुकुल कांगड़ी के सम्बन्ध में विभिन्न विषयों को लेकर विचार-विमर्श हुआ। इस अवसर पर छात्राओं ने शिक्षाप्रद एवं रोचक सास्कृतिक कार्यक्रम प्रदर्शित किया। सभाप्रधान श्री वोरेन्द्र, महामन्त्री कमला जो आर्या तथा उपप्रधान श्री योगेन्द्रपाल जी सेठ ने अपने भाषणों में कन्या गुरुकुल के सम्बन्ध में अपने उद्गार प्रकट किये। इस अवसर पर श्री योगेन्द्रपाल सेठ ने १००१/- तथा श्री हरबशलाल जो शर्मा ने ५००१/- की राशि दान में दो।

नवम्बर मास में मण्डलीयस्तर पर गढ़वाल में आयोजित राष्ट्रीय-गान प्रतियोगिता में हमारी छात्राओं ने प्रथम स्थान प्राप्त करके चलविजयोपहार प्राप्त किया। दिसम्बर मास में जिलास्तर पर आयोजित पल्लव भाव गोत प्रतियोगिता में छात्राओं ने प्रथम स्थान प्राप्त करके शील्ड प्राप्त को।

जिलास्तरीय प्रतियोगिताओं में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून को छात्राओं ने कबड्डी, खो-खो तथा हैंडबाल में भाग लिया। कबड्डी में छात्राओं ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रदेशीयस्तर पर चुनी गई छात्राओं के नाम इस प्रकार है:

१—सविता एव मधु—कबड्डी
२—जगमीत, गुरुदीप, रेखा यादव—खो-खो।
३—सुमन, सविता, मधु—हैंडबाल

जिलास्तरीय एथलेटिक्स रैली में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की छात्राओ ने सीनियर वर्ग में चैम्पियनशिप प्राप्त की। कु० रेणु सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित की गई।

मण्डलीयस्तर पर छात्राओं ने एथलेटिक्स सीनियर वर्ग में चैम्पियनशिप प्राप्त की। कु० रेणु सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित की गई। यह प्रतियोगिता श्रीनगर गढ़वाल में आयोजित की गई।

प्रदेशीयस्तर पर पाँच छात्राओं ने भाग लिया जो कि आगरा में सम्पन्न हुई। रेणु, ऋचा, सतविन्दर, सुमन, द्रोपदी टीम की सदस्य थीं। कु० रेणु प्रदेशीयस्तर पर ऊँची कूद तथा लम्बी कूद में प्रथम रहीं। कु० द्रोपदी ने ऊँची कूद में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

कु० रेणु ने राष्ट्रीयस्तर पर आयोजित दिल्ली में ऊँची कूद प्रतियोगिता में भाग लिया।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून का एन०एस०एस० कैम्प—

१ मार्च ८६ से १० मार्च ८६ तक शहनशाही आश्रम, राजपुर-देहरादून में कैम्प लगाया गया जिसमें कन्या गुरुकुल की २५ छात्राओं तथा दो स्थानीय छात्राओं ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन स्वामी गोविन्दानन्द जी ने किया। कार्यक्रम के अनुसार छात्राओं को विभिन्न समितियों में बाँटा गया।

वर्ष ८५-८६ में स्वयं-सेविकाओं ने नियमित कार्यक्रम अगस्त माह से प्रारम्भ किया। पर्यावरण क्षेत्र में हमारी राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई ने सहस्र-धारा में बहुत उत्साहपूर्वक कार्य किया। वहाँ चल रहे शिविर में पौधे लगाये गये तथा उन पौधों के बचाव के लिए जंगले लगाने का कार्य किया।

विद्यालय के पीछे लगते हुए हरिजनों के घरों में स्वयं-सेविकाओं ने कढाई, सिलाई तथा बुनाई सिखाने का कार्य किया। वहाँ के स्थानीय लोगों को झुग्गी-झोपड़ी की गन्दी नालियों की सफाई, रसोईघर के बाहर और नहाने के गुसलखाने के पास गड्ढ़े का निर्माण करना सिखाया।

१० दिन के शिविर में सेविकाओं ने ६५ मीटर लम्बी तथा ३½ मीटर चौड़ी अम्बिका देवी मन्दिर की सड़क का निर्माण किया। इसी रास्ते की नाली को बराबर कर सफाई की।

शहनशाही आश्रम में अभी कुछ दिन पूर्व ही प्राइमरी स्कूल के विद्यार्थियों के लिए दो कमरों का निर्माण किया गया है। इन कमरों के साथ ही तीसरा कमरा भी बनाने की योजना है। उसके लिए पहाड़ी काटकर स्थान को बराबर किया गया जिससे वहाँ भवन निर्माण किया जा सके।

शहनशाही आश्रम में, जलनिगम के पास, जंगली झाड़ियों को काटा गया। उसके साथ की नालियों की सफाई की तथा नई नालियों का निर्माण किया। आश्रम के पास लगती हुई तिब्बती कालोनी में स्वयं-सेविकाओं ने जाकर उन महिलाओं से सम्पर्क स्थापित किया तथा उन्हें कुछ नये व्यंजन बनाने की विधि भी सिखलाई।

प्रतिदिन संध्या के समय छात्राएँ विद्यालय के मैदान में बैडमिन्टन, हैंडबाल तथा थ्रो बाल भी खेलती थी। इस तरह दस दिनों के इस शिविर में स्वय-सेविकाओं ने अपना एक-एक क्षण राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम को सफल बनाने में लगाया।

अब कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का दूसरा कैम्पस भी बन गया है और फलस्वरूप विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से इसे अनुदान प्राप्त होने लगा है।

—दमयन्ती कपूर
आचार्या

राष्ट्रीय छात्र सेना (एन०सी०सी०)

एन०सी०सी० के छात्रों ने इस वर्ष उत्साहपूर्वक स्वतन्त्रता दिवस समारोह में भाग लिया। वार्षिक प्रशिक्षण शिविर रायपुर, देहरादून में लगाया गया। इसमें छात्रों ने अनुशासित रहते हुए प्रत्येक कार्य में रुचिपूर्वक भाग लिया।

स्वतन्त्रता दिवस तथा गणतन्त्र दिवस समारोहों में एन०सी०सी० के छात्रों ने विशेष रूप से भाग लिया, [illegible] थे। छात्रों ने गार्ड ऑव आनर प्रस्तुत किया।

छात्रों ने बी० तथा सी० सर्टिफिकेट परीक्षा में भाग लिया।

छात्रों ने समर्पण भाव से सामाजिक कार्यों में भाग लिया तथा आदर्श उपस्थित करते हुए उतम कार्य किए।

—मेजर वीरेन्द्र अरोड़ा
अध्यक्ष

क्रीड़ा एवं योग विभाग

१. क्रीड़ा—

सत्रारम्भ में ही शारीरिक शिक्षा निदेशक के अभाव में श्री ईश्वर भारद्वाज को क्रीड़ा विभाग का दायित्व सौंपा गया जिसे विभागाध्यक्ष प्रो० ओमप्रकाश मिश्र के नेतृत्व में उन्होंने भली-भाँति पूर्ण किया।

सितम्बर-अक्टूबर मास में क्रिकेट, हाकी, बैडमिण्टन व टेबल टेनिस का अनवरत अभ्यास चलता रहा। वालीबाल, फुटबाल तथा बास्केट बाल का भी कभी-कभी अभ्यास किया गया। भाला-गोला-तश्तरी फेंक में भी कुछ विद्यार्थियों ने रुचि दिखाई।

नवम्बर मास में बैडमिण्टन की टीम उत्तरक्षेत्रीय अन्तर्विश्वविद्यालय टूर्नामेण्ट में भाग लेने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय भेजी गई। एम०एस-सी० के छात्र अजयशंकर ने इस टीम का नेतृत्व किया। अन्य खेलों का अभ्यास अनवरत चलता रहा।

दिसम्बर में क्रिकेट की टीम उत्तरक्षेत्रीय अन्तर्विश्वविद्यालय टूर्नामेण्ट में भाग लेने अलीगढ़ मु० विश्वविद्यालय गई। इस टीम का नेतृत्व छात्र विनोद कुमार ने किया।

इसी मास में हाकी की टीम उत्तरक्षेत्रीय अन्तर्विश्वविद्यालय टूर्नामेण्ट में भाग लेने जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली गई। इसका नेतृत्व छात्र अशोक कुमार ने किया।

हाकी का एक मैच बी०एच०ई०एल की टीम के साथ हुआ जिसमें छात्रों का प्रदर्शन संतोषजनक रहा किन्तु प्रतिदिन की अभ्यासी टीम से मुकाबला अच्छा रहा।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष में आयोजित हाकी टूर्नामेण्ट में भी विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा।

इसी मास में क्रिकेट के खिलाड़ियों ने जिमखाना क्लब हरिद्वार तथा गुरुकुल इण्टर साइन्स कालिज की टीमों से संघर्षपूर्ण मुकाबले किए तथा विजयी रहे। अन्य खेल—टेबल टेनिस, फुटबाल, गोला-भाला-तश्तरी फेंक आदि भी पूर्ववत चलते रहे।

जनवरी में विद्या मन्दिर इण्टर कालिज के साथ हाकी का मैच खेला गया जिसमे वि० वि० की टीम विजयी रही।

इसी मास में आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी के छात्रों से दो बार क्रिकेट का मैच खेला गया जिसमें विश्वविद्यालय की टीम विजयी रही।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में दर्शनानन्द जयन्ती के अवसर पर आयोजित फुटबाल टूर्नामेण्ट में विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों का प्रदर्शन सराहनीय रहा।

बी०एच०ई०एल० की टीम से हाकी का मैच फिर हुआ किन्तु विजय बी०एच०ई०एल० को ही मिली।

टेबल टेनिस की टीम का अभ्यास अच्छा रहा किन्तु किन्हीं अपरिहार्य कारणवश टीम अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में न भेजी जा सकी।

छात्रों की रुचि देखते हुए लगभग पाँच हजार रुपये का क्रीड़ा का सामान मंगवाया गया।

फरवरी मास में सभी खेलों का अभ्यास जारी रहा। क्रिकेट का एक मैच वेद-कला महाविद्यालय तथा विज्ञान महाविद्यालय के बीच हुआ जिसमें विज्ञान महाविद्यालय की टीम विजयी रही।

क्रिकेट का ही एक मैच विद्या मन्दिर के साथ खेला गया जिसमें वि०वि० की टीम विजयी रही।

टैबिल टेनिस में छात्रों ने रुचि ली। लगभग प्रतिदिन खिलाड़ियों का अभ्यास जारी रहा।

मार्च से विज्ञान महाविद्यालय में परीक्षाओं का आयोजन होने के कारण खेलों के अभ्यास की गति में न्यूनता आई किन्तु वेद-कला महाविद्यालय के छात्रो का उत्साह पूर्ववत रहा।

छात्रों की एथलेटिक्स के प्रति रुचि देखते हुए श्री ईश्वर भारद्वाज को एथलेटिक्स प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान पटियाला भेजा गया है। आशा है कि इस प्रशिक्षण के पश्चात् वे छात्रों में एथलेटिक्स के प्रति रुचि जागृत करेंगे और विश्वविद्यालयस्तरीय मुकाबलों के लिए छात्रों को तैयार करेंगे।

योग—

सितम्बर से दिसम्बर तक चार मासीय प्रमाणपत्र कोर्स का अध्यापन कराया गया। इसमें ५० विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया था किन्तु उपस्थिति के अभाव में केवल १७ छात्रों को ही परीक्षा की अनुमति दी गई। गत वर्ष के अनुत्तीर्ण चार छात्रों को भी पुनः परीक्षा (सम्पूर्ण) देने की अनुमति दी गई। किन्तु तीन छात्र परीक्षा में सम्मिलित न हो सके। उक्त परीक्षाएं मार्च में सम्पन्न कराई गई।

२६ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह के अवसर पर 'स्वामी श्रद्धानन्द योग प्रतियोगिता' आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता की अध्यक्षता पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज द्वारा की गई। विभिन्न गुरुकुलों, विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लगभग ६० प्रतियोगियों ने भाग लिया। कनिष्ठ तथा वरिष्ठ वर्गों में गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों ने प्रथम तथा द्वितीय स्थान प्राप्त किए। गुरुकुल के इतिहास में यह अपूर्व प्रतियोगिता थी। स्थानीय समाचारपत्रों में प्रतियोगिता की प्रशंसा की गई।

यद्यपि प्रशासनिक कठिनाईयों के कारण योग प्रशिक्षण का द्वितीय सत्र नहीं चलाया जा सका किन्तु विश्वविद्यालय में योग सीखने की जिज्ञासा लेकर आए साधकों अथवा रोग विषमता से ग्रस्त आतुरों को यथासंभव समाधान, प्रशिक्षण, निदान उपलब्ध कराया गया। कुम्भ के अवसर पर पधारे महानुभावों का भी यथोचित समाधान किया गया। इसके अतिरिक्त कुलपति जी के आदेशानुसार श्री ईश्वर भारद्वाज ने विद्यालय विभाग के ब्रह्मचारियों को योगासन प्रशिक्षण दिया जिससे छात्रों में शारीरिक व मानसिक चेतना जागृत हुई।

इन सम्पूर्ण गतिविधियों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अनेक महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है—विशेषतः कुलसचिव श्री बीरेन्द्र अरोड़ा, वित्ताधिकारी श्री बी०डी० भारद्वाज, ऋषिकुल रा०आ० कॉलिज के डा० अशोक शुक्ल, डॉ० श्रवणकुमार (अंग्रेजी विभाग), डा० श्यामनारायण सिंह, डा० कश्मीरसिंह भिन्डर का नाम उल्लेखनीय हैं।

आचार्य एवं उपकुलपति प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार के आशीर्वाद से ही विभाग प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा है। उक्त सभी महानुभावों का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ। आशा है विभाग निरन्तर दिन-दूनी रात-चौगुनी प्रगति करेगा।

—ईश्वर भारद्वाज
क्रीड़ा एवं योग विभाग

कांगड़ी ग्राम विकास योजना

कांगड़ी ग्राम में विकास कार्य में निम्नलिखित प्रगति हुई :

१—मिलन केन्द्र का निर्माण ।

२—चबूतरे का निर्माण ।

३—जिला विकास अधिकारी, बिजनौर ने ग्राम की गलियों को पक्का कराने एवं कुएँ के निर्माण कार्य को पूर्ण कराने के लिये कार्यवाही प्रारम्भ की है।

४—कांगड़ी एवं निकटवर्ती ग्रामों को बाढ से बचाने के लिये भी जिला-स्तर पर कार्यवाही चल रही है।

५—राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा कांगड़ी ग्राम में विभिन्न सामाजिक कार्य किये गए।

६—हिमालय शोध योजना के अन्तर्गत कांगड़ी ग्राम का विस्तृत सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण किया गया।

—डा० विजय शंकर
निदेशक

भारतीय मनोविज्ञान पर यू०जी०सी० समर इन्स्टीट्यूट

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित भारतीय मनोविज्ञान पर ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन २५ जून से ६ जुलाई, १९८६ तक किया गया, जिसमें अखिल भारतीय विश्वविद्यालयों से आये शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। इसके डायरेक्टर प्रोफेसर हरगोपाल सिंह ने बताया कि भारतीय विश्वविद्यालयों में वेदों के समय से प्रारम्भ भारतीय मनोविज्ञान का पठन-पाठन बिलकुल नगण्य है और केवल पाश्चात्य मनोविज्ञान ही पढ़ाया जाता है जो भारतीय जनमानस की व्याख्या में अपूर्ण है। भारतीय मनोविज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता काफी समय से अनुभव की जा रही थी किन्तु क्रियात्मक कदम कोई भी नहीं उठा रहे थे जिसे भारतीय संस्कृति की संस्था गुरुकुल कांगड़ी ने प्रारम्भ किया है।

इस शिविर में वैदिक मनोविज्ञान, वैदिक मनोचिकित्सा, योगिक व्यक्तित्व, प्रकार एवं संवर्धन, गीता का मानस ज्ञान, परा मनोविज्ञान, स्वर विज्ञान और मानव व्यवहार, आयुर्वेद एवं मानसिक स्वास्थ्य, जैन मनोविज्ञान, उपनिषद् एव पुराणों में मनोविज्ञान, भारतीय एवं पाश्चात्य मनोविज्ञान की तुलना, भारतीय मनोविज्ञान सामग्री-संकलन एवं शोध के सम्भावित विषयों का उच्चस्तरीय प्रशिक्षण दिया गया। इसमें डायरेक्टर प्रोफेसर हरगोपाल सिंह के साथ बाहर से आये विद्वानों ने भी प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षणार्थियों ने यहाँ रहकर भारतीय मनोविज्ञान के विभिन्न विषयों पर शोधपत्र लिखकर प्रस्तुत किये। आशा है इससे मनोविज्ञान की विषय-सामग्री में उन्नति होने के साथ-साथ दूसरी उपयोगिता भी बढ़ेगी।

विश्वविद्यालय में यू० जी० सी० समर इन्स्टीट्यूट पहली बार हुआ। इसका उद्घाटन विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने किया। अपने उद्घाटनभाषण में उन्होंने बताया कि भारतीय शास्त्र मनोवैज्ञानिक धारणाओं से भरे पड़े हैं। पाश्चात्य मनोविज्ञान की पंगुता की ओर इशारा करते हुए आपने कहा कि फ्रायड, युंग तथा एडलर ने केवल दो तृष्णाओं—काम तथा धन—का ही उल्लेख किया है, जबकि भारतीय मनोषियों ने धर्म, अर्थ, काम

तथा मोक्ष का समन्वयवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। फ्रायड कहता है कि मनुष्य को स्वतन्त्र काम की इजाजत दे देनी चाहिए अन्यथा मानव व्यक्तित्व में अनेक प्रकार की कुंठायें उत्पन्न हो जायेंगी। भारतीय मनीषियों ने ब्रह्मचर्य पर बल दिया है और कहा है कि वासनाओं पर नियन्त्रण पाना मानव का परम धर्म है।

कुलपति श्री आर०सी० शर्मा, आई०ए०एस० (अ०प्रा०) ने देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये हुए विद्वानों का स्वागत किया। उन्होंने प्रत्येक से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करते हुए गुरुकुलीय स्नेह और परम्पराओं को जीवित रखा और सभी समारोहों में भाग लेकर इसे सफल बनाने हेतु सभी सम्भव प्रयत्न किये।

इस इन्स्टीट्यूट का समापन समारोह ६ जुलाई को हुआ जिसकी प्रधानता करते हुए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अवकाशप्राप्त अध्यक्ष डा० ए०के० सिन्हा ने कहा कि भारतीय मनोविज्ञान के पठन-पाठन से ही मनोविज्ञान सही अर्थों में मनुष्योपयोगी बन सकेगा अन्यथा पाश्चात्य मनोविज्ञान भारत की परिस्थिति के लिये अपूर्ण है। समारोह में प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रो० रामप्रसाद, आचार्य एवं उपकुलपति ने प्रदान किये तथा धन्यवाद श्री वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव ने दिया।

— डा० हरगोपाल सिंह
निदेशक

गंगा समन्वित योजना

(भारत सरकार, पर्यावरण विभाग)

वर्ष १९८५-८६ में प्रोजैक्ट का कार्य सुचारू रूप से चला तथा उक्त वर्ष में निर्धारित उद्देश्यों में से अधिकतर को प्राप्त कर लिया गया है। एक सीनियर रिसर्च फैलो श्री ए०पी० रस्तोगी को छोड़कर प्रोजैक्ट का सम्पूर्ण स्टाफ पूरी लगन व मेहनत से कार्यरत है। श्री ए० पी० रस्तोगी अपनी घरेलू परिस्थितियों के कारण प्रोजैक्ट छोड़कर चले गये हैं। उक्त वर्ष की प्रोजैक्ट उपलब्धियाँ निम्न प्रकार है :

१—गत वर्षों की भाँति जल-नमूनों को एकत्र करने तथा विश्लेषण का कार्य प्रगति पर है। जिसके द्वारा कुछ बहुत महत्वपूर्ण आँकड़े प्राप्त हुए हैं।

२—इस वर्ष धार्मिक पर्वों पर रात-दिन जल-नमूने एकत्र करके, सामूहिक स्नान करने से गंगा जल की गुणता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर लिया गया है। इनमें से मकर संक्रान्ति तथा कुम्भ मेले पर विशेष अध्ययन किया गया। जिनकी रिपोर्ट शोध-पत्र के रूप में तैयार कर ली गयी है जो कि निकट भविष्य में प्रकाशित करा दी जायेगी।

३—गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष प्रोजैक्ट नर्सरी में चार हजार और अधिक पेड़ उगाये गये है। जिनका रोपण वर्षा शुरु होने पर, गगा के किनारे उन स्थानों पर कर दिया जायेगा जहाँ पर गगा द्वारा अधिक भूमि कटाव की सम्भावना है।

४—औद्योगिक एवं घरेलू उत्प्रवाहों पर विभिन्न पौधों की अलग-अलग जातियो को उगाकर यह अध्ययन किया जा रहा है कि किस पौधे की कौन-सी जाति अधिक प्रदूषण कम करने में सहायक है। गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष कुछ और पौधों पर प्रयोग कर आँकड़े प्राप्त किए गये।

५—प्रोजैक्ट की ओर से निम्न लेख अथवा शोध-पत्र विभिन्न राष्ट्रीय संगोष्ठियों में पढ़े गये अथवा प्रस्तुत किये गये।

A. शोधपत्र प्रस्तुत किए गए :—

1—Characteristics of major sewer drains entering into Ganga at Hardwar. National Seminar on Ganga Pollution held at G.K.V. Hardwar.

2—Seasonal variations in the water quality of Song river, "Environmental Pollution and its Management" held at B.H.E.L. Ranipur, Hardwar.

3—A short term study on status of Ganga Pollution in Rishikesh Region, held at B.H.E.L. Hardwar.

4—An assessment of Water Quality of river Ganga at Garhmukteshwar (Ghaziabad) abstract published in Souvenir of "Pollution Control Strategies and Programmes". held at Lucknow.

B. शोधपत्र प्रकाशित :—

1—Impact of distillery effluents on Water Quality and Ecosystem of river Reh in Doon Valley" (Pollution Research).

C. दिनाक २८-४-८६ को केन्द्रीय गंगा प्राधिकरण की मीटिंग में डा० विजयशंकर तथा शोध वैज्ञानिक डा० आर० पी० एस० सागू ने भाग लिया। मीटिंग में प्रोजेक्ट की प्रगति आख्या प्रस्तुत की गई।

डा० आर० पी० एस० सांगू
शोध वैज्ञानिक

—डा० वी० शंकर
निदेशक

प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं विस्तार कार्यक्रम

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार द्वारा संचालित प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम सन् १९८३ से लगातार बीससूत्रीय कार्यक्रम के सोलहवें सूत्र को सफलतापूर्वक चला रहा है।

प्रशिक्षकों, पर्यवेक्षकों, अधिकारियों के सहयोग से ५२ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र सफलतापूर्वक चले हैं। इसमें ११४४ प्रौढ़ों को हस्ताक्षर करने, साधारण पढ़ना-लिखना सिखाया गया। स्वास्थ्य, कृषि, पशुपालन, फल-उद्योग, कीट-रक्षा, पर्यावरण, वृक्षारोपण आदि की शिक्षा भी उन्हें दी गई। इन प्रौढ़ों के सहयोग से लगभग १५०० वृक्ष लगाए गए। परिवार नियोजन के लाभों से अवगत कराते हुए कम बच्चे पैदा करना, विलम्ब से विवाह करना एवं नसबंदी हेतु भी प्रेरित किया गया। उन्हें समयानुसार वीडियो फिल्में दिखाकर प्रसारसेवा के अन्तर्गत आकर्षित कर, विभिन्न कार्यक्रमों में लगाया गया।

वाहन के अभाव में इस योजना को जितनी प्रगति मिलनी चाहिए थी, नहीं मिली। इस योजना में यू०जी०सी० से इस वर्ष एक लाख नब्बे हजार धन-राशि प्राप्त हो चुकी है। इस धनराशि का सही उपयोग प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत हो रहा है।

विभाग में निम्न स्टाफ कार्यरत है :—

१-को-आर्डिनेटर—

डा० ए० के० इन्द्रायण, रीडर—३० मई १९८६ तक
डा० जे० एस० सेंगर, रीडर—३१ मई १९८६ से

२-परियोजना अधिकारी—

श्री प्रभात कुमार सक्सेना—२१ फरवरी १९८६ तक

३-पर्यवेक्षक—

श्री जसवीरसिंह मलिक, एम० ए०, बी० एड०
श्री सुरेन्द्रकुमार त्यागी, एम० ए०—नवम्बर ८५ से

४–लेखक— श्री कालूराम त्यागी, एम० ए०
श्री कमलेश नेथानी, बी० ए०—अप्रैल १९८६ तक
श्री यशपालसिंह, फरवरी १९८६ से

५–भृत्य— श्री माताप्रसाद

श्री आर० सी० शर्मा, कुलपति इस योजना को सफल बनाने में पूर्णरूपेण, व्यक्तिगत रूचि लेकर, लक्ष्य प्राप्ति हेतु कर्मचारियों को प्रोत्साहित करते हैं। प्रशासकीय सेवाओं के अनुभवों का लाभ हमें मिल रहा है। वे स्वयं ग्राम-विकास कार्यक्रमों में रुचि लेते हैं। आशा है उनके नेतृत्व में अगले वर्ष १५० सेन्टर तक चलाने का लक्ष्य प्राप्त कर लिया जायेगा।

डा० जबरसिंह सेंगर
को-आर्डिनेटर

वित्त एवं लेखा

अगस्त-सितम्बर १९८५ में विश्वविद्यालय का संशोधित बजट बनाया गया। इसे वित्त समिति की बैठक दिनांक १७-१०-८५ में प्रस्तुत किया गया, जिसे समिति ने निम्न प्रकार पारित किया :

बजट सारांश

	संशोधित अनुमान ८५-८६	बजट अनुमान ८६-८७
वेतन व भत्ते आदि	३५,८२,०००.००	३६,५८,९६०.००
अशदायी भविष्यनिधि	९५,०००.००	१,१२,७२०.००
अन्य व्यय	१०,८४,०००.००	१०,६८,३२०.००
योग व्यय	४७,६१,०००.००	४८,४०,०००.००
आय	१,३८,०००.००	१,४०,०००.००
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त अनुदान—	४६,२३,०००.००	४७,००,०००.००

समीक्षाधीन वर्ष १९८५-८६ में ४६,२३,०००/- रु० के अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है, उसका विवरण निम्न प्रकार है :

क्र०सं०	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
१-	२०,०००.००	वि०वि० अनुदान आयोग	शोध प्रकाशन
२-	२,००,०००.००	...........,,...........	पुस्तकालय पुस्तकें
३-	२,००,०००.००	...........,,...........	उपकरण
४-	३०,०००.००	...........,,...........	राष्ट्रीय संगोष्ठी—आर्य समस्याएँ एवं नागर सभ्यताएँ।

क्र०सं०	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
५–	६,७५०.००	वि०वि अनुदान आयोग	युगों - युगों से चली आ रही शिक्षा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में
६–	३७,५००.००	शिक्षा मन्त्रालय	पुस्तक सुरक्षा
७–	२,६०,०००.००	वि०वि० अनुदान आयोग	प्रौढ शिक्षा
८–	२५,०००.००	तमिलनाडु सरकार	तमिल पीठ
९–	१,५६,०००.००	भारत सरकार	गंगा बेसिन
१०–	१०,०००.००	आई.सी.पी.आर. दिल्ली	अखिल भारतीय दर्शन परिषद्
११–	१०,०००.००	वि०वि० अनुदान आयोग	.........,,............
१२–	५,०००.००	वैज्ञानिक एवं औद्योगिक परि०, नई दिल्ली	गंगा प्रदूषण
१३–	१७,५००.००	पर्यावरण विभाग उ०प्र० लखनऊ	...,,.......
१४–	३,१६,७००.००	भारत सरकार	हिमालय प्रोजैक्ट

– बी०डी० भारद्वाज
वित्त अधिकारी

आय का विवरण

१९८५-८६

क्र०स०	आय का मद	धनराशि
(क)	**दान और अनुदान –**	
१–	वि०वि० अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान –	४६,२३,०००/-
	योग—	४६,२३,०००/-
(ख)	**शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय—**	
१–	पंजीकरण शुल्क	५,६६५/-
२–	पी–एच०डी० रजिस्ट्रेशन शुल्क	१,२००/-
३–	पी–एच०डी० मासिक शुल्क	६,०४०/-
४–	परीक्षा शुल्क	३४,६४८/-
५–	अंक-पत्र शुल्क	२,७०८/-
६–	पड़ताल शुल्क	२५०/-
७–	विलम्ब दण्ड, टूट-फूट	२,४३२/-
८–	म'इग्रेशन शुल्क	१,२५७/-
९–	प्रमाण-पत्र शुल्क	२,१२७/-
१०–	नियमावली, पाठविधि तथा फार्मो आदि का शुल्क	१,०२७/-
११–	सेवा आवेदन-पत्र	२,१४१/-
१२–	रद्दी व पुराने पर्चे	१,१७८/-
१३–	शिक्षा शुल्क	३२,८८४/-
१४–	प्रवेश व पुनः प्रवेश शुल्क	७,०६६/-

क्र०सं०	आय का मद	धनराशि
१५–	भवन शुल्क	६४१/-
१६–	क्रीड़ा शुल्क	३,१२७/-
१७–	पुस्तकालय शुल्क	३,७१३/-
१८–	परिचय-पत्र शुल्क	१,०७३/-
१९–	एसोसियेशन शुल्क	८८१/-
२०–	मनोविज्ञान लैब	२५२/-
२१–	मँहगाई शुल्क	६,६०४/-
२२–	विज्ञान शुल्क	१०,२१३/-
२३–	पुस्तकालय से आय	१,४६०/-
२४–	पत्रिका शुल्क	५,२३७/-
२५–	साईकिल स्टैण्ड	१,६५६/-
२६–	अन्य आय	३,६२७/-
	योग—	०१,४०,३१०/-
	क+ख सर्व योग—	४७,६३,३१०/-

बी०डी० भारद्वाज
वित्त अधिकारी

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

१९८५-८६

क्रम सं०	व्यय की मद	राशि
(क) वेतन—		
१-	शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का वेतन	३५,३०,९४७/-
२-	भविष्य निधि पर संस्था का अंशदान	९७,६०७/-
३-	ग्रेच्युटी	१६,१७८/-
	योग "क"	३६,४४,७३२/-
(ख) अन्य—		
१-	विद्युत व जल	४८,९५६/-
२-	टेलीफोन	१३,४२६/-
३-	मार्ग व्यय	७२,००७/-
४-	लेखन सामग्री छपाई	५७,०९४/-
५-	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	१६,४८२/-
६-	डाक व तार	६,८७७/-
७-	वाहनरक्षण तथा पैट्रोल	६९,३६६/-
८-	विज्ञापन	१२,८७०/-
९-	न्यायिक व्यय	२२,८४२/-
१०-	आतिथ्य व्यय	१६,३८०/-
११-	दीक्षान्तोत्सव	१७,८८८/-
१२-	लॉन संरक्षण	८,४६६/-
१३-	भवन मरम्मत	१,७७,०८७/-

क्रम सं० व्यय की मद	राशि
१४- उपकरण	७०,४४५/-
१५- फर्नीचर एवं साज-सज्जा	५१,११७/-
१६- राष्ट्रीय छात्र सेवा	६६/-
१७- निर्धनता फंड	५००/-
१८- छात्रों को छात्रवृत्ति	३०,१६५/-
१९- खेल-कूद एव क्रीड़ा	१६,०८२/-
२०- गोष्ठी एवं सम्भाषण	१०,३७१/-
२१- सरस्वती यात्रा	९,९८३/-
२२- वाग्वर्धिनी सभा	१,६६०/-
२३- छात्र एसोसियेशन	६,७८४/-
२४- मनोविज्ञान प्रयोगशाला	१,५७७/-
२५- रसायन प्रयोगशाला	१५,३५२/-
२६- भौतिकी विज्ञानशाला	१६,८१४/-
२७- वनस्पति विज्ञानशाला	६,२०५/-
२८- जन्तु विज्ञानशाला	११,१४७/-
२९- गैस प्लांट	५,१९४/-
३०- साइन्स जरनल आर्यभट्ट	६,७००/-
३१- वनस्पति वाटिका ग्रीन हाउस	१,०१३/-
३२- साइकिल स्टेन्ड	८७६/-
३३- समाचार पत्र	३२,०५१/-
३४- पुस्तके	२३,५५०/-
३५- जिल्दबंदी, पुस्तक सुरक्षा	१०,१५३/-
३६- कैटेलॉग व इन्डैक्सिंग	१,९३४/-
३७- वैदिक पाथ, प्रह्लाद, आर्यभट्ट, गुरुकुल पत्रिका छपाई	२६,५३१/-
३८- मिश्रित व्यय	९,९३९/-
३९- आकस्मिक व्यय	६,९४०/-
४०- सदस्यता शुल्क व अंशदान	२०,४००/-

क्रम स० व्यय की मद	राशि
४१– पुस्तकालय कांगड़ी ग्राम योजना पढ़ते हुए कमाओ	१,५६८/-
४२– आडिट व्यय	६,१६६/-
योग "ख"	६,४४,०५७/-
४३– निरीक्षकों का मार्ग-व्यय	३४,४६६/-
४४– मार्ग व्यय परीक्षक	७,४४२/-
४५– निरीक्षण व्यय	५,४४६/-
४६– प्रश्न-पत्रों की छपाई	२२,७०५/-
४७– उत्तर पुस्तिका का मूल्य	१४,८२२/-
४८– डाक तार व्यय	६,००५/-
४९– लेखन सामग्री	३,५००/-
५०– नियमावली, पाठविधि छपाई	१६,६५१/-
५१– अन्य	१,०४७/-
योग "ग"	१,१२,३६२/-
योग ख+ग	१०,५६,४४६/-
योग क+ख+ग	४७,०१,१८१/-

—बी०डी० भारद्वाज
वित्त अधिकारी

दीक्षान्त १९८६ पर पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त करने वाले शोधार्थियों की सूची—

क्रम सं०	नाम शोधार्थी	विभाग	विषय
१.	श्री मुरारीलाल शर्मा	हिन्दी विभाग	"पश्चिमी पहाड़ी की मंडियाली बोली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन"।
२.	श्री गजराजसिंह त्यागी	हिन्दी विभाग	"महादेवी के काव्यों में संस्कृति और दर्शन"।
३.	श्रीमती प्रतिमा शर्मा	हिन्दी विभाग	"बच्चन के काव्य में जीवन-दर्शन और कला"।
४.	श्री मनुदेव	वैदिक साहित्य	"बृहदारण्यकोपनिषद् : एक अध्ययन"।
५.	श्री भगतसिंह	संस्कृत साहित्य	"महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में नारद, बृहस्पति और कात्यायन स्मृतियों का तुलनात्मक अध्ययन" (विशेषत. व्यवहार)
६.	कु० अरुणा मिश्रा	प्रा०भा० इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व	"प्राचीन भारतीय नारी-शिक्षा एवं महर्षि दयानन्द का योगदान।
७.	श्रीमती अंजली मेहरोत्रा	प्रा०भा० इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व	"प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन"।

दीक्षान्त १९८९ पर अलंकार उपाधि प्राप्त करने वाली छात्राओं की सूची

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

क्रम सं०	अनुक्रमाक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
१	२२९	८३०१६१	कु० डेजी रानी	श्री सुखबीर सिह	अलंकार-II	गै० लौ०, अंग्रेजी, हिन्दी	प्रथम
२	२३०	८३०१५४	कु० कविता	श्री कृष्ण मुरारीलाल	,,	इतिहास, संगीत	प्रथम
३	२३१	८३०१५२	कु० ममता	श्री कृष्ण मुरारीलाल	,,	,,	द्वितीय
४	२३२	८३०१५९	कु० प्रतिभा	श्री विजयसिह	,,	,,	प्रथम
५	२३३	८३०१५३	कु० प्रतिभा	श्री कृष्ण मुरारीलाल	,,	,,	प्रथम
६	२३४	८३०१५६	कु० प्रेमा	माँ उमाशक्ति	,,	,,	प्रथम
७	२३५	८३०१५८	कु० पूनम	श्री कुन्दनलाल	,,	,,	द्वितीय
८	२३६	८३०१५५	कु० शशिबाला	श्री कन्हैयालाल	,,	,,	द्वितीय
९	२३७	८३०१६०	कु० स्नेहलता	श्री बालकराम चौहान	,,	,,	प्रथम

दीक्षान्त १९८६ पर अलंकार तथा वेदालंकार उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों की सूची

गुरुकुल भैंसवाल

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
१	२३८	८२००४६	गजराज	श्री ताराचन्द	अलंकार-II	वै०लो, अं०, हि० इति०, संगीत	प्रथम
२	२३९	८२०१५४	बलराम आर्य	श्री सुन्दरलाल	वेदालंकार-II	वैदिक, साहि०	प्रथम
३	२४०	८३०१८५	चूड़ामणि उपाध्याय	श्री दुर्गादत्त उपाध्याय	,,	,,	द्वितीय
४	२४१	८३००९९	देव शर्मा	श्री हरपाल शास्त्री	,,	,,	प्रथम
५	२४२	८३०११५	दूधपुरी	श्री सेढूराम गोस्वामी	,,	,,	प्रथम
६	२४५	८२००३०	सोमपाल	श्री दयाचन्द	,,	,,	प्रथम
७	२४६	८२०१५९	सुन्दरसिंह	श्री हिम्मतसिंह	,,	,,	(अवरुद्ध) द्वितीय
८	२४७	८३००९८	उमेशकुमार	श्री देवीप्रसाद शर्मा	,,	,,	द्वितीय

दीक्षान्त १९८६ पर बी०एस-सी० की उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों की सूची

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
१	३४३	८३००९०	अनिल कुमार	श्री रणधीर सिंह	बी०एस-सी० II	बायो-ग्रुप	द्वितीय
२	३४४	८३००९१	अभय कुमार	श्री भगवान दास	"	"	द्वितीय
३	३४५	८३००८९	अतुल अग्रवाल	श्री सर्वेश कुसुमाकर	"	"	द्वितीय
४	३४६	८३००८८	ब्रजनन्दन सिंह	श्री सत्यनारायण सिंह	"	"	द्वितीय
५	३४७	८३००८६	दिनेश कुमार	श्री कल्याण सिंह	"	"	द्वितीय
६	३४८	८३००७४	दिवाकर सिंह	श्री कुंवरसिंह नेगी	"	"	द्वितीय
७	३४९	८३००८३	हेमचन्द्र जोशी	श्री इन्द्रप्रसाद जोशी	"	"	द्वितीय
८	३५१	८३००७८	महेन्द्र सिंह	श्री जहाना सिंह	"	"	प्रथम
९	३५२	८३००७६	मुकेशकुमार पाराशर	श्री रविदत्त शर्मा	"	"	द्वितीय
१०	३५३	८३००७९	मनोजकुमार मेहता	श्री गंगाबिशन मेहता	"	"	द्वितीय
११	३५४	८३००९२	प्रमोद कुमार	श्री शिवमोहन सिह	"	"	द्वितीय
१२	३५५	८३००९४	पकज कुमार	श्री चन्द्रप्रकाश	"	"	द्वितीय
१३	३५६	८३००७१	राकेश बहुगुणा	श्री जीतराम बहुगुणा	"	"	द्वितीय
१४	३५७	८३००६९	सुरेन्द्र कुमार	श्री अतर सिंह	"	"	द्वितीय

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
१५	३५८	८३००६८	सुधीर बंसल	श्री-हरिशंकर बंसल	बी०एस–सी II	बायो-ग्रुप	द्वितीय
१६	३५९	८३००६६	सुनील कुमार शर्मा	श्री कैलाशचन्द्र शर्मा	"	"	द्वितीय
१७	३६०	८३००६४	तेजबहादुर यादव	श्री हजारी यादव	"	"	तृतीय
१८	३६१	८३००६१	विजय कुमार	श्री नरेश कुमार	"	"	द्वितीय
१९	३६२	८३००६२	विनीत कुमार त्यागी	श्री अरविन्दकुमार त्यागी	"	"	द्वितीय
२०	३६४	८३००४४	अतुलकुमार गुप्ता	श्री सुरेशकुमार गुप्ता	"	गणित ग्रुप	द्वितीय
२१	३६५	८३००४५	अतुलकुमार सिंह	श्री रामचन्द्र सिह	"	"	प्रथम
२२	३६६	८३००४६	अशोककुमार गुप्ता	श्री नन्दकिशोर गुप्ता	"	"	तृतीय
२३	३६७	८३००४१	अरुणकुमार	श्री आनन्दप्रकाश	"	"	द्वितीय
२४	३६८	८३००४७	अजयकुमार छतवाल	श्री रामप्रकाश छतवाल	"	"	द्वितीय
२५	३६९	८३००५४	दिनेशकुमार	श्री रघुवीरसिंह	"	"	प्रथम
२६	३७०	८३००५३	दीनाथ यादव	श्री भोलासिंह यादव	"	"	तृतीय
२७	३७१	८३००५५	धर्मेन्द्र	श्री जलसिंह	"	"	प्रथम
२८	३७२	८३००५७	जगदीशकुमार	श्री प्रभुदयाल	"	"	द्वितीय
२९	३७४	८३०००६	मनोजकुमार	श्री आनन्दप्रकाश	"	"	द्वितीय
३०	३७५	८३०००९	नरेन्द्रकुमार	श्री मामराज सिह सैनी	"	"	द्वितीय

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
३१	३७६	८३०००८	नवीन निश्चल	श्री राजेन्द्रकुमार	बी०एस-सी०-II	गणित ग्रुप	प्रथम
३२	३७७	८३००१२	प्रदीपकुमार कालरा	श्री काशीराम कालरा	"	"	द्वितीय
३३	३७८	८३००२२	राकेश सैनी	श्री जे० एस० सैनी	"	"	द्वितीय
३४	३८०	८३००१७	रविन्द्रकुमार	श्री जयन्ति प्रसाद	"	"	द्वितीय
३५	३८१	८३००२४	सन्दीप भटनागर	श्री एन० एस० भटनागर	"	"	द्वितीय
३६	३८२	८२०१०४	सत्येन्द्रकुमार शर्मा	श्री राजेन्द्रकुमार शर्मा	"	"	द्वितीय
३७	३८३	८३००३१	सुशील सूद	श्री हरिबिशनसिह सूद	"	"	द्वितीय
३८	३८४	८३००३६	विजयकुमार	श्री रहतूलाल	"	"	द्वितीय
३९	३८५	८३००३७	विनीतकुमार गुलाटी	श्री के० एल० गुलाटी	"	"	प्रथम
४०	३८६	८३००३८	विजयपाल	श्री अकलचन्द	"	"	द्वितीय
४१	३८७	८३००२५	शिबचन्द्र रामपाल	श्री ताराचन्द सैनी	"	"	तृतीय

दीक्षान्त १९८६ पर एम०ए०/एम०एस-सी० की उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों की सूची

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
१	५२७	८३०१०१	आनन्दकुमार	श्री शिवप्रसाद बिरजा	एम०ए०-II	वैदिक साहित्य	प्रथम
२	५२८	८३०११७	हरपाल	श्री धनीराम	,,	,,	द्वितीय
३	५२९	८३०१०३	कल्याणदास	श्री हीरादास	,,	,,	प्रथम
४	५३०	८३०१९९	रोहितकुमार ठाकुर	श्री शकुन्तलाल ठाकुर	,,	,,	द्वितीय
५	५३१	८३०११२	गुरुप्रसाद उपाध्याय	श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय	,,	संस्कृत साहित्य	प्रथम
६	५३२	८३०१११	पुण्यप्रसाद	श्री मनोरथ उप्रेती	,,	,,	प्रथम
७	५३३	८२०१३२	पीताम्बर शर्मा	श्री श्यामप्रसाद शर्मा	,,	,,	द्वितीय
८	५३४	८३०११३	महेशचन्द्र	श्री राघव सिंह	,,	,,	प्रथम
९	५३५	८३०१०२	नरेन्द्रसिंह	श्री शिवनार्थसिंह	,,	,,	द्वितीय
१०	५३६	८३०१६४	राजेश्वर कुमार	श्री प्रतापसिंह सैनी	,,	,,	प्रथम
११	५३७	८३०१०५	रामचन्द्र	श्री तुलाराम	,,	,,	द्वितीय
१२	५३९	८३०१३७	कु० आभा	श्री राजाराम शर्मा	,,	,,	द्वितीय
१३	५४०	८४००७८	कु०इन्दुबाला डाबरा	श्री भगवानदास डाबरा	,,	,,	द्वितीय
१४	५४१	८२००४४	कु० कृष्णा	श्री दीनदयाल	,,	,,	द्वितीय
१५	५४२	८३०१३३	कु० सुनीति	श्री रामप्रसाद	,,	,,	प्रथम
१६	५४३	८३०१४०	कु० शेफाली शर्मा	श्री विवेकानन्द शर्मा	,,	,,	प्रथम
१७	५४४	८४०१३२	धनीराम	श्री दुलीचन्द सैनी	,,	दर्शन शास्त्र	द्वितीय
१८	५४५	८२००४२	धीरजदास	श्री गोविन्दनन्द	,,	,,	द्वितीय
१९	५४६	८१०१७२	स्वा० प्रज्ञानन्द	श्री हरिनाम दास	,,	,,	तृतीय

क्रम सं०	अनुक्रमांक	पजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	कक्षा	विषय	श्रेणी
५९	६०१	८१००६५	राजीव कुमार	श्री प्राणनाथ	एम०एस-सी०	गणित	प्रथम
६०	६०२		सन्दीप जैन	श्री एम०पी०जैन	,,	,,	प्रथम
६१	६०३	८४०१४८	सुनीलकुमार चौहान	श्री नरेन्द्रसिंह चौहान	,,	,,	द्वितीय
६२	६०४	८०००५१	उमेशकुमार शर्मा	श्री गीताराम शर्मा	,,	,,	द्वितीय
६३	६०५	८०००५८	वीरेन्द्रकुमार	श्री मामचन्द वर्मा	,,	,,	प्रथम
६४	६०६	८१००४८	विमलकुमार	श्री कृपालदत्त पन्त	,,	,,	प्रथम
६५	६०७	८००११९	योगेन्द्रपाल	श्री ओमप्रकाश	,,	,,	प्रथम
६६	६०८	८००११०	जितेन्द्रकुमार अग्रवाल	श्री पदमकुमार अग्रवाल	,,	,,	द्वितीय
६७	६०९	८४०१२३	कु० मंजुषा खनेजा	श्री महेन्द्रकुमार खनेजा	,,	,,	द्वितीय
६८	५४२	८३०१८६	सुन्दर दास	श्री लालदास	एम०ए०-II	दर्शन	प्रथम

OM

Gurukula Kangri Vishwavidyalaya

HARDWAR

ANNUAL REPORT — 1986-87

(AN ABSTRACT)

—DR. VIRENDRA ARORA
Registrar
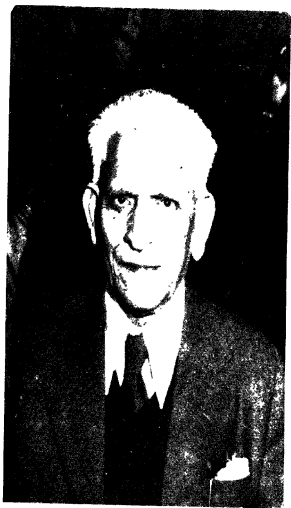
The new Visitor Sri Som Nath Marwaha
(Sr. Advocate : Delhi High Court)

OFFICERS OF THE VISHWAVIDYALAYA

Visitor	— **Dr. Satyavrata Siddhantalankar Vidyamartand** (Upto 16-4-87, F/N)
	— **Sri Som Nath Marwaha** Sr. Advocate (High Court) (From 16-4-87, A/N)
Chancellor	— **Dr. Satyaketu Vidyalankar**
Vice-Chancellor	— **Sri Ram Chandra Sharma** I.A.S (Retd.)
Pro Vice-Chancellor	— **Sri Ram Prasad Vedalankar**
Treasurer	— **Sri Sardari Lal Verma**
Registrar	— **Dr. Virendra Arora**
Principal, Science College	— **Sri Suresh Chand Tyagi**
Dy Registrar	— **Dr. Shyam Narayan Singh**
Finance Officer	— **Sri B. D. Bhardwaj**
Director, Museum	— **Dr. B.C. Sinha** (Upto 7-11-86)
	— **Dr J.S. Senger** (from 8-11-86)
Librarian	— **Sri Jagdish Prasad Vidyalankar**

Gurukula Kangri Vishwavidyalaya was established in 1900 by Swami Shraddhananda to initiate and educate pupils of all classes, castes and creeds according to the ideals of Vedic Culture and to prepare them to be good citizens for the service of the country and humanity. It has completed 86 years of its working.

During 1986-87 the V.V. continued its activities in its professed areas of work under the inspiring leadership of the Visitors Dr Satyavrata Siddhantalankar and Sri Somnath Marwaha, Chancellor Dr Satyaketu Vidyalankar, and Vice-Chancellor Shri R. C. Sharma.

Whereas in these years the Vishwavidyalaya instituted Professorships in various subjects, it also established Integrated Ganga Study Project, Himalaya Ecological Project, Adult and Continuing Education Programmes, Employment Bureau, etc. On the one side the Vishwavidyalaya took up rural upliftment through Kangri Village Development and NSS, on the other side it tried to develop vocational and practical aspects of education. Despite limited resources, our students remained anchored to the national stream of construction and did not remain mere bookworms. They had an awareness of the basic needs of the country and society. The examinations were conducted peacefully in time. The input of Grants this year was higher; all the departments accelerated their activities. The number of students also increased.

Achievements of the Students

In spite of financial constraints and other obstacles, the *ashrama* system for the *brahmacharis* has been improved and for their physical and spiritual development *yogabhyasa*, *vratabhyasa* and daily recitation of the Vedic *mantras* are being continued. This year was a period of consolidation and qualitative improvement. All efforts were made to run the administration of the V. V. without any

tensions and conflicts, and during the last two decades, this period may be termed a period free from tensions and conflicts. Students behaved decently; they showed remarkable sense of discipline and earnestness.

The students of the V. V. participated in the Sanskrit debating contests at National level and won trophies at Ujjain and Kurukshetra. Sri Doodhpuri Goswami was awarded Gold Medal at Ujjain. The students are also becoming competition-oriented and some of them were selected in competitive examinations and entered various professional fields. The students were provided free guidance for competitive examinations. They were also given opportunities through *Saraswati Yatras* to improve their practical knowledge. Efforts were also made for their enculturation through various literary and extra-literary activities.

Brahmchari Rajendra Singh Vidyalankar, Brahmacharis Hari Shankar Vidyalankar, Jitendra Kumar, Dinesh Chandra Shastri, Dev Sharma and others participated in various all India contests and won laurels and trophies. Shri Harendra Nath, a student of M. A. (English) and also of the Yoga Diploma course stood first in the District level Yoga competition held at Saharanpur. He also secured the first place in the local Yoga contest held at Kankhal in October, 1986.

Academic Activities of Faculty Members

There has been an increasing contribution to and participation in various conferences, workshops, seminars, symposia and other educational programmes at the inter-university level by faculty members who have engaged themselves in the field of research/publication and extension. The teachers of the University have had in their mind and heart the goals of New Education Policy and not only refurnished themselves to face the challenge but also recast the courses.

Besides attending the various conferences in India, the Vice Chancellor Shri R.C. Sharma attended from 18-23rd August, 1986 the Association of Commonwealth Universities Executive Heads'

Conference in Penang, Malaysia (University of Science). Registrar Dr. Virendra Arora is going to attend ACU Conference of Registrars and Administrators in Sydney (Australia).

Dr Randhir Singh of Chemistry Department visited Venice and Berlin and delivered his learned talk. Prof. S. L. Singh of Maths Dept. was appointed Vice-President of the Mathematical Society of Govt. Colleges, U.P. Prof. O. P. Mishra was nominated expert in the Selection Board of U.P. Universities on Psychology by the Governor of U. P. Teachers were appointed on the editorial boards of various learned journals of India. Dr. Virendra Arora of the Maths Department (now Registrar) and Dr. Kaushal Kumar of Chemistry Department were awarded D. Phil. degrees. Shri Jairath of the Museum has submitted his Ph. D. thesis to Baroda University. Two Readers in the Department of Physics and one Reader in English are actively engaged in research work and it is hoped that they would soon earn their doctorates.

Prof. O. P. Mishra; Dr. Jai Dev; Prof. H. G. Singh; Dr V. D. Rakesh; Dr. Randhir Singh; Dr. Rajnidutta Kaushik; Dr. Bharat Bhushan; Prof. Ram Prasad Vedalanakar; Dr. Nigam Sharma; Prof. S. L. Singh; Dr. R.L. Varshney; Shri S.S. Bhagat; Dr. Narayan Sharma; Dr. Shrawan Kumar and a number of other teachers participated in seminars, workshops, conferences and other learned gatherings outside the University. There was thus an active participation and involvement by the teaching staff in the activities pertaining to learning this year.

Academic Growth

The academic contour of the VV definitely improved during this year. The programme of inducting Visiting Professors/Fellows continued. Shri S.R. Chaudhuri, formerly Head of Arabic Department, JNU, New Delhi translated the Vedic *mantras* into Arabic and has been working in the University as a Visiting Professor. Dr. S.N. Mishra, Maths Department, Zambia University, Lusaka worked as Visiting Fellow in the Department of Maths in February and March 1987. Dr. R.C. Agrawal, formerly Director,

Archaeological Museums, Rajasthan Government, worked as a Visiting Professor. The following eminent Scholars and Professors were invited in various disciplines to deliver talks in the V.V.—

1. Justice Chandra Prakash, retired Judge of Allahabad High Court.
2. Sri Vishnu Prabhakar, famous man of letters in India.
3. Dr. R.S. Singh, Professor of English, Kurukshetra University.
4. Dr. Upendra Thakur, Professor of History, Magadh University.
5. Dr. V.C. Pandey, Professor of History, Punjab University.
6. Dr K.K. Sharma, Professor of History, Meerut University
7. Prof. R.K. Rathi, Professor of Computer Sciences, Meerut University

Research

The following persons were awarded Ph. D. degrees—

Sl. No.	Name of the candidate and subject	Title of Thesis	Name of the Supervisor
1	2	3	4
1.	Smt. Sushma Sanskrit Literature	बृहत्त्रयी और लघुत्रयी पर वैदिक प्रभाव	Dr. Nigam Sharma
2.	Sh. Keshav Prasad Upadhyay Sanskrit Literature	महर्षि दयानन्दकृत यजुर्वेद भाष्य के प्रथम दस अध्यायों का व्याकरण की दृष्टि से समालोचनात्मक अध्ययन।	Dr. Ram Prakash
3.	Sh. Dayanand Sharma Philosophy	सांख्य शास्त्र और चरक संहिता—एक दार्शनिक तुलनात्मक अध्ययन।	Dr. Jai Dev Vedalankar
4.	Sh. Namdev Dudhatay Philosophy	शंकराचार्य, मध्वाचार्य तथा दयानन्द का तुलनात्मक दार्शनिक परिशीलन।	Dr. Jai Dev Vedalankar

1	2	3	4
5.	Sh. Rameshwar Dayal Gupta Vedic Literature	जीवात्मा के वेदप्रतिपादित स्वरूप की विवेचना।	Dr. Bharat Bhushan Vedalankar
6.	Km. Kamjit Vedic Literature	महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य में इन्द्र देवता का अध्ययन।	Dr. Satyavrata Rajesh
7.	Sh. Kewal Krishna Ancient Indian History, Culture & Archaeology	पूर्व मध्यकाल में राजनीतिक संस्थाएँ।	Dr. Kashmir Singh

Publications

Some of the research works and publications of 1986-87 are as follows—

Dr. Vishnu Dutta Rakesh : 1. "Vedic Sanskriti aur Darshan ke Vegyanik Bhasyakar Dr. Satyavrat Siddhantalankar".

2. "Chinten ke Ksitiz" (in press).

Dr. R L. Varshney : 1. "Emerson : Selected Essays and Poems" (ed.)

2. "Sri Aurobindo : Selected Poems" (ed.)

3. "O' Neil : Desire under the Elms".

4. "The Geeta and W.B. Yeats".

5. "Existentialism".

6. "Teaching of English".

Dr. Narayan Sharma : "Vedanta : Its Theory and Practice."

Dr. Shrawan Kumar : "The Poetry of Sir Walter Scott."

Dr. Vijay Shanker :

1. "Characteristics of Major Sewer Drains."
2. "Fodder Plants of Garhwal-Himalayas".
3. "Impact of Distillary Effects."
4. "Conservation of Medicinal Plants in Ganga".
5. "Tehri Dam".

Dr. Purshotam Kaushik :

1. "Ergot Production in India".
2. "Inoculation with Micorrhizal Fungus Enhance Growth of Medicinal & Agricultural Crop Plants."
3. "Legumes : Medicinal Aspects & the Use of Rhizobium in Cultivation of Medicinal Logumes."
4. "Easy to Knock Down Mosquitoes by Herbal Agarvatti".
5. "Dermotophytes and Skin Infections : A Preliminary Survey at Hardwar."
6. "Rhizobium Krishak ka Mitra"
7. "Kavkiya Twacha Rog Dadru Mandal."
8. "Himalaya ke Anokhe Phool".

Dr. Jai Dev :

1. "Bharatiya Darshan ki Samasyain".
2. "Vishwa ki Samasyaon ka Darshnik Nidan."
3. "Sanskriti Shodha Sankalan". (ed)
4. "Jivatama aur Brahma mai Bheda".

Dr. Vijai Pal Shastri :

1. "Shubha Sankalpa se Vishwa-Shanti'.
2. "Andhakar Ek Dravya hai."

Vice-Chancellor Sri R C Sharma, welcoming the Chief Minister of U.P.

A glimpse of the Convocation Procession : Sri Som Nath Marwaha, Sri G.B K. Hooja and other members of the Senate

3. "Agyah Sukhmarudhyah".
4. "Mahabharatasya Vaishistyam".

Dr. Trilok Chandra :

1. "Yoga se Phepharaun ka Ilaj Sambhav".
2. "Sangeet aur Yoga se Nashe ki Lat Chhurain".
3. "Nashamukti ke Karan Sadhan Yoga aur Sangeet".

Dr. Surya Kumar Srivastava

1. "Role of Management in Higher Productivity."
2. "A Study of the Personality of technical and non-technical Personnel"
3. "A Comparative Study of Organizational Climate in Govt. Department and Bank."
4. "Achievement, Motivation and Anxiety among School Students."
5. "Organizational Climate and Job Satisfaction of Junior and Middle Level Central Govt. Officers—A Comparative Study."

Dr. S.L. Singh :

1. "A Note on Recent Generalizations of Jungck Contraction Principle."
2. A Note on Fixed Point Theorem of Park-Rhoados and Jungck Contraction Principle."
3. "A Common Fixed Point Theorem for two Systems of Transformations"
4. "Coincidence Theorems for Hybrid Contractions"
5. "Coincidence Theorems on 2-metric spaces"

6. "General Fixed Point Theorems in Probabilistic Metric and Uniform Spaces."
7. "Fixed Points of Mappings with Diminishing Probabilistic Orbital Diameters"
8. "Coincidence Theorems, Fixed Point Theorems and Convergence of the Sequences of Coincidence Values."
9. "Fixed Point Theorems for Family of Mappings."

Sri H L. Gulati : "On Priority Tandem Queueing.".

Sri Suryakant Srivastava :

1. "Pragetihasik Saharanpur".
2. "Bharatiya Mahakavya Avam Puratatva".
3. "On Some Pod forms worshipped as Deities".
4. "Puratatva Sangrahalaya".

Sri Brijendra Kumar Jairath : "Archaeology of the Northern Part of Bhavnagar, Distt. Gujrat State upto 15th Century A D." a thesis submitted to Baroda University.

Dr. Virendra Arora : "Coincidence theorms and Fixed Point theorms in 2-metric spaces" A thesis submitted to Garhwal University.

Dr. Kaushal Kumar : "Studies on Metal Complexes of substituted – 3—Arol—2—Arylimino—4—Thiazolidinones

Dr. R.D. Kaushik :

1. "A Kinetic – Spectrophotometric Method for the Determination of N-N Dimethylaniline in Micrograms"
2. "Kinetics & Mechanism of Oxidation of Aromatic Amines by Periodate Ion—Determination of Aniline in nanograms in aqueous medium.

3 "Microgram Determination of Aniline by Spectrophotometric method"

4. "Microgram Determination of N-N-Dimethyl - aniline in water by Spectrophotometric method."

Besides several publications by the individual teachers, a research edition of *Gurukula Patrika* was brought out under the editorship of Dr. Jaideva Vedalankar. Research and extension journals, namely *The Vedic Path*, the *Aryabhatta* and the *Prahlad* and *Gurukula Patrika* were published by the Vishwavidyalaya regularly with a qualitative improvement under the editorships respectively of Dr. H G. Singh, Dr Vijai Shanker & Dr. V D Rakesh.

Visitors

Among the distinguished visitors were academicians, ministers, ambassadors and other dignitaries. To name a few among others were Sarvashri Veer Bahadur Singh, Chief Minister, U P., Shri Baldev Singh Arya, Sri Sita Ram Nishad, Minister of State of P.W.D. & Fisheries Development, Shri Shiv Nath Singh, Mr. Ram Autar Dikshit, Minister of State for Hill Development, Shri Kushwaha, and Prof Sher Singh. Shri Chandra Prakash, retired judge of Allahabad High Court, Shri R.C Tripathi, Joint Secretary, Ministry of Culture and Human Resource Development. Shri G.B.K. Hooja, former V C., GKV visited Gurukula twice, He also went to Kangri village. Shri Virendra, President Arya Pratinidhi Sabha, Punjab and Swami Anand Bodh (alias Lala Ram Gopal Shalwale) too visited the Vishwavidyalaya and delivered their talks

UGC Summer Institute

Through yoga-psychology man's behaviour can be changed and his quality improved; he can be filled with divine virtues. Influenced by this concept, with the assistance and sponsoring of UGC., a Summer Institute on Indian Phychology was successfully conducted by this Vishwavidyalaya under the directorship of Prof. H. G. Singh from 25th June to 9th July, 1986. In this institute

teachers from various universities received training and refreshed their knowledge. Authentic papers were read on Vedic Phychology, Psycho-Therapy, Yoga-Psychology, Advancement of Persnoality, Music Psychology, Human Behaviour, Indian Vs Western Phychology, etc. This institute was inaugurated by Dr Satyavrata Siddhantalankar, Visitor, GKV and was concluded by Dr. A. K. Sinha, former Professor of Psychology in Kurukshetra University. Another Summer Institute of the same nature is going to be organized this June.

Conferences and Seminars

Under the directorship of Prof. R.L Varshney, the Department of English held a Conference of English Teachers in which more than one hundred teachers participated. The Conference was jointly sponsored by GKV and BHEL (EMB), Hardwar. Teachers were given an awareness of the latest techniques and methods of teaching English. Besides the local experts, lectures were delivered by teachers from Roorkee, Meerut and Kurukshetra universities. Key-note addresses were delivered by Dr R. L. Varshney of GKV and Dr R. S. Singh, Professor & Head, Department of English, Kurukshetra University. The major thrust was on how to teach English as a Foreign language. The Conference was held on 15th and 16th February, 1987. It was inaugurated by Shri R. C. Sharma, Vice-Chancellor, GKV.

Under the aegis of Philosophy Department and directorship of Dr Jaideva, the Annual Conference of the All India Philosophical Parishad along with the U. P. Philosophical Parishad was held. It was sponsored and financed by U.G.C. This was the second Conference of this nature in the Vishwavidyalaya and brought the V. V. into eminence as a centre of philosophical studies. It was held on 16-18th May, 1987.

Under the auspices of Zoology Department a National Seminar on 'Fish and their Environment' was held from 15-18th December under the directorship of Dr. B. D. Joshi. About 200 scientists from all over India took part in it. They considered and discussed the effect of various pollution on the fish.
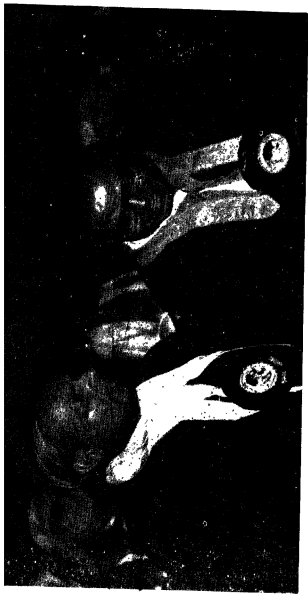
Vice-Chancellor Sri R.C. Sharma in discussion with Sri Vir Bahadur Singh, Chief Minister, U.P.

A two-day Seminar was organized on the Local Indigeneous Plants in the Department of Botany under the convenership of Dr. Purshotam Kaushik.

From 20th to 29th March a Camp to train the Chorus-singers was held in the Vishwavidyalaya on behalf of NCERT in which about 43 trainees participated from various parts of the country. It was organized by Prof. O. P. Mishra and Dr. B. D. Joshi, under the directorship of Sri R. C. Sharma, V. C., and was inaugurated by Shri Virendra, President Arya Pratinidhi Sabha Punjab. The Chief Guest was U. P. Minister Shri Baldevsingh ji Arya. Some famous musicians and singers graced it by their presence.

Restructuring of Courses—Examination Reforms

Courses of various faculties were restructured to make them life and job-oriented in fulfilment of the directives issued by the U. G. C. and in view of the New Educational Policy. New syllabi for three years' degree courses in all the subjects were framed.

Convocation

For the convocation of 1981, Justice Shri H.R. Khanna of the Supreme Court of India came to the Gurukula. Whereas he mentioned the great traditions and contributions of the institution towards national service, he expressed satisfaction at the new turn of events. Thereafter three consecutive Convocations were addressed by the Speaker of Lok Sabha, Hon'ble Shri Balram Jhakar; President of India, Shri Giani Zail Singh, and the famous Arya Sanyasi Dr. Satyaprakash Saraswati, D. Sc respectively and this helped in retrieving the glory of the institution. This year Chief Minister of U.P. delivered the convocation address of the V.V. and expressed his satisfaction with the progress of the institution and praised its ideals and objectives. He also announced a special grant of Rs. 8 lakhs for the Library and Museum. He further announced that the U.P. Govt. would construct a Stadium in Gurukula Kangri Vishwavidylaya.

Department of Vedas

An attempt has been initiated to study the Vedas scientifically. A Vedic Laboratory is in the offing. Some equipment has already been purchased. Prof. Ram Prasad Vedalanakar continued his work of Vedic propagation and expansion through his books and pamphlets. The teachers of the Department visited other places to preach the knowledge of the Vedas.

Department of Sanskrit

The Department celebrated 'Sanskrit Day' on 22nd August under the Chairmanship of Rishi Keshvanand and the presence of Dr. Shyam Sunder Shastri. Dr. Krishna Kumar, former Professor & Head of Sanskrit Department, Garhwal University delivered a lecture on *Dhwani Sampradaya*. Under the auspices of Saraswati Parishada, trilingual speech contests, debates, *Shloka* recitation competition were organized on an all India basis. Dr Virendra Kumar Verma, Professor & Head, Sanskrit Department, B.H.U. and Dr. Ram Nath Vedalankar, former Pro-V C, Gurukula Kangri delivered their lectures on the system of interpreting the Vedas.

The teachers of the Department gave radio talks, delivered their learned lectures outstations and guided research besides the routine teaching work They also participated in other academic exercises and activities in other universities, including seminars and conferences.

The Department of Sanskrit has also started from this session a Certificate Course to improve proficiency in Sanskrit and to popularize this language in the public. Dr Nigam Sharma and Sri Ved Prakash took keen interest in the development of the Dept.

Department of Ancient History & Culture

There are one Professor, two Readers and two Lecturers in the Department. 17 scholars are pursuing research and about 21 have been awarded Ph D. degress in the past few years. Five research papers of Dr. B.C. Sinha, Professor & Head were published

in this session in addition to ten books already published. By now one book and three papers of Dr. Senger and two books of Dr. Shyam Narain Singh have been published Dr. Rakesh Sharma has contributed three papers by now. Dr. Kashmir Singh Rahi helped in the extension work.

In this session Dr. R.C. Agrawal, Director, Archaeological Museum, Government of Rajasthan worked in the V.V. as a Visiting Professor. The Department was blessed with the visits of eminent professors and scholars of the subject, *e.g.*, Dr Upendra Thakur, Dr. V.C. Pandey, and Dr. K.K. Sharma

Archaeological Museum

The Museum has been given a face lift; it has been transformed into a modern centre with the construction of new gallaries and show-pieces and show-cases. There is a feel of environmetal change in and around the Museum About ten thousand visitors visited the Museum this year. Amongst the V.I.P.s who visited it were Shri A. Singh, Justice, High Court Allahabad; Shri Vishnu Prabakar, eminent man of letters; Sri A.N. Shok, Ambassador Kampuchea; Sri J C. Hume, from the High Commission of Cuba; Shri R C. Tripathi, Joint Secretary, Ministry of Human Resources, New Delhi; Shri Ram Autar Dixit, State Minister of Forestry, U.P.; Shri Vir Bahadur Singh, Chief Minister, U.P.; Prof Shersingh, former State Minister for Education, Union of India, etc.

The new Curator, Shri Surya Kant Shrivastava has done commendable work to transform the Museum. Its new Director, Dr J.S. Senger is painstakingly looking after the Museum. Shri Shrivastava attended a Refreshers' Course conducted by the Ministry of Human Resources Development. Three learned papers of Shri S K. Shrivastava and one of Shri B.K. Jairath were published in various journals this year.

Department of Philosophy

Nine scholars are working for their Ph D. degrees. Dr. Jai

Deva, Head, has contributed this year about seven papers and three books published. Teachers of the Department took part in various seminars and conferences and delivered talks on various subjects. Dr Vijai Pal Shastri got published this year four papers and wrote book reviews. Dr. Trilok Chandra contributed a good number of papers and articles in national dailies and gave a talk on All India Radio on 19th October, 1986. He also organized a Yoga Camp in District Solan in Himachal Pradesh He also delivered talks at various places related to Yoga and allied subjects. Dr. U.S. Bist took part in All India Darshan Parishad's Annual Conference in Jodhpur University and contributed a paper "Word and Meaning".

Department of English

Students wrote dissertations and participated in seminars and debates. About ten research scholars are pursuing research leading to Ph D. degree. A three months Certificate Course in Written & Spoken English has been started from January 1987. A Conference of English Teachers was held under the Department in February 1986. Dr R.S. Singh, Professor & Head, Department of English, Kurukshetra University and Dr R L. Varshney, Professor & Head, Department of English, GKV delivered key-note addresses on teaching of English. Shri S. S. Bhagat, Reader, Dr. Naryan Sharma, Reader, and other members of the staff also presented their papers in the conference. The teachers of the department also read their papers in a Seminar on "English, American, and Indo-English Fiction" held at BSM Postgraduate College, Roorkee.

The Department of English also organized lectures on various subjects related to English Literature and Language Teaching, prominently the lectures were delivered by teachers of Roorkee University, BSM College, Roorkee, Dr. R.S Shingh of Kurukshetra University and Prof. N.P. Gupta and Prof. R.P. Gupta of Aligarh.

The teachers of the Department contributed this year a large number of articles and research papers in various journals, magazines and newspapers. Three new books written by Dr.

R. L. Varshney were published; Dr. Narayan Sharma's papers were published; Dr. Shrawan Kumar also got a few papers published and participated in UGC Summer Institute and annual conferences held at Meerut University.

Dr. Ambuj Kumar, lecturer also wrote articles and made efforts to get his thesis published.

A language laboratory was inaugurated in the Dept. of English this session. On the basis of the modern techniques of teaching English, new instruments and apparatus have been purchased. Not only the learners of English will be able to improve their pronunciation and learn English more speedily and effectively, but also the students learning other languages will benefit by this innovation.

Department of Hindi

The Department is editing and bringing out a magazine *Prahalad*. Distinguished scholars of Hindi delivered their talks in the Department, remarkably Dr. Nityanand Sharma, former Head of Hindi Department, Jodhpur University; Dr. Lalta Prasad Saxena, former Head of Hindi Department, Rajasthan University; Dr. Mahendra Kumar, Head of Hindi Department, Delhi University; Dr Madan Gopal of Baroda University and Dr. Kailash Chandra Bhatia, Head of Hindi Department, LB Shastri Administrative Academy.

The inauguration of the Shraddhanand Series of Lectures took place on 4th March 1987 with the lecture of famous Shri Vishnu Prabhakar on *'Bhartiya Nav Jagran ana Swami Shraddhanand'*.

Dr. Vishnu Dutta Rakesh, Head of Hindi Department, wrote and got published several research papers and books, notably he edited *'Vedic Sanskriti aur Darshan ke Vegyanik Bhasyakar Dr. Satyavrat Siddhantalankar'*. He gave radio talks. He also organized an all-India Kavi-Sammelan. He further prepared lessons for Indira Gandhi Open University. The other teachers of the department also wrote papers and articles for the *Prahalad* and *Gurukula Patrika*.

The Dept. of Hindi is going to start very soon a Diploma Course in Hindi Journalism

Department of Psychology

Dr. H. G. Singh was appointed Professor. The Department now has two Professors, one Reader and two Lecturers. About 8 research scholars are working in the Department for their Ph D. degrees.

Prof. O. P. Mishra, Head of Psychology Dept participated in "Asian Conference on Behaviour Taxicology and Clinical Psychology" and presided over in one session on Clinical Psychology. He also represented Gurukula Kangri University in "National Seminar on Physical Fitness and Sports Standards in Universities" held at Sukhadia University, Udaipur. He was also nominated by the Governor of U P. as a subject expert on the Selection Committee of Psychology in U.P. Universities. He was also nominated as one of Editors of the *Journal of Clinical Psychology*. Prof. Mishra is also looking after the National Service Scheme and University Employment and Guidance Bureau.

A UGC Summer Institute in Psychology was conducted under the directorship of Dr H.G. Singh. He also delivered two lectures on the 'Change of Behaviour of Criminals' at Institute of Criminology and Forensic Science, Ministry of Home Affairs; he also gave two talks on All India Radio, Najibabad and edited the ***Vedic Path*** and published two research papers and wrote book reviews. Sri C.S. Trivedi assisted in the organization of Testing Section and gave a talk at Bhagwandass Sanskrit College, Hardwar on 'Indian Psychology'. He further delivered talks at Hardwar Rotary Club. Sri S.C. Dhameja helped in the organization of the Experimental Section of the lab. Dr. S.K. Srivastava was granted a grant of about Rs. 10,000/- to work on a project, 'Leadership Styles and Effectiveness—A Comparative Study of Private, Public and Govt. Organizations' at ICSR, New Delhi. Dr. Srivastava published his six papers this year.

Department of Mathematics

The Department has two Professors, three Readers, and two Lecturers. It has recently started Ph.D. courses too. Two research scholars are working in the department for their Ph.D. Sri Virendra Arora, Reader (now Registrar) got his D. Phil. from Garhwal University this year. Sri H.L. Singh, Professor publish 10 papers. Sri H.L. Gulati published one paper.

Dr. S.N. Mishra, Zambia University, Lusaka worked in the Department as a Visiting Fellow from 16th Feb. to 2nd March, 1987 and delivered talks and guided research projects.

Prof. S L. Singh participated in U.P. Rajkiya Mahavidyalaya Academic Society, Allahabad and read out a paper; he was also elected Vice-President. He also took part in a thirteen-day Winter Institute conducted by the Indian Institute of Science, Bangalore. He further took part in a four-day Symposium organized by the UGC at Maitreyi College on 'Recent Advances in General Topology'. Dr. Singh is co-editor of three Mathematical journals Dr. Singh has also been writing Mathematical Reviews and Abstracts for a German journal.

Department of Physics

Two Readers and two Lecturers are working in the department. The standards of laboratory were upgraded by adding new equipment and material. Books were also purchased with a view to raising the department to the PG level.

Department of Chemistry

The department, besides teaching B.Sc. students, is running a PG Diploma in 'Commercial Methods of Chemical Analysis'. The students were taken to various mills and factories for practical training. Dr R.K. Paliwal worked as an investigator in the Ganga Project. Dr. Rajneesh Kaushik completed his UGC Project on 1-2-87 successfully; he published 4 research papers under this project. Dr. Achhaya Kumar got Rs. 5,000/- from the UGC for a minor

research project. Other teachers of the department also sent their projects to the UGC for approval.

Dr. A.K. Indrayan contributed a paper in a symposium in Jiwaji University; another in Madurai Kamraj University's Indian Council of Chemists' Conference and published one paper in the *Arya Bhatta*. Dr R.D. Kaushik presented his two papers in these seminars and conferences, and published two papers in the *Arya Bhatta*.

Dr. Randhir Singh read his research paper in the International Symposium in Florence (Italy) on Mathematical Chemistry. He also visited a Research Institute in Berlin. His another paper has been accepted to be read in a Conference going to be held in Canada in June, 1987.

The teachers of the department also gave radio talks and contributed to the extension work in the University. Dr Kaushal Kumar obtained his Ph.D. this year.

Department of Zoology

A four-day National Symposium was organized by the department in December '86 on 'Fish and Their Environment' under the directorship of Dr. B.D. Joshi. The chief guest was Sri Sita Ram Nishad, State Minister, U. P Govt. Dr. R L. Verma, Dept. of Bio-Sciences, Himachal University, delivered a talk on 'Behavioural Biology & Social Life in Honey Bee'.

Dr. Dinesh Bhatta of the department presented a research paper at International Symposium on Cronobiology, Hyderabad. He has also been sanctioned a research project by the UGC on 'Chronobiology of Obesity'. The teachers of the department also wrote articles and guided dissertations.

Department of Botany

The department has been running M.Sc. classes in Microbiology and has contributed towards plantation and the study of pollution in the Ganga. The department has at present one Professor

Sri R.C. Tripathi, Jt. Secretary, Ministry of Human Resources, looking into the collection of rare books in GKV Library.

and 2 Lecturers. Dr. Vijay Shanker Saxena, Professor and Head. also acted as Principal Investigator, Ganga Integrated Project, as Chairman of Kangri Village Development Committee, and as the Editor of the *Arya Bhatta*. About 8 papers of Dr. Saxena were published. Dr. Purushotam Kaushik, lecturer organized a two-day National Seminar on 'Conservation & Ethnobotanical Aspects of Indigenous Medicinal Plants' in the V.V. in September '86. His two research projects have been approved by the Govt of India (Ministry of Environment) and UGC, namely 'Study on Environmental Biology of the Himalayan Orchids' of Rs. 4,24,600/-, and the other project intends 'To characterize lectins from leguminous seeds and bulbous plants of the Western Himalayas'.

Department of Computer Sciences

The development of Computer department is going on with the help of UGC grants. The classes will be started from July '87. The department is having a System Engineer and a Programmer. Other posts are to be filled in the near future. The Computer Hall is ready

Adult, Continuing Education & Extension Programme

This department is running about 55 schools for adults in the nearby villages for the removal of illiteracy Dr Anil Kumar, Asst Director attended in Shimla Legal Literacy Workshop. Dr. D D Pandey, Project Officer attended in Benaras a seven-day Workshop on 'Planning and Designing Research Projects in Education'. He also attended two more Workshops in Delhi and Indore and presented a paper in Bangalore Indian Science Congress.

The department has also organized Mass Literacy Programme and Publicity Programme in which films and charts were shown to the villagers. It imparted training to Adult Education Functionaries and organized a plantation programme in Kangri village. It has also been successful in distributing Literacy Kits

worth Rs. 6,000/- to the students of N.S.S. It is also implementing 'Each One-Teach One Programme' through N.S.S students.

Under this programme from 17th Feb. to 23rd Feb , a training camp of instructors was organised to emphasize the 20-Point Programme of the Prime Minister, New Education Policy, Solar Energy and Techniques of Adult Education.

Dr. Anil Kumar and Dr Chopra are smoothly running this programmme

Kanya Gurukula Dehra Dun

Kanya Gurukula is now the second campus of this Vishwavidyalaya It was granted Rs. 5 lakhs separately under VII plan It is a constituent college of GKV It was established in 1923 and imparts education to girls up to graduate level. It is a residential institution and has a well-equipped library, reading rooms, hospital and playgrounds. N. S. S and Adult Education schemes are being successfully run at Kanya Gurukula Mahavidyalaya.

Library

The Library has been accepted by the Ministry of Culture and Human Resources Development as a centre of the preservation of ancient culture of India. Hence it was granted by the Ministry this year a fund of Rs 66,500/- for the protection and preservation of old and rare manuscripts and books. The library spent this year about Rs. 2,50,000/- on the purchase of books, journals, magazines, and newspapers. The U.G C. has granted in the Seventh Five Year Plan a sum of Rs. five lakhs for the extension of the building of the present library. Besides this a sum of Rs. four lakhs has been sanctioned by the UGC for the purchase of books and periodicals in the Seventh Five Year Plan. About two thousand new books were bought in this session and about 300 books were received as gifts. The library has been contributing for about 400 periodicals, including about 50 from abroad. The library has been modernized. It has been running an Employment Programme for the students

on a part time basis to make students self-sufficient and economically independent. It has also been offering Competitive Examinations service and Photostat facility. About 24,000 persons made use of the library in this year, besides the unrecorded casual readers. Presently there are about one lakh books in the library Shri Jagdish Vidyalanakar, Librarian also contributed towards the organization of various conferences and exhibitions in the V.V

Games and Sports

Sri Surendra Singh was appointed Director, Physical Education in August but he resigned of his own in January '87. Thereafter Sports and Games were looked after by Shri Ishwar Bhardwaj and Prof O. P. Mishra. In the month of October, Inter University Tournament in Kabbadi was held. In the month of December Shraddhanand Week was celebrated by holding Hockey and Kabbadi tournaments. In the Kabbadi competition held at Lucknow four students of the Vishwavidyalaya represented Hardwar. One-day Cricket Match was organized between the VV and the Ayurvedic College in which the team of the VV was victorious. The VV team also went to play Inter-University cricket matches at Jammu University. It participated in the Inter-University Hockey Matches at Punjabi University, Patiala. Games such as volley-ball, table-tennis, badminton and football were also practised by the students The VV has been a member of the Inter-University Sports Board and its teams have begun to make a bid for honours in the field of Hockey, Cricket, Football, Volley Ball, etc. However, in view of the small number of students and their physical potential the emphasis is proposed to be laid on Gymnastics, Athletics, Swimming and Yoga. The Gymnasium has already been refurnished to provide an opportunity to the students to improve their physical skills, although so much remains to be done to build a Gymnasium worthy of a University.

Yoga Centre

An International Yoga Centre has been opened, and the fourth batch of trainees completed their course this year. Students

of Yoga participated in various yoga contests and competitions and achieved distinct positions. During the Shraddhanand Week was organized an "Aryaveer Sri Sharir Sausthava Yoga" contest.

20-Point Programme and Rural Development

Under the Kangri Village Development Project our students built kitchen soak pits behind 60 houses in Kangri village. A road of about 200 metres was repaired; 3 drinking water wells were cleaned. The villagers were also given an awareness in family planning and hygiene. Dr Vijay Shanker and Dr. B.D. Joshi are looking after this project.

Tree plantation

The Gurukula should have a lush green campus. To provide to the students a natural environment, tree plantation was done inside the campus Under the Himalaya Ecological Project a Tree Plantation Camp was organised from 1-8-86 to 12-8-86 at Kotdwar. At this camp about 100 students from Indira Priyadarshini Inter College, Motadhak (Kotdwar-Pauri Garhwal) took part. The camp was inaugurated by Union Minister Sri Brahm Dutt ji In this 12-day camp about 21,000 saplings of *Sheesham*, *Khair* and poplar were planted.

The Himalayan Project

The Himalayan Project is constantly endeavouring for the protection of these plants. Under this project, keeping in view the needs of the villagers of *Kanvashram* valley, about one lakh saplings for fruit, fuel and housing were planted in the departmental nursery In the forthcoming monsoon they will be transplanted in the valley. In order to check floods and soil-erosion on the Malini river in the same valley will be built a dam, a spur and cement blocks.

Integrated Study of Ganga Project

Under this project the pollution of Ganga was studied at various places and the degree and quantum of pollution was established at various ghats and bathing places due to baths. immersion of the dead, human excreta, city drains and the like. This work is done under the direction of Dr. Vijay Shanker, Prof. and Head Botany Dept., assisted by Dr. Sangoo, through the grants given by the Ministry of Environment. From Rishikesh to Garhmukteshwar a socio-economic-environmental survey and study of 2500 villages of the allotted area have completed under this project. The project has prepared a list of plants and trees that can help in checking the erosion of soil on the banks of the Ganga. This study will contribute towards national growth and prosperity.

Printed at the Jaina Printers, Jwalapur

ओ३म्

८७ वाँ वार्षिक विवरण

१९८६-८७

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

ओ३म्

८७वाँ

वार्षिक विवरण

१९८६–८७

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रकाशक :

कुलसचिव
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उ०प्र०)

जून, १९८७ : ५०० प्रतियाँ

मुद्रक :
जैना प्रिंटर्स, ज्वालापुर

विश्वविद्यालय के नव-नियुक्त परिद्रष्टा श्री सोमनाथ जी मरवाहा
(वरिष्ठ अधिवक्ता : उच्च न्यायालय)

सम्पादक मण्डल

विषय–सूची

आमुख

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अपने स्थापनाकाल के ८७ वर्ष पूरे कर रहा है। वैदिक साहित्य, संस्कृति, दर्शन, पुराविद्या तथा राष्ट्रसेवा के क्षेत्र मे इस विश्वविद्यालय का अप्रतिम योगदान रहा है। विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज पुनर्जागरण और राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रमुख नेता थे। वही एक ऐसे दीपाधार थे जिन्होंने हिन्दू और मुसलमान राष्ट्रभक्तों को समान रूप से प्रभावित किया तथा भारतीय जीवनमूल्यो पर आधारित शिक्षा की परिकल्पनाकर पराधीन भारत में एक अभूतपूर्व क्रान्ति का बिगुल बजाया। हिन्दी माध्यम से प्राचीन साहित्य और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन-अध्यापन कराने वाली यह प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा सस्था है जिसकी प्रशंसा महात्मा गाँधी, महाकवि रवीन्द्रनाथ तथा महामना मदन-मोहन मालवीय मुक्तकंठ से करते रहे है। विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने के बाद उच्चतम अध्ययन और अनुसन्धान के अलावा गुरुकुल ने ग्रामोद्धार, प्रसारकार्य, सामाजिक पुनरुत्थान तथा शिक्षा को प्रासंगिक बनाए रखने मे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

विश्वविद्यालय की बहुमुखी प्रगति का श्रेय वर्तमान कुलपति प्रो० रामचन्द्र शर्मा, आई. ए. एस. (अ. प्रा.) को है। उन्होंने शिक्षा और प्रशासन को स्फूर्ति और क्रियाशीलता प्रदान की है। भारत मे होने वाले कुलपतियों के सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा विचारमंचों से जुड़े रहने के अतिरिक्त इस बार कामनवैल्थ विश्वविद्यालय कार्यकारिणी के अध्यक्षो के सम्मेलन मे भाग लेने के लिए १८ अगस्त से २३ अगस्त १९८६ तक वह पेनांग (मलेशिया) गए। इन पंक्तियों का लेखक भी २६ जुलाई से कुलसचिवों तथा प्रशासको की होने वाली संगोष्ठी मे भाग लेने के लिए सिडनी (आस्ट्रेलिया) जा रहा है।

कुलपति जी ने इस वर्ष शैक्षिक वातावरण को समुन्नत करने के लिए विजिटिंग प्रोफेसर तथा फैलो के रूप में लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों को आमंत्रित किया। इस क्रम में जे एन. यू. दिल्ली के अरबी विभाग के पूर्व-अध्यक्ष प्रो एस.आर. चौधरी को वेदों के अरबी अनुवाद के लिए, डा. एस.एन. मिश्र, प्रोफेसर गणित विभाग, जाम्बिया विश्वविद्यालय लुसाका तथा डा. आर.सी. अग्रवाल,

पूर्वनिदेशक, पुरातत्त्व विभाग, राजस्थान सरकार को आमंत्रित किया गया। विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों के लिए मगध विश्वविद्यालय के डा० उपेन्द्र ठाकुर, कुरुक्षेत्र के डा. आर. एस. सिंह, इलाहाबाद उच्चन्यायालय के न्यायाधीश श्री चन्द्रप्रकाश, पंजाब विश्वविद्यालय के डा० विमलचन्द्र पाण्डेय तथा मेरठ के प्रो. आर. के. राठी पधारे। इन्होंने इतिहास, अंग्रेजी साहित्य, कम्प्यूटर साइंस तथा विधि पर उपयोगी सूचनाएँ दी।

इस वर्ष से 'श्रद्धानंदस्मृतिप्रसार-व्याख्यानमाला' का शुभारम्भ किया जा रहा है। साहित्य, संस्कृति, समाजदर्शन, पत्रकारिता, लोकतंत्र, कला, धर्म, दर्शन आदि विषयों पर इस व्याख्यानमाला के तहत उपयोगी व्याख्यानों का आयोजन होगा। इस प्रसार-व्याख्यानमाला का उद्‌घाटन ४ मार्च १९८७ को सुप्रसिद्ध इतिहासकार तथा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डा. सत्यकेतु विद्यालंकार की अध्यक्षता में हुआ।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार तथा गाँधीवादी विचारक श्री विष्णु प्रभाकर ने 'भारतीय नवजागरण और स्वामी श्रद्धानन्द' विषय पर व्याख्यान दिया। उनके मुद्रित व्याख्यान की प्रतियाँ वितरित कराई गईं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायताराशि से इस वर्ष अनेक शोध-संगोष्ठियाँ तथा सम्मेलन आयोजित किए गए। २५ जून को योग-मनोविज्ञान का ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित किया गया जो ६ जुलाई '८६ तक चला। इसका उद्‌घाटन डा सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने तथा सभापतित्व कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व मनोविज्ञान प्रोफेसर डा. ए. के. सिन्हा ने किया। अंग्रेजी विभाग ने १०० से अधिक अंग्रेजी शिक्षकों के भाषा-परिष्कार के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन किया। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डा. आर. एस. सिंह मुख्य विद्वान् के रूप में उपस्थित रहे। इसका उद्‌घाटन १५ फरवरी '८७ को कुलपति प्रो रामचन्द्र शर्मा ने किया। अखिल भारतीय दर्शन परिषद् तथा विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में दर्शन की राष्ट्रीयस्तर की संगोष्ठी १६ से १८ मई १९८७ तक विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुई। इसमें भारतभर के दार्शनिक उपस्थित हुए। इसका उद्‌घाटन परिद्रष्टा श्री सोमनाथ मरवाह ने किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के दर्शन विभागाध्यक्ष डा. सिद्धेश्वर भट्ट, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दर्शनवेत्ता डा. जगदीश सहाय इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे।

हिमालय पर्यावरण योजना के तहत १ अगस्त '८६ से १२ अगस्त तक वृक्षारोपण शिविर का आयोजन कोटद्वार में किया गया। इसमें गुरुकुल कांगड़ी

मोटाढाक-कोटद्वार के १०० छात्रों ने भाग लिया। इस शिविर का उद्घाटन केन्द्रीय मंत्री श्री ब्रह्मदत्त ने किया। कण्वाश्रम घाटी के ग्रामीणों की आवश्यकता के अनुसार फलदार, ईधन, चारा तथा इमारती लकड़ी वाले वृक्षों की विभिन्न प्रजातियों की एक लाख पौध तैयार की गईं। जन्तुविज्ञान विभाग के तत्वावधान मे १५ दिसम्बर से १८ दिसम्बर तक 'मत्स्य एवं पर्यावरण' पर एक राष्ट्रीय सगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमे देशभर से २०० वैज्ञानिक सम्मिलित हुए। इसका उद्घाटन मत्स्य तथा सार्वजनिक निर्माण मंत्री, उत्तर प्रदेश श्री सीताराम निषाद ने किया। हिमालय आर्किड्ज की पार्यवर्णिक जीवविज्ञान योजना के तहत दो दिन का सेमिनार भी आयोजित किया गया। २० से २६ मार्च तक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् दिल्ली की ओर से यहाँ समूहगान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इसमे उत्तर प्रदेश के ४३ प्रशिक्षार्थियो ने भाग लिया। इस शिविर का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र ने किया। उत्तर प्रदेश के मत्री श्री बलदेवसिह आर्य तथा देशप्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री विनय मुद्गल और डा. देशपाण्डे विशेषरूप से उपस्थित रहे।

८ मार्च '८७ को संग्रहालय के प्रस्तरप्रतिमाकक्ष का उद्घाटन संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी ने किया।

गंगा समन्वित योजना के तहत २५०० ग्रामों का सामाजिक-आर्थिक एवं पर्यावरण सम्बन्धी सर्वेक्षण तथा अध्ययन किया गया। कांगड़ी ग्राम के विकास की दिशा मे भी काम हुआ। पूर्व-कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा ने कांगडी ग्राम का अवलोकन किया। श्री वीरेन्द्र तथा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती विश्वविद्यालय मे पधारे और उन्होने अध्यापकों तथा ब्रह्मचारियों का मार्गदर्शन किया।

गुरुकुल पत्रिका, प्रह्लाद, आर्यभट्ट तथा वैदिकपथ नियमित रूप से प्रकाशित हुए। विद्यार्थियों ने संस्कृत दिवस, युवा दिवस, श्रद्धानन्द सप्ताह, वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा खेल-कूद के कार्यक्रमो में सोत्साह भाग लिया। ब्र० दूधपुरी को विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में सस्कृतभाषण के लिए स्वर्णपदक प्राप्त हुआ। श्री राजेन्द्र विद्यालंकार, हरिशंकर, जितेन्द्र, दिनेशचन्द्र, देव शर्मा आदि ने अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया। श्री हरेन्द्रनाथ (एम. ए. अंग्रेजी का छात्र) योग डिप्लोमा पाठ्यक्रम में सर्वप्रथम आया तथा जिलास्तरीय योग सामुख्य में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। योगकेन्द्र, संस्कृत तथा अंग्रेजी शिक्षण प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम भी सफलतापूर्वक चले।

अध्यापकों में डा० रणधीरसिंह रसायन विभाग बेनिस और बर्लिन गए तथा वहाँ उन्होंने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिए। प्रो. एस. एल. सिंह को उत्तरप्रदेश राजकीय विद्यालय गणित संघ का उपाध्यक्ष बनाया गया। प्रो ओम्प्रकाश मिश्र उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालयों के मनोविज्ञान अध्यापकों के चयन के लिए विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत किए गए। डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव तथा डा. कौशल कुमार को गढ़वाल विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की उपाधि मिली। डा. विष्णुदत्त राकेश, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय में पाठ-निर्माता के रूप में मनोनीत किए गए। प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार, डा. जयदेव, डा. हरगोपाल सिंह, डा. आर.एल. वार्ष्णेय, डा. निगम शर्मा, प्रो. एस. एल. सिंह, डा. भारतभूषण, डा. रजनीशदत्त कौशिक, डा. पुरुषोत्तम कौशिक आदि ने बाहर संगोष्ठियों में भाग लिया।

इस वर्ष दीक्षान्त के लिए माननीय कुलपति जी के आग्रह पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री वीरबहादुर सिंह जी पधारे। उनके साथ वरिष्ठ विधायक श्री शिवनाथ जी कुशवाहा तथा पर्वतीय विकास राज्यमंत्री श्री राम अवतार जी दीक्षित उपस्थित थे। माननीय मुख्यमंत्री जी ने पुस्तकालय भवन के विस्तार के लिए आठ लाख रुपये तथा संग्रहालय के लिए एक लाख रुपये की सहायताराशि प्रदान की। विश्वविद्यालय में एक विशाल स्टेडियम बनवाने की घोषणा मुख्यमंत्री जी पहले ही कर चुके थे।

प्रौढ़ शिक्षा तथा बीससूत्री कार्यक्रमों की सफलता के लिए भी उद्योग किया गया। १७ फरवरी से २२ फरवरी तक एक प्रशिक्षण शिविर भी प्रौढ शिक्षा विभाग ने लगाया। बीससूत्री कार्यक्रम, नवोदय शिक्षानीति, सौर ऊर्जा तथा साक्षरता पर प्रशिक्षण दिया गया। वेद, संस्कृत तथा दर्शन के अध्यापकों ने आर्यसमाज के अधिवेशनों में जाकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का कार्य किया।

इस वर्ष पण्डित सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार का कार्यकाल समाप्त हुआ तथा शिष्टपरिषद् ने सर्वसम्मति से सुप्रसिद्ध आर्य नेता, उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता तथा सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह को विश्वविद्यालय का परिद्रष्टा नियुक्त किया। विश्वविद्यालय के कर्मचारियों, अध्यापकों तथा ब्रह्मचारियों ने कुलपति जी की अध्यक्षता में १६ मई को उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया। श्री मरवाह जी के निरीक्षण में विश्वविद्यालय का सर्वतोमुखी विकास होगा, हमें इसका पूर्ण विश्वास है।

अन्त मे, मैं भारत सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली, हरियाणा एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों तथा स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियो का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारू रूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति की ओर बढते रहे हैं।

—वीरेन्द्र अरोड़ा
कुलसचिव

गुरुकुल कांगड़ी—संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवी शताब्दी की उषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी आरम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नई स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलों से एक नये पौधे का रोपण किया। यही नन्हा-सा पौधा आज ८६ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुनः धरती मे सँजो लिया और फिर उन्ही शाखाओ से नई टहनियाँ फूट आई। यह पौधा गुरुकुल कांगड़ी, जिसकी स्थापना गगा के पूर्वी तट पर, हरिद्वार के निकट कागड़ी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धि एवं उपयोगिता से भारतवर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१९वी शताब्दी मे लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा-पद्धति चलाई जो उनके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहाँ इंगलैंड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहाँ भारत मे विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयो मे नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षास्थलों पर पाठशालाये चल रही थी। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत-साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया जिसमे दोनों शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलाञ्जलि दी जा सके। अतः गुरुकुल की प्रारम्भिक योजना मे सस्कृत-साहित्य और वेदाग की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्सन्देह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र मे आई इस मानसिक क्रान्ति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के शिक्षासम्बन्धी विचार थे जिन्हें वे मूर्त्तरूप प्रदान करना चाहते थे। इनमे ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धो पर बल था।

कुछ वर्षों बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय तक आधुनिक विज्ञान को पुस्तकें हिन्दी में बिल्कुल नही थी। गुरुकुल के उपाध्यायों ने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो० महेशचरण सिह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो० रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन शास्त्री की भौतिकी और रसायन, प्रो० सिन्हा का वनस्पति शास्त्र, प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान, आदि हिन्दी मे अपने-अपने विषय के ग्रन्थ हैं। प्रो० रामदेव ने मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध 'भारतवर्ष का इतिहास' प्रकाशित किया।

१९१२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारो हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनों स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नही, अनेक विदेशियो को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुको में सी०एफ०ए० एन्ड्रूज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत सिडनी बेव और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मैकडानेल्ड, आदि उल्लेखनीय हैं।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नही हुआ जब तक संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आँखों से देखने नही आए। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल में चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९०७ के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष, और दक्षिण अफ्रीका मे महात्मा गांधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह संग्राम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन मे कमी करके दान दिया। इसी भावना को देखकर महात्मा गांधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है जिसमे महात्मा गांधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गए।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप मुलतान, कुरुक्षेत्र, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानों पर गुरुकुल खोले गए।

बाद में झज्जर, देहरादून, भटिंडा, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गए। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा-सम्बन्धी आदर्श को स्वीकार करके गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरु किए।

१४ वर्ष तक, अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग मे ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१९२१ में गुरुकुल, विश्वविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे :

१ वेद महाविद्यालय
२ साधारण (कला) महाविद्यालय
३ आयुर्वेद महाविद्यालय
४ कृषि महाविद्यालय

बाद मे एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमें जोड़ दिया गया।

गुरुकुल के इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएँ इस प्रकार रही :

(१) **बाढ़**—१९२४ में गंगा मे भीषण बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गईं। अत: निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाए जहाँ इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। इसके लिए हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर, ज्वालापुर के समीप गंग नहर के किनारे, हरिद्वार बाईपास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

१९२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक आगन्तुक विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गांधी, पं० मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ जमुना लाल बजाज, डा० मुंजे साधुवर, वासवानी आदि उल्लेखनीय है। जयन्ती महोत्सव तो बडी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता रहा। १९२१ से पं० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता

नियुक्त हुए पर १९२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गए।

पं० विश्वम्भरनाथ जी के बाद १९२७ मे आचार्य रामदेव जी, जो १९०५ में गुरुकुल आए थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्नों से लाखो रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारते बननी शुरु हुई। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक पं० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १९३५ में सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और प० अभयदेव जी शर्मा विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १९४२ मे स्वास्थ्य खराब होने के कारण पं० सत्यव्रत जो ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर प० इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १९४३ मे चले गए। उनके स्थान पर पं० प्रियव्रत जो आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १९५० में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालों मे श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेदसिह जी शाहपुराधोश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुरदास जी, महाशय कृष्ण जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, प० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, कुँवर चाँदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय हैं। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपए का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १९५३ मे पं० धर्मपाल विद्यालंकार सहायक मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं० जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे और उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस जयन्ती पर 'गुरुकुल कांगड़ी के ६० वर्ष' नामक एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। २० वर्ष से भी अधिक समय तक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्हीं के समय १९६२ मे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। ८ विषयों में एम० ए० कक्षाएँ विधिवत् शुरू हुई। अब चार विषयों में पी-एच० डी० (शोध-

व्यवस्था) भी है। इन्हीं के समय १९६६ में डा० गंगाराम जो प्रथम पूर्णकालीन कुलसचिव, जो अंग्रेजी विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी, जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६६ मे गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों मे संशोधन हुआ। इनके बाद श्री रघुवीरसिंह शास्त्री तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति बने।

गुरुकुल को स्थापित हुए ८६ वर्ष हो गये हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान किया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायो ने भी लेखन के क्षेत्र मे एवं शोधकार्य मे आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकाओं के माध्यम से हम शैक्षिक एव सास्कृतिक क्षेत्र मे काफी योगदान कर रहे हैं। जनहित क्षेत्र मे भी हमने अपने मातृग्राम कांगडी को अंगीकृत किया है, जिसमे गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिए पूर्वकुलपति श्री हूजा जी ने ५००/- रुपये का दान भी संघड विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एवं ग्राम जगजीतपुर को भी अंगीकृत किया है और स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक चेतना, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही है :

विद्यालय– प्रथम कक्षा से १०वीं कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाण-पत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय—प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक। उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद और सस्कृत में एम० ए० और पी-एच०डी० की उपाधियाँ प्रदान करने की व्यवस्था है।

साधारण महाविद्यालय—इसमें प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालंकार की स्नातक उपाधि दी जाती है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी,

गणित और अंग्रेजी में एम० ए० तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी-एच०डी० उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी, मनोविज्ञान तथा अंग्रेजी विषयों मे प्राप्त की जा सकती है।

विज्ञान महाविद्यालय—इसमे प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी० एस-सी० की उपाधि प्रदान की जाती है। सम्प्रति भौतिकी, रसायन, वनस्पति शास्त्र, जन्तु विज्ञान, माइक्रोबायोलॉजी और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है। स्नातकोत्तर कक्षाएँ केवल गणित एवं माइक्रोबायलोजी मे चल रही हैं। इसके अतिरिक्त रसायन विज्ञान विभाग द्वारा रासायनिक विश्लेषण पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाया जा रहा है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून—यू०जी०सी० द्वारा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून को विश्वविद्यालय का एक अंगभूत महाविद्यालय स्वीकृत कर लिया गया है। अब इसका निकटभविष्य मे तेजी से विस्तार होने की सम्भावना है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी—यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बडी फार्मेसी है। बिक्री लगभग एक करोड रुपये है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों तथा जनकल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय जो गुरुकुल के भवन हैं उनका अनुमानतः मूल्य डेढ करोड रुपये से कही ऊपर है। इन भवनों मे वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, सग्रहालय. टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियो के आवास-गृह सम्मलित है। इसके अतिरिक्त जो भूमि है उसका भी अनुमानत. मूल्य १ करोड रुपये से कम नही है।

(४) सम्प्रति श्री सोमनाथ मरवाहा गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के विजिटर हैं और डा० सत्यकेतु विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हैं। श्री आर०सी० शर्मा, आई० ए० एस० (अवकाशप्राप्त) इसके कुलपति हैं।

कुलपति श्री आर०सी० शर्मा के नेतृत्व मे विश्वविद्यालय अपनी नानाविध योजनाओं से निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

विश्वविद्यालय द्वारा योग का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र भी गत तीन वर्षों से चल रहा है। इसके अतिरिक्त क्रीड़ा विभाग द्वारा छात्रों को विभिन्न अन्तर्विश्व-

विद्यालयीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त वेद, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय के निर्धन छात्रों को आंशिक रोजगार देने का कार्यक्रम भी पुस्तकालय के माध्यम से गत तीन वर्षों से चल रहा है। इस वर्ष अंग्रेजी भाषा में सर्टीफिकेट कोर्स प्रारम्भ किया गया है जिसमें आधुनिक तकनीक से अंग्रेजी बोलना सिखाया जाता है।

भारत सरकार के पर्यावरण विभाग द्वारा विश्वविद्यालय को दो प्रोजेक्ट भी स्वीकृत है। गंगा समन्वित योजना एवं हिमालय पर्यावरण योजना, जिसके अन्तर्गत पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया जा रहा है। साथ ही शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रदत्त प्रौढ़-शिक्षा का कार्यक्रम भी निष्ठा एवं सफलता के साथ चल रहा है।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उपकुलपति

दीक्षान्त-समारोह पर
कुलपति का प्रतिवेदन

अर्चनीय संन्यासीवृन्द, मान्यवर परिद्रष्टा जी, श्रद्धेय कुलाधिपति जी, आदरणीय मुख्यमंत्री जी, माताओं, सज्जनों तथा ब्रह्मचारियों !

अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की इस पुण्यभूमि मे आपका स्वागत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, पण्डित मोतीलाल नेहरू तथा महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय के साथ कँधे से कँधा मिलाकर भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन मे कूद पड़ने वाले स्वामी जी राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रणेता थे, भारतीय जीवनमूल्यो पर आधारित राष्ट्रीय शिक्षाप्रणाली के पुनरुद्धारक थे, ह्रासोन्मुख हिन्दू-समाज के काया-कल्पक थे और राष्ट्रभक्त युवकों तथा युवतियो के सर्वांगीण विकास के लिए प्राचीन तथा नवीन ज्ञान-विज्ञान के समन्वय के सूत्रधार थे। उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल एक आन्दोलन था, ऐसा आन्दोलन जिसकी प्रेरणा से महाकवि रवीन्द्र नाथ ने शान्तिनिकेतन तथा मालवीय जी ने हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। आज उसी विद्यालय के परिसर में नवदीक्षित स्नातको को आशीर्वाद देने के लिए आप महानुभाव एकत्र हुए है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि नवस्नातक इस पुण्यभूमि की परम्पराओं की सदैव रक्षा करेगे तथा स्वामी जी के बताए सिद्धान्तों पर चलकर सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण और सुख-शान्ति के सपनो को साकार करते रहेगे।

प्रिय बन्धुओं,

इस वर्ष दीक्षान्त-भाषण के लिए हमारे मध्य उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री माननीय श्री वीरबहादुर सिंह जी उपस्थित हैं। प्रदेश की नई शक्ति के रूप में उन्होने सरकार का दायित्व सँभाला। गोरखपुर के एक साधारण ग्राम में जन्म लेकर भी अपने व्यक्तित्व और क्रियाशीलता से वह राष्ट्रीयस्तर के नेता बने। संघर्ष, निष्ठा, दूरदृष्टि, प्रशासनिकक्षमता और लोकहृदय से सम्पन्न होने के कारण नेतृत्व के सहज गुणो से मण्डित आपका व्यक्तित्व हमारे स्नातको को सार्वजनिक जीवन मे उतर कर सफलता प्राप्त करने मे प्रेरणा देगा। क्षेत्रीय-

बाये से—श्री पी० एन० चतुर्वेदी, (सदस्य, शिष्ट परिषद्), श्री वीरेन्द्र अरोड़ा (कुलसचिव), श्री आर० सी० शर्मा (कुलपति) एवं

श्री सोमनाथ मरवाहा (परिद्रष्टा), श्री बलभद्रकुमार हूजा (पूर्व-कुलपति) एवं अन्य शिष्ट-परिषद के सदस्यगण दीक्षान्त-समारोह के अवसर पर ।

तथा राष्ट्रीय स्तर पर प्रशासनिक संरचना का सर्वेक्षण कर उसे वर्तमान सामाजिक-आर्थिक विकास के अनुरूप ढालने में जो सूझबूझ आपने दिखाई तथा समाज के कमज़ोर और पिछड़े वर्ग के लोगों का जीवनस्तर सुधारने में जिन योजनाओं को आपने तत्परता से क्रियान्वित कराया, उससे प्रदेश को नई शक्ति मिली है। १६७० ई० से आज तक आप सार्वजनिक निर्माण विभाग, राजस्व, सिचाई, आबकारी, परिवहन तथा उद्योग जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालयों का सफलतापूर्वक सचालन करते रहे और सम्प्रति मुख्यमंत्री के रूप में अपने दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह कर रहे हैं। यह हमारे अन्तेवासियों का सौभाग्य है कि देश-विदेश के अनुभवों से सम्पन्न, राजनीतिक और सांस्कृतिक सूझबूझ से ओतप्रोत तथा विकास योजनाओं में कार्यरत एक विचारशील मनीषी के द्वारा उन्हें सम्बोधन प्राप्त करने का अवसर मिल रहा है। मैं मुख्यमंत्री जी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि वह अत्यन्त व्यस्तता के रहते हुए भी हमारे बीच आए। विश्वविद्यालय मे उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विशाल स्पोर्टस स्टेडियम बनवाने की घोषणा उन्होने पिछले दिनों हमारे अनुरोध पर सार्वजनिक रूप से हरिद्वार की चुनावसभा मे की थी। इस अवसर पर इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए मै आप सबकी ओर से मुख्यमत्री जी को धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि इस घोषणा की पूर्ति यथाशीघ्र होगी। मुझे विश्वास है कि इस राष्ट्रीय महत्व के विश्वविद्यालय को आपका स्नेह-सहयोग बराबर मिलता रहेगा।

विश्वविद्यालय की वार्षिक प्रगति और विकास के अवलोकन का यह उचित अवसर है। गत वर्षों मे जहाँ विश्वविद्यालय को विभिन्न विषयो मे आचार्य पद प्राप्त हुए वहाँ समन्वित गंगा योजना, हिमालय पर्यावरण योजना, प्रौढ़ शिक्षा प्रसार कार्यक्रम तथा रोजगार ब्यूरो की स्थापना भी हुई। कांगड़ी ग्राम विकास योजना तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के कारण जहाँ ग्रामोत्थान के संकल्प को मूर्त्तरूप दिया गया वहाँ व्यवसायोन्मुख शिक्षा के व्यवहारिकपक्ष का ज्ञान भी स्नातकों को हुआ और इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सीमित साधनो के होते हुए भी हमारे विद्यार्थी राष्ट्र की रचनात्मक धारा से बराबर जुड़े रहे और पोथीज्ञान के अलावा उन्हे समाज और देश की बुनियादी जरूरतो का परिचय भी मिलता रहा।

योग-मनोविज्ञान द्वारा मानवव्यवहार को उन्नत कर उसमें देवोपम गुणों का विकास कराया जा सकता है। इस धारणा से प्रभावित होकर अनुदान आयोग की सहायता से भारतीय मनोविज्ञान पर ग्रीष्मकालीन संस्थान का आयोजन प्रोफेसर हरगोपाल सिह के निदेशन मे २५ जून से ६ जुलाई १६८६ तक किया गया। इसमे भारत के विश्वविद्यालयों से आए प्राध्यापकों ने प्रशिक्षण

लिया। इस संस्थान में वैदिकमनोविज्ञान, मनोचिकित्सा, योगमनोविज्ञान, व्यक्तित्व के प्रकार एवं संवर्द्धन, स्वरविज्ञान, मानवव्यवहार, आयुर्वेदीय मानस-रोग एवं भारतीय तथा पाश्चात्य मनोविज्ञान की तुलना जैसे विषय पर अधिकारीविद्वानों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। इस शिविर का उद्‌घाटन पूर्वपरिद्रष्टा डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार तथा समापन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान के पूर्व-आचार्य डा० ए० के० सिन्हा ने किया।

हिमालय पर्यावरण योजना के तहत १ अगस्त १९८९ से १२ अगस्त तक वृक्षारोपण शिविर का आयोजन कोटद्वार मे किया गया। इस शिविर मे इन्दिरा प्रियदर्शिनी इण्टर कालेज मोटाढाक, कोटद्वार जिला-पौडी गढवाल के १०० छात्रों ने भाग लिया। इस शिविर का उद्‌घाटन भारत सरकार के मन्त्री माननीय श्री ब्रह्मदत्त जी द्वारा पौध लगाकर किया गया। भारतीय जाति के उद्‌भव और विकास का साक्षी हिमालय और उसका पर्यावरण यदि सुरक्षित न रहा तो निश्चय ही गंगा-यमुना आदि पवित्र नदियों, वनस्पतियो, खनिज पदार्थों तथा मानव-संसाधनों का यह अक्षय स्रोत नष्ट हो जाएगा। इस बारह-दिवसीय शिविर मे लगभग २१ हजार पौधों को लगाया गया। शीशम, कन्जु, खैर और पापुलर की ये पौधे स्थानीय वन विभाग, सिचाई विभाग तथा हिमालय पर्यावरण योजना की अपनी नर्सरी से लेकर लगाई गई। हम इनके संरक्षण के लिए भी बराबर यत्न कर रहे हैं। इसी योजना के अन्तर्गत कण्वा-श्रम घाटी के ग्रामीणों की आवश्यकता एवं रुचि के अनुसार फलदार, ईधन, चारा एवं इमारती लकड़ी वाले वृक्षों को विभिन्न प्रजातियो की लगभग एक लाख पौध तैयार की गई। आगामी मानसून में राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के विद्यार्थियों द्वारा इन पौधो का रोपण कराया जाएगा तथा मालिनी नदी के तट पर बाढ नियन्त्रण तथा भूमि संरक्षण के लिए कण्वाश्रम-कलाल घाटी के क्षेत्र में बन्ध, स्पर तथा सीमेन्ट ब्लॉक्स का निर्माण किया जाएगा। विश्वविद्यालय के जन्तुविज्ञान विभाग में एक आधुनिक उपकरणो-संयंत्रों से युक्त प्रयोगशाला स्थापित की जा रही है और इसके लिए आवश्यक यंत्र खरीद लिए गए हैं।

जन्तुविज्ञान विभाग के तत्वावधान मे १५ दिसम्बर से १८ दिसम्बर तक 'मत्स्य एवं पर्यावरण' पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी विश्व-विद्यालय में हुआ। इस संगोष्ठी में देश भर से आए २२० वैज्ञानिकों ने भाग लिया तथा ९२ वैज्ञानिकों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। वैज्ञानिकों ने जल-प्रदूषण एवं अन्य कारणों से मत्स्य जाति की रक्षा के उपायों पर विचार किया। इसका उद्‌घाटन उत्तर प्रदेश के मंत्री श्री सीताराम निषाद तथा समापन कुला-धिपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने किया। योजना के निदेशक डा० बी०डी०

जोशी इसके लिए बधाई के पात्र हैं। गंगा समन्वित योजना का कार्य भी विश्वविद्यालय मे सुचारु रूप से डा० विजयशंकर के नेतृत्व में चल रहा है। इस वर्ष धार्मिक पर्वों पर रात-दिन जलनमूने एकत्र करके, सामूहिक स्नान करने से गंगाजल की गुणता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर लिया गया है। यह रिपोर्ट अलग से प्रकाशित कराई जा रही है। औद्योगिक एवं घरेलू उत्प्रवाहों पर विभिन्न पौधो की अलग-अलग जातियों को उगाकर यह अध्ययन किया जा रहा है कि किस पौधे की कौन-सी जाति प्रदूषण कम करने में अधिक सहायक है।

कांगड़ी ग्राम विकास योजना के अन्तर्गत कांगड़ी एवं निकटवर्ती ग्रामो को बाढ से बचाने के लिए जिलास्तर पर कार्यवाही की गई है। जिलाधिकारी बिजनौर का पूर्ण सहयोग इस कार्य के लिए मिल रहा है। हमारे विद्यार्थियों ने इस वर्ष गाँव के ६० घरो के पीछे किचन सोकपिट बनाए। गाँव को मुख्य सड़क से जोडने वाली २०० मीटर खड़ञ्जे की सड़क को मिट्टी से पाटकर मरम्मत का कार्य किया। तीन पेयजल के कुँओं की सफाई, निकास-नालियों का निर्माण, परिवार नियोजन की शिक्षा तथा ग्रामवासियो को स्वास्थ्यशिक्षा की जानकारी दी गई। डा० विजयशंकर तथा सेवायोजना के समन्वयक श्री ओम्प्रकाश मिश्र के संचालन मे इस ग्राम का उत्थान हो रहा है।

रसायन विभाग में १९८५-८६ सत्र से एकवर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा 'कार्मशियल मेथड्स ऑव कैमिकल एनेलेसिस' मे शुरु किया गया है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को जल, मिट्टी, तेल, वसा, साबुन, सीमेंट, गारा, लवण, अयस्क, ड्रग्स तथा उर्वरक आदि के विश्लेषण का अभ्यास कराया जाता है तथा आधुनिक इलेक्ट्रोनिक उपकरणो पर कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। रोजगारोन्मुख शिक्षा के क्षेत्र में यह हमारा एक कदम है और हमे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि इस डिप्लोमा में अब तक उत्तीर्ण विद्यार्थी सरकारी तथा गैरसरकारी संस्थानों मे नौकरी प्राप्त कर चुके है। डा० रामकुमार पालीवाल तथा डा० रजनीशदत्त कौशिक इस कार्य को सफलतापूर्वक कर रहे हैं। डा० रणधीरसिंह अगस्त '८६ में फ्लोरेंस-इटली में शोधपत्र प्रस्तुत करने गए। गणित तथा भौतिकशास्त्र विभाग भी अपना कार्य भली-भाँति कर रहे हैं। विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सुरेशचन्द्र त्यागी इन सभी कार्यक्रमों में विशेष रुचि लेते हैं।

प्रौढ़ शिक्षा तथा सतत प्रसार कार्यक्रम के तहत १७ फरवरी से २३ फरवरी तक प्रशिक्षकों का एक प्रशिक्षण-शिविर लगाया गया। प्रधानमन्त्री जी के बीससूत्रीय कार्यक्रम, नवोदय पाठशालाओं, नई शिक्षा नीति, सौर ऊर्जा तथा

शिक्षण की पद्धतियों और उपायों पर प्रकाश डाला गया। लखनऊ के साक्षरता विभाग से ३०० किट्स उपलब्ध हुईं तथा साक्षरता का विशालस्तर पर अभियान शुरु किया गया। डा० अनिलकुमार तथा डा० चोपड़ा इस योजना को सुचारु रूप से चला रहे हैं। इस कार्यक्रम को देखकर अनुदान आयोग ने दृश्य-श्रव्य साधनों के जुटाने हेतु विशेष अनुदान दिया था।

पिछले दिनों भारत सरकार ने हिमालय-आर्किड्ज की पार्यवर्णिक जीव-विज्ञान पर तथा अनुदान आयोग ने पश्चिमी हिमालय के दाल-बीजों तथा लैक्नीन्ज़ पर बृहत् शोध-योजना भी विश्वविद्यालय के लिए स्वीकृत की है। यह कार्य डा० पुरुषोत्तम कौशिक के निरीक्षण में सम्पन्न होगा।

इस विश्वविद्यालय की बहुमुखी योजनाओं के विकास के लिए सप्तम पंचवर्षीय योजना मे अनुदान आयोग ने पचास लाख रुपये की राशि स्वीकृत की है। कन्या गुरुकुल देहरादून जो इस विश्वविद्यालय का दूसरा कैम्पस है, के लिए पाँच लाख रुपये अलग से दिए है। वेद सग्रहालय जिसमे यज्ञ के प्रकार, यज्ञपात्र, यज्ञवेदियाँ तथा समिधा आदि के वैदिक रूपों का संकलन होगा, साइको आयुर्वेदिक चिकित्सा तथा हिन्दी पत्रकारिता के डिप्लोमा के लिए विस्तृत योजनाएँ आयोग ने विचारार्थ माँगी है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज हिन्दी पत्रकारिता के पितामह थे। उनके सद्धर्म प्रचारक ने पराधीन भारत मे जनजागरण का कार्य किया था। उनके शिष्यों ने, इस विश्वविद्यालय के स्नातकों ने इस दिशा में ऐतिहासिक महत्व का कार्य किया है। हमने उस सारी सामग्री के संकलन-सम्पादन की योजना बनाई है ताकि हम सद्धर्मप्रचारक की शताब्दी मनाएँ और उस अवसर पर वह सामग्री प्रकाशित हो। आज़ादी की लड़ाई का इतिहास तब तक अधूरा है जब तक इस सारी सामग्री का आकलन नही हो जाता।

अनुदान आयोग के अधिकारियों, विशेषकर इसके विद्वान् अध्यक्ष प्रो० यशपाल तथा उपाध्यक्ष डा० सच्चिदानन्द मूर्ति का मै विशेषरूप से आभारी हूँ जिन्होंने हमारी योजनाओं पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया।

२२ अगस्त को संस्कृत विभाग ने संस्कृत-दिवस का आयोजन किया। निर्धन निकेतन हरिद्वार के अध्यक्ष श्री ऋषि केशवानन्द जी की अध्यक्षता में नगर की संस्कृत पाठशालाओं के विद्वानों तथा गुरुकुल के आचार्यों और ब्रह्मचारियों ने संस्कृत भाषा और साहित्य के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। डा० निगम शर्मा तथा श्री वेदप्रकाश शास्त्री इसके संयोजक थे। वेद विभाग के

विद्वानों ने वैदिक धर्म और साहित्य पर बाहर जाकर अनेक व्याख्यान दिए। प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार की अनेक छोटी-बड़ी पुस्तकें प्रकाशित हुई। जन-सामान्य को वैदिक सिद्धान्तों से परिचित कराने मे इन पुस्तिकाओ की बड़ी उपयोगिता है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान-दिवस पर अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। बैडमिन्टन टूर्नामेंट मे भी ब्रह्मचारियों ने सोत्साह भाग लिया। इस शृंखला में नई पीढ़ी के उद्बोधन और मार्गदर्शन के लिए स्वामी जी की स्मृति में एक राष्ट्रीयस्तर की व्याख्यानमाला का शुभारम्भ किया गया। इसमें भारतीय साहित्य, संस्कृति, पुरातत्व, दर्शन, विज्ञान, समाजसेवा तथा स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास पर विश्रुत विद्वानो के व्याख्यान कराए जायेंगे। ४ मार्च १९८७ को इस 'प्रसार व्याख्यानमाला' का उद्घाटन-भाषण हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार तथा गांधीवादी विचारक श्री विष्णु प्रभाकर ने दिया। 'भारतीय नवजागरण और स्वामी श्रद्धानन्द' शीर्षक सुरुचिपूर्ण रूप में छपा उनका व्याख्यान वितरित कराया गया। इस समारोह को अध्यक्षता कुला-धिपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने की। इस भव्य आयोजन की सफलता के लिए मै हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० विष्णुदत्त राकेश को साधुवाद देता हूँ।

२० से २६ मार्च तक एन० सी० ई० आर० टी० (राष्ट्रीय शैक्षिक अनु-संधान और प्रशिक्षण परिषद्) दिल्ली की ओर से यहाँ समूहगान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। उत्तर प्रदेश के ४३ प्रशिक्षार्थियो ने इसमें भाग लिया। इस शिविर का उद्घाटन पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने किया। उत्तर प्रदेश के मंत्री श्री बलदेवसिंह जी आर्य मुख्य अतिथि के रूप मे सम्मिलित हुए। देशप्रसिद्ध संगीतशास्त्री श्री विनय मुद्गल, श्री कनु घोष, डा० देशपाण्डे तथा लक्ष्मीकेशव जैसे प्रशिक्षकों से शिविर में जान आ गई। डा० जोशी तथा प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र ने इसे सफल बनाने मे पूर्ण सहयोग दिया।

गुरुकुल का एक प्रमुख दर्शनीय खण्ड गुरुकुल का पुरातत्व संग्रहालय है। इसमें अभिलेखशास्त्र तथा मुद्राशास्त्र की दुर्लभ एवं रोचक सामग्री प्रदर्शित है। संग्रहालय के साथ जुड़े हुए श्रद्धानन्द कक्ष की प्रगति भी उल्लेखनीय है। इसमे पूज्य स्वामी जी की पादुकाएँ, वस्त्र, कमण्डल तथा दुर्लभ चित्र-पत्रादि सुरक्षित हैं। इस स्मृतिकक्ष में भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन की अद्भुत झाँकी मिलती है। १९१९ के जलियाँवाला हत्याकाण्ड के बाद अमृतसर कांग्रेस के अधिवेशन का वह चित्र उल्लेखनीय है जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वागताध्यक्ष के रूप मे विराजमान हैं तथा श्री मोतीलाल नेहरू, श्रीमती एनी बेसेंट एवं महामना मदन मोहन मालवीय उनके साथ बैठे हैं। नवयुवक श्री जवाहरलाल नेहरू और लाला

लाजपतराय भी विद्यमान हैं। अब यहाँ अष्टधातु तथा चित्रकक्ष की स्थापना भी हो गई है। इस संग्रहालय का उद्घाटन माननीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा प्रख्यात पुरातत्ववेत्ता डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने किया था। अक्तूबर, नवम्बर मे प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता डा० रत्नचन्द्र अग्रवाल विजिटिंग फैलो के रूप मे यहाँ पधारे। ८ मार्च को संग्रहालय के प्रस्तर प्रतिमाकक्ष का उद्घाटन संस्कृति मंत्रा-लय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी ने किया। इस संग्रहालय के निदेशक डा० जबरसिंह सेंगर इसके विकास मे कोई कसर नहीं रखेगे, मुझे इसका पूर्ण विश्वास है। इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा० विनोदचन्द्र सिन्हा को नेशनल फैलोशिप मिली।

गुरुकुल पुस्तकालय की गणना उत्तर भारत के गिने-चुने पुस्तकालयो मे की जाती है। यहाँ धर्म, दर्शन, इतिहास, मानविकी, साहित्य और विज्ञान की दुर्लभ पुस्तकें तथा पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित है। विभिन्न विषयो पर एक लाख से अधिक पुस्तके विद्यमान है जिनका उपयोग देश-विदेश के विद्वान करते है। संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा गुरुकुल पुस्तकालय को भारत की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखे जाने के केन्द्र के रूप में मान्यता दी गई है। वर्ष ८६-८७ मे दुर्लभ ग्रन्थो तथा पाण्डुलिपियों के संरक्षण हेतु ६६,५०० रुपये का अनुदान मिला। दो हजार नये ग्रन्थ खरीदे गए तथा ज्ञान-विज्ञान की अधुना-तन ४०० पत्रिकाएँ नियमित रूप से मंगाई गई। इनमे अन्तर्राष्ट्रीयस्तर की ५० पत्रिकाएँ विदेशो से आ रही है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने वर्तमान पुस्तकालय भवन के विस्तार हेतु ५ लाख रुपये की सहायता दी है तथा ४ लाख रुपये की अतिरिक्त धनराशि नवीन पुस्तको एवं पत्र-पत्रिकाओं के क्रय के लिए दी है।

एन०सी०सी० का कार्य भी सुचारु रूप से चल रहा है।

संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० निगम शर्मा अपने सहयोगियों के साथ संस्कृत सर्टिफिकेट कोर्स तथा अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डा० राधेलाल वार्ष्णेय अंग्रेजी सर्टि-फिकेट कोर्स सफलतापूर्वक चला रहे हैं। भाषा-शिक्षण की आधुनिक तकनीक के आधार पर अंग्रेजी मे भाषा-ज्ञान के लिए आवश्यक उपकरण मंगाए गए है। संस्कृत, अंग्रेजी न जानने वाले तो इससे लाभान्वित होगे ही अपितु भाषा के शुद्ध लेखन तथा उच्चारण के लिए यह प्रयोगशाला अधिक उपयोगी सिद्ध होगी। नये सत्र से हम अन्य भारतीय भाषाओ के ज्ञान के लिए भी कुछ कार्यक्रम शुरु करने जा रहे हैं। तमिल कक्षाओं के लिए तो हमने बातचीत भी कर ली है।

योग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को सुचारु रूप से चलाने के लिए श्री ईश्वरदत्त भारद्वाज धन्यवाद के पात्र हैं।

गंगा और गंगा के मैदान के वैज्ञानिक अध्ययन के साथ ऋषिकेश से गढ़-मुक्तेश्वर तक के प्रायः २५०० ग्रामों का सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण एवं अध्ययन किया गया। अभी तक के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अनेक ग्राम अपरदन, जल-प्लावन, बाढ़, सीपेज आदि से पीड़ित हैं। गजरौला क्षेत्र में उद्योगों के कारण एक बड़े क्षेत्र में प्रदूषण फैला हुआ है। गंगा के जल का बीओडी०, सीओडी० एवं बैक्टीरिया-सख्या अनेक स्थानों पर काफी बढ़े हुए पाए गए जो प्रदूषण के सूचक हैं। योजना ने औषधीय एवं अन्य पौधों की एक सूची तैयार की है जिन्हें गंगा के मैदान, किनारों तथा पहाड़ियों पर लगाया जाएगा जिससे भूमिकटाव भी रोका जा सकेगा एवं स्थानीय लोगों के लिए औषधि, ईंधन, डेटरजेंट्स एवं कीटनाशी आदि उपलब्ध हो सकेंगे। ये कदम जहाँ राष्ट्रीय समृद्धि में सहायक होंगे वहां साथ ही पर्यावरण को अधिक अच्छा भी बनायेंगे।

ग्रामों में शिक्षा की सुविधा एवं स्वास्थ्य सेवाएँ सन्तोषजनक नहीं है। अधिकतर ग्रामीणों की आर्थिक अवस्था कमजोर है। प्रधानतया लोग खेती या मजदूरी पर निर्भर करते हैं। उपरोक्त स्थिति में सुधार लाने के लिए गगा योजना कार्यक्रम बना रही है। कांगड़ी ग्राम विकास योजना के अन्तर्गत कांगड़ी ग्राम को बाढ़ से बचाने के लिये वि० वि० के प्रयास से चेक डैम बनाना प्रारम्भ हो गया है। ग्राम के पास से शराब का ठेका हटाने के लिए बिजनौर जिलाधिकारी ने आश्वासन दिया है। इस सम्बन्ध में उत्तर प्रदेश के राज्य आबकारी मन्त्री महोदय ने भी आदेश दिए है।

मुझे यह कहते हुए संतोष का अनुभव हो रहा है कि विश्वविद्यालय के १९८६ तक के आय-व्यय निरीक्षण का कार्य भारत सरकार के ऑडिट विभाग द्वारा सम्पन्न हो गया है। और प्रशासनिक दृष्टि से यह एक उपलब्धि कही जा सकती है।

मुख्यमन्त्री जी !

गुरुकुल का आयुर्वेद कालेज देश के सबसे पुराने कालेजों में एक है। वैद्य धर्मदत्त, डा० धर्मानन्द केसरवानी जैसे अनेक स्नातकों ने आयुर्वेद की शिक्षा में कीर्तिमान स्थापित किए। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज न केवल वेद-वेदांग के पक्षपाती थे, अपितु वह आधुनिक विज्ञान और भारतीय चिकित्सा शास्त्र में नवीन अनुसन्धानों की प्रेरणा दे रहे थे। कुछ कारणों से यह कालेज उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने अधीन कर लिया था। अब हम चाहते हैं कि इसका पूर्ण व्यय उत्तर प्रदेश सरकार वहन करते हुए इसे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को सौप दे। यदि ऐसा हो जाए तो हम यहाँ आयुर्वेद की उच्चतम अध्ययनपीठ स्थापित

कर, स्नातकोत्तर अध्ययन और अनुसन्धान का कार्य प्रारम्भ करेंगे। इससे गुरुकुल की पहचान बनेगी तथा आयुर्वेद की आधुनिक आवश्यकता की पूर्ति हो सकेगी। आशा है, आप हमारी यह प्रार्थना स्वीकार करेंगे।

आर्य बन्धुओं,

गुरुकुल प्रणाली वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय अखण्डता, समाजसेवा, मानवजाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्रनिर्माण, आत्मानुशासन, सामाजिक तथा लोकतांत्रिक न्याय, सामूहिक कार्यचेतना, ज्ञान की खोज एवं प्रसार जैसे उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकती है। इस दिशा में अपने सीमित साधनों के बावजूद हम आगे बढ़ रहे हैं। हमारे ब्रह्मचारी व्रताभ्यास, योगाभ्यास तथा आत्मानुशासन से बल ग्रहण कर राष्ट्रीय जीवन में उतरें, मेरी यही सदिच्छा है। इकबाल के शब्दों में कहना चाहूँ तो कहूँगा—दृढ़ विश्वास, निरन्तर कर्मण्यता तथा विश्वव्यापी प्रेम ही जीवन के महायुद्धों में पुरुषार्थी मनुष्यों की तलवारें हैं।

यकीं मुहकम अमल पैहम मुहब्बत फ़ातेहे आलम,
जहादे ज़िंदगानी में है यही मर्दों की शमशीरें।

गुरुकुल की उक्त उपलब्धियों के लिए मैं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षामंत्रालय भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, आकाशवाणी नजीबाबाद, विश्वविद्यालय को शिष्ट परिषद्, कार्य परिषद् तथा शिक्षा पटल के मान्य सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। इन्होंने समय-समय पर अमूल्य सहयोग देकर हमारा मार्गदर्शन किया। इसके साथ ही मैं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने व्यवस्था बनाये रखने में हमारी सहायता की।

इस अवसर पर अपने आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों को भी धन्यवाद देना चाहूँगा जिनकी मेहनत और लगन से ये सब उपलब्धियाँ हो सकीं। श्री कुलसचिव, उप-कुलसचिव तथा वित्ताधिकारी एवं उनके विभागीय सहयोगियों का भी मैं आभारी हूँ।

इस वर्ष पी-एच०डी० की ७, एम०ए० की ५३, एम०एस-सी० की ७, बी०एस-सी० की ३४ तथा अलंकार की १६ उपाधियाँ प्रदान की गई हैं।

आइए एक बार कहें—जिस प्रकार आकाश एवं पृथ्वी निर्भय होकर निर्दोष कर्म करते हैं, उसी प्रकार हम भी भयरहित होकर सत्कर्म करते रहें।

यथा द्यौश्च पृथिवी च न विभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा विभेः। (अथर्ववेद २/१५/१)

रामचन्द्र शर्मा
कुलपति

१४ अप्रैल, १९८७

श्री आर० सी० शर्मा (कुलपति) माननीय मुख्यमन्त्री श्री वीरबहादुर सिंह जी का स्वागत करते हुए ।

दीक्षान्त-समारोह के अवसर पर नव-स्नातकों का एक दृश्य ।

मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार

माननीय श्री वीरबहादुर सिंह जी

द्वारा

दीक्षान्त-भाषण

महामहिम कुलाधिपति महोदय, कुलपति जी, सभासद् महानुभाव, अध्यापकगण, उपस्थित आर्यबन्धु, देवियों एवं नव-स्नातकगण !

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में मुझे भाग लेने का जो अवसर मिला है उसके लिए मैं विश्वविद्यालय के अधिकारियों का आभारी हूँ। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने, महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-नीति के आधार पर वर्ष १९०१ मे की थी। धर्म एवं देश की रक्षा तथा समाज-सुधार के लिए स्वामी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज को समर्पित कर दिया था। गुरुकुल खोलने मे उनका उद्देश्य एक ऐसी संस्था की स्थापना करना था जहाँ विद्यार्थियों का चरित्र-निर्माण हो, शान्ति एवं पवित्र वातारण में वे शिक्षा ग्रहण कर सके, प्राच्य एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के विषयों का अध्ययन करें तथा भारतीय संस्कृति के पोषक बनकर समाजकल्याण पर चिन्तन करें। गुरु-शिष्य परम्परा में छात्रगण आश्रम में रहकर गुरु के गुणों को ग्रहण कर चरित्र-वान् एवं उत्तम नागरिक बने। ऐसे आध्यात्मिक मनीषी एवं स्वतन्त्रता-संग्राम के अमर सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द महाराज की पावनस्थली में आकर मैं अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करता हूँ। यह वही भूमि है जहाँ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, पण्डित मदनमोहन मालवीय, श्रीमती इन्दिरा गांधी जैसे भारतरत्न पधार चुके हैं।

दीक्षान्त समारोह हमारी संस्कृति में एक महत्वपूर्ण एवं पवित्र संस्कार माना जाता था, जब शिष्य अपनी शिक्षा समाप्त करके अपने आचार्य से आशी-र्वाद प्राप्त कर, गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था। गुरुकुल का ज्ञान और आचरण समाज को प्रेरणा देता था और समाज कृतज्ञतापूर्वक गुरुकुल को सम्मान और समर्थन देता था। तैत्तरीय उपनिषद् में इस संस्कार का सजीव

एवं विस्तृत चित्रण किया गया है, जब आचार्य शिष्य को गुरुकुल से विदा देते समय व्यवहारिक उपदेश देता है :—

सत्यं वद। धर्मम् चर। स्वाध्यायान् मा प्रमद्।

वस्तुतः यही शिक्षा का सार है। आचार्य शिष्य से अपने उपदेशों का अन्धानुसरण करने के लिए नहीं कहता, अपितु यह कहता है कि जो हमारे सत् आचरण हों उन्हीं का पालन करना, असत् का नहीं। इसके अतिरिक्त आचार्य यह भी कहता था कि आश्रमशिक्षा तो समाप्त हो गई किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि ज्ञानार्जन की प्रक्रिया समाप्त हो गई। उसका विशेष उपदेश होता था कि 'स्वाध्याय से कभी भी विमुख न होना'। 'स्वाध्याय' का अर्थ केवल पढ़ना-पढ़ाना नहीं बल्कि गहराई से ज्ञान प्राप्त करना है।

'सा विद्या या विमुक्तये।'

विद्या वही है जिससे भौतिक, दैहिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, सामाजिक समस्याओं से मुक्ति प्राप्त हो। जहाँ एक ओर व्यक्ति के लिए कुछ निर्धारित विषयों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है वहीं दूसरी ओर यह भी सही है कि किसी मनुष्य में इतनी मानसिकक्षमता नहीं है कि वह संसार की समस्त विद्याओं का अर्जन कर सके। इसी दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रुचि एवं प्रकृति के अनुसार सीमित विद्याओं-विषयों का ज्ञान प्राप्त कर संतोष करना पड़ता है। प्रत्येक दशा में शिक्षा के उद्देश्य की पूर्णता तभी है जब व्यक्ति में ज्ञान-वृद्धि के साथ-साथ व्यक्तिगत गुणों में भी अभिवृद्धि हो और उसमें सामाजिक दायित्व के निर्वाह तथा अर्थोपार्जन की अपेक्षित क्षमता का विकास हो।

मनुष्य ने जब से संगठित समाज में रहना शुरु किया है तब से ही प्रत्येक समाज में नई पीढ़ी को शिक्षित करने की कोई न कोई व्यवस्था अवश्य रही है। शिक्षा, समाज को चलाने और उसके भविष्य की दिशा को पहचानने के लिए एक मूलभूत आवश्यकता होती है। पुरानी पीढ़ी अपने द्वारा अर्जित उस समय तक के कला-कौशल, सभ्यता, संस्कृति के साथ-साथ अपनी आस्थाएँ, अपने विश्वास, विचार और भविष्य की कल्पना, सभी कुछ अपने आगे आने वाली पीढ़ी को सौंपती है। इस कार्य के लिए प्रत्येक समाज में किसी न किसी प्रकार की व्यवस्था का निर्माण किया जाता है। इसी को हम उस समाज की शिक्षा-व्यवस्था कहते हैं। प्रत्येक समाज की शिक्षा-व्यवस्था उस समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही बनाई जाती है। इसीलिए शिक्षित व्यक्ति पर यह गुरुतर दायित्व होता है कि वह अपने समाज की मूलभूत आवश्यकताओं,

आशाओं और भविष्य से भली-भाँति परिचित हो और साथ ही साथ उन्हें पूरा करने मे सक्षम हो। जो-जो शिक्षा-व्यवस्था ऐसे नवयुवकों का निर्माण कर सके वही वास्तव में उचित तथा उपयोगी शिक्षा-प्रणाली होती है तथा जो व्यक्ति अपने को इस महत्वपूर्ण सामाजिक दायित्व के लिए तैयार कर चुका हो वही व्यक्ति सच्चे अर्थों मे शिक्षित कहलाने का हकदार होता है।

किसी विशेष प्रकार के ज्ञान को अर्जित कर लेना और उसमें कुशलता प्राप्त करना शिक्षा का केवल एक छोटा-सा ही भाग है। विस्तृत सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उस ज्ञान की उपादेयता से परिचित होना और अपनी कुशलता का सामाजिक-हित मे उपयोग करने की प्रवृत्ति तथा क्षमता का होना वास्तव में शिक्षा का मुख्य और महत्वपूर्ण भाग होता है। भारतीय समाज में शिक्षा-व्यवस्था की प्राचीन परम्पराएँ अत्यन्त गौरवशाली रही हैं। सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने मे सक्षम शिक्षा-व्यवस्था द्वारा शिक्षित पीढ़ियों ने ही प्राचीन काल मे हमारे समाज को विश्व मे अग्रणी बनाया था।

प्राचीन काल की मान्यताओ के विपरीत आज शिक्षा प्राप्त करने का एकमात्र उद्देश्य आर्थिकक्षमता का विकास एवं भौतिकप्रगति ही माना जा रहा है। परन्तु शिक्षा को मात्र आर्थिक प्रगति तक ही सीमित नही रखा जा सकता। शिक्षा का उद्देश्य एवं क्षेत्र इससे कही अधिक व्यापक एवं श्रेष्ठ है। औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से भी अधिक आवश्यक है व्यक्ति का सुसंस्कृत होना। शिक्षा के विषय-वस्तु को नैतिक-आध्यात्मिक मान्यताओं से समृद्ध करके ही शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य पूर्ण होता है। यहाँ पर उपाधि प्राप्त करने के लिए उपस्थित स्नातक-छात्र यदि अपने प्रारम्भिक जीवन में ही शिष्टता, सत्यनिष्ठा, सदाचार आदि का मूल्य समझ ले तो वे भविष्य में बिना किसी संघर्ष के, अपने भावी जीवन की दिशा निर्धारित करने मे सफल होंगे, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। अब समय आ गया है कि देश, काल एव परिस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा-पद्धति मे बुनियादी परिवर्तन लाया जाए। मैकाले की शिक्षा-पद्धति जिसका उद्देश्य अंग्रेजी सरकार के काम-काज के लिए 'बाबू' तैयार करना मात्र था, अब हमारे स्वतन्त्र राष्ट्र के लिए अधिक उपयोगी नही रह गई है। अब यह देश अंग्रेजों का नहीं, हमारा है, आपका है, हम सबका है। अब शिक्षा के वर्तमान ढाँचे में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है और इसे समाज एवं व्यक्ति के लिए उपयोगी बनाया जाना चाहिए। स्वतन्त्रता के पूर्व महात्मा गांधी ने हमें शिक्षा के सम्बन्ध में एक नई दिशा दी थी और बुनियादी शिक्षा के रूप मे उन्होंने बुनियादी दस्तकारियों के माध्यम से शिक्षा देने के सिद्धान्त को प्रतिपादित कर, भारतवासियों को स्वावलम्बन एवं आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाया था। स्वतन्त्रताप्राप्ति के पश्चात् पं० जवाहरलाल नेहरू ने शिक्षा को देश की बदलती

हुई आवश्यकताओं से जोड़ा। पं० नेहरू द्वारा डाली गई बुनियाद पर इमारत बनाने का कार्यभार उनकी सुयोग्य पुत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी पर पड़ा और उन्होने पहली बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति-१९६८ की घोषणा कर, राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान की। उनके समय मे देश ने शिक्षा के क्षेत्र मे आशातीत प्रगति की।

नई शिक्षा नीति ने मूलतः यह माना है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन करने की क्षमता उत्पन्न करना ही नही है बल्कि इसका उद्देश्य व्यक्ति के आध्यात्मिक-सामाजिक व्यक्तित्व का विकास करना भी है। शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता, प्रजातन्त्र और समाजवाद को मजबूत बनाया जाना चाहिए। शिक्षा द्वारा समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानसिक स्वतन्त्रता भी लाना आवश्यक है। इन बातो के साथ-साथ शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था के लिए आवश्यक मानवशक्ति का विकास और औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक तकनीकी प्रशिक्षण, शोध और नई टेक्नोलॉजी का विकास करना भी है। शिक्षा द्वारा ही हम अन्ततः राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

इस शिक्षा-नीति मे समाज के सभी वर्गो को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने की दिशा मे ठोस और प्रभावकारी कदम उठाने का निर्देश भी है। किसी भी समाज में स्त्रियों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है और यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि आज तक हम स्त्रियों की दशा पर समुचित ध्यान नही दे पाये है। नई नीति में प्रधानमंत्री जी ने स्त्रियों की शिक्षा के विस्तार और उसे अधिक प्रभावकारी बनाने पर विशेष बल दिया है। स्त्रियो की शिक्षा के बारे मे सामाजिक पूर्वाग्रहों का यथाशक्ति मुकाबला करके इस ओर सामाजिक दृष्टिकोण बदलना अत्यन्त आवश्यक माना गया है। स्त्रियों के साथ भेद-भाव को समाप्त करने तथा उन्हें सभी स्तरो की शिक्षा के लिए और अधिक अवसर उपलब्ध कराने की ओर प्रदेश शासन का विशेष ध्यान है।

अनुसूचित जाति, जनजाति, दुर्बल वर्ग तथा पिछड़े वर्ग के लोगों की शिक्षा को देश और समाज की उन्नति के लिए आवश्यक मानते हुए, उनके लिए विभिन्न प्रकार की विशेष योजनाओं के माध्यम से विशेष सुविधाएँ उपलब्ध कराई जायेंगी। इन लोगों को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने का प्रयास नई शिक्षा नीति द्वारा किया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उच्चशिक्षा के क्षेत्र में सभी दिशाओं में श्रेष्ठता पर विशेष बल दिया गया है। देश के विकास के लिए इस स्तर की शिक्षा को

सुदृढ बनाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि पिछले चालीस सालों में देश की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उच्च शिक्षा का तेजी से विस्तार तो हुआ परन्तु इसके फलस्वरूप उच्च-शिक्षा की गुणात्मकता मे गिरावट आई है तथा अनेक कारणों से शिक्षा-सत्र अनियमित हो गए है। नई नीति मे इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था में गुणात्मक सुधार लाने के प्रयत्न किए जाएँ।

किसी भी राष्ट्र को प्रगति की ओर अग्रसर करने के लिए जिन तत्वों को सर्वाधिक आवश्यकता होती है, वे है— अनुशासन, परिश्रम एवं नैतिकमूल्य। इन तीनों के अभाव मे कोई भी राष्ट्र प्रगति नही कर सकता और न ही इनके बिना चरित्र का निर्माण हो सकता है। शनैः-शनैः शिक्षासंस्थाओ में गुरु-शिष्य का प्राचीन स्वरूप समाप्त होता जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप संस्थाओं में अनुशासन की समस्या बढती जा रही है। इस समस्या के निराकरण की ओर हमारे शिक्षाविदों को ध्यान देना चाहिए। द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण नेस्त-नाबूद जापान, जर्मनी जैसे राष्ट्र कठिन परिश्रम के बल पर हो आज आशातीत प्रगति कर, विकास के उच्च शिखर पर आरूढ हो गये है। वे राष्ट्रीय भावना के साथ कार्य करने को ही स्वधर्म समझते हैं। परन्तु हमारे देश में प्राकृतिक सम्पदा के बाहुल्य के बावजूद भी हम अभी तक उसका यथेष्ट उपयोग नही कर सके है। परिश्रम ही वह साधन है जिसके बल पर बेरोजगारी की समस्या का निदान हो सकेगा और राष्ट्र भी समृद्ध होगा। इसी तथ्य को दृष्टि मे रखते हुए श्रद्धेया श्रीमती इन्दिरा गांधी ने हमे एक नया नारा दिया था— 'श्रमेव जयते'। हमे चाहिए कि एकजुट होकर, सत्यनिष्ठा एवं अटूट लगन से, कठिन परिश्रम करके राष्ट्र के विकास में सतत् योगदान देते रहें। आज समय की सबसे बड़ी माँग है नैतिकमूल्यो की स्थापना। राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने मे नैतिकमूल्यों को सर्वाधिक भूमिका होती है। ये नैतिकमूल्य एवं सात्विक मर्यादाएँ ही थी जिनके बल पर चिरकाल से विदेशियों की दासता मे जकड़े भारत को अनवरत संघर्षो के बाद स्वतन्त्रता प्राप्त हो सकी थी। यही कारण है कि महात्मा गांधी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय और सरदार पटेल आदि नेताओ के प्रति लोगों के मन में अटूट श्रद्धा, विश्वास एवं सम्मान की भावना व्याप्त थी और आज भी उन्हें वही सम्मान दिया जाता है। मैं अपेक्षा करूँगा कि हमारे नवयुवक इस मर्यादा का निर्वाह करते हुए नैतिक-मूल्यो पर ध्यान देते रहेगे।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि इस विश्वविद्यालय में अध्ययन के साथ-साथ सदाचार और चरित्र-निर्माण पर भी विशेष बल दिया जाता है। आज देश

में साम्प्रदायिक शक्तियाँ फिर से सिर उठा रही हैं, जिनका हमें डट कर मुकाबला करना है। हमारे पूर्वजों के बलिदान से राष्ट्र को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है और इसकी रक्षा करना हमारा पुनीत दायित्व है। शिक्षा-संस्थाओं की ऐसे समय में प्रमुख भूमिका रही है और मुझे विश्वास है कि आगे भी वे अपने कर्त्तव्यों व दायित्वों का सफल निर्वाह करती रहेंगी।

आज का युग विज्ञान का युग है। हम इस बात के लिए गौरवान्वित हैं कि हमारे वेद-मन्त्रों एवं पुराणों में ज्ञान-विज्ञान के मूलमन्त्र पाए जाते हैं। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हमारा अतीत, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी काफी समृद्ध था। यह विश्वविद्यालय बधाई का पात्र है जहाँ विज्ञान के विषयों की शिक्षा भी भारतीय भाषा में दी जाती है।

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि इस विश्वविद्यालय में जहाँ प्राच्य भाषा संकाय हैं, वहीं कला एवं विज्ञान संकाय भी हैं। स्नातकोत्तर उपाधिस्तर पर माइक्रोबायोलॉजी पाठ्यक्रम तथा स्नातकोत्तर डिप्लोमा के रूप मे बायोकैमिस्ट्री तथा कम्प्यूटर पाठ्यक्रम संचालित हो जाने से यह विश्वविद्यालय विज्ञान के क्षेत्र मे भी सराहनीय योगदान दे रहा है।

आज जो नवयुवक दीक्षा समाप्त करके जीवनसंग्राम में प्रवेश कर रहे हैं, उन पर ही यह निर्भर करता है कि वे समाज में अनावश्यक, हानिकारक तथा अनुपयोगी व्यवस्थाओं को पहचान कर उनके स्थान पर आवश्यक, लाभकर तथा उपयोगी व्यवस्थाओं की स्थापना में अपना महत्वपूर्ण योगदान करें। देश के निर्माण की जिम्मेदारी भले ही वर्तमान पीढ़ी पर हो, उसको निरन्तर विकास की दिशा मे ले जाने की जिम्मेदारी सदैव ही नई पीढ़ी पर होती है। मैं यह आशा करता हूँ कि आज नवयुवक इस महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वाह करने में पूरी तरह सक्षम हैं। आप सबसे मेरी और समाज की अपेक्षा है कि आप लोग अपने जीवन में अपने को योग्य सिद्ध करें तथा अपने व्यक्तिगत दायित्वों के साथ-साथ अपने सामाजिक कर्त्तव्यों को भी पूरा करें, तभी आप लोग अपने को गुरुजनो द्वारा दी गई शिक्षा, स्नेह, प्रेम और विश्वास के योग्य पात्र सिद्ध करेंगे।

ऐसे सम्मानित विद्वत्समाज में मेरे लिए उपदेशक का कार्य करना किसी प्रकार उचित नही है। अन्त में मैं पुनः कहना चाहूँगा कि विद्यार्थी दीक्षान्त-समारोह को अपनी शिक्षा-दीक्षा का अन्त न समझें और निरन्तर ज्ञानार्जन करते हुए, समाज के हित में उसका प्रयोग करें। शिक्षा जीवन की एक सतत्

प्रक्रिया है। जीवन के हर मोड़ पर उन्हें नित्य एक न एक परीक्षा से गुजरना पड़ेगा। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का मूलमंत्र कभी भी विस्मृत न होने पाए। जिन छात्रों ने इस दीक्षान्त-समारोह में उपाधि प्राप्त की हैं मै उनको बधाई देता हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की हृदय से मंगलकामना करता हूँ। आप सब राष्ट्र के सच्चे नागरिक बनें और अपने जीवन में सदैव सफलता प्राप्त करें इन शब्दों के साथ मैं पुनः एक बार उन सभी को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे इस गौरवपूर्ण समारोह में सम्मिलित होने का सुअवसर प्रदान किया है।

वेद तथा कला महाविद्यालय

१—वेद महाविद्यालय शिक्षक वर्ग

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
वैदिक साहित्य	१	२ (१ पद रिक्त)	२	५
संस्कृत साहित्य	१ (रिक्त)	२	२	५

२—कला महाविद्यालय शिक्षक वर्ग

प्रा०भा० इतिहास	१	२	२	५
दर्शनशास्त्र	१ (रिक्त)	१	३	५
हिन्दी साहित्य	१	१ (रिक्त)	३	५
अंग्रेजी	१	२	२	५
मनोविज्ञान	२	१	२	५

३—वेद महाविद्यालय शिक्षकेत्तर कर्मचारी वर्ग

(१) श्री वीरेन्द्र सिंह, लिपिक
(२) श्री बलवीरसिंह, सेवक
(३) श्री रतनलाल, सेवक
(४) श्री रामसुमत, माली

४—कला महाविद्यालय शिक्षकेत्तर कर्मचारी वर्ग

(१) श्री ईश्वर भारद्वाज, प्र०शा०शि० (२) श्री महेन्द्रसिंह नेगी, कनिष्ठ सहायक (३) श्री लालनर सिंह, प्रयोगशाला सहायक (४) श्री हंसराज जोशी, लिपिक (५) श्री कुँवरसिंह, सेवक (६) श्री हरेन्द्रसिंह, सेवक (७) श्री प्रेमसिंह, सेवक (८) श्री रामपद राय, सेवक (९) श्री मानसिंह, पहरेदार (१०) श्री जग्गन, जमादार (११) श्री सन्तोष राय, फी० अ०।

५—इस वर्ष सत्र १६-७-८६ से आरम्भ हुआ। दि० १-८-८६ से कक्षाएँ विधिवत

श्री आर० सी० शर्मा कुलपति माननीय मुख्यमन्त्री जी से विचार-विमर्श करते हुए ।

दीक्षान्त-समारोह पर यज्ञ करते हुए माननीय वीरबहादुर सिंह, मुख्यमन्त्री उत्तर प्रदेश, कुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, कुलपति श्री रामचन्द्र शर्मा तथा आचार्य प्रो० रामप्रसाद वेदालकार ।

आरम्भ हुईं। अलंकार तथा विद्याविनोद कोर्स में छात्र-संख्या निम्न प्रकार से है :

कक्षा	विषय	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	योग
विद्याविनोद	वेद वर्ग	४	३	७
विद्याविनोद	कला वर्ग	६	८	१७
वेदालंकार		—	३	३
विद्यालंकार		६	२	११
			योग–	३८

६— दिनांक १५-८-८६ को स्वतन्त्रता-दिवस मुख्य कार्यालय के सामने मनाया गया।

७—दिनांक २२-८-८६ को संस्कृत-दिवस सीनेट हाल मे मनाया गया।

८—दिनांक २५-९-८७ को प्रातः १० बजे सीनेट हाल मे देशज औषध पौधों का संरक्षण एवं नृवंशीय वानस्पतिक दृष्टान्त विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन विश्वविद्यालय में वनस्पतिशास्त्री पद्मश्री डा० पी० एन० मेहरा, प्रोफेसर एमरीटस द्वारा किया गया। इसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के तत्कालीन विजिटर डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार जी द्वारा की गई।

९—दिनांक २४-१०-८६ को संयुक्त राष्ट्रसंघ दिवस मनाया गया।

१०—दिनांक २५-११-८६ को प्रोफेसर एन० पी० गुप्ता का "टीचिंग ऑव शेक्सपीयर" विषय पर व्याख्यान हुआ।

११—दिनांक १६-१-८७ को राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्द जी के मानवतावादी कार्यों का मूल्यांकन किया गया।

१२—अन्य वर्षों की भाँति इस वर्ष भी संस्कृत परिषद् की ओर से सरस्वती परिषद् का आयोजन किया गया, जिसमे विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

१३—कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में इस विश्वविद्यालय के दो छात्र श्री हरिशंकर व श्री राजेन्द्रसिंह ने भाग लिया जिसमें इन दोनों छात्रों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

१४—गद्‌दपुरी में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में भी इन दोनों छात्रों ने प्रथम स्थान प्राप्त कर शील्ड प्राप्त की।

१५—गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग द्वारा आयोजित कबड्डी प्रतियोगिता में हमारे यहाँ के छात्रों ने प्रथम स्थान प्राप्त कर शील्ड प्राप्त की।

१६—दिनांक १६-५-८७ को विश्वविद्यालय के नव-नियुक्त परिद्रष्टा श्री सोमनाथ मरवाह का स्वागत विश्वविद्यालय भवन में किया गया।

१७—दिनांक १६-५-८७ से १८-५-८७ तक दर्शन परिषद् की ओर से कान्फ्रेन्स का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्वानों ने भाग लिया और अपने लेख पढे।

१८—दिनांक २५-४-८७ से विश्वविद्यालय की वार्षिक परिक्षाये आरम्भ हुईं और दिनांक १३-५-८७ को सम्पन्न हुईं।

१९—दिनांक १८-५-८७ से १९-७-८७ तक विश्वविद्यालय में ग्रीष्मावकाश हुआ है।

२०—इस सत्र से वेद मन्दिर मे वैदिक संग्रहालय की स्थापना की गई और साथ ही वेद प्रयोगशाला की स्थापना भी की गई है जिसमें छात्रो को प्रयोगात्मक कार्य करवाया जाता है। यह ५० अंक का है।

—**रामप्रसाद वेदालकार**
आचार्य एवं उप-कुलपति

वेद विभाग

विभाग का सामान्य परिचय—

वेद विभाग वैसे तो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की १६०० में स्थापना से ही विद्यमान है, पर इस रूप में इसकी स्थापना तभी हुई जबकि १६६२ मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय के समकक्ष मान्यता प्रदान की। इससे पूर्व इस विभाग मे प० दामोदर सातवलेकर, प० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, आचार्य अभयदेव, प० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, प० बुद्धदेव जी विद्यालकार, पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति तथा पं० रामनाथ वेदालंकार आदि कार्य कर चुके हैं।

छात्र संख्या—

एम०ए० प्रथम वर्ष	—	३
एम०ए० द्वितीय वर्ष	—	२
अलकार प्रथम वर्ष	—	६
अलंकार द्वितीय वर्ष	—	५
विद्याविनोद प्रथम वर्ष	—	१३
विद्याविनोद द्वितीय वर्ष	—	११
		४३

विभागीय उपाध्याय—

(१) आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार--प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

(२) रीडर—रिक्त

(३) डा० भारतभूषण—रीडर

(४) डा० सत्यव्रत राजेश—प्रवक्ता

(५) डा० मनुदेव बन्धु—प्रवक्ता

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य—

आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वेद विभाग
उप-कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

(१) **प्रकाशित ग्रन्थ**—'पावनधारा' वेदों में वेदाध्ययन के महत्त्व को प्रतिपादित करने वाली ऋचाओं की अत्यन्त भावप्रवण मार्मिक व्याख्या।

पञ्चमहायज्ञों के वैदिक स्वरूप को स्पष्ट करने वाली 'यज्ञ सुधा' नामक रचना तैयार है, जो अति शीघ्र प्रकाशित होने वाली है। वेदाध्ययन में प्रवृत्त अनेक जिज्ञासुओं के प्रबल आग्रह पर पूर्व-प्रकाशित ग्रन्थों का पुनः प्रकाशन।

(२) **लेख**—गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, यज्ञ योग ज्योति-प्रभु आश्रित जन्म शताब्दी विशेषांक तथा गुरु विरजानन्द स्मारक समिति (ट्रस्ट) करतारपुर, जि॰ जालन्धर द्वारा ३१वें वार्षिक समारोह पर प्रकाशित स्मारिका में विद्वत्तापूर्ण लेखों का प्रकाशन।

(३) **सेमिनार आदि**—प्राच्य विद्या अकादमी, गीता आश्रम, हरिद्वार के तत्वावधान में आयोजित द्विदिवसीय संगोष्ठी (सेमिनार) 'गढ़वाल के संस्कृत अभिलेख' का २९ मार्च १९८७ को उद्घाटन किया तथा मुख्य अतिथि के रूप मे संगोष्ठी के विषय पर महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दिया।

(४) **वैदिक साहित्य का व्यापक प्रचार**—एक ओर पुस्तकों और लेखों के माध्यम से वेद, ब्राह्मण, उपनिषद् आदि के गूढ रहस्यों को सरल, सरस एवं भावात्मक शैली मे स्पष्ट करने का प्रयास किया, दूसरी ओर भारतवर्ष के अनेक नगरों, महानगरों, विभिन्न संस्थाओं द्वारा आयोजित विशाल समारोहों में वैदिक वाङ्मय के विभिन्न पक्षों पर शोधपरक, विद्वत्तापूर्ण भाषण दिए।

२ अक्तूबर '८६ को तपोवन देहरादून में 'राष्ट्रभृत् यज्ञ में तीन देवता' विषय पर व्याख्यान दिया। ९, १० अक्तूबर '८६ को तत्त्वज्ञान मण्डल कोपरगाँव (महाराष्ट्र) में 'मानवजीवन में वेद की उपयोगिता' विषय पर भाषण दिया।

११ नवम्बर से १७ नवम्बर तक आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, देहली में विशाल उपस्थिति में 'वेदों में परमपुरुष का स्वरूप', 'वैदिक यज्ञ और

उसकी उपयोगिता', 'वेदाध्ययन और मानवजीवन' आदि विभिन्न विषयों पर सारगर्भित व्याख्यान दिए।

२४,२५ अक्टूबर '८६ को महर्षि दयानन्द मठ, जालन्धर में 'वेदों के आधार पर नारी का स्वरूप', 'कहाँ है वो' इन विषयों का प्रतिपादन किया। ५, ६ नवम्बर '८६ को नया बाजार, ग्वालियर मे, २४, २५, २६ दिसम्बर '८६ को सान्ताक्रुज बम्बई में 'तीन देवता, वेदों का स्वाध्याय, आर्यों की दिनचर्या, भ्रातृत्व (Brotherhood)' आदि विषयों पर भाषण दिए, जिन्हें श्रोताओं ने बहुत सराहा।

२८ फरवरी '८७ को बदायूँ में 'वेद संगोष्ठी' की अध्यक्षता की तथा अध्यक्षीय भाषण दिया।

१३, १४, १५ फरवरी '८७ को कोटा-राजस्थान मे आर्यों का आराध्य देव, वेद प्रतिपादित वेदाध्ययन की महिमा, आदि विषयो पर व्याख्यान दिए।

२० फरवरी '८७ को रोहतक में यज्ञ-सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए अध्यक्षीय भाषण दिया।

इनके अतिरिक्त देहली, बम्बई, बी० एच० ई० एल०, हरिद्वार, आई०डी०पी०एल० ऋषिकेश, कानपुर, देहरादून आदि अनेक स्थानों पर वेदविषयक व्याख्यान दिए।

विषय को नवदिशा प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय में अपनी सूझ-बूझ तथा मौलिक चिन्तन के आधार पर सत्र ८६-८७ में वैदिक प्रयोगशाला का शुभारम्भ किया, जिसमें स्नातकोत्तर छात्र, शोधार्थी एवं वेदप्रेमीजन १६ संस्कारों एवं पंचमहायज्ञों के स्वरूप को प्रत्यक्ष देखकर व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं।

डा० भारतभूषण विद्यालंकार, रीडर, वैदिक साहित्य विभाग

१—सूर्यप्रकाश पाठक, रामनारायण रावत, स्वामी हरिश्चन्द्र, रामेश्वर दयाल गुप्त आदि को पी-एच०डी० हेतु निर्देशन।

२—श्री भगतसिंह को शोध-उपाधि प्राप्त।

३—अमेरिकन वि०वि० शिकागो के छात्र जॉन अर्ल लुवेलीन को पी–एच०डी० हेतु मार्ग निर्देशन। इसके अतिरिक्त गढ़वाल आदि विश्वविद्यालयों में शोध निर्देशक एवं परीक्षक आदि।

४—एम०ए० (वैदिक साहित्य) का अध्यापन।

५—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय मे वैदिक प्रयोगशाला के निर्माण में रत। वैदिक कर्मकाण्ड को सिखाने व उसकी व्यवस्था के लिए प्रयत्नशील।

६—एमेनेस्टी इण्टरनेशनल का सदस्य।

७—विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ में लेख।

८—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की इतिहास परिषद् द्वारा आयोजित सेमिनार 'आर्यों के आदिदेश' पर शोध-पत्र वाचन।

९—गुरुकुल प्रभानाश्रम मे 'वैदिक सृष्टि विद्या' पर शोध-पत्र वाचन।

१०—नेपाल, प० बंगाल, सिलिगुड़ी, बिहार (गया, पटना, जोगबनी, पूर्णियाँ) उत्तर प्रदेश, हरियाणा में वैदिक साहित्य एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार।

११—गुरुकुल कांगड़ी मे वेदपाठ। गुरुकुल भैंसवाल मे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से पर्यवेक्षक।

१२—"आथर्वणिक राजनीति" नामक ग्रन्थ प्रेस में।

डा० सत्यव्रत राजेश, प्रवक्ता—वेद

१—रविदत्त शास्त्री, कु० कामजित्, कु० सुमेधा तथा आनन्दकुमार को पी-एच०डी० के लिए दिशा-निर्देश।

२—अलंकार II वर्ष, एम०ए० I तथा एम०ए० II वर्ष को अध्यापन।

३—आर्यजगत् (साप्ताहिक) तथा दयानन्द सन्देश (मासिक) में लेख।

४—जम्मू, बास्टा, कीरतपुर, खेड़ो भोजपुर (बिजनौर), कोल्हापुर, चालीस गाँव (महाराष्ट्र), उत्तरकाशी, इलाहाबाद (सच्चा आश्रम मे वेद-सम्मेलन पर निबन्ध वाचन, २ निबन्ध), रुड़की, नजीबाबाद, हरपाल (गाँव), ज्वालापुर, मेरठ, हरिद्वार, गुरुकुल गौतमनगर, नारसन (गाँव), दतियाना (गाँव), मतलबपुर (गाँव), आदि मे वेद-प्रचार तथा वैदिक संस्कृति प्रसार। जयपुर मे वैदिक

व्याख्यानमाला, आर्य वानप्रस्थाश्रम, आर्यनगर, ज्वालापुर, तथा वेद मन्दिर (गीता आश्रम) में यज्ञ का ब्रह्मत्व ।

अखिल भारतीय संस्कृत परिषद् (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय) के समारोह में निर्णायक । गुरुकुल कागडी के वार्षिकोत्सव पर वेदपाठ ।

गुरुकुल भैसवाल मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की ओर से पर्यवेक्षक ।

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती के आग्रह पर ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के 'वेदसंज्ञा विषय पर विचार' पर विस्तृत व्याख्यापरक निबन्ध, आर्योप-प्रतिनिधि करनाल की शताब्दी स्मारिका के लिये 'वृक्षों में जीव और हिंसा . एक विवेचन' नामक विवेचनात्मक निबन्ध । 'यम-यमी सूक्त की आध्यात्मिक व्याख्या' नामक लघु-पुस्तिका प्रकाशित ।

डा० मनुदेव बन्धु—एम० ए० (त्रय) वेद, हिन्दी, संस्कृत, व्याकरणाचार्य, साहित्यरत्न, सिद्धान्तशिरोमणि, विद्यावाचस्पति, पी-एच डी.

(१) अप्रैल '८६ के गुरुकुल महोत्सव के दीक्षान्त-समारोह मे 'बृहदारण्यकोपनिषद् : एक अध्ययन' विषय पर पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की ।

(२) 'वेदोऽखिलोधर्ममूलम्' पुस्तक संस्कृत भाषा मे प्रकाशित हुई । इससे पूर्व 'मानवता की ओर' पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है ।

(३) इस सत्र में प्रकाशित लेख—

(अ) वैदिक धर्म : गुरुकुल पत्रिका, दिसम्बर '८६

(ब) वेद और राष्ट्रिय एकता : स्वाध्याय निर्णय, नवम्बर '८६

(स) संस्कृति और शिक्षा : गुरुकुल पत्रिका, जनवरी-मार्च '८७

(द) भावात्मक एकता : विश्वज्योति, अक्टूबर '८६

(क) उपनिषद्युगीन शैक्षणिक जीवन : विश्वज्योति, जुलाई '८६

(ख) उपासना : स्वाध्याय निर्णय, दिसम्बर '८६

(ग) आत्मकथा (आपबीती) संस्कृत में : विश्वसंस्कृतम्, दिसम्बर'८६ (ईश्वस्यास्तित्वम्), (अमंगले मंगलं निहितम्)

(घ) हृदयवाद और बुद्धिवाद : गुरुकुल पत्रिका, प्रकाशनाधीन

(४) इस सत्र में उत्तरप्रदेश, राजस्थान, बिहार, हरयाणा तथा दिल्ली आदि प्रान्तों में वैदिक धर्म और आर्यसमाजिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु प्रयत्न किया। महत्वपूर्ण भाषण निम्न स्थानों पर हुए :

(अ) आर्यसमाज रुडकी में 'सत्य की ओर' विषय पर व्याख्यान हुआ।

(ब) माथुर वैश्य महासभा, मुरादाबाद के महिला-सम्मेलन में 'युगों से चली आ रही नारी : एक अध्ययन' विषय पर भाषण दिया।

(स) आर्यसमाज हरथला, रेलवे कालोनी, मुरादाबाद मे 'अपौरुषेय वेद' विषय पर व्याख्यान हुआ।

(द) गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली-४६ के वेद सम्मेलन में 'गृह्यसूत्र : एक परिशीलन' विषय पर सारगभित भाषण हुआ।

(क) आर्यवानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में एक सप्ताह 'पुरुषसूक्त' पर व्याख्यान हुए।

(ख) सहारनपुर मे 'वेद के विभिन्न विषय' पर एक सप्ताह भाषण हुए।

(ग) नरेला, दिल्ली-४० में तीन दिन तक 'सामवेद' पर आध्यात्मिक प्रवचन हुए।

(घ) हरिद्वार के निकटवर्ती ग्रामों कटारपुर, बहादराबाद, बोगला, खेड़ली, लक्सर आदि स्थानों पर वेद-विषयक व्याख्यान हुए।

(५) कन्या गुरुकुल हसनपुर-फरीदाबाद में परीक्षा लेने हेतु पर्यवेक्षक बन कर गए।

(६) गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न सेमिनारो मे भाग लिया तथा शोधपत्र वाचन किए।

(७) जीव दया मण्डल पंचपुरी की सदस्यता ग्रहण की।

—**रामप्रसाद वेदालंकार**
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

संस्कृत विभाग

यह विभाग गुरुकुल की स्थापना के साथ ही योग्य गुरुजनो के निर्देशन मे गरिमा के साथ कार्य कर रहा है। गुरुकुल की प्रगति, प्रशसा तथा विकास मे इस विभाग का महान् योगदान रहा है। १९८६-८७ के सत्र में इस विभाग का कार्य-विवरण निम्न प्रकार से है।

विभागीय उपाध्याय

१. डा० निगम शर्मा — रीडर एवं अध्यक्ष
२. श्री वेदप्रकाश शास्त्री — रीडर
३. डा० रामप्रकाश शर्मा — प्रवक्ता
४. डा० महावीर अग्रवाल — प्रवक्ता

विभागीय कार्यकलाप

इस विभाग ने समारोहपूर्वक २२-८-८६ को 'संस्कृत-दिवस' का आयोजन किया। श्रीमान् ऋषि केशवानन्द जी की अध्यक्षता मे तथा श्रीमान् डा० श्याम-सुन्दर जी शास्त्री के सानिध्य में यह उत्सव बहुत ही उत्साहवर्धक रहा।

२०-२-८७ को ध्वनि-सम्प्रदाय पर डा० कृष्णकुमार जी, भूतपूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, गढवाल विश्वविद्यालय का सारगर्भित व्याख्यान हुआ।

२-३-८७ को सरस्वती परिषद् की ओर से त्रिभाषा-भाषण प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, श्लोक-मंत्रोच्चारण प्रतियोगिताओं का आयोजन अखिल-भारतीय स्तर पर किया गया। जिनमें दरभंगा विश्वविद्यालय, लाल बहादुर सस्कृत विद्यापीठ, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय आदि विश्वविद्यालयों के छात्रो ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विजयी प्रतियोगियो को चल-विजयोपहार एव अन्य व्यक्तिगत पुरस्कार दिये गए।

२४, २५ मार्च १९८७ को डा० वीरेन्द्रकुमार वर्मा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, बनारस हिन्दू वि०वि० तथा डा० रामनाथ जी वेदालंकार, भूत-

पूर्व उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी वि०वि० के वेद-व्याख्या पद्धति पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुए।

विभागीय छात्रों ने विविध विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में प्रतियोगिताओं में भाग लेकर चल-विजयोपहार तथा व्यक्तिगत पुरस्कार प्राप्त किए। इनमे ब्र० राजेन्द्रसिह, विद्यालंकार-प्रथम वर्ष, ब्र० हरिशंकर, विद्यालंकार-प्रथम वर्ष, ब्र० जितेन्द्रकुमार, विद्याविनोद-द्वितीय वर्ष, दिनेशचन्द्र शास्त्री एम०ए०-द्वितीय वर्ष, देव शर्मा एम०ए०-द्वितीय वर्ष के नाम उल्लेखनीय है।

विभागीय उपाध्यायों के कार्य-विवरण—

(१) डा० निगम शर्मा

इस वर्ष एक छात्रा श्रीमती सुषमा स्नातिका को पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त हुई। श्रीमती राजकुमारी शर्मा ने अपना शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया। वर्तमान समय मे ६ शोधार्थी शोधकार्य मे संलग्न हैं। इस वर्ष लगभग १० शोध-निबन्ध विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

अप्रैल १९८६ मे आकाशवाणी रामपुर से 'अपमिश्रित खाद्यान्न बिषमेव हि घातकम्' विषय पर वार्ता प्रसारित हुई तथा ३१ मार्च १९८७ को सस्वर कवितापाठ प्रसारित हुआ। संस्कृत सम्मेलन सप्तसरोवर पर विशेष व्याख्यान एवं संयोजकों द्वारा विशिष्ट अभिनन्दन। २६ अप्रैल को देवबन्द मे संस्कृत-सम्मेलन की अध्यक्षता की। २२ जुलाई १९८६ को निर्धन-निकेतन मे संस्कृत-सम्मेलन की अध्यक्षता की। १२, १३, १४ अगस्त को डी०ए०वी० गर्ल्स कॉलेज अम्बाला मे वाद-विवाद प्रतियोगिता को अध्यक्षता की एवं शोधपूर्ण व्याख्यान दिया। १८ नवम्बर '८६ को देहली विश्वविद्यालय मे सम्पन्न इन्द्र विद्यावाचस्पति वाद-विवाद प्रतियोगिता मे निर्णायक के रूप मे भाग लिया। २६ जनवरी '८७ को महाविद्यालय ज्वालापुर मे संस्कृत-सम्मेलन की अध्यक्षता की।

आर्य समाज ज्वालापुर, आर्य समाज रुडकी, वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर आदि विभिन्न स्थानों पर वेद, धर्म एवं दर्शन पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिए। छात्रों की लेखन एवं भाषणपटुता बढाने के लिए प्रशिक्षण दिया।

(२) आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री

शोध निर्देशन

वर्तमान में चार शोधार्थी शोध-निर्देशन प्राप्त कर रहे हैं। एक शोधछात्र श्री वसन्तकुमार ने पी-एच०डी० उपाधि हेतु अपना शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कर दिया है।

शोधलेख प्रकाशन—

(क) प्रह्लाद पत्रिका में 'आधुनिक जीवन-मूल्यों के परिप्रेक्ष्य मे वेद' नामक लेख प्रकाशित ।

(ख) भारतोदय के वैदिक विशेषांक में 'वेद मे नारी के उपमान' नामक लेख का प्रकाशन ।

सगोष्ठियों में भाग एवं विशेष व्याख्यान—

(क) २२ अगस्त '८६ को संस्कृत-दिवस समारोह का संयोजन कार्य किया ।

(ख) ४ अक्टूबर '८६ को जम्मू विश्वविद्यालय मे संस्कृत विभाग में कालिदास पर व्याख्यान दिया ।

(ग) २७, २८ दिसम्बर '८६ को उत्तरक्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन मे व्याख्यान तथा पण्डितमण्डली मे सम्मान प्राप्त ।

(घ) २६ जनवरी '८७ को महाविद्यालय ज्वालापुर में संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता का अध्यक्ष पद ग्रहण किया ।

(ङ) २४ फरवरी '८७ को भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय में आयोजित विद्वत्गोष्ठी मे प्रमुख वक्ता के रूप में 'कालिदास पर वैदिक प्रभाव' विषय पर सस्कृत मे व्याख्यान दिया ।

(च) २०, २१, २२ मार्च '८७ को एल०आर० स्नातकोत्तर महाविद्यालय साहिबाबाद मे आयोजित 'अन्तर्विधा संगोष्ठी' में प्रमुख वक्ता के रूप मे भाग लिया ।

(छ) १७ अप्रैल '८७ को देवबन्द मे आयोजित संस्कृत-सम्मेलन में विशिष्ट व्याख्यान ।

संस्कृत भाषणकला का निर्देशन—

संस्कृत विभाग में छात्रों को समय-समय पर अन्य विश्वविद्यालयों में आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित एवं प्रशिक्षित किया ।

निरीक्षण कार्य –

१२, १३ जनवरी '८७ को गुरुकुल धीरनवास तथा गुरुकुल आर्यनगर का, मान्यता देने हेतु निरीक्षण किया।

१६, २० दिसम्बर '८७ को अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता का संयोजन किया।

विश्वविद्यालय के महोत्सव पर वेदपाठी के रूप में कार्य किया।

जम्मू, सहारनपुर, गाजियाबाद, आगरा, देहरादून, रुडकी, ऋषिकेश, धामपुर, वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर आदि आर्य-संस्थानों में उत्सवो एवं सामूहिक सत्सगो मे लगभग ७० व्याख्यान दिए जो प्रबुद्ध वर्ग द्वारा प्रशसनीय रहे।

(३) डा० रामप्रकाश शर्मा—

चार छात्र शोध-निर्देशन में शोधकार्य कर रहे है। एक शोधार्थी श्री केशव प्रसाद उपाध्याय ने पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।

(४) डा० महावीर अग्रवाल—

(क) गुरुकुल पत्रिका मे 'धर्मो रक्षति रक्षितः' संस्कृत-लेख प्रकाशित।

(ख) आकाशवाणी रामपुर से दो संस्कृत-वार्त्ताएँ, साहित्य-सुधा कार्यक्रम मे प्रसारित।

(ग) प्राच्य विद्या अकादमी, गीता आश्रम, ज्वालापुर के तत्वावधान मे 'गढवाल के संस्कृत अभिलेख एवं महाकाव्यों की ऐतिहासिक उपयोगिता' विषय पर २८, २६ मार्च १६८७ को आयोजित संगोष्ठी का संयोजन।

(घ) भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार मे सस्कृत मे व्याख्यान।

(ङ) कानपुर, नागपुर, पीलीभीत, रुड़की, ज्वालापुर, बी०एच०ई०एल०, हरिद्वार, आई०डी०पी०एल० वीरभद्र, आदि अनेक स्थानों पर वेद, दर्शन, धर्म एवं शिक्षा सम्बन्धी विषयों पर लगभग ३० व्याख्यान।

(च) संस्कृत विभाग में आयोजित सभी समारोहों को सफल बनाने मे सक्रिय सहयोग।

(छ) वैदिक म्यूजियम में सहायक निर्देशक के रूप मे कार्य।

—डा० निगम शर्मा
रीडर एवं अध्यक्ष

दर्शन शास्त्र विभाग

(१) **स्थापना**—१९१० ई० में अलंकार और दर्शनवाचस्पति तक अध्ययन प्रारम्भ हुआ। १९६७ ई० में एम०ए० स्तर का अध्ययन आरम्भ हुआ है। १९८३ ई० से पी-एच०डी० हेतु शोधकार्य हो रहा है।

संस्थापक अध्यक्ष—स्व० प्रो० सुखदेव दर्शनवाचस्पति

अपने स्थापनाकाल से ही दर्शन विभाग का यह लक्ष्य रहा है कि भारतीय दर्शनों के मूल-ग्रन्थों के पठन-पाठन को वरीयता दी जाए तथा पाश्चात्य दर्शन शास्त्र की अवधारणाओं से उसके स्नातकों का गहरा परिचय हो तथा वे स्नातक अपने-अपने विषय के ठोस विद्वान् सिद्ध हों।

यह विभाग अपने इस दायित्व को सम्यक् रूप में निभा रहा है। इस विभाग से निकलने वाले स्नातक देश-विदेश में दर्शन के प्रचार एवं प्रसार तथा अध्यापन आदि कार्यों में लगे हुए हैं।

(२) **छात्र संख्या**—

विद्याविनोद	—	२३
अलंकार	—	१०
एम०ए०	—	१२
पी-एच०डी०	—	९
	योग—	५४

(३) **वर्तमान अध्यापकगण**—

१—डॉ० जयदेव वेदालंकार	रीडर एवं अध्यक्ष
२—डॉ० विजयपाल शास्त्री	प्राध्यापक
३—डॉ० त्रिलोकचन्द्र	प्राध्यापक
४—डॉ० उमरावसिंह बिष्ट	प्राध्यापक (अस्थायी)

(४) **आई०ए०एस० और पी०सी०एस० के मार्गदर्शन की समुचित व्यवस्था—**

भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के लिए निःशुल्क अध्यापन एवं मार्गदर्शन की विभाग में व्यवस्था है। इस योजना के अन्तर्गत इस वर्ष बी०एच०ई०एल० एवं हरिद्वार के छात्र मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे हैं।

(५) **प्राध्यापकगण—**

(क) **डॉ० जयदेव वेदालंकार**—पद—रीडर-अध्यक्ष
नियुक्ति—अगस्त १९६८। वर्तमान पद पर फरवरी १९८४ से।

(ख) **योग्यताएँ**—एम०ए० (दर्शन और मनोविज्ञान), न्याय दर्शनाचार्य, पी-एच०डी०, डी०लिट्०।

१९८६-८७ का लेखन कार्य—

(ग) **शोध ग्रन्थ**—(१) भारतीय दर्शन की समस्याएँ — पृष्ठ ४२५, अगस्त १९८६। प्रकाशक—प्राच्य विद्या शोध प्रकाशन, हरिद्वार।

(२) "विश्व की प्रमुख ज्वलन्त समस्याओं का दार्शनिक निदान" शोध संकलन। पृष्ठ २०४, मार्च १९८७।
प्रकाशक—विश्वविद्यालय।

(३) संस्कृति—शोध संकलन—पृष्ठ १२५। फरवरी १९८७।
प्रकाशक—विश्वविद्यालय।

(घ) **शोध लेख—**

(१) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मूल सिद्धान्त।

(२) पंजाब समस्या और आतंकवाद।

(३) योगेश्वर कृष्ण और शान्ति मार्ग।

(४) भारतीय दर्शन की प्रत्ययवादी और यथार्थवादी धाराएँ।

(५) दयानन्द दर्शन में आत्मा का स्वरूप।

(६) जीवात्मा और ब्रह्म में भेद।

(७) वैदिक संस्कृति—सभी शोध लेख गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित हैं।

(ङ) **सेमिनार**—जोधपुर विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के वार्षिक अधिवेशन में सक्रिय भाग लिया और "वैदिक दर्शन में ब्रह्म का स्वरूप" विषय पर शोध-पत्र वाचन किया।

(च) **अन्य कार्य**—

आर्यसमाज हापुड—अगस्त १९८६ में संस्कृति और भारतीय दर्शन पर व्याख्यान दिए।

विषय : * वैदिक संस्कृति और सम्प्रदाय
* भारतीय दर्शन में ब्रह्म का स्वरूप
* वैदिक धर्म का सच्चा स्वरूप
* महर्षि दयानन्द का यथार्थवादी दर्शन
* वर्णाश्रम पद्धति
* वैदिक आचारशास्त्र
* वेदों मे मूर्तिपूजा नही है
* शिक्षा का स्वरूप

(छ) **शोध कार्य**—पाँच शोध छात्र निम्नलिखित विषयों पर शोध कार्यरत है—

(१) श्री अरविन्द और स्वामी दयानन्द का दर्शन : तुलनात्मक अध्ययन।
(२) महात्मा गांधी और स्वामी दयानन्द के दर्शन का अनुशीलन।
(३) न्याय, जैन और बौद्ध दर्शन में प्रमाण मीमांसा।
(४) भारतीय और पाश्चात्य दर्शन में अन्तःकरण।
(५) आचार्य उदयवीर शास्त्री के विद्योदय भाष्यों का समालोचनात्मक अध्ययन।
(६) दो शोधार्थियों ने पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त की है।

(ख) **डॉ० विजयपाल शास्त्री**—प्राध्यापक
नियुक्ति—१९८१।
योग्यताएँ—एम०ए० (संस्कृत, हिन्दी और दर्शन) शास्त्री, साहित्याचार्य, दर्शनाचार्य, वेदान्ताचार्य, साहित्यरत्न, पी-एच०डी०।

प्रकाशित लेख—अप्रैल १९८६ से मार्च १९८७ तक गुरुकुल-पत्रिका के अनेक अंकों में विभिन्न लेख प्रकाशित हुए। जिनमें कुछ प्रमुख लेख है—

१. शुभ संकल्प से विश्वशान्ति।
२. अन्धकार एक द्रव्य है।
३. अज्ञः सुखमाराध्यः।
४. महाभारतस्य वैशिष्ट्यम्।

पुस्तक समीक्षा—अनेक पुस्तकों की समीक्षा लिखकर प्रकाशित करायीं; जिनमें प्रमुख हैं—डा० श्रीमती शीला शर्मा की पुस्तक "श्रीराम-चरितमानस में उपनिषद् प्रभाव" तथा डा० जयदेव वेदालंकार का नवीनतम ग्रन्थ "भारतीय दर्शन की समस्याएँ"।

शोध कार्य—दो छात्र शोधकार्य कर रहे है।

(ग) **डॉ० त्रिलोकचन्द्र**—प्रवक्ता, नियुक्ति—१९८२।

१—१९ अक्टूबर '८६ को दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र पर कार्यक्रम, जिसका सभी दूरदर्शन केन्द्रों से प्रसारण हुआ।

२—१७ जुलाई '८६ को दैनिक 'हिन्दुस्तान' मे 'योग से फेफड़ों का इलाज सम्भव' नामक समाचार प्रकाशित।

३—२५ अगस्त '८६ को दैनिक 'हिन्दुस्तान' में 'संगीत और योग से नशे की लत छुडाएँ' नामक समाचार प्रकाशित।

४—७ सितम्बर '८६ से १४ सितम्बर '८६ तक जिला सोलन (हिमाचल प्रदेश) मे योग शिविर का संचालन।

५—राष्ट्रीय दर्शन महासम्मेलन की पत्रिका, जिसका विषय विश्व की प्रमुख ज्वलन्त समस्याओं का दार्शनिक निदान है, मे 'योग और विश्व समस्याएँ' नामक लेख प्रकाशित।

५—आर्यसमाज बी० एच० ई० एल० मे सितम्बर '८६ मे एक दिन व्याख्यान।

७—१९ दिसम्बर को दैनिक 'हिन्दुस्तान' मे 'नशामुक्ति के कारगर साधन—योग और संगीत' नामक लेख प्रकाशित। इसमे योग और संगीत के द्वारा स्मैक, ब्राउन शूगर आदि नशो से छुटकारा पाने की विधि का वर्णन है।

८—नवम्बर '८६ मे आर्यवानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर मे एक सप्ताह तक व्याख्यान।

९—४ जनवरी '८७ को बी०एच०ई०एल० मे 'त्यागी ब्राह्मण समाज' के सम्मेलन मे मुख्य अतिथि के रूप मे व्याख्यान दिया।

(घ) **डा० उमरावसिंह बिष्ट**—प्राध्यापक, नियुक्ति नवम्बर १९८६।
योग्यताएँ—एम०ए०—दर्शनशास्त्र, पी-एच०डी०।
सेमिनार—जोधपुर विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के वार्षिक अधिवेशन में सक्रिय भाग लिया। "Word and Meaning" विषय पर शोध-पत्र वाचन किया।

—डा० जयदेव वेदालंकार
अध्यक्ष, दर्शन विभाग

मनोविज्ञान विभाग

प्राध्यापक वर्ग

१. श्री ओमप्रकाश मिश्र, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

२ डा० हरगोपाल सिह, प्रोफेसर

३. श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी, रीडर

४. श्री सतीशचन्द्र धमीजा, प्रवक्ता

५. डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव, प्रवक्ता

वर्ष १९८६-८७ मे मनोविज्ञान विभाग की स्नातकोत्तर कक्षाओं में एम०ए०-प्रथम वर्ष मे ६ तथा एम०ए०-द्वितीय वर्ष मे २ विद्यार्थियों ने अध्ययन हेतु अपने को पंजीकृत कराया। पूरे सत्र में अध्ययन-अध्यापन सुव्यवस्थित रूप से शांतिपूर्वक चलता रहा। इस वर्ष डा० हरगोपाल सिह, प्रवक्ता मनोविज्ञान की नियुक्ति प्रोफेसर पद पर की गई तथा उनके स्थान पर प्रवक्ता पद पर डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव की नियुक्ति दो वेतनवृद्धि के साथ की गई।

इस वर्ष मनोविज्ञान विभाग के तत्वावधान मे भारतीय मनोविज्ञान पर एक समर इन्स्टीट्यूट का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विद्वानों ने भाग लिया। इस समर इन्स्टीट्यूट का निर्देशन डा० हरगोपाल सिह ने किया। इस सत्र मे नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ में तीन वर्षीय डिग्री कोर्स चलाने हेतु पाठ्यक्रम समिति की बैठक हुई। इस बैठक में डा० लालबचन त्रिपाठी, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय ने विषयविशेषज्ञ के रूप में भाग लिया। इस समिति में न केवल अलंकार का पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया, वरन् एम०ए० के पाठ्यक्रम मे भी वाँछित संशोधन सभी के सहयोग से किया गया।

इस वर्ष विभाग में रिसर्च डिग्री कमेटी की मीटिंग हुई जिसमे डा० प्रभा गुप्ता, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय तथा डा० ए०के० सेन, प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय ने विषय-विशेषज्ञ के रूप में

भाग लिया। इस समिति ने निम्नाँकित विद्यार्थियों को पंजीकृत करने को स्वीकृति प्रदान की—

१ श्री शमशेर सिह
२. कु० देवेन्द्रमोहिनी भसीन
३. कु० मंजूरानी अग्रवाल
४. कु० शोभना पाण्डेय

ये चारों शोधार्थी प्रोफेसर ओमप्रकाश मिश्र के निर्देशन में कार्य करने के लिए पंजीकृत किए गए। इनके अतिरिक्त निम्नलिखित शोधार्थी विभाग में शोधकार्य कर रहे है—

१. कु० मीनाक्षी छाबड़ा, निर्देशक प्रो० ओमप्रकाश मिश्र
२ डा० कमला पाण्डेय, निर्देशक प्रो० ओमप्रकाश मिश्र
३ कु० ममता श्रीवास्तव, निर्देशक प्रो० ओमप्रकाश मिश्र
४ डा० मदनसिह, निर्देशक प्रो० हरगोपाल सिह

कु० ममता श्रीवास्तव को आई०सी०एस०एस०आर० नई दिल्ली से रु० १२००/- की छात्रवृत्ति भी उनकी योग्यता को देखकर स्वीकृत की गई।

विभाग के तत्वावधान में डा० स्वर्ण आतिश 'Role of Deans and Chair Persons in Central Universities' नामक प्रोजेक्ट पर कार्य कर रही है। यह प्रोजेक्ट विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत है।

विभागीय प्राध्यापकों की शैक्षणिक गतिविधियाँ—

१. प्रो० ओमप्रकाश मिश्र

प्रो० मिश्र को इस वर्ष शैक्षणिक गतिविधियाँ इस प्रकार रही—

१. इस वर्ष कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'Asian Conference on Behaviour Taxicology and Clinical Psychology' मे भाग लिया तथा क्लीनिकल साइकोलॉजी के एक सत्र की अध्यक्षता की। उदयपुर सुखाड़िया विश्वविद्यालय में ए०आई०यू० द्वारा आयोजित 'National Seminar on Physical Fitness and Sports Standards in Universities' मे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

२. इस वर्ष गढवाल विश्वविद्यालय में प्रो० मिश्र के निर्देशन में दो शोध ग्रन्थ शोध उपाधि हेतु प्रस्तुत किए गए। गढ़वाल विश्वविद्यालय में गत वर्षों की

भाँति इस वर्ष भी पाठ्यक्रम समिति में विषय-विशेषज्ञ के रूप में आमन्त्रित किया गया तथा अनुसंधान शोध समिति मे विषय-विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत किया गया।

(३) इस वर्ष उत्तर प्रदेश के राज्यपाल ने विश्वविद्यालय चयन समिति में विषय-विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत किया। प्रो० मिश्र ने मेरठ विश्वविद्यालय की चयन समिति में विषय-विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

(४) गढ़वाल विश्वविद्यालय के कुलपति ने मनोविज्ञान में प्रवक्ता से रीडर प्रोन्नति योजना में विषय-विशेषज्ञ के रूप में मनोनीत किया। इस सम्बन्ध में गढ़वाल विश्वविद्यालय की चयन समिति की मीटिंग में भाग लिया।

(५) इस वर्ष 'Journal of Clinical Psychology' के सम्पादक पद पर चयन किया गया।

(६) विश्वविद्यालय मे एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'उत्तर प्रदेश सगीत-शिक्षक काफ्रेंस' के सयोजक के रूप मे कुलपति जी ने मनोनीत किया।

(७) विभागीय कार्यो के अतिरिक्त प्रो० मिश्र क्रीड़ा तथा योग विभाग के अध्यक्ष, राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक तथा University Employment and Guidance Bureau के प्रमुख के रूप में कार्य कर रहे हैं।

(८) इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सम्मुख विश्वविद्यालय की सातवी पंचवर्षीय योजना को प्रस्तुत करने तथा विचार-विमर्श करने हेतु कुलपति जी ने मनोनीत किया।

२. **प्रोफेसर हरगोपाल सिंह**

(१) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम 'भारतीय परम्परागत मनोविज्ञान' पर एक समर इन्स्टीट्यूट को जून १९८६ में १५ दिनों के लिए लगाया जिसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर, रीडर तथा प्रवक्ताओं ने आकर प्रशिक्षण लिया जिसके समाचार और प्रचार अनेकों समाचारपत्रों में छपे।

(२) इन्डियन साइन्स कांग्रेस के बंगलौर सत्र, जनवरी '८७ में 'कन्ट्रीब्यूशन्स टू साइकोलॉजी इन दी अथर्ववेद' विषय पर पेपर पढ़ा।

(३) इन्स्टीट्यूट ऑव क्रिमिनोलॉजी एण्ड फोरेंसिक साइन्स, मिनिस्ट्री ऑव होम अफेयर्स, नई दिल्ली द्वारा संचालित आई०ए०एस० और आई०पी०एस० के लिए कोर्सेस में दो बार अपराधियों के व्यवहार-परिवर्तन पर भाषण दिए।

(४) नजीबाबाद रेडियो स्टेशन से दो बार वार्त्ताएँ प्रसारित हुईं।

विषय—(अ) रंगों का जीवन पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव।

(ब) धूम्रपान—मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया अथवा शारीरिक आवश्यकता।

(५) अंग्रेजी दैनिक पत्र 'टाइम्स ऑव इण्डिया' ने डा० हरगोपाल सिंह के अथर्ववैदिक मनोविज्ञान के लिए किए योगदान की विस्तृत खबर छापी।

(६) दो रिसर्च पेपर छपे—वैदिक पाथ, जून '८६।
संस्कृति : गुरुकुल पत्रिका विशेषांक।

(७) दो रिसर्च पेपर्स पढ़े।

(८) इण्डियन साइन्स कांग्रेस, बंगलौर '८७ के सत्रों में दो बार रिकार्डर के लिए आमन्त्रित कराया गया तथा एक सत्र का चेयरमैन बनाया गया।

(९) सम्पादन—(अ) वैदिक पाथ, त्रैमासिक शोध जर्नल, गुरुकुल कांगड़ी का सम्पादन किया।

(ब) जर्नल ऑव साइन्टिफिक रिसर्च इन प्लान्ट्स एण्ड मेडिसिन, त्रैमासिक का सम्पादन किया।

(१०) एक पुस्तक की पुस्तक समीक्षा की।

(११) चार विभिन्न विषयों पर सम्पादकीय लिखे।

(१२) श्री अरविन्द योग मन्दिर के सत्संगों में कईं बार भाषण दिए।

(१३) जून '८७ में एक अन्य नवीन समर इन्स्टीट्यूट भारतीय मनोविज्ञान के व्यक्तित्व, विकास और व्यवहार-परिवर्तन विषय पर लगा रहे हैं।

३. श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी

श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी की इस वर्ष की शैक्षणिक गतिविधियां इस प्रकार रहीं—

(१) मनोविज्ञान विभाग की प्रयोगशाला, विशेषकर Testing section को व्यवस्थित करने में अपना योगदान दिया।

(२) त्रिवर्षीय डिग्री कोर्स बनाने में विशेष योगदान दिया।

(३) इस वर्ष कुलपति जी द्वारा शोध-समिति में नियुक्ति।

(४) भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार में 'भारतीय मनोविज्ञान' पर प्रमुख वक्ता के रूप में वहाँ के शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

(५) नगर में रोटरी क्लब द्वारा आयोजित अनेक वार्त्ताएँ दी।

४. श्री सतीशचन्द्र धमीजा

श्री धमीजा की इस वर्ष शैक्षणिक गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं :

(१) मनोविज्ञान विभाग की प्रयोगशाला, विशेषकर प्रयोगात्मक विभाग को व्यवस्थित करने में विशेष योगदान दिया।

(२) इनके द्वारा शिक्षा-मनोविज्ञान तथा सांख्यकीय मनोविज्ञान के क्षेत्र में दो पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं।

(३) त्रिवर्षीय डिग्री कोर्स बनाने में विशेष योगदान दिया।

५. डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव

डा० श्रीवास्तव को इस वर्ष की शैक्षणिक गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं :

(१) डा० श्रीवास्तव को I. C. S. S. R. नई दिल्ली ने 'Leadership Styles and Effectiveness – A Comparative Study of Private, Public and Govt. Organisations' रिसर्च प्रोजेक्ट पर कार्य करने हेतु रु० ६६७५/- का अनुदान स्वीकृत किया।

(२) इस वर्ष डा० श्रीवास्तव के ६ शोधपत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशित हुए, जो निम्न प्रकार हैं।

(a) Role of Management in Higher Productivity. The Banker.

(b) To measure the level of job satisfaction in technical and non-technical employees with special reference to different personality characteristics in Public Sectors. Indian Journal of Applied Psychology.

(c) A study of the personality of technical and non-technical personnel.

Perspectives in Psychological Researches.

(d) A comparative study of organizational climate in government department and bank. Perspectives in Psychological Researches.

(e) Achievement motivation and anxiety among school students. Journal of the Institute of Educational Research.

(f) Organizational climate and job satisfaction of junior and middle level central government officers—A comparative study. Indian Psychological Review.

(३) डा० श्रीवास्तव ने ४ शोधपत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने हेतु भेज रखे हैं।

—प्रो० ओमप्रकाश मिश्र
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवम् पुरातत्व विभाग

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर रहने की दिशा में यह विभाग इस वर्ष भी सफल रहा। वर्तमान समय में विभाग में एक प्रोफेसर, दो रीडर तथा दो लेक्चरर निष्ठापूर्वक अपने अध्ययन-अध्यापन मे रत है।

विभागीय प्राध्यापक

(१) डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा, एम०ए०, पी-एच०डी०,
—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

(२) डा० जबरसिंह सेंगर, एम०ए०, पी-एच०डी०—रीडर

(३) डा० श्यामनारायण सिंह, एम० ए०, पी-एच० डी०, एल-एल०बी०
—रीडर

(४) डा० काश्मीर सिंह, एम०ए०, पी-एच०डी०—लेक्चरर

(५) डा० राकेश कुमार शर्मा, एम०ए०, पी-एच०डी०, लेक्चरर

स्नातकोत्तर तथा शोध छात्रों की संख्या—

एम०ए० (प्रथम वर्ष)	११
एम०ए० (द्वितीय वर्ष)	१७
शोध छात्र	१७

शोध कार्य

१७ वर्षों में विभाग में २१ महत्वपूर्ण विषयों पर शोध कार्य हो चुका है। इस वर्ष के दीक्षान्त समारोह में १ शोध छात्र को पी-एच०डी० की उपाधि से विभूषित किया गया। डा० काश्मीर सिंह के निर्देशन में शोध-कार्य सम्पन्न करने वाले डा० केवलकृष्ण का विषय था 'पूर्व मध्यकाल में राजनैतिक संस्थाएँ'।

विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष डा० सिन्हा के निर्देशन में अब तक १२ शोधार्थी उक्त उपाधि ग्रहण कर चुके हैं।

विभाग में वर्तमान में भी शोध-कार्य सफलतापूर्वक चल रहा है। विभागीय प्राध्यापकों के कुशल निर्देशन में निम्न शोधार्थी अपने शोध-कार्य को सम्पन्न करने की दिशा में अग्रसर हैं :

नाम	विषय	निर्देशक
१—श्री जसवीर मलिक	प्राचीन भारत में पौरोहित्य	डा० श्यामनारायण सिह
२- श्री सुखबीर सिंह	पुरातत्व संग्रहालय गुरुकुल कांगड़ी वि०वि० की मृण मूर्तियों एवं पाषाण मूर्तियों का अध्ययन	डा० श्यामनारायण सिंह
३—श्रीमती ऊषा आनन्द	टीचिंग इन एंशियन्ट इन्डिया	डा० श्यामनारायण सिह
४—श्री भारतभूषण शर्मा	गुप्तकाल मे ब्राह्मण धर्म	डा० काश्मीर सिह
५—श्री विनोद शर्मा	प्राचीन भारत में आर्थिक संस्थाएँ	डा० काश्मीर सिह
६—श्री जगदीशचन्द्र ग्रोवर	ब्राह्मनिकल स्कल्पचर्स अन्डर दी पालाज	डा० श्यामनारायण सिह
७—श्री अनिल कुमार	वैदिक धर्म में नारी (महर्षि दयानन्द सरस्वती की मान्यताओं के परिप्रेक्ष्य में)	डा० जबरसिह सेंगर
८—श्री फैयाज अहमद	गुप्तकाल का कलात्मक वैभव	डा० जबरसिह सेंगर
९—श्री सुरेश चन्द्र	पश्चिमी उत्तर प्रदेश में चौहान जाति का इतिहास	डा० जबरसिंह सेंगर

नाम	विषय	निर्देशक
१०–कु. मधुलिका श्रीवास्तव	प्राचीन भारत में कर-व्यवस्था (बौद्ध काल से मौर्य काल)	डा० जबरसिंह सेंगर
११–कु० मधुबाला	महाभारतकालीन युद्ध-प्रणाली एवं प्रयुक्त अस्त्र-शस्त्र	डा० जबरसिंह सेंगर
१२–श्री जितेन्द्रनाथ	दी ध्यानी बुद्धा, देयर प्रज्ञाज एण्ड बोधि-सत्वाज इन इन्डियन आर्ट	डा० बी०सी० सिन्हा
१३–श्रीमती साधना मेहता	प्राचीन भारत में शक्ति-पूजा	डा० बी०सी० सिन्हा
१४–डॉली चटर्जी	प्राचीन भारतीय कला मे वनस्पति एवं पुष्पा-लंकरणो का चित्रण	डा० बी०सी० सिन्हा
१५–श्री आर्येन्द्र सिंह	प्राचीन भारत मे अन्त-र्राज्यीय सम्बन्ध	डा० बी०सी० सिन्हा
१६–श्री सुधाकर शर्मा	बुद्धिस्ट स्कलपचर अन्डर दी पालाज	डा० बी०सी० सिन्हा
१७–कु० रेखा सिन्हा	शुंग काल मे धर्म और कला	डा० श्यामनारायण सिंह

विभागीय प्राध्यापकों द्वारा लेखन-कार्य—

इस सत्र मे विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा के ५ शोध-लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। डा० सिन्हा की अब तक १० पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। विभाग के रीडर डा० जबरसिंह सेंगर के ३ शोध-लेख प्रकाशित हुए तथा उनकी एक पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है। इस विभाग के रीडर डा० श्यामनारायण सिंह की भी दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। प्राध्यापक डा० राकेश शर्मा के ३ शोध-लेख विभिन्न पत्रिकाओं मे प्रकाशित हुए।

बिजिटिंग प्रोफेसर का आगमन

इस सत्र मे भारत के प्रसिद्ध पुरातत्वविद् डा० आर०सी० अग्रवाल, भूत-पूर्व निदेशक, पुरातत्व संग्रहालय, राजस्थान सरकार का आगमन विजिटिंग प्रोफेसर के रूप मे हुआ। वह अक्टूबर-नवम्बर माह मे विश्वविद्यालय में रहे। डा० अग्रवाल का आगमन विभाग को पुरातत्व के क्षेत्र में सुदृढ़ तथा नवीन जानकारियाँ देने के सन्दर्भ मे अत्यधिक लाभदायक रहा। विभाग में डा० अग्रवाल के अतिरिक्त डा० उपेन्द्र ठाकुर, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, प्राचीन भारत एवं एशियाई अध्ययन विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया-बिहार, डा० विमलचन्द्र पाण्डेय, भूतपूर्व प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग, पंजाब विश्व-विद्यालय चण्डीगढ तथा मेरठ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० के० के० शर्मा के विश्वविद्यालय आगमन से विभाग को पर्याप्त प्रेरणा मिली।

विभाग की अन्य उपलब्धियाँ

विभाग के अग पुरातत्व सग्रहालय में इस सत्र मे ८ मार्च को प्रस्तर-प्रतिमा वीथिका का उद्‌घाटन श्री आर० सी० त्रिपाठी, संयुक्त सचिव, भारत सरकार द्वारा किया गया। इसी सन्दर्भ में उल्लेखनीय है कि डा० जबरसिंह सगर के निर्देशन में पुरातत्व संग्रहालय प्रगति की ओर अग्रसर है। इसी सत्र में आस्ट्रे-लिया की शोध-छात्रा श्रीमती एम०डी० मकोन अपने शोध-कार्य के सम्बन्ध मे निर्देशन हेतु विभाग में आई। उनका मार्गदर्शन प्रो० सिन्हा ने किया।

विभाग के रीडर डा० श्यामनारायण सिंह, विश्वविद्यालय प्रशासन के सहयोग हेतु उप-कुलसचिव के कार्यभार को ग्रहण किए हुए है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा विभिन्न अवसरो पर सौंपे गए कार्यों को विभाग के समस्त प्राध्यापकों ने पूर्ण निष्ठा के साथ सम्पन्न किया है। विभागीय सग्रहालय को राष्ट्रीयस्तर प्रदान करने की दिशा में श्री कुलपति जी का विशेष प्रयास स्तुत्य है।

—विनोदचन्द्र सिन्हा
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

पुरातत्व संग्रहालय

विश्वविद्यालय के पुरातत्व संग्रहालय ने १९८६-८७ के सत्र में अपने जीवनकाल के अस्सी वर्ष पूर्ण किए। डा० हरिदत्त वेदालंकार, डा० राजगोपाल अय्यर, डा० गंगाराम गर्ग एवं डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा के कुशल निर्देशन मे संग्रहालय उत्तरोत्तर विकास के आयाम प्रतिष्ठापित करता आया है। संग्रहालय का वर्तमान रूप, बर्तमान अधिकारियों एवं कर्मचारियों के श्रम का प्रतिफल है।

सत्र १९८६-८७ मे विश्वविद्यालय संग्रहालय को विश्वविद्यालय के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से प्राप्त अनुदान राशि से निम्नलिखित कार्य सम्पन्न हुए :

अ—उत्तर प्रदेश शासन द्वारा अशासकीय संग्रहालयों के विकास मद के अन्तर्गत प्राप्त राशि १५,०००/- रुपये से प्रथम तल पर पूर्वीय वीथिका में काष्ठ पारदर्शी दर्पण विभाजक भीति का निर्माण कराया गया जिससे लम्बी दीर्घा तीन भागों मे विभाजित हो गयी। इन तीनो कक्षो में क्रमशः अस्त्र-शस्त्र कक्ष, विविध कक्ष एवं दग्धचूर्ण अनुकृतियाँ प्रदर्श की गयी है।

ब—भारत सरकार के शिक्षा एवं संस्कृति विभाग से राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली के द्वारा प्राप्त अनुदान राशि ५०,०००/- रुपये से प्रस्तर प्रतिमा कक्ष में ईंट द्वारा निर्मित आधारस्तम्भ पर काष्ठ एवं पारदर्शी कांच द्वारा दस प्रदर्श पटल का निर्माण कार्य किया गया। यह कार्य अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह मे प्रारम्भ हुआ तथा दिसम्बर माह के तृतीय सप्ताह मे समाप्त हुआ। इन प्रदर्श पटल पर २६,२५०/- रुपये की राशि व्यय हुयी।

२२ दिसम्बर १९८६ को मुद्राकक्ष में नये सात शो-केस बनाने का कार्य हुआ जो २५-२-८७ को पूरा हुआ। इस पर कुल २३,६७५/- रुपये की राशि व्यय हुई।

अन्य आन्तरिक परिवर्तनों में केन्द्रीय कक्ष में प्रदर्श विभिन्न कालो के मृद्-भाण्डों को प्रथम तल पर दक्षिणोत्तर कक्ष में नियोजित किया गया। प्रस्तर

प्रतिमा, मृण मूर्तियों, सिन्धु सभ्यता के नगर मोहन-जोदड़ों एवं कालीबगान से प्राप्त सामग्री एवं ताम्रकालीन उपकरणों को नये परिवेश में प्रदर्शित किया गया।

नये परिवेश में नवनिर्मित प्रदर्श पटल में प्रदर्शित प्रस्तर प्रतिमा कक्ष का उद्घाटन-समारोह दिनांक ८ मार्च १९८७ को भारत सरकार के मानव ससाधन विकास मन्त्रालय, संस्कृति विभाग के संयुक्त सचिव श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी द्वारा सम्पन्न हुआ।

इस सत्र में संग्रहालय दर्शकों की संख्या ९८४९ रही। संग्रहालय आने वाले कुछ विशिष्ट दर्शकों के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय है :—

१—डा० तुलीराम गुप्ता, भूतपूर्व जिला प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, गंगानगर, राजस्थान।

२—श्री ए० सिंह, न्यायाधीश, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद, उ०प्र०।

३—श्री सीताराम निषाद, राज्यमन्त्री, मत्स्य विभाग, उ०प्र० शासन, लखनऊ।

४—श्री विष्णु प्रभाकर।

५—श्री ए०एन० शोक, राजदूत, कम्पूचिया गणराज्य, नई दिल्ली।

६—श्री जे०सी० ह्यूम, क्यूबा दूतावास, नई दिल्ली।

७—श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी, संयुक्त सचिव, केन्द्र सरकार, भारत (नई दिल्ली)।

८—श्री राम औतार दीक्षित, राज्य वन मन्त्री, उ०प्र० शासन, लखनऊ।

९—श्री वीरबहादुर सिंह, मुख्यमन्त्री उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ।

१०—डा० धर्मपाल, महामन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली।

११—प्रो० शेरसिंह, भूतपूर्व शिक्षा राज्य मन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।

विशिष्ट दर्शकों की सम्मतियाँ—

आज मुझे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का संग्रहालय देखने का सौभाग्य मिला। देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। संग्रहालय मे अति दुर्लभ वस्तुएँ उपलब्ध करायी गई हैं जो पुरातन इतिहास व संस्कृति का ज्ञान कराती है। संग्रहालय का प्रबन्ध व रख-रखाव सुन्दर है। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा अभी तक इस संग्रहालय को जो अनुदान दिया जाता है, वह कम है। यह संग्रहालय उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत हरिद्वार जैसे महत्वपूर्ण स्थान पर स्थापित है जो उत्तर

प्रदेश का गौरव बढाता है। अतएव उत्तर प्रदेश शासन द्वारा विशेष अनुदान देकर इसके विकास की आवश्यकता है। यह संग्रहालय वास्तव मे देखने योग्य है। यह हमारी अमूल्य निधि के रूप में है। पुरातत्व विभाग का सहयोग प्रशंसनीय है।

ह० सीताराम निषाद
राज्यमन्त्री, उ०प्र० शासन

१५-१२-८६

* *

आज मुझे इस विश्वविद्यालय की संग्रहालय वीथिकाएँ देखने का अवसर मिला। सिन्धु घाटी की सभ्यता से लगभग वर्तमान समय तक के कला-अवशेष और मूर्तियाँ इस संग्रहालय मे हैं। यह सामग्री विश्वविद्यालय के छात्रों को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के विकास और इतिहास के अध्ययन के लिए परम उपयोगी है। मुझे विश्वास है कि विश्वविद्यालय का यह संग्रहालय, संस्कृति एवं शिक्षा को एक महत्वपूर्ण कड़ी को भूमिका निर्वाह करेगा। इसके विकास के लिए शुभ-कामनाएँ।

—ह० रमेशचन्द्र त्रिपाठी
संयुक्त सचिव एवं महानिदेशक
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
केन्द्र सरकार, नई दिल्ली।

८-३-८७

* *

विशाल संग्रहालय देखने योग्य है।

—ह० वीरबहादुर सिंह
मुख्य मन्त्री, उत्तर प्रदेश

१४-४-८७

* *

आज कई वर्ष के पश्चात् फिर से संग्रहालय को देखने का अवसर मिला। पहली बार देखा उसके पश्चात् काफी विस्तार हुआ है और सभी मूर्तियों, मृण्मूर्तियों, सिक्कों, हथियारों आदि का प्रदर्शन बहुत अच्छा लगा है। प्राचीन इतिहास के विद्यार्थियों के लिए इसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए संग्रहालय का

विस्तार होते रहना चाहिए। इसे देर से ही, जहाँ सम्भव हो और सामग्री उपलब्ध हो, खुदाई करवानी चाहिए, और इस क्षेत्र का तो यह सर्वोत्तम संग्रहालय माना जाए ऐसा प्रयास होना चाहिए। निदेशक महोदय तथा उनके सहयोगियों का मैं बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने सभी कक्षों को दिखाते हुए पूरा विवरण भी दिया।

१६-४-८७ —ह० प्रो० शेरसिंह

सामान्यत: सग्रहालय दर्शकों के लिए प्रात: १० बजे से साय ५ बजे तक खुला रहता है। वर्तमान समय मे संग्रहालय का समय प्रात: ६ बजे से सायं ५ बजे तक है।

वर्तमान सत्र मे संग्रहालय म विभिन्न पदों पर निम्नलिखित पदाधिकारियों ने कार्य किया—

प्रो० विनोदचन्द्र सिन्हा अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, सस्कृति एवं पुरातत्व विभाग	निदेशक प्रात: ८-११-८६
डा० जबरसिंह सेंगर रीडर, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एव पुरातत्व	निदेशक ८-११-८६ से
श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव	क्यूरेटर
श्री सुखबीरसिंह	सहायक क्यूरेटर
श्री बृजेन्द्रकुमार जैरथ	सग्रहालय सहायक
श्री बालकृष्ण शुक्ल	कार्यालय लिपिक
श्री रमेशचन्द्र पाल	वीथिका भृत्य
श्री ओमप्रकाश	माली (उद्यान कर्मचारी)
श्री फूलसिंह	सफाई कर्मचारी
श्री वासुदेव मिश्र	चौकीदार

अधिकारियों के उल्लेखनीय कार्य

वर्तमान सत्र में संग्रहालय के अधिकारियों के उल्लेखनीय कार्य निम्न है :

निदेशक—८ मार्च '८७ को संग्रहालय में प्रस्तर वीथिका का उद्घाटन-समारोह सम्पन्न कराया। इस वर्ष दो लेख प्रकाशित हुए।

क्यूरेटर—श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव ने राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली, संस्कृति विभाग, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे संग्रहालय विज्ञान का ६ सप्ताह के अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम को १९८६-८७ के सत्र में सफलतापूर्वक ग्रेड 'ए' में उत्तीर्ण किया। इस प्रशिक्षण हेतु श्री श्रीवास्तव को विश्वविद्यालय ने भेजा था।

इस सत्र में निम्नलिखित लेख प्रकाशित हुए :

१—प्रागैतिहासिक सहारनपुर, **सहारनपुर सन्दर्भ**, सन्दर्भ प्रकाशन, सहारनपुर।

२—भारतीय महाकाव्य एवं पुरातत्व, **प्रह्लाद**, अक्टूबर १९८६, पृ० स० ५१-५६।

३—प्रो० बी०पी० सिन्हा फेलिसिटेशन वोल्यूम, दिल्ली में एक लेख छपा।

४—पुरातत्व संग्रहालय, **गुरुकुल पत्रिका**, नवम्बर १९८६, पृ०सं० २५-३४।

संग्रहालय सहायक—श्री बृजेन्द्रकुमार जैरथ ने अपना शोध-निबन्ध, महाराजा स्याजी विश्वविद्यालय बड़ौदा, गुजरात में दिनांक २३ अक्टूबर १९८६ को शोध-उपाधि प्राप्त करने हेतु जमा कर दिया है।

—डा० जबरसिंह सेंगर
निदेशक

अंग्रेजी विभाग

विभागीय प्राध्यापक—

१—डा० राधेलाल वार्ष्णेय, एम०ए०, पी-एच०डी०, पी०जी०सी०टी०ई०, डिप०टी०ई० (सी०आई०एफ०एल०), प्रोफेसर एवं अध्यक्ष।

२—श्री सदाशिव भगत, एम०ए०, रीडर।

३—डा० नारायण शर्मा, एम०ए०, पी-एच०डी०, रीडर।

४—डा० श्रवणकुमार, एम०ए०, एम०फिल०, पी-एच०डी०, प्रवक्ता।

५—डा० अम्बुजकुमार शर्मा, एम०ए०, एम०फिल०, पी-एच०डी०, प्रवक्ता।

विभागीय गतिविधियाँ तथा अनुसन्धान में प्रगति—

विभाग में एम०ए० तथा पी-एच०डी० तक अध्ययन की व्यवस्था है। एम०ए० प्रथम वर्ष में ५० प्रतिशत अंक प्राप्त होने पर, द्वितीय वर्ष में लघुप्रबन्ध (Dissertation) लेने की तथा दोनो ही वर्षो मे मौखिक परीक्षाओं का प्रावधान है। विभाग मे वर्तमान समय मे पाँच मे से चार प्राध्यापक पी-एच०डी० हैं, तथा अन्य एक डाक्टरेट उपाधि हेतु शोध-कार्य मे संलग्न है और शीघ्र ही डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर लेंगे।

विभाग मे भाषा-विज्ञान प्रयोगशाला का भी विकास किया गया है।

विभाग मे अनुसन्धान की विशेषता यह है कि इसमे भारतीय आंग्ल-साहित्य (Indo-English) तथा भारतीय विचार और विषयों (Indian thoughts and themes) एवं तुलनात्मक साहित्य (Comparative literature) को प्राथमिकता दी जाती है। इस समय विभाग के विभिन्न अध्यापकों के अधीन लगभग ६ शोधार्थी शोध कर रहे है। कुछ अन्य अभ्यार्थियों के अनुसन्धान हेतु आए हुए प्रस्ताव और आवेदन-पत्र विभाग की रिसर्च डिग्री कमेटी ने अस्वीकृत कर दिये थे। अंग्रेजी विभाग की ओर से अनुसन्धान की उन्नति हेतु पुस्तकालय में नवीन पुस्तकें तथा अनुसन्धान-पत्रिकाएँ एवं सन्दर्भ-ग्रन्थ भी मँगवाए गये हैं।

इस वर्ष अंग्रेजी विभाग में एक त्रैमासिक दक्षता प्रमाण-पत्र कोर्स भी प्रारम्भ किया गया। इस कोर्स का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी बोलना सिखाना है।

इस वर्ष विभाग में अंग्रेजी शिक्षकों का एक सम्मेलन १५-१६ फरवरी को हुआ जिसमें मुख्य भाषण डा० आर०एस० सिंह, प्रोफ़ेसर तथा अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने दिया। विभाग के अन्य आचार्यों ने भी भाषण दिए।

विभाग में अनेक विद्वानों के भाषण भी हुए। मुख्य रूप से प्रो० एन०पी० गुप्ता का "टीचिंग ऑव शेक्सपियर" महत्त्वपूर्ण है। विद्यार्थियों ने भी सेमिनारों में पेपर पढ़े।

विभागीय शिक्षकों के व्यक्तिगत कार्य-विवरण—

(१) डा० राधेलाल वार्ष्णेय—

विभागाध्यक्ष डा० राधेलाल वार्ष्णेय ने १९८४ में सोवियत संघ की यात्रा की। मास्को और लेनिनग्राद के विश्वविद्यालयों तथा उच्च-संस्थानों में भाषण दिए। यू०जी०सी० समर इन्स्टीट्यूट इंगलिश में उच्चस्तर का कार्य करने के कारण यू०जी०सी० फैलोशिप प्राप्त की। रोटरी डिस्ट्रिक्ट ३१० में अंग्रेजी निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान तथा शील्ड प्राप्त की। लगभग १०० पुस्तकें, ५० लेख और कविताएँ प्रकाशित। अनेक पुस्तकों की समीक्षा लिखी। उच्च-स्तरीय सम्मेलनों का संचालन किया। वैदिक-पाथ के सम्पादन तथा प्रशासनिक कार्यों में सहयोग। अनेक साहित्यिक सम्मेलनों, संगोष्ठियों, टीचर्स ट्रेनिंग सम्मेलनों में सक्रिय योगदान तथा अंग्रेजी प्राध्यापकों को प्रशिक्षण एवं विभिन्न रिपोर्ट आदि का लेखन-सम्पादन।

इस वर्ष विश्वविद्यालय में जस्टिस चन्द्रप्रकाश अग्रवाल के भाषण का संयोजन किया तथा परीक्षाध्यक्ष के रूप में कार्य करके परीक्षाओं को शान्तिपूर्वक सफलता से सम्पन्न कराया। साथ ही "वैदिक-पाथ" के सम्पादन में सहायता प्रदान की। वार्षिक-विवरणी का सम्पादन किया।

(क) शोध निर्देशन—

चार शोधार्थियों को विभिन्न विषयों पर शोध करा रहे हैं:

१—पी०एस० नेगी "एलीनेशन इन द पोइट्री ऑव कीट्स"

२—ए० गुप्ता "एक्सप्रेसिनिज्म एण्ड रिअलिज्म इन द प्लेज़ ऑव टिनैसी विलियम्स"

३—पी० चौधरी "इमेजरी इन द प्लेज़ ऑव क्रिस्टोफर फ्राई"

४—ए० मगन "द थीम ऑव एलीनेशन इन द पोइट्री ऑव बाइरन।"

५—इस वर्ष आर०डी०सी० ने दो अन्य शोधार्थियों के शोध-विषय भी स्वीकृत कर दिए हैं। एक छात्र ने गत वर्ष और एक छात्र ने इस वर्ष डा० वार्ष्णेय के निर्देशन में लघु-प्रबन्ध प्रस्तुत किए।

(ख) कान्फ्रेंस तथा व्याख्यान—

१—मेरठ विश्वविद्यालय मे डी०एच० लौरेंस तथा टैगोर पर कान्फ्रेंसिज मे भाग लिया। बी०एस०एम० कालेज रुड़की में फरवरी तथा मार्च मास में कान्फ्रेन्स मे भाग लिया और वही तीन पेपर प्रस्तुत किए :

(१) "द स्ट्रीम ऑव कौन्शसनॅस नोवल"।

(२) "प्री रैफैलाइट पोइट्री"।

(३) "टी०एस० ऐलियट एज़ ए क्रिटिक"।

२—ई०एम०बी०, बी०एच०ई०एल० को शिक्षण-संस्थाओं तथा केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों को अंग्रेजी भाषा-अध्यापन की नवीनतम तकनीक तथा रूस में अपनाई गई विधियों पर व्याख्यान दिए।

३—आल इण्डिया रेडियो, नजीबाबाद से रूसी भ्रमण के अनुभवो पर ४ अगस्त को वार्त्ता प्रसारित हुई।

४—इंगलिश टीचर्स कान्फ्रेंस में "इंगलिश टीचिंग" पर व्याख्यान दिया।

(ग) लेखन, सम्पादन, प्रकाशन—

प्रकाशित पुस्तकें (१९८६–८७)—

१—इमरसन : सलैक्टेड एसेज एण्ड पोइम्स

१—ओनील : डिजाइर अन्डर द ऐल्म्स

३—लौरेंस : वीमन इन लव

लेख—

१—"टीचिंग ऑव इंगलिश" : द हौक ।

२—"ऐक्जिसटैंशियलिज्म" : द हौक ।

३—"द गीता एण्ड डब्ल्यू० बी० येट्स" : द वैदिक पाथ, मार्च १९८६ ।

(२) **श्री सदाशिव भगत**—रीडर ।

शोध निर्देशन एवं कार्य—

(क) "द इमेज ऑव वुमन इन द नौवल्स ऑव इन्डो-एंगलियन राइटर्स" विषय पर शोधकार्य करवा रहे है ।
शोधार्थी : श्री पी०एस० चौहान ।

(ख) एक और शोधार्थी द्वारा स्वामी दयानन्द तथा अरविन्दो पर तुलनात्मक शोध-अध्ययन प्रारम्भ ।

(ग) पी-एच०डी० शोध-प्रबन्ध का मूल्यांकन तथा मौखिकी परीक्षा लेना ।

(घ) अवध विश्वविद्यालय के अंग्रेजी अनुसन्धान समिति की बैठकों मे भाग ।

(ङ) पटना विश्वविद्यालय में शोध-मूल्यांकन ।

(च) १९८६ में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय मे डी०एच० लौरेंस पर हुए सेमिनार में भाग लिया ।

(३) **डा० नारायण शर्मा**—रीडर ।

(क) चार शोध-विद्यार्थियों को पी-एच०डी० करा रहे हैं । इनके विषय टैगोर के काव्य, राजा राउ की उपन्यास-कला एवं अंग्रेजी और भारतीय कवियों की अंग्रेजी कविता में स्वतन्त्रता, समानता और सौहार्द्र की भावनाओं से सम्बन्धित हैं ।

(ख) मेरठ विश्वविद्यालय मे टैगोर पर कान्फ्रेंस में भाग लिया । इस वर्ष रुड़की बी०एस०एम० कालेज में सेमिनार में भाग लिया तथा "हैमिंग्वेज नोवल्स" पर एक पत्र पढ़ा ।

(ग) निम्नलिखित लेख प्रकाशित होने वाले हैं :—

१—रिद्म एण्ड इमेजरी इन द पोइट्री ऑव डी०एच० लौरेंस ।

२—गीता एण्ड द पोइट्री ऑव श्री अरविन्दो ।

३—श्री अरविन्दोज कान्सेप्ट ऑव ओवरहैड पोइट्री ।

(घ) इस सत्र में निम्नलिखित लेख प्रकाशित हुए :—

१—"वेदान्त : इट्स थियौरी एण्ड प्रैक्टिस", तारापीठ, कलकत्ता की वार्षिक पत्रिका (मार्च १६८६)।

(४) **डा० श्रवणकुमार शर्मा**—प्रवक्ता।

(क) डी०एच० लौरेंस तथा टैगोर पर कान्फ्रेंसिस (मेरठ विश्वविद्यालय) में भाग लिया।

(ख) श्री अरविन्दो पर एक लेख प्रकाशित।

(ग) अन्य विभागीय गतिविधियो में योगदान।

(घ) खेलों की टीमों के साथ बाह्य यात्रा। विश्वविद्यालय क्रिकेट टीम के मैनेजर के रूप में जयपुर गये।

(ङ) मेरठ विश्वविद्यालय में हुए अंग्रेजी के यू०जी०सी० समर इन्स्टीट्यूट में सक्रिय भाग।

(च) रुड़की में बी०एस०एम० कालेज मे इंगलिश फिक्शन पर हुई कान्फ्रेन्स में भाग।

(छ) स्कॉट के काव्य पर एक लेख प्रकाशित। अन्य लेख प्रकाशन में।

(ज) इंगलिश टीचर्स कान्फ्रेन्स में सक्रिय भाग तथा योगदान।

(५) **डा० अम्बुज शर्मा**—प्रवक्ता।

(अ) सभी विभागीय गतिविधियों मे योगदान।

(ब) गाजियाबाद तथा मेरठ सम्मेलनों में भाग।

(स) मुल्कराज आनन्द पर शोध-प्रबन्ध को प्रकाशित कराने के प्रयत्न।

(द) इंगलिश टीचर्स कान्फ्रेन्स में सक्रिय भाग तथा योगदान।

—डा० आर०एल० वार्ष्णेय
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष

हिन्दी विभाग

गुरुकुल कांगडी का यह सौभाग्य है कि कभी यहाँ शाहपुरा पीठ पर तुलनात्मक हिन्दी आलोचना के जन्मदाता आचार्य पद्मसिंह शर्मा तथा हिन्दी के प्रख्यात वैयाकरण-आचार्य पण्डित किशोरीदास वाजपेयी हिन्दी के प्राध्यापक रहे। विश्वविद्यालय का दर्जा मिलने पर इसके स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी हुए। यहाँ के हिन्दी प्राध्यापक डा० सुरेश विद्यालंकार आजकल केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा मे अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान के आचार्य हैं।

अपने स्थापनाकाल से ही भारतीय संस्कृति और चिन्तन को बढावा देने के लिए यहाँ स्नातकोत्तरस्तर पर हिन्दी-साहित्य का अध्ययन और अनुसन्धान कार्य प्रारम्भ हुआ। मध्ययुगीन आचार्यों और सन्तो ने राष्ट्रीय एकता, समानता, बन्धुत्व, धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता तथा चरित्र-निर्माण को अपने साहित्य मे मुख्य स्थान दिया है। अतः युग की आवश्यकता को समझते हुए उक्त जीवन-मूल्यों के सन्दर्भ मे हिन्दी-साहित्य का शोध-संवलित अध्ययन विभाग की प्रमुख विशेषता रही है। आर्यसमाज का राष्ट्रीय पुनर्जागरण, स्वतन्त्रता आन्दोलन तथा भारत के पुनर्निर्माण मे महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अतः हिन्दी के प्रचार-प्रसार और साहित्य-सृजन की दिशा मे आर्यसमाज के अवदान का मूल्यांकन करने के लिए विभाग ने योजनाबद्ध कार्य करने का संकल्प लिया है। विभागीय प्राध्यापकों और शोधार्थियों द्वारा किया जा रहा यह कार्य इस वर्ष के लिए उपलब्धि होगा।

सम्प्रति हिन्दी-विभाग में कार्य कर रहे प्राध्यापकों का विवरण इस प्रकार है :

१—डा० विष्णुदत्त राकेश एम०ए०, पी-एच०डी०, डी०लिट्०	—प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
२—रिक्त	—रीडर
३—डा० ज्ञानचन्द्र रावल एम०ए०, पी-एच०डी०	—प्रवक्ता

४—डा० भगवानदेव पाण्डेय —प्रवक्ता
एम०ए०, पी-एच०डी०

५—डा० सन्तराम वैश्य —प्रवक्ता
एम०ए०, पी-एच०डी०

डा० सन्तराम वैश्य की नियुक्ति इस वर्ष हिन्दी प्रवक्ता के पद पर हुई। नियमित अध्यापन तथा अनुसन्धान के अतिरिक्त विभाग से 'प्रह्लाद' नामक त्रैमासिक अनुसन्धान-पत्रिका भी प्रकाशित हो रही है। प्राच्यविद्याओं की हिन्दी माध्यम से निकलने वाली यह उल्लेखनीय पत्रिका है जिसके प्रमुख सम्पादक डा० विष्णुदत्त राकेश हैं।

इस वर्ष विभाग की विभिन्न गतिविधियों के सिलसिले में जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व-विभागाध्यक्ष डा० नित्यानंद शर्मा, राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व-विभागाध्यक्ष डा० लालताप्रसाद सक्सेना, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० महेन्द्रकुमार, बड़ौदा विश्वविद्यालय के डा० मदनगोपाल गुप्त एवं लालबहादुर शास्त्री प्रशासनिक अकादमी के अन्य भारतीय भाषा एव हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० कैलासचन्द्र भाटिया पधारे तथा उनसे प्राध्यापक एवं विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

श्रद्धानन्द राष्ट्रीय प्रसार व्याख्यानमाला का आयोजन ४ मार्च १९८७ को सोल्लास सम्पन्न हुआ। प्रमुख व्याख्याता के रूप मे हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध गांधीवादी साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर ने 'भारतीय नवजागरण और स्वामी श्रद्धानन्द' विषय पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिया। स्वामी जी के प्रदेय का आधुनिक सन्दर्भों मे उद्घाटन करते हुए उन्होंने स्वामी जी को युग-निर्माता बताया। प्रभाकर जी ने निबन्ध, कहानी, गद्यगीत, उपन्यास, स्केच, संस्मरण, रिपोर्ताज, रेडियो नाटक, नाटक, एकांकी तथा जीवनी—सभी विधाओं में अधिकारपूर्वक लिखा है। वह एकांकीकार के रूप में विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जाते हैं। अतः विद्यार्थियों ने 'सर्जना और प्रेषणीयता' सम्बन्धी जिज्ञासाओं का समाधान भी प्रभाकर जी से प्राप्त किया। इस समारोह की अध्यक्षता प्रख्यात इतिहासकार डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने की।

लेखन-प्रकाशन की दृष्टि से भी विभाग मे अच्छा कार्य हुआ। डा० विष्णुदत्त राकेश ने 'वैदिक संस्कृति और दर्शन के वैज्ञानिक भाष्यकार डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार' पर मूल्यांकन-ग्रन्थ का सम्पादन किया। 'चिन्तन के

क्षितिज' नाम से उनके शोध-निबन्धो का संकलन प्रकाशित होने गया। शोध-पत्रों और साहित्यिक ग्रन्थों में उनके निबन्ध प्रकाशित हुए तथा आकाशवाणी से वार्त्ताएँ प्रसारित हुई। वार्षिकोत्सव पर सुप्रसिद्ध हिन्दी गीतकार श्री मधुर शास्त्री तथा कादम्बिनी के उप-सम्पादक एव व्यंग्यकार श्री सुरेश नीरव की सन्निधि में आयोजित भव्य कवि-सम्मेलन का संचालन किया। इन्दिरा गांधी खुला विश्व-विद्यालय दिल्ली के लिए पाठ्य-सामग्री तैयार की। रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय की पाठ्य-समिति में विशेषज्ञ के रूप मे भाग लिया। अनुदान-आयोग के सम्मुख विश्वविद्यालय की सातवी पंचवर्षीय योजना को प्रस्तुत करने तथा विचार-विमर्श के लिए कुलपति जी द्वारा मनोनीत किया गया।

विभाग के अन्य प्राध्यापकों ने भी 'प्रह्लाद', 'गुरुकुल पत्रिका' के लिए लेख लिखे तथा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठियों मे भाग लिया।

—**डा० विष्णुदत्त राकेश**
विभागाध्यक्ष

गणित विभाग

शिक्षकवर्ग—

प्रो० एस०सी० त्यागी	—	प्रोफेसर, अध्यक्ष एवं प्रधानाचार्य
डा० एस०एल० सिंह	—	प्रोफेसर
श्री वी०पी० सिंह	—	रीडर
डा० वीरेन्द्र अरोड़ा	—	रीडर (कुलसचिव पद पर कार्यरत)
श्री वी० कुमार	—	रीडर
श्री एम०पी० सिंह	—	प्रवक्ता
श्री एच०एल० गुलाटी	—	प्रवक्ता

छात्र संख्या—

बी०एस-सी०, भाग एक	—	१४६
बी०एस-सी०, भाग दो	—	३८
एम० एस-सी०, पूर्वार्द्ध	—	०७
एम० एस-सी०, उत्तरार्द्ध	—	०४
शोध छात्र	—	०२

पाठ्यक्रम—

आगामी सत्र से त्रिवर्षीय स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम लागू करने हेतु नवीन पाठ्यक्रम तैयार किया गया तथा स्नातकस्तर पर कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग का एक वैकल्पिक प्रश्नपत्र प्रस्तावित है।

शोध सम्बन्धी गतिविधि—

इस सत्र में गणित में पी-एच०डी० उपाधि कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जिसके अन्तर्गत शोध समिति ने अनुशसासहित दो शोध विषय स्वीकृत किए। एक शोधछात्र 'भारतीय प्राचीन गणित' में कार्य कर रहा है तथा दूसरा शोधछात्र

Non-linear Analysis की कुछ नवीनतम समस्याओं पर कार्य कर रहा है। उनके स्वीकृत शोध विषय के शीर्षक निम्नवत् है—

१—A study of Siddhanta Siromani
(अनुसन्धित्सु—रमेश चन्द)

२—२-दूरीक, २-बानाख् एवं सांस्थितिकतः सदिश समष्टियों में अमूर्त संपात तथा स्थिर बिंदु समीकरणों के साधन का अस्तित्व
(अनुसन्धित्सु—देवेन्द्र दत्त शर्मा)

[दोनों शोध-छात्रों के शोध पर्यवेक्षक—डा० एस०एल० सिह]

इनके अतिरिक्त विभाग के सर्वश्री वी० कुमार, एम०पी० सिह तथा एच०एल० गुलाटी डाक्टरेट उपाधि हेतु शोधकार्य कर रहे हैं। इन प्राध्यापकों के शोध-विषय निम्नवत् हैं.

१. दूरीक और २-दूरीक समष्टियो मे संपाती एवं स्थिर बिंदु प्रमेय।
(वी० कुमार)

२. Some problems on queueing and sequencing theory.
(H.L. Gulati)

डा० एस०एल० सिह के निर्देशन में प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध 'Coincidence theorems and fixed point theorems in 2-metric spaces' पर गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर ने श्री वीरेन्द्र (अरोड़ा) को गणित विषय में डी०फिल्० की उपाधि प्रदान की।

प्राध्यापकों के शोध-कार्य—

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा १९८६-८७ में निम्न शोध-पत्र प्रकाशित कराये गए—

१. **एच० एल० गुलाटी**—On priority tandem queueing, J. Indian Soc. Stat. Oper Res. 7 (1986), 5–13.
(Joint with A.D. Heydari)

२. **एस०एल० सिह**—(i) A note on recent generalizations of Jungck contraction principle, J. UPGC. Acad. Soc. 3 (1986), 13-18. (Joint with B.M.L. Tiwari).

(ii) A note on fixed point theorem of Park-Rhoades and Jungck contraction principle, ibid, 3 (1986), 8-12. (Joint with Virendra).

(iii A common fixed point theorem for two systems of transformations, Pusan Kyo. Math. J 2 (1986), 1-8. (Joint with C. Kulshrestha)

(iv) Coincidence theorems for hybrid contractions, Math. Nachr. 127 (1986), 177-180.
(Joint with S.A. Naimpally & J.N.M. Whitfield)

(v) Coincidence theorems on 2-metric spaces, Nat. Acad. Sci. Letters. 9 (1986), No. 1, 19-22.

(vi) General fixed point theorems in probabilistic metric and uniform spaces, Indian J. Math. 28/29 (1986-87). (Joint with B.D. Pant & S.N. Mishra)

(vii) Fixed points of mappings with diminishing probabilistic orbital diameters, Punjab Univ. J. Math. 19 (1986), 99-105. (Joint with B.D. Pant)

(viii) Coincidence theorems, fixed point theorems and convergence of the sequences of coincidence values, Punjab Univ. J. Math. 19 (1986), 83-97.

(ix) Fixed point theorems for family of mappings, Pusan Kyo. Math. J. 3 (1983). (Joint with Virendra).

वार्षिक अधिवेशन, शीतकालीन संस्थान, सिम्पोजियम आदि—

उ०प्र० राजकीय महाविद्यालय एकेडेमिक सोसाइटी, इलाहाबाद के तृतीय वार्षिक अधिवेशन (ज्ञानपुर-वाराणसी, नवम्बर १९८६) में डा० एस० एल० सिह ने उपाध्यक्ष (वर्ष १९८६) के रूप में भाग लिया एवं शोध-प्रपत्र प्रस्तुत किया तथा आगामी दो वर्षों हेतु सोसाइटी के उपाध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित किये गए। (उच्च शिक्षा निदेशक, उ०प्र० इस सोसाइटी का पदेन अध्यक्ष होता है।)

विभाग के डा० एस०एल० सिंह ने डी०एस०टी० द्वारा प्रायोजित एवं इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑव साइन्स, बंगलौर द्वारा आयोजित तेरह-दिवसीय 'Bifurcation Theory & Applications' शीतकालीन संस्थान (दिसम्बर १५-२७, १९८६) में भाग लिया।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित एवं मैत्रेयी कालेज, दिल्ली द्वारा आयोजित चार-दिवसीय 'Recent Advances in General Topology' सिम्पोजियम (२२-२५ मार्च, १९८७) में डा० सिंह सम्मिलित हुए।

विजिटिंग फैलो—

डा० एस०एन० मिश्र, गणित विभाग, जाम्बिया विश्वविद्यालय, लुसाका ने गणित विभाग में विजिटिंग फैलो के रूप में दिनांक १६-२-८७ से २-३-८७ तक कार्य किया तथा उभयनिष्ठ अभिरुचि की समस्याओं पर आपसी विचार-विमर्श करने एवं प्रोफेसर सिंह के साथ दो शोधपत्रों की प्रारम्भिक रूपरेखा तैयार करने के अतिरिक्त निम्न विषयों पर भाषण दिए जिसमें सभी प्राध्यापक, शोध विद्यार्थी एवं ज्येष्ठ छात्र आमन्त्रित किये गए थे।

(a) The dawn of nothing

(b) Topology, the rubber sheet geometry

(c) Educational system in African countries

शोध-पत्रिका एवं सम्पादकीय कार्य—

विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित विज्ञान पत्रिका 'आर्यभट्ट' के परामर्शदाता प्रोफेसर एस० सी० त्यागी तथा सम्पादकमण्डल में श्री वी० कुमार हैं। डा० एस०एल० सिंह को विक्रम मैथेमेटिकल जर्नल (उज्जैन) के सम्पादकमण्डल हेतु आमन्त्रित किया गया तथा पहले से ही डा० सिंह निम्न दो शोध-पत्रिकाओं के सम्पादकमण्डल में कार्य कर रहे है—

(a) International Journal of Science and Engineering

(b) Mathematics Education

वर्ष १९८७ से प्रो० एस० सी० त्यागी के निर्देशन में Journal of Natural and Physical Sciences शोध-पत्रिका प्रारम्भ की जा रही है जो

विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित होगी तथा इसके मुख्य सम्पादक डा० एस० एल० सिह हैं।

अन्य--विभिन्न शोध-पत्रिकाओं के लिए विभाग के प्राध्यापकों द्वारा रेफरिंग करने के अतिरिक्त डा० सिह मैथेमेटिकल रिव्यूज (यू०एस०ए०) तथा जेन्ट्रालब्लाट फर मैथेमेटिक (जर्मनी) के लिए आब्स्ट्रैक्ट्स तथा रिव्यूज लिखते हैं। छात्रों का पाठ्यक्रम समय से पूरा कराया गया तथा उनकी असुविधाओ (गणितीय) को दूर करने के लिए प्राध्यापकों में पर्याप्त सजगता दिखाई पड़ती है।

—प्रो० एस०सी० त्यागी
प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष एवं
प्रधानाचार्य, विज्ञान महाविद्यालय

भौतिक विज्ञान विभाग

भौतिक विज्ञान विभाग का निर्माण यू०जी०सी० से प्राप्त अनुदान से हुआ। विभाग मे २ रीडर तथा २ प्रवक्ता कार्य कर रहे हैं। एक प्रवक्ता की स्वीकृति यू०जी०सी० ने इस वर्ष और दे दी है। दो प्रयोगशाला बी०एस-सी० प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष, एक अध्यक्ष कमरा, एक स्टाफ रूम तथा दो श्याम-प्रकोष्ठ हैं। बी०एस-सी० के क्रियात्मक कार्य के लिए कोर्स सम्बन्धी सभी उप-करण विद्यमान है। एम०एस-सी० के लिए अधिकतर उपकरण तथा पुस्तकें यू०जी०सी० (Dev.) ग्रान्ट से खरीदी गई है जो कि प्रयोगशाला एव लाइब्रेरी मे विद्यमान हैं। एक Colour T.V., U.G.C. अनुदान से भौतिकी विभाग द्वारा खरीदा गया। इससे B. Sc. के विद्यार्थियो को U.G.C. प्रोग्राम से बहुत लाभ पहुँच रहा है।

भौतिक विज्ञान में एम०एस-सी० कक्षाएँ खोलने का प्रयास जारी है। आशा है कि अगले सत्र मे यू० जी० सी० से अन्तिम स्वीकृति मिलने पर एम०एस-सी० भौतिक विज्ञान की कक्षाएँ प्रारम्भ कर दी जायेगी।

भावी योजना—

१—भौतिकी विभाग मे Post Graduate कक्षाएँ आरम्भ करना।

२—भौतिक विज्ञान विभाग मे Research Programme शुरु करना।

स्टाफ—

१—श्री हरिशचन्द्र ग्रोवर	—	रीडर एवं अध्यक्ष
२—श्री बी०पी० शुक्ल	—	रीडर
३—डा० राजेन्द्रकुमार अग्रवाल	—	प्रवक्ता
४—डा० परमानन्द पाठक	—	प्रवक्ता
५—रिक्त	—	प्रवक्ता
६—श्री प्रमोदकुमार शर्मा	—	प्रयोगशाला सहायक
७—श्री ठकुरासिंह	—	लैब ब्याय

सत्र १९८६-८७ में भौतिक विज्ञान विभाग में बी०एस-सी० प्रथम वर्ष में १५० तथा बी०एस-सी० द्वितीय वर्ष में ३९ विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया। सत्र का प्रारम्भ विधिवत् हुआ।

पाठ्यक्रम—

१—बी०एस-सी० प्रथम खण्ड

(a) Mathematical Physics.

(b) Mechanics & Sound

(c) Optics

२—बी०एस-सी० द्वितीय खण्ड

(a) Thermal Physics

(b) Electricity & Magnetism

(c) Atomic Physics

शिक्षक-छात्र का अनुपात

१ : ४७·५

इस वर्ष **B. Sc. T.D.C.** Course हेतु बोर्ड ऑव स्टडी की मीटिंग हुई जिसमें डा० नरेशचन्द्र वार्ष्णेय, प्रोफेसर भौतिक विज्ञान, रुड़की विश्वविद्यालय एवं डा० कैलाशचन्द्र, प्रोफेसर एवं डाइरेक्टर, यूनिवर्सिटी सर्विस एव इन्स्ट्रूमैंटेशन सेन्टर, रुड़की विश्वविद्यालय, विषय-विशेषज्ञ थे।

विभागीय उपाध्यायों का लेखन कार्य—

विभाग के सभी अध्यापकों के कई लेख विभिन्न पत्रिकाओं एवं रिसर्च जर्नल मे प्रकाशित हुए हैं। हरिशचन्द्र ग्रोवर तथा बुद्धप्रकाश शुक्ल क्रमश: मेरठ विश्वविद्यालय एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में Ph. D. कार्य मे लगे हुए हैं। इसके साथ ही साथ विज्ञान महाविद्यालय मे Integrated Study of Ganga मे P.I. के रूप मे हरिशचन्द्र ग्रोवर कार्य कर रहे हैं।

परीक्षा परिणाम—

पिछले वर्षों की भाँति १९८५-८६ का परीक्षा परिणाम उत्तम रहा।

—हरिशचन्द्र ग्रोवर
रीडर एवं अध्यक्ष

रसायन विभाग

विभाग में इस सत्र मे निम्नलिखित गतिविधियां रहीं—

शैक्षणिक गतिविधियां

समस्त अध्यापकों ने नियमित रूप से कक्षाएँ ली। इस वर्ष सभी अध्यापकों पर बी० एस-सी० मे बढ़े छात्रों की संख्या के कारण अधिक कार्यभार रहा।

वर्ष १९८५-८६ में प्रारम्भ हुए 'पी० जी० डिप्लोमा इन कॉमर्शियल मेथड्स ऑव केमिकल एनेलिसिस' के समस्त उत्तीर्ण छात्रों को विभिन्न संस्थानो मे रोजगार उपलब्ध हुए। इन संस्थानो मे मोदी वनस्पति, डाबर, साबुन-५५५, आदि की प्रयोगशालाएँ उल्लेखनीय है।

इस वर्ष के डिप्लोमा छात्रों को निम्नलिखित संस्थानों में प्रशिक्षण हेतु डा० रजनीशदत्त कौशिक तथा डा० रणधीर सिंह के निर्देशन मे ले जाया गया।

१. ड्रग टेस्टिग लैब, उ०प्र० शासन, ऋषिकुल, हरिद्वार।

२. रसायन विभाग, रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की।

३. बायोकेमिस्ट्री विभाग, रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की।

४. यूसिक विभाग, रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की।

५. मोदी वनस्पति मेन्यूफेक्चरिग कं०, मोदीनगर।

६. मोदी पेन्ट्स, मोदीनगर।

७ मोदी शुगर वर्क्स, मोदीनगर।

शोध गतिविधियां

(क) शोध प्रोजेक्ट्स :

१. डा० रामकुमार पालीवाल ने गंगा समन्वित योजना में को-इन्वेस्टीगेटर के रूप में कार्य किया।

२. डा० रजनीशदत्त कौशिक का शोध-प्रोजेक्ट (जो यू०जी०सी० द्वारा दिया गया था) दिनांक १-२-८७ को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। उक्त प्रोजेक्ट मे अढाई वर्ष में ४ शोध-पत्रों का प्रकाशन डा० कौशिक द्वारा हुआ।

२. डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण को यू०जी०सी० द्वारा एक माइनर शोध-प्रोजेक्ट के लिए, दो वर्ष हेतु रु० ५०००) का अनुदान स्वीकृत हुआ।

४. डा० रजनीशदत्त कौशिक तथा डा० रणधीर सिह ने अपने-अपने नये शोध प्रोजेक्ट यू०जी०सी० को स्वीकृति हेतु भेजे।

(ख) शोधपत्रों का प्रकाशन, सिम्पोजियम/कान्फ्रेंसेज आदि :

१. डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण का एक शोधपत्र जीवाजी विश्वविद्यालय मे हुई सिम्पोजियम में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ। उन्होने एक शोध-पत्र मदुराई-कामराज विश्वविद्यालय मे हुई वार्षिक इन्डियन काउन्सिल ऑव केमिस्ट्स की कांफ्रेंस में प्रस्तुत किया। उनका एक शोध-पत्र आर्यभट्ट पत्रिका में प्रकाशित हुआ।

२. श्री कौशलकुमार को पी-एच०डी० की उपाधि गढ़वाल विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई।

३. डा० रजनीशदत्त कौशिक ने जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर तथा मदुराई-कामराज विश्वविद्यालय में हुए क्रमशः सिम्पोजियम तथा कांफ्रेंस मे अपने दो शोधपत्र प्रस्तुत किए।

डा० कौशिक के निम्न ४ शोधपत्र भी प्रकाशित हुए :

(अ) 'ए कायनेटिक-स्पेक्ट्रोफोटोमीट्रिक मेथड फार द डिटरमिनेशन ऑव एन-एन डाइमिथाइल-एनिलिन इन माइक्रोग्राम्स', प्रोसीडिंग्स, आइ०सी०सी०, पृष्ठ १३२, पेपर-पीपी १११ (१९८६)।

(ब) 'कायनेटिक्स एण्ड मेकेनिज्म ऑव आक्सीडेशन ऑव एरोमेटिक एमीन्स बाइ परआयोडेट आयन—ए कायनेटिक-स्पेक्ट्रोफोटोमीट्रिक मेथड फार डिटरमिनेशन ऑव एनिलीन इन नेनोग्राम्स इन एक्वस मीडियम' प्रोसीडिंग्स, नेशनल सिम्पोजियम आन रीसेन्ट ट्रेंडस इन टेक्नोलोजिकल एप्लीकेशन्स ऑव कोआर्डिनेशन कम्पाउन्ड्स एण्ड केटेलिसिस, अक्टूबर १६-१८, १९८६।

(स) 'स्पेक्ट्रोफोटोमीट्रिक डिटरमिनेशन ऑव एनिलीन इन माइक्रोग्राम अमाउन्ट्स इन वाटर' आर्यभट्ट (१९८६), पृष्ठ ५०-५६।

४. डा० रणधीरसिंह ने फ्लोरेन्स (इटली) में हुए 'इन्टरनेशनल सिम्पोजियम आन मेक्रोसाइक्लिक केमिस्ट्री' में अपना शोधपत्र पढा। वे हाहन रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बर्लिन भी गए। उनका एक अन्य शोधपत्र कनाडा मे जून, १९८७ में होने जा रही कांफ्रेंस मे प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ।

एक्सटेन्शन गतिविधियाँ

१. दिनांक २०-९-८६ को स्व० श्री ओमप्रकाश सिन्हा बलिदान-दिवस पर विभाग मे यज्ञादि सम्पन्न हुए।

२. डा० ए०के० इन्द्रायण ने सितम्बर माह में आकाशवाणी नजीबाबाद का एक युवा कैम्प हरिद्वार मे आयोजित कराया। उनकी एक परिचर्चा 'अन्धविश्वास—वैज्ञानिक आधार' (१८ अक्टूबर, १९८६) तथा उनके द्वारा संचालित सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी (२८ फरवरी '८७) आकाशवाणी नजीबाबाद से प्रसारित हुई।

३. डा० कौशलकुमार को विश्वविद्यालय सुन्दरीकरण का कार्य सौपा गया।

४. डा० रजनीशदत्त कौशिक की एक परिचर्चा 'नमक—गुण व अवगुण' आकाशवाणी नजीबाबाद से प्रसारित हुई। इसके अतिरिक्त उन्होंने एक युवा काव्य संगोष्ठी का संयोजन व संचालन किया जिसे आकाशवाणी नजीबाबाद से प्रसारित किया गया।

५. डा० रजनीशदत्त कौशिक के संयोजकत्व में विज्ञान महाविद्यालय मे राष्ट्रीय युवा सप्ताह (जनवरी १९८७) के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों, यथा—भव्य कार्टून एवं चित्र प्रदर्शनी, वाक् प्रतियोगिता आदि का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया।

६. सातवी पंचवर्षीय योजना का प्रारूप तैयार किया गया। बी०एस-सी० (त्रिवर्षीय) तथा एम०एस-सी० हेतु पाठ्यक्रम तैयार किये गए।

उपलब्धियाँ

स्थापना के २९ वर्षों के बाद रसायन विभाग की कुछ विशिष्ट उपलब्धियाँ इस प्रकार है।

१. शैक्षणिक उपलब्धियाँ

विभाग में छात्रों की बहुत बड़ी संख्या तथा छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त हुई सफलताएँ तथा रोजगार, विभाग की शैक्षणिक उपलब्धियों का जीवन्त उदाहरण है। अनेकों छात्र विभिन्न प्रतियोगात्मक परीक्षाओं में चुने गए।

विभाग में सत्र १९८५-८६ से एकवर्षीय पोस्ट ग्रेजूएट डिप्लोमा 'कामर्शियल मेथड्स ऑव केमिकल एनेलिसिस' शुरु किया गया। इस डिप्लोमा के अन्तर्गत छात्रों को जल, मृदा, तेल, वसा, साबुन, सीमेन्ट, गारा, लवणों, अयस्कों एलॉयज, ड्रग्स, फार्मेस्यूटिकल्स, उर्वरक आदि के विश्लेषण का अभ्यास कराया जाता है। तथा आधुनिक इलेक्ट्रोनिक उपकरणों पर कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

यह एक रोजगारोन्मुख व एप्लाइड कोर्स है। अब तक उत्तीर्ण सभी छात्रों को विभिन्न राष्ट्रीयस्तर के सरकारी व गैरसरकारी संस्थानों व व्यवसायों मे रोजगार उपलब्ध हो चुका है।

उक्त पाठ्यक्रम को एम०एस-सी० में बदलने से विभाग द्वारा और भी अच्छा कार्यक्रम दिया जा सकेगा तथा छात्रों को रोजगार मिलने की सम्भावनाएँ बढ जाएँगी। इस आशय का पत्र यू०जी०सी० को भेजा गया है।

२ शोध उपलब्धियाँ

विभाग में कार्यरत सभी अध्यापक पी-एच०डी० हैं। इस समय २ रीडर और ३ प्रवक्ता कार्यरत है। उनकी शोध उपलब्धियाँ निम्न प्रकार है :

१. डा० रामकुमार पालीवाल, रीडर एवं अध्यक्ष के ३ शोधपत्र प्रकाशित है। वह गंगा समन्वित योजना मे को-इन्वेस्टीगेटर के रूप में कार्यरत है।

२. डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण, रीडर के कुल १३ शोधपत्र प्रकाशित है। उनके पास एक यू०जी०सी० प्रदत्त माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट है।

३. डा० कौशल कुमार, प्रवक्ता ने १ शोधपत्र प्रकाशनार्थ भेज रखा है।

४. डा० रजनीशदत्त कौशिक, प्रवक्ता के अभी तक कुल १६ शोधपत्र प्रकाशित हैं। उन्होंने हाल ही में अपना एक यू०जी०सी० प्रदत्त शोध प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक पूरा किया है तथा एक अन्य शोध प्रोजेक्ट यू०जी०सी० भेजा है।

५. डा० रणधीर सिह, प्रवक्ता के कुल १५ शोधपत्र प्रकाशित हैं। वह अगस्त '८६ में फ्लोरेन्स (इटली) में हुए सिम्पोजियम मे अपना शोधपत्र प्रस्तुत करने गए। उन्हें १ मार्च, १९८६ को रुड़की विश्वविद्यालय का वार्षिक 'खोसला पुरस्कार' संयुक्त रूप से दिया गया।

३. **एक्सटेंशन कार्य—उपलब्धियाँ**

१. छात्रों को विभिन्न संस्थानो व उद्योगों में ले जाया जाता है ताकि वे प्रयोगात्मक प्रशिक्षण ले सके।

२. विभाग के बिभिन्न प्राध्यापकों ने अभी तक अनेकों एक्सटेन्शन कार्य सम्बन्धी लेखों का प्रकाशन कराया है।

३. डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण वर्ष १९८१ मे रोटरी इन्टरनेशनल की ओर से ग्रुप स्टडी एक्सचेंज प्रोग्राम मे अमेरिका गये तथा वहाँ विभिन्न संस्थानों मे जाकर व्याख्यान दिए। वह कनाडा और इंगलेंड भी गए।

४. विभिन्न एक्सटेंशन गतिविधियाँ संक्षेप में निम्नानुसार हैं—

नाम अध्यापक	लेख	सेमिनार/कांफ्रेस	रेडियो वार्ता
डा० रामकुमार पालीवाल	६	६	—
डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण	५	७	७
डा० कौशलकुमार	१	२	—
डा० रजनीशदत्त कौशिक	६	७	२
डा० रणधीर सिह	—	५	—

५. डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण ने प्रौढ़ शिक्षा के को-आर्डिनेटर पद पर १५-२-८५ से ३१-५-८६ तक कार्य किया।

—डा० रामकुमार पालीवाल
अध्यक्ष

जन्तु विज्ञान विभाग

इस सत्र में विभाग में निम्नलिखित क्रिया-कलाप सम्पन्न हुए :

१—दिसम्बर (१५-१८) माह में विभाग द्वारा एक चार-दिवसीय 'नेशनल सिम्पोजियम' का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय था 'मत्स्य एवं उनका पर्यावरण'। गोष्ठी में करीब १६६ शोध-पत्रों को शामिल किया गया। १२१ डेलीगेट्स ने विभिन्न विश्वविद्यालयों / शोध-संस्थानों / महाविद्यालयों का प्रतिनिधित्व किया। ६१ वैज्ञानिकों ने अपने शोध-पत्रों को प्रस्तुत किया। उक्त सिम्पोजियम के मुख्य अतिथि उ०प्र० सरकार के राज्यमन्त्री श्री सीताराम निषाद थे। सिम्पोजियम का उद्घाटन-समारोह १५ दिसम्बर को माननीय कुलपति श्री आर०सी० शर्मा की अध्यक्षता में हुआ। गोष्ठी का समापन-समारोह कुलाधिपति श्री डा० सत्यकेतु विद्यालंकार जी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

२—हिमाचल विश्वविद्यालय, शिमला के प्रो० मल्होत्रा (डिपार्टमेंट ऑव बायोसाइन्सेज) ने मार्च '८७ में "मधुमक्खी पालन एवं बी-बिहेव्योर' विषय पर अत्यन्त ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। इस अवसर पर बी०एस-सी० व एम०एस-सी० के छात्र एवं विज्ञान महाविद्यालय के शिक्षण-गण उपस्थित थे।

३—माह नवम्बर '८६ में डा० दिनेश भट्ट, प्रवक्ता ने "इन्टरनेशनल सिम्पोजियम आन क्रोनोबायलॉजी" हैदराबाद में शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

४—डा० बी०डी० जोशी, डा० ए०के० चोपड़ा, डा० टी० आर० सेठ व डा० डी० भट्ट ने विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सभी समारोहों में सक्रिय भाग लिया। विज्ञान महाविद्यालय के परीक्षा-कार्यक्रम में डा० जोशी व डा० सेठ ने सहायक-परीक्षाध्यक्ष की जिम्मेदारी निभायी।

५—डा० बी०डी० जोशी, डा० चोपड़ा व डा० भट्ट के अनेक शोध-लेख व पापुलर आर्टिकल, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। साथ ही AIR नजीबाबाद से तीनों वैज्ञानिकों की विज्ञान-वार्त्ताएँ प्रसारित हुईं।

६—डा० जोशी के निर्देशन मे 'हिमालय-परियोजना' में शोध-कार्य प्रगति पर रहा।

७—डा० भट्ट को "Chronobiology of Obesity" नामक विषय के ऊपर U.G.C ने एक शोध-परियोजना स्वीकृत की है।

८—अध्यापन कार्य में सभी प्राध्यापकों ने सक्रिय योगदान दिया।

९—एम०एस-सी० माइक्रोबायलॉजी के छात्र, प्रो० जोशी, डा० सेठ व डा० चोपड़ा के निर्देशन में 'डिस्सरटेशन-वर्क' कर रहे हैं। अधिकांश छात्रों की थीसिस सम्पूर्णता की ओर अग्रसर है।

१०—डा० चोपड़ा ने एन०एस०एस० का शिविर कांगड़ी ग्राम में दिसम्बर माह मे आयोजित किया।

—प्रो० बी०डी० जोशी
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

हिमालय शोध योजना

हरिद्वार के परिवर्ती क्षेत्रों में हिमालय एवं शिवालिक पर्वत अधित्यकाओं के पर्यावरण सम्बन्धित अध्ययन हेतु भारत सरकार की यह शोध-योजना अपने कार्यकाल का दूसरा वर्ष पूरा करने जा रही है। इस अवधि के शोधकार्य से प्राप्त परिणाम अत्यधिक सफल, रुचिकर एवं उत्साहवर्धक रहे।

विभिन्न पदों पर नियुक्त निम्नांकित वैज्ञानिक एवं सहायकवर्ग गत वर्ष से कार्यरत हैं :

१—रिसर्च साइंटिस्ट	—	डा० जे० रमणमूर्ति
२—प्रोजेक्ट इंजीनियर	—	श्री एम० एस० नेगी
३—सीनियर रिसर्च फेलो	—	डा० टी० शर्मा
		श्री ओ० डी० गहतोड़ी
४—जूनियर रिसर्च फेलो	—	श्री एच० के० पुरोहित
५—लैब असिस्टेन्ट	—	श्री महेन्द्रप्रसाद ध्यानी
६—फील्ड असिस्टेन्ट	—	श्री सतीशकुमार सिन्हा
७—ड्राइवर	—	श्री सुरेन्द्रप्रसाद बहुखण्डी

हिमालय शोध-योजना का प्रमुख-कार्यस्थल महाकवि कालिदास द्वारा वर्णित प्रसिद्ध पौराणिकस्थल 'कण्व-आश्रम' है। इसी आश्रम से होकर बहती हुई 'मालिनी नदी' के वर्तमान समय में विकृत-विध्वसंक स्वरूप को पुनः जीवन-दायिनी सरिता का रूप देना इस शोध-योजना का एक सकल्प है। बृहत् वनीकरण, भू-स्खलन एव बाढ़ नियन्त्रण, वनीकरण के लिए पौधशाला विकसित करना, ग्रामीणो मे वनीकरण हेतु रुचि जागृत कर उन्हे पौध वितरित करना, 'यूकेलिप्टिस' वनीकरण का जलवायु एवं मृदा संरचना में प्रभाव का अध्ययन, विभिन्न हानिकारक कीट-वशों के जीवन-चक्र, पारिस्थितिकी, रोकथाम इत्यादि का अध्ययन, योजना-क्षेत्र के अधिकाधिक ग्रामवासियों का सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणपरक अध्ययन, इत्यादि इस शोध-योजना के प्रमुख उद्देश्य है।

योजना के प्रथम चरण में व्यापक रूप से 'कण्व-आश्रम' एवं उसके परिवर्ती ग्रामों में जनसभायें आयोजित की गईं। जिनमे ग्राम-प्रधान, जन-प्रतिनिधि, पत्रकार एवं अन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के साथ विचार-विमर्श कर, क्षेत्रीय पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओ की जानकारी ली गई। ग्रामीणो की आवश्यकता एवं रुचि के विविध प्रकार के फलदार, ईंधन, चारा और इमारती लकड़ी वाले वृक्षों की पौध, योजना की पौधशाला में विकसित कर उन्हे वितरित करने का निर्णय लिया गया।

मालिनी नदी द्वारा होने वाले विनाशकारी भू-कटाव तथा बाढ़-नियन्त्रण हेतु मण्डलीय आयुक्त, गढवाल मण्डल, जिला मजिस्ट्रेट पौडी, मण्डलीय वनाधिकारी, गढ़वाल मण्डल, इत्यादि के साथ सामूहिक तथा अलग-अलग बैठकें हुईं। इन बैठकों में शोध-योजना के निदेशक प्रो० बी० डी० जोशी ने योजना के उद्देश्यों तथा कार्यक्रम से स्थानीय प्रशासन को अवगत कराया तथा प्रशासन ने सभी स्तर पर मालिनी नदी की बाढ़-विभीषिका की रोकथाम के लिए योजना के साथ सहयोग कर, मिलकर कार्य करने का निर्णय लिया। वन-विभाग ने वृक्षारोपण हेतु भूमि तथा योजना के वैज्ञानिकों को शोधकार्य हेतु सुविधाएँ उपलब्ध कराना स्वीकार किया।

प्रगति आख्या—

विगत एक वर्ष मे हिमालय शोध योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य सम्पन्न हुए :

१—योजना के कार्यक्षेत्र मे एक नर्सरी तैयार की गई है। जिसमे अब लगभग ५० हजार पौधे यूकेलिप्टिस तथा २००० पौधे पोपुलर के है। इसके अतिरिक्त बाँस, खैर, शीशम, अमरूद, बोतल-ब्रुश, पपीता, सीरस, हैड, अर्जुन, इत्यादि के पौधे है।

२—कण्वाश्रम में (कार्यक्षेत्र में) १-८-८६ से १२-८-८६ तक एक कैम्प का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन तत्कालीन वित्त मंत्री श्री ब्रह्मदत्त जी के कर-कमलों द्वारा हुआ। इस कैम्प में इन्दिरा प्रियदर्शनी इन्टर कालेज के लगभग १०० छात्रों ने भाग लिया तथा १६ हजार गड्ढे खोदे तथा १६ हजार पौधे, पत्थरों को उखाड़ कर व झाडियों को काटकर लगाये गये।

३—कांगड़ी ग्राम का सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण के दौरान बहुत से महत्वपूर्ण आँकड़े प्राप्त हुए जिनकी विस्तृत जानकारी 'गुरुकुल पत्रिका' अप्रैल-मई १९८७ में है।

४—कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत मोटाढ़ाक व इससे लगे हुए गाँवों का सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण किया जा चुका है। सम्बन्धित आंकड़ों का तालिका-बद्ध व तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है।

५—क्षेत्र में फसलों, वन व फलों को क्षति पहुँचाने वाले कीट आदि का सर्वेक्षण किया जा रहा है।

—डा० बी०डी० जोशी
प्रिंसिपल इन्वेस्टीगेटर

वनस्पति विज्ञान विभाग

विभाग में निम्नलिखित स्टॉफ है—

१– डॉ० विजय शंकर	—	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
२– डॉ० पुरुषोत्तम कौशिक	—	प्रवक्ता
३– डॉ० गंगाप्रसाद गुप्ता	—	प्रवक्ता (अस्थायी)

लैब स्टॉफ :

४– श्री रुद्रमणि	—	लैब असिस्टेन्ट
५– श्री चन्द्रप्रकाश	—	लैब असिस्टेन्ट
६– श्री विजयसिंह	—	लैब ब्वॉय
७– श्री सूरजदीन	—	माली

विभाग में M. Sc Microbiology एवं B. Sc. की कक्षाएँ चली। विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए वाटिका में विभिन्न प्रकार के पौधें लगाये गए। उपरोक्त कक्षाओं के लिए कुछ उपकरण खरीदे गये।

डॉ० विजय शंकर ने प्रोफेसर एव अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान का कार्य सुचारु रूप से चलाते हुए निम्नलिखित पदो पर भी कार्य किया, जिससे गंगा पर शोध कार्य, ग्राम विकास, वृक्षारोपण एव विज्ञान के प्रचार-प्रसार को गति मिली। कागड़ी ग्राम को बाढ़ से बचाने के लिए बाँध का निर्माण इस संदर्भ मे उल्लेखनीय है। पं० हरबंसलाल जी द्वारा दिये गये ५५० रु० के अनुदान से यूकेलिप्टिस के पौधे, वेद मन्दिर के प्रांगण मे लगाये गये।

१– प्रिसिपल इन्वेस्टीगेटर
गंगा समन्वित योजना (भारत सरकार)

२– सम्पादक, आर्यभट्ट विज्ञान पत्रिका

३– चैयरमेन, कांगड़ी ग्राम विकास समिति

डॉ० विजय शंकर के निम्नलिखित लेख प्रकाशित हुए :

1- Ganga & the basin.

2- Characteristics of major sewer drains.

3- Fodder plants of Garhwal Himalayas.

4- Impact of distillary effects.

5- Microbiology of Ganga water. (स्वीकृत)

6- Conservation of medicinal plants in Ganga.

7- Diurnal variation in certain physico-chemical characters

8- Tehri dam.

डॉ० पुरुषोत्तम कौशिक—

बी०एस-सी० तथा एम०एस-सी० (माइक्रोबायलोजी) की कक्षाओं के सुचारु रूप से शिक्षणकार्य के अतिरिक्त डॉ० पुरुषोत्तम कौशिक ने निम्न कार्य किये :

१—राष्ट्रीय संगोष्ठी "देशज औषध-पौधों का संरक्षण एवं नृवंशीय वानस्पतिक दृष्टान्त" विषय पर, २५–२६ सितम्बर १९८६ (दो दिवसीय) का संयोजन किया।

२—आठ लेख प्रकाशित किये।

३—भारत सरकार के पर्यावरण एव वन विभाग ने डॉ० कौशिक के नेतृत्व में "हिमालय के आर्किड्ज की पार्यवणिक जीव विज्ञान" पर उनकी शोध-योजना स्वीकृत की है।

४—विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उनकी लक्टीन्स शोध-योजना स्वीकृत की है।

लेखों के शीर्षक—

१—एरगट प्रोडक्शन इन इंडिया—बुक रिव्यु, वैदिक पाथ, दिसम्बर १९८६ पृष्ठ ७४–७६।

२—इनोकुलेशन विद माइकोराइजल फंगस एनहान्स ग्रोथ ऑव मेडीसिनल एण्ड एग्रीकल्चरल क्रोप प्लान्ट्स।

३—लैगुम्स : मेडीसिनल आसपॅक्टस एण्ड द यूज ऑव राइजोबियम इन कल्टीवेशन ऑव मेडीसिनल लैगुम्स।

४—ईजी टु नोक डाऊन मॉस्क्यूटोज बाइ हरबल अगरबत्ती।

५—डरमैटोफाइट्स एण्ड स्कीन इनफैक्शनस—ए परिलिमिनरी सर्वे एट हरद्वार।

६—राइजोबियम कृषक का मित्र : दैनिक हिन्दुस्तान, १३ सितम्बर १९८६।

७—कवकीय त्वचा रोग दद्रु मण्डल, नवभारत टाइम्स, १७ सितम्बर १९८६।

८—हिमालय के अनोखे फूल : आर्किड्ज, गुरुकुल पत्रिका ३७८ (३) : ३०-३२।

—डा० विजय शंकर
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

कम्प्यूटर विभाग

कम्प्यूटर विभाग का निर्माण यू०जी०सी० के अनुदान से हो रहा है। यह आगाभी कुछ दिनों में पूर्ण हो जाएगा। इस समय इस विभाग में एक सिस्टम इन्जीनियर तथा एक प्रोग्रामर कार्य कर रहे हैं। एक सिस्टम मैनेजर, एक प्रोग्रामर, दो कम्प्यूटर आपरेटर, दो की-पंच आपरेटर तथा एक UDC/LDC के पदों की स्वीकृति यू०जी०सी० ने दी हुई है।

कम्प्यूटर विभाग के भवन की व्यवस्था हेतु भौतिकी विभाग, विज्ञान महाविद्यालय में प्रथम तल पर निर्मित भवन का जीर्णोद्धार २६-१२-८६ को शुरु हुआ जो लगभग पूर्ण हो चुका है।

इस वर्ष पी०जी० डिप्लोमा कोर्स हेतु बोर्ड ऑव स्टडीज की मीटिंग हुई जिसमें प्रो० आर०के० राठी, अध्यक्ष कम्प्यूटर विभाग, मेरठ विश्वविद्यालय विषय-विशेषज्ञ थे।

भावी योजना

कम्प्यूटर विभाग में एम०सी०ए०, ग्रेजूएट डिप्लोमा कोर्स तथा सर्टिफिकेट कोर्स प्रारम्भ करना।

स्टाफ—

१—सिस्टम मैनेजर	रिक्त
२—सिस्टम इन्जीनियर	श्री नरेन्द्र पाराशर
३—प्रोग्रामर	श्री सुशील कुमार त्यागी
४—प्रोग्रामर	रिक्त
५—ऑपरेटर (दो)	रिक्त
६—की-पंच ऑपरेटर (दो)	रिक्त
७—यू०डी०सी/एल०डी०सी०	रिक्त

विभागीय अधिकारियों के शैक्षणिक कार्य—

श्री नरेन्द्र पाराशर—

सिस्टम इन्जीनियर श्री नरेन्द्र पाराशर फरवरी '८७ में कम्प्यूटर ट्रेनिग के लिए बंगलौर गए। इसके अतिरिक्त विभाग के सुचारु संचालन तथा भावी योजनाओं को मूर्त्त रूप देने में सक्रिय योगदान।

श्री सुशीलकुमार त्यागी—

श्री सुशीलकुमार त्यागी ने फरवरी-मार्च में बी०एस-सी० प्रथम वर्ष को गणित की कक्षाओं को अध्यापन कराया। श्री सुशीलकुमार त्यागी डाक्टरेट की उपाधि हेतु शोध-कार्य कर रहे हैं। इनका शोध-विषय है—Stability of fluid flows by using computer techniques। इसके अतिरिक्त सभी विभागीय गतिविधियों में सक्रिय योगदान।

कम्प्यूटर विभाग का समस्त कार्य वर्तमान स्टाफ की देख-रेख में कुशलता से हो रहा है।

—एन० पाराशर
विभागाध्यक्ष

पुस्तकालय विभाग

प्रगति का एक वर्ष —

गुरुकुल पुस्तकालय की गणना एक राष्ट्रीय धरोहर के रूप में की जा सकती है। इस पुस्तकालय में प्राच्यविद्याओं के शोधसन्दर्भ विपुल परिमाण में उपलब्ध हैं। एक लाख से अधिक सुरुचिपूर्ण ग्रन्थों से अलंकृत इस पुस्तकालय मे हर तीसरी पुस्तक दुर्लभ एवं अप्राप्य कोटि की है। संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार के द्वारा गुरुकुल पुस्तकालय को भारत की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखे जाने के केन्द्र के रूप में मान्यता दी गयी है। वर्ष १९८६–८७ मे गुरुकुल पुस्तकालय को संस्कृति मन्त्रालय द्वारा पुस्तकालय में उपलब्ध दुर्लभ ग्रन्थों एवं पांडुलिपियों के संरक्षण हेतु ६६,५०० रु० का अनुदान स्वीकृत किया गया है। आलोच्य वर्ष मे गुरुकुल पुस्तकालय मे विभिन्न विषयों की २००० नई पुस्तकें क्रय की गयी तथा ३०० पुस्तकें इस पुस्तकालय को भेटस्वरूप प्राप्त हुई हैं। पुस्तकालय में इस समय ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न अंगो पर प्रकाश डालने वाली ४०० पत्रिकाएँ नियमित रूप से मँगवाई जा रही है। जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ५० पत्रिकाएँ विदेशों से मंगवाई जा रही है। पत्र-पत्रिकाओ एवं पुस्तकों को मंगवाने में इस वर्ष पुस्तकालय द्वारा ढाई लाख रुपये से अधिक को राशि व्यय की गई। यह हर्ष का विषय है कि वर्तमान पुस्तकालय-भवन के विस्तार हेतु यू०जी०सी० ने सातवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत ५,००,००० रु० की राशि विश्व-विद्यालय को स्वीकृत की है। इसके अतिरिक्त यू०जी०सी० द्वारा नवीन पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं के क्रय किये जाने हेतु इस योजनावधि में ४ लाख रुपये की धनराशि अतिरिक्त रूप से इस पुस्तकालय को आवंटित है।

परिचय—

गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरन्तर ८० वर्षों से पोषित यह पुस्तकालय आज वेद, वेदांग, आर्यसाहित्य, तुलनात्मक धर्मसंग्रह एवं मानवीयज्ञान की विविध शाखाओं पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रन्थो से अलंकृत है। सहस्रों दुर्लभ ग्रन्थो एवं अनेक अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय अनेक भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य भण्डार को अपने गर्भ में समाहित किये हुए, आर्य-संस्कृति की धरोहर के रूप में विद्याव्यसनियों का केन्द्र बना हुआ है। गुरुकुल

कांगड़ी पुस्तकालय का स्थान भारत के सर्वाधिक पाँच पुस्तकालयों मे से एक है।

वर्ष १९८६–८७ में लगभग २४,००० पाठकों ने इस पुस्तकालय की प्रचुर सामग्री का उपयोग किया है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह —

पुस्तकालय का विराट संग्रह अपनी विशिष्टताओ के लिये निम्न प्रकार से विभाजित किया हुआ है :

१. संदर्भ ग्रन्थ, २. पत्रिका संग्रह, ३. आर्यसाहित्य सग्रह, ४. आयुर्वेद संग्रह, ५. विभिन्न विषयों का हिन्दी-पुस्तक संग्रह, ६. विज्ञान कक्ष, ७. अंग्रेजी-साहित्य संग्रह, ८. प० इन्द्र जी संग्रह, ९. दुर्लभ पुस्तक संग्रह, १०. पाण्डुलिपि संग्रह, ११. गुरुकुल प्रकाशन संग्रह, १२. प्रतियोगितात्मक पुस्तक संग्रह, १३. शोध-प्रबन्धक संग्रह, १४. रूसी-साहित्य संग्रह, १५. आरक्षित पुस्तक संग्रह, १६. उर्दू संग्रह, १७. मराठी संग्रह, १८. गुजराती सग्रह, १९. गुरुकुल प्राध्यापक एव स्नातक प्रकाशन संग्रह, २०. मानचित्र संग्रह, २१. वेदमंत्र कैसेट संग्रह।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना —

विश्वविद्यालय में पढ रहे निर्धन छात्रों की सहायतार्थ विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना का सर्वथा नवीन कार्यक्रम वर्ष १९८३-८४ से प्रारम्भ किया गया था। जिसके अन्तर्गत छात्रो को पुस्तकालय मे दो घन्टे प्रतिदिन कार्य करने के बदले में पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है। जिससे ये अपनी पढाई का व्यय उठाने मे स्वावलम्बी बन सकें। इस वर्ष इस योजना के अन्तर्गत ४ छात्रों को लाभ प्रदान किया गया है।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा —

विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने हाल ही में प्रतियोगितात्मक पुस्तक संग्रह की स्थापना की है। जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रों को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षाओं से सम्बद्ध १५ पत्रिकाएँ नियमित आ रही हैं। इस संग्रह के माध्यम से गुरुकुल के बहुत-से छात्र प्रतियोगितात्मक सेवाओं में सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

पुस्तकालयाध्यक्ष जगदीश विद्यालंकार द्वारा इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र दिवस पर विश्वविद्यालय प्राध्यापकों की बैठक में संयुक्त राष्ट्र संघ की विश्व-शान्ति की भूमिका पर विशेष व्याख्यान दिया गया।

फोटोस्टेट सेवा—

विश्वविद्यालय के शोध-छात्रों एवं प्राध्यापकों की सुविधा हेतु फोटोस्टेट की सुविधा वर्ष १९८३-८४ से उपलब्ध हो गई है। पुस्तकालय की कुछ दुर्लभ पुस्तकों को फोटोस्टेट के द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है। विश्वविद्यालय के लगभग सभी विभागों का लगभग ३४३७-८५ रुपये का कार्य भी आलोच्य वर्ष में किया गया।

पुस्तकालय कर्मचारी—

इस विराट् पुस्तकालय की सुव्यवस्था एवं उचित प्रबन्ध हेतु इस पुस्तकालय में २२ कर्मचारी कार्यरत हैं। पुस्तकालय के कर्मचारियों का विवरण निम्न प्रकार है :

क्रम	नाम	पद	योग्यता
१.	श्री जगदीशप्रसाद विद्यालंकार	पुस्तकालयाध्यक्ष	एम.ए.,एम. लाइब्रेरी साइंस, बी.एड., कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग
२.	श्री गुलजारसिंह चौहान	सह-पुस्तकालयाध्यक्ष	एम.ए., बी. लाइब्रेरी साइंस
३.	श्री ऋषिकुमार कालरा	प्रोफेशनल सहायक	बी.ए., बी. लाइब्रेरी साइंस
४.	श्री उपेन्द्रकुमार झा	पुस्तकालय सहायक	एम.ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र, योग प्रमाणपत्र
५.	श्री ललितकिशोर	पुस्तकालय सहायक	एम.ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र
६.	श्री मिथलेशकुमार	पुस्तकालय सहायक	बी.ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र
७.	श्री कौस्तुभचन्द्र पाण्डेय	पुस्तकालय सहायक	इण्टर, पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र, हिन्दी आशुलिपि
८.	श्री अनिलकुमार धीमान	पुस्तकालय सहायक	एम.एस-सी., एम.ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र, आई. जी. डी. बोम्बे, डिप्लोमा पत्रकारिता विज्ञान
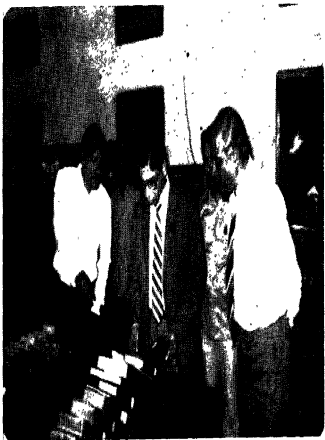
भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री आर० सी० त्रिपाठी पुस्तकालय की दुर्लभ पुस्तकों का अवलोकन करते हुए ।

क्रम	नाम	पद	योग्यता
९.	श्री जगपाल सिह	पुस्तकालय लिपिक	मध्यमा
१०.	श्री रामस्वरूप	पुस्तकालय लिपिक	इण्टर, पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र
११.	श्री मदनपाल सिह	पुस्तकालय लिपिक	इण्टर, आई. टी. आई., प्रमाणपत्र पुस्तकालय विज्ञान
१२.	श्री हरिभजन	काउन्टर सहायक	मिडिल
१३.	श्री जयप्रकाश	बुक बाइन्डर	मिडिल
१४.	श्री गोविन्दसिह	बुकलिफ्टर	मिडिल
१५.	श्री घनश्याम सिह	सेवक	मिडिल
१६.	श्री शशिकान्त	सेवक	इण्टर, बाइन्डर प्रमाणपत्र
१७.	श्री रघुराज सिह	सेवक	बी.ए.
१८.	श्री शिवकुमार	सेवक	मिडिल
१९.	श्री सुशीलकुमार	स्वीपर	—
२०.	श्री लालकुमार कश्यप	लेखक	—
२१.	श्री दीपक घोष	संस्कृति मंत्रालय प्रायोजना हेतु	लिपिक
२२.	श्री सुरेन्द्र शर्मा	संस्कृति मंत्रालय प्रायोजना हेतु	लिपिक

पुस्तकालय कार्यवृत्त एक नजर में—

		१९८५-८६	१९८६-८७
१. पाठको द्वारा पुस्तकालय का उपयोग	—	२३,३१५	२४,०००
२. भेंटस्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	—	९५२	६१
३. नवोन पुस्तके क्रय की गई	—	२,६३१	१,८३१
४. वर्गीकृत पुस्तको की संख्या	—	२,१००	२,३६०
५. सूचीकृत पुस्तकों की संख्या	—	१,९५०	२,३६०
६. पत्रिकाओं की संख्या	—	५४७	५५४
७. पत्रिकाओं की नियमित आपूर्ति हेतु भेजे गये स्मरणपत्रों की संख्या	—	२१५	१७०

८. सजिल्द पत्रिकाओं की संख्या	—	६,५००	६६७२
९. पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की संख्या	—	५००	१७२
१०. पुस्तकों की जिल्दबन्दी	—	—	२११६
११. पुस्तकों का कुल संग्रह	—	९५,८९०	९७,९१५

प्रगति के आयाम—

१. १७२ पुरानी पत्रिकाओं की जिल्दबन्दी की गई।

२. ४० नई पत्रिकाओं के आने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाएँ भी समाविष्ट हैं।

३ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा ७वी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत ४ लाख रु० का अनुदान पुस्तकालय हेतु स्वीकृत किया गया है। जिसमें से ३,२०,०००/- रुपये व्यय किया जा चुका है। उक्त राशि से २,६३१ नई पुस्तकें विश्वविद्यालय पुस्तक भण्डार के माध्यम से क्रय की गईं। जिससे पुस्तकालय को अधिकतम व्यापारिक छूट के आधार पर लगभग ३०,०००/- रुपये का लाभ हुआ।

४—विश्वविद्यालय पुस्तकालय का यह सौभाग्य रहा है कि १४ अप्रेल १९८७ को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री वीरबहादुर सिंह जी ने पुस्तकालय का अवलोकन किया। इस अवसर पर उन्होंने गुरुकुल के स्नातकों द्वारा प्रकाशित साहित्य पर लगाई गई प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया। पुस्त-कालय में स्थान की न्यूनता को देखते हुए उन्होंने भवन-निर्माण हेतु ७ लाख रुपये दिये जाने की घोषणा की।

५—शिष्ट परिषद् की बैठक दिनांक १५, १६ मई, १९८७ को पुस्तकालय में सम्पन्न हुई तथा उपस्थित सभी सदस्यों ने स्नातकों द्वारा प्रकाशित साहित्य पर लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

६—भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री आर० सी० त्रिपाठी ने पुस्तकालय मे पुस्तकों के संग्रह एवं व्यवस्था के सम्बन्ध में अपना संतोष व्यक्त किया। उ.प्र. सरकार के मत्स्य पालन विभाग के मंत्री श्री सीताराम निषाद ने भी दिनांक १५-१२-८६ को पुस्तकालय का अवलोकन किया।

७—संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष १९८६-८७ हेतु पुस्तकालय को दुर्लभ पाण्डुलिपियों की सुरक्षा हेतु ६६,५०० रु० का अनुदान स्वीकृत किया

गया है। इसके अन्तर्गत पुस्तकालय में उपलब्ध वैदिक साहित्य, संस्कृत-साहित्य, संदर्भ संग्रह, भारतीय दर्शन एवं प्राच्य विद्याओं से सम्बद्ध पुस्तकों की बिबिलियोग्राफी बनाये जाने का कार्य किया जा रहा है। इस कार्य हेतु श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव, संग्रहालयाध्यक्ष भी पुस्तकालयाध्यक्ष को सहयोग कर रहे है।

८—इस वर्ष रोहतक में आयोजित आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के शताब्दी-समारोह के अवसर पर दिनांक १५ से १७ मई १९८७ तक विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा गुरुकुल के साहित्यिक योगदान पर एक विराट् पुस्तक-प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का अवलोकन शताब्दी-समारोह में भाग लेने वाले हजारों आर्यबन्धुओं ने रुचिपूर्वक किया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री सूर्यदेव जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने दिनांक १५-५-८७ को किया।

९—यू०जी०सी० द्वारा पुस्तकालय के भवनविस्तार हेतु ७वी पंचवर्षीय योजना में ५ लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत किया गया है।

१०-गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित साहित्य को विभिन्न विश्वविद्यालयों, शिक्षापटल तथा सीनेट-सिडिकेट के सदस्यों को भेजने का कार्य भी व्यवसाय प्रबन्धक कार्यालय के माध्यम से पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा किया जाता है। इस वर्ष गुरुकुल प्रकाशनों की लगभग २,२५० प्रतियाँ भेजी गई।

— **जगदीशप्रसाद विद्यालंकार**
पुस्तकालयाध्यक्ष

राष्ट्रीय छात्र सेना

पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी छात्रों का राष्ट्रीय छात्र सेना में पंजीकरण किया गया। वर्ष भर में किये गए कार्यक्रमों मे छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी वार्षिक प्रशिक्षण शिविर जमनीपुर गाँव, देहरादून में लगाया गया जिसमें छात्रों ने सम्पूर्ण राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया।

छात्रों ने राष्ट्रीय छात्र सेना से सम्बन्धित परीक्षाओं में भाग लिया। इसके अतिरिक्त छात्रों ने सामाजिक कार्यों में भाग लिया।

राष्ट्रीय सेवा योजना

छात्रों के शिक्षणेत्तर कार्यक्रमों मे प्रमुख राष्ट्रीय सेवा योजना वर्ष १९८६-८७ में अपने उद्देश्यों को लेकर सुचारु रूप से कार्यान्वित हुई। छात्रों को श्रम-शक्ति एवं सामूहिकता द्वारा सामाजिक उत्थान हेतु अनेकानेक कार्य किए गए। विश्वविद्यालय परिसर के विभिन्न कार्यकलापों से प्रारम्भ कर, राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों ने निकटवर्ती ग्रामो, चिकित्सालयों एव सार्वजनिक स्थलो मे विभिन्न कार्यों में सोत्साह भाग लिया। कुछ विशेष कार्यक्रमो का सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) विश्वविद्यालय परिसर में समय-समय पर छात्रों द्वारा सफाई कार्यक्रम, उद्यानों तथा वाटिकाओं की बागवानी, गुड़ाई, निराई एवं सिंचाई इत्यादि कार्य किये गए।

(२) विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित खेल समारोहों, टूर्नामेंट, दीक्षान्त-समारोह तथा गोष्ठियों के आयोजन में सहयोग दिया।

(३) निकटवर्ती अस्पतालों में छात्रों ने व्यक्तिगत रूप से जाकर रोगियों की सेवा-सुश्रूषा में सहयोग दिया।

(४) विगत वर्षों की भाँति राष्ट्रीय सेवा योजना का पंचम वार्षिक शिविर पुण्य-भूमि कांगड़ी ग्राम में वर्तमान सत्र में भी उत्साह और सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस दस-दिवसीय विशेष शिविर में अनेक महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए, जिनमें प्रमुख हैं—

(क) ग्राम में लगभग ६० घरों के पीछे किचन सोकपिट बनाये गए।

(ख) गाँव को मुख्य सड़क से जोड़ने वाली १०० मीटर लम्बी खड़न्जे की सड़क को मिट्टी से पाटकर मरम्मत का कार्य किया गया।

(ग) गाँव में अव्यवस्थित १० बड़े-बड़े पानी के गड्ढों को मिट्टी से पाटा गया ताकि मच्छरों के पैदा होने के स्थान समाप्त हो सकें।

(घ) गाँव में कुछ किसानों की लगभग ५ बीघा भूमि में खाद का छिड़काव किया गया।

(ङ) छात्रों ने घर-घर जाकर परिवार नियोजन, प्राथमिक और प्रौढ़ शिक्षा, स्त्री शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरणपरक जानकारी ग्रामवासियों को दी तथा उक्त विषयों पर गोष्ठियाँ आयोजित की।

(च) गाँव में तीन पेयजल कुओं की सफाई की गई, कुओं के चारों ओर निकास-नालियाँ बनाई गईं तथा कुओं में लाल दवा डाली गई।

(५) सत्र के दौरान राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों को समय-समय पर प्रधानाचार्य श्री सुरेशचन्द्र त्यागी तथा अन्य गुरुजनों से दिशा-निर्देश मिलता रहा।

—**डा० ए०के० चोपड़ा**
प्रोग्राम आफिसर

कांगड़ी ग्राम विकास योजना

कांगड़ी ग्राम मे विकास के कार्य में निम्नलिखित प्रगति हुई :

१—मिलन-केन्द्र का निर्माण।

२—चबूतरे का निर्माण।

३—जिला विकास अधिकारी, बिजनौर ने ग्राम की गलियों को पक्का कराने एवं कुएँ के निर्माण कार्य को पूरा कराने की कार्यवाही प्रारम्भ की है।

४—कांगड़ी एवं निकटवर्ती ग्रामों को बाढ़ से बचाने के लिए जिलास्तर पर कार्यवाही प्रगति पर।

५—राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा कांगड़ी ग्राम में विभिन्न सामाजिक कार्य किए गए।

६—हिमालय शोध योजना के अन्तर्गत कांगड़ी ग्राम का विस्तृत सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण किया गया।

७—शराब के ठेके की दुकान को बस्ती से दूर हटवाने के सफल प्रयास।

८—सड़क के खड़न्जे पर मिट्टी डलवाना तथा सड़क की मरम्मत।

९—बाढ़-नियन्त्रण के लिए चैक डैम का निर्माण प्रारम्भ।

—प्रो० विजय शंकर
निदेशक

गंगा समन्वित योजना

(पर्यावरण विभाग, भारत सरकार)

वार्षिक प्रगति आख्या—

वर्ष १९८६-८७ के अन्तर्गत गंगा समन्वित योजना, पर्यावरण विभाग, भारत सरकार, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य किये गये—

१—गंगा के किनारों पर बसे विभिन्न गाँवों का सामाजिक-आर्थिक एवं पर्यावरणीय सर्वेक्षण का कार्य प्रगति पर है। जिसके अन्तर्गत राजकीय मशीनरी के सहयोग द्वारा करीब १२०० गाँवों का सर्वेक्षण किया गया है। जिसमें अन्य बातों के अलावा मुख्य रूप से यह पाया गया है कि गंगा पर बनने वाले विभिन्न बैराजों तथा डामों के द्वारा उनके आस-पास के गाँव के पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है, जिससे आस-पास के इलाकों मे जल रिसाव, जलप्लावन आदि पारिस्थितिकी विषमतायें पैदा हो गई है।

सर्वेक्षण के दौरान यह भी प्रमुख रूप से देखने में आया है कि गाँवों मे तालाबों की संख्या या तो कम हो गई है या ग्रामीणों द्वारा उत्क्रमण के फलस्वरूप प्रतिवर्ष तालाबो का क्षेत्रफल कम होता जा रहा है जिससे गाँवो के पर्यावरण पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड रहा है।

आजादी के ४० वर्षों बाद भी कई दूर-दराज के गाँवों मे प्राइमरी शिक्षा की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। इसके अलावा पिछले दशक से गर्मी व बरसात के मौसम मे मलेरिया बुखार के प्रकोप से, समुचित स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाएँ उपलब्ध न होने के कारण ग्रामीण काफी प्रभावित हो रहे है।

इसके अलावा पीने का पानी, सड़क तथा सिचाई आदि की सुविधाये, कुछ गाँवों को छोड़कर अधिकतर गाँवों में इनका अभाव बना हुआ है।

सर्वेक्षण के दौरान यह तथ्य भी सामने आया है कि वनों आदि का बड़ी तीव्र गति से ह्रास हो रहा है।

२—पूर्व वर्षो की भाँति इस वर्ष भी निर्धारित सर्वेक्षण तथा सैम्पलिंग का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है तथा साथ ही पूर्व वर्षो के आंकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है। हालांकि इस कार्य में स्टाफ का अभाव आड़े आ रहा है।

३—इस क्षेत्र में विद्यमान औषधीय पौधों का संग्रह तथा पहचान का कार्य विभिन्न शोध-संस्थानों की सहायता से किया जा रहा है।

४—गंगा समन्वित योजना के लिए निर्धारित क्षेत्रफल में स्थित विभिन्न औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले उत्प्रवाहो के प्रदूषकों की मोनिटरिंग तथा विश्लेषण का कार्य गत वर्षो को भाँति चल रहा है। इनके एकान्तर प्रयोग हेतु विभिन्न फसलो एव बीजो पर इनके प्रभाव के अध्ययन हेतु कई प्रयोग, प्रयोगशाला मे प्रगति पर है। इन प्रयोगों के परिणामों से यह तथ्य सामने आया है कि यदि समुचित तनुता की सुविधाये सम्बन्धित औद्योगिक इकाई द्वारा कर ली जाती हैं तो इन उत्प्रवाहों का प्रयोग बागवानी, साग-सब्जी आदि फसलों मे सिचाई के रूप मे किया जा सकता है।

५—विभिन्न विश्वविद्यालयो मे चल रही परियोजनाओं के कार्य की प्रगति की समीक्षा हेतु भागलपुर विश्वविद्यालय द्वारा अक्टूबर माह १९८६ मे केन्द्रीय गंगा प्राधिकरण के तत्वावधान मे एक राष्ट्रीयस्तर की संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। इस संगोष्ठी में मेरे अलावा गगा समन्वित योजना के शोध-वैज्ञानिक डा० आर० पी० एस० सागु तथा दो वरिष्ठ शोध-छात्र श्री डा० जी०पी० गुप्ता तथा श्री महेन्द्र पाण्डे द्वारा भाग लिया गया। इसमें परियोजना की प्रगति-आख्या एक पुस्तक के रूप मे प्रस्तुत की गई। इसके अलावा अभी हाल मे केन्द्रीय गंगा प्राधिकरण द्वारा विभिन्न परियोजनाओं के मुख्य अन्वेषकों की एक गोष्ठी दिनांक ९-४-८७ को आयोजित की गई जिसमे गत छह माह की प्रगति-आख्या प्रस्तुत की गई।

डा० आर०पी०एस० साँगू
शोध वैज्ञानिक

—डा० बी० शंकर
मुख्य अन्वेषक

प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं विस्तार कार्यक्रम

अधिकारियों के अकादमिक कार्य :

१—**डा० अनिलकुमार**—सहायक निर्देशक

(अ) शिमला में आयोजित लीगल लिटरेसी कार्यशाला मे भाग लिया।

(ब) विभाग में आयोजित ७-दिवसीय पर्यवेक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को निर्देशित किया।

२—**डा० डी०डी० पाण्डेय**—परियोजना अधिकारी

(अ) बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी मे ७-दिवसीय आयोजित कार्यशाला "Planning and Designing Research Projects in Education" में भाग लिया।

(ब) इन्दौर विश्वविद्यालय, इन्दौर मे ७-दिवसीय आयोजित कार्यशाला "Value orientation among B. Ed. students" मे भाग लिया।

(स) दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली मे आयोजित ३-दिवसीय जनसंख्या शिक्षा कार्यशाला में भाग लिया।

(द) शोधपत्र "A critical study of Residential Education Programme as laid down by U. P. Govt. in some Intermediate Colleges" बगलौर विश्वविद्यालय मे आयोजित भारतीय विज्ञान कांग्रेस में प्रस्तुति हेतु स्वीकारा गया।

(ङ) शोधपत्र "Construction and Standardization of students' self-confidence inventory" पटना विश्वविद्यालय से प्रकाशित J. of Psychometry and Education में प्रकाशनार्थ स्वीकार किया गया है।

(इ) शोधपत्र "Effect of type of school on creativity" न्यूयार्क से प्रकाशित "J. of Creative Behaviour" में प्रकाशनार्थ भेजा गया है।

(ई) शोधपत्र "भारत मे प्रौढ़ शिक्षा" नई दिल्ली से प्रकाशित जनसत्ता अखबार में प्रकाशनार्थ हेतु भेजा गया है।

(उ) किताब "Residential Education" शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है।

(ऊ) पुस्तक "Creativity in relation to type of school" बल्लभ विद्यानगर, गुजरात से प्रकाशित "J. of Education and Psychology" में प्रकाशनार्थ भेजा गया है।

इसके अलावा विभाग के सभी सदस्य हरिद्वार के आस-पास स्थित गाँवों के विस्तार कार्य-क्रम में भाग ले रहे है।

प्रगति आख्या—

इस विभाग द्वारा चलाये जा रहे प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्न विशेष कार्यक्रम अपनाए गए—

१— बहुजन साक्षरता कार्यक्रम—

यह कार्यक्रम २०-१०-८६ को मिश्रपुर गाँव मे विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा चलाया गया। इसके अन्तर्गत किए गए सर्वेक्षण से पता चला कि गाँव में ५० प्रतिशत लोग साक्षर हैं। गाँव की हरिजन बस्ती में १५ प्रौढ शिक्षा केन्द्र खोले गये तथा अभ्यर्थियों को शिक्षा-सामग्री वितरित की गई।

२—'लिटरेसी-किट' का वितरण—

विशेष प्रयासों से विभाग द्वारा ३०० लिटरेसी किट्स, जिनका मूल्य ६०००) रु० है, साक्षारता गृह, लखनऊ से अक्टूबर १९८७ में बिना मूल्य के प्राप्त कीं तथा उन्हे राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों को 'Each One-Teach One' कार्यक्रम के अन्तर्गत इस उद्देश्य से वितरित की, कि प्रत्येक छात्र एक अनपढ़ को पढ़ाएगा।

३—प्रचार कार्यक्रम —

जन-जागरण हेतु क्षेत्रीय प्रचार आफिसर, मिनिस्ट्री ऑव इनफोरमेशन एण्ड ब्रॉडकास्टिंग, भारत सरकार, देहरादून के तत्वावधान मे एक प्रचार कार्यक्रम मिस्सरपुर, अजीतपुर, बहादुरपुर जट, कांगड़ी तथा हरिनगर ग्रामों मे दि० १०-११-८६ से १४-११-८६ तक आयोजित किया गया, जिसमे प्रौढ़शिक्षा, २०-सूत्रीय कार्यक्रम, राष्ट्रीय एकता, परिवार कल्याण आदि पर ग्रामीण जनता को चल-चित्र दिखाए गए। चार्ट तथा पोस्टर प्रदर्शनी भी लगाई गई।

४—'ईच वन-टीच वन' कार्यक्रम—

यह कार्यक्रम राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों द्वारा सम्पन्न किया गया। इसमें प्रत्येक छात्र को एक 'साक्षरता-किट' इस उद्देश्य के साथ दी गई कि प्रत्येक छात्र कम से कम एक अशिक्षित को शिक्षित करेगा।

५—वृक्षारोपण कार्यक्रम :

कांगडी ग्राम में एक वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें यूकेलिप्टिस, मलबेरी, अमरूद, प्लम, नीम आदि की ५०० पौधें लगाई गई। ये पौधे वन विभाग बिजनौर से सामाजिक वनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत निःशुल्क प्राप्त की गई।

६—कार्यक्रम-अधिकारियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम—

कार्यक्रम के निरीक्षकों एवं प्रशिक्षकों हेतु एक प्रशिक्षण कार्यक्रम १७ से २३ फरवरी '८७ तक आयोजित हुआ। इसमें विभिन्न प्रगतिशील योजनाएँ यथा N. A. E P, I. R D. P., बीस-सूत्रीय कार्यक्रम, नवीन शिक्षा योजना, प्रशिक्षण विधि, शिक्षण-सामग्री, धुँआरहित चूल्हा, सूर्य-कुकर, स्वास्थ्य तथा आहार आदि विषयों को समायोजित किया गया। इसकी रिपोर्ट आकाशवाणी नजीबाबाद तथा अन्य राष्ट्रीय, स्थानीय समाचार-पत्रों के माध्यम से प्रसारित हुई।

७—अन्य

विशेष प्रयासो द्वारा विभाग ने प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, भारत सरकार, नई दिल्ली से बहुत बड़ी संख्या मे पुस्तक एवं प्रचार-सामग्री निःशुल्क प्राप्त की। विभागीय अधिकारी सेमिनार/वर्कशाप/कॉफ्रेंस आदि मे प्रतिनिधित्व करते रहते है। इसके अतिरिक्त ६० अन्य प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रो हेतु विभाग ने संतुति की है। एक रिसर्च प्रोजेक्ट भी प्रेषित किया गया है।

—डा० अनिल चोपड़ा
उप-निदेशक

क्रीड़ा एवं योग विभाग

शारीरिक शिक्षा निदेशक के पद पर अगस्त मास में श्री सुरेन्द्रसिंह जो की नियुक्ति की गई किन्तु जनवरी '८७ मे वे स्वेच्छा से त्यागपत्र देकर चले गए। श्री ईश्वर भारद्वाज ही विभाग का कार्य पूर्ववत् कर रहे है।

(क) क्रीड़ा विभाग—

मास अगस्त, ८६ से ही टेबल टेनिस का अभ्यास शुरु किया गया। अक्टूबर मास मे क्रिकेट, हाकी, बैडमिन्टन, कबड्डी, वालीबाल और फुटबाल के खेल प्रारम्भ किए गए।

१—कबड्डी :

२७ अक्टूबर को अन्तर्विश्वविद्यालय टूर्नामेन्ट हेतु कबड्डी की टीम का चयन किया गया। किन्तु कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय मे आयोजित अन्तर्विश्व-विद्यालय टूर्नामेन्ट में किन्ही कारणों से यह टीम भाग न ले सकी। दिसम्बर मास में श्रद्धानन्द-समारोह पर आयोजित कबड्डी टूर्नामेन्ट में विश्वविद्यालय की टीम ने भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय, आई. टी. आई हरिद्वार, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर आदि टीमों को हराकर चैम्पियनशिप जीत ली।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की शताब्दी पर लखनऊ मे आयोजित कबड्डी प्रतियोगिता हेतु हरिद्वार क्षेत्र से विश्वविद्यालय की टीम के चार खिलाड़ियों का चयन हुआ। रुड़की मण्डलीय स्तर के चयन में भी विश्वविद्यालय के खिलाड़ी चुने गए। टूर्नामेन्ट के फाइनल में लखनऊ मण्डल बिजेता तथा रुड़की मण्डल उप-विजेता रहा, जिसमें विश्वविद्यालय के खिलाड़ी सम्मिलित थे।

२—क्रिकेट :

विश्वविद्यालय की क्रिकेट टीम का चयन २२-११-८६ को किया गया। आयुर्वेद महाविद्यालय के साथ एक-दिवसीय मैच में विश्वविद्यालय की टीम

विजयी रही। जिमखाना क्लब के साथ कड़े संघर्ष में विश्वविद्यालय की टीम को सफलता न मिल सकी।

अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता मे जम्मू विश्वविद्यालय के साथ मुकाबला हुआ। जिसमें विश्वविद्यालय की टीम पराजित हुई। अच्छी फील्डिंग न होने के कारण पराजय का मुँह देखना पड़ा। डा० ज्ञानचन्द्र शास्त्री (प्रवक्ता, हिन्दी विभाग) मैनेजर के रूप में टीम के साथ गए थे।

३ – हाकी :

हाकी टीम का प्रथम चयन २५-१०-८६ को तथा अन्तिम चयन १-१२-८६ को किया गया। पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में आयोजित अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में कानपुर और कुमाऊँ विश्वविद्यालय से वाक्-ओवर प्राप्त करके महर्षि दयानन्द वि. वि. रोहतक के साथ मुकाबला हुआ, जिसमे विश्वविद्यालय की टीम पराजित हुई।

४—बैडमिन्टन :

वि. वि. बैडमिन्टन टीम का चयन २२-१-८७ से ११-२-८७ तक किया गया। विज्ञान महाविद्यालय तथा वेद एवं कला महाविद्यालय से ३५ छात्रो ने भाग लिया। कुलपति महोदय, उप-कुलपति महोदय तथा क्रीड़ाध्यक्ष महोदय की उपस्थिति मे बैडमिन्टन का अन्तिम मुकाबला अजयशंकर (माइक्रो-बायोलॉजी) तथा अतुल माथुर (कमिस्ट्री डिप्लोमा) के मध्य हुआ, जिसमे अजयशंकर विजयी रहा।

विश्वविद्यालय के स्टाफ के लिए सीनेट हाल मे एक कोर्ट का निर्माण करके बैडमिन्टन की व्यवस्था की गई। छात्रो के लिए वेद-मन्दिर के प्रांगण तथा विज्ञान महाविद्यालय प्रांगण में बैडमिन्टन के कोर्ट बनाए गए। विज्ञान महाविद्यालय के कोर्ट का उपयोग होने से पहले ही खम्भे उखाड़ दिए गए। अतः वहाँ अभ्यास न हो सका।

५—वालीबाल :

वालीबाल का कोर्ट विज्ञान महाविद्यालय मे बनाया गया। कुछ दिन अभ्यास चला किन्तु बन्द हो गया। स्टाफ के लिए गुरुकुल कार्यालय के पास वालीबाल की व्यवस्था की गई, जिसमें अभ्यास निरन्तर चलता रहा।

६—टेबल टेनिस :

टेबल टेनिस का अभ्यास सब खेलों से अधिक हुआ किन्तु अन्तर्विश्व-विद्यालय के योग्य न होने के कारण टीम भेजी न जा सकी।

७—फुटबाल :

फुटबाल का अभ्यास विद्यालय विभाग के मैदान में उन्ही के साथ किया गया।

(ख) योग—

पुण्य सलिला भागीरथी के पावन तट पर स्थित गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय में जब से हमारी पुरातन विद्या योग का शुभारम्भ हुआ है; तब से विश्वविद्यालय की धवल कीर्ति में और भी निखार आ गया है। केवल विश्वविद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थी ही योग-साधना मे रुचि नही लेते अपितु पंचपुरी के निवासी, अन्य विद्यालयों के अध्यापक एव छात्र, स्थानीय आयुर्वेद महाविद्यालयों तथा चिकित्सालयों के चिकित्सक भी योग द्वारा शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे है। योग द्वारा अनेक असाध्यरोग से पीड़ित आतुरों को राहत मिली है, जिससे विश्वविद्यालय का यश चतुर्दिक् फैल रहा है।

प्रथम सत्र—

१६ अगस्त से १५ दिसम्बर '८६ तक इस शैक्षिक वर्ष का प्रथम सत्र प्रशिक्षित किया गया। २२ विद्यार्थियों को प्रविष्ट किया गया, जिनमें से १० विद्यार्थियों को उपस्थिति कम होने के कारण परीक्षा में बैठने से वंचित कर दिया गया। जनवरी '८७ में परीक्षाएँ आयोजित की गई तथा १२ में से ६ विद्यार्थी उत्तीर्ण घोषित किए गए।

द्वितीय सत्र—

१ जनवरी से ३० अप्रैल '८७ तक दूसरा सत्र प्रशिक्षित किया गया। २५ विद्यार्थियों में से १८ विद्यार्थियों को परीक्षा में बैठने के योग्य पाया गया। क्रियात्मक परीक्षा मई में सम्पन्न हुई। सैद्धान्तिक परीक्षा शीघ्र ही आयोजित की जायेगी।

कनखल में अक्टूबर में आयोजित योग प्रतियोगिता में विभाग के छात्र हरेन्द्रचन्द्र नाथ ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। सहारनपुर में जिलास्तरीय

प्रतियोगिता में भी ये प्रथम रहे। विश्वविद्यालय में आयोजित योग प्रतियोगिता में इन्हें द्वितीय स्थान मिला तथा योग के ही छात्र मोहितलाल नाथ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

आर्यवीर शरीरसौष्ठव योगकुमार प्रतियोगिता—

श्रद्धानन्द सप्ताह के अवसर पर २२ दिसम्बर '८६ को विश्वविद्यालय भवन में 'आर्यवीर श्री शरीरसौष्ठव व योग प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। उक्त प्रतियोगिता में विभिन्न शिक्षण-संस्थाओं के प्रतियोगियों के अतिरिक्त स्थानीय व्यायामशालाओं ने भी भाग लेकर शोभा में वृद्धि की। प्रतियोगिता में अध्यक्ष के आसन पर विराजमान थे वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में समर्पित प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा मुख्य-अतिथि के रूप में मंच की शोभा में वृद्धि की प्रसिद्ध शरीरशिल्पी, उत्तर प्रदेश शरीर शिल्प संघ के महासचिव, अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित श्री भारतभूषण अजेय ने।

मुख्य-अतिथि ने गुरुकुल में आयोजित प्रतियोगिता के द्वारा पंचपुरी में शरीरशिल्प के प्रति रुचि में वृद्धि होने की बात स्वीकार की। कार्यक्रम की सराहना करते हुए आयोजकों को बधाई दी तथा दर्शकों को बलिष्ठ व सुन्दर शरीर के लिए प्रेरित किया।

अध्यक्षीय भाषण में स्वामी ओमानन्द जी ने कहा कि शरीर की कांति और ओज ब्रह्मचर्य के बिना कभी नहीं आ सकते। आज के युवक अपने शरीर को बोझ समझकर ढो रहे है। उत्साह और लगन के बिना कोई काम नहीं हो सकता। ब्रह्मचर्य, जीवन का आधार है। मन, शरीर और बुद्धि को बलिष्ठ करने के लिए ब्रह्मचर्य-पालन नितान्त आवश्यक है। इस प्रतियोगिता से जहाँ सुन्दर व बलिष्ठ शरीर के प्रति प्रेरणा प्राप्त होगी वहाँ चिन्तन, मनन और आत्मिक उन्नति भी होगी। अतः गुरुकुल ने अपने योग्य एक अच्छे कार्य की शुरुआत की है।

शरीरसौष्ठव वरिष्ठ वर्ग में आर्यवीरश्री खिताब के विजेता वीरेन्द्र पंवार रहे। शरीरसौष्ठव कनिष्ठ वर्ग में चन्द्रकांत कौशिक विजेता रहे। योगकुमार वरिष्ठ वर्ग में गुरुकुल झज्जर के ब्र० प्रियव्रत तथा कनिष्ठ वर्ग में कनखल के सुरक्षित गोस्वामी विजेता रहे। विश्वविद्यालय के छात्र ऋषिपाल आर्य शरीरसौष्ठव (कनिष्ठ वर्ग) में तृतीय रहे। योगकुमार (वरिष्ठ वर्ग) में द्वितीय तथा तृतीय स्थान वि०वि० के छात्र हरेन्द्रचन्द्र नाथ व मोहितलाल नाथ ने प्राप्त किया।

वांछनीय—

१—विभिन्न खेलों का आयोजन करने के लिए क्रीड़ा विभाग का निर्धारित बजट अत्यल्प है। अतः इसे १५,०००) रु० से बढ़ा कर २५,०००) रु० किया जाना चाहिए। तभी क्रीड़ा-व्यवस्था में सुधार हो सकता है।

२—योग डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए उपकरणादि हेतु अलग धनराशि की व्यवस्था की जानी चाहिए तथा एकवर्षीय पाठ्यक्रम को स्वीकृत किया जाना चाहिए जिससे विभाग की उन्नति हो सकेगी।

३—क्रीडा एवं योग हेतु प्रशिक्षकों की नियुक्ति भी की जानी चाहिए।

इस विभाग के कार्य में कुलपति प्रो. आर. सी. शर्मा जी, उप-कुलपति प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार जी, क्रीडाध्यक्ष प्रो. ओमप्रकाश जी मिश्रा के आशीर्वाद एवं दिशा-निर्देशन के अतिरिक्त विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा० वीरेन्द्र जी अरोड़ा, वित्त-अधिकारी श्री बी. डी. भारद्वाज जी, उप-कुलसचिव डा० श्यामनारायण सिंह जी, श्री विजयेन्द्र कुमार जी (गणित विभाग), कौशल कुमार जी (रसायन विभाग), डा. ज्ञानचन्द्र शास्त्री (हिन्दी विभाग), श्री नन्दकिशोर (लिपिक) का अपेक्षा से अधिक सहयोग प्राप्त हुआ है। योग के लिए श्री महेन्द्रकुमार चतुर्वेदी (रुड़की विश्वविद्यालय), श्री भारतभूषण अजेय, सहारनपुर तथा डा. सुभाषचन्द्र जोशी (ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज, हरिद्वार) का सहयोग अविस्मरणीय है। उक्त सभी महानुभावों का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ। आशा है विभाग दिनों-दिन प्रगति करेगा।

—ईश्वर भारद्वाज

वित्त एवं लेखा

सितम्बर १९८६ मे विश्वविद्यालय का संशोधित बजट बनाया गया। इसे वित्त समिति की बैठक दिनांक १९-१०-१९८६ मे प्रस्तुत किया गया। समिति ने निम्न प्रकार बजट पारित किया :

बजट सारांश

	संशोधित अनुमान ८६-८७	बजट अनुमान ८७-८८
वेतन एवं भत्ते आदि	३९,८०,४१०.००	४२,६७,२८०.००
अशदायी भविष्यनिधि	१,२५,७१०.००	१,३६,७७० ००
अन्य व्यय	११,४२,८२५.००	१३,४३,२२५.००
योग व्यय	५२,४८,९४५ ००	५७,५०,२७५.००
आय	१,४८,९४५.००	१,५०,२७५.००
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त अनुदान—	५१,०३,०००.००	५६,००,००० ००

समीक्षाधीन वर्ष १९८६-८७ मे ५१,०३,०००/- रु० के अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है, उसका विवरण निम्न प्रकार है—

क्र.स.	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
१-	२,००,०००.००	वि वि. अनुदान आयोग	पुस्तकालय हेतु पुस्तकें
२-	२,००,०००.००	. . .. ,, ...	उपकरण हेतु
३-	३१,०७१.५०	... . . . ,, ...	नेशनल फैलोशिप डा० बी०सी० सिन्हा
४	५०,०००.००	.. . . ,, ...	विजिटिंग प्रोफेसर्स

क्र सं.	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
५-	४,००,०००.००	वि.वि. अनुदान आयोग	कम्प्यूटर
६-	१,५०,०००.००	..............,,........	हाऊस बिल्डिंग लोन-एडवांस
७-	१,००,०००.००	. ...,,...... ...	प्रौढ शिक्षा
८-	१०,००० ००	... – .. - ., ...	अखिल भारतीय दर्शन परिषद्
९-	६०,०००.००	.. ..,, –... .	समर इन्स्टीट्यूट आन साइकोलोजिकल ट्रेडिशन
१०-	३,७५०.००	.... ,,...	माईनर रिसर्च प्रोजेक्ट डा० आर०डी० कौशिक
११-	२,५००.००	... - ....,,........	माईनर रिसर्च प्रोजेक्ट डा० ए०के० इन्द्रायण
१२-	५,०००.००	... . ,,....... .	माईनर रिसर्च प्रोजेक्ट डा० वी० पी० शुक्ला
१३-	२,२५०.००	..............,,.........–	माईनर रिसर्च प्रोजेक्ट डा० दिनेश भट्ट
१४-	१५,०००.००	.............,,.........	मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट डा० स्वर्ण आतीश
१५-	६,६६२ ६०	...............,,.........	"राइटिंग ऑव यूनिवर्सिटी ...." डा० कृष्णकुमार
१६-	६,५००.००	...............,,.........	कान्टी-जैन्ट ग्रान्ट फार जे०आर०एफ०
१७-	४०,०००.००	.. ..,,.........	नेशनल सेमिनार आन फिश एण्ड देयर एनवायरनमैन्ट
१८-	५,०००.००	भारत सरकार	..........,,.........
१९-	१०,०००.००	काउन्सिल ऑव साइन्टिफिक एण्ड इंडस्ट्रियल रिसर्च, नई दिल्ली	.........,, ...
२०-	१,७२,५००.००	भारत सरकार	गंगा परियोजना

क्र.सं.	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
२१-	२,०६,०००.००	भारत सरकार	हिमालय परियोजना
२२-	२,६४,५००.००	………….,, ……..	स्टडी आन एनवायरन-मैन्टल बायलॉजी ऑव दा हिमालय
२३-	१२,०००.००	……… ,, …… ..	रिसर्च स्कालरशिप श्री भगवद्दत्त वेदालंकार
२४-	५,०००.००	सी.एस.आई.आर नई दिल्ली	सेमिनार आन कन्जरवेशन एण्ड एथोबोटनीकल आस्पेक्टस
२५-	५,००० ००	इन्डियन काउन्सिल ऑव एग्रीकल्चरल रिसर्च नई दिल्ली	… .. ,,…… ..
२६-	२,३६८.००	इन्डियन काउन्सिल ऑव सोसियल साईस नई दिल्ली	माईनर रिसर्च प्रोजेक्ट डा० एस०के० श्रीवास्तव

—बी० डी० भारद्वाज
वित्त अधिकारी

आय का विवरण

१९८६–८७

क्र०सं० आय का मद	धनराशि
(क) दान और अनुदान –	
१– वि. वि. अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान—	५१,०३,०००/-
योग— (क)	५१,०३,०००/-
(ख) शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय –	
१– पंजीकरण शुल्क	४,०११/-
२– पी-एच. डी. रजिस्ट्रेशन शुल्क	२,३५०/-
३– पी-एच. डी. मासिक शुल्क	२,६९०/-
४– परीक्षा शुल्क	४३,९८७/-
५– अंकपत्र शुल्क	१,९९५/-
६– पड़ताल शुल्क	९६/-
७– विलम्ब दण्ड, टूट-फूट	३९९६/-
८– माइग्रेशन शुल्क	८७०/-
९– प्रमाणपत्र शुल्क	२०१/-
१०– नियमावली, पाठविधि तथा फार्मों आदि का शुल्क	१२८६/-
११– सेवा आवेदन-पत्र	३१२६/-
१२– शिक्षा शुल्क	४२,०००/-
१३– प्रवेश व पुनः प्रवेश शुल्क	८९५०/-
१४– भवन शुल्क	७१३/-

१५– क्रीड़ा शुल्क	६,७१४/-
१६– पुस्तकालय शुल्क	५,३६५/-
१७– परिचयपत्र शुल्क	२१०/-
१८– एसोसियेशन शुल्क	२८६/-
१९– प्रयोगशाला शुल्क	२,७६०/-
२०– मंहगाई शुल्क	७,८८२/-
२१– विज्ञान शुल्क	८,२०६/-
२२– पुस्तकालय से आय	३,९९२/-
२३– पत्रिका शुल्क	५,८११/-
२४- अन्य आय	७,२६५/-
२५– किराया प्रोफेसर्स क्वार्टर्स	३,२३०/-
२६– सरस्वती यात्रा	१७४५/-
योग–(ख)	१,६९,७३७/-
सर्वयोग–(क+ख)	५२,७२,७३७/-

बी० डी० भारद्वाज
वित्त अधिकारी

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

१९८६-८७

क्र. सं	व्यय का मद	धनराशि
(क) वेतन—		
१-	वेतन	३७,४३,३३७/-
२-	भविष्यनिधि पर संस्था का अंशदान	१,१६,४६४/-
३-	ग्रेच्युटी	१६,७५३/-
४-	पेंशन	१०,०३५/-
	योग-(क)	३८,८६,६१६/-
(ख) अन्य—		
१-	विद्युत व जल	७१,६५८/-
२-	टेलीफोन	३१,१५५/-
३-	मार्ग व्यय	६२,३७८/-
४-	लेखन सामग्री एवं छपाई	४०,३५८/-
५-	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	१३,५१८/-
६-	डाक एवं तार	१०,८०३/-
७-	वाहन तथा पैट्रोल	८०,६०७/-
८-	नई कार क्रय धन	१,०३,२६५/-
९-	विज्ञापन	२८,४६६/-
१०-	न्यायिक व्यय	१२,६१०/-
११-	आतिथ्य व्यय	१६,२६५/-

क्र. सं. व्यय का मद	राशि
१२–दीक्षान्त उत्सव	१३,२०७/-
१३–लॉन संरक्षण	४,४३३/-
१४–भवन मरम्मत	२,३०,१३०/-
१५–आडिट व्यय	५,२००/-
१६–उपकरण	१,२६,६१२/-
१७–फर्नीचर एवं साज-सज्जा	६५,८४८/-
१८–राष्ट्रीय छात्र सेवा	६०/-
१९–निर्धनता फंड	२९०/-
२०–छात्रों को छात्रवृत्ति	३७,०००/-
२१–खेल-कूद एवं क्रीड़ा	१६,३५२/-
२२–सांस्कृतिक कार्यक्रम	९४१/-
२३–सरस्वती यात्रा	५,६६५/-
२४–वाग्वर्धिनी सभा	२,३२०/-
२५–मनोविज्ञान प्रयोगशाला	२,०००/-
२६–रसायन प्रयोगशाला	१७,१४५/-
२७–भौतिकी विज्ञानशाला	१८,८०५/-
२८–वनस्पति विज्ञानशाला	१३,७९८/-
२९–जन्तु विज्ञानशाला	२२,७६८/-
३०–गैस प्लाँट	४,४९०/-
३१–वनस्पति वाटिका ग्रीन हाऊस	३०९/-
३२–समाचारपत्र एवं पत्रिकाएँ	४२,१८१/-
३३–पुस्तकें	१२,४९९/-
३४–जिल्दबदी पुस्तक सुरक्षा	७,६४५/-
३५–कैटेलॉग एण्ड कार्ड्स्	४,०७९/-
३६–वैदिक पाथ, प्रह्लाद पत्रिका, आर्य भट्ट, गुरुकुल पत्रिका	५४,३२०/-
३७–मिश्रित	१३,६१९/
३८–आकस्मिक	५,६४०/-

क्र सं. व्यय का मद		राशि
३९-सदस्यता शुल्क अंशदान		२०,२२४/-
४०-सेमिनार		१५,०४८/-
४१-गणित		९५१/-
४२-पढते हुए कमाओ		३,०९४/-
४३-वाहन हेतु ऋण		६४,३६०/-
	योग (ख)	१३,०१,७७५/-
४४-परिक्षकों का पारिश्रमिक		४०,५६०/-
४५-मार्गव्यय परीक्षक		८,८४३/-
४६-निरोक्षण व्यय		४,१४८/-
४७-प्रश्नपत्रों की छपाई		२२,४२५/-
४८-उत्तरपुस्तिका का मूल्य		१०,९८३/-
४९-डाक-तार व्यय		७,३०५/-
५०-लेखन सामग्री		१,१८६/-
५१-नियमावली, पाठविधि छपाई		१,७६८/-
५२-अन्य व्यय		२,८५४/-
	योग (ग)	१,१०,०७२/-
	योग ख+ग	१४,११,८४७/-
	योग क+ख+ग	५३,०१,४६६/-

बी० डी० भारद्वाज
वित्त अधिकारी

दीक्षान्त-समारोह १९८७ पर पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त करने वाले शोधार्थियों की सूची—

क्रमसं०	नाम शोधार्थी	विभाग	विषय	शोध-निर्देशक
१.	श्रीमती सुषमा	संस्कृत-साहित्य	बृहत्त्रयी और लघुत्रयी पर वैदिक प्रभाव।	डा० निगम शर्मा
२.	श्री केशवप्रसाद उपाध्याय	संस्कृत-साहित्य	महर्षि दयानन्दकृत यजुर्वेद भाष्य के प्रथम दस अध्यायों का व्याकरण की दृष्टि से समालोचनात्मक अध्ययन।	डा० रामप्रकाश
३.	श्री दयानन्द शर्मा	दर्शन	सांख्य शास्त्र और चरक संहिता—एक दार्शनिक तुलनात्मक अध्ययन।	डा० जयदेव वेदालंकार
४.	श्री नामदेव दूधाते	दर्शन	शंकराचार्य, मध्वाचार्य तथा दयानन्द का तुलनात्मक दार्शनिक परिशीलन।	डा० जयदेव वेदालंकार
५.	श्री रामेश्वरदयाल गुप्त	वैदिक-साहित्य	जीवात्मा के वेदप्रतिपादित स्वरूप की विवेचना।	डा० भारतभूषण वेदालंकार
६.	कु० कामजित्	वैदिक-साहित्य	महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य में इन्द्र देवता का अध्ययन।	डा० सत्यव्रत राजेश
७.	श्री कंवलकृष्ण	प्रा०भा० इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व	पूर्व मध्यकाल में राजनीतिक संस्थाएँ।	डा० काश्मीर सिंह

दीक्षान्त-समारोह १९८७ पर बी०एस-सी० द्वितीय खण्ड (गणित/बायो ग्रुप) की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची—

क्रमसं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
१	१६४	८३००४९	अशोककुमार	श्री ओमप्रकाश	गणित ग्रुप	रसायन शास्त्र भौतिक शास्त्र गणित	गु०कां०वि०	तृतीय
२	१६५	८४००५९	अरुणकुमार शर्मा	श्री पी०सी० शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
३	१६६	८३००४३	अवनीतकुमार चौहान	श्री ध्यानसिह चौहान	,,	,,	,,	प्रथम
४	१६७	८४००६४	अवनीशकुमार	श्री प्रेमचन्द्र	,,	,,	,,	द्वितीय
५	१६९	८४००५५	दीपककुमार	श्री विजयकुमार	,,	,,	,,	द्वितीय
६	१७०	८४००५४	दिग्विजयसिह यादव	श्री बाबूराम यादव	,,	,,	,,	द्वितीय
७	१७३	८४००४९	कुलदीपकुमार शर्मा	श्री मोहनलाल शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
८	१७४	८४००४८	कमलदीप सिह	श्री कुँवरसिह चौहान	,,	,,	,,	तृतीय
९	१७६	८४००४४	मदनपाल शर्मा	श्री रमेशचन्द्र शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
१०	१७७	८४००४५	महेन्द्रसिह	श्री मोहनसिह असवाल	,,	,,	,,	प्रथम
११	१७८	८४००४०	पुनीत तलवाड	श्री धर्मवीर तलवाड	,,	,,	,,	द्वितीय
१२	१७९	८४००४१	पवनलाल	श्री रामयाद शर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
१३	१८१	८४००३७	राजेशकुमार	श्री सुन्दरदास	,,	,,	,,	प्रथम

क्रमसं०	अनुक्रमाक	पजीकरण स०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	सस्था का नाम	श्रेणी
१४	१८२	८४००२८	शेखर पाटनकर	श्री एम.वाई पाटनकर	गणित ग्रुप	रसायनशास्त्र भौतिकशास्त्र गणित	गु०कां०वि०	प्रथम
१५	१८३	८३००२६	संदीपकुमार गुप्ता	श्री सुरेन्द्रकुमार गुप्ता	,,	,,	,,	तृतीय
१६	१८४	८४००२३	सुरेन्द्रसिह	श्री जोगेन्द्रसिह	,,	,,	,,	द्वितीय
१७	१८५	८४००२४	सजीव पजवानी	श्री ज्ञानचन्द्र पंजवानी	,,	,,	,,	प्रथम
१८	१८६	८४००२५	सजीव गुप्ता	श्री एस०के० गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय
१९	१८७	८४००३०	सजयकुमार मेहता	श्री आनन्दप्रकाश मेहता	,,	,,	,,	द्वितीय
२०	१८८	८३००३३	सुरेन्द्रसिह	श्री गुरचरण सिह	,,	,,	,,	तृतीय
२१	१८९	८३००३४	उमेदसिह रावत	श्री आनन्दसिह रावत	,,	,,	,,	द्वितीय
२२	१९०	८४००२१	वेदप्रकाश	श्री मुरारीलाल शर्मा	,,	,,	,,	तृतीय
२३	१९१	८४००१९	विकास तायल	श्री राजकुमार गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय
२४	१९२	८३००९७	विवेककुमार	श्री राजकुमार गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय
२५	१९३	८४०००१	अनुराग रत्न	श्री विजेन्द्रनाथ श्रीवास्तव	बायोग्रुप	रसायनशास्त्र, बनस्पति शास्त्र, जन्तुविज्ञान	,,	प्रथम
२६	१९४	८४०००२	अब्दुल रहमान	श्री सफदर अली	,,	,,	,,	द्वितीय
२७	१९६	८३००७३	दीपक बाबू अरोडा	श्री बलदेवराज अरोडा	,,	,,	,,	द्वितीय

क्रमसं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
२८	१९७	८४०००४	देवेन्द्रकुमार मनचन्दा	श्री तेजभान मनचन्दा	बायोग्रुप	रसायनशास्त्र बनस्पतिशास्त्र जन्तुविज्ञान	गु०कां०वि०	प्रथम
२९	१९८	८४०००३	देवेन्द्रसिंह नेगी	श्री रणजीतसिंह नेगी	,,	,,	,,	द्वितीय
३०	२००	८४००१०	रमेशसिंह बिष्ट	श्री दीवानसिंह बिष्ट	,,	,,	,,	प्रथम
३१	२०२	८४००१६	सुशीलकुमार	श्री भावीचन्द्र तोमर	,,	,,	,,	द्वितीय
३२	२०३	८४००१७	तरुण चुघ	श्री दुर्गादास चुघ	,,	,,	,,	द्वितीय
३३	२०४	८३००६३	वीरेन्द्रसिंह	श्री हरिसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
३४	२०५	८३००९५	यतीन्द्र नागयान	श्री रामप्रसाद	,,	,,	,,	प्रथम

दीक्षान्त-समारोह १९८७ पर अलंकार की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची—

क.सं.	अनुक्रमांक	पं० सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
१	१६	८०,०४	कु० अनुराधा	श्री वीरेन्द्रकुमार	विद्यालंकार	वै०लौ०स०सा०, अंग्रेजीसा०, हिन्दी सा०, भा०सं०, चि०	कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून	प्रथम
२	१७	८०,२४	कु० गुरदीप	श्री निर्मलसिह	,,	वै०लौ०सं०सा०, अंग्रेजी सा०, इतिहास भा०सं०, चित्रकला	,,	प्रथम
३	१८	८०,१७	कु० जगमीत कौर	श्री अवतारसिह बांगा	,,	,, ,,	,,	प्रथम
४	१९	८२,०२	कु० मधुबाला	श्री बलीराम मेहता	,,	वै०लौ०सं०सा०, अंग्रेजी, हिन्दी सा०, संगीत वादन, भारतीय संस्कृति	,,	प्रथम
५	२०	८०,२२	कु० निर्मला	श्री जितेन्द्रनाथ गुलाटी	,,	वै०लौ०सं०सा०, अंग्रेजी, संगीत वादन, भारतीय संस्कृति, संस्कृत विशेष	,,	प्रथम
६	२१	८०,०७	कु० रेणु	श्री शारदानन्द सिह	,,	वै०लौ०सं०सा०, अंग्रेजी सा०, भारतीय संस्कृति, संस्कृत विशेष, चित्रकला	,,	द्वितीय

क्र.सं	अनुक्रमांक	पं० सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
७	२२	७६,१४	कु० रीता	श्री जगदीशप्रसाद	विद्यालंकार	वै०लौ०सं०सा०, अंग्रेजी सा०, इतिहास, संगीत गायन, भारतीय संस्कृति	कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून	तृतीय
८	२३	८०,२०	कु० सन्तोष	श्री अमरनाथ	,,	वै०लौ०सं०सा०, अंग्रेजी सा०,हिन्दी सा०, भारतीय सस्कृति, संस्कृत विशेष	,,	प्रथम
९	२४	८०,११	कु० सविता	श्री वीरेन्द्रकुमार	,,	वै०लौ०सं०सा०, अग्रेजी सा०, हिन्दी सा०, संगीत वादन, भारतीय सस्कृति	,,	प्रथम
१०	२५	८०,१५	कु० सेवा	माँ उमा शक्ति	,,	वै०लौ०स०सा०, अंग्रेजी सा०, इतिहास, संगीत गायन, भारतीय संस्कृति	,,	द्वितीय
११	२६	८२,०३	कु० सुभद्रा	श्री सरनदास	,,	वै०लौ०सं०सा०, अग्रेजी सा०, हिन्दी सा०, इतिहास, भारतीय संस्कृति	,,	द्वितीय
१२	२७	८०,२१	कु० सुशीला	श्री सुरजीतसिह	,,	वै०लौ०स०सा०, अग्रेजी सा०, इतिहास, भारतीय सस्कृति, चित्रकला	,,	प्रथम

क्र सं.	अनुक्रमांक	पं० सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
१३	२८	८०,०२	कु० सुषमा	श्री चरणजीत शर्मा	विद्यालंकार	वै०लौ०सं०सा०, अंग्रेजी सा०, इतिहास, संगीत वादन, भारतीय संस्कृति	कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून	द्वितीय
१४	२९	७९,१५	कु० शशिबाला	श्री रामाशंकर यादव	,,	,, ,,	,,	द्वितीय
१५	३०	८०,१६	कु० श्रद्धा	माँ० उमा शक्ति	,,	,, संगीत गायन	,,	प्रथम
१६	३२	८४००७३	संजयकुमार	श्री मनीराम	,,	वै०लौ०सं०सा०, अंग्रेजी सा०, हिन्दी सा०, मनो-विज्ञान, भा० संस्कृति	गु०वि०वि०	द्वितीय
१७	३३	८४००७०	आर्येन्द्रकुमार	श्री महावीरसिंह	वेदालंकार	वै०लौ०स०सा०, अंग्रेजी सा०, इतिहास, दर्शन, संस्कृत साहित्य	,,	द्वितीय
१८	३४	८४००७६	अरविन्दकुमार	श्री महेन्द्रसिंह	,,	,, ,,	,,	द्वितीय
१९	३५	८४००७५	ऋषिपाल	श्री ओमप्रकाश	,,	,, ,,	,,	प्रथम

दीक्षान्त-समारोह १९८७ पर एम०ए०/एम०एस-सी० की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची—

क्रमसं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
१	६१५	८३०११६	अशोककुमार शर्मा	श्री हरिप्रसाद शर्मा	एम०ए०	वैदिक साहित्य	गु०कां०वि०	प्रथम
२	६१६	८३०१०४	ब्रजकिशोर मित्तल	श्री शिवचरणलाल	,,	,,	,,	प्रथम
३	६१७	८४००७२	तेजनारायण सिंह	श्री लरगूसिह	,,	,,	,,	द्वितीय
४	६१९	८४०१६७	बुद्धसिह	श्री गोपालसिंह	,,	दर्शनशास्त्र	,,	प्रथम
५	६२१	८४०११०	सुदामा तायडे	श्री जानकीराम तायडे	,,	,,	,,	प्रथम
६	६२२	८४००६७	भूपेन्द्रकुमार	श्री ठाकुरनाथ पाठक	,,	संस्कृत साहित्य	,,	प्रथम
७	६२३	८४०१५५	गोविंदबल्लभ पुरोहित	श्री विशालमणि पुरोहित	,,	,,	,,	द्वितीय
८	६२४	८४०१४३	कीर्तिबल्लभ कफलटिया	श्री शंकरदत्त कफलटिया	,,	,,	,,	द्वितीय
९	६२५	८२०१५५	रवीन्द्रसिह आर्य	श्री मोहकमसिह	,,	,,	,,	प्रथम
१०	६२६	८४०१५४	वीरेन्द्रकुमार	श्री श्यामसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
११	६२७	८३०१३२	कु० अंजू	श्री रामचन्द्र सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
१२	६२८	८२०००४	कु० बीना	श्री कृष्णस्वरूप शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
१३	६२९	८३०१३४	कु० किरणमयी	श्री रामस्वरूप	,,	,,	,,	प्रथम
१४	६३०	८४०१०८	श्रीमती कमलेश कुमारी	श्री जगदीशप्रसाद	,,	,,	,,	द्वितीय

क्रमसं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण स०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
१५	६३२	८४०१२५	कु० पुष्पमाला	डा नदकुमार चौधरी	एम०ए०	संस्कृत-साहित्य	गु०का०वि०	द्वितीय
१६	६३३	८४०१०६	कु० राजिन्द्र कौर	श्री गुरुचरणसिह	,,	,,	,,	प्रथम
१७	६३४	८४००७९	कु० सुखदा	श्री उमरावसिह	,,	,,	,,	प्रथम
१८	६३५	८३०१३१	कु० वेदवती	श्री सूबेसिह	,,	,,	,,	प्रथम
१९	६३७	८२०१३५	भोपालसिह	श्री बाबूराम	,,	हिन्दी साहित्य	,,	द्वितीय
२०	६३८	८४०१५८	बिजेन्द्रसिह	श्री छज्जूसिह	,,	,,	,,	द्वितीय
२१	६३९	८४०१६८	चन्द्रशेखर पन्त	श्री हरिराम पन्त	,,	,,	,,	प्रथम
२२	६४०	८४०१६१	ऋषिपाल सिह	श्री ताराचन्द	,,	,,	,,	द्वितीय
२३	६४१	८४०११२	श्यामसुन्दर	श्री मनोहरदास	,,	,,	,,	द्वितीय
२४	६४३	८४०१००	देवीप्रसाद	श्री परशुराम	,,	,,	,,	तृतीय
२५	६४५	८४०१०७	कु० आभारानी	श्री राजेन्द्र कु० रस्तौगी	,,	,,	,,	द्वितीय
२६	६४६	८४०१०९	श्रीमती मंजू त्यागी	श्री ब्रह्मदत्त त्यागी	,,	,,	,,	द्वितीय
२७	६४७	८३०१२५	श्रीमती मोहिनी कुकरेती	श्री शालिगराम शास्त्री	,,	,,	,,	द्वितीय
२८	६५१	८४०११३	पूनम ध्यानी	श्री चन्द्रदत्त ध्यानी	,,	,,	,,	द्वितीय
२९	६५२	८४०१३९	कु० सीमा यादव	श्री आर०पी० सिह	,,	,,	,,	द्वितीय
३०	६५३	८४००८७	श्रीमती सविता द्विवेदी	श्री राममूर्ति गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय

क्रमसं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
३१	६७३	८४०१४२	अभिनन्दनकुमार पटवल	श्री राजेन्द्रकु० पटवल	एम०ए०	इतिहास	गु०कां०वि०	द्वितीय
३२	६७४	८४०१६०	आर्येन्द्रसिह	श्री रिक्षपाल सिंह	,,	,,	,,	प्रथम
३३	६७५	८४००६६	दीपक घोष	श्री नारायण घोष	,,	,,	,,	द्वितीय
३४	६७६	८१०००७	नरेशकुमार चौहान	श्री अलबेलसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
३५	६७८	८३०१०८	विकार अहमद	श्री अब्दुल रशीद	,,	,,	,,	द्वितीय
३६	६८०	८४००८८	श्रीमती आशा नरुला	श्री दयाराम नागपाल	,,	,,	,,	द्वितीय
३७	६८२	८४००६०	श्रीमती इन्दु शर्मा	श्री सीताराम शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
३८	६८३	८३०१३५	कु० मंजू	श्री प्रयागदत्त उपाध्याय	,,	,,	,,	द्वितीय
३९	६८४	८३०१७१	श्रीमती नतालिया ल्वो-वना शुक्ला	श्री लेव इवानोविच-फोकिव	,,	,,	,,	प्रथम
४०	६८५	८४००८१	कु० रेखा सिन्हा	श्री बिनोदचन्द्र सिन्हा	,,	,,	,,	प्रथम
४१	६८६	८४०१०२	कु० सुषमा	श्री सेवाराम	,,	,,	,,	प्रथम
४२	६८८	८४००६६	सोमपाल सिंह	श्री अतरसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
४३	६८९	८२०१५१	कौस्तुबानन्द जोशी	श्री मनोहर दत्त	,,	मनोविज्ञान	,,	द्वितीय
४४	६९०	८४०१५०	विनोदकुमार पाण्डेय	श्री रामनरेश पाण्डेय	,,	,,	,,	द्वितीय
४५	६९१	८३०१८३	रणबीरसिंह सेंगर	श्री डोरीसिंह सेंगर	एम०एस-सी०	,,	,,	द्वितीय
४६	६९२	८१००३०	वीरेन्द्र कुमार	श्री मंगलप्रसाद	,,	,,	,,	द्वितीय

क्रमसं०	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
४७	६६३	८२०१४६	सुभाष त्यागी	श्री नरेन्द्र शर्मा	एम०एस-सी०	मनोविज्ञान	गु०का०वि०	द्वितीय
४८	६६४	८२००५०	श्रीमती अजली कुलकर्णी	श्री विनायक कुलकर्णी	एम०ए०	,,	,,	प्रथम
४९	६६५	८१०१०५	श्रीमती मीरासिंह	श्री जगदीशसिंह	एम०एस-सी०	,,	,,	प्रथम
५०	७०३	८२०१०६	शरदकुमार सिंह	श्री ओम्प्रकाश सिंह	एम०ए०	गणित	,,	द्वितीय
५१	७०६	८४०१७१	श्यामसुन्दर	श्री मदनमोहन	,,	,,	,,	द्वितीय
५२	६५४	८१००८४	दुर्गेशमोहन पैन्यूली	श्री महावीरप्रसाद पैन्यूली	,,	अंग्रेजी	,,	द्वितीय
५३	६५६	८४००६५	कृष्णमोहन शर्मा	श्री वाचस्पति शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
५४	६५९	८४०१६६	मदनमोहन मिश्रा	श्री दीनबन्धु मिश्रा	,,	,,	,,	द्वितीय
५५	६६२	८०००४३	रामेश्वरदयाल सिंह	श्री बाबूलाल	,,	,,	,,	द्वितीय
५६	६६७	८२०१३४	देवीसिंह	श्री ज्ञानसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
५७	६६८	८४०१०५	कु० अनु गुप्ता	श्री केवलकृष्ण गुप्ता	,,	,,	,,	तृतीय
५८	६७०	८४०११९	कु० किरणबाला मदान	श्री रामरंग मदान	,,	,,	,,	द्वितीय
५९	६७१	८४०११७	कु० ममता	श्री शिवकुमार शर्मा	,,	,,	,,	तृतीय
६०	६७२	८४०११६	कु० प्रेरणा शर्मा	श्री बी०आर० शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय

Visitor Sri Som Nath Marwaha inaugurating the Philosophical National Conference at GKV on May 16, 1988.

OFFICERS OF THE VISHWAVIDYALAYA

Visitor	Sri Som Nath Marwaha Sr. Advocate (Supreme Court)
Chancellor	Dr. Satyaketu Vidyalankar D. Litt. (Paris)
Vice-Chancellor	Sri Ram Chandra Sharma I.A.S (Retd.)
Pro-Vice-Chancellor	Sri Ram Prasad Vedalankar
Treasurer	Sri Sardari Lal Verma
Registrar	Dr. Virendra Arora
Principal, Science College	Sri Suresh Chand Tyagi
Dy. Registrar	Dr Shyam Narayan Singh
Finance Officer	Sri B.D. Bhardwaj (up to 2-1-88) Dr. B.C. Sinha (from 3-1-88 to 20-5-88) Sri R.P. Sehgal (from 21-5-88)
Director Museum	Dr. J. Sengar
Librarian	Sri Jagdish Prasad Vidyalankar

A Brief Introduction

Gurukula Kangri Vishwavidyalaya is going to complete 88 years of its existence. It has contributed immensely towards the development of Vedic Literature, Sanskrit, Philosophy, Oriental Sciences and National Service. The founder of the Vishwavidyalaya, Swami Shraddhanand, was a prominent pioneer of the Indian Renaissance and National Movement. He was a lamp that gave light to both the Hindu and the Muslim patriots equally and conceived a system of education based on the ancient Indian values. He trumpeted the clarion of Freedom in India which was under bondage.

Gurukula Kangri Vishwavidyalaya is the first institution of higher education that laid special emphasis on instruction through national language Hindi and the study of Indological subjects. Having achieved the status of a deemed university, this institution, besides research and pursuit of higher studies, played a significant role in rural upliftment, extension services, social reconstruction and regeneration, and researches in the fields of the Himalayan Ecology and Orchids. It has also completed recently a research programme–the Integrated Study of the Pollution in the Ganga—under the Union Ministry of Environment.

The credit of the progress of the Vishwavidyalaya goes to the Visitor, Shri Som Nath Marwaha, the Chancellor Dr Satyaketu Vidyalankar and the Vice-Chancellor Prof. R.C. Sharma

Academic Contours

In its short life as a university the Vishwavidyalaya instituted Professorships and Directorships in various subjects, rennovated its Archaeological Museum, developed its campus and buildings, upgraded and re-equipped its library, improved facilities for readers, added new journals and magazines and periodicals to the library besides thousands of books, built a gymnasium, improved and re-equipped its various laboratories

in Science Faculty. GKV donated about one lakh and six thousand rupees to the P.M.'s Drought Relief Fund; and most of this amount was donated by the teachers and employees of GKV.

New Dimensions

Keeping in view Swami Dayanand's educational philosophy of unifying the oriental and the occidental, and aware of the challenges of the modern era of science, the Science faculty has been upgraded. M.Sc. classes have been opened in Microbiology, a P.G. Diploma has been started in Computer Science for which a new Computer Hall has been built and air-conditioned, computer has been installed, and staff has been appointed. P.G. Diploma in the Commercial Methods of Chemisty has also been started to extend and accelerate the professional chances of the pupils. Proficiency Certificate Courses have been opened in English and Sanskrit. Similarly a Yoga Centre is also being run on the campus and is imparting education in Yoga leading to a Diploma course. This session U P. Government released special grants worth Rs. One lakh for the Archaeological Museum. and Rs. Two lakhs for library. Efforts are also being made to build a Stadium in or around the university.

New Subjects and Courses

Three years degree courses were introduced in Science and Arts Faculties. The courses in various subjects have been restructured and uptodated. Continuous assessment with an emphasis on seminars, debates, class-work, home work, library reading, etc. has been implemented. Besides a Diploma Course in Computer Science, a new stream of subjects consisting of Computer as a full subject is being introduced in B.Sc. The three years degree course has also been introduced at Kanya Gurukula, Dehradun.

Achievements of the Students

On the one side the Vishwavidyalaya took up rural

upliftment through Kangri Village Development and NSS, on the other side it tried to develop vocational and practical aspects of education. Despite limited resources, our students remained anchored to the national stream of construction and did not remain mere bookworms. They had an awareness of the basic needs of the country and society. The examinations were conducted peacefully in time The input of Grants this year was higher, all the departments accelerated their activities. The number of students also increased.

In spite of financial constraints and other obstacles, the *ashrama* system for the *brahmacharis* has been improved and for their physical and spiritual development *yogabhayasa*, *vratabhyasa* and daily recitation of the Vedic *mantras* are being continued. This year was a period of consolidation and qualitative improvement Three years degree course under 10+2+3 Scheme was introduced in the university All efforts were made to run the administration of the V.V. without any tensions and conflicts. Students behaved decently; they showed remarkable sense of discipline and earnestness.

The students of the VV participated in the Sanskrit debating contests at National level and won trophies at various places. The students are also becoming competition-oriented and some of them were selected in various competitive examinations and entered various professional fields. The students were provided free guidance for competitive examinations. They were also given opportunities through *Sarswati Yatras* to improve their practical knowledge. Efforts were also made for their enculturation through various literary and extra-literay activities.

Rishipal Vedalankar, a student of M.A. Final, took part in the All India Debate at Bharatiya Shaheed Sainik Smarak Vidyalaya, Nainital and got the third position. Shri Rajendra Kumar participated in the All India Sanskrit Debate held at Kurukshetra and got the first prize. He stood second in another All India Debate held at Chandigarh University. Sri Rajendra Prasad of Vidyalankar Part II got the first position

and prize in the debate at Inter-University Youth Gathering under NSS held at Meerut. The team got the consolation prize. Sri Harendra Nath and Jitendra Kumar got prizes in Yoga competitions. Students' participation in games and sports also increased.

Academic Activities of Faculty Members

There has been an increasing contribution to and participation in various conferences, workshops, seminars, symposia and other educational programmes at the inter-university level by faculty members who have engaged themselves in the field of research, publication and extension. The teachers of the Vishwavidyalaya have had in their mind and heart the goals of New Education Policy and not only refurnished themselves to face the challenge but also recast the courses.

During the last session Vice-Chancellor Shri R C Sharma attended the Commonwealth Universities' Executive Heads' Conference in Penang, Malaysia, and Registrar Dr Virendra Arora attended ACU Conference of Registrars and Administrators in Sydney (Australia) and visited Singapore. He observed the working of various universities in Sydney, Melbourne, Canbarra and Singapore. This year Prof. Ram Prasad Vedalankar, Pro-Vice-Chancellor has gone to the U.S. Dr. Jai Dev Vedalankar was awarded Swami Pranava Nand Darshan Purashkar by the Akhil Bhartiya Darshan Parishad on the book "Bhartiya Darshan ki Samasyaen." This award contains Rs. 5000/- cash and a testimonial.

Sri Budh Prakash Shukla of the Physics Department has submitted his Ph. D. thesis to Kurukshetra University. Sri M.P. Singh of the Maths Deptt. submitted his Ph. D. thesis—"Some Vibration Problems of Isotropic Elastic Plates of Varying Thickness" to Meerut University. Sri Harbanslal submitted his D. Phil. thesis "Some Problems

of Queing and Sequencing Theory"to Garhwal University.

Prof. Ram Prasad Vedalankar, Prof. Satya Vrata Rajesh of the Department of Veda; Prof. R.L Varshney, Sri S S. Bhagat, Dr. Narayan Sharma, Dr. Shrawan Kumar and Dr. Ambuj Kumar of the Department of English; Dr. Nigam Sharma, Sri Ved Prakash Shastri of Sanskrit Department; Dr. Jai Dev, Dr. Vijai Pal Shastri of Philosophy Dept.; Dr. Vishnu Dutta Rakesh of Hindi Department; Dr. S.L. Singh, Sri V. Kumar and Sri Harbanshlal Gulati of Mathematics Department; Dr. B D Joshi and Dr. A.K Chopra of Zoology Department, and a number of other teachers of the Vishwavidyalaya participated in various national seminars and conferences and read papers. Even in the international conferences, papers of the teachers of the Science Faculty of the V.V. were accepted to be read. These teachers thus actively participated in seminars, workshops, conferences and other learned gatherings.

One Reader in Physics is actively engaged in research. Others have been evaluating Ph. D. thesis and have been appointed members of the various learned bodies, boards of studies, etc.

Academic Growth

The academic contours of the VV definitely improved this year. Renowned men of letters in various subjects were invited to deliver talks. Dr K.S. Murty, Vice-Chairman of UGC visited the VV in June 1988, and delivered a lecture on "Adwaita in the Vedas." He was highly impressed by the atmosphere and academic pursuits of the VV.

Research

The following persons were awarded Ph.D. degrees in the session 87–88 :

Name of the Researcher	*Title of the Thesis*	*Name of the Supervisor*
1	*2*	*3*
Km Sumedha	"महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य के परिपेक्ष्य में अग्नि देवता का अध्ययन।"	Dr Satyavrat Rajesh
Sri Ramnarayan Rawat	"वैदिक एवं औपनिषदिक दर्शन—एक तुलनात्मक अध्ययन (महर्षि दयानन्द के परिपेक्ष्य में)"	Dr Bharatbhusan
Sri Vasant Kumar	'वाल्मीकि रामायण एक परिशीलन (स्मृति शास्त्र के परिपेक्ष्य में)"	Dr Ved Prakash
Smt Raj Kumari Sharma	'महर्षि दयानन्द के परिपेक्ष्य में महाभारत में निर्दिष्ट धर्मों व दर्शनों का समीक्षात्मक अध्ययन "	Dr Nigam Sharma
Sri Surendra Kumar	"ऋग्वेद में प्रतिपादित विभिन्न विद्याओं का सकलन एवं विवेचनात्मक अध्ययन (दयानन्द भाष्य पर आधारित)"	Prof. Ram Pd. Vedalankar
Sri Ravidutta	"गुह्यसूत्रों के परिपेक्ष्य में संस्कार विधि का अध्ययन"	Dr. Satyabrat Rajesh
Sri Om Sharma	"जैन, बौद्ध और न्याय दर्शनों में ज्ञान मीमासा : एक तुलनात्मक अध्ययन।"	Dr Jaideva Vedalankar

Publications

Some of the research works and publications of 1986-87 are as follows :

Prof. Ram Prasad Vedalankar :	1. Yagya Sudha
	2. "Kahan he vah" (jo sab par sukhon ki varsha karati hai.) Vedic Rashmiyan. Vol. 4.
Prof. Vishnu Dutt Rakesh	: 1. Vedic Sahitya, Sanskriti & Samaj Darshan (ed.).
	2. Adhunik Hindi Kavita ki Urja (in press).
Prof R.L. Varshney	1. Major Movements in English Literature.
	2. Movements and Trends in English Literature.
	3. Beckett : Waiting for Godot : A Study.
	4. O'Neill : The Hairy Ape : A Study
Dr Shrawan Kumar :	1. "The Theme of Disillusionmen in the Poetry of Nisim Ezkeil.'
	2. "Swami Dayanand as a Rebel.'
Dr Satyavrata Rajesh :	"Swami Shhraddhanand : A Vilakshan Vyaktitva."
Sri Ved Prakash Sashtri :	"Ved ke Adesh", Aryadhara.

Prof. K.S. Murti, Vice-Chairman, U.G.C. being honoured by Vice-Chancellor Prof. R.C. Sharma at Gurukula Kangri Vishwavidyalaya.

Sri Ved Prakash Shastri	"Arya Sanskriti ke mool tatva" in Vedic Sahitya, Sanskriti and Samajdarshan. (Cue title VSSS).
Dr Mahavir Agrawal :	"Kavikulguru Kalidas," Gurukula Patrika. "Pt. Satyavrat Ji ka Geeta Bhasya," VSSS.
Dr Jai Dev :	Contirbuted eight articles to Gurukula Patrika on Indian Philosophy, Vedic Darshan and Upanishadas.
Dr Vijai Pal Shastri :	1. "Shubha Sankalp se Vishwashanti " 2. "Khyativad," Gurukula Patrika.

Dr B C Sinha : "Brihatar Bharat me Bharatiya Sanskriti"

Sri S.L. Singh : Contractors and fixed points (joint with J H.M. Whitfield), Colloq. Math (1987-88).

Sri S.L. Singh and Dr. Virendra Arora : Fixed point theorems for family of mappings, Lusan Kyo. Math. J. 3 (1987).

Sri S.L. Singh : Fixed point theorems for expansion mappings on probabilistic metric spaces (joint with B.D. Pant and R.G. Dimri), Honam Math. J. I. (1987), 77-81.

Sri S.L. Singh : Coincidence and fixed point theorems for family of mappings on Menger spaces and extension to

uniform spaces (joint with B.D. Pant) Mathematica Japonica, 33 (1988).

श्री एस.एस. सिंह एवं श्री वी. कुमार : उपगामी क्रमविनिमयी प्रतिचित्रणों हेतु २-दूरीक समष्टि मे एक स्थिर बिंदु प्रमेय, विज्ञान परिषद् अनुसंधान पत्रिका, जुलाई (१९८७)।

श्री एस. एल. सिंह एवं श्री वी. कुमार : तदैव (१९८७)।

Sri Harbansh Lal : On multi-input bi-tandum queue modelling (joint with A.D. Heydari), Pure Appl. Math. Sci. 25 (1987).

Dr Ram Kumar Paliwal : "Ati Sukshma Upyogi Jivanu," Aryabhatta, August, 1987.

Dr Akshaya Kumar, "Eucaliptis kitna labhprada, kitana hanikarak," Arya Bhatta, August 1987.

Dr Rajnidutta Kaushik, "Sansleshit Rang Padarthoan se Haniyan," Aryabhatta, 1987.

B.D. Joshi 1. Changes in some blood values of C. batracus exposed to lead nitrate. Him. J. Env. Zool. 1 (1) : 33-36.

2. Sex related hematological values of G. domesticus. Him. J. Env. Zool. (2) : 80-83.

3. Cytomorphological classifications and key to the identification of circulating blood of freshwater teleost from India. Him. J. Env. Zool. 1 (2) : 98-113.

4. Chemical constituent of gonads during different physiological phases of C. batracus. Proc. Natl. Symp. Fish & Env., pp. 110-113.

5 On some hematological values of the fish N. rupicola as affected by a sudden change in its ambient water salinity. Proc. Natl. Symp. Fish & Env., pp. 11-15.

6 Blood values of some freshwater fishes under varying eco-physiological and toxic conditions (Abstract) Natl Symp. on past, present & future of Bhopal lakes. July 1987 (Bhopal).

7. Physio-biochemical alterations in fish-blood under stress (Abstract). X Annual Conf. Ind. Soc. Comp. Ani. Physiol., Dec. 1987 (Hyderabad).

8. Blood values of the freshwater fishes under diseases (Abstract). National Seminar on Aquatic Biol , March, 1988 (Nainital).

9. Effect of Trypanosome infection on some blood value of fishes (Abstract). All India Seminar on Ichthyology, Santiniketan, Nov. 1987.

Besides several publications by the individual teachers, research and external jounrals, namely The Vedic Path, the Aryabhatta and the Prahlad and Gurukula Patrika were published by the Vishwavidyalaya with a qualitative improvement under the editorships respectively of Dr H.G. Singh, Dr Vijai Shankar, Dr. V.D. Rakesh and Dr. Jai Dev.

A Publication Directorate has been established under the directorship of Dr. Vishnu Dutt Rakesh, Professor & Head, Department of Hindi. This Publication Centre has published two works—Vedic Sahitya, Sanskriti aur Samaj Darshan and Sodha Saravali containing abstracts of the researches done in GKV.

Projects

(1) The Ministry of Environment and Forests sanctioned a project worth Rs. 4,24,600/-on 18-2-87 to the Department of Botany for "STUDY ON ENVIRONMENTAL BIOLOGY OF THE HIMALAYAN ORCHIDS" under the Principal Investigatorship of Dr. Purshotam Kaushik of the Dept. of Botany. Under this project the orchids were collected from different parts of the Himalayas, were grown in pots and relevant experiments were conducted in the laboratories The research work under this project is being carried mainly on mycorshiza, tissue culture and seed germination, morphology, anatomy, ecology and environmental effects. Efforts are also being made to set up mini-labs at different places to conduct research on the orchids under different environmental conditions. Necessary equipment has been purhased.

UGC Project on Lectins

(2) University Grants Commission has sanctioned this research project to characterize Lectins from Leguminous Seeds and bulbous plants of the Western Himalayas under Dr. Purshotam Kaushik of the Botany Department for a period of three years. A sum of Rs. 60,000/ for equipment and Rs. 20,000/- for contingency has been sanctioned. A Junior Research Fellow is to be appointed for this project, necessary chemicals and equipment have already been purchased.

Ganga Integrated Study

(3) This project of the Union Ministry of Environment was run under the Directorship of Dr. Vijai Shankar Sexena, Professor & Head, Department of Botany. It studied the pollution of the Ganga from Rishikesh to Garhmukteshwar, and submitted its report to the Government on the causes

and remedies of Pollution in the Ganga in the specified area.

(4) Dr. Parmanand of the Dept of Physics has also undertaken a UGC Project, and is working on it.

(5) Dr. Randhir Singh of the Dept. of Chemistry submitted a project to the U.G.C. for approval. The same has been approved. The project is on "SYNTHESIS AND ELECTROCHEMICAL STUDIES OF MACROCYCLIX COMPLEXES".

(6) Another Project—"KINETIC SPECTROPHOTO-METRIC IDENTIFICATION AND DETERMINATION OF ORGANIC AMINO COMPOUND OF IMPORTANCE IN MINOR AMOUNT IN INDUSTRIAL EFFLUENTS" — under the directorship of Dr Rajnishdutta Kaushik of the Dept. of the Chemistry has been approved by the U.G.C for a period of two years.

(7) Himalaya Eco Project under the Directorship of Dr. B.D. Joshi of the Zoology Dept has completed its tenure of three years.

Himalaya Environmental Project

This Project ran in the VV for about three years under the Directorship of Dr. B. D. Joshi, Professor & Head, Department of Zoology. Under this project about 15,000 trees were planted in the Kanvashrama-Shankar Ashrama Farm in September 1987. About 61,000 plants were distributed free of cost to the residents of the Kanva Valley for plantation. A socio-economic survey of village Udairampur was conducted. A study of harmful pests in the valley was conducted to locate the pests that reduce the fertility of soil. In March, 1988 a survey of the trees planted in September was oonducted and it

was found that despite drought about 52% of plants were still alive.

Project of the Psychology Department

CSSR New Delhi assigned to Dr. Surya Kumar Srivastava a research project—"Leadership Styles and Effectiveness—A Comparative Study of Private and Public Organizations" and sanctioned Rs. 9,977/- for it. The work on the project is in progress.

Conferences & Seminars

By the assistance provided by the U G.C , one Summer Institute was organized in GKV from 27th June to 11th July on "Development of Personality and Transformation of Behaviour" under the directorship of Prof H.G. Singh. A National Conference was held on "Shiksha Padhati mai Mulya and Bharthari" from 15th to 18th May under the directorship of Dr. Jai Dev. From 11th to 14th October under the directorship of Prop. B.C. Sinha a national seminar was held.

Visitors

The most prominent visitor to the university this session was Padmabhushan Dr. K. Sachchidanand Murty, Vice-Chairman, U.G.C., who delivered his talk on "Adwaita in the Vedas".

Dr. Dhamendra Goyal, Head of Philosophy, Panjab University Chandigarh; Dr. Santosh Kumar, Professor in Magadh University; Dr. Upendra Thakur, former Head of History Dept., Sagar University; Dr. Krishna Dutt Vajpai, Lucknow; Dr. Vaijnath Puri; Dr. V.K. Varma of Puri; Dr. Satyavrata Shastri of Lucknow; Dr. Surya Prasad Dixit of Meerut; Prof. R.S. Singh, Head of English Department,

Kurukshetra University; Dr. T.R. Sharma, Professor & Head of English Deptt., Meerut University; Dr. Asha Saklani; Dr. Rama Murti Sharma and a number of other scholars, professors, visiting professors, experts in their respected fields visited the Vishwavidyalaya.

Visiting Professor/Fellow

Dr. S R Chaudhari, formerly JNU Professor & Head of Arabic Department, during his tenure of Visiting Professor in the Veda Dept of GKV has translated four hundred mantras of the Vedas into Arabic and seven hundred shlokas from the Geeta. He is thus authoring 'Cosmos and the Creation'. This would be the first translation of the Vedic hymns in Arabic.

Department of Vedas

An attempt has been made to study the Vedas scientifically. A Vedic laboratory is in the offing. A Vedic Museum containing various kinds of apparatus and medicinal plants and element Pushta, mista, rogvinashak and sugandhit will be kept. Some equipment has already been purchased. The teachers of the Department continued the work of Vedic propagation and expansion through their lectures, books and pamphlets. They visited other places to preach the knowledge of the Vedas. Prof. Ram Prasad Vedalankar's talk on the Relevance of the Vedas in the Age of Computers was broadcast by the All India Radio, Nazibabad on 29.12.87. Prof. Ram Prasad also visited Delhi, Bombay and Kanpur to deliver talks on Vedic subjects. Teachers of the Veda department also participated in the seminars and conferences and published articles and books. Dr. Satyavrat Rajesh visited Delhi, Rishikesh and Zeend. Prof. Ram Prasad visited the U.S.A.

Department of Sanskrit

The Department has produced about twenty Ph. Ds.

Its products are serving throughout the country on various respectable posts. This year alone about five persons were conferred Ph.D degrees. About 14 students are pursuing research Six prominent scholars were invited from outside to deliver talks in the Department. The Department celebrated 'Sanskrit Day' on 22nd August. Under the auspices of Saraswati Parishada, speech contests, debates, recitation-competitions, etc. were organized. The Department also organized Rashtra Raksha Sammelan at the time of Annual Convocation. Dr. Nigam Sharma and Sri Ved Prakash took keen interest in the development of the Department. They delivered talks on various topics at various places. The teachers of the Department also participated in seminars and conferences. Dr. Nigam Sharma also acted as an expert in some Selection Committees. Dr. Mahavir and Sri Ved Prakash contributed articles to various journals and books and did work for the propagation of Vedic Culture through their lecturers in various towns. Some of the teachers worked as Ph. D. examiners in external universities.

Dr. Yogeshwar Dutt Sharma has been appointed Professor in Sanskrit.

Department of Ancient History

The Department consists of one professor, two readers and two lecturers. About 17 scholars are pursuing research and about 21 have been awarded Ph. D. degrees in the past few years. Research papers of the teachers of the Department were published in addition to the already published books. Sri Sukhvir Singh submitted his Ph.D. thesis under the supervision of Dr. Shyam Narain Singh. Four papers of Dr. Sinha were published. Dr. JS Sengar contributed one article and one paper to the All Indian Museum Conference. Dr. Kashmir Singh contributed towards the corporate life of the institution. Dr. Rakesh Sharma worked as NCC Caretaker Incharge. Dr. Kashmir Singh also worked

Convocation Procession consisting of (from left) Chancellor Dr. Satyaketu, Visitor Sri Som Nath Marwaha, Vice-Chancellor Prof. R.C. Sharma, Chief Guest Sri Deshpande, Prof. Ram Prasad, Acharya and Registrar Dr. Virendra Arora.

Performing the Convocation *Yajna* (from left) Chancellor Dr. Satyaketu, Visitor Sri Som Nath Marwaha, Vice-Chancellor Sri R.C. Sharma, Chief Guest Sri Deshpande, Registrar Dr. Virendra Arora and Pro-Vice-Chancellor Prof. Ram Prasad.

as Deputy Supdt. of Examinations.

The Department also organized an All India Seminar on "Local Self Government in Ancient India" under the Directorship of Prof. B C. Sinha. Eminent Professors of history such as Prof. B.N. Puri, Prof. Upendra Thakur Prof. K.D. Bajpai and Dr. R.C. Agrawal attended this seminar.

Archaeological Museum

The museum has been given a face lift; it has been transformed into a modern centre with the construction of new gallaries and showpieces as well as show-cases. There is a feel of envionmental change in and around the Museum. One lakh rupees as a grant were received from the U.P. Government. About 7300 people visited the museum this session. Among the VIPs who visited the Museum were :

1. Sri Ashoka Marwaha, Advocate, New Delhi
2. Sri Prem Ahuja, IFS
3. Sri Jagdish Prasad Sharma, Bank Chairman
4. Sri Virendra Ji, President, Arya Pratinidhi Sabha, Panjab
5. Sri Satish Kumar Vedalankar
6. Justice Chandra Prakash, Allahabad
7. Commodore Sri Sat Bir, New Delhi
8. Sri R S. Chitkara, former Joint Secy. Ministy of Education, Govt. of India
9. Dr. K.S. Murty, Vice-Chairman, U.G.C; New Delhi,

The Museum is functioning under the directorship of Dr. J S. Sengar.

Department of Philosophy

The passouts and of the philosophy department have done commendable work in propagating Indian. Philosophy. The teachers participated in various seminars and conferences, and read papers. Dr. Jai Dev Vedalankar, Reader and Head, attended All India Philosophical Annual Conference and read a paper entitled "Vedon mai Srashti Prakirya". He also participated in the International Philosophical Seminar in Delhi Universitv. He delivered talks in Arya Samajas, edited the Quarterly Magazine, the Gurukula Patrika, and guided research. Dr. Vijai Pal Shastri attended the Annual Conference at Moradabad, contributed a paper, 'Vedic Vichardhara ka Vegyanik Adhar', and an article in the Gurukula Patrika. Dr. Triloka Chandra's article 'Nasha mukti ke kargar sadhan' was published in the Denik Hindustan; he presented a paper at CBRI, Roorkee on Yoga and Health. He also delivered talks in various Arya Smajas.

Department of English

Department of English concentrated on the improvement of quality. Besides half a dozen research scholars and twenty PG students, about 80 students were prepared for the Certificate Course in the Proficiency of the English Language. Modern methods of teaching were promoted and the Language Laboratory was put to use. Teachers of the Department participated in seminars and conferences, contributed and read papers and published their papers and books. Dr. T.R. Sharma, Professor and Head, Department of English, was invited to deliver a talk in the Department. He delivered the talk on "Catharsis". Students were asked to prepare book-reviews and papers on various topics related to their subject. Students also took part in debates and elocution contests.

Dr. R.L. Varshney, Head of English Dept. delivered a lecture in the U.G.C. Summer Institute in English at Meerut University—"The Teaching of English in Russia". He

contributed a paper in the UGC Seminar—Cultural Integration and Translation. The subject of his paper was "A Linguistic Approach to Translation." He is guiding research to about ten research scholars. He published two books and a few articles, he also helped in the editing of the *Vedic Path*, and prepared the annua 'reports and 'A View for Review' and worked as Supdt. Examinations. Dr. Shrawan Kumar and Dr. Ambuj Kumar contributed papers and attended conferences and seminars at Meerut and Roorkee. Dr. Narayan Sharma and Shri S.S. Bhagat also attended the U.G.C. Seminar at Roorkee. Dr. Narayan Sharma is helping in the preparation of the University Rules and Regulations.

One student of M.A. English has been selected in the National School of Drama; another was selected as a College Lecturer this session.

The Department has also been guiding students preparing for I. A. S., P. C. S. and other competititve examinations.

Department of Psychology

The Department has two professors, one reader, two lecturers, one laboratory assistant and one laboratory attendant. Four M.A. final students submitted their dissertations. Two scholars submitted their Ph. D. thesis under Prof. O.P. Mishra to Garhwal University. The Governor of U.P. nominated Prof. O.P. Mishra as an expert on the Selection Committees of Gorakhpur and Meerut Universities to appoint lecturers in Psychology. Prof H.G. Singh edited the *Vedic Path*. He also organized a Summer Institute in the Department and delivered two radio talks and lectures at ONGC Dehradun, Sagar University and Sagar Police Training College. He contributed a good number of articles in the *Vedic Path*. Sri C.S. Trivedi, Reader helped in Testing Section of the Laboratory, enabled the Vidyalaya students to recite Vedic mantras and delivered extension lectures at Bhagwandas Sanskrit Mahavidyalaya, Haridwar.

Shri Satith Chand Dhameeja participated in a U G.C. Seminar at Roorkee and visited the Book Fair. ICSSR, New Delhi assigned to Dr. Surya Kumar Srivastva a project. Dr. Srivastava also contributed three research papers in various journals.

Department of Hindi

The Department took concrete steps to start a Diploma Course in Hindi Journalism. The number of students in Department increased. A group of students from non-Hindi speaking students visited the VV. The students of the department took part in debates and elocution contests.

Dr. Surya Prasad Dixit, Head of Hindi Dept., Lucknow University delivered a talk in the department. Dr. Vishnu Dutt Rakesh, Professor & Head, edited Shodha Saravali and Vedic Sahitya, Sanskriti & Samajdarshan. Dr. Rakesh also participated in the national seminars at Lucknow, Meerut and Benaras.

Department of Maths

Department consists of two professors, three readers and two lecturers. Three research scholars are working in the department for their Ph.D. degrees. Prof. S.L. Singh contributed about seven research papers, and Dr. Virendra Arora about three papers to various learned journals. Shri M.P. Singh, Lecturer submitted his Ph.D. thesis in April 1988 for the award of Ph.D. Sri H.L. Gulati is in the process of submitting his D. Phil thesis to Garhwal University. Prof. S.L. Singh, Dr. V. Arora, and Sri Gulati participated in U.P. Govt. Colleges' Academic Society, Rishikesh. Under the direction of Prof. S.C. Tyagi, Prof. S L. Singh edited the *Journal of Natnal and Physical Sciences*.

Department of Physics

The Department consists of two readers, two lecturers and lab assistants. The teacher-taught ratio in the department was 1:36. A number of papers and articles of the teachers of the Department were published in various magazines and journals. Shri B P. Shukla submitted his Ph.D. thesis to Kurukshetra University for award. He delivered a talk on 'Hamara Paryavaran'. Dr. Parmanand has been assigned U.G.C. Project and he is working on it.

Department of Chemistry

The members of the Department organized a Cartoon Exhibition and celebrated O.P. Sinha Balidan Divas. Dr. Kaushal Kumar, Reader worked for the beautification of the university. Dr. Akshaya Kumar Indrayan is working on a U.G.C. project, and so is Dr. Randhir Singh. Dr. Randhir Singh has also sent a research project for approval to CSIR. Dr. Randhir Singh participated in a conference in Delhi in February 1988 and presented a paper, "Industrial Effluents and Pollution Hazards."

Department of Zoology

Ph.D. courses have been started in this session. The Department conducted a four-day Annual Workshop of the Research Project of MAB under the auspices of the Ministry of Environment, Forest and Wild Life. Dr. Joshi was the convener of this workshop. In December 1987, The Fish and their Environment, a book was published. For the benefit of students, a lecture on the Protection of Wild Life was organized by the Department, Dr. Asha Saklani of Garhwal University gave the talk.

Dr. B.D. Joshi delivered four talks and attended a number of conferences; he contributed, about nine papers

which are published; he gave two radio talks, and edited the Himalayan Journal of Environment and Zoology. He assisted in the editing of the Journal of Natural & Physical Sciences too. Under Dr. Joshi's directorship two projects of D O.E. and U.G.C. respectively are in progresss. One scholar under him submitted Ph.D. thesis to Garhwal University. Dr. T.R. Seth guided M. Sc. dissertation. Dr. A.K. Chopra's four papers were published; he guided one M. Sc. dissertation and attended a Seminar at Magadh University in which he presented a paper. He participated in four other conferences and seminars. Dr. Chopra also worked as the Associated Editor of The Fish and Their Environment and *Himalayan Journal of Environment and Zoology*. Dr. Dinesh Bhatta's paper was accepted for presentation in Netherlands International Conference. Another of his paper was presented in BHU. He contributed three more papers for publication. Dr. Bhatt guided a M.Sc. dissertation and acted as the Associate Editor to the above-mentioned journals.

Convocation

In the past, the Convocations of the Vishvavidyalaya were delivered by the Presidents and Prime Ministers of India. Gurukula had the privilege of getting the patronage of the inspiring visits of the great luminaries of India, like Mahatma Gandhi, Dr. Rajendra Prasad, Dr. Radhakrishanan, Pt. Jawaharlal Nehru, Pt. Govind Ballabh Pant, Acharya Narendra Dev, Dr. Sampurnanand, Sri Morarji Desai, Smt. Indira Gandhi, Sri Jagjivan Ram, Sri Y.B. Chavhan, Dr. C.D. Deshmukh, Dr. N.V.H. Gadgil, Gyani Zail Singh, Dr. Chenna Reddy, Sri Veer Bahadur Singh, Sri Balram Jhakar and others. It also had its convocations delivered by eminent men of letters like Rabindranath Tagore, sanyasis like Dr. Satyaprakash Saraswati and justices like Sri H.R. Khanna. The Convocation of 1988 was delivered by Justice V.S. Deshpande, former Chief Justice of Delhi High Court. In his Address, Justic Pande clarified the real meaning of religion and its

a real place in the Constitution of India, He emphasized the necessity of true secularism and the use of religion for national integration. He also made a mention of a judgement confirmed by the Supreme Court (IR 1977 SC. (908) :

"It has to be remembered that Article 25(I) guarantees "freedom of conscience" to every citizen, and not merely to the followers of one particular relegion, and that, in turn, postulates that there is no fundamental right to convert another person to one's own religion because if a person purposely undertakes the conversion of another person to his religion, as distinguished from his effort to transmit or spread the tenets of his religion, that would impinge on the "freedom of conscience" guaranteed to all the citizens of the country alike."

Justice Deshpande said that education should be in accordance with our ancient cultural values and the spirit of the Constitution of India. Without disintegrating the old values, we can relate ourselves to modernism. Institutions like the Gurukula should impart education that makes students aware of their old Indian culture and enables them to love and respect it and its values. He expressed his hope that Gurukula will be a pioneering institution in this direction. The students going out of this institution would be great nation builders, he hoped.

Department of Botany

The Department consists of one Professor and two lecturers and four non-teaching personnel. There were 54 B.Sc. and 18 M.Sc. (Microbiology) students in the department. Three students submitted their M.Sc. dissertations under the supervision of Prof. V. Shankar and three under the supervision of Dr. P. Kaushik. Three projects carried on in the Department were: (1) Integrated Study of the Ganga; (2) Environmental Biology of Himalayan Orchids, and (3) Project on Lectins. The first one was completed under Dr. V. Shankar

Professor and Head, and the other two are in progress under the directorship of Dr. P. Kaushik. Prof. V. Shankar contributed eight articles and Dr. P. Kaushik two.

Computer Department

The building-construction and air-conditioning have been completed. Necessary equipment and computer have been installed. Necessary staff has been appointed or is in the process of being appointed. So far Sri Narendra Parashar, System Engineer looked after the department. Two lecturers and two programmers have also been appointed. In April 1988, Shri S.R. Thakur, UGC Consultant inspected the Department. A P.G. Diploma Course and an Integrated Course of Computer Science with subjects in B.Sc. are being started from July, 88.

Library

The Library has been accepted by the Ministry of Culture and Human Resources Development as a centre of the preservation of ancient culture of India Hence it was granted by the Ministry a fund of Rs. 66,500/- last session for the protection and preservation of old and rare manuscripts and books. The U.G C has granted in the Seventh Five Year Plan a sum of Rs. five lakhs for the extension of the building of the present library. Besides this, a sum of Rs. four lakhs has been sanctioned by the UGC for the purchase of books and periodicals in the Seventh Five Year Plan.

This session, about 24,200 readers visited the library, 1553 new books were added to it. Experts in their subjects visited the International Book Fair held in New Delhi and selected books for the library at the spot. About 454 journals, periodicals and newspapers are being contributed to the library. The library arranged a Book Fair in the Vishwavidyalaya campus at the time of Convocation. The Library is also

Chief Guest Sri V.S. Deshpande (Retd. Chief Justice, Delhi High Court) releasing the book "Vedic Sahitya, Sanskriti Evam Samaj-Darshan" on the works and personality of famous educationist and our former Visitor Dr. Satyavrat Siddhantalankar. Others standing are Visitor Sri Som Nath Marwaha, Pt. Satyavrat Siddhantalankar and Vice-Chancellor Prof. R.C. Sharma.

A scene from the Convocation Procession (1988).

preparing for publication a Bibliography of the available books in the library on Vedic literature, Indology and allied subjects. This Bibliography will contain about 7000 entries of the books. In the beginning of the 7th Five Year Plan, the Vishwavidyalaya Library got a grant of about Rs. 4 lakhs, and for the year 1988-89 a special grant of Rs. 7 lakhs has been granted. The physical conditions of the library were improved considerably. The Librarian, Shri Jagdish Vidyalankar, has also been co-operating in the publication of the Vishwavidyalaya publications.

Games and Sports

This session the guidance, training and practice for the following games was given by the VV : Hockey, Cricket, Badminton, Table-tennis, Football, Kabaddi, Wrestling, Athletics, Volleyball, Body-building and Weight-lifting. Friendly matches of Hockey were played with Govt. Ayurvedic College and Haridwar Clubs. In the month of November, the VV Hockey Team participated in the Inter-Hockey tournament at Gorakhpur and defeated the Narendradev Agricultural University Team. The Hockey team also went to play matches at Chandigarh. During the Shraddhanand Week an All India Hockey Tournament was arranged in the Vishwavidyalaya in which the VV team got victories over a number of teams.

The three students of the VV for the first time participated in the Inter-University Wrestling Competition held at Bareilly in October 1987, The VV Kabaddi team reached up to the semifinals in the U.P. Inter-university Kabaddi tournaments held at Agra. The cricket team of the VV went to Kanpur and Kurukshetra to play matches. The students of the VV got positions in the weight-lifting tournaments arranged. Athelete meets were arranged inside the Vishwavidyalaya.

Yoga Centre

An International Yoga Centre has been functioning and the fifth batch of trainees completed their course this year. The students of Yoga participated in various yoga contests and competitions and achieved distinct positions. About thirty four students received Yoga training The Centre also provided training to 14 children residing in the campus and the children of the Lucknow Bal Grah Yoga contests were held during the month of December. In the yoga competition held by Shri Ganga Sabha Trust at Haridwar, the VV students Shri Hareshchandra Nath and Jitendra Kumar respectively got second and third positions. Amongst the juniors Shelendra, Sanjay and Virendra Kumar got the first three positions. In another competition held at Gurukula Mahavidyalaya Jwalapur, Shelendra Kumar got the first position. The Yoga Centre is being looked after by Sri Ishwar Bharadwaj.

Kanya Gurukula, Dehra Dun

Kanya Gurukula is now the second campus of the Vishwavidyalaya It was granted Rs. five lakhs separately under the VII Five Year Plan. It is a constituent College of GKV. It was established in 1923 and imparts education to girls up to graduate level It is a residential institution and has a well-equipped library, reading rooms, hospital and playgrounds. N.S.S. and Adult Education schemes are being successfully run at Kanya Gurukula Mahavidyalaya.

Health Centre

GKV is also running a Health Centre in Room No. 5 of the Shraddhanand Hospital under the directorship of Dr. B K. Bhardwaj, M D , PMS. About 5202 persons were given treatment and medical aid by the centre this year. The Centre has a provision of admitting the patients to the hospital too. A technician in the Pathology section of the

hospital on behalf the VV is working. Pathological diagnosis is also available to the university employees free of cost.

N.S.S.

About 131 students were registered for NSS in 87-88. The trainees planted trees in the university campus in August under MPFL, 48 persons were made literate. Literacy kits were also distributed. The volunteers also did the work of cleaning and maintaining the gardens in the VV. Three one-day camps were arranged. Another three-day camp was arranged during winter in which Dr. A.K. Chopra, Programme Officer asked the students to do village service and upliftment work. The students also participated in the Inter-University Youth Gathering at Meerut from 29-2-88 to 2-3-88.

N.C.C.

Dr. Rakesh Kumar Sharma is the caretaker in-charge of the Vishwavidyalaya NCC. About 55 cadets are receiving NCC training. The NCC cadets took part at the annual training camp at Kotdwar. The cadets participated in the salaami on the Republic Day. 10 cadets appeared for the B certificate and 7 cadets appeared for the C certificate examinations of the NCC. Three students of the VV.. Sunil Sharma, Sudhanshu and Girish were selected at the Batalion level. Dr. Rakesh Sharma has been selected as NCC Commanding Officer of the VV Unit and is to proceed for commission training.

Adult, Continuing Education & Extension Programme

The department is running about 55 literacy centres in various parts of the nearby locality and villages under

the directorship of Dr. Anil Kumar. It was visited and counselled by the Director and Deputy Director, Adult Education and other officers of the Adult Education Department visited GKV and inspected the working of the department and gave their suggestions. The Department is also engaged in the extension activities. It has been showing films and making the neighbouring village populace aware of the necessity of adult education, population control, women education and hygiene.

Prepared by Dr. R.L. Varshney, Professor & Head, Dept. of English, G.K.V., Hardwar

Printed at the Jaina Printers, Jwalapur

ओ३म्

८८ वाँ वार्षिक विवरण

१९८७-८८

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रकाशक :
डा० वीरेन्द्र अरोड़ा
कुलसचिव,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उ०प्र०)

जुलाई, १९८८ : ५०० प्रतियाँ

मुद्रक :
गंगा प्रिंटर्स, ज्वालापुर

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

परिद्रष्टा	—श्री सोमनाथ मरवाह
कुलाधिपति	—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार
कुलपति	—श्री रामचन्द्र शर्मा, आई०ए०एस० (अ०प्रा०)
कोषाध्यक्ष	—श्री सरदारीलाल वर्मा
आचार्य एवं उपकुलपति	—श्री रामप्रसाद वेदालंकार
कुलसचिव	—डा० वीरेन्द्र अरोड़ा
प्रिंसिपल, विज्ञान महाविद्यालय	—श्री सुरेशचन्द्र त्यागी
उप-कुलसचिव	—डा० श्यामनारायण सिंह
वित्त अधिकारी	—श्री बी०डी० भारद्वाज (२-१-८८ तक)
	डा० बी०सी० सिन्हा (३-१-८८ से २०-५-८८ तक)
	श्री आर०पी० सहगल (२१-५-८८ से)
संग्रहालयाध्यक्ष	—डा० जे०एस० सेंगर
पुस्तकालयाध्यक्ष	—श्री जगदीशप्रसाद विद्यालंकार

सम्पादक-मण्डल

विषय-सूची

आमुख

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय अपने स्थापनाकाल के ८८ वर्ष पूरे कर रहा है। वैदिक साहित्य, संस्कृति, दर्शन, पुराविद्या तथा राष्ट्रसेवा के क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय का अप्रतिम योगदान रहा है। विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज भारतीय पुनर्जागरण और राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रमुख नेता थे। वही एक ऐसे दीपाधार थे जिन्होंने हिन्दू और मुसलमान राष्ट्रभक्तों को समान रूप से प्रभावित किया तथा भारतीय जीवन-मूल्यों पर आधारित शिक्षा की परिकल्पना कर, पराधीन भारत में क्रान्ति का बिगुल बजाया। हिन्दी माध्यम से प्राचीन साहित्य और आधुनिक ज्ञानविज्ञान का अध्ययन-अध्यापन कराने वाली यह प्रथम राष्ट्रीय शिक्षासंस्था है जिसकी प्रशंसा महात्मा गांधी, महाकवि रवीन्द्रनाथ तथा महामना मदनमोहन जी मालवीय मुक्तकंठ से करते रहे हैं। विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने के बाद उच्चतम अध्ययन और अनुसंधान के अलावा गुरुकुल ने ग्रामोद्धार, प्रसार कार्य, सामाजिक पुनरुत्थान तथा शिक्षा को प्रासंगिक बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

विश्वविद्यालय की बहुमुखी प्रगति का श्रेय परिद्रष्टा श्री सोमनाथ जी मरवाह, कुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार तथा कुलपति प्रो० रामचन्द्र शर्मा को है। कुलपति श्री शर्मा जी ने इस वर्ष शैक्षिक वातावरण को समुन्नत करने के लिए लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों को आमंत्रित किया। कई शोधसंगोष्ठियाँ आयोजित की गई। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से २७ जून से ११ जुलाई ८७ तक 'व्यक्तित्व के विकास तथा व्यवहार के रूपान्तरण' पर ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण संस्थान का आयोजन किया गया। १५ मई से १८ मई तक 'शिक्षा-पद्धति में मूल्य तथा भर्तृहरि और विटगेंस्टाइन के भाषादर्शन' पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। ११ से १४ अक्टूबर तक 'प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। पंजाब विश्वविद्यालय के दर्शन विभागाध्यक्ष डा० धर्मेन्द्र गोयल, दिल्ली विश्वविद्यालय के दर्शन विभागाध्यक्ष प्रो० सिद्धेश्वर भट्ट तथा डा० संतोषकुमार, मगध विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० उपेन्द्र ठाकुर, सागर विश्वविद्यालय के पूर्व इतिहास विभागाध्यक्ष डा० कृष्णदत्त वाजपेयी, लखनऊ के डा० बैजनाथ पुरी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत आचार्य डा०

वी०के० वर्मा, पुरी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा० सत्यव्रत शास्त्री, लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० सूर्यप्रसाद दीक्षित, मेरठ विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डा० टी०आर० शर्मा तथा गढ़वाल विश्वविद्यालय की ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक डा० आशा सकलानी विश्वविद्यालय पधारे। सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् डा० राममूर्त्ति शर्मा विजिटिंग प्रोफ़ेसर के रूप में विश्वविद्यालय पधारे। इन विद्वानों के मार्गदर्शन से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को लाभ पहुँचा।

इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उपाध्यक्ष तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त दार्शनिक पद्मभूषण डा० के० सच्चिदानन्द मूर्त्ति गुरुकुल पधारे। २५ जून को उनका 'वेदों में अद्वैत' विषय पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान हुआ। कुलपति प्रो० रामचन्द्र शर्मा ने अभिनन्दन-पत्र तथा उत्तरीय प्रदान कर डा० मूर्त्ति का सम्मान किया। डा० मूर्त्ति ने पुस्तकालय तथा संग्रहालय का अवलोकन भी किया। 'श्रद्धानन्द स्मृति प्रसार व्याख्यानमाला' के अन्तर्गत दिए गए डा० मूर्त्ति के व्याख्यान की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के पूर्व परिद्रष्टा डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने की। दर्शन विभाग के रीडर-अध्यक्ष डा० जयदेव वेदालंकार ने सभा का संचालन किया। जुलाई ८७ में सिडनी में होने वाले विश्वविद्यालय-प्रशासकों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में इन पंक्तियों के लेखक (कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा) ने भाग लिया तथा सिडनी, मैलबार्न और कैनबरा (आस्ट्रेलिया) एवं सिंगापुर के विश्वविद्यालयों में प्रशासनिक क्रियाकलाप तथा प्रणाली का अवलोकन किया।

अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के हिन्दीअध्येता छात्र-छात्राओं का एक अध्ययन-दल केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार के शोधसहायक श्री अश्विनीकुमार के साथ गुरुकुल पधारा। आसाम, उड़ीसा, इम्फाल, अरुणाचल, आंध्रप्रदेश तथा कर्नाटक से पधारे इस दल के विद्यार्थियों ने हिन्दी विभाग के आचार्यों के साथ हिन्दीअध्ययन सम्बन्धी समस्याओ पर विचार-विमर्श किया। फिजी के प्रवासी छात्र नेतराम शर्मा गुरुकुल में विद्यालंकार के विद्यार्थी हैं। उन्होंने फिजी के हिन्दी सीखने वाले छात्रों के लिए पुस्तक लिखी जिसका विमोचन गत मास फिजी में हुआ।

गुरुकुल में संस्कृत तथा अंग्रेजी में दक्षता के लिए विद्यार्थियों को सर्टिफिकेट कोर्स भी कराया जाता है। वेद विभाग के तत्वावधान में वैदिक कर्मकाण्ड सिखाने के लिए एक वर्ष के डिप्लोमा का प्रावधान किया गया है। इसके अन्तर्गत आर्यसमाज के मन्तव्यों, पंच महायज्ञ, श्रौतयाग तथा षोडश संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जाता है। हिन्दी पत्रकारिता का स्नातकोत्तर डिप्लोमा

इस वर्ष शुरु किया जा रहा है तथा बी०एस-सी० में एक प्रश्नपत्र के रूप में कम्प्यूटर विषय का प्रावधान कर दिया गया है।

गुरुकुल के प्राचीन प्रकाशन, शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं। गत वर्षों में प्रकाशन केन्द्र समाप्तप्राय हो गया था। कुलपति श्री शर्मा ने 'श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र' के नाम से इसे पुनः प्रारंभ किया है। केन्द्र की ओर से 'वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज दर्शन' तथा 'शोध सारावली' नामक दो ग्रन्थों का प्रकाशन अप्रैल में हुआ। गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली के जीवंत रूप, प्रख्यातविचारक तथा शिक्षाशास्त्री डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार के व्यक्तित्व और कृतित्व का देश के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा किया गया आकलन 'वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज दर्शन' के रूप में प्रस्तुत है। इस ग्रंथ का विमोचन और समर्पण दिल्ली उच्चन्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश श्री वी०एस० देशपाण्डे ने किया। गुरुकुल विश्वविद्यालय में पी-एच०डी० के लिए स्वीकृत शोधप्रबंधों का सारांश 'शोध सारावली' के रूप में प्रकाशित हुआ। इसका विमोचन श्री सोमनाथ जी मरवाह, परिद्रष्टा गुरुकुल विश्वविद्यालय ने किया।

पुस्तकालय के लिए उत्तर प्रदेश सरकार तथा अनुदान आयोग ने विशेष अनुदान स्वीकार किया तथा संग्रहालय के लिए भारत सरकार के शिक्षा एवं संस्कृति विभाग से विशेष सहायताराशि प्राप्त हुई। इसके लिए हम इनके विशेष आभारी हैं।

गुरुकुल पत्रिका, प्रह्लाद, आर्यभट्ट तथा वैदिक पथ प्रकाशित हुए। विद्यार्थियों ने संस्कृत दिवस, युवा दिवस, खेल-कूद, श्रद्धानन्द सप्ताह, वादविवाद-मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता, वृक्षारोपण तथा एन०एस०एस० के कार्यक्रमों में सोत्साह भाग लिया। योग प्रशिक्षण का कार्य भी सुचारुरूप से सम्पन्न हुआ तथा कांगड़ी ग्राम के पुनरुत्थान के चले आ रहे कार्यक्रमों को विशेष रूप से पूरा किया गया। जनसाक्षरता अभियान तथा प्रौढ शिक्षा विभाग का कार्य भी उल्लेखनीय रहा। यह विभाग समय-समय पर कार्यशालाएँ तथा संगोष्ठियाँ आयोजित करता रहा है। हिमालय पर्यावरण योजना तथा गंगा एक्शन प्लान के कार्य भी संतोषजनक रूप से सम्पादित हो रहे हैं। गणित विभाग के तत्वावधान में 'प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान शोधपत्रिका' का प्रकाशन इस वर्ष की विशेष घटना है। इसका विमोचन कुलाधिपति डा० सत्यकेतु जी ने किया।

इस वर्ष दीक्षान्त-भाषण के लिए सुप्रसिद्ध न्यायविद् तथा दिल्ली

उच्चन्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश श्री वी०एस० देशपाण्डे गुरुकुल पधारे। गुरुकुल विश्वविद्यालय ने शिक्षा-प्रतीक के रूप में पण्डित सत्यव्रत सिद्धान्तालकार का अभिनन्दन किया। परिद्रष्टा श्री मरवाह जी ने पण्डित जी को उत्तरीय तथा मुख्य-अतिथि श्री देशपाण्डे ने अभिनन्दन-ग्रन्थ समर्पित किया। कुलपति श्री शर्मा की प्रेरणा से निर्मित यह महनीय ग्रन्थ एक उपलब्धि है। इस वर्ष का आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार सुप्रसिद्ध इतिहास-वेत्ता, कुलाधिपति गुरुकुल विश्वविद्यालय डा० सत्यकेतु विद्यालंकार तथा सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी रीडर डा० लक्ष्मीनारायण दुबे को दिया गया।

विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों ने लेखन-प्रकाशन तथा शोध-संगोष्ठियों मे भाग लेकर अपने पद की गरिमा बढाई है। मैं सभी को बधाई देता हूँ। विभागों के प्रगति-विवरण मे इन विद्वानों के कार्यो का विस्तृत विवरण उपलब्ध हो जाएगा।

प्रधानमत्री माननीय श्री राजीव गाँधी के देशव्यापी आह्वान पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने प्रधानमन्त्री सूखा-राहत कोष मे रु० १,०६,४४७-०० चन्दा देकर अपना राष्ट्रीय दायित्व पूर्ण किया।

अन्त मे, मैं केन्द्रीय सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली, हरयाणा एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों, शिक्षापटल, कार्यपरिषद् तथा शिक्षापरिषद् के सदस्यो एवं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनके सहयोग से विश्वविद्यालय का कार्य सुचारु रूप से चलता रहा है और हम निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ते रहे हैं।

—**वीरेन्द्र अरोड़ा**
कुलसचिव
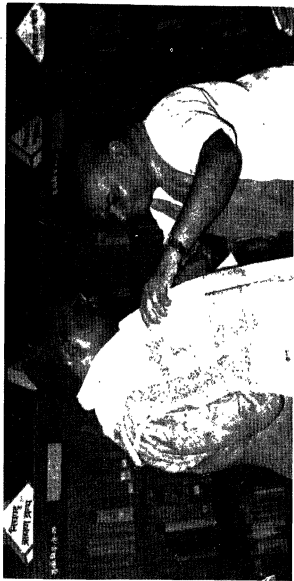
प्रोफेसर के० सच्चिदानन्द मूर्त्ति, उपाध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को शाल भेंट करते हुए कुलपति प्रोफेसर आर०सी० शर्मा।

पुस्तकालय निरीक्षण के अवसर पर प्रोफेसर के० सच्चिदानन्द मूर्त्ति, उपाध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, को विश्वविद्यालय के प्रकाशन दिखाते हुए कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा। साथ में खड़े है कुलपति प्रोफेसर आर०सी० शर्मा तथा पुस्तकालयाध्यक्ष जगदीश विद्यालंकार।

गुरुकुल कांगड़ी—संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवी शताब्दी की ऊषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी आरम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नई स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर-कमलो से एक नये पौधे का रोपण किया। यही नन्हा-सा पौधा आज ८७ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओ को पुन धरती मे सँजो लिया और फिर उन्ही शाखाओ से नई टहनियाँ फूट आई। यह पौधा गुरुकुल कागडी, जिसकी स्थापना गगा के पूर्वी तट पर, हरिद्वार के निकट कागडी ग्राम के समीप हुई थी, आज अपनी सुगन्धि एवं उपयोगिता से भारतवर्ष को गौरवान्वित कर रहा है।

१९वी शताब्दी मे लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा-पद्धति चलाई जो उनके देश मे प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहाँ इगलैण्ड मे शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहाँ भारत मे विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयो मे नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षास्थलो पर पाठशालाये चल रही थी। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से सस्कृत-साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया जिसमे दोनो शिक्षा-पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनो के गुण ग्रहण करते हुए दोषो को तिलाञ्जलि दी जा सके। अत' गुरुकुल कागडी की प्रारम्भिक योजना मे सस्कृत-साहित्य और वेदात की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्सन्देह स्वामी जी के मन मे शिक्षा के क्षेत्र मे आयी इस मानसिक क्रान्ति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के शिक्षासम्बन्धी विचार थे, जिन्हे वे मूर्तरूप प्रदान करना चाहते थे। इनमे ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धो पर बल था।

कुछ वर्षो बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल मे सब विषयो की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय तक आधुनिक विज्ञान की पुस्तके हिन्दी मे बिल्कुल नही थी। गुरुकुल के उपाध्यायो ने

सर्वप्रथम इस क्षेत्र में काम किया। प्रो० महेशचरण सिंह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो० रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन शास्त्री की भौतिकी और रसायन, प्रो० सिन्हा का वनस्पति शास्त्र, प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान, आदि हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रन्थ हैं। प्रो० रामदेव ने मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध ग्रंथ "भारतवर्ष का इतिहास" प्रकाशित किया।

१९१२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनो स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नही, अनेक विदेशियो को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुकों मे सी०एफ०ए०एन्ड्रूज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत् सिडनी वेब और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मेकडानेल्ड आदि उल्लेखनीय है।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नही हुआ जब तक सयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आँखो से देखने नही आए। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल मे चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९० के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष, और दक्षिण अफ्रीका मे महात्मा गाँधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह-संग्राम मे गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने मजदूरी करके और अपने भोजन मे कमी करके दान दिया। इसी भावना को देखकर महात्मा गाँधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है जिसमें महात्मा गाँधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन मे भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गए।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणामस्वरूप मुलतान, भटिंडा, सूपा तथा अन्य स्थानो पर गुरुकुल खोले गए। बाद में झज्जर, देहरादून, भटिंडू, चित्तौडगढ आदि स्थानो पर भी गुरुकुल खोले गए। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा-सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार करके गुरुकुल के ढग के शिक्षणालय खोलने शुरु किए।

१४ वर्ष तक, अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होने संन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द हो

गये। इस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१९२१ में गुरुकुल, महाविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे—

१. वेद महाविद्यालय

२. साधारण (कला) महाविद्यालय

३. आयुर्वेद महाविद्यालय

४. कृषि महाविद्यालय

बाद में एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमे जोड़ दिया गया।

गुरुकुल के इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएँ इस प्रकार रहीं—

बाढ़—१९२४ मे गंगा मे भीषण बाढ आई और गुरुकुल की बहुत-सी इमारतें नष्ट हो गईं। अत: निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाए जहाँ इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। इसके लिए हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर, ज्वालापुर के समीप, गंग नहर के किनारे, हरिद्वार बाईपास मार्ग पर वर्तमान स्थान का चयन किया गया।

१९२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबिली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक आगन्तुक विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गांधी, पं० मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ जमुनालाल बजाज, डॉ० मुंजे साधुवर, वासवानी, आदि उल्लेखनीय है। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता रहा। १९२१ से पं० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए पर १९२७ मे रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गए।

पं० विश्वम्भरनाथ जी के बाद १९२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १९०५ मे गुरुकुल आए थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्नो से लाखो रुपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारत बननी शुरु हुई। आचार्य रामदेव जी के

पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक पं० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १९३५ में सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और प० अभयदेव जी शर्मा विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन १९४२ में स्वास्थ्य खराब होने के कारण प० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १९४३ मे चले गए। उनके स्थान पर प० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १९५० मे गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालो मे श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुरदास जी, महाशय कृष्ण जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, प० बुद्धदेव जी विद्यालकार, पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार, कुंवर चांदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय हैं। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया। १९५३ मे प० धर्मपाल विद्यालकार सहायक मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं० जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे। उन्होने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० मे विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस जयन्ती पर 'गुरुकुल कागडी के २० वर्ष' नामक एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। २० वर्ष से भी अधिक समय तक कुलपति एव मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् प० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् प० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार गुरुकुल के कुलपति एव मुख्याधिष्ठाता बने। इन्ही के समय १९६२ मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। ८ विषयो मे एम०ए० कक्षाएँ विधिवत् शुरु हुई। अब चार विषयो मे पी-एच०डी० (शोध व्यवस्था) भी है। इन्ही के समय १९६६ मे डा० गगाराम जी, जो अंग्रेजी विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, प्रथम पूर्णकालीन कुलसचिव नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी, जो १९४३ मे आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६६ मे गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नो से विश्वविद्यालय को पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानो मे सशोधन हुआ। इसके बाद श्री रघुवीरसिंह शास्त्री तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार कुलपति बने। कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा का कार्यकाल दीर्घ तथा सराहनीय उपलब्धियो से पूर्ण रहा। कुलपति आर. सी. शर्मा के कार्यकाल मे गुरुकुल व्यवसायिक-शिक्षा की ओर सफलतापूर्वक आगे बढ रहा है। श्री हूजा तथा श्री शर्मा के कुलपतित्व में ही अनेक विषयो में प्रोफेसर नियुक्त हुए। इससे विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रगति में गुणात्मक योगदान हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ८७ वर्ष हो गए हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान दिया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्य में आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकायें और शोध-जर्नल शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में काफी योगदान कर रहे हैं। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपने मातृग्राम काँगड़ी को अंगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिए पूर्वकुलपति श्री हूजा जी ने ५०००) रुपये का दान भी सचदेव विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने गाजीवाला एवं ग्राम जगजीतपुर को भी अंगीकृत किया है और स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक चेतना, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रही है :

विद्यालय

प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाणपत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय

अभी तक प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक पर (वेदालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद और संस्कृत में एम०ए० और पी-एच०डी० उपाधियाँ प्रदान करने की व्यवस्था है।

कला महाविद्यालय

इसमें प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालंकार की स्नातक उपाधि दी जाती थी, किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर (विद्यालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अंग्रेजी में एम०ए० तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी-एच०डी० उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास, हिन्दी, मनोविज्ञान, अंग्रेजी तथा दर्शन विषयों में प्राप्त की जा सकती है।

विज्ञान महाविद्यालय

इसमें प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी०एस-सी० की उपाधि प्रदान

की जाती थी। किन्तु सत्र ८७-८८ से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार स्नातक स्तर पर त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। सम्प्रति भौतिकी, रसायन, वनस्पति शास्त्र, जन्तु विज्ञान, माइक्रोबायोलॉजी और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है। स्नातकोत्तर कक्षाएँ केवल गणित एवं माइक्रोबायोलॉजी में चल रही हैं। इसके अतिरिक्त रसायन विज्ञान विभाग द्वारा रासायनिक विश्लेषण पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाया जा रहा है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

यू०जी०सी० द्वारा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून को विश्वविद्यालय का एक अंगभूत महाविद्यालय स्वीकृत कर लिया गया है। अब इसका निकट भविष्य में तेजी से विस्तार होने की सम्भावना है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ी फार्मेसी है। बिक्री लगभग एक करोड़ रुपये है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों तथा जनकल्याण पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय जो गुरुकुल के भवन है उनका अनुमानतः मूल्य डेढ करोड़ रुपये से कहीं ऊपर है। इन भवनों मे वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, सग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियो के आवास-गृह सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त जो भूमि है उसका भी अनुमानतः मूल्य १ करोड़ रुपये से कम नहीं है।

(४) सम्प्रति श्री सोमनाथ मरवाहा, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विजिटर हैं और डा० सत्यकेतु विद्यालंकार गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति है। श्री आर० सी० शर्मा, आई०ए०एस० (अवकाशप्राप्त) इसके कुलपति है।

कुलपति श्री आर० सी० शर्मा के नेतृत्व मे विश्वविद्यालय अपनी नानाविध योजनाओ से निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

विश्वविद्यालय द्वारा योग का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र भी गत तीन वर्षों से चल रहा है। इसके अतिरिक्त क्रीड़ा विभाग द्वारा छात्रो को विभिन्न अन्तर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिताओ मे भाग लेने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त वेद, कला एव विज्ञान महाविद्यालय के निर्धन छात्रों को आंशिक रोजगार देने का कार्यक्रम भी

पुस्तकालय के माध्यम से गत तीन वर्षों से चल रहा है। विगत वर्ष से अंग्रेजी विभाग के अन्तर्गत 'अंग्रेजी भाषा' का तीन-मासीय प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसमें आधुनिक तकनीक से अंग्रेजी बोलना सिखाया जाता है।

भारत सरकार के पर्यावरण विभाग द्वारा विश्वविद्यालय को दो प्रोजेक्ट भी स्वीकृत हैं। गंगा समन्वित योजना एवं हिमालय पर्यावरण योजना, जिसके अन्तर्गत पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया जा रहा है। इनमे से गंगा समन्वित योजना का कार्य पूर्ण हो चुका है तथा हिमालय पर्यावरण योजना का कार्य अभी चल रहा है। साथ ही शिक्षा मत्रालय द्वारा प्रदत्त प्रौढ़-शिक्षा का कार्यक्रम भी निष्ठा एव सफलता के साथ चल रहा है।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उपकुलपति

दीक्षान्त-समारोह पर
कुलपति का प्रतिवेदन

अर्चनीय संन्यासीवृन्द, मान्यवर परिद्रष्टा जी, श्रद्धेय कुलाधिपति जी, आदरणीय वी०एस० देशपाण्डे जी, माताओं, सज्जनो तथा ब्रह्मचारियों !

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की इस पुण्यभूमि मे आपका स्वागत करते हुए मुझे असीम प्रसन्नता हो रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, पं० मोतीलाल नेहरू तथा महामना प० मदनमोहन मालवीय के साथ कंधे से कंधा मिलाकर भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन मे जूझने वाले स्वामी जी राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रणेता थे, भारतीय जीवन-मूल्यों पर आधारित राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धारक थे, ह्रासोन्मुख हिन्दू समाज के कायाकल्पक थे और राष्ट्र-भक्त युवको तथा युवतियो के सर्वांगीण विकास के लिए प्राचीन तथा नवीन ज्ञान-विज्ञान के सूत्रधार थे। उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल एक आन्दोलन था। ऐसा आन्दोलन जिसकी प्रेरणा से महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शान्तिनिकेतन की स्थापना की। काशी विद्यापीठ की स्थापना मे भी स्वामी जी का राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन ही प्रेरणा का कार्य कर रहा था। आज उसी महापुरुष की तपस्या-स्थली मे नवदीक्षित स्नातकों को आशीर्वाद देने के लिए आप महानुभाव एकत्र हुए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि नवस्नातक इस पुण्यभूमि की सदैव रक्षा करेंगे तथा स्वामी जी के बताए सिद्धान्तों पर चलकर संपूर्ण मानवजाति के कल्याण और सुख-शान्ति के सपनों को साकार करते रहेंगे।

प्रिय बन्धुओं,

इस वर्ष दीक्षान्त भाषण के लिए हमारे मध्य देहली उच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री वी०एस० देशपाण्डे जी उपस्थित हैं। यह हमारे अन्तेवासियों का सौभाग्य है कि देश-विदेश के शैक्षिक, सांस्कृतिक तथा विधि-सम्बन्धी अनुभवों से सम्पन्न, सुलझे हुए विचारक और विधिवेत्ता-मनीषी के द्वारा उन्हें आशीर्वाद प्राप्त करने का सुखद अवसर मिल रहा है। मै महामहिम श्री देशपाण्डे जी का संस्था की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ कि वह अत्यन्त व्यस्तता के रहते हुए भी हमारे बीच पधारे। मुझे विश्वास है कि इस
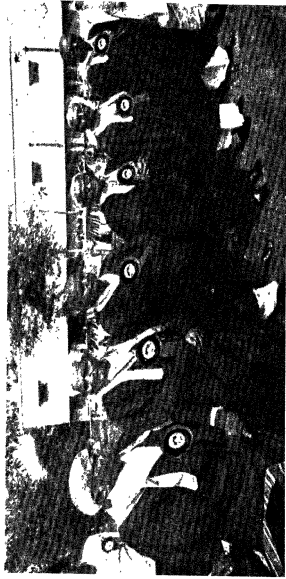
दीक्षान्त-समारोह के उपलक्ष्य में ध्वजारोहण के अवसर पर खड़े है (बाएँ से) कुलाधिपति डा० सत्यकेतु, परिद्रष्टा श्री सोमनाथ मरवाह, कुलपति श्री आर०सी० शर्मा, मुख्य अतिथि श्री देशपाण्डे, प्रो० रामप्रसाद, आचार्य तथा कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा।
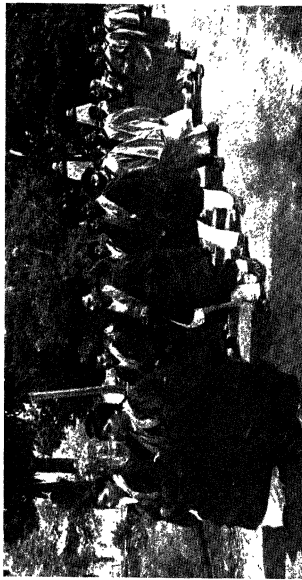
दीक्षान्त-समारोह (१९८८) के अवसर पर उपाधि प्राप्त्यर्थं स्नातकों की शोभा-यात्रा का दृश्य ।

दीक्षान्त-यज्ञ सम्पन्न करते हुए (बाएँ से) कुलाधिपति डा० सत्यकेतु, परिद्रष्टा श्री सोमनाथ मरवाह, कुलपति श्री शर्मा, मुख्य अतिथि श्री देशपाण्डे, कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा तथा प्रो० रामप्रसाद आचार्य एवं उपकुलपति ।

विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा श्री सोमनाथ जी मरवाह, 'राष्ट्रीय दर्शन कान्फ्रेन्स एवं उत्तरप्रदेश दर्शन परिषद्' का १६ मई '८८ को उद्घाटन-भाषण प्रस्तुत करते हुए ।

राष्ट्रीय महत्व के विश्वविद्यालय को आपका स्नेह-सहयोग बराबर मिलता रहेगा।

विश्वविद्यालय की वार्षिक-प्रगति और विकास के अवलोकन का यह उचित अवसर है। गत वर्षो में जहाँ विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों में आचार्य पद प्राप्त हुए, समन्वित गंगा योजना, हिमालय पर्यावरण योजना, प्रौढ़ शिक्षा-प्रसार कार्यक्रम तथा रोजगार ब्यूरो की स्थापना हुई, वहाँ कम्प्यूटर प्रशिक्षण तथा प्रकाशन केन्द्र की स्थापना से व्यवसायोन्मुखी शिक्षा की धारणा को मूर्त्तरूप देने की कोशिश की गई स्नातकों को पुस्तकीय ज्ञान देने के अतिरिक्त समाज और देश की बुनियादी जरूरतों का परिचय देने के लिए उन्हे राष्ट्रीय विकास की रचनाधारा मे जोड़े रखने की चेष्टा भी की गई। मुझे प्रसन्नता है कि सीमित साधनों के रहते हुए भी हमारे स्नातक आस-पास के ग्रामीण परिवेश से जुड़े रहे, ग्रामसुधार तथा परिवेश के नवनिर्माण मे संलग्न होकर वह शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष से परिचित हो सके। इसमे आशा बँधती है कि वह महात्मा गाँधी और स्वामी श्रद्धानन्द के विचारों को निष्ठापूर्वक भावी जीवन मे भी क्रियान्वित कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से प्रो० हरगोपालसिंह ने २७ जून से ११ जुलाई तक "व्यक्तित्व के विकास तथा व्यवहार के रूपान्तरण" पर एक ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण संस्थान का आयोजन किया। इसमें भारत के विश्वविद्यालयों से आए प्राध्यापकों ने प्रशिक्षण लिया। भारतीय विचार और तकनीक द्वारा व्यक्तित्व के विकास की संभावनाओ पर विचार इस संस्थान की प्रमुख विशेषता थी। मनोविज्ञान विभाग के तत्वावधान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से स्वीकृत परियोजना "केन्द्रीय विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्षों एवं संकायाध्यक्षों की भूमिका" डा० सुवर्ण आतिश ने पूर्ण कर ली है और इसका प्रतिवेदन आयोग को भेज दिया गया है।

१५ मई से १८ मई ८७ तक दर्शन विभाग की ओर से डा० जयदेव वेदालंकार ने शिक्षापद्धति मे मूल्य तथा भर्तृहरि और विटगेंस्टाइन के भाषा-दर्शन पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इसमें पंजाब विश्व-विद्यालय के दर्शन विभागाध्यक्ष डा० धर्मेन्द्र गोयल प्रमुख रूप से उपस्थित हुए। इसका उद्घाटन परिद्रष्टा श्री सोमनाथ मरवाह ने किया तथा अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के दर्शन के प्रोफेसर डा० सन्तोष कुमार ने की।

११ से १४ अक्टूबर ८७ तक प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की ओर से प्रो० विनोदचन्द्र सिन्हा ने एक राष्ट्रीय

सेमिनार का आयोजन किया, विषय था – प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन। इस संगोष्ठी का उद्घाटन परिद्रष्टा श्री सोमनाथ जी मरवाह ने किया। इस अवसर पर अनेक इतिहासवेत्ता एकत्र हुए। इनमें कुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, गया के प्रो० उपेन्द्र ठाकुर, सागर के प्रो० कृष्णदत्त वाजपेयी तथा लखनऊ के प्रो० बैजनाथ पुरी प्रमुख हैं।

इतिहास विभाग ने इस वर्ष सर्वेक्षण कार्य को और भी गतिमान किया। हरिद्वार के समीपवर्ती स्थानों मे सर्वेक्षण के दौरान अनेक प्राचीन मृण्मूर्तियाँ तथा मृण्पात्र प्राप्त हुए। आशा है आगामी सत्र में उत्खनन कार्य भी प्रारम्भ किया जा सकेगा।

६ मार्च ८८ को गैर हिन्दीभाषी क्षेत्रों के हिन्दी-अध्येता छात्र-छात्राओं का एक अध्ययन दल केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार के शोध सहायक श्री अश्विनी कुमार के साथ गुरुकुल पधारा। इसमे आसाम, उड़ीसा, इम्फाल, अरुणाचल, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा तमिलनाडु के प्रतिनिधि प्रमुख थे। हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० विष्णुदत्त राकेश ने इन विद्यार्थियो की हिन्दी-अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का समाधान किया। इस दल ने तीन दिन परिसर में रहकर विश्वविद्यालय की गतिविधियों का अवलोकन किया। इस दल को लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष डा० सूर्यप्रसाद दीक्षित ने भी सम्बोधित किया। डा० दीक्षित ने हिन्दी विभाग के निमन्त्रण पर "भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता" विषय पर अपना रोचक भाषण दिया।

अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष डा० आर० एल० वार्ष्णेय ने अंग्रेजी विभाग मे मेरठ विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के आचाय एव अध्यक्ष डा० टी० आर० शर्मा का 'अरस्तू के कैथार्सिस सिद्धान्त' पर भाषण कराया।

श्रावणी पर संस्कृत विभाग ने संस्कृत-दिवस का आयोजन किया। इसमें नगर की संस्कृत पाठशालाओं के विद्वानो तथा गुरुकुल के आचार्यों और ब्रह्मचारियों ने संस्कृतभाषा और साहित्य के विभिन्न पक्षो पर प्रकाश डाला। ३० सितम्बर को अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० निगम शर्मा और रीडर श्री वेदप्रकाश शास्त्री ने किया। अनेक विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी इसमें सम्मिलित हुए। इस प्रतियोगिता की अध्यक्षता वैदिक साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान डा० रामनाथ वेदालंकार ने की। योग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए ईश्वर भारद्वाज ने उल्लेखनीय कार्य किया।

वेद-विभागाध्यक्ष प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार ने वैदिक प्रयोगशाला को सर्वांगीण बनाने के लिये उचित कदम उठाए। विभिन्न प्रकार के यज्ञपात्रों,

यज्ञोषधियों तथा यज्ञवेदियों को प्रदर्शनार्थ तैयार कराया तथा सस्वर वेद मंत्र-पाठ, यज्ञों द्वारा रोग चिकित्सा, वृष्टि विज्ञान एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन की योजना बनाई। वैदिक कर्मकाण्ड सिखाने के लिये एक वर्ष के डिप्लोमा का प्रावधान किया गया। इसके अन्तर्गत आर्य समाज के मन्तव्यों, पञ्चमहायज्ञ, श्रौतयोग तथा षोडश संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जायेगा। प्रो० रामप्रसाद ने जनसामान्य तक वैदिक सिद्धान्तों और महर्षि दयानन्द के विचारों को पहुँचाने के लिए अनेक छोटी पुस्तकों का प्रकाशन कराया। विश्व-विद्यालय के विजिटिंग फैलो तथा अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान डा० शिवराम चौधरी ने सम्पूर्ण गीता तथा तीन सौ वेद मंत्रों का अरबी और अंग्रेजी में अनु-वाद कर दिया है। इनका प्रकाशन भी विचाराधीन है। विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों का साप्ताहिक सत्संग तथा यज्ञ कार्यक्रम भी आचार्य रामप्रसाद जी की देख-रेख में सुचारू रूप से चल रहा है।

मुझे यह कहते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि गुरुकुल के प्राचीन प्रकाशित, किन्तु अब अनुपलब्ध ग्रन्थो के पुन. प्रकाशन और वैदिक साहित्य, इतिहास, संस्कृति, दर्शन, आर्य विचारधारा, भारतीय साहित्य, भारतीय विज्ञान और महर्षि दयानन्द सम्बन्धी शोधकार्य को विश्वविद्यालयस्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिये इस वर्ष स्वामी श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र की स्थापना कर दी गई है। इस कार्य के लिये सरकारी अनुदान भी प्राप्त हुआ है। इस केन्द्र की ओर से "शोध सारावली" तथा "वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज दर्शन" ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं तथा आचार्य प्रियव्रत वेदमार्तण्ड प्रणीत शोधग्रन्थ "महर्षि दयानन्द के वेद और धर्म सम्बन्धी विचार" प्रकाशनाधीन है। आशा है कि इस प्रकाशन केंद्र से विश्वविद्यालय और आर्यजगत के बीच एक सुखद सम्बन्ध स्थापित हो सकेगा। आचार्य रामदेव, प्रो० जयचन्द्र विद्यालंकार जैसे मनीषियों के पूर्वप्रकाशित ग्रन्थो के परिवर्द्धित अद्यतन शोधसंवलित संस्करणों से गुरुकुल की महत्ता का आधुनिक पीढी को आभास मिल सकेगा।

संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० निगम शर्मा अपने सहयोगियों के साथ संस्कृत सर्टिफिकेट कोर्स तथा अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डा० वार्ष्णेय अंग्रेजी सर्टिफिकेट कोर्स सफलतापूर्वक चला रहे हैं। भाषाशिक्षण की आधुनिक तकनीक के आधार पर अंग्रेजी में भाषाविज्ञान के लिये आवश्यक उपकरण मँगा लिये गए हैं। भाषा के शुद्ध लेखन तथा उच्चारण के लिये यह प्रयोगशाला अत्यन्त उपयोगी है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का पुस्तकालय प्राच्य विद्याओं से सम्बद्ध दुर्लभ पुस्तकों के संग्रह हेतु एक राष्ट्रीय महत्व का पुस्तकालय है। इस

पुस्तकालय में धर्म, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, वेद, साहित्य और विज्ञान की दुर्लभ पुस्तकें तथा पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित हैं। इस समय इस पुस्तकालय में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की एक लाख से अधिक पुस्तकों का संग्रह है, जिसका उपयोग देश एवं विदेश के विद्यार्थी करते हैं। ७वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत, प्रारम्भ मे जहाँ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा ४ लाख रु० का अनुदान स्वीकार किया गया था, वहीं मुझे यह बताते हुए अत्यन्त प्रसन्नता है कि विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वर्ष १९८७-८८, ८९-९० के लिये सात लाख रुपये का विशेष अनुदान स्वीकृत किया गया है। आलोच्य वर्ष ८७ से अब तक पुस्तकालय द्वारा १५५३ विभिन्न विषयों की पुस्तकें क्रय की गई।

विभिन्न विषयों की पत्रिकाओं के क्रय किये जाने के कार्य मे पूर्व की अपेक्षा काफी वृद्धि हुई। १९८१-८२ में जहाँ १४८ पत्रिकायें आती थी वहीं अब वर्ष १९८७-८८ में ४४५ पत्रिकायें मँगाई जा रही है। जिसमे से ५० पत्रिकाये तो विदेशों से आ रही है। पुस्तकालय के संग्रह को आधुनिक बनाने मे विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों मे कार्य कर रहे प्राध्यापकों का सक्रिय योगदान है। विश्वविद्यालय के सभी विभागों से प्राध्यापकों को विश्व पुस्तक मेले मे नवीन पुस्तकों के चयन किये जाने हेतु भेजा गया तथा विश्व पुस्तक मेले में आई नवीनतम पुस्तकों को पुस्तकालय के संग्रह मे समाविष्ट किया गया। गुरुकुल पुस्तकालय में उपलब्ध प्राच्य विद्याओ से सम्बद्ध पुस्तको को एक बृहत् सूचा प्रकाशित किये जाने का कार्य भी चल रहा है। शीघ्र ही यह बृहत्-सूची देश के शोध-छात्रों तथा विद्वानों को उपलब्ध हो सकेगी। उक्त बिबलियोग्राफी के प्रकाशित हो जाने से पुस्तकालय को सचित निधि का ज्ञान देश-विदेश के विद्वानों को हो सकेगा।

गुरुकुल का एक प्रमुख दर्शनीय खण्ड गुरुकुल का पुरातत्व संग्रहालय है। इसमें अभिलेखशास्त्र तथा मुद्राशास्त्र की दुर्लभ, किन्तु रोचक सामग्री प्रदर्शित है। सग्रहालय के साथ जुड़े हुए श्रद्धानन्द कक्ष की प्रगति भी उल्लेखनीय है। इसमें पूज्य स्वामीजी की पादुकाये, वस्त्र, कमण्डल तथा दुर्लभ चित्र और पत्रादि सुरक्षित है। इस वर्ष भारत सरकार के शिक्षा एवं संस्कृति विभाग के अन्तर्गत कार्यरत राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली द्वारा संग्रहालय को एक लाख रुपये की अनुदान राशि प्राप्त हुई है। इस राशि मे से ४५ हजार रु० की राशि के उपकरण कैमरा, छत के पखे तथा प्रदर्शन संभाग निर्मित हुए। शेष राशि से मुद्रा कक्ष में शो केश तथा प्लास्टर कास्ट गैलरी मे बिजली के पंखे लगवाये गए। उ० प्र० शासन द्वारा प्राप्त बारह हजार रु० की सहायता राशि से मुद्रा कक्ष में नोटों के प्रदर्शन हेतु शो केश तैयार हुए। फोटो इन्डेक्सिग कार्ड निर्माण हेतु ५५ हजार रु० की राशि स्वीकृत हुई जिसकी प्रथम २५ प्रतिशत किश्त का उपयोग मृण्मूर्ति, अष्टधातु कक्ष

तथा पाषाण-प्रतिमा कक्ष के फोटोग्राफ के लिए हुआ। उ० प्र० सरकार के मुख्य मंत्री द्वारा घोषित राशि में से पुस्तकालय को दो लाख एवं संग्रहालय को १ लाख की किश्त आर्य बन्धुओं के सहयोग से ३१ मार्च को प्राप्त हो गई है। संग्रहालय के निदेशक डा० जबरसिंह सेंगर इसके विकास के लिये सतत् प्रयत्नशील हैं। वह भोपाल में आयोजित अखिल भारतीय संग्रहालय सम्मेलन मे भाग लेने के लिए विश्वविद्यालय की ओर से गये।

प्रो० सुरेशचन्द त्यागी के निरीक्षण में विज्ञान महाविद्यालय भी प्रगति की ओर उन्मुख है। इस बार जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा गणित में शोधकार्य करने की अनुमति प्राप्त हुई। जन्तु विज्ञान विभाग मे तीन शोध परियोजनाये चल रही है। वन्य जन्तु सरक्षण पर गढ़वाल विश्वविद्यालय की डा० आशा सकलानी का व्याख्यान हुआ। विभागाध्यक्ष डा० बी० डी० जोशी के सम्पादन में "फिश एण्ड देयर एनवायरमेंट" पुस्तक प्रकाशित हुई। डा० भट्ट का शोधपत्र नीदरलैण्ड में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे, मिनोसिटा विश्वविद्यालय के प्रो० हैल्बर्ग के सहलेखन में वाचनार्थ प्रस्तुत हुआ। रसायन विभाग मे चल रहे एकवर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा "कामशियल मैथड्स आफ केमिकल एनेलेसिस" में विद्यार्थियो की माँग बढ़ रही है और इस बार भी डिप्लोमा उत्तीर्ण विद्यार्थियों को सरकारी तथा गैरसरकारी सस्थाओं में उचित स्थान प्राप्त हो गए है। विभागाध्यक्ष डा० रामकुमार पालीवाल इस कार्य को सफलतापूर्वक सचालित कर रहे है। विभाग के रीडर डा० ए० इन्द्रायण को टोरटो एवं ग्रीस तथा रजनीशदत्त कौशिक को टोरंटो मे होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सगोष्ठी में निबधवाचन के लिये आमत्रित किया गया है। हिमालय पर्यावरण का कार्य भी सुचारू रूप से चल रहा है। गगा समन्वित योजना का कार्य डा० विजयशंकर, वनस्पति विभागाध्यक्ष के निर्देशन में सम्पन्न हो चुका है। गगा और गगा के मैदान के वैज्ञानिक अध्ययन के साथ ऋषिकेश से गढ़मुक्तेश्वर तक के सैकडों ग्रामों का सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरण सम्बन्धी सर्वेक्षण एवं अध्ययन किया गया। प्रोजेक्ट की अन्तिम रिपोर्ट मे गगा के जल को स्वच्छ रखने के उपाय तथा पर्यावरणजन्य अपकर्ष निवारण के उपाय सुझाये गये हैं। यह रिपोर्ट परियोजना निदेशालय को भेजी जा चुकी है। गंगा एक्शन प्लान के अन्तर्गत हुए कार्यो से इस क्षेत्र के गंगाजल पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। परियोजना के अन्तर्गत पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी लघुगीतों की रचना एवं प्रकाशन का कार्य सम्पन्न हुआ। डा० पुरुषोत्तम कौशिक, प्रवक्ता वनस्पति विभाग के निरीक्षण में गतिशील हिमालय आर्किड्ज की पर्यावर्णिक योजना भी सफलतापूर्वक चल रही है। गणित विभाग के प्रोफेसर डा० एम० एल० सिंह शोध-पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं तथा भौतिक

विज्ञान विभाग के अध्यक्ष और प्राध्यापक भी विभाग को समुन्नत करने में लगे हुए हैं। इस प्रकार विज्ञान महाविद्यालय आधुनिकता के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है।

राष्ट्रीय सेवा योजना का कार्य डा० ए० के० चोपड़ा देख रहे हैं। इस वर्ष विश्वविद्यालय परिसर मे छात्रों द्वारा वृक्षारोपण किया गया तथा जनसाक्षरता अभियान के अन्तर्गत ८६ निरक्षर व्यक्तियों को अक्षरज्ञान कराया गया। ग्राम सराय, प्रतीत नगर तथा श्यामपुर मे छात्रों के तीन शिविर आयोजित किये गये। कांगड़ी ग्राम में दस-दिवसीय शिविर लगाया गया। इन शिविरों में ग्रामसुधार के अनेक कार्य किये गये। डा० चोपड़ा के साथ विश्वविद्यालय के छात्र, उत्तर-प्रदेशीय अन्तर्विश्वविद्यालय युवा महोत्सव मेरठ में सम्मिलित हुए। कांगड़ी ग्राम के पुनरुत्थान का जो कार्य पूर्वकुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा द्वारा प्रारम्भ हुआ था, वह विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों तथा ब्रह्मचारियों के लिये पुनीत संकल्प का प्रतीक है। डा० विजयशकर, डा० चोपडा तथा समन्वयक प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र के सचालन में इस ग्राम का संतोषजनक उत्थान हो रहा है।

प्रौढ शिक्षा तथा प्रसार कार्यक्रम योजनान्तर्गत २०सूत्री कार्यक्रम में से १६वे सूत्र की पूर्ति हेतु ६० प्रौढ शिक्षा केन्द्र खोले गए। डा० अनिलकुमार, सहायक निदेशक अपने सहयोगियो के साथ कांगडी, श्यामपुर, मिस्सरपुर, फेरूपुर, धनपुरा तथा बहादराबाद ब्लाक के केन्द्रो पर इस योजना को सुचारू रूप से चला रहे है। प्रौढ शिक्षा के अधिकारी तथा प्रशिक्षक समय-समय पर कार्य-शालाओं, संगोष्ठियों तथा सलाहकार समितियों का आयोजन करते रहे है। इस कार्य की प्रगति को देखते हुए आशा है भविष्य में और अधिक नये केन्द्र खोले जा सकेंगे।

जैसा कि आपको विदित ही है, विश्वविद्यालय में सेवायोजना सूचना एवं मत्रणा केन्द्र भी कार्यरत है। इस केन्द्र द्वारा अभ्यर्थियों को व्यावसायिक सूचना प्रदान करने एवं स्नातको का मार्गदर्शन करने हेतु "रोजगार दर्पण" नामक एक पाक्षिकपत्र का नियमित प्रकाशन हो रहा है। इस पत्र के माध्यम से शिक्षारत विद्यार्थी लाभ उठा रहे हैं। व्यवसाय चयन करने में भी इससे स्नातकों को लाभ मिल रहा है। इस कार्यालय में एक "कैरियर कार्नर" की स्थापना भी की गई है जिसको व्यावसायिक साहित्य और पत्र-पत्रिकाओं से सुसज्जित किया गया है। इस विश्वविद्यालय के विज्ञान एवं कला स्नातक इस केन्द्र से विशेष लाभ उठा रहे हैं। फरवरी ८८ में ऐसे ३१ विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से इस विषय की जानकारी दी गई।

यह भी उल्लेखनीय है कि कामनवैल्थ विश्वविद्यालय कार्यकारिणी के अध्यक्षों के सम्मेलन में इन पंक्तियों के लेखक ने पेनांग (मलेशिया) जाकर भारतीय शिक्षा और गुरुकुलीय शिक्षा के रूप से विदेशी विद्वानों को परिचित कराने का विनम्र प्रयास किया। इसी प्रकार कुलसचिवों तथा प्रशासकों की सिडनी (आस्ट्रेलिया) मे सम्पन्न संगोष्ठी मे हमारे कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा ने भी भाग लिया।

आर्य बन्धुओं एवं बहिनों,

विद्यालय के ब्रह्मचारियों को १०० वेदमंत्र सस्वर उच्चारण और अर्थसहित कंठस्थ कराये गये। मनोविज्ञान विभाग के रीडर श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी ने इस कार्य को निष्ठापूर्वक सम्पन्न किया। "गोवर्धन ज्योति" के रूप में जिज्ञासुओं के लाभ के लिए इन मंत्रों का सकलन प्रकाशित होने जा रहा है। दैनिक जीवन में अत्यन्त उपयोगी इन मंत्रो से पाठको को विशेष लाभ मिल सकेगा।

गुरुकुल प्रणाली वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे राष्ट्रीय अखण्डता, समाजसेवा, मानवजाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्रनिर्माण, आत्मानुशासन, सामाजिक एव लोकतान्त्रिक न्याय, सामूहिक कार्यचेतना, ज्ञान की खोज एवं प्रसार जैसे उद्देश्यों की पूर्ति मे सहायक हो सकती है। इस दिशा में अपने सीमित साधनों के बावजूद हम आगे बढ़ रहे है। हमारे ब्रह्मचारी व्रताभ्यास, योगाभ्यास तथा आत्मानुशासन से बल ग्रहण कर राष्ट्रीय जीवन में उतरे, मेरी यही सदिच्छा है। इकबाल के शब्दों में कहना चाहूँ तो कहूँगा— दृढ़ विश्वास, निरन्तर कर्मठता तथा विश्वव्यापी प्रेम ही जीवन के महायुद्ध में पुरुषार्थी मनुष्यों की तलवारें है—

यकी मुहकम अमल पैहम मुहब्बत फातेहे आलम
जहादे जिन्दगानी में हैं यही मर्दों की शमशीरे।

गुरुकुल की उक्त उपलब्धियों के लिये मैं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार, उ०प्र० सरकार, आकाशवाणी नजीबाबाद, विश्वविद्यालय की शिष्ट-परिषद् तथा शिक्षापटल के मान्य सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। उन्होंने समय-समय पर अमूल्य सहयोग देकर हमारा मार्गदर्शन किया। इसके साथ ही मैं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने यहाँ व्यवस्था बनाये रखने में हमारी सहायता की।

इस अवसर पर अपने आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों को भी धन्यवाद देना चाहूँगा जिनकी मेहनत और लगन से ये सब उपलब्धियाँ हो सकी। कुलसचिव, उप-कुलसचिव एव वित्ताधिकारी और उनके विभागीय सहयोगियों को भी मै साधुवाद देता हूँ।

इस वर्ष पी-एच०डी० की ७, एम०ए० की ७३, एम०एस-सी० की २५, बी०एस-सी० की ५४ तथा अलंकार की १३ उपाधियाँ प्रदान की गई हैं।

आइये एक बार कहें—जिस प्रकार आकाश एवं पृथ्वी निर्भय होकर निर्दोष कार्य करते है, उसी प्रकार हम भी भयरहित होकर सत्कर्म करते रहे।

यथा द्यौश्च पृथिवी न बिभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा विभेः। (अथर्ववेद २/१५/१)

रामचन्द्र शर्मा
कुलपति

१६ अप्रैल, १९८८

दीक्षान्त के अवसर पर प्रख्यात शिक्षाशास्त्री डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, भू०पू० परिद्रष्टा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर 'वैदिक साहित्य, संस्कृति एवं समाजदर्शन' नामक ग्रन्थ का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि श्री वी०एस० देशपाण्डे, मुख्य न्यायाधीश (से०नि०) उच्च न्यायालय, दिल्ली। साथ में खड़े हैं (दाएं से) श्री सोमनाथ मरवाह परिद्रष्टा, पं० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार तथा कुलपति श्री आर०सी० शर्मा।

भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री वी०एस देशपाण्डे द्वारा
दिया गया दीक्षान्त-भाषण
(१६ अप्रैल, १६८८)

धर्म और संविधान

भूमिका

धर्म के संकुचित अर्थ के कारण, भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों की विभिन्न निष्ठाएँ होने का लाभ भारत में ब्रिटिश शासन ने खूब उठाया है। धर्म के आधार पर मतदातासमूहों के वर्गीकरण ने भारतीय समाज को धार्मिक-समूहों में विभाजित कर दिया तथा इसके प्रभाव से केन्द्रीय एवं राज्य विधायिकाओ मे भाग लेने वाली निष्ठावान राजनीतिक पार्टियाँ भी अछूती नही रही। इसके परिणामस्वरूप कुछ लोगों की यह विचारधारा हो गई कि मुसलमानों का राष्ट्र दूसरा है तथा राजनीतिक उद्देश्य के लिए की गई धर्म को संकुचित व्याख्या के दुष्प्रभाव के कारण भारत का विभाजन हुआ। संविधाननिर्माताओं का यह प्रयास रहा कि इस दुष्प्रभाव से हमेशा के लिए मुक्त रहने के लिए भारतीय संविधान में मौलिक नियमों की व्यवस्था की जाए। इसे सुनिश्चित करने के लिए भारतीय संविधान मे निम्न व्यवस्था की गई:—

धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणतन्त्र

संविधान के आमुख का प्रारम्भ निम्न कथन से आरम्भ होता है – "हम भारत के लोग, भारत को संप्रभुतासम्पन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, जनतांत्रिक गणराज्य में संस्थापित करने का दृढतापूर्वक संकल्प करते हैं।" १६७६ में किये गये ४२वें संविधान-संशोधन में "धर्म निरपेक्ष" विशेषण समाविष्ट हुआ। ऐसा करने का एक बड़ा कारण यह था कि संविधान निर्माण व लागू किये जाने के बाद भी कुछ राजनीतिक पार्टियां (यथा—मुस्लिम लीग और अकाली दोग) राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धर्म का प्रयोग करती रही हैं। इसलिए यह अधिकृतरूप से घोषित किया गया कि संविधान धर्म निरपेक्ष है। संशोधन में "धर्म निरपेक्ष" शब्द का प्रयोग इस अर्थ में किया गया है। इसने उद्घोषितकिया

कि धर्म का प्रयोग राजनीतिक उद्देश्यों के लिए न किया जाये क्योंकि देश की राजनीति सचमुच में धर्म निरपेक्ष है। "धर्म निरपेक्ष" का अर्थ यह नही है कि अन्तःकरण व धर्म की आजादी के अधिकार को मान्यता न दी जाय। इसके विपरीत आमुख में स्वतः ही "सोच, अभिव्यक्ति, विश्वास, आस्था व पूजा की स्वाधीनता" को मान्यता प्रदान की गई है तथा धर्म के विभिन्न पहलुओं की स्वतन्त्रता को संविधान की धाराएँ २५ से ३० अनुरक्षण प्रदान करती हैं।

स्पष्टतया धारा २५ से ३० का अर्थ यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि ये संविधान के आमुख के विपरीत हैं। वास्तव में, आमुख तो संविधान को समझने की कुँजी है। अस्तु, आमुख का ध्येय है कि धर्म वैयक्तिक अधिकार है और इसे भारतीयों के धर्म निरपेक्ष क्रिया-कलापों में निश्चय ही नही लाना चाहिए। सचमुच इसका आशय साम्प्रदायिकता का निरोध अथवा भारत से साम्प्रदायिकता का उन्मूलन था। वर्ष १९४८ के ३ जून या इसके आसपास, संविधान सभा ने साम्प्रदायिकता के विरुद्ध यह प्रस्ताव दृढ़तापूर्वक पास किया था कि धर्म के आधार पर निर्मित समूहों को देश के धम निरपेक्ष क्रिया-कलापों मे, धर्म के आधार पर भागीदारी की छूट न दी जा सके। यह बात संविधान की मूल-भावना में हमेशा ही रही है। हालाँकि पीपुल रिप्रजेन्टेशन एक्ट १९५१ (S. 123 (3)) के ध्येय को संविधान के आमुख में औपचारिक तौर से १९७६ में समाहित किया गया। इसमे स्पष्ट कहा गया कि लोकसभा या विधान-सभा के चुनावों में धर्म के आधार पर चुनावप्रचार करना या मतों के लिए धर्म का फतवा देना, भ्रष्ट कृत्य होंगे तथा चुनाव रद्द किये जाने की व्यवस्था है।

धर्म का वास्तविक अर्थ

अस्तु, संविधान में धारा २५ के अन्तर्गत अनुरक्षित, अन्तःकरण की स्वतन्त्रता वैयक्तिक अधिकार है। धारा २५ कुछ विशद रूप से "धर्म को प्रकट करने, व्यवहार करने एवं प्रचार करने" की आजादी के अधिकार को अनुरक्षित करती है। किन्तु शब्द "प्रचार करने" का इस आशय में प्रयुक्त नही होता कि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को अपने धम में परिवर्तित करे। इसीलिए फुसलाने, धमकी आदि द्वारा धर्म-परिवर्तन, मध्यप्रदेश व ओड़िसा द्वारा प्रदत्त संविधि से अमान्य होता है, जिसे उच्चतम न्यायालय ने परिपुष्ट किया है (देखें AIR 1977 SC (908))। फैसले के उन्नीसवें पैरा में न्यायालय ने "प्रचार" के प्रयोग के बारे में व्याख्या दी है कि "कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के धर्म को परिवर्तित करने का अधिकार नहीं रखता किन्तु वह अपने धर्म के सिद्धान्त की बातें सम्प्रेषित कर सकता है।" न्यायालय ने इस बात को इस प्रकार

स्पष्ट किया है—

"It has to be remembered that Article 25(1) guarantees "freedom of conscience" to every citizen, and not merely to the followers of one particular religion, and that, in turn, postulates that there is no fundamental right to convert another person to one's own religion because if a person purposely undertakes the conversion of another person to his religion, as distinguished from his effort to transmit or spread the tenets of his religion, that would impinge on the "freedom of conscience" guaranteed to all the citizens of the country alike'.

ईसाई उपदेशकों की यह गलत अवधारणा कि लोगों के धर्म-परिवर्तन का क्रिश्चियनिटी मौलिक अधिकार प्रदान करती है, न्यायालय द्वारा स्पष्ट रूप से इनकार कर दी गई है। इस निर्णय से, संविधान के अन्तर्गत, धर्म का वास्तविक अर्थ स्पष्ट हो जाता है। अन्तःकरण की स्वतन्त्रता, समझाने की स्वतन्त्रता और अपने अतःकरण की स्वतन्त्रता का प्रतिपादन धारा २५ द्वारा अनुरक्षित है। इसीलिए अतःकरण की स्वतन्त्रता व्यक्तिगत स्तर तक प्रतिबंधित है। धर्म निरपेक्ष गतिविधियों के क्षेत्र में इस अधिकार का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। धर्म के क्षेत्र का यह सीमाकन सविधान को धारा २६ के द्वारा "धर्म के मामलों" तक ही सुनिश्चित किया गया है।

राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता

राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता का ध्येय आमुख में उद्घोषित है। चूँकि संविधान की समझ के लिए आमुख मात्र एक कुँजी है, धारा २९ (१) को आमुख के प्रतिकूल नहीं माना जा सकता है। धारा २९ (१) द्वारा नागरिकों को उनकी विभिन्न भाषाएँ, लिपि या संस्कृति को सुरक्षित रखने का मौलिक अधिकार प्रदान किया गया है।

इस अनुरक्षण का यह तात्पर्य नहीं है कि भाषा, लिपि या संस्कृति का अलगाववादी यंत्र के रूप मे प्रयोग किया जाय। यह ठीक है कि प्रत्येक व्यक्ति या सांस्कृतिक समूह की अपनी विशेष पहचान हो सकती है, किन्तु यह पहचान अलग राष्ट्रवाद का राग अलापने की अनुमति प्रदान नहीं करता। जैसे कि व्यक्ति को वैचारिक आजादी है, ठीक उसी प्रकार समूह-विशेष को भाषा व संस्कृति

की आजादी है। किन्तु जैसे कि व्यक्ति अपनी वैचारिक स्वतन्त्रता के आधार पर राष्ट्र से अलग नहीं हो जाता, उसी प्रकार समूह या लोग अपनी सांस्कृतिक व भाषाई पहचान के आधार पर राष्ट्र से अलग नहीं हो जाते।

अल्पसंख्यकों के धार्मिक व भाषाई अधिकार को समझने में यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि उनकी रुचि के आधार पर धारा ३०(१) के अन्तर्गत शैक्षणिक संस्थाएँ हो सकती हैं। उदाहरणार्थ, इस प्रकार की संस्थाओं का अच्छा प्रशासन उपेक्षित है तथा इस प्रकार की संस्थाओं पर देश के कानून को समान रूप से लागू करना सुनिश्चित होना चाहिए। इस प्रकार की संस्थाओं में अध्यापकों के स्थायित्व को सुनिश्चित किया जाना चाहिए तथा इस प्रकार की सस्थाएँ मात्र अल्पसंख्यक होने के कारण, अपने अध्यापकों को इस प्रकार की सुरक्षा प्रदान करने से इनकार नही कर सकती हैं।

समुचित शिक्षा

अस्तु, जैसा कि संविधान में सँजोया गया है, देश के बच्चों एवं युवकों की समुचित शिक्षा, उनमें धर्म व संस्कृति के मूल्य निश्चय ही उत्पन्न करे। ये मूल्य हमारी राष्ट्रीयभावना को विशेषता प्रदान करते हैं। सविधान द्वारा अनुरक्षित ये मूल्य हमारी भारतीयता को परम आवश्यक मूल्य के रूप में उद्घोषित करते हैं। पूरे विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जिसमें प्राचीन संस्कृति की अविरलता सदियों से बनी हुई है। पुराने मूल्यों से बिखरे बगैर आधुनिकता को पुराने मूल्यों में जोड़ा जा सकता है। गुरुकुल व अन्य आदर्श संस्थाएँ जो शिक्षा देशवासियों को दे सकती हैं, वे ऐसी होनी चाहिए जो छात्र-छात्राओं को अपनी यशस्वी प्राचीन संस्कृति से अवगत कराये तथा उनमें उच्च नैतिकमूल्यों को उत्पन्न करे। ये मूल्य देश-भक्ति तथा राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता को समाहित करते हैं। आधुनिकता, विज्ञान व तकनालॉजी के कितने ही अध्याय क्यों न जोड़ दिये जायें किन्तु शाश्वतमूल्य शिक्षा द्वारा अनवरत बनाये रखे जाने चाहिएँ। मुझे विश्वास है कि इस कार्य में गुरुकुल देश का अगुवा बनेगा और इस क्षेत्र में पथप्रदर्शक होगा। मेरी शुभकामना है कि यहाँ के विद्यार्थी और वे जो उत्तीर्ण होकर जा रहे हैं, इस संदेश के अग्रदूत होंगे तथा अपने देश की महानता के निर्माता होंगे।

वेद तथा कला महाविद्यालय

१ – वेद महाविद्यालय (शिक्षक वर्ग)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
वैदिक साहित्य	१	२ (१ पद रिक्त)	२	५
संस्कृत साहित्य	१(रिक्त)	२	२	५

२ – कला महाविद्यालय (शिक्षक वर्ग)

विषय	प्रोफेसर	रीडर	प्रवक्ता	योग
प्रा० भा० इतिहास	१	२	२	५
दर्शन शास्त्र	१(रिक्त)	२	३	५
हिन्दी साहित्य	१	१ (रिक्त)	३	५
अंग्रेजी	१	२	२	५
मनोविज्ञान	२	१	२	५

३—वेद महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर कर्मचारीवर्ग)

(१) श्री वीरेन्द्रसिंह असवाल, लिपिक

(२) श्री बलवीरसिंह, सेवक

(३) श्री रतनलाल, सेवक

(४) श्री रामसुमत, माली

४—कला महाविद्यालय (शिक्षकेत्तर कर्मचारीवर्ग)

(१) श्री ईश्वर भारद्वाज, योग प्रशिक्षक

(२) श्री लालनरसिंह नारायण, प्रयोगशाला सहायक

(३) श्री हंसराज जोशी लिपिक

(४) श्री अशोक डे लिपिक

(५) श्री कुंवरसिंह सेवक
(६) श्री हरेन्द्रसिंह सेवक
(७) श्री प्रेमसिंह सेवक
(८) श्री रामपद राय सेवक
(९) श्री मानसिंह चौकीदार
(१०) श्री जग्गन सफाई कर्मचारी
(११) श्री सन्तोषकुमार फील्ड अटेन्डेन्ट

५—इस वर्ष सत्रारम्भ दिनाँक २०-७-८७ से हुआ। दिनाँक १-८-८७ से महाविद्यालय में कक्षाएँ विधिवत् आरम्भ हुई। अलंकार तथा विद्याविनोद कक्षाओं में इस वर्ष छात्रसख्या निम्नप्रकार से है :–

कक्षा	विषय	प्रथमवर्ष	द्वितीयवर्ष	योग
विद्याविनोद	वेद वर्ग	०२	०४	०६
विद्याविनोद	कला वर्ग	१४	१०	२४
वेदालंकार		०१	—	०१
विद्यालंकार		२०	१२	३२
			योग	६३

६—इस वर्ष सत्रारम्भ से ही महाविद्यालय में प्रत्येक शनिवार को प्रातः साप्ताहिक यज्ञ एवं सत्सगादि कार्यक्रम हुआ। इसमें सभी शिक्षकों, छात्रों एवं कर्मचारियों का सम्मिलित होना अनिवार्य रखा गया।

७—दिनाँक १५-८-८७ को स्वतंत्रता–दिवस समारोह धूम-धाम से मनाया गया।

८—विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार सत्र ८७-८८ से स्नातक स्तर पर (वेदालंकार एव विद्यालंकार में) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है।

९—दिनाँक ११-१०-८७ से १४-१०-८७ तक प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के तत्वावधान में एक चारदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्‌घाटन-समारोह के मुख्य अतिथि श्री सोमनाथ मरवाहा, परिद्रष्टा, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय तथा अध्यक्ष डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय थे।

१०–दिनांक १६-१०-८७ को एम० ए०, द्वितीय वर्ष–इतिहास के छात्र श्री ऋषिपाल वेदालंकार ने भारतीय शहीद सैनिक स्मारक विद्यालय, नैनीताल में आयोजित अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

११–दिनांक २६-११-८७ को डॉ० प्रसन्नकुमार जी का "शारीरिक-ज्ञान, औषधियाँ तथा रोग" विषय पर एक महत्वपूर्ण व्याख्यान हुआ। उनका यह व्याख्यान बहुत ही ज्ञानोपयोगी था। सभी शिक्षक एवं छात्र इससे लाभान्वित हुए।

१२–दिनांक ३-१२-८७ को वेद एवं कला महाविद्यालय में मान्य कुलपति श्री आर०सी०शर्मा जी की अध्यक्षता में डॉ० जयदेव वेदालंकार, अध्यक्ष, दर्शन विभाग का अभिनन्दन करने हेतु एक स्वागत-समारोह का आयोजन किया गया। उनका यह अभिनन्दन उन्हें इस वर्ष प्राप्त "स्वामी प्रणवानन्द राष्ट्रीय दर्शन पुरस्कार" के उपलक्ष्य में किया गया, जिसमें उन्हे ५०००/- रु० नकद व प्रशस्ति-पत्र प्राप्त हुआ था।

१३–गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी दि० २३-१२-८७ से ३०-१२-८७ तक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान-सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर दिनांक २३-१२-८७ को प्रातः शोभा-यात्रा निकाली गयी। तत्पश्चात् श्रद्धाञ्जलि-सभा का आयोजन हुआ। इसके अतिरिक्त दिनांक २८-१२-८७ को एक त्रिभाषा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय व बाहर की कई शिक्षण-संस्थाओं के छात्रों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के संयोजक श्री वेदप्रकाश शास्त्री, रीडर, संस्कृत विभाग थे।

१४–दिनांक २६-१-८८ को गणतन्त्र दिवस समारोह मनाया गया। ध्वजारोहण मान्य कुलपति श्री आर०सी०शर्मा जी के द्वारा किया गया।

१५–विद्यालंकार द्वितीय वर्ष के छात्र श्री राजेन्द्रकुमार ने दिनांक २० फरवरी को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता में तथा २२ फरवरी ८८ को पंजाब वि०वि०, चण्डीगढ़ में आयोजित

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में भाग लेकर क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

१६–दिनांक ११-३-८८ को अंग्रेजी विभाग के तत्वावधान में मेरठ विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ० टी०आर०शर्मा का "कैथार्सिस" विषय पर एक व्याख्यान हुआ जिसमें सभी शिक्षक एवं छात्र उपस्थित थे।

१७–दिनांक २४-३-८८ को संस्कृत विभाग के तत्वावधान में डॉ० गणेशदत्त शर्मा, प्राचार्य लाजपतराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, साहिबाबाद का एक महत्वपूर्ण व्याख्यान हुआ।

१८–दिनांक २५-४-८८ से वेद एवं कला महाविद्यालय में वार्षिक परीक्षाएँ आरम्भ हुईं तथा दिनांक १३-५-८८ को सम्पन्न हुईं।

१६–दिनांक १६-५-८८ से १८-७-८८ तक वेद एवं कला महाविद्यालय मे ग्रीष्मावकाश घोषित किया गया।

—रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उप-कुलपति

वेद विभाग

विभाग का सामान्य परिचय

वेद विभाग वैसे तो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की १९०० में स्थापना से ही विद्यमान है, पर इस रूप में इसको स्थापना तभी हुई जबकि १९६२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय के सम-कक्ष मान्यता प्रदान की। इससे पूर्व इस विभाग में पं० दामोदर सातवलेकर, पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, आचार्य अभयदेव, प० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, आचार्य प्रियव्रत जो वेदवाचस्पति तथा प० रामनाथ वेदालंकार आदि कार्य कर चुके है।

छात्र संख्या

एम०ए० प्रथम वर्ष	—	४
एम०ए० द्वितीय वर्ष	—	४
अलंकार प्रथम वर्ष	—	२१
अलंकार द्वितीय वर्ष	—	१२
विद्याविनोद प्रथम वर्ष	—	१६
विद्याविनोद द्वितीय वर्ष	—	१४
	योग	७१

विभागीय उपाध्याय

१. आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार	—	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
२. डा० भारतभूषण	—	रीडर
३. डा० सत्यव्रत राजेश	—	प्रवक्ता
४. डा० मनुदेव बन्धु	—	प्रवक्ता

रीडर का एक पद रिक्त है।

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य :

(१) प्रो०रामप्रसाद वेदालंकार, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वेद विभाग,
आचार्य एवं उप-कुलपति

(अ) प्रकाशित पुस्तकें

अब तक प्रकाशित कुल पुस्तकें – ३६, एक पुस्तक 'अनन्त की ओर' का अंग्रेजी में अनुवाद। तीन पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं।

इस वर्ष प्रकाशित पुस्तकें :

१. यज्ञसुधा (पंच महायज्ञों के वैदिक स्वरूप को स्पष्ट करने वाली पुस्तक)
२. कहाँ है वह जो सब पर सुखों की वर्षा करती है ?
३. वैदिक रश्मियाँ–भाग ४ (घर - परिवार वालो के लिए एक उपयोगी देन)।

उपर्युक्त पुस्तकों में से स्वाध्यायप्रेमियों के आग्रह पर कुछ पुस्तकों के कई-कई संस्करण प्रकाशित हुए।

वैदिक साहित्य सेवा पर दो विशेष पुरस्कार प्राप्त।

विश्व वेद परिषद् से 'वेद रत्न' की मानद उपाधि प्राप्त।

(ब) सेमिनार

१६, १७, १८ मई '८७ में राष्ट्रीय दर्शन महासम्मेलन में 'शिक्षा में मूल्यों का महत्व' विषय पर वक्तव्य दिए तथा समापन-समारोह की अध्यक्षता की।

१०-११ जून '८७ में समर इन्स्टीट्यूट में 'भारतीय मनोविज्ञान में व्यक्तित्व विकास का विशेष भाग' पर वक्तव्य दिया।

२६-१२-८७ को नजीबाबाद में 'कम्प्यूटर युग में वैदिक आदर्शों की प्रासंगिकता' पर लिखित वार्ता की तथा संगोष्ठी में भाग लिया, जिसका प्रसारण भी हुआ।

११-१३ अक्टूबर '८७ में इतिहास विभाग में हुए सेमिनार में 'प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन' विषय पर विशेष भाषण।

(स) लेखादि

१. आर्य मर्यादा विशेषांक में 'स्वामी श्रद्धानन्द : एक विलक्षण व्यक्तित्व'

२. महात्मा प्रभु आश्रित शताब्दी-स्मारिका में लेख

३. डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार का एकादशोपनिषद् भाष्य पर लेख 'वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज-दर्शन'।

कुछ अन्य लेखादि स्मारिका एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

(द) वैदिक साहित्य का व्यापक प्रचार

एक ओर पुस्तकों और लेखों के माध्यम से वेद, ब्राह्मण, उपनिषद् आदि के गूढ़ रहस्यों को सरल, सरस एव भावात्मक शैली मे स्पष्ट करने का प्रयास किया, दूसरी ओर भारतवर्ष के अनेक नगरों, महानगरों, विभिन्न संस्थाओं द्वारा आयोजित विशाल समारोहों मे वैदिक वाङ्मय के विभिन्न पक्षों पर शोधपरक, विद्वत्तापूर्ण भाषण दिए।

२ अक्तूबर '८६ को तपोवन देहरादून में "राष्ट्रभृत यज्ञ में तीन देवता" विषय पर व्याख्यान दिया। ९, १० अक्टूबर '८६ को तत्वज्ञान मण्डल कोपरगाँव (महाराष्ट्र) मे "मानवजीवन मे वेद की उपयोगिता" विषय पर भाषण दिया।

११ नबम्बर से १७ नवम्बर तक आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, देहली में विशाल उपस्थिति में "वेदों मे परमपुरुष का स्वरूप", "वैदिक यज्ञ और उसकी उपयोगिता", "वेदाध्ययन और मानवजीवन" आदि विभिन्न विषयों पर सारगर्भित व्याख्यान दिए।

२४, २५ अक्टूबर '८६ को महर्षि दयानन्द मठ, जालन्धर मे "वेदों के आधार पर नारी का स्वरूप," "कहाँ है वो" इन विषयो का प्रतिपादन किया। ५, ६ नवम्बर '८६ को नया बाजार, ग्वालियर में तथा २४, २५, २६ दिसम्बर '८६ को सान्ताक्रुज बम्बई मे तीन देवता, वेदों का स्वाध्याय, आर्यों की दिनचर्या, भ्रातृत्व आदि विषयों पर भाषण दिए, जिन्हें श्रोताओं ने बहुत सराहा।

२८ फरवरी '८७ को बदायूँ में "वेद सगोष्ठी" की अध्यक्षता की तथा अध्यक्षीय भाषण दिया।

१३, १४, १५ फरवरी ' ८७ को कोटा-राजस्थान में आर्यों का आराध्य देव, वेद प्रतिपादित वेदाध्ययन की महिमा, आदि विषयों पर व्याख्यान दिए।

२० फरवरी '८७ को रोहतक में यज्ञ-सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए अध्यक्षीय भाषण दिया।

इनके अतिरिक्त देहली, बम्बई, बी०एच०ई०एल हरिद्वार, आई०डी०पी० एल० ऋषिकेश, कानपुर, देहरादून आदि अनेक स्थानों पर वेदविषयक व्याख्यान दिए।

विषय को नवदिशा प्रदान करने के लिए, विश्वविद्यालय में अपनी सूझ-बूझ तथा मौलिक चिन्तन के आधार पर सत्र ८६-८७ में वैदिक प्रयोगशाला का शुभारम्भ किया, जिसमें स्नातकोत्तर छात्र, शोधार्थी एवं वेदप्रेमीजन १६ संस्कारों एवं पंचमहायज्ञों के स्वरूप को प्रत्यक्ष देखकर व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं।

हापुड़ में अगस्त '८७ में वेदों के आधार पर—१. इन्द्र परमेश्वर का स्वरूप और उसका कार्य, २. विश्वातेरम दुरिता—हम ज्ञानियो से मिलकर संसार के सभी दुरित तर जाएँ, पर व्याख्यान दिए।

१६-१७ अगस्त में चण्डीगढ़ मे वेद के आधार पर "विश्वशान्ति और उसके उपाय" विषय पर व्याख्यान।

अर्बन स्टेट करनाल में १२-१३ सितम्बर को "मा प्रगाम पथो वयम्"—हम अपने पथ से कभी विचलित न हों, "वरदा वेदमाता" तथा वेदों में अध्यात्म विषयों पर वक्तृता दी।

सोनीपत हरियाणा में "यज्ञ इन्द्रमवर्धयत्"—यज्ञ मनुष्य को सब प्रकार से उठाता है। मानवजीवन के उत्थान में वेदों का योगदान विषयों पर व्याख्यान।

मुजफ्फरनगर में ६ अक्टूबर '८७ को आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता एवं अध्यक्षीय भाषण।

१७ अक्टूबर को जिला मुरादाबाद में जनपदी तहसील ठाकुरद्वारा द्वारा आयोजित राष्ट्ररक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता एवं अध्यक्षीय भाषण

दिल्ली. हनुमान रोड में वैदिक संस्कृति के विभिन्न विषयों पर वक्तृत्व दिये।

जिला मण्डी, स्टेट हिमाचल प्रदेश में २८-२६ नवम्बर में वेद के आधार पर दो-तीन भाषण दिये।

२५ दिसम्बर को चेम्बूर, बम्बई में "स्वामी श्रद्धानन्द—एक विशेष व्यक्तित्व" विषय पर व्याख्यान दिया। "संसार को वैदिक साहित्य की देन" विषय पर भी भाषण दिया।

६–१० जनवरी में दिल्ली, अशोकविहार में "कबस्य वृषभःत्र" कहाँ है वह ? जो सब पर सुखों की वर्षा करता है, तथा "मानवजीवन के उत्थान में यज्ञों का महत्व" पर दो व्याख्यान। टंकाराद-गुजरात में फरवरी मास में "यजुर्वेद के यज्ञ के साथ-साथ, यजुर्वेद के आधार पर आध्यात्मिक, सामाजिक एवं पारिवारिक उत्थान" आदि विषयों पर भाषण दिए।

८ मार्च को प्रौढ़ शिक्षा पर हुए विशेष आयोजन में अध्यक्षता की एवं अध्यक्षीय भाषण (गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय में) दिया।

६ मार्च को विभिन्न प्रान्तों से आए हुए छात्रों की एक विशेष सभा की अध्यक्षता एवं भाषण दिया।

१०-४-८८ को "होम्योपैथिक डाक्टर्स एसोसियेशन" जिला सहारनपुर की ओर से डा० हेनीमन् के २३४वें जयन्ती-समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित और विशेष व्याख्यान।

३०-४-८८ एवं १-५-८८ को तपोवन, देहरादून में "घर परिवार को स्वर्गमय बनाने के लिये वैदिक साहित्य का योगदान, वेदों में अध्यात्म" पर भाषण हुए। इस वर्ष "ऋग्वेद में प्रतिपादित विभिन्न विधाओं का संकलन एवं विवेचनात्मक अध्ययन" विषय पर मेरे निर्देशन में पी-एच०डी० का कार्य सम्पन्न हुआ।

इसके अतिरिक्त गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आचार्य एवं उप-कुलपति पद के सम्पूर्ण उत्तरदायित्व को बड़ी लगन से करने का प्रयास किया।

२—डा० सत्यव्रत राजेश, प्राध्यापक

(अ) निर्देशन कार्य

मेरे द्वारा निर्देशित छात्र-छात्राओं ने दो शोधप्रबन्ध पूर्ण कर पी–एच० डी० उपाधि प्राप्त की।

दो छात्र मेरे निर्देशन में शोधकार्य कर रहे हैं।

(ब) लेखन कार्य

"वृक्षों में जीव और हिंसा" पुस्तिका प्रकाशित। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे।

(स) सम्मेलनों में भाग

(क) गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली में—"अर्घ तथा मधुपर्क — " विषय पर निबन्धवाचन।

(ख) ऋषिकेश में संस्कृत रक्षा-सम्मेलन में सभापति।

(ग) जींद (हरियाणा) में विद्वद्गोष्ठी में मुख्य अतिथि।

(द) वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार का कार्य —

ग्रीष्मावकाश तथा अन्य अवकाशों में अहमदाबाद, बड़ौदा, भावनगर (गुजरात), कोल्हापुर–चालीस गाँव–धुले (धुलिया–महाराष्ट्र), बेलगाँव (कर्नाटक), चण्डीगढ़, जीद–हिसार–बखाला (हरियाणा), नगल डैम–मुहाली (पजाब), मेरठ, मुजफ्फरनगर, रुड़की, हरिद्वार–ज्वालापुर–मेल, देहरादून, ऋषिकेश, मसूरी (उत्तरप्रदेश) आदि स्थानों पर वैदिक संस्कृति प्रचार।

(क) कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की संस्कृत शिक्षापटल का सदस्य होने के कारण उसकी मीटिंगों में भाग लिया।

३—डा० मनुदेव बन्धु, प्रवक्ता

योग्यता :

एम.ए.—वेद, संस्कृत, हिन्दी; व्याकरणाचार्य, पी-एच.डी., लब्ध स्वर्णपदक

पुस्तकें :

१. वेद मंथन
२. मानवता की ओर
३. भाष्यकार दयानन्द
४. वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

लेख एवं वक्तव्य :

(क) तीन राष्ट्रिय कान्फ्रेन्स में सक्रिय भाग लिया तथा निबन्धवाचन किया।

(ख) अनेकों वेद-सम्मेलनों तथा संस्कृत-सम्मेलनों में निबन्धवाचन किया।

(ग) इस सत्र में १० लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

(घ) आर्य समाज के विभिन्न मंचों से वेद और दयानन्द-दर्शन पर भाषण दिए।

—रामप्रसाद वेदालंकार
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

संस्कृत विभाग

अपने आविर्भावकाल से ही संस्कृत-विभाग अपनी क्षमता, श्रम एवं सहयोग के कारण विश्वविद्यालय की श्रीवृद्धि में सतत् प्रयास करता आ रहा है। परिणामस्वरूप इस विश्वविद्यालय के दो यशस्वी छात्र श्री आनन्दकुमार तथा श्री तपेन्द्रकुमार भारतीय प्रशासनिक सेवा में अपनी प्रसिद्धि एवं प्रशंसा के साथ कार्यरत हैं। उस्मालिया, देहली, पटना, जयपुर, रोहतक, चण्डीगढ़, कुरुक्षेत्र, आगरा आदि विश्वविद्यालयों मे इस विश्वविद्यालय के दीक्षित तथा परीक्षित छात्र, जिनकी संख्या शताधिक है, उच्चपदों पर प्रशंसा एवं प्रसन्नता के साथ कायरत हैं। बीस छात्रों ने पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त करके गुरुकुल की गरिमा में शोभा प्रदान की है।

इस वर्ष सत्र १९८७-८८ में विभाग मे निम्न महानुभाव कार्यरत हैं—

१. डा० निगम शर्मा — अध्यक्ष
२. प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री — रीडर
३. डा० रामप्रकाश शास्त्री — प्रवक्ता
४. डा० महावीर अग्रवाल — प्रवक्ता

इस वर्ष विभिन्न विषयों तथा क्षेत्रों में प्रतिभा-सम्पन्न अनुरूप शोध-कार्य के सम्पादन के कारण निम्न महानुभावों को पी-एच० डी० की उपाधि से सम्मानित किया गया—

१. श्रीमती सुषमा स्नातिका
२. श्रीमती राजकुमारी शर्मा
३. श्री सुरेन्द्रकुमार
४. श्री वसन्तकुमार
५. श्री रविदत्त

निम्न छात्रों ने एम०ए० द्वितीय वर्ष में लघु शोधप्रबन्ध लिखकर विशेष

योग्यता अर्जित की :

१. कु० अनुपमा शर्मा
२. श्री सोमपाल
३. श्री लेखराज शर्मा

छात्र श्री राजेन्द्रसिंह (विद्यालंकार) ने गुरुकुल आर्यनगर-हिसार, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जयिनी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय तथा मेरठ विश्वविद्यालय में अनेक वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान पाकर प्रशंसा तथा गुरुकुल के लिए प्रसन्नता प्राप्त की। श्री अरविन्द कुमार, एम०ए०-द्वितीय वर्ष तथा श्री सोमपाल, एम०ए०-द्वितीय वर्ष ने गुरुकुल आर्यनगर-हिसार, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जयिनी में प्रतियोगिताओं में प्रशंसनीय स्थान प्राप्त किए।

इस वर्ष विभाग में निम्न शोधार्थी पी-एच०डी० के लिए शोध-कार्य कर रहे हैं :

१. कु० राजिन्द्र कौर
२. श्रीमती उर्मिला देवी
३. कु० सतीश कुमारी
४. कु० सुखदा
५. श्रीमती राजेश्वरी बहुगुणा
६. श्रीमती वन्दना त्रिपाठी
७. श्रीमती मनजीत कौर
८. श्रीमती नन्दिनी आर्य
९. कु० वेदवती
१०. श्री नरेन्द्रकुमार
११. सुश्री पुष्पा श्रीवास्तव
१२. सुश्री राजवन्ती
१३ सुश्री किरणमयी
१४. सुश्री अन्जू आर्या

संस्कृत विभाग ने समय-समय पर बाहर से योग्य विद्वानों को आमन्त्रित

किया और उनके भाषणों की व्यवस्था की, जिनमें निम्न मुख्य हैं :

१. डा० वी०के० वर्मा, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, बी०एच०यू०
विषय : भाष्य प्रक्रिया

२. डा० कृष्णकुमार, भूतपूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, गढ़वाल वि०वि०, श्रीनगर—विषय : काव्य में ध्वनि-विचार

३. डा० रामनाथ वेदालंकार, भूतपूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय—विषय : वेद की वर्णन पद्धति।

४. डा० कृष्णलाल, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, देहली विश्वविद्यालय, देहली
विषय : वैदिक साहित्य-परिचय

५. डा० सत्यव्रत शास्त्री, भूतपूर्व कुलपति, पुरी विश्वविद्यालय
विषय : थाईलैण्ड में संस्कृतशब्दों का प्रयोग

६. डा० वेदप्रकाश उपाध्याय, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
विषय : हिन्दू-विधि

विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य :

१—डा० निगम शर्मा

पद — रीडर-अध्यक्ष

योग्यता — शास्त्री-अंग्रेजी सहित, एल०टी०, साहित्याचार्य;
एम०ए० (स्वर्णपदक-प्रथम श्रेणी-प्रथम स्थान) पी-एच०डी०

अध्यापन — अनुभव — स्नातक — स्नातकोत्तर
२६ वर्ष   २६ वर्ष

शोध निर्देशन—

१. सात छात्रों को को पी-एच०डी० की उपाधि मिल चुकी है।

२. पाँच लघु शोधप्रबन्ध सम्पन्न।

३. आठ छात्र पी-एच०डी० के लिए कार्यरत।

४. नव पी-एच०डी० ग्रन्थों का मूल्यांकन।

५ ग्यारह ग्रन्थो का मूल्यांकन (भारत सरकार शिक्षा मत्रालय की योजना मे)।

शोध निबन्ध —५० से अधिक प्रकाशित।

विशिष्ट सगोष्ठी—

१ कालीदासे ऋग्वेदस्य प्रभाव (विक्रम वि०वि०, उज्जयिनी)।
२ हिमालय (गढवाल वि०वि०, श्रीनगर)।
३ वेद एव भाष्यकार (पजाब वि०वि०, चण्डीगढ ।
४ सृष्टि-प्रवंच (प्रभात आश्रम, मेरठ)।
५ शिशु निकेतन — बी०एच०ई०एल०।
६ डी०पी०एस० — बी०एच०ई०एल०।
७ भिक्षानन्द सस्कृत महाविद्यालय-बुलन्दशहर।
८ लाजपतराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, साहिबाबाद।
९ ज्वालापुर महाविद्यालय, ज्वालापुर।
१० निर्धन निकेतन हरिद्वार।
११ भगवानदास सस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार।

आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री, रीडर

शोधलेख प्रकाशन—

१—(क) जम्मू से प्रकाशित "आर्यधारा" पत्रिका मे जीवनपद्धति के लिए "वेद के आदेश" नामक शोधलेख प्रकाशित हुआ।

(ख) प० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार के अभिनन्दन ग्रन्थ मे "आर्य सस्कृति के मूलतत्व" शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ।

२— विशिष्ट व्याख्यान तथा विद्वद्गोष्ठी मे भाग—

(क) २८ सितम्बर ८७ को जम्मू विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग मे "काव्यलक्षण समीक्षा" पर विशेष व्याख्यान दिया।

(ख) १५ दिसम्बर ८७ को दयालसिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, करनाल

में संस्कृत, हिन्दी विभाग में "रस प्रक्रिया" पर विशेष व्याख्यान दिया।

(ग) २० मार्च ८८ को भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय में आयोजित विद्वद्गोष्ठी में "नवजागरण संस्कृतन्त्र" पर व्याख्यान दिया। व्याख्यान का माध्यम सस्कृतभाषा रही।

(घ) १५ मार्च ८८ को गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में भारत सरकार की सहायता से आयोजित पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर मे मुण्डन संस्कार को दृष्टिगत करते हुए शोधात्मक व्याख्यान दिया।

(ङ) ७ अप्रैल ८८ को लाजपतराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, साहिबाबाद मे "कालिदास का रघुवंश" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान दिया।

(च) १२-१३ अप्रैल ८८ को महाविद्यालय, ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव पर आयोजित शिक्षासम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन तथा आर्य सम्मेलन में प्रमुख वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया।

(छ) २१-२२ अप्रैल ८८ को गीताश्रम, ज्वालापुर में आयोजित विद्वद्गोष्ठी में भाग लिया।

परीक्षण कार्य

(क) २० अगस्त ८७ को गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर के संस्कृत विभाग में डी॰फिल उपाधि के लिए एक शोधार्थी की मौखिकी परीक्षा ली।

(ख) १६ नवम्बर ८७ को मेरठ विश्वविद्यालय के जे॰वी॰ जैन कालेज सहारनपुर में पी-एच॰डी॰ की मौखिक परीक्षा ली।

संयोजन कार्य

(क) ३० दिसम्बर ८७ को श्रद्धानन्द बलिदान समारोह के अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता का संयोजन किया।

(ख) १४ अप्रैल ८८ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर आयोजित राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का संयोजन किया।

(ग) विश्वविद्यालय के वेद एवं कला महाविद्यालय के बौद्धिक एवं

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संयोजन किया।

सम्मानित कार्य

(क) ३० जनवरी ८८ को महाविद्यालय, ज्वालापुर में संस्कृत प्रतियोगिता में अध्यक्ष पद पर कार्य किया।

(ख) १२-१३ मार्च ८८ को ऋषि संस्कृत महाविद्यालय में आयोजित प्रतियोगिता में मुख्यनिर्णायक के रूप में कार्य किया।

(ग) १६ मार्च ८८ को भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय में आयोजित संस्कृत प्रतियोगिता में अध्यक्ष पद पर कार्य किया।

(घ) अनेक संस्थाओं की चयन समिति मे विषय-विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया।

व्यवस्थात्मक कार्य

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की वर्ष ८८ की वार्षिक परीक्षा में सहायक परीक्षाध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

प्रचारात्मक कार्य

वैदिक संस्कृति के प्रचारार्थ अनेक शिक्षण-संस्थानो, धार्मिक संस्थानों तथा अन्य स्थानो में लगभग ६० (साठ) व्याख्यान दिये।

अन्य

(क) संस्कृत महाविद्यालय के परामर्शदातृमण्डल का सदस्य रहा।

(ख) संस्कृत परिषद् हरिद्वार का महामंत्री रहा।

३—डा० महावीर अग्रवाल, प्राध्यापक

शोधलेख प्रकाशित—

(क) भारतीय संस्कृतेः गायकः कविकुलगुरुः कालिदासः (गुरुकुल पत्रिका)।

(ख) डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार के अभिनन्दन ग्रन्थ में "पं० सत्यव्रत जी का गीता भाष्य" लेख प्रकाशित हुआ।

विशिष्ट विद्वद्गोष्ठियों में व्याख्यान—

(क २० मार्च ८८ को भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय में विद्वद्गोष्ठी में "संस्कृतभाषा की प्रासङ्गिकता" विषय पर व्याख्यान दिया।

(ख) कालिदास समारोह, उज्जैन में विद्वद्गोष्ठी के अन्तर्गत "कालिदासस्य हिमालय वर्णनम्" पर शोधलेख पढ़ा।

(ग) १० मार्च ८८ को महाविद्यालय, ज्वालापुर में आयोजित पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर में "संस्कारों एवं यज्ञों का महत्व" विषय पर व्याख्यान दिया।

(घ) सहारनपुर, रुड़की, मुरादाबाद, बरेली, कानपुर, ज्वालापुर आदि नगरों में समायोजित सम्मेलनों, आर्य समाज के उत्सवों में वेद, दर्शन, उपनिषद्, भारतीय संस्कृति पर लगभग ४० व्याख्यान दिये।

शोध परीक्षा—

२५ मार्च को अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद में पी–एच०डी० की शोध-छात्रा की मौखिक परीक्षा ली।

संयोजन—

(क) गुरुकुल वि०वि० में वर्षभर साप्ताहिक यज्ञ, हवन आदि का संयोजन किया।

(ख) अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता में सह-संयोजक का कार्य किया।

दर्शनशास्त्र विभाग

(१) **स्थापना**—१९१० ई० में अलंकार और दर्शनवाचस्पति तक अध्ययन प्रारम्भ हुआ। १९६७ ई० में एम०ए० स्तर का अध्ययन प्रारम्भ हुआ। १९८३ ई० से पी-एच०डी० हेतु शोधकार्य हो रहा है।

संस्थापक-अध्यक्ष—स्व० प्रोफेसर सुखदेव दर्शनवाचस्पति

अपने स्थापनाकाल से ही दर्शन विभाग का यह लक्ष्य रहा है कि भारतीय दर्शन के मौलिक-ग्रन्थों के पठन-पाठन को वरीयता दी जाए, तथा पाश्चात्य दर्शनशास्त्र की अवधारणाओं का उसके स्नातकों को गहन अध्ययन हो और वे स्नातक अपने-अपने विषय के मर्मज्ञ विद्वान सिद्ध हों।

यह विभाग अपने इस दायित्व को सम्यक् रूप में निभा रहा है। इस विभाग से निकलने वाले स्नातक देश-विदेश में दर्शन के प्रचार एव प्रसार और अध्यापन आदि कार्यों में लगे हुये हैं।

(२) **छात्र संख्या**—

विद्याविनोद	—	२३
अलंकार	—	९
एम०ए०	—	१६
पी-एच०डी०	—	६
	योग—	५४

(३) **वर्तमान अध्यापकगण**—

१—डा० जयदेव वेदालंकार	रीडर एवं अध्यक्ष
२—डा० विजयपाल शास्त्री	प्राध्यापक
३—डा० त्रिलोकचन्द्र	प्राध्यापक
४—डा० उमरावसिंह बिष्ट	प्राध्यापक

(४) **आई०ए० एस० और पी०सी०एस० के मार्गदर्शन की समुचित व्यवस्था** —

भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के लिये दर्शन विषय के मार्ग-दर्शन की निःशुल्क समुचित व्यवस्था है। इस योजना के अन्तर्गत इस वर्ष बी०एच०ई०एल०, हरिद्वार एव अन्य स्थानों के छात्र मार्ग-दर्शन प्राप्त करते रहे हैं।

प्राध्यापकगण—

(**क**) **डा० जयदेव वेदालंकार**—पद—रीडर-अध्यक्ष
नियुक्ति—अगस्त १९६८। वर्तमान पद पर फरवरी १९८४ से।

(**ख**) **योग्यतायें**—एम०ए० (दर्शन और मनोविज्ञान), न्यायदर्शनाचार्य, पी-एच०डी०, डी०लिट्०।

(i) **मुख्य शोधग्रन्थ**—(१) उपनिषदों का तत्त्वज्ञान—पृष्ठ २६५ (पी-एच०डी० का शोध-ग्रन्थ)।

(२) महर्षि दयानन्द की विश्वदर्शन को देन। पृष्ठ १५०

(३) भारतीय दर्शन की समस्यायें। पृष्ठ ४२५

(ii) **शोध-पत्र** (१९८७)—

(१) वैदिक दर्शन में सृष्टि प्रक्रिया।

(२) भारतीय दर्शन में आत्मा का स्वरूप।

(३) भारतीय दर्शन में ब्रह्म का स्वरूप।

(४) मुक्ति का स्वरूप।

(५) वैदिकसमाज संरचना।

(६) वेदों मे एक ईश्वर।

(७) मानव का चरमोत्कर्ष।

(८) उपनिषद् प्रकाश : एक समीक्षा।

समस्त शोधपत्र **गुरुकुल मासिक शोधपत्रिका में प्रकाशित हैं।**

(iii) **सेमिनार**—

राष्ट्रीयदर्शन महासम्मेलन—१६ मई ८७ से १८ मई ८७ तक दर्शन विभाग में दो राष्ट्रीय कान्फ्रेन्सों का आयोजन किया।

(क) श्री भर्तृहरि और विट्गेन्सटाइन का भाषा-दर्शन ।

(ख) शिक्षा में मूल्यों का महत्त्व ।

दोनों कान्फ्रेंसों के लिए यू. जी. सी. से बीस हजार रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ । इनमें निदेशक पद के रूप में कार्यरत ।

(ग) उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् का १३वाँ वार्षिक अधिवेशन भी दर्शन-विभाग के तत्त्वावधान मे सम्पन्न हुआ । इसमें स्थानीय सचिव के रूप में कार्य किया और प्रबन्ध-व्यवस्था की ।

(iv) **स्वामी प्रणवानन्द दर्शन पुरस्कार**—डा० वेदालंकार को अखिल भारतीय दर्शन के वार्षिक अधिवेशन मुरादाबाद के अवसर पर, उनके शोधग्रन्थ "भारतीय दर्शन की समस्यायें" पर स्वामी प्रणवानन्द दर्शन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया । डा० जयदेव वेदालंकार को पाँच हजार रुपये नकद और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया ।

(v) **इण्डियन फिलासोफिकल कांग्रेस** श्रीनगर-कश्मीर विश्वविद्यालय में ६ जून से ६ जून ८७ तक होने वाले उक्त कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन मे सक्रिय भाग लिया और शोधपत्रवाचन किया ।

(vi) **अखिल भारतीय दर्शन परिषद्**—रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के ३२वें वार्षिक अधिवेशन में "वेदों में सृष्टि प्रक्रिया" विषय पर शोधपत्रवाचन किया और तत्त्वमीमाँसा सत्र की अध्यक्षता की (सितम्बर १९८७) ।

(अ) दिल्ली विश्वविद्यालय की अन्तर्राष्ट्रीय दर्शन संगोष्ठी में सक्रिय भाग लिया ।

(vii) **अन्य कार्य**—

(i) आर्यसमाज नकुड—फरवरी १९८८ में भारतीय संस्कृति और दर्शन पर निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान दिये :

- वैदिक दर्शन के मूल तत्त्व ।
- भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धान्त ।
- दर्शन में सृष्टि-दृष्टि वाद ।

卐 मानव का लक्ष्य।

卐 वैदिक नीति सिद्धान्त।

卐 मूर्तिपूजा वैदिक मान्यता के विरुद्ध।

(ii) आर्य वानप्रस्थाश्रम में व्याख्यान

जून १९८७ में भारतीय धर्म और दर्शन पर ९ व्याख्यान दिये।

(viii) सम्पादन— गुरुकुल पत्रिका (मासिक शोध पत्रिका) के नियमित सम्पादक के रूप में कार्यरत।

(ix) शोधकार्य— शोधछात्र निम्नलिखित विषयों पर पी-एच०डी० हेतु शोधकार्य कर रहे हैं -

(अ) श्री अरविन्द और स्वामी दयानन्द का दर्शन : एक तुलनात्मक अध्ययन।

(ब) महात्मा गांधी और स्वामी दयानन्द के दर्शन का अनुशीलन।

(स) भारतीय और पाश्चात्य दर्शन में अन्तःकरण।

(द) मध्यकालीन द्वैतवादी और अद्वैतवादी आचार्यों के दर्शन में प्रमाण समीक्षा।

विशेष तीन शोध छात्रों ने पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।

यह ज्ञातव्य है कि दर्शन विभाग में पाँच राष्ट्रीय दर्शन कान्फ्रेंसों का आयोजन हुआ है। उन सभी राष्ट्रीय दर्शन महासम्मेलनों का विभाग के समस्त प्राध्यापकगणों ने प्रबन्ध किया और छात्रों ने भी उक्त प्रबन्ध में पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। विभाग के समस्त प्राध्यापकगण और छात्र धन्यवाद के पात्र हैं।

(ख) डा० विजयपाल शास्त्री

पद — प्रवक्ता

प्रकाशित लेख—

१. शुभ संकल्प से विश्वशान्ति
राष्ट्रीय दर्शन महासम्मेलन (एक समालोचनात्मक शोधपत्र संकलन) अप्रैल १९८७।

२. ख्यातिवाद गुरुकुल पत्रिका, १९८७।

३. बुद्ध और शंकर का साधनमार्ग, गुरुकुल पत्रिका (शोधपत्र विशेषांक) अप्रैल १९८८।

४. 'वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार', डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की पुस्तक पर लिखित समीक्षा (डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार अभिनन्दन ग्रन्थ, मार्च १९८७)।

कान्फ्रेंन्स—अखिल भारतीय दर्शन परिषद् का अधिवेशन के. जी. के. कालिज मुरादाबाद में आयोजित। ८-११ अक्टूबर १९८७।

(ग) डा० त्रिलोकचन्द

पद — प्रवक्ता

योग्यताएं—एम. ए., पी-एच.डी.

(१) शोधपत्र—

(क) नशामुक्ति के कारगर साधन—योग और संगीत : दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित (१९ दिसम्बर ८७)।

(ख) योग और स्वास्थ्य (ई०बी०आर०आई० रुड़की में प्रस्तुत, दिसम्बर १९८७)।

(२) वार्ता तथा भाषण—

(१) कृषि विश्वविद्यालय सोलन में शोधपत्रवाचन किया (जून १९८७)।

(२) वानप्रस्थाश्रम में अनेक भाषण।

(३) दिल्ली, गुड़गांव, जालन्धर और लुधियाना आदि आर्यसमाजों में अनेक भाषण।

(३) अन्य कार्य—

योग और संगीत द्वारा दिल्ली में १ जुलाई से १८ जुलाई ८७ तक नशा छुड़वाने के लिये अनेक व्यक्तियों पर प्रयोग किये और सफलता प्राप्त की।

(घ) डा० उमरावसिंह बिष्ट

पद — प्रवक्ता

(१) शोधपत्र—(i) धर्म और विज्ञान (अंग्रेजी में)। गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित (१९८७)।

(ii) शिक्षा की भूमिका (Role of Education) हॉक में प्रकाशित (सितम्बर १९८७)।

(iii) शिक्षा की भूमिका–द्वितीय भाग (अंग्रेजी में, हॉक सितम्बर १९८७)।

(iv) धर्म और विधि की प्रकृति (वैदिक पाथ में प्रकाशित)।

(२) रेडियो-वार्ता—

नजीबाबाद आकाशवाणी (२४-८-८७)—विषय—भारतीय दर्शन के विदेशी विद्वान।

(३) (क) कान्फ्रेन्स—दर्शन विभाग के तत्त्वावधान में उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् एव राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स में सक्रिय भाग लिया और प्रबन्ध मे पूर्ण सहयोग किया।

(ख) दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित; आई०सी०पी०आर० दिल्ली की ओर से प्रोफेसर पी०एफ० सतवासन, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के भाषण में भाग लिया।

—डा० जयदेव वेदालंकार
रीडर एवं अध्यक्ष

मनोविज्ञान विभाग

टीचिंग स्टाफ—

(१)	श्री ओम्प्रकाश मिश्र	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
(२)	डा० हरगोपाल सिह	प्रोफेसर
(३)	श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी	रीडर
(४)	श्री सतीशचन्द्र धमीजा	प्रवक्ता
(५)	डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव	प्रवक्ता
(६)	श्री लाल नरसिंह	प्रयोगशाला सहायक
(७)	श्री कुंवरसिंह नेगी	प्रयोगशाला एटेन्डेन्ट

इस वर्ष मनोविज्ञान की विभिन्न कक्षाओं में छात्रों ने निम्नलिखित वर्णन के अनुसार प्रवेश लिया :

विद्याविनोद प्रथम वर्ष	१५ छात्र
विद्याविनोद द्वितीय वर्ष	०६ छात्र
अलंकार प्रथम वर्ष	११ छात्र
अलंकार द्वितीय वर्ष	०८ छात्र
एम०ए० प्रथम वर्ष	०६ छात्र
एम०ए० द्वितीय वर्ष	०१ छात्र

पूरे सत्र में अध्ययन—अध्यापन सुव्यवस्थित रूप से शान्तिपूर्ण चलता रहा। इस वर्ष एम०ए० द्वितीय वर्ष के ४ विद्यार्थियों ने लघु शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किए, जिनका विवरण इस प्रकार है :

(१) कु० सोनिया सेठी : "विवाहित और अविवाहित महिलाओं की समायोजन सम्बन्धी समस्याएं"।
निर्देशक—प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र

(२) कु० मंजुलता सिन्हा : "नारी का नारी के प्रति सौन्दर्य बोध"।
निर्देशक—प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र

(३) कु० शोभा गुप्ता : "खेलने वाले एवं न खेलने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व चरों का तुलनात्मक अध्ययन"।
निर्देशक—श्री सतीशचन्द्र धमीजा

(४) शिवकुमार झा : "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मूल्य और समायोजन—एक तुलनात्मक अध्ययन"।
निर्देशक—डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव

इस वर्ष विभाग में रिसर्च डिग्री कमेटी की मीटिंग हुई जिसमें डा० प्रभा गुप्ता, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय ने विषय-विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया। विभाग में कुल ६ विद्यार्थी शोध-कार्य कर रहे हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है :

(१) कु० कमला पाण्डेय : "A Psycho-social Study of the Attitude of Acceptors and Non-acceptors Towards Family Planning Programme", Supervisor—Prof. O P. Mishra.

(२) कु० मीनाक्षी छाबड़ा : "A Psycho-social Study of Retired People (An Exploratory Study)", Supervisor - Prof. O.P. Mishra

(३) कु० ममता श्रीवास्तव : "A Study of the Personality Patterns, Value System and Aspirations of Working and Non-working Women", Supervisor—Prof. O.P. Mishra.

(४) शमशेर सिंह : "Small and Large Scale Industries Achievement, Motivation and Leadership Style", Supervisor—Prof. O.P. Mishra.

(५) कु० देवेन्द्र भसीन : "A Comparative Study Between Hindu Grahasthas and Sanyasis on Machivellian Personality and Some Other Psycho-social Variable", Supervisor—Prof. O P. Mishra.

(६) कु० शोभना पाण्डेय : "A Study of the Mental Health of the Visually Handicapped Sportsmen", Supervisor—Prof O.P. Mishra.

(७) कु० मंजुरानी : "वैवाहिक समायोजन एवं सम्बन्धित मनो-सामाजिक चर : हिन्दू एवं मुसलमानों का तुलनात्मक अध्ययन", निर्देशक— प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र ।

(८) राजेश कुँवर : पूर्वी एवं पश्चिमी उत्तर-प्रदेश की अनुसूचित एवं अन्य जातियों के छात्रों में समायोजन, व्यक्तित्व-प्रकार एवं शैक्षिक उपलब्धि —एक तुलनात्मक अध्ययन", निर्देशक —प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र ।

(९) श्री मदनसिंह : "A Study of Breathing Patterns of High and Low Anxiety Persons", निर्देशक —प्रो० हरगोपाल सिह।

विभाग के तत्वावधान में डा० स्वर्ण आतिश ने "Role of Deans and Chair Persons in Central Universities" नामक प्रोजेक्ट पर कार्य पूर्ण कर लिया है, जो कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत की गयी थी।

विभाग के शिक्षकों की शैक्षणिक गतिविधियाँ :

(१) प्रोफेसर ओम्प्रकाश मिश्र के निर्देशन में इस वर्ष श्री नन्दकुमार तिवारी एवं श्री जयप्रकाश नौटियाल को गढ़वाल विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० की उपाधि प्रदान की गयी। गढ़वाल विश्वविद्यालय में गत वर्षो की भाँति इस वर्ष भी गढ़वाल विश्वविद्यालय के कुलपति ने प्रो० मिश्र को पाठ्यक्रम समिति में विषय-विशेषज्ञ के रूप में नियुक्त किया है। विभागीय कार्य के अतिरिक्त प्रो० मिश्र राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक तथा University Employment and Guidance Bureau के प्रमुख के रूप में कार्य कर रहे हैं।

(२) प्रोफेसर हरगोपाल सिंह विभागीय कार्यो के अतिरिक्त वैदिक पाथ का सम्पादन भी कर रहे हैं तथा अनेक सम्पादकीय भी लिखे है। डा० सिह ने—"Indian Approaches and Techniques of Personality Development and Behaviour Modification" पर विभाग के तत्वावधान में एक समर इन्स्टीट्यूट निर्देशित किया। उन्होंने नजीबाबाद रेडियो स्टेशन से २ वार्ताएँ प्रसारित की तथा "Stress Management Through Yoga, Mental Health and Yogic Approach to Crime" विषय पर O.N.G.C. Dehradun, सागर विश्वविद्यालय, तथा Police Training College सागर में भाषण दिए। डा० सिह के ४ शोधपत्र वैदिक पाथ, आयुर्वेद विकास, पण्डित सत्यव्रत

सिद्धान्तालंकार के अभिनन्दनग्रंथ तथा Indian Journal of Applied Psychology में प्रकाशित हुए इन्हें NCERT New Delhi ने Course Book Revision Committee में आमंत्रित किया तथा सागर विश्वविद्यालय की Research Degree Committee में विषय-विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया। डा० सिंह ने Institute of Criminology and Forensic Sciences में Yogic Psychological Approach to Crime पर ४ भाषण दिए। इन्होंने अपने शोध-पत्रों के Abstracts सिंगापुर और लुसियाना में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में पढ़ने हेतु भेजे हैं।

(३) श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी ने मनोविज्ञान विभाग की प्रयोगशाला, विशेषकर Testing Section को व्यवस्थित करने में अपना योगदान दिया। विद्यालयीय छात्रों के व्यक्तित्वविकास को ध्यान में रखते हुए श्री त्रिवेदी नित्य एक वेदमन्त्र अर्थसहित बताते हुए कण्ठस्थ कराते हैं। इसके अतिरिक्त भगवानदास सस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार में इन्होंने एक्सटेंशन लेक्चर भी दिए है।

(४) श्री सतीशचन्द्र धमीजा विश्व पुस्तक मेले में विभाग के लिए पुस्तके खरीदने हेतु सम्मिलित हुए। श्री धमीजा ने रुड़की विश्वविद्यालय मे मानवीकी तथा समाज विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित "सांस्कृतिक एकता एवं साहित्यिक अनुवाद" विषय पर हुए सेमिनार मे भाग लिया।

(५) डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव को I.C.S.S.R. New Delhi ने "Leadership Styles and Effectiveness – A Comparative Study of Private and Public Organizations" Research Project पर कार्य करने हेतु Rs. 9,975/- का अनुदान स्वीकृत किया है। इस वर्ष डा० श्रीवास्तव के ३ शोध-पत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किए गए, जो कि इस प्रकार है :

(i) Achievement Motivation Among Urban and Rural School Students. Journal of Education and Psychology.

(ii) Industrial Unrest in Public Sector—A Case Study. The Management Review.

(iii) Industrial Unrest and Productivity—Case Study. Journal of Business Administration.

इसके अतिरिक्त डा० सूर्यकुमार श्रीवास्तव ने ४ शोध-पत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने हेतु भेज रखे हैं। डा० श्रीवास्तव की Ph.D. Thesis "Relationship Between Job Satisfaction and Organizational Climate – A Comparative Study of Private and Public Sectors" प्रकाशनाधीन है।

—प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र
अध्यक्ष

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

पूर्व की भाँति इस वर्ष भी विश्वविद्यालय का यह स्नातकोत्तर विभाग प्रगति के पथ पर अग्रसर रहा। वर्तमान में विभाग में एक प्रोफेसर, दो रीडर, दो लेक्चरर अपने अध्ययन-अध्यापन के कार्य को पूर्ण लगन व निष्ठा के साथ कर रहे हैं।

विभाग में कार्यरत प्राध्यापक :

१. डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा, एम०ए०, पी-एच०डी०—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

२. डा० जबरसिंह सेंगर, एम०ए०, पी-एच०डी०—रीडर

३. डा० श्यामनारायण सिंह, एम०ए०, पी-एच०डी०—रीडर

४. डा० काश्मीरसिंह भिण्डर, एम०ए०, पी-एच०डी०—लेक्चरर

५. डा० राकेशकुमार शर्मा, एम०ए०, पी-एच०डी० लेक्चरर

स्नातकोत्तर परीक्षार्थी तथा शोध-छात्रों की संख्या :

एम०ए० प्रथम वर्ष	—	१७
एम०ए० द्वितीय वर्ष	—	११
शोध छात्र	—	१३

शोध-कार्य :

विभाग के १८ वर्षों के काल में २१ महत्वपूर्ण विषयों पर शोधकार्य सम्पन्न हो चुका है। प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा के निर्देशन में १२ तथा डा० सेंगर व डा० भिण्डर के निर्देशन में एक-एक शोधार्थी पी-एच०डी० की उपाधि से विभूषित हो चुके हैं। इस वर्ष डा० श्यामनारायण सिंह के निर्देशन में श्री सुखवीरसिंह ने अपना "पुरातत्व संग्रहालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की मृण-मूर्तियों एवं पाषाण-मूर्तियों का अध्ययन" नामक शोध-प्रबन्ध पूर्ण करके विश्वविद्यालय में जमा करा दिया है। इन सबके अतिरिक्त विभाग में शोध-

कार्य उच्चस्तर का हो रहा है। विभाग के प्राध्यापकों के कुशल नेतृत्व में निम्न विद्यार्थी महत्वपूर्ण विषयों पर शोध-कार्य सम्पन्न करने की दिशा में अग्रसर हैं :

नाम	विषय	निर्देशक
१. श्री जसवीर मलिक	–प्राचीन भारत में पौरोहित्य	डा० श्यामनारायण सिंह
२. श्री भारतभूषण	–गुप्तकाल में ब्राह्मण धर्म	डा० काश्मीर सिंह
३. श्री विनोद शर्मा	–प्राचीन भारत में आर्थिक संस्थायें	डा० काश्मीर सिंह
४. श्री जगदीशचन्द्र ग्रोवर	–ब्रह्मो निकल स्कलप्चरस अन्डर दी पालाज	डा० श्यामनारायण सिंह
५. श्री फैयाज अहमद	–गुप्तकाल का कलात्मक वैभव	डा० जबरसिंह सेंगर
६. श्री सुरेशचन्द्र	–पश्चिम उत्तर-प्रदेश में चौहान जाति का इतिहास	डा० जबरसिंह सेंगर
७. कु० मधुबाला	–महाभारतकालीन युद्ध-प्रणाली एव प्रयुक्त अस्त्र-शस्त्र	डा० जबरसिंह सेंगर
८. श्री जितेन्द्रनाथ	–दी ध्यानी बुद्धा, देयर प्रज्ञाज एण्ड बोधिसत्त्वाज इन इन्डियन आर्ट	डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा
९. श्रीमती साधना मेहता	–प्राचीन भारत में शक्तिपूजा	डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा
१०. श्रीमती डॉली चटर्जी	–प्राचीन भारतीय कला में वनस्पति एवं पुष्पालंकरणों का चित्रण	डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा
११. श्री आर्मेन्द्र सिंह	–प्राचीन भारत में अन्तर्राज्य सम्बन्ध	डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा

१२. श्री सुधाकर शर्मा — बुद्धिस्ट स्कलप्चर अन्डर दी पालाज — डा० विनोदचन्द्र सिन्हा

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा शैक्षिक गतिविधियाँ :

इस सत्र में विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा के चार लेख प्रकाशित हुए। प्रथम लेख "प्रह्लाद" शोध-त्रैमासिक पत्रिका के संग्रहालय-विशेषांक में "संग्रहालय – संक्षिप्त परिचय" तथा द्वितीय दिव्यानन्द शारदा स्मारिका में "वृहत्तर भारत में भारतीय संस्कृति"। पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की पुस्तक "वैदिक संस्कृति के मूल तत्व" पर समीक्षात्मक निबन्ध का भी लेखन डा० सिन्हा ने किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की "शोध-सारावली" के प्रकाशन में संयोजक-सम्पादक की भूमिका डा० सिन्हा की रही, जिसके फलस्वरूप उक्त सारावली प्रकाशित हो सकी। फरवरी ८८ में राजकीय स्नातकोत्तर कालेज, ऋषिकेश में इतिहास परिषद् का उद्घाटन भी डा० सिन्हा द्वारा किया गया। डा० सिन्हा का एक लेख गुरुकुल पत्रिका के सस्कृति-अंक में भी प्रकाशित हुआ।

वर्तमान समय तक डा० सिन्हा की १०, डा० सेंगर की १ तथा डा० सिह की २ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

विभाग के रीडर डा० जबरसिंह सेंगर का एक लेख "प्रह्लाद" के पुरातत्व संग्रहालय विशेषाँक में "संग्रहालय मे श्रद्धानन्द वीथिका" प्रकाशित हुआ। डा० सेंगर ने "आल इण्डिया म्युजियम कान्फ्रेंस में इस वर्ष ८-१० जनवरी को भाग लिया तथा वहाँ पर आपने एक पेपर पढ़ा।

विभाग के लेक्चरर डा० राकेशकुमार शर्मा के दो लेखों के प्रकाशन की स्वीकृति जे०बी०ओ०आर०एस० से मिल चुकी है। इस वर्ष वि०वि० की पत्रिका "प्रह्लाद" के पुरातत्व संग्रहालय विशेषांक मे "पुरातत्व संग्रहालय की पाण्डुलिपियाँ" नामक लेख प्रकाशित हुआ। विश्वविद्यालय की शोध-सारावली के कार्य मे भी डा० शर्मा का विशेष योगदान रहा। एक लेख गुरुकुल-पत्रिका के संस्कृति-अंक मे भी प्रकाशित हुआ।

इस वर्ष विश्वविद्यालय प्रशासन ने पुरातत्व के क्षेत्र में कार्य करने के लिए विभाग को ५००० रु० की धनराशि दी। प्रशासन को उसके इस प्रगतिशील कार्य के लिये विभाग की ओर से धन्यवाद। भविष्य में इस राशि को बढ़ाने हेतु आग्रह विभाग द्वारा किया जा चुका है। उक्त राशि से विभाग ने इस वर्ष हरिद्वार के समीपवर्ती उत्खननयोग्य स्थलों का सर्वेक्षण किया।

यह सर्वेक्षण विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा के नेतृत्व में अत्यन्त सफल प्रयास रहा। इस सर्वेक्षण में विभाग के रीडर डा० श्यामनारायण सिंह तथा संग्रहालय के क्यूरेटर श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव की विशेष भूमिका रही। पुरातत्व सम्बन्धी विषय पर उनका विशेष अधिकार है। सर्वेक्षण में डा० जबरसिंह सेंगर, डा० काश्मीर सिंह, डा० राकेशकुमार शर्मा का भी उल्लेखनीय योगदान रहा तथा विभाग के लिए कुछ अमूल्य पुरातात्विक महत्व की वस्तुओं का संग्रह इस सर्वेक्षण की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी :

विभाग ने इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान के सहयोग से राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का विषय था "प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन"। पूरे देश से संगोष्ठी में भाग लेने के लिए इतिहासविद् पधारे, जिनमें निम्न उल्लेखनीय हैं—प्रो० बी०एन० पुरी, प्रो० उपेन्द्र ठाकुर, प्रो० के०डी० वाजपेयी तथा डा० आर०सी० अग्रवाल आदि। संगोष्ठी का कुशल निर्देशन प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा द्वारा किया गया। प्रबन्धसचिव की भूमिका डा० भिण्डर की रही। आवास-व्यवस्था को डा० सेंगर व डा० एस०एन० सिंह ने सम्भाला। आतिथ्य एवं भोजन की व्यवस्था का प्रबन्ध डा० राकेश शर्मा ने किया। आये हुए अतिथियों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। सत्रों के मध्य पत्र-वाचन की व्यवस्था में श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव ने सराहनीय भूमिका अदा की।

विभाग की अन्य उपलब्धियाँ :

अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त वि०वि० के प्रशासन में भी विभाग का योगदान उल्लेखनीय कहा जायेगा। विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा० सिन्हा ने वि०वि० के वित्ताधिकारी का कार्यभार भी संभाला। डा० सेंगर पुरातत्व संग्रहालय के निर्देशक पद पर कार्य कर रहे हैं। विभाग के अन्य रीडर डा० श्यामनारायण सिंह विश्वविद्यालय के उपकुलसचिव का कार्य गत वर्षों की भाँति कुशलता से कर रहे है। डा० भिण्डर ने इस वर्ष भी उप-परीक्षाध्यक्ष के कार्य को पूर्ण गरिमा के साथ किया। डा० राकेश कुमार शर्मा को इस वर्ष वि०वि० प्रशासन द्वारा एन०सी०सी० का कार्यभार सौंपा गया, जिसे वे पूर्ण निष्ठा के साथ सम्पन्न कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त समय-समय पर वि०वि० प्रशासन द्वारा सौंपे गये कार्यों को विभागीय सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सम्पन्न किया है।

—**बिनोदचन्द्र सिन्हा**
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

पुरातत्व संग्रहालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पुरातत्व संग्रहालय ने सत्र १९८७-८८ में ८१ वर्ष पूर्ण कर लिये है। सग्रहालय के विकास में विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा श्री सोमनाथ मरवाह, कुलपति प्रो० रामचन्द्र शर्मा एवं विश्वविद्यालय के अधिकारियों का समय-समय पर सहयोग मिलता रहा, जिसका ही ये परिणाम है कि पुरातत्व संग्रहालय अपने रूप को निखार पाया है।

विश्वविद्यालय को सत्र १९८६-८७ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से विश्वविद्यालय के पुरातत्व सग्रहालय के मद में, मात्र कर्मचारियों का वेतन एवं २४,०००) रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ था। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश शासन द्वारा एव भारत सरकार (सस्कृति विभाग एवं आरकाइव्स, से जो हमें अनुदान प्राप्त हुए है, उनका विवरण निम्न प्रकार है : –

१— भारत सरकार से रु० ४५,०००) की ग्रान्ट प्राप्त हुई थी, जिसमें मुद्रा कक्ष के शोकेसेज तैयार कराये गये और अस्त्र-शस्त्र एवं प्लास्टर कक्ष एवं अष्टधातु कक्ष में पखे लगवाये गये, क्योंकि इन दीर्घाओं में कोई पंखा नही था। इसका उपयोग-पत्र चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट द्वारा भारत सरकार को भेज दिया गया है।

२— भारत सरकार से फोटो कार्ड इन्डेक्सिंग हेतु ५५,०००) रुपये की ग्रान्ट स्वीकृत हुई थी, जिसमें भारत सरकार से प्रथम किश्त १३,७५०) रुपये अनुदान के रूप मे प्राप्त हुई थी। इसमें से प्रस्तर प्रतिमा, मृण्मूर्तियां एवं अष्टधातु प्रतिमा की पुरातात्विक सामग्री के फोटो करवाये गये। इसका उपयोग प्रमाण-पत्र चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट द्वारा भारत सरकार को भेज दिया गया है।

३ – उत्तर प्रदेश सरकार से १२ हजार रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ था, जिसमें मुद्राकक्ष के लिये एक बड़ा शोकेस एवं दो बड़े पैडस्टल एवं पंखे क्रय किये गये हैं। इसका उपयोगपत्र उत्तर प्रदेश सरकार के विभाग द्वारा आडिट होकर जा चुका है।

४— आरकाइव्स विभाग, भारत सरकार द्वारा ३० हजार रुपये का अनुदान पाण्डुलिपियों की सुरक्षा हेतु प्राप्त हुआ है। इसके उपयोग करने का समय अक्टूबर १९८८ है। इसमें वुडेन थाइमोल फ्यूमीगेशन चैम्बर बनकर तैयार हो गया है। एग्जास्ट फैन एवं पी-डाइक्लोरीबेन्जीन स्टील फ्यूमीगेशन चैम्बर विषयक क्रय करने की कार्यवाही प्रगति पर है। आशा है विश्वविद्यालय के अधिकारियों के सहयोग से इस ग्रान्ट का उपयोग समय पर हो जायेगा।

५— उत्तर प्रदेश सरकार से १५ हजार रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ है, जिसमें से स्वामी श्रद्धानन्द गैलरी के विकास हेतु राष्ट्रीय गाँधी संग्रहालय, नई दिल्ली से श्रद्धानन्द के जीवन से सम्बन्धित छायाचित्रों को तैयार करवाने के लिये ३५०० रुपये की धनराशि अग्रिम रूप से जमा कर दी गयी है। फोटो प्राप्त होने पर कार्यक्रमानुसार स्वामी जी से सम्बन्धित छाया-चित्रों को इस कक्ष में प्रदर्शित किया जायेगा। इस ग्रान्ट के उपयोग का समय ३० जून है। आशा है इसे समय पर उपयोग कर लिया जायेगा।

६— माननीय मुख्यमन्त्री द्वारा घोषित एक लाख का अनुदान चित्रकला कक्ष, अस्त्र-शस्त्र कक्ष आदि हेतु शोकेसेज एवं अन्य कार्यों हेतु प्राप्त हुआ है। इसके उपयोग का समय २३ नवम्बर, १९८८ है। आशा है यह कार्य भी विश्वविद्यालय के अधिकारियों के सहयोग से शीघ्र सम्पन्न हो जायेगा।

इस वर्ष पुरातत्व संग्रहालय में विभिन्न दानदाताओं की कृपा से प्राप्त वस्तुओं का विवरण निम्न प्रकार है—

१— डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार (भूतपूर्व विजिटर, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय) द्वारा प्रशंसा ताम्र-पत्र, अभिनन्दन-पत्र, आदि १० की संख्या में प्राप्त हुये हैं, जिनके प्रदर्शन की व्यवस्था यथाशीघ्र की जायेगी।

२— डा० ज्ञानचन्द्र जी रावल, उपाध्याय हिन्दी विभाग ने १२ सिक्के (ताम्र सिक्के) आधुनिककाल के भेंटस्वरूप संग्रहालय को प्रदान किये।

३— इसी प्रकार श्री रामकुमार नारंग, ज्वालापुर ने आधुनिक काल (ताम्र एवं निकिल) के २२ सिक्के सप्रेम संग्रहालय को भेंट किये।

४— स्वामी श्रद्धानन्द जी के जन्मस्थल तलवन से एक प्राचीन कृष्ण की मूर्ति श्री रघुवीरचन्द्र जोशी ने भेंटस्वरूप संग्रहालय को प्रदान की। इस मूर्ति का एक हाथ खण्डित था, जिसे जोड़कर संग्रहालय में सुरक्षित कर लिया गया है।

व्यवस्थात्मक कार्य :

(अ) इस संग्रहालय की गैलरियों को हमारे संग्रहालय स्टाफ ने उनकी समुचित व्यवस्था के लिये अलग-अलग जिम्मेदारियाँ वहन की हुई हैं। इनमें मृण्मूर्तियाँ, सिन्धु सभ्यता (मोहन जोदाड़ो, कालीबंगा), कापर होर्ड्स (ताम्रनिधि उपकरण), अष्टधातु कक्ष एव चित्रकला कक्ष की देख-रेख एवं उनको सुचारू रूप से व्यवस्थित रखने का श्रेय श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव, संग्रहाध्यक्ष को है। इसके साथ ही दर्शकों को निर्देशन एव सुविधायें उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी भी वहन कर रहे हैं।

(ब) इसी प्रकार से प्रस्तर प्रतिमाकक्ष, मुद्राकक्ष एवं हस्तलिखित ग्रन्थकक्ष, नोट्स, वीड्स आदि की देख-रेख एवं उनको प्रदर्शित करने की जिम्मेदारी श्री सुखवीरसिंह, सहायक संग्रहाध्यक्ष वहन कर रहे हैं। साथ ही दर्शकों को संग्रहालय दिखाने आदि का भी कार्य करते रहते हैं।

(स) संग्रहालय सहायक श्री वृजेन्द्रकुमार जैरथ अस्त्र-शस्त्र कक्ष, मृद्‌भाण्ड कक्ष, प्लास्टर कास्ट अनुकृतियाँ, स्वामी श्रद्धानन्द कक्ष, भूगर्भीय वनस्पति विभाग, लिपि चार्ट आदि की देख-रेख एवं प्रदर्शन की व्यवस्था देख रहे हैं। साथ ही दर्शकों को भी सुविधायें उपलब्ध कराते रहते हैं।

उक्त गैलरियों हेतु गैलरी अटेंडेन्ट मात्र एक श्री रमेशचन्द्र पाल ही हैं। जबकि, अन्य संग्रहालयों में हर गैलरी में एक-एक अटेण्डेन्ट होता है। हम गैलरी अटेण्डेन्ट बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

इस वर्ष संग्रहालय में दर्शकों की सख्या ७३०४ रही है। संग्रहालय आने वाले कुछ विशिष्ट संग्रहालयदर्शको के निम्न नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं :

(१) श्री अशोक मरवाह, एडवोकेट, नई दिल्ली।

(२) श्री प्रेम अहूजा, आई०एफ०एस० (इण्डियन फारेन सर्विस)।

(३) श्री जगदीशप्रसाद शर्मा, बैंक अध्यक्ष।

(४) श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

(५) श्री सतीशकुमार वेदालंकार।

(६) जस्टिस चन्द्रप्रकाश, अवकाशप्राप्त न्यायमूर्ति, इलाहाबाद उच्च न्यायालय।

(७) डा० पांड्या, निदेशक ब्रह्मवर्चस्व शोध संस्थान, हरिद्वार।

(८) कमोडोर श्री सत्यवीर, सलाहकार वि०वि० अनुदान आयोग, नई दिल्ली।

(९) श्री आर०एस० चितकारा, भूतपूर्व निदेशक यूनिवर्सिटीज, भारत सरकार नई दिल्ली।

उक्त महानुभावों ने संग्रहालय के विषय में प्रशंसात्मक टिप्पणियां दी हैं। साथ ही संग्रहालय के विकास आदि हेतु कुछ सुझाव प्राप्त हुए है, जिन पर संग्रहालय विशेषरूप से जागरूक है।

सामान्यत. संग्रहालय दर्शकों के लिए प्रातः १० बजे से साय ४ बजे तक खुला रहता है। गर्मियों मे गर्मी की स्थिति को देखते हुए, दर्शकों की सुविधा के अनुसार प्रातः ७ बजे से १ बजे तक भी कर दिया जाता है। सग्रहालय मे विभिन्न पदों पर निम्न पदाधिकारी कायरत है :

१. निदेशक	डा० जबरसिंह सेगर
२. सग्रहाध्यक्ष	श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव
३. सहायक सग्रहाध्यक्ष	श्री सुखवीर सिंह
४. सग्रहालय सहायक	श्री बृजेन्द्रकुमार जैरथ
५. लिपिक	श्री बालकृष्ण शुक्ल
६. गैलरी अटेण्डेन्ट	श्री रमेशचन्द्र पाल
७. भृत्य	श्री ओमप्रकाश
८. चौकीदार	श्री वासुदेव मिश्र
९. माली	श्री गुरुप्रसाद
१०. सफाई कर्मचारी	श्री फूलसिंह

वर्तमान सत्र में संग्रहालय के अधिकारियों के निम्न कार्य उल्लेखनीय हैं :

निदेशक

१. आल इण्डिया म्यूजियम कॉफ्रेन्स भोपाल के अधिवेशन में ८ से १० जनवरी में सम्मिलित हुए एवं वहाँ म्यूजियम आउट रिच प्रोग्राम एडल्ट एजूकेशन के माध्यम पर पेपर पढ़ा।

२. 'पुरातत्व संग्रहालय में श्रद्धानन्द वीथिका' नामक लेख 'प्रह्लाद' पत्रिका के संग्रहालय विशेषांक में प्रकाशित हुआ।

३. एक्सप्लोरेशन आदि कार्य में लालढांग, पाण्डुस्रोत एवं कालसी आदि स्थानों का सर्वेक्षण किया।

४. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के तत्वावधान मे ११ से १४ अक्टूबर तक आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार 'प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन' में अपना सक्रिय योगदान दिया।

संग्रहाध्यक्ष

१. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के तत्वावधान में स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों के सर्वेक्षणकार्य में सहयोग किया।

२. इस सत्र मे निम्नलिखित लेख प्रकाशित हुए :

(अ) आर्य समाज के सजग प्रहरी श्री सोमनाथ मरवाह, गुरुकुल पत्रिका वार्षिकोत्सव एवं दीक्षान्त विशेषांक, अप्रैल-मई १९८७, पृष्ठ १९-२४।

(ब) वाल्मीकीय रामायण में वर्णित गुप्तचर व्यवस्था, गुरुकुल पत्रिका, अंक ३-४, जून १९८७, पृष्ठ ५-१२।

(स) भारतीय मृण्मूर्तियाँ एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय मृण्मूर्ति संग्रह, प्रह्लाद सग्रहालय विशेषाक, जुलाई से सितम्बर १९८७, पृष्ठ २२ से २७।

(द) आर्य समाज के कर्मठ व्यक्तित्व—श्री सोमनाथ मरवाह, भाग-१, आर्य मर्यादा अंक, जुलाई १९८७।

(ञ) आर्य समाज के कर्मठ व्यक्तित्व—श्री सोमनाथ मरवाह, भाग-२, आर्य मर्यादा अंक, अगस्त १९८७।

इसके अतिरिक्त प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के तत्वावधान में ११ से १४ अक्टूबर, १९८७ तक आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार 'प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन' में सक्रिय योगदान दिया तथा सिन्धु सभ्यता में स्थानीय स्वशासन की अवधारणा पर लेख प्रस्तुत किया।

सहायक संग्रहाध्यक्ष

सहायक सग्रहाध्यक्ष के इस वर्ष निम्न लेख प्रकाशित हुए :

१. 'गुरुकुल संग्रहालय में सुरक्षित पाषाण प्रतिमायें', प्रह्लाद संग्रहालय विशेषांक, पृ० ३१-३८।

२. 'गुरुकुल सग्रहालय की मुद्रा वीथिका', प्रह्लाद संग्रहालय विशेषांक, पृ० ४८-५०।

इसके अतिरिक्त 'पुरातत्व संग्रहालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की पाषाण मूर्तियों तथा मृण्मूर्तियों का अध्ययन' विषय पर अपना शोधप्रबन्ध गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय में शोध उपाधि हेतु प्रस्तुत किया। प्राचीन भारतीय इतिहास, सस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा ११ से १४ अक्टूबर १९८७ में 'प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन' विषय पर आयोजित सेमिनार में सक्रिय योगदान दिया।

संग्रह-सहायक

संग्रह-सहायक श्री वृजेन्द्रकुमार जैरथ का इस वर्ष एक लेख 'मृदिकापात्र संग्रह' प्रह्लाद के सग्रहालय विशेषांक मे प्रकाशित हुआ।

प्राचीन भारतीय संस्कृति, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग में आयोजित सेमिनार में अपना सक्रिय योगदान दिया।

—डा० जबरसिंह सेंगर
निदेशक

अंग्रेजी विभाग

विभागीय प्राध्यापक—

(१) डा० राधेलाल वार्ष्णेय, एम०ए०, पी-एच०डी०, पी०जी०सी. टी०ई०, डिप०टी०ई० (सी०आई० एफ०एल०), प्रोफेसर एवं अध्यक्ष।

(२) श्री सदाशिव भगत, एम०ए०, रीडर।

(३) डा० नारायण शर्मा, एम०ए०, पी-एच०डी०, रीडर।

(४) डा० श्रवणकुमार, एम०ए०, एम०फिल०, पी-एच०डी०, प्रवक्ता।

(५) डा० अम्बुजकुमार शर्मा, एम०ए०, एम०फिल०, पी-एच०डी०, प्रवक्ता।

विभागीय गतिविधियाँ तथा अनुसन्धान में प्रगति—

विभाग में एम०ए० तथा पी-एच०डी० तक अध्ययन की व्यवस्था है। एम०ए० प्रथम वर्ष में ५० प्रतिशत अंक प्राप्त होने पर, द्वितीय वर्ष में लघुप्रबन्ध (Dissertation) लेने की तथा दोनों ही वर्षों में मौखिक परीक्षाओं का प्रावधान है। विभाग में वर्तमान समय में पांच में से चार प्राध्यापक पी-एच.डी. हैं, तथा अन्य एक डाक्टरेट उपाधि हेतु शोध-कार्य में संलग्न हैं और शीघ्र ही डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर लेंगे।

विभाग में भाषा-विज्ञान प्रयोगशाला का भी विकास किया गया है।

विभाग में अनुसन्धान की विशेषता यह है कि इसमें भारतीय आंग्ल-साहित्य (Indo-English) तथा भारतीय विचार और विषयों (Indian thoughts and themes) एवं तुलनात्मक साहित्य (Comparative literature) को प्राथमिकता दी जाती है। इस समय विभाग के विभिन्न अध्यापकों के अधीन लगभग १२ शोधार्थी शोध कर रहे हैं। कुछ अन्य अभ्यार्थियों के अनुसन्धान हेतु आए हुए प्रस्ताव और आवेदन-पत्र विभाग की रिसर्च डिग्री कमेटी ने अस्वीकृत कर दिये थे। अंग्रेजी विभाग की ओर से अनुसन्धान की उन्नति हेतु पुस्तकालय में नवीन पुस्तकें तथा अनुसन्धान-पत्रिकाएँ एवं सन्दर्भ-ग्रन्थ भी मँगवाए गये हैं।

गत वर्ष अंग्रेजी विभाग में एक त्रैमासिक दक्षता प्रमाण-पत्र कोर्स भी प्रारम्भ किया गया। इस कोर्स का मुख्य उद्देश्य अग्रेजी बोलना सिखाना है।

इस वर्ष विभाग में रिसर्च डिग्री कमेटी तथा बोर्डस् ऑव स्टडीज् की बैठकें हुईं।

विभाग में अनेक विद्वानों के भाषण भी हुए। मुख्य रूप से प्रो० टी.आर. शर्मा का "कैथारसिस" महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों ने भी सेमिनारों में पेपर पढ़े।

विभागीय शिक्षकों के व्यक्तिगत कार्य-विवरण—

(१) डा० राधेलाल वार्ष्णेय—

विभागाध्यक्ष डा. राघेलाल वार्ष्णेय ने १९८४ में सोवियत संघ की यात्रा की। मास्को और लेनिनग्राद के विश्वविद्यालयों तथा उच्च-संस्थानों में भाषण दिए। यू.जी.सी. समर इन्स्टीट्यूट इंगलिश में उच्चस्तर का कार्य करने के कारण यू.जी.सी. फैलोशिप प्राप्त की। रोटरी डिस्ट्रिक्ट ३१० मे अंग्रेजी निबन्ध प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान तथा शील्ड प्राप्त की। लगभग १०० पुस्तकें, ५० लेख और कविताएँ प्रकाशित। अनेक पुस्तकों की समीक्षा लिखी। उच्चस्तरीय सम्मेलनों का संचालन किया। वैदिक-पाथ के सम्पादन तथा प्रशासनिक कार्यों मे सहयोग। अनेक साहित्यिक सम्मेलनों, संगोष्ठियों, टीचर्स ट्रेनिंग सम्मेलनों में सक्रिय योगदान तथा अंग्रेजी प्राध्यापकों को प्रशिक्षण एवं विभिन्न रिपोर्ट आदि का लेखन-सम्पादन।

परीक्षाध्यक्ष के रूप मे कार्य करके परीक्षाओं को सम्पन्न कराया। साथ ही "वैदिक-पाथ" के सम्पादन में सहायता प्रदान की। वार्षिक-विवरणी का सम्पादन किया। विश्वविद्यालय की वार्षिक-विवरणी का अंग्रेजी सारांश तैयार किया। यू.जी.सी. की विजिटिंग कमेटी के लिए "A View for Review" लिखा। विश्व-पुस्तक मेले का भ्रमण किया और अंग्रेजी साहित्य पर विश्वविद्यालय हेतु पुस्तकों का चयन किया।

(क) शोध निर्देशन—

निम्न शोधार्थियों को विभिन्न विषयों पर शोध करा रहे हैं:

१ – पी०एस० नेगी — "एलीनेशन इन द पोइट्री ऑव कीट्स"

२ – ए० गुप्ता — "एक्सप्रेसिनिज्म एण्ड रिअलिज्म इन द प्लेज़ ऑव टिनैसी विलियम्स"

३—पी० चौधरी — "इमेजरी इन द प्लेज़ ऑव क्रिस्टोफर फ्राई"

४—ए० मगन — "द थीम ऑव एलीनेशन इन द पोइट्री ऑव बाइरन।"

५—राका गुप्ता — "मिस्टिसिज्म इन द पोइट्री ऑव श्री अरविन्दो"

६—एन०एल० शर्मा — "नेचर इन इन्डो-इंगलिश पोइट्री विद स्पेशल रैफरेन्स टु श्री अरविन्दो।"

७—आशा सरदाना — "द इनफ्लूअन्स ऑव द वेदाज़ आन श्री अरविन्दोज सावित्री"।

८—इस वर्ष आर.डी.सी. ने दो अन्य शोधार्थियों के शोध-विषय भी स्वीकृत कर दिए हैं। एक छात्र ने इस वर्ष डा० वार्ष्णेय के निर्देशन मे लघु-प्रबन्ध प्रस्तुत किया।

(ख) **कान्फ्रेंस तथा व्याख्यान—**

१—मेरठ विश्वविद्यालय में यू.जी.सी. कान्फ्रेंस में "द टीचिंग ऑव इंगलिश इन रसिया" पर व्याख्यान दिया।

२—रुड़की विश्वविद्यालय में यू.जी.सी. सेमिनार में "ए लिंगविस्टिक एप्रोच टु ट्रांसलेशन" नामक पेपरवाचन।

(ग) **लेखन, सम्पादन, प्रकाशन—**

प्रकाशित पुस्तकें :

१. मेजर मूवमैंन्टस इन इंगलिश लिट्रैचर।

२. मूवमैन्टस एण्ड ट्रेन्ड्स इन इंगलिश लिट्रेचर।

श्री सदाशिव भगत—रीडर।

(क) एक शोधार्थी स्वामी दयानन्द तथा अरविन्दो पर तुलनात्मक शोध कर रहा है।

(ख) अवध विश्वविद्यालय के अंग्रेजी अनुसन्धान समिति की बैठकों में भाग।

(ग) रुड़की विश्वविद्यालय में "कल्चरल इन्टीग्रेशन एण्ड ट्रांसलेशन" नामक सेमिनार में भाग लिया।

(घ) विश्व-पुस्तक मेले का भ्रमण।

(३) डा० नारायण शर्मा—रीडर।

(क) चार शोध-विद्यार्थियों को पी-एच.डी. करा रहे हैं। इनके विषय टैगोर के काव्य में रहस्यवाद, राजा राउ की उपन्यास-कला एवं अग्रेजी और भारतीय कवियो की अंग्रेजी कविता में स्वतन्त्रता, समानता और सौहार्द्र की भावनाओं से सम्बन्धित हैं।

(ख) विश्वविद्यालय तथा कालिज स्तर के सेमिनारों मे भाग लिया।

(ग) निम्नलिखित लेख प्रकाशित होने वाले हैं :

१ -रिद्म एण्ड इमेजरी इन द पोइट्री आॅव श्री अरविन्दो।

२—गीता एण्ड द पोइट्री आॅव श्री अरविन्दो।

३—श्री अरविन्दोज कान्सेप्ट आॅव ओवरहैड पोइट्री।

(४) डा० श्रवणकुमार शर्मा – प्रवक्ता।

(क) श्री अरविन्दो पर एक लेख प्रकाशित।

(ख) रुडकी में बी.एस.एम. कालेज में इंगलिश क्रिटीसिज्म पर हुई कान्फ्रेन्स में भाग लिया और आर्नल्ड पर पेपरवाचन किया।

(ग) अन्य विश्वविद्यालयीय तथा कालेज स्तर की कान्फ्रेन्स तथा सेमिनारों में भाग लिया।

(घ) लेखों का प्रकाशन।

(५) डा० अम्बुज शर्मा—प्रवक्ता।

(क) सभी विभागीय गतिविधियो मे योगदान।

(ख) मुल्कराज आनन्द पर शोध-प्रबन्ध को प्रकाशित कराने के प्रयत्न।

(ग) रुडकी में बी एस.एम. कालेज में इंगलिश क्रिटीसिज्म पर हुए सेमिनार में भाग लिया।

(घ) एक लेख प्रकाशित।

(ङ) खेलनिदेशक के रूप में कार्यरत।

—डा० आर०एल० वार्ष्णेय
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष

हिन्दी विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का यह सौभाग्य है कि इसके स्थापनाकाल में शाहपुरापीठ पर तुलनात्मक हिन्दी आलोचना के जन्मदाता आचार्य पद्मसिंह शर्मा प्रतिष्ठित रहे। हिन्दी के प्रख्यात वैयाकरण और भाषाशास्त्री आचार्य पण्डित किशोरीदास वाजपेयी ने भी कुछ समय यहाँ हिन्दी अध्यापन का कार्य किया। विश्वविद्यालय का दर्जा पाने के बाद विश्वविद्यालय के संस्थापक-अध्यक्ष ने मध्यकालीन साहित्य सम्बन्धी शोधकार्य से इसका गौरव बढाया। अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान तथा शैलीविज्ञान के विशेषज्ञ डा० सुरेशकुमार विद्यालंकार भी इस विभाग के साथ संलग्न रहे। गुरुकुल के विद्यार्थियों में प्रसिद्ध साहित्यकार यशपाल, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, अभयदेव विद्यालंकार तथा डा० हरिवंश कोछड ने जहाँ हिन्दी की उल्लेखनीय सेवा की वहाँ हिन्दीप्रचार और लेखन के क्षेत्र मे डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया। सम्प्रति यहाँ के हिन्दी विद्यार्थी उच्च शिक्षणा यों में हिन्दी अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। हिन्दी विभाग की उपलब्धियाँ उल्लेखनीय है।

विभागीय प्राध्यापक :

(१) डा० विष्णुदत्त राकेश, एम०ए०, पी-एच०डी०, डी०लिट्०
—प्रोफेसर एव अध्यक्ष

(२) रिक्त —रीडर

(३) डा० ज्ञानचन्द्र रावल, एम०ए०, पी-एच०डी०—प्रवक्ता

(४) डा० भगवानदेव पाण्डेय, एम०ए०,पी-एच०डी०—प्रवक्ता

(५) डा० संतराम वैश्य, एम०ए०, पी-एच०डी०—प्रवक्ता

इस वर्ष नियमित अध्यापन तथा अनुसंधान के अतिरिक्त विभाग के प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने हिन्दीप्रचार तथा लेखनकार्य में भी रुचि ली। विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय में आयोजित भाषण-प्रतियोगिता में भाग लिया। हिन्दी-दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की योजना के तहत श्री अश्विनीकुमार, वरिष्ठ अनुसंधान सहायक, निदेशालय के नेतृत्व में अहिन्दीभाषी क्षेत्र के हिन्दीअध्येता विद्यार्थियों का एक दल

विश्वविद्यालय में अध्ययनयात्रा के लिए आया। मद्रास, आसाम, बंगाल, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश और महाराष्ट्र के विद्यार्थियों के इस त्रिदिवसीय शिविर में जहाँ उनकी सर्जनात्मक क्षमता का जायजा लिया गया वहाँ उनकी हिन्दी अध्ययन सम्बन्धी जिज्ञासाओं और कठिनाइयों का समाधान भी किया गया। श्री कुलसचिव डा० अरोड़ा ने शिविर की सफलता में पूर्ण सहयोग दिया।

लखनऊ विश्वविद्यालय के आचार्य एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० सूर्य प्रसाद दीक्षित, डी० लिट्० 'भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता' विषय पर हिन्दी विभाग के निमंत्रण पर व्याख्यान देने के लिए पधारे। अध्यक्षता उपकुलपति एवं आचार्य प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार ने की।

जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० नित्यानंद शर्मा का पदार्पण भी विश्वविद्यालय में हुआ। शोधकार्य के लिए इस वर्ष जो विषय स्वीकृत हुए उनमें आर्यसमाज की भूमिका का अध्ययन अपेक्षित समझा गया। फलतः महर्षि दयानन्द का हिन्दी गद्य, आर्यसमाज और भारतेन्दु मण्डल, मैथिलीशरण गुप्त और आर्यसमाज तथा यशपाल और आर्यसमाज विषय अनुसंधान के लिए स्वीकृत हुए।

विभाग की यह योजना है कि हिन्दी प्रचार- प्रसार, साहित्यसृजन और राष्ट्रीय पुनर्जागरण की दिशा में आर्यसमाज और गुरुकुल कांगड़ी के अवदान का शोधस्तरीय मूल्याकन प्रस्तुत किया जाए। विभाग में अब तक लगभग चालीस शोधप्रबध पी-एच०डी० के लिए स्वीकृत हो चुके हैं। 'शोध सारावली' में इस वर्ष इन सभी शोधप्रबंधों का साराश प्रकाशित हो गया है। विभाग इसके लिए प्रेरक मान्य कुलपति प्रो० रामचन्द्र शर्मा के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

शैक्षणिक दृष्टि से विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष डा० विष्णुदत्त राकेश ने मेरठ विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर महाविद्यालय इस्माइल नेशनल कालेज, लखनऊ विश्वविद्यालय तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लिया तथा आधुनिक साहित्य और बदलते हुए जीवन-मूल्य, रीतिकाल का पुनर्मूल्यांकन तथा मैथिलीशरण गुप्त और राष्ट्रीयता विषय पर व्याख्यान दिए। शिवानन्द शताब्दी राष्ट्रीय संगोष्ठी, ऋषिकेश तथा प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन संगोष्ठी, गुरुकुल कांगड़ी में भी व्याख्यान दिए।

डा० राकेश ने इस वर्ष 'वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाजदर्शन' ग्रंथ का

सम्पादन किया। इसका विमोचन दीक्षान्त-समारोह में हुआ। शोधपत्रिकाओं और साहित्यिक ग्रन्थों में निबंध प्रकाशित हुए। 'हिन्दू धर्म विश्वकोश' लेखन की परामर्शदातृ समिति में भाग लिया।

विभाग के अन्य प्राध्यापकों ने भी लेख लिखे तथा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठियों मे भाग लिया।

—डा० विष्णुदत्त राकेश
प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष

विज्ञान महाविद्यालय

विज्ञान महाविद्यालय की स्थापना १ अगस्त १९५८ को भारत के प्रधानमन्त्री स्वर्गीय पण्डित श्री जवाहरलाल नेहरू के करकमलों द्वारा हुई थी। पिछले २९ वर्षों में इस संस्था ने इन्जीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर, मिलिटरी के आफिसर और पी०सी०एस० अफसर तथा उच्चकोटि के वैज्ञानिक उत्पन्न किये हैं, जो देशसेवा में संलग्न है।

विज्ञान महाविद्यालय में इस समय २३ शिक्षक तथा २४५ छात्र बी०एस०सी० तथा एम०एस-सी० में अध्ययनरत हैं। योग्यता तथा प्रतिभा की पूरी जाँच करके ही छात्रों को प्रवेश दिया जाता है।

भारत सरकार से अनुमोदित हिमालय प्रोजेक्ट योजना, एन०एस०एस०, विज्ञान महाविद्यालय के शिक्षको की देख-भाल में चल रही हैं। हाकी, क्रिकेट, वालीबाल, बैडमिन्टन आदि खेलों मे यहाँ के छात्र अग्रणी है। साँस्कृतिक कार्यक्रमों में भी यहाँ के छात्र अग्रणी हैं।

जौलाई १९८८ से कम्प्यूटर कोर्स, बी०एस-सी० में भौतिक विज्ञान, गणित एवं कम्प्यूटर साइंस के रूप में तथा कम्प्यूटर साइंस में पी०जी० डिप्लोमा शुरु हो रहा है। इससे विज्ञान महा विद्यालय आधुनिक युग की ओर बढ़ने की तैयारी कर रहा है।

—एस० सी० त्यागी
प्रिंसिपल

गणित विभाग

(१) अध्यापक :

एस०सी० त्यागी, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
एस० एल० सिंह, प्रोफेसर
वी० पी० सिंह, रीडर
वी० कुमार, रीडर
एम० पी० सिंह, प्रवक्ता
हरबंशलाल, प्रवक्ता

* उमेशचन्द्र गैरोला, प्रवक्ता (१२ अगस्त १९८७ से १५ मई ८८ तक ।

* डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, रीडर के कुलसचिव पद पर कार्यरत होने के कारण अवकाश रिक्ति में तदर्थ नियुक्ति ।

(२) छात्र संख्या :

(क) बी.एस-सी. (भाग एक एवं दो)	:	१३९
(ख) विद्यालंकार	:	०१
(ग) एम.एस-सी.	:	१२
(घ) शोध छात्र (पी-एच.डी. उपाधि हेतु)	:	०३

(३) छात्रों की गणितीय कठिनाइयाँ :

छात्रों की गणित सम्बंधी कठिनाइयों को विभागीय अध्यापकों द्वारा दूर किया जाता है तथा गणित विषय में रुचि लेने के लिए उन्हे प्रेरित किया जाता है।

(४) शोध छात्रों को समय देना :

शोधछात्र लगन से कार्य करते हैं तथा उनको नियमित समय दिया

जाता है। शोध निर्देशक एवं विभाग के अन्य अध्यापकों के बीच शोधछात्रों को सेमिनार देने के लिए प्रेरित किया जाता है तथा सेमिनार देने से उनका कार्य सहज होता है।

(५) विभागीय अध्यापकों द्वारा शोध-कार्य :

विभाग के अध्यापकों द्वारा प्रकाशित/प्रकाशनार्थ स्वीकृत शोध-पत्रों का विवरण—

1. S.L Singh and Virendra Arora : Fixed point theorems for family of mappings, Lusan Kyo. Math. J. 3(1987).

2. S.L. Singh : Contractors and fixed points (joint with J.H.M. Whitfield), Colloq. Math (1987/88).

3. S.L. Singh : Fixed point theorems for expansion mappings on probabilistic metric spaces (joint with B.D. Pant and R.C. Dimri), Honam Math. J. I. (1987), 77-81.

4. S L. Singh : Coincidence and fixed point theorems for family of mappings on Menger spaces and extension to uniform spaces (joint with B.D. Pant) Mathematica Japonica, 33 (1988).

5. एस०एल० सिंह एवं वी० कुमार : उपगामी क्रमविनिमयी प्रतिचित्रणों हेतु २-दूरीक समष्टि में एक स्थिर बिंदु प्रमेय, विज्ञान परिषद् अनुसंधान पत्रिका, जुलाई (१९८७)।

6. एस०एल० सिंह एवं वी० कुमार : तदैव II, तदैव (१९८७)।

7. Harbansh Lal : On multi-input bi-tandum queue modelling (joint with A.D. Heydari), Pure Appl. Math. Sci. 25 (1987).

(६) विभागीय अध्यापकों के शोध-प्रबन्ध :

(क) श्री एम.पी. सिंह ने मेरठ विश्वविद्यालय की पी-एच०डी० (गणित)

उपाधि हेतु अप्रैल १९८८ में अपना शोधप्रबन्ध "Some Vibration Problems of Isotropic Elastic Plates of Varying Thickness" जमा किया।

(ख) गढ़वाल विश्वविद्यालय की डी०फिल्० (गणित) उपाधि हेतु श्री हरबंशलाल अपना शोधप्रबन्ध ' Some Problems of Queueing and Sequencing Theory" जमा करने की प्रक्रिया में हैं।

(७) अधिवेशन में भाग लेना :

डा० एस०एल० सिंह तथा श्री वी० कुमार एवं श्री हरबंशलाल ने उ०प्र० राजकीय महाविद्यालय एकेडेमिक सोसाइटी के वार्षिक अधिवेशन (ऋषिकेश १९८७) में क्रमशः उपाध्यक्ष तथा सदस्य के रूप में भाग लिया। डा० सिंह ने "प्राचीन भारतीय गणित में शून्य द्वारा विभाजन" पर एक संक्षिप्त वार्ता भी दी।

(८) शोध-पत्रिका का प्रकाशन :

प्रोफेसर एस०सी० त्यागी के निर्देशन में प्रधानसम्पादक डा० एस०एल० सिंह ने "प्राकृतिक एवं भौतिकीय विज्ञान शोध-पत्रिका—Journal of Natural and Physical Sciences" के प्रवेशांक (खण्ड एक, १९८७) का प्रकाशन रिकार्ड समय में किया, जिसका विमोचन श्री कुलाधिपति द्वारा विगत दीक्षान्त समारोह के शुभ अवसर पर हुआ। विषयविशेषज्ञों की राय के अनुसार ही इस प्रवेशांक में कुल नौ शोध प्रपत्र सम्मिलित हैं। उल्लेखनीय है कि शोध-पत्रिका का अन्तर्राष्ट्रीयमानक बनाये रखा गया है और प्रसन्नता की बात है कि शोध-पत्रिका को ISSN (International Standard Serial Number) भी प्राप्त हो गया है। शोध-पत्रिका का प्रवेशांक देश व विदेशों में इस प्रत्याशा में लगभग २५० स्थानों को प्रेषित किया जा रहा है कि विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रकाशित शोध-पत्रिकाएँ पुस्तकालय को विनिमय में प्राप्त हो सकें।

इंस्टीट्यूट आव मैथेमेटिक्स, हनोई (वियतनाम) ने अपनी शोध-पत्रिका विनिमय में भेजने की स्वीकृति प्रदान की है, तथा युगोस्लाविया के तीन शोध-संस्थानों ने तो अपनी शोध-पत्रिकाएँ प्रेषित भी कर दी हैं। विनिमय अभियान को सक्रियतापूर्वक चलाये जाने पर लगभग दो सौ शोध-पत्रिकाओं के विनिमय में प्राप्त करने की आशा की जा सकती है।

(९) हिन्दी भाषा में गणितीय शोध-प्रकाशन :

हिन्दी भाषा में गणितीय शोध-कार्य का प्रकाशन प्रायः मुश्किल माना जाता है। शोध-पत्रिका में विज्ञान एवं गणित के शोध-पत्रों को हिन्दी भाषा में प्रकाशित किये जाने का प्रावधान रखा गया है। विभाग में कार्यरत दो शोध-छात्रों के अतिरिक्त श्री विजयेन्द्र कुमार अपना शोध-कार्य हिन्दी में प्रकाशित कर रहे हैं।

—प्रोफेसर सुरेशचन्द्र त्यागी
अध्यक्ष

भौतिकविज्ञान विभाग

भौतिकविज्ञान विभाग का निर्माण यू. जी. सी. से प्राप्त अनुदान से हुआ। विभाग में २ रीडर तथा २ प्रवक्ता कार्य कर रहे हैं। एक प्रवक्ता की स्वीकृति यू.जी.सी. ने पिछले वर्ष दे दी थी। दो प्रयोगशाला—बी.एस-सी. प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष, एक अध्यक्ष कमरा, एक स्टाफ रूम तथा दो श्याम-प्रकोष्ठ हैं। बी.एस-सी के क्रियात्मक कार्य के लिए कोर्स सम्बन्धी, बी०एस-सी. प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के लिए सभी उपकरण विद्यमान हैं। बी.एस-सी. के लिए अधिकतर पुस्तकें यू.जी.सी. (Dev) ग्रान्ट से खरीदी गई हैं। एक Colour T.V., U. G. C अनुदान से भौतिकी विभाग द्वारा खरीदा गया। इससे B Sc. के विद्यार्थियों को U G.C. प्रोग्राम से बहुत लाभ पहुँच रहा है।

भौतिक विज्ञान में बी.एस-सी. तृतीय वर्ष खोलने का प्रयास जारी है। आशा है कि अगले सत्र में दो लैब एवं उपकरण खरीदने की स्वीकृति मिलने पर बी.एस-सी. तृतीय वर्ष भौतिक विज्ञान की कक्षाएँ प्रारम्भ कर दी जायेगी।

भावी योजना—

(१) भौतिक विभाग में Post Graduate कक्षाएँ चालू करना।

(२) भौतिक विज्ञान विभाग में Research Programme शुरु करना।

(३) Project Work बी.एस-सी. तृतीय वर्ष के लिए एक प्रयोगशाला स्थापित करना।

स्टाफ -

(१) प्रो० हरिशचन्द्र ग्रोवर, रीडर एवं अध्यक्ष।

(२) प्रो० बी.पी. शुक्ल, रीडर।

(३) डा० राजेन्द्रकुमार अग्रवाल, प्रवक्ता

(४) डा० परमानन्द पाठक, प्रवक्ता

(५) रिक्त, प्रवक्ता

(६) श्री प्रमोदकुमार शर्मा, प्रयोगशाला सहायक

(७) श्री ठकुरसिंह, लैब ब्याय

(८) रिक्त, लैब ब्याय

सत्र १९८७-८८ में भौतिकविज्ञान विभाग में बी.एस-सी. प्रथम वर्ष में ७५ तथा द्वितीय वर्ष में ६७ विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया। सत्र का प्रारम्भ विधिवत् हुआ।

पाठ्यक्रम –

(A) बी.एस-सी. प्रथम खण्ड

(1) Mathematical Physics.

(2) Classical and Relativitic Mechanics.

(3) Vibrations and Optics.

(B) बी. एस-सी. द्वितीय खण्ड

(1) Thermodynamics and Statistical Physics.

(2) Electricity and Magnetism.

(3) Atomic Physics and Quantum Mechanics.

(C) बी०एस-सी० तृतीय खण्ड

(1) Physics of Materials/Environmental Physics.

(2 Nuclear Physics.

(3, Electronics.

बी०एस-सी० तृतीय वर्ष में Project Work जो कि पूर्णरूप से व्यवहारिक होगा, विद्यार्थियों के लिए आधुनिक इलैक्ट्रोनिक यत्रों को सीखने का अवसर देगा।

शक-छात्र का अनुपात– १ : ३६

इस वर्ष T. D. C. Course की बी०एस-सी० की प्रथम वर्ष की कक्षाएँ नये पाठ्यक्रम के अनुसार चालू कर दी गई।

विभागीय उपाध्यायों का लेखनकार्य –

विभाग के सभी अध्यापकों के कई लेख विभिन्न पत्रिकाओं एवं रिसर्च जनरल में प्रकाशित हुए हैं। हरिशचन्द्र ग्रोवर, मेरठ विश्वविद्यालय में पी.एच-डी.

कार्य में लगे हुए हैं। इसके साथ ही साथ विज्ञान महाविद्यालय में Integrated Study of Ganga में P.I. के रूप में कार्य कर रहे हैं। प्रो० बी०पी० शुक्ल ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में मार्च ३, १९८८ में पी०एच-डी० की थीसिस जमा कर दी है। इसके साथ-साथ, १५-३-८८ को रेडियो स्टेशन नजीबाबाद से 'हमारा पर्यावरण' पर Radio talk में भी भाग लिया। डा० परमानन्द प्रकाश ने भी एक U.G.C. Project लिया है तथा उस पर कार्य कर रहे हैं।

परीक्षा परिणाम—

पिछले वर्षों की भाँति १९८६-८७ का परीक्षा परिणाम उत्तम रहा।

—हरिशचन्द्र ग्रोवर
रीडर एवं अध्यक्ष

रसायनविज्ञान विभाग

विभाग में लगभग २०० से अधिक छात्र संख्या रही। बी.एस-सी. व पी.जी. डिप्लोमा कक्षाएँ नियमित रूप से प्रारम्भ की गईं व कोर्स समय में ही पूरे कराये गये। सामान्य / विशिष्ट विभागीय गतिविधियाँ निम्नवत रहीं।

१—पी.जी डिप्लोमा के छात्रों को पी.सी आर.आई. हरिद्वार, डी.रि.लै. उ०प्र०, हरिद्वार तथा एच.पी.एल. गाजियाबाद ले जाकर प्रशिक्षण दिलाया गया।

२—२१-९-८७ को स्व० श्री ओमप्रकाश सिन्हा बलिदान-दिवस मनाया गया।

३—दिसम्बर १९८७ में विज्ञान महाविद्यालय में हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम, कार्टून प्रदर्शनी आदि में डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण, डा० कौशलकुमार व डा० रजनीशदत्त कौशिक ने सह-संयोजक का कार्य किया।

४—डा० कौशलकुमार ने विश्वविद्यालय सुन्दरीकरण का कार्यभार संभाला व १५ अगस्त व २६ जनवरी के समारोहों के आयोजनों में योगदान दिया।

शोध गतिविधियाँ :

१—अ) डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण का एक U.G.C. शोध प्रोजेक्ट चल रहा है। उन्होंने एक अन्य प्रोजेक्ट U.G C. स्वीकृति हेतु भेजा है।

ब) उनके दो शोध-पत्र ग्रीक व कनाड़ा में होने जा रही कान्फ्रेन्सों में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुए।

२—अ) डा० रणधीरसिंह को U.G.C. से एक शोध प्रोजेक्ट "सिन्थेसिस एण्ड इलैक्ट्रोकेमिकल स्टडीज आव मेक्रोसाइक्लिक काम्पलेक्सेज" स्वीकृत हुआ।

ब) उन्होंने एक अन्य शोध प्रोजेक्ट CSIR को भेजा।

स) डा० रणधीरसिंह ने "Industrial Effluents and Pollution Hazards" पर २२–२४ फरवरी, १९८८ को दिल्ली में हुई कान्फ्रेंस मे भाग लिया।

द) उनका एक शोध-पत्र "5th IPMR (अल्बाना वि०वि०)" तथा दूसरा पत्र "XIII International Symposium on Macrocyclic Chemistry (W Germany)" में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुए।

३—डा० रामकुमार पालीवाल ने जोधपुर वि०वि० में हुई Workshop cum Symposium on Polymer Aided Reactions में भाग लिया।

४—डा० इन्द्रायण ने जयपुर में "New trends in Kinetics and Mechanism and role of trace metals" पर हुई कान्फ्रेंस में भाग लिया।

५—अ) डा० रजनीशदत्त कौशिक को यू.जी.सी. से एक शोध प्रोजेक्ट "Kinetic Spectrophotometric identification and determination of organic amino compound of importance in minor amount in industrial effluents" स्वीकृत हुआ। इसकी अवधि दो वर्ष है।

ब) डा० कौशिक का एक शोध-पत्र कनाडा में होने जा रही कान्फ्रेंस में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत हुआ।

अन्य गतिविधियाँ :

१—डा० रजनीशदत्त कौशिक विश्वविद्यालय की शिक्षापटल के सदस्य चुने गये।

२—विभागीय सदस्यों द्वारा निम्नलिखित लेख प्रकाशित किये गए :

अ) "अति सूक्ष्म उपयोगी जीवाणु", डा० रामकुमार पालीवाल, आर्यभट्ट, अगस्त १९८७ (पृ० ३४ से ३६)।

ब) "यूकेलिप्टिस कितना लाभप्रद, कितना हानिकारक" डा० अक्षयकुमार इन्द्रायण, आर्यभट्ट, अगस्त १९८७ (पृ० २८ से ३३)।

स) "संश्लेषित रंगपदार्थों से हानियाँ", डा० रजनीशदत्त कौशिक, आर्य-भट्ट, अगस्त १९८७ (पृ० ३७ से ३९)।

द) "Gurukula System of Education and New Education Policy", Dr. Rajneesh Dutt Kaushik, Proceedings of National Philosophy Conference on Values in Education. 16, 17, 18 May, 1987. p.p. 21 to 23.

—डा० रामकुमार पालीवाल
अध्यक्ष

जन्तुविज्ञान विभाग

वर्तमान सत्र में जन्तुविज्ञान विभाग की उल्लेखनीय गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं :

१—विभाग ने इस वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C.) से छात्रों को पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त करने हेतु रजिस्ट्रेशन करवाने की अनुमति प्राप्त कर ली है। एक विद्यार्थी ने डा० बी०डी० जोशी के शोध-निदेशन में अपनी 'सिनोप्सिस' भी विश्वविद्यालय में जमा की है।

२—सितम्बर १९८७ में विभाग में एक चारदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला [Annual Workshop of the Research Projects of MAB (DOEn)] का आयोजन डिपार्टमेंट आव इनवायरनमेंट, मिनिस्ट्री आव इनवायरनमेंट, फोरेस्ट एण्ड वाइल्ड लाइफ, भारत सरकार के सौजन्य से सम्पन्न हुआ। विभागाध्यक्ष डा० जोशी इस कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक थे।

३—दिसम्बर १९८७ में 'फिश एण्ड देयर इनवायरनमेंट' नामक शोध-पुस्तक का प्रकाशन कराया गया। इस पुस्तक में भारत के ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिकों के शोधपत्र संकलित हैं। इस प्रकाशनकार्य हेतु डी०एस०टी० (भारत सरकार) एवं यू०पी०सी०एस०टी० (उ०प्र० सरकार) से आंशिक अनुदान प्राप्त हुआ था।

४—मार्च १९८७ में 'वन्यजन्तु संरक्षण' नामक विषय पर, छात्रों के ज्ञानवर्धन हेतु एक व्याख्यान का आयोजन कराया गया। यह व्याख्यान अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक डा० आशा सकलानी (गढ़वाल विश्वविद्यालय) के द्वारा दिया गया।

विभागीय प्राध्यापकों का शोध एवं प्रसार कार्य :

प्रो० बी०डी० जोशी (विभागाध्यक्ष)—

डा० जोशी के विभिन्न शोधपत्र कई पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए, जिनका विवरण इस प्रकार है—

1. Changes in some blood values of C. batracus exposed to lead nitrate. Him. J. Env. Zool. 1(1) : 33-36.

2. Sex related hematological values of G. domesticus. Him. J. Env. Zool. 1(2) : 80-83.

3. Cytomorphological classification and key to the identification of circulating blood of freshwater teleost from India. Him J Env. Zool. 1(2) : 98-113.

4. Chemical constituent of gonads during different physiological phases of C batracus. Proc. Natl. Symp. Fish & Env., pp. 110-113.

5. On some hematological values of the fish N. rupicola as affected by a sudden change in its ambient water salinity. Proc. Natl. Symp. Fish & Env., pp 11–15.

6. Blood values of some freshwater fishes under varying ecophysiological and toxic conditions (Abstract). Natl. Symp. on past, present & future of Bhopal lakes. July 1987 (Bhopal).

7. Physio-biochemical alterations in fish-blood under stress (Abstract). X Annual Conf. Ind. Soc. Comp. Ani. Physiol., Dec. 1987 (Hyderabad).

8. Blood values of the freshwater fishes under diseases (Abstract). National Seminar on Aquatic Biol., March, 1988 (Nainital),

9. Effect of Trypanosome infection on some blood value of fishes (Abstract). All India Seminar on Ichthyology, Santiniketan, Nov. 1987.

आमन्त्रित वक्तव्य :

1. "Progess, problem & prospect of an Himalayan Eco-development Project." In : Natl. Seminar on the role of young scientists in Env. Conservation & Management, Oct. '87. मगध विश्वविद्यालय, बोध गया।

2. "On some physiological changes in the blood of fishes under stress". In : Natl. Seminar on recent trend in fish-biology, Dec, '87, मगध विश्वविद्यालय ।

3. "On the effect of stress on some blood constituents of fresh-water fishes." In : Natl. Symp. Threatened Habitat. Jan. '88. मुरादाबाद।

4. Effect of stress on some blood values of freshwater fishes". In : I Conf. current trends in Zool teaching & Res., March '88. लखनऊ।

विविध लेख :

मोटाढाक (कोटद्वार : पौड़ी-गढ़वाल) क्षेत्र का सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण।

रेडियो वार्त्ता (आकाशवाणी नजीबाबाद से) :

१. बड़े-बड़े जलाशयों का उपयोग

१. वनों का महत्व

एम.एस-सी. डिस्संटेशन कार्य :

प्रो० जोशी के सुपरविजन में दो एम०एस-सी० छात्रों ने लघु-शोधप्रबन्ध पर कार्य किया :

1. Isolation & Preliminary Genetic Analysis of Transposon Tn 5 Derivatives of Azospirillum brasilense. —अरविन्द मोहन

2. Haematological studies on some tubercular patients during a short-term period of treatment with special reference to Sex and Age. —अभयकुमार

संपादकीय कार्य :

1. मुख्य संपादक — "Fish & their Environment" (Proc. Natl. Symp. Fish & Env.)

2. मुख्य संपादक — "Himalayan Journal of Environment and Zoology".

3. संपादक — "Journal of Natural & Physical Sciences".

4. एडिटोरियल मेम्बर— आर्यभट्ट

शोध-परियोजनायें/शोध-निदेशन :

डा० जोशी के निदेशन मे D.O.E. और U.G.C. द्वारा प्रदत्त दो शोध-परियोजनाओ का कार्य प्रगति पर है। डा० जोशी के एक शोध-छात्र को इस वर्ष कुमाऊँ विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त हुई है।

डा० टी.आर. सेठ (रीडर) :

डा० सेठ ने वि०वि० एवम् विभाग के क्रिया-कलापों में सक्रिय योगदान दिया। इनके सुपरविज़न मे छात्र महेन्द्रकुमार ने निम्नलिखित लघु शोध-प्रबन्ध पर कार्य किया :

Antimicrobial Effects of Tinospora Cordifolia (Miers).

डा. ए.के. चोपड़ा (रीडर) :

डा० चोपड़ा का प्रकाशन-कार्य निम्नवत है, इनके कई लेख राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय जरनल मे प्रकाशित हुए :

1. Malaria Infection in and around BHEL locality of Hardwar. Him. J. Env. Zool. Vol-I, 118-122.

2. Inflammatory response of the integument to the meta carcarial infection in cold water fish Acta Parasitologica Polanica, 32 : 53-58.

3. Seasonal Variations in population of different nematode of sheep. J. Currt. Bioscience 4, 1-4.

4. Pathogenecity of black spot disease in fins of Schizothorax spp. of Garhwal Himalaya. Proc. Natl. Symp. Fish Env. pp. 46-50.

जनरल आर्टिकल : "उपयोगी मछलियाँ हानिकारक भी"

आविष्कार, (नेशनल रिसर्च डेवलपमेंटल कारपोरेशन) 4, 165-167।

एम.एस-सी. लघु शोध-प्रबन्ध :

छात्र सुनीलकुमार ने डा० चोपड़ा की गाइडेन्स में निम्नलिखित Dissertation पर कार्य किया :

"Some Kinetic properties of Acid-phosphatase Activity in cysts of Giardia lamblia."

कान्फ्रेंस/व्याख्यान/एक्सटेंशन वर्क :

डा० चोपड़ा ने मगध वि०वि० बोध-गया द्वारा आयोजित एक राष्ट्रीय सेमिनार (Natl. Seminar on Recent Trends in Fish-Biology) में भाग लिया व शोध-पत्र प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त अन्य सम्मेलनों/ट्रेनिंग-प्रोग्राम में भी भाग लिया, जिसका विवरण निम्नवत है :

1. "Master Trainers Programme". Lucknow Literacy House. May '87.

2. "NSS Training & Orientation Course". Roorkee Univ. June-July '87

3. "NSS-Camp-Punya Bhumi". December '87

4 "N.S.S. Inter University Youth Festival" Meerut University, 1988.

सम्पादन कार्य :

1. एसोशिएट-एडीटर : फिश एन्ड देयर इनवायरनमेंट (Proc. Natl. Symp. Fish Env.)

2. एसोशिएट-एडीटर : हिमालयन जरनल आव इनवायरनमेंट एण्ड जूलाजी

डा० दिनेश भट्ट :

डा० भट्ट का शोध-पत्र एक अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस (XVIII Intl. Conf Chronobiol. Leiden, The Netherlands) में को-आथर प्रो० फ्रेंस हैल्वर्ग (Director Chronobiology lab. Univ. Minnesota, Minneapolis, USA) द्वारा प्रस्तुत किया गया। इनका दूसरा शोध-पत्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक राष्ट्रीय सम्मेलन के "इन्डोक्रायनोलाजी-सेशन" में प्रेजेन्टेशन हेतु स्वीकृत हुआ। डा० भट्ट का प्रकाशनकार्य इस प्रकार है :

1. Gradual shift in circannual avian body weight rhythm after abrupt reversal of seasonal lighting cycle. Proc. XVIII Intl. Conf Chronobiol. Leiden.

2. Some eco-biological aspects of Homaloptera brucii (Day) endemic to hill streams of Garhwal-Himalayas. Proc. Natl. Symp Fish & Env., pp. 70–75.

3. Effect of pinealectomy on the gonadal cycle of spotted munia. J. Comp. Physiol. A (Springer-Verlag)

एम.एस-सी. लघु शोधप्रबन्ध (Dissertation) :

डा० भट्ट के सुपरविज़न में एक M.Sc. छात्र विजयकुमार ने अपना Dissertation का कार्य किया। टाइटल था :

"Incidence of Protozoan Infection in the Intestine of Humans in Hardwar."

सम्पादन :

1. एसोशिएट एडीटर : "फिश एण्ड देयर इनवायरनमेंट" (Proc. Natl. Symp. Fish & Env.)

2. मैनेजिंग एडीटर : "हिमालयन जरनल आव इनवायरनमेंट एण्ड जूलाजी"

विभाग के सभी प्राध्यापकों ने विश्वविद्यालय द्वारा समय-समय पर सौंपे गये सभी कार्यों को निष्ठापूर्वक निभाया।

वर्तमान में विभाग मे निम्नलिखित स्टाफ कार्यरत है :

शिक्षक वर्ग :

(1) प्रो० बी०डी० जोशी, विभागाध्यक्ष

(2) डा० टी०आर० सेठ, रीडर

(3) डा० ए०के० चोपडा, रीडर

(4) डा० दिनेश भट्ट, प्रवक्ता

शिक्षकेत्तर कर्मचारी :

(1) श्री हरिश्चन्द्र, लैब सहायक

(2) श्री प्रीतमलाल, लैब परिचारक

छात्र-संख्या इस प्रकार रही :

(1) एम०एस-सी० प्रथम सेमेस्टर	—	१०
(2) एम०एस-सी० द्वितीय सेमेस्टर	—	८
(3) एम०एस-सी० तृतीय सेमेस्टर	—	८
(4) बी०एस-सी० प्रथम वष	—	२८
(5) बी०एस-सी० द्वितीय वर्ष	—	२६

—प्रो० बी०डी० जोशी

विभागाध्यक्ष

हिमालय पारिस्थितिकी विकास शोध परियोजना

जन्तुविज्ञान विभाग

इस परियोजना ने अप्रैल १९८८ में तीन वर्ष की परियोजना-अवधि पूर्ण कर ली है तथा वर्तमान में यह तीन माह के विस्तरण काल में है। वर्ष १९८७-८८ में इस परियोजना ने डा० बी०डी० जोशी, अध्यक्ष जन्तुविज्ञान विभाग के निर्देशन में निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त कीं :

१. सितम्बर १९८७ में एक १५ दिवसीय वृक्षारोपण शिविर का आयोजन गुरुकुल विद्यालय कण्वाश्रम के शकर आश्रम फार्म में किया गया, जिसमें उक्त विद्यालय के ३० विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा विभिन्न प्रजातियों के १५,००० पौधों का रोपण किया।

२. लगभग १० विभिन्न प्रजातियों के ६१,००० से अधिक पौधों का रोपण हेतु, कण्वघाटी व आस-पास के निवासियों में निशुल्क वितरण किया गया।

३. ग्राम उदयरामपुर का सामाजिक, आर्थिक सर्वेक्षण किया गया, जिसमें बहुत दिलचस्प व उल्लेखनीय तथ्य प्राप्त हुए।

४. ग्राम कांगड़ी, चिड़ियापुर वनक्षेत्र, जाफराबाद वनक्षेत्र तथा कण्व घाटी के विभिन्न ८० स्थानों से मृदा परीक्षण किया गया, तथा उसकी उपजाऊ-शक्ति तथा संरचना का अध्ययन किया गया।

५. कण्व घाटी के कृषि के हानिकारक कीटों का अध्ययन किया गया, जिससे पता चला कि वहाँ लगभग २५ कीट प्रजातियाँ सामान्यतः मिलती हैं, जिनमें से १९ प्रजातियाँ कृषि/वन उपज हेतु अति हानिकारक है। विभिन्न कीट-नाशक रसायनों का प्रयोग करके प्रभावी मात्रा ज्ञात की गयी, जिसे परियोजना की तृतीय वार्षिक प्रगतिआख्या में सम्मिलित कर पर्यावरण मन्त्रालय को भेजा है।

६. मालिनी नदी के जलागम क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया, जिसमें वनों का सर्वेक्षण भी सम्मिलित है। इससे अत्यधिक उपयोगी तथ्य प्राप्त हुए।

७. मालिनी नदी के उद्गम से २५ किमी० तक कुछ स्थान ऐसे पाये गये जहाँ पर न्यूनतम व्यय से शासन द्वारा बाँध बनवाकर बाढ़ तथा सिंचाई की समस्या का हल किया जा सकता है।

८. सितम्बर ८७ के वृक्षारोपण शिविर तथा अन्य वितरित पौधों का मार्च १९८८ में सर्वेक्षण किया गया तथा वर्ष के भयंकर सूखे के बावजूद वृक्षारोपण में रोपित पौधों में से ५२ % जीवित पाये गये।

९. परियोजना क्षेत्र के ग्रामवासियों को कुछ मुख्य फसलों हेतु बीजों की उच्च उत्पादक प्रजातियों के बारे में सुझाव दिये गये, जो कि ग्रामीणों द्वारा प्रयुक्त करने पर उपयोगी साबित हुए।

१०. बेहतर उत्पादन हेतु वर्तमान भूमि उपयोग-प्रकार तथा नियोजन का विस्तृत रूप से अध्ययन किया गया। विभिन्न प्रकार के वनों से कार्बनिक प्राप्तियों की मात्रा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिससे बहुत उपयोगी तथ्य प्रकाश में आये।

हम भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय, नई दिल्ली के सामयिक तथा निरन्तर सहयोग हेतु एवं विश्वविद्यालय के कुलपति श्री आर.सी.शर्मा (अवकाशप्राप्त आई.ए.एस.) जिनके संरक्षण में रहकर उपरोक्त लक्ष्य तथा उपलब्धियाँ प्राप्त की, के अत्यन्त आभारी हैं।

—बी०डी० जोशी

निदेशक

वनस्पतिविज्ञान विभाग

इस वर्ष भी विभाग में बी०एस-सी० तथा एम०एस-सी० माइक्रोबायलोजी की कक्षाएँ विधिवत् चलीं। विभाग में निम्नलिखित स्टाफ कार्यरत रहा :

शैक्षणिक :

१. डा० वि० शंकर, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

२. डा० पु० कौशिक, प्राध्यापक

३. डा० गं०प्र० गुप्ता, प्राध्यापक

शिक्षकेत्तर :

४. श्री रुद्रमणि, प्रयोगशाला सहायक

५. श्री चन्द्रप्रकाश, प्रयोगशाला सहायक

६. श्री विजयसिंह, लैब ब्वाय

७. श्री सूरजदीन, माली

एम०एस-सी० के विद्यार्थियों ने निम्नलिखित विषयों पर शोध-निबन्ध प्रस्तुत किए :

I. Supervisor – Prof. V. Shankar

1. Studies on certain physico-chemical and microbiological characters of Ganga & Pond water at Hardwar.
2. Studies on physico-chemical and microbiological characters of Upper Ganga Canal at Hardwar.
3. Studies on physico-chemical and microbiological characters of Sewage at Hardwar.

II. Supervisor—Dr. P. Kaushik

4. Rhizobium-legume activity in vivo and response of

Rhizobium to certain antibectus in vitro.

5. Clinical and mycological study of Dermatophytoses at Hardwar.

6. Studies on Mycorrhizae.

III. Supervisor—Prof. V. Shankar

7. Studies on effect of pesticides on soil microflora.

8. Studies on antimicrobial activity of ocimum sanctum leaves.

9. Physico-chemical and microbiological characters of oxidation-stabilization pond.

विभाग में निम्नलिखित रिसर्च प्रोजेक्ट चलीं/पूरी हुईं :

Title of Project	Principal Investigator	Research Fellows	Scientist
1. Integrated Study of the Ganga (Rs. 9·37 lacs) Govt of India	Dr. V. Shankar	6	1
2. Environmental Biology of Himalayan Orchids (Rs. 2.64 lacs) Govt. of India	Dr. P. Kaushik	2	—
3. Project on Lectins (Rs. 0·5 lac)	Dr. P. Kaushik	1	—

विभाग से निम्नलिखित लेख/रिपोर्ट प्रकाशित हुए :

1. Ganga—Rishikesh to Garhmukteshwar (Final report of Integrated Study of the Ganga, sanctioned by the Govt. of India, Deptt. of Environment/Ganga Project Directorate in 1983) —V. Shankar

2 Ganga and the basin —V. Shankar

3 A brief history of space flight —V. Shankar

4. Editorial on Environment (Arya Bhatt) —V. Shankar

5. Studies on some microbiological aspects of river Ganges at Hardwar & Garhmukteshwar (Accepted for publication, K.U. Res. Jn.) —V. Shankar & G.P. Gupta

6. Influence of IDPL effluent on water quality of Ganga at Shyampur Khadir (communicated)
—V. Shankar & G.P. Gupta

7. Studies on diurinal variation in abiotic factors in relation to plankton density in Ganga near Motighat at Hardwar. —V. Shankar, et. al.

8. Mycoflora of Ganges water in Rishikesh.
—V. Shankar & G.P. Gupta

9. Lectins and their application (communicated)
—P. Kaushik

10. वन-महोत्सव को सार्थक बनाना होगा। —पी० कौशिक

छात्र-संख्या :

बी०एस-सी०	५४
एम०एस-सी० (माइक्रोबायलोजी)	१८

—प्रो० वि० शंकर
विभागाध्यक्ष

कम्प्यूटर विभाग

हर्ष का विषय है कि इस वर्ष इस विभाग का भवन-निर्माण लगभग पूर्ण हो चुका है। इसके अतिरिक्त यू०जी०सी० द्वारा प्राप्त अनुदान से कुछ सयन्त्र खरीद लिए गए हैं तथा वे सुचारू रूप से कार्य कर रहे हैं। इसके साथ ही "डिपार्टमेंट ऑव इलेक्ट्रानिक्स" से प्राप्त अनुदान से कुछ और संयन्त्र मंगाए जा रहे है, जिनके शीघ्र स्थापित हो जाने की आशा है।

इसी वर्ष सभी भारतीय विश्वविद्यालयों एवं प्रमुख समाचारपत्रों द्वारा "पी०जी० डिप्लोमा इन कम्प्यूटर साइंस" और "इन्टिग्रेटिड कोर्स ऑव कम्प्यूटर साइंस विद अदर सब्जेक्टस् एट बी०एस-सी० लेवल" कोर्स में प्रवेश की सूचना दे दी है और आशा है कि ३० जुलाई १९८८ तक अध्यापनकार्य प्रारम्भ हो जाएगा।

इस विभाग के लिए यू०जी०सी० ने चौदह शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की स्वीकृति प्रदान की है।

स्टाफ :

१. रीडर	एक	रिक्त
२. प्रवक्ता	दो	नियुक्त
३. सिस्टम मैनेजर	एक	रिक्त
४. सिस्टम इंजीनियर	एक	श्री नरेन्द्र पाराशर
५. प्रोग्रामर	दो	नियुक्त
६. कम्प्यूटर आपरेटर	दो	रिक्त
७. की पंच आपरेटर	दो	रिक्त
८. टैक्निकल असिस्टेंट	दो	रिक्त
९. यू.डी.सी./एल.डी.सी.	एक	रिक्त

कम्प्यूटर सिस्टम की इन्सटालेशन तथा उसकी सम्पूर्ण देख-रेख सिस्टम-इंजीनियर श्री नरेन्द्र पाराशर द्वारा सफलतापूर्वक की जा रही है। विभाग

के अन्य सभी कार्य आपके द्वारा सम्पन्न हो रहे हैं। डिप्लोमा कोर्स के लिए स्वीकृति, विभाग की समुचित व्यवस्था के लिए स्टाफ की स्वीकृति और अनुदान आदि को स्वीकृत कराने के लिए श्री नरेन्द्र पाराशर ने विशेष प्रयास किए।

इस वर्ष अप्रैल मास में यू०जी०सी० कन्सल्टेन्ट श्री एस०आर० ठाकुर ने कम्प्यूटर विभाग का निरीक्षण किया, एवं अधिकारियों की एक मीटिंग मे कुछ और सुझाव प्रस्तावित किए जिन पर अमल किया जा रहा है।

—नरेन्द्र पाराशर

पुस्तकालय विभाग

परिचय :

गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरन्तर ८० वर्षों से पोषित यह पुस्तकालय आज वेद, वेदाग, आर्यसाहित्य, तुलनात्मक धर्मसंग्रह एवं मानवीय ज्ञान की विविध शाखाओं पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रन्थों से अलंकृत है। सहस्रों दुर्लभ ग्रन्थों एवं अनेक अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय अनेक भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्यभण्डार को अपने गर्भ में समाहित किये हुए, आर्य संस्कृति की धरोहर के रूप मे विद्याव्यसनियों का केन्द्र बना हुआ है। गुरुकुल कागड़ी पुस्तकालय का स्थान भारत के सर्वाधिक पाँच पुस्तकालयो मे से एक है।

वर्ष १९८७-८८ में लगभग २४,२०० पाठकों ने इस पुस्तकालय को प्रचुर सामग्री का उपयोग किया है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह :

पुस्तकालय का विराट संग्रह अपनी विशिष्टताओं के लिये निम्न प्रकार से विभाजित किया हुआ है :

१. संदर्भ ग्रन्थ, २. पत्रिकासंग्रह, ३. आर्यसाहित्य संग्रह, ४. आयुर्वेद संग्रह, ५. विभिन्न विषयों का हिन्दी-पुस्तक संग्रह, ६. विज्ञान संग्रह, ७. अंग्रेजी साहित्य संग्रह, ८ पं० इन्द्रजी सग्रह, ९. दुर्लभ पुस्तक संग्रह, १०. पाण्डुलिपि संग्रह, ११. गुरुकुल प्रकाशन संग्रह, १२. प्रतियोगितात्मक पुस्तक संग्रह, १३. शोध-प्रबन्ध संग्रह, १४. रूसी साहित्य संग्रह, १५. आरक्षित पुस्तक संग्रह, १६. उर्दू संग्रह, १७. मराठी संग्रह, १८. गुजराती संग्रह, १९. गुरुकुल प्राध्यापक एवं स्नातक प्रकाशन संग्रह, २०. मानचित्र संग्रह, २१ वेद मन्त्र कैसेट संग्रह।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना :

विश्वविद्यालय में पढ़ रहे निर्धन छात्रों के सहायतार्थ विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना का सर्वथा नवीन कार्यक्रम वर्ष १९८३-८४ से प्रारम्भ किया गया था। जिसके अन्तर्गत छात्रों को पुस्तकालय में दो घंटे प्रतिदिन कार्य करने के बदले में पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है। जिससे ये अपनी पढ़ाई का व्यय उठाने में स्वावलम्बी बन सकें। इस वर्ष इस योजना के अन्तर्गत ६ छात्रों को लाभ प्रदान किया गया है।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा :

विश्वविद्यालय के छात्रो को प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने हाल ही मे प्रतियोगितात्मक पुस्तकसंग्रह की स्थापना की है। जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रो को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षाओं से सम्बद्ध १५ पत्रिकाये नियमित आ रही है। इस संग्रह के माध्यम से गुरुकुल के बहुत से छात्र प्रतियोगितात्मक सेवाओं मे सफलता प्राप्त कर रहे है।

फोटोस्टेट सेवा :

विश्वविद्यालय के शोध-छात्रों एवं प्राध्यापकों की सुविधा हेतु फोटोस्टेट की सुविधा वर्ष १९८३-८४ से उपलब्ध हो गई है। पुस्तकालय की कुछ दुर्लभ पुस्तकों को फोटोस्टेट द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है। विश्वविद्यालय के सभी विभागों का लगभग ८४२९-३५ रु० का कार्य अब तक किया गया है। आलोच्य वर्ष में सभी विभागों का ४९९१-५० रु० का कार्य फोटोस्टेट मशीन द्वारा किया गया। शोध-छात्रों को व्यापकरूप में फोटोस्टेट की सुविधा दिये जाने हेतु वर्ष १९८८-८९ में प्लेनपेपर कोपियर "मोदीजीराक्स" भी क्रय किया जा रहा है।

पुस्तकालय कर्मचारी :

इस विराट पुस्तकालय की सुव्यवस्था एवं उचित प्रबन्ध हेतु इस पुस्तकालय में २३ कर्मचारी कार्यरत है। पुस्तकालय-कर्मचारियों का विवरण निम्न प्रकार है।

क्र.सं	नाम	पद	योग्यता
१.	श्री जगदीशप्रसाद विद्यालंकार	पुस्तकालयाध्यक्ष	एम.ए., एम. लाइब्रेरी साइंस, बी.एड., कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग
२.	श्री गुलजारसिंह चौहान	सह-पुस्तकालयाध्यक्ष	एम.ए., बी. लाइब्रेरी साइंस
३.	श्री उपेन्द्रकुमार झा	पुस्तकालय सहायक	एम.ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाणपत्र, योग प्रमाण-पत्र
४.	श्री ललितकिशोर	पुस्तकालय सहायक	एम.ए, पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र
५.	श्री मिथलेशकुमार	पुस्तकालय सहायक	बी.ए, पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र
६.	श्री कौस्तुभचन्द्र पाण्डेय	पुस्तकालय सहायक	इण्टर, पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र, हिन्दी आशुलिपि
७.	श्री अनिलकुमार धीमान	पुस्तकालय सहायक	एम.एस-सी, एम.ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र, आई. जी. डी. बोम्बे, पत्रकारिता विज्ञान
८.	श्री जगपाल सिंह	लिपिक	मध्यमा
९.	श्री रामस्वरूप	लिपिक	इण्टर, पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र
१०.	श्री मदनपाल सिंह	लिपिक	इण्टर, पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र, आई.टी.आई.
११.	श्री हरिभजन	काउन्टर सहायक	मिडिल
१२.	श्री जयप्रकाश	बुक बाइन्डर	मिडिल
१३.	श्री गोविन्दसिंह	बुक लिफ्टर	मिडिल
१४.	श्री घनश्याम सिंह	सेवक	मिडिल
१५.	श्री शशिकान्त	सेवक	मिडिल
१६.	श्री बुन्दू	सेवक	——
१७.	श्री रघुराज सिंह	सेवक	बी.ए.
१८.	श्री शिवकुमार	सेवक	मिडिल

क्र.स.	नाम	पद	योग्यता
१६.	श्री सुशीलकुमार	स्वीपर	——
२०.	श्री लालकुमार कश्यप	लेखक	——
२१.	श्री दीपक घोष	लेखक	एम.ए., पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र, आई.टी.आई
२२.	श्री सुरेन्द्र शर्मा	लेखक	बी.एस-सी , पुस्तकालय विज्ञान प्रमाण-पत्र
२३.	श्री विक्रम शाह	दैनिक	इण्टर
२४.	श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा	दैनिक	हायर सेकेण्डरी

पुस्तकालय कार्यवृत्त एक नजर में :

		१६८६-८७	१६८७-८८
१. पाठकों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग	—	२४,०००	२४,२००
२. भेंटस्वरूप प्रदत्त पुस्तकों की संख्या	—	६१	३६३
३. नवीन क्रय की गई पुस्तकों की संख्या	—	१८३१	१५५३
४. वर्गीकृत पुस्तकों की संख्या	—	१६८६	३५००
५. सूचीकृत पुस्तकों की संख्या	—	१६८६	३२७३
६. पत्रिकाओं की संख्या	—	४५४	४५४
७. पत्रिकाओं की नियमित आपूर्ति हेतु भेजे गये स्मरणपत्रों की संख्या	—	१७०	२०३
८. सजिल्द पत्रिकाओं की संख्या	—	६५७२	७०१६
६. पत्रिकाओं की जिल्दबंदी की संख्या	—	७२	४३४
१०. पुस्तकों की जिल्दबन्दी	—	२११६	१८७३
११. पुस्तकों का कुल संग्रह	—	६७,६१५	६६,४६८
१२. सदस्य संख्या	—	४३६	४६८

प्रगति का आयाम :

१. १६८०-८१ में पुस्तकालय द्वारा कुल ४०४ पुस्तकें क्रय की गई थीं, वहीं वर्ष १६८७-८८ में १५५३ नई पुस्तकें क्रय की गई हैं।

२. वर्ष १९८०-८१ में पुस्तकालय द्वारा मात्र १४८ पत्रिकाएँ मँगाई जाती थीं, वहीं आलोच्य वर्ष में ४५४ पत्रिकाएँ पुस्तकालय द्वारा मँगाई जाती हैं।

३. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के शताब्दि-समारोह के अवसर पर पुस्तकालय द्वारा रोहतक में विशाल पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। उक्त प्रदर्शनी में गुरुकुल के विभिन्न साहित्यसंग्रहों का शताब्दि-समारोह में भाग लेने आये हजारों आर्यबन्धुओं ने अवलोकन किया। 'गुरुकुल विश्वविद्यालय के दीक्षान्त-समारोह के अवसर पर भी पुस्तकालय द्वारा आर्य साहित्य संग्रह एवं स्नातक प्रकाशन संग्रह आदि पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। दीक्षान्त-समारोह के मुख्यअतिथि श्री देशपाण्डे जी ने उक्त प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

४. पुस्तकालय द्वारा पुस्तकालय में उपलब्ध वैदिक साहित्य एवं पाण्डुलिपियों की लगभग ७,००० पुस्तकों की बृहद् बिबिलियोग्राफी भी सस्कृति विभाग, भारत सरकार के सहयोग से तैयार की जा रही है। वाणी प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित की जा रही उक्त पुस्तक का सम्पादन श्री एस.के. श्रीवास्तव एव पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा किया गया।

५. ७वी पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ में पुस्तकालय को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा ४ लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत किया गया था तथा वर्ष १९८८-८९ के लिये ७ लाख रु० का विशेष अनुदान स्वीकृत किया गया है।

६. विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा विश्वविद्यालय में प्रकाशित सभी प्रकाशनों को देश के सभी विश्वविद्यालयों में भेजने का कार्य भी पुस्तकालय द्वारा किया जाता है। इसके अन्तर्गत प्रकाशित लगभग ३००० प्रतियों को देश के सभी विश्वविद्यालयों मे भेजा गया।

७. पुस्तकों की बाइंडिग के कार्य को गतिशील बनाये जाने हेतु पुस्तकालय द्वारा कटिंग मशीन भी क्रय की जा चुकी है।

८. गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत सभी शोध-प्रबन्धों की सारावली पुस्तकालय के सहयोग से "शोध सारावली" के रूप में वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की गई है। उक्त सारावली का सम्पादन डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा, अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग द्वारा किया गया। उक्त पुस्तक के द्वारा शोधछात्रों को अपने शोध-कार्य में काफी सहायता मिल सकेगी।

९. श्रद्धानन्द प्रकाशन केन्द्र द्वारा डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर डा० विष्णुदत्त राकेश, निदेशक, श्रद्धानन्द प्रकाशन केन्द्र के निर्देशन में 'वैदिक साहित्य एवं संस्कृति' नामक ५३० पृष्ठों को एक पुस्तक प्रकाशित की गई है। उक्त पुस्तक के प्रकाशन में पुस्तकालयाध्यक्ष का भी सहयोग रहा।

१०. पुस्तकालय में फर्श, रैक्स एवं फर्नीचर आदि की सफाई हेतु दो डस्टक्लीनिंग मशीने क्रय की गई हैं। उक्त आधुनिक्तम (वैज्ञानिक) मशीनों द्वारा पुस्तकालय में सफाई का कार्य किया जा रहा है।

११. पुस्तकालय की पुस्तकों के केटेलाग कार्ड बनाये जाने हेतु केटेलाग कार्ड डुप्लीकेटर भी क्रय किया गया है जिससे कार्य की गति के काफी अच्छे परिणाम पैदा हो रहे हैं।

—जगदीश विद्यालंकार
पुस्तकालयाध्यक्ष

राष्ट्रीय छात्र सेना

मेजर वीरेन्द्र अरोड़ा के त्यागपत्र देने के पश्चात्, ३ सितम्बर १९८७ को एन०सी०सी० के संचालन का दायित्व विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के प्रवक्ता डा० राकेशकुमार शर्मा को विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा, एन०सी०सी० केयरटेकर इन्चार्ज के रूप में सौपा गया।

विश्वविद्यालय को वर्तमान समय में ५५ छात्रों के प्रशिक्षण की स्वीकृति प्राप्त है। अतः इस वर्ष भी एन०सी०सी० में विश्वविद्यालय के ५५ छात्रों का नियमानुसार पंजीकरण किया गया।

गत वर्षों की भाँति इस वष भी ८ अक्टूबर से १८ अक्टूबर १९८७ तक विश्वविद्यालय के एन०सी०सी० के कैडेट्स ने कोटद्वार मे वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया तथा शिविर के प्रत्येक कार्य में परिश्रम एव समर्पण से सराहनीय योगदान दिया।

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर २६ जनवरी १९८८ के समारोह में माननीय कुलपति कर्नल आर०सी० शर्मा (अवकाशप्राप्त आई०ए०एस०) ने ध्वजारोहण किया। उक्त अवसर पर एन०सी०सी० के कैडेट्स का निरीक्षण करते हुए कर्नल शर्मा ने सलामी ली।

वर्ष ८७-८८ में 'बी' प्रमाणपत्र के लिए १० तथा 'सी' प्रमाणपत्र के लिए ७ कैडेट्स ने परीक्षा दी। परीक्षा-परिणाम की प्रतीक्षा है। 'बी' प्रमाणपत्र की परीक्षा का आयोजन १० फरवरी ८८ को विश्वविद्यालय परिसर में ही किया गया।

वर्ष १९८९ के गणतन्त्रदिवस के लिए विश्वविद्यालय के तीन कैडेट्स—सुनील शर्मा, सुधांशु एवं गिरीश शर्मा का चयन बटालियन स्तर पर हुआ। जिसके फलस्वरूप उक्त कैडेट्स ५ जून से १५ जून के प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने मनेरी (उत्तरकाशी) गये। कैडेट्स का शिविर के प्रत्येक कार्य में प्रशंसनीय योगदान रहा।

डा० राकेशकुमार शर्मा का चयन विधिवत रूप से एन०सी०सी० कमांडिग आफिसर के रूप में दिनांक २४ मार्च १९८८ को हो गया तथा उनको १२ सितम्बर से १० दिसम्बर तक कमीशन के लिये प्रशिक्षण पर जाने की अनुमति विश्वविद्यालय प्रशासन ने प्रदान की है।

—डा० राकेशकुमार शर्मा
केयरटेकर-इंचार्ज

राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत सत्र १९८७-८८ की उपलब्धियाँ निम्न है

१—प्रोग्राम आफिसर डा० ए०के०चोपड़ा ने २५-२६ मई १९८७ को लिटरेसी हाउस, लखनऊ में आयोजित जनसाक्षरता अभियान के अन्तर्गत मास्टर ट्रेनर्स के प्रशिक्षण तथा रुड़की विश्वविद्यालय मे ट्रेनिंग एवं ओरियन्टेशन द्वारा आयोजित प्रशिक्षण मे दिनांक २२ जून से ४ जुलाई '८७ तक भाग लिया।

२—अगस्त माह में राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत सत्र १९८७-८८ के लिए १३१ छात्रो का पंजीकरण किया गया।

३—छात्रों को समय-समय पर राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्यों तथा कार्यक्रमों से अवगत कराया गया।

४—विश्वविद्यालय परिसर में अगस्त माह मे छात्रो द्वारा दो सौ गड्ढे खोद कर उनमे वृक्षारोपण किया गया।

५—जनसाक्षरता अभियान (MPFL) के अन्तर्गत ४८ छात्रों को निरक्षर व्यक्तियों को साक्षर बनाने हेतु दो दिन का प्रशिक्षण दिया गया। प्रत्येक छात्र को लिटरेसी हाउस, लखनऊ से उपलब्ध १ से ५ तक किट्स दी गई। इस सत्र के अन्त तक इन छात्रों द्वारा ७६ निरक्षरों को साक्षर किया गया।

६—समय-समय पर छात्रों द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में सफाई तथा उद्यानों के रख-रखाव का कार्य किया गया।

७—तीन एकदिवसीय शिविरों का आयोजन किया गया। ये शिविर सराय, प्रतीतनगर तथा श्यामपुर गाँवों में आयोजित किए गये। ग्रामीणों के अनेक कार्यो मे सहयोग दिया गया तथा उनकी समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया तथा सामाजिक सर्वेक्षण हेतु आँकड़े एकत्रित किए गये।

८- विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित गोष्ठी, टूर्नामेंट तथा दीक्षान्त-समारोह के आयोजन मे छात्रों ने सहयोग दिया ।

९—छात्रों ने विज्ञान महाविद्यालय द्वारा नशाबन्दी, दहेजप्रथा एवं परिवार नियोजन से सम्बन्धित प्रदर्शनी तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया ।

१०—दस-दिवसीय विशेष वार्षिक शिविर दिनाक २४-१२-८७ से २-१-८८ तक सम्पन्न हुआ । इस शिविर की अवधि मे छात्रों द्वारा निम्न कार्य किए गए :

(अ) ग्राम को मुख्य सड़क से जोड़ने वाले खडन्जे की मरम्मत की गई तथा उसके दोनो ओर बढी हुई बाढ़ को छटाई की गई ।

(ब) ६० किचन साकेट्स, ५ बड़े गड्ढे तथा ४० नालियों का निर्माण किया गया ।

(स) जनसाक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत छात्रों द्वारा नित्य अशिक्षित ग्रामीणों को साक्षर बनाने का प्रयास किया गया ।

(द) ग्रामीणो को प्राथमिक चिकित्सा दी गई तथा रोगियों का मल-परीक्षण किया गया ।

(क) खेतो मे खाद का छिड़काव तथा गेहूँ को बुवाई में ग्रामीणों की सहायता की गई ।

(ख) गाँव के कुओ में दवा डालकर जल को स्वच्छ किया गया ।

(ग) झोपड़ियो के निर्माणकार्य मे कुछ ग्रामीणों की सहायता की गई ।

(घ) ग्रामीणो को परिवार नियोजन, पर्यावरण संरक्षण तथा पशुपालन से सम्बन्धित जानकारी दी गई ।

(च ग्रामीणों को समस्याओ को समझकर, उन्हें दूर करने के उपाय सुझाये गए ।

(छ) राष्ट्रीय सेवा योजना से सम्बन्धित सास्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया जिसमे मद्यनिषेध तथा प्रौढशिक्षा पर लघुनाटिका प्रस्तुत की गई ।

११—छात्रो ने दिनाक २९-२-८८ से २-३-८८ तक मेरठ मे आयोजित उत्तर-प्रदेशीय अन्तर्विश्वविद्यालय युवा महोत्सव मे भाग लिया । छात्र श्री राजेन्द्र सिह, विद्यालंकार (द्वितीय वर्ष) ने वाद-विवाद प्रतियोगिता 'धर्म भारत की एकता में बाधक है' विषय पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया । इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय को सांत्वना पुरस्कार भी प्राप्त हुआ ।

—**डा० ए०के० चोपड़ा**

प्रोग्राम आफिसर

कांगड़ी ग्राम विकास योजना

पिछले अनेक वर्षों के सतत प्रयास एवं परिश्रम से काँगड़ी ग्राम के विकास के कार्य में अब तक निम्नलिखित प्रगति हुई :

१—मिलन-केन्द्र का निर्माण।

२—चबूतरे का निर्माण।

३—जिला विकास अधिकारी, बिजनौर ने ग्राम की गलियों को पक्का कराने एवं कुएँ के निर्माणकार्य को पूरा कराने की कार्यवाही प्रारम्भ की है।

४—कांगड़ी तथा निकटवर्ती ग्रामों को बाढ़ से बचाने के लिए जिलास्तर पर कार्यवाही प्रगति पर।

५—राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत कागड़ी ग्राम मे विभिन्न सामाजिक कार्य किये गए।

६—हिमालय शोध योजना के अन्तर्गत कांगड़ी ग्राम का विस्तृत सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण किया गया।

७—शराब के ठेके की दुकान को बस्ती से दूर हटवाने के सफल प्रयास।

८—वाचनालय की स्थापना।

९—ग्रामवासियों को स्वरोजगार योजना के तहत सरकारी बैंकों से ऋण उपलब्ध करवाया गया।

१०—सड़क के खडंजे पर मिट्टी डलवाना तथा सड़क की मरम्मत।

११—बाढ़ नियन्त्रण के लिए चैक डैम का आरम्भ।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर ग्रामवासियों को परिवार नियोजन, मद्य निषेध, दहेजप्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों के विषय मे बतलाया गया। वृक्षारोपण तथा प्रौढ़शिक्षा कार्यक्रम को पिछले अनेक वर्षो से समर्पण-भावना से चलाया जा रहा है।

—प्रो० वि० शंकर
निदेशक

गंगा समन्वित योजना

(पर्यावरण विभाग—भारत सरकार)

भारत सरकार के पर्यावरण विभाग ने उक्त शोध योजना १९८३ में डा० वि० शंकर, अध्यक्ष वनस्पतिविज्ञान विभाग के निर्देशन में स्वीकृत की। Extension के पश्चात योजना का कार्यकाल नवम्बर १९८७ में समाप्त हुआ। योजना की Final Technical Report तैयार की गई तथा गंगा प्रोजेक्ट डायरेक्टरेट को प्रेषित की गई। इस रिपोर्ट में निम्नलिखित विषयों पर हुए शोधकार्य का विवरण दिया गया है तथा भविष्य के लिए गंगा एवं गंगा के मैदान पर शोधकार्य के लिए सुझाव दिए गये।

1. Water Quality of the Ganga
2. Macrophytes--Medicinal Plants
3. Municipal & Industrial Effluents
4. Erosion & Siltation
5. Mass Bathing Effect, Socio-economic Study, Experimental Work
6. Environmental Education
7. Conclusion & Future Strategy
8. General Features of the Region

— प्रो० वि० शंकर

मुख्य अन्वेषक

प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं विस्तार विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रौढ़, सतत शिक्षा एवं विस्तार विभाग द्वारा राष्ट्रीय प्रौढ शिक्षा कार्यक्रम वर्ष १९८३-८४ से प्रारम्भ किया गया। यह कार्यक्रम ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों में चलाया गया है। शहरी क्षेत्रों में हरिद्वार, कनखल, रानीपुर, ज्वालापुर, व ग्रामीण क्षेत्रों में जगजीतपुर, मिस्सरपुर, पजनहेड़ी, अजीतपुर, कटारपुर, फेरूपुर, एक्कड़कलां, जमालपुर, बहादरपुर जट, कांगड़ी, गाजीवाली आदि ग्राम इस विभाग को परिधि में हैं। कार्यक्रम की भावना के अनुरूप इन केन्द्रों के संचालन में पिछड़े-अल्पसंख्यक क्षेत्र एवं हरिजन जातियों को प्राथमिकता दी गई। पुरुष एवं महिलाओं के लिये कुछ अलग-अलग एव कुछ मिश्रित केन्द्र चलाये गये। अनुदेशकों के रूप में छात्रों, गृहणियों, प्रसार कार्यकर्त्ताओं, अध्यापकों, अध्यापिकाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं आदि को चुना गया।

विभाग द्वारा बराबर यह प्रयास किया गया कि भारत सरकार व उत्तर प्रदेश शासन मे प्रौढ एवं विस्तार विभागों में कार्यरत उच्चाधिकारियो से बराबर मार्गदर्शन लिया जाता रहे। इसी सम्बन्ध मे श्री दीपचन्द्र राम, उपनिदेशक योजना, प्रौढ शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, श्री एस० डी० शर्मा, क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, देहरादून मण्डल, उप-निदेशक, प्रशासन, प्रौढ शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, श्री वी० एन० श्रीवास्तव, जिला विभाग अधिकारी रामपुर, डा० ओ० पी० शर्मा, जिला प्रौढ शिक्षा अधिकारी सहारनपुर, श्री के० एस० त्यागी, खण्ड विकास अधिकारी, बहादराबाद आदि विभाग में पधारे व उनसे कार्यक्रम को और अधिक महत्वपूर्ण बनाने हेतु सुझाव प्राप्त किए गये।

श्री आई० एस० गौड, निदेशक, प्रौढ शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार ने स्वयं विभाग सलाहकार समिति में दिनांक १५-११-८७ को भाग लिया व कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये जिन पर विभाग द्वारा तुरन्त कार्यवाही की गई।

दस दिन का अनुदेशक प्रशिक्षण कार्यक्रम जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी, सहारनपुर के सहयोग से विभाग में दिनांक ७ मार्च से १६ मार्च १९८७ तक

आयोजित किया गया। इसमें लगभग १०० महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर श्री के० चन्द्रमौलि, जिला अधिकारी, सहारनपुर ने भी विभाग का भ्रमण किया।

निदेशक प्रौढ शिक्षा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दिये गये निर्देशों के अनुसार ३०० अतिरिक्त प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की स्वीकृति हेतु एक परियोजना उत्तर प्रदेश शासन को जनवरी ८८ में प्रस्तुत की गई। शिक्षा द्वारा जीवनयापन एवं स्वरोजगार के क्षेत्र को अधिक बलशाली बनाने हेतु विभिन्न छोटे-छोटे पाठ्यक्रमों—जैसे रेडीमेड गारमेन्ट, शार्टहैन्ड एवं टाइपिंग, फोटोग्राफी आदि को भी प्रारम्भ करने हेतु परियोजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग व उत्तर प्रदेश सरकार को प्रेषित की गई।

साक्षरता निकेतन लखनऊ द्वारा आयोजित दो-दिवसीय जन साक्षरता कार्यक्रम के प्रशिक्षण मे विभाग के सहायक निदेशक एवं अध्यक्ष द्वारा भाग लिया गया। इसी प्रकार सहायक निदेशक व परियोजना अधिकारी ने भी समय-समय पर आयोजित कार्यगोष्ठियो मे भाग लेकर उनमें विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

विभाग अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त विस्तार शिक्षा मे भी जुटा हुआ है। इस सम्बन्ध मे क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, देहरादून क्षेत्र के सहयोग से प्रौढ शिक्षा, जनसख्या शिक्षा, स्त्री शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम आदि पर विभिन्न फिल्मों का प्रदर्शन आस-पास के गाँवों व शहरी क्षेत्रों मे किया गया। उपरोक्त अवसर पर प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। विभाग में रुड़की विश्वविद्यालय के सहयोग से गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के प्रॉगण में सोलर कुकर का भी प्रदर्शन किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गए। ग्राम कांगड़ी में विभिन्न विकास योजनाओं हेतु प्रयास किया जाना एव प्रधानमंत्री सूखा राहत कोष मे नवम्बर १९८७ में मात्र एक हजार सोलह रुपया दान किया जाना, आदि विभिन्न क्रियाएँ भी इसमें सम्मिलित हैं।

—**अनिल चोपड़ा**

निदेशक

क्रीड़ा विभाग

गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी क्रीड़ा विभाग का कार्य प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र के कुशल निर्देशन में श्री ईश्वर भारद्वाज द्वारा सुचारू रूप से प्रारम्भ किया गया। मार्च माह में प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र द्वारा त्यागपत्र दिए जाने के पश्चात् डा० अम्बुजकुमार शर्मा को विभागाध्यक्ष नियुक्त किया गया। डा० शर्मा के नेतृत्व में विभागीय कार्य निर्विघ्न सम्पादित हो रहा है।

इस वर्ष विभाग द्वारा निम्नलिखित खेलों का संचालन/प्रशिक्षण दिया गया—

हाकी, क्रिकेट, बैडमिटन, टेबलटेनिस, फुटबाल, कबड्डी, कुश्ती, एथलेटिक्स, वालीबाल, शरीर-सौष्ठव तथा भारोत्तोलन।

१—हाकी

हाकी का अभ्यास सितम्बर से प्रारम्भ किया गया। राजकीय आयुर्वेदिक कालेज तथा हरिद्वारस्थ क्लबों के साथ मैत्री-मुकाबलों का आयोजन करके छात्रों की रुचि में वृद्धि की गई। छात्रों ने अनवरत अभ्यास में भाग लिया।

नवम्बर मास मे खेलकूद निदेशालय, उ०प्र० द्वारा गोरखपुर में आयोजित उ०प्र० अन्तर्विश्वविद्यालय हाकी प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय की टीम ने भाग लिया। नरेन्द्रदेव कृषि विश्वविद्यालय की टीम को २-१ से पराजित किया। किन्तु तालमेल के अभाव मे कुमाऊँ वि०वि० से ३-० से पराजित हुए। अलीगढ़ वि०वि० की टीम के साथ एकतरफा मैच रहा।

जनवरी में उत्तरक्षेत्रीय हाकी प्रतियोगिता में भाग लेने चण्डीगढ़ गए। अवध वि०वि० फैजाबाद के साथ संघर्षपूर्ण मुकाबले में ३-२ से पराजय हुई। यद्यपि खिलाड़ियो मे उत्साह की कमी न थी किन्तु तालमेल का अभाव पराजय का कारण बना। टीम मैनेजर के रूप में डा० महावीर अग्रवाल (प्रवक्ता, संस्कृत विभाग) गए।

श्रद्धानन्द सप्ताह पर आयोजित अ०भा० हाकी टूर्नामेंट में लगातार तीन मुकाबले जीतकर सेमिफाइनल में जिला हाकी एसोसिएशन अम्बाला की टीम से पराजित हुए। टीम का प्रदर्शन अत्यन्त सराहनीय रहा।

बी०एच०ई०एल० की टीम से विभिन्न मैच खेले गए। कुल मिलाकर हाकी टीम का प्रदर्शन सराहनीय रहा।

२—कुश्ती

उ०प्र० अन्तर्विश्वविद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता बरेली में २९-३१ अक्टूबर १९८७ को सम्पन्न हुई। हमारे तीन छात्रों ने प्रथम बार कुश्ती प्रतियोगिता में भाग लेकर अच्छा प्रदर्शन किया। अभ्यास तथा तकनीक के अभाव के कारण सभी का चतुर्थ स्थान रहा। कुश्ती मे अभ्यास हेतु यदि कोच की व्यवस्था हो जाती तो अवश्य ही कोई स्थान प्राप्त हो सकता था, फिर भी छात्रों ने अपने-अपने वर्ग के दो-दो मुकाबले जीतकर विजय के निकट पहुँचने का प्रयास किया।

३—कबड्डी

उ०प्र० अन्तर्विश्वविद्यालय कबड्डी प्रतियोगिता में आगरा गए। लखनऊ विश्वविद्यालय तथा गोविन्दबल्लभ पन्त कृषि व प्रोद्यौगिकी विश्वविद्यालय की टीमों को परास्त करके सेमिफाइनल मे पहुँचे। सेमिफाइनल मे मेरठ के साथ हुए मुकाबले मे इस वर्ष तथा गत वर्ष की विजेता टीम मेरठ विजयी रही। कबड्डी प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय की टीम का उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा।

आगरा से लौटने के बाद सभी खिलाड़ियों के अस्वस्थ हो जाने के कारण १६-२१ नवम्बर '८७ को होने वाली उत्तरक्षेत्रीय कबड्डी प्रतियोगिता मे भाग लेने पन्तनगर न जा सके।

४—क्रिकेट

क्रिकेट का अभ्यास अनवरत चलता रहा। उ०प्र० अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने कानपुर गए। किन्तु अच्छा प्रदर्शन न कर सके तथा चुस्त फील्डिंग न होने के कारण पराजित हुए। डा० राकेशकुमार शर्मा (प्रवक्ता, इतिहास विभाग) टीम मैनेजर के रूप मे गए।

उत्तरक्षेत्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता में कुरुक्षेत्र गए। प्रदर्शन अच्छा था किन्तु रनों की गति धीमी होने के कारण वाँछित स्कोर न जुटा पाए और पराजित

हुए। एकदिवसीय मैच की तकनीक का प्रायः अभाव-सा हो है। श्री नन्दकिशोर (विज्ञान महाविद्यालय) टीम मैनेजर के रूप में साथ गए।

५—एथलेटिक्स

नवम्बर मास में विश्वविद्यालय की एथलेटिक-मीट की गई। इसमें विद्या-विनोद तथा विद्याधिकारी के छात्रों को कनिष्ठ वर्ग में तथा अलंकार, बी.एस-सी. व एम.एस-सी./एम ए. के छात्रों को वरिष्ठ वर्ग में विभाजित करके दोनों वर्गों में विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। वरिष्ठ वर्ग में बी०एस-सी० के छात्र धर्मेन्द्रकुमार तथा कनिष्ठ वर्ग में विद्याधिकारी के छात्र अतुलकुमार को चैम्पियन घोषित किया गया।

६—शरीर-सौष्ठव तथा भारोत्तोलन

दिसम्बर मास में 'द्वितीय आर्यवीरश्री शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता' का आयोजन श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर गत वर्ष की भाँति किया गया। वि०वि० के छात्रों के अतिरिक्त देहरादून, सहारनपुर, नजीबाबाद, मुजफ्फरनगर तथा हरिद्वार की व्यायामशालाओं के साधकों ने भाग लिया। ६० किग्रा०, ६५ किग्रा. तथा ६५ किग्रा० से अधिक—तीन भारवर्गों में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। 'आर्यवीरश्री' की उपाधि देहरादून के राजेन्द्रकुमार शर्मा ने प्राप्त की। विश्वविद्यालय के छात्र वीरेन्द्रकुमार ने ६५ किग्रा० से अधिक भारवर्ग में तथा अजयकुमार ने ६५ किग्रा० भारवर्ग में तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस बार प्रतियोगिता के स्तर मे काफी वृद्धि हुई। प्रतियोगिता का संचालन व संयोजन श्री ईश्वर भारद्वाज द्वारा किया गया। प्रतियोगिता के मुख्य-अतिथि के रूप में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा मुख्यनिर्णायक के रूप में अर्जुनश्री भारतभूषण जी उपस्थित थे। सहनिर्णायक श्री राममोहन शर्मा तथा श्री अशोककुमार शर्मा रहे। विश्वविद्यालय के पूर्वछात्र श्री राधेमोहन शर्मा ने विशेष प्रदर्शन करके दर्शकों का मन मोह लिया।

दिसम्बर में ही श्री गंगा सभा हरिद्वार द्वारा आयोजित शरीर-सौष्ठव प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के छात्र अजयकुमार को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

७—बैडमिन्टन

बैडमिन्टन का अभ्यास अनवरत चलता रहा। सीनेट हाल में स्टाफ के लिए बैडमिन्टन की व्यवस्था की गई। स्टाफ व विद्यार्थियों के मध्य बैडमिन्टन के शो-मैच कराए गये।

८—फुटबाल

विद्यालय विभाग के मैदान में फुटबाल की व्यवस्था की गई। किन्तु कुछ छात्र ही इसमें भाग ले सके।

१०—वालीबाल

गत वर्षों की अपेक्षा वालीबाल के खेल के प्रति कुछ जागृति आई। इसके लिए डा० अम्बुजकुमार शर्मा तथा डा० उमरावसिंह बिष्ट का प्रयास सराहनीय है।

मार्च माह में स्टाफ व छात्रों के मध्य एक शो-मैच खेला गया जिसमें माननीय कुलपति जी विशिष्ट दर्शक के रूप में उपस्थित थे।

१०—टेबल-टेनिस

टेबल-टेनिस का अभ्यास वेद-मन्दिर में प्रारम्भ किया गया, किन्तु अभ्यास विधिवत् न चल सका।

विभागीय कार्यसंचालन में मान्य कुलपति जी, उप-कुलपति एवं आचार्य जी, कुलसचिव जी, विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारियों तथा आचार्यवर्ग के सक्रिय सहयोग के लिए विभाग उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता है।

—ईश्वर भारद्वाज

योग केन्द्र

योग केन्द्र द्वारा चारमासीय योग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं जिससे विश्वविद्यालय के छात्रों के अतिरिक्त स्थानीय आयुर्वेदिक महाविद्यालयों तथा अन्य महाविद्यालयों के छात्रों के साथ-साथ जनसामान्य ने भी लाभ प्राप्त किया है। गत शिक्षापटल द्वारा पूर्ण शैक्षिकसत्र के लिए डिप्लोमा पाठ्यक्रम को स्वीकृति दे दी गई है।

अगस्त ८७ से ७ नवम्बर ८७ तक प्रथम प्रशिक्षण सत्र चलाया गया। २० छात्रों ने परीक्षा दी, जिसमे से १४ उत्तीर्ण हुए।

जनवरी ८८ से अप्रैल ८८ तक द्वितीय प्रशिक्षणसत्र में १४ छात्रों को परीक्षा के योग्य पाया गया है। इनको परीक्षाएँ जुलाई में सम्पन्न होंगी।

५ जून ८७ से १६ जून ८७ तक गुरुकुल परिसर के बालकों के शारीरिक-मानसिक विकास हेतु योग प्रशिक्षण प्रदान किया गया जिसमें १४ बालकों ने भाग लिया।

इसी अवसर पर अखिल भारतीय महिला कान्फ्रेंस द्वारा संचालित बाल गृह, लखनऊ के बालकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

वर्ष १९८७-८८ में विद्यालय विभाग के छात्रों को प्रतिदिन योग प्रशिक्षण दिया गया जिसका वार्षिकोत्सव पर प्रदर्शन भी किया गया।

गुरुकुल के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में स्वामी श्रद्धानन्द योग प्रतियोगिता का विशेष महत्व है। अपने तृतीय वर्ष में दिनांक २९ दिसम्बर ८७ को उक्त प्रतियोगिता में योग केन्द्र के साधकों के अतिरिक्त हरयाणा, सहारनपुर, देहरादून, मुजफ्फरनगर तथा स्थानीय साधकों ने भाग लिया। इसमें कनिष्ठ व वरिष्ठ दो वर्गों में प्रतियोगिताएँ की गईं। इसमें योग केन्द्र के साधकों का उत्कृष्ट प्रदर्शन सराहनीय रहा। इस प्रतियोगिता में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती अध्यक्ष तथा अर्जुनश्री भारतभूषण मुख्य निर्णायक थे।

१७ दिसम्बर को श्री गंगा सभा हरिद्वार द्वारा आयोजित योग प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के योग के छात्र हरेन्द्रचन्द्र नाथ व जितेन्द्रकुमार को क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त हुए। कनिष्ठ वर्ग में विद्यालय के साधक शैलेन्द्र कुमार, संजय व वीरेन्द्रकुमार को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त हुए।

जनवरी में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आयोजित योग प्रतियोगिता में विद्यालय के योगसाधक शैलेन्द्रकुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

गुरुकुल परिसर के वासी तथा अन्य स्थानीय लोग योग केन्द्र में आकर स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं तथा रोगग्रस्त लोगों को यौगिक उपचार द्वारा स्वास्थ्य रक्षा का प्रशिक्षण दिया जाता है।

योग केन्द्र की समुचित उन्नति हेतु प्रयास किया जा रहा है जिसके लिए मान्य कुलपति जी तथा कुलसचिव जी विशेष ध्यान दे रहे है। इसी के फलस्वरूप केन्द्र के लिए ८ दरियाँ व कालीन की व्यवस्था की जा सकी है।

विभाग के सुचारू कार्य हेतु मान्य कुलपति जी, आचार्य जी, कुलसचिव जी, प्रो० ओम्प्रकाश मिश्र, डा० अम्बुजकुमार शर्मा, श्री महेन्द्रकुमार चतुर्वेदी (रुड़की विश्वविद्यालय), श्री भारतभूषण जी (सहारनपुर) आदि महानुभावों का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ है। विभाग की ओर से हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन।

—ईश्वर भारद्वाज

विश्वविद्यालय स्वास्थ्य केन्द्र

पूर्व की भांति यह केन्द्र कमरा न० ५, श्रद्धानन्द चिकित्सालय, सिंहद्वार गुरुकुल में कार्यरत है। इसमें निम्नलिखित स्टाफ कार्यरत है :

१. निदेशक	डा० बालकृष्ण भारद्वाज, एम.डी., पी०एम०एस० सेवानिवृत्त मुख्य चिकित्साधिकारी
२. कम्पाउन्डर	श्री अनूपकुमार दास—अपरिशिक्षित
३. नर्स	श्रीमती वलसम्मा दास—अपरिशिक्षित
४. भृत्य	श्री घासीराम
५. सेविका	श्रीमती बालादेवी

भृत्य श्री घासीराम के अलावा समस्त स्टाफ अस्थाई है और तदर्थ नियुक्ति पर है।

केन्द्र एक बाह्य विभाग के रूप में परामर्शदात्री सेवाएँ विश्वविद्यालय के कर्मचारियों तथा उनके पारिवारिक सदस्यों को प्रदान करता है। इस वर्ष ५२०२ व्यक्ति इस केन्द्र मे आए और लाभान्वित हुए।

श्रद्धानन्द चिकित्सालय में रोगी-कर्मचारियों के भरती करने की व्यवस्था है तथा नियमानुसार चिकित्सालय की शय्याओं पर केन्द्र द्वारा रोगी भरती किये जाते है और उनका उपचार होता है। आवश्यकता पड़ने पर विश्वविद्यालय परिसर में भी रोगियों को देखा जाता है।

यहाँ पर रश्मि किरण की निदानिक व्यवस्था उपलब्ध है तथा पेथालोजी विभाग में एक टेक्नीशियन चिकित्सालय की ओर से कार्यरत है जो भिन्न-भिन्न परीक्षण—रक्त, मल-मूत्र आदि के करता है। बायो-कैमिस्ट्री टैस्ट, जैसे ब्लड-शूगर आदि भी होते हैं।

कम्पाउन्डर चिकित्सालय के शल्य-कक्ष में कार्य करता है और हर समय

उपलब्ध रहता है और शल्यक की सहायता करता है। इस वर्ष लगभग ३५० आपरेशनों में उनका योगदान रहा।

संक्षिप्त में स्वास्थ्य केन्द्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है तथा इसके और विस्तार की आवश्यकता है। कर्मचारियों को पैथालोजी टैस्ट की नि:शुल्क सुविधा होनी चाहिए। स्वास्थ्य केन्द्र तथा श्रद्धानन्द चिकित्सालय के समस्त कर्मचारियों मे पूर्ण तालमेल और सहयोग है।

—डा० बालकृष्ण भारद्वाज

निदेशक

वित्त एवं लेखा

सितम्बर 1987 मे विश्वविद्यालय का संशोधित बजट बनाया गया। इसे वित्त समिति की बैठक दिनाक 8-10-1987 में प्रस्तुत किया गया। समिति ने निम्न प्रकार बजट पारित किया :

बजट सारांश

	संशोधित अनुमान 87-88	बजट अनुमान 88-89
वेतन एवं भत्ते आदि	53,83,780.00	56,52,050.00
अंशदायी भविष्यनिधि	2,13,170.00	2,29,950.00
अन्य व्यय	13,84,310.00	15,01,000 00
योग व्यय	69,81,260.00	73,83,000 00
आय	1,812,60.00	1,83,000.00
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त अनुदान—	67,90,000.00	72,00,000 00

समीक्षाधीन वर्ष 1987-88 में 67,90,000/- रु० के अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है, उसका विवरण निम्न प्रकार है-

क्र.सं.	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
1.	6,30,000.00	वि०वि० अनुदान आयोग	कम्प्यूटर हेतु
2.	1,50.000.00	,,	हाऊस बिल्डिंग लोन-एडवांस
3.	15,000.00	,,	अनएसाइन्ड ग्रान्टस

क्र सं	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
4.	2,00,000.00	वि० वि० अनुदान आयोग	प्रोफेसर्स क्वाटर्स
5.	5,095 66	,,	स्वास्थ्य केन्द्र
6.	10,027.20	,,	वेतन
7.	50,000.00	,,	विजिटिंग प्रोफेसर/फैलो
8.	30,000.00	,,	पब्लिकेशन्स
9.	50,000.00	,,	माइनर रिसर्च प्रो० डा० पुरुषोत्तम कौशिक
10.	10,000.00	,,	रि. प्रो. डा. स्वर्ण आतिश
11.	4,000.00	,,	माइनर रि० प्रो० डा० बी०डी० जोशी
12.	2,500.00	,,	माइनर रि० प्रो० डा० ए०के० इन्द्रायण
13.	15,396.77	,,	डा० कृष्णकुमार
14.	10,000.00	,,	नेशनल कान्फ्रेंस आन फिलोसफी
15.	25,000.00	,,	सेमिनार आन लोकल सैल्फ गवर्नमेंट आव एनशिएन्ट इण्डिया
16.	1,00,000.00	,,	प्रौढ़ शिक्षा
17.	40,660.52	,,	समर इन्स्टीट्यूट आन साइकोलोजी
18.	66,000.00	भारत सरकार	दुर्लभ पाण्डुलिपियों की सुरक्षा
19.	12,000.00	,,	श्री भगवद्दत्त जी रिसर्च स्कालर
20.	30,000.00	,,	पुरातत्व संग्रहालय
21.	5,000.00	,,	सेमिनार आन फिश एण्ड देयर एन्वायरनमैंट
22.	2,368.00	इन्डियन काउन्सिल आव साईंस, नई दिल्ली	माइनर रि०प्रो० डा० एस०के० श्रीवास्तव

क्र.सं	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण
23.	12,000.00	भारत सरकार	स्टडी आन दा एनवायरन-मैंटल बायलोजी आव दा हिमालयन आर्किड्स
24,	1,70,000.00	.... ,, ...	हिमालय रिसर्च प्रोजेक्ट

—आर०पी० सहगल
वित्त-अधिकारी

आय का विवरण

१९८७-८८

क्र०सं०	आय का मद	धनराशि
	(क) दान और अनुदान—	
1	वि०वि० अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान—	67,90,000.00
	योग—(क)	67,90,000.00
	(ख) शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय—	
1	पंजीकरण शुल्क	6,533.00
2.	पी-एच०डी० रजिस्ट्रेशन शुल्क	490.00
3.	पी-एच०डी० मासिक शुल्क	1,770 00
4.	परीक्षा शुल्क	50,797.00
5.	अंकपत्र शुल्क	2,533.00
6.	पड़ताल शुल्क	48.00
7.	विलम्बदण्ड, टूट-फूट	6,396.00
8.	माइग्रेशन शुल्क	1,632.00
9.	प्रमाण-पत्र शुल्क	1,407.00
10.	नियमावली, पाठविधि तथा फार्मो आदि का शुल्क	1,308.00
11.	सेवा आवेदन-पत्र	2,854.00
12.	शिक्षा शुल्क	37,133.00
13.	प्रवेश व पुनः प्रवेश शुल्क	7,782.00

क.सं. आय का मद	धनराशि
14. भवन शुल्क	1,167.00
15. क्रीड़ा शुल्क	6,174.00
16. पुस्तकालय शुल्क	4,136.00
17. परिचयपत्र शुल्क	266.00
18. एसोशियेशन शुल्क	2,744.00
19. प्रयोगशाला शुल्क	794.00
20. मंहगाई शुल्क	6,542.00
21. विज्ञान शुल्क	5,727.00
22. पुस्तकालय से आय	8,051.00
23. पत्रिका शुल्क	7,249.00
24. अन्य आय	15,740.00
25. किराया प्रोफेसर्स क्वार्टर्स	43,414 00
26. सरस्वती यात्रा	1,500.00
27. वाहन ऋण	22,864.00
28. छात्रावास	1,457.00
योग—(ख)	2,48,512.00
सर्वयोग—(क+ख)	70,38,512.00

—आर०पी० सहगल
वित्त अधिकारी

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)

१६८७-८८

क्र.सं.	व्यय का मद	धनराशि
(क) वेतन—		
1.	वेतन	50,79,836 00
2.	भविष्यनिधि पर संस्था का अंशदान	2,83,507.00
3.	ग्रेच्युटी	9,012 00
	योग—(क)	53,72,355.00
(ख) अन्य—		
1.	विद्युत व जल	1,10,342.00
2.	टेलीफोन	16,391.00
3.	मार्ग व्यय	1,10,042.00
4.	लेखन सामग्री एवं छपाई	30,505.00
5.	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	49,396.00
6.	डाक एवं तार	13,614.00
7.	वाहन एवं पेट्रोल	76,904 00
8.	विज्ञापन	39,467.00
9.	न्यायिक व्यय	10,751.00
10.	आतिथ्य व्यय	36,609.00
11.	दीक्षान्त उत्सव	25,136 00

क्र.सं. व्यय का मद	धनराशि
12. लॉन संरक्षण	11,300.0
13. भवन मरम्मत	1,03,289 00
14. आडिट व्यय	67,285.00
15. उपकरण	80,444.00
16. फर्नीचर एवं साज-सज्जा	42,084.00
17. राष्ट्रीय छात्र सेवा	68.00
18. छात्र कल्याण	3,164 00
19. छात्रों को छात्रवृत्ति	40,519.00
20. खेल-कूद एवं क्रीड़ा	21,319.00
21. सांस्कृतिक कार्यक्रम	2,792.00
22. सरस्वती शै० यात्रा	14,626.00
23. वाग्वर्धिनी सभा	5,841 00
24. वेद प्रयोगशाला	6,712 00
25. मनोविज्ञान प्रयोगशाला	1,282.00
26. रसायनविज्ञान प्रयोगशाला	29,294.00
27. भौतिकविज्ञान प्रयोगशाला	21,590.00
28. वनस्पतिविज्ञान प्रयोगशाला	20,973 00
29. जन्तुविज्ञान प्रयोगशाला	18,036.00
30. गैस प्लांट	6,069.C0
31 इतिहास	4,538.00
32. गणित	3,794 00
33. वनस्पति वाटिका (ग्रीन हाऊस)	1,024.00
34. समाचारपत्र एवं पत्रिकाएँ	80,038.00
35 पुस्तकें	19,933.00
36. जिल्दबंदी एवं पुस्तकसुरक्षा	13,611.00
37. केटेलॉग एण्ड कार्डस्	10,282 00
38. वैदिक पथ, प्रह्लाद पत्रिका, आर्यभट्ट, गुरुकुल पत्रिका, विज्ञान पत्रिका	76,305.00

क्र०सं०	व्यय का मद	धनराशि
39.	मिश्रित	16,175.00
40.	आकस्मिक	3,823.00
41.	सदस्यताशुल्क अंशदान	31,409.00
42.	सेमिनार	4,081.00
43.	पढ़ते हुए कमाओ	6,093.00
44.	वाहन हेतु ऋण	1,02,220.00
45	मोर्टगेज डीड पर स्टैम्प ड्यूटी की प्रति पूर्ति	14,272.00
	योग (ख)	14,03,442.00
46	परीक्षकों का पारिश्रमिक	39,052.00
47.	मार्गव्यय परीक्षक	16,055.00
48.	निरीक्षण व्यय	9,164 00
49.	प्रश्न-पत्रों की छपाई	36,657.00
50.	डाक-तार व्यय	10,094.00
51.	लेखन सामग्री	3,946.00
52.	नियमावली, पाठविधि छपाई	10,545.00
53.	अन्य व्यय	737.00
	योग (ग)	1,26,250 00
	योग (ख+ग)	15,29,692.00
	योग (क+ख+ग)	69,02,047.00

—आर०पी० सहगल
वित्त-अधिकारी

दीक्षान्त-समारोह १९८८ पर बी०एस-सी० (गणित/बायो ग्रुप) की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
1.	384	850162	आदित्यकुमार शर्मा	श्री विजयेन्द्र कुमार	गणित ग्रुप	रसायन शास्त्र भौतिक शास्त्र गणित	गु०कां०वि०	प्रथम
2.	385	850124	अजयवीर वर्मा	श्री रामेश्वरसिंह वर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
3.	386	850121	अजय श्रीवास्तव	श्री एम.पी. श्रीवास्तव	,,	,,	,,	प्रथम
4.	387	850125	अमलेश कुमार	श्री मानसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
5.	388	850123	अमित मदान	श्री प्रेमकुमार	,,	,,	,,	द्वितीय
6.	389	850119	अनुराग ग्रोवर	श्री हरिश्चन्द्र ग्रोवर	,,	,,	,,	प्रथम
7.	390	850126	अरविन्दकुमार बंसल	श्री संतलाल बंसल	,,	,,	,,	प्रथम
8.	391	840056	बालकृष्ण पाल	श्री शीशराम	,,	,,	,,	द्वितीय
9.	392	830056	गुरमीत सिह	श्री अमरसिह	,,	,,	,,	तृतीय
10.	393	850137	हर्ष गुप्ता	श्री के०के० गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय
11.	395	840051	जयप्रकाश	श्री शंभुदयाल थपलियाल	,,	,,	,,	तृतीय
12.	396	850141	जोगिन्दर लाल	श्री सीताराम यादव	,,	,,	,,	द्वितीय
13.	397	850149	लवलीकुमार दुबे	श्री एस०एस० दुबे	,,	,,	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	सस्था का नाम	श्रेणी
14.	398	840046	मुकेशचन्द्र भट्ट	श्री हरगोविन्द भट्ट	गणित ग्रुप	रसायन शास्त्र भौतिक शास्त्र, गणित	गु०कां०वि०	प्रथम
15.	399	850047	नन्दकिशोर	श्री रामलाल	,,	,,	,,	द्वितीय
16.	400	850046	नरेश बब्बर	श्री गोपालकृष्ण	,,	,,	,,	द्वितीय
17.	401	840042	परमजीत सिह	श्री गुरुमुख सिह	,,	,,	,,	द्वितीय
18.	402	850144	राजीव चौहान	श्री वाई पी.एस. चौहान	,,	,,	,,	द्वितीय
19.	404	850060	राजीव कुमार	श्री बृजभूषण	,,	,,	,,	द्वितीय
20.	405	850055	राजीव सिङ्गान	श्री ओमप्रकाश	,,	,,	,,	द्वितीय
21.	406	840035	राजेश गुप्ता	श्री रामनाथ गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय
22.	407	850061	रोहिताशकुमार जिदल	श्री प्रीतमदास	,,	,,	,,	द्वितीय
23.	409	850063	सन्दीप गोयल	श्री जी.सी. गोयल	,,	,,	,,	प्रथम
24.	410	840029	सजीवकुमार गुप्ता	श्री दौलतराम गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय
25.	411	850070	सजयकुमार	श्री रामलाल कालरा	,,	,,	,,	द्वितीय
26.	412	850075	सजयकुमार भटनागर	श्री एस०बी०भटनागर	,,	,,	,,	द्वितीय
27.	413	850065	सुधीरकुमार	श्री एस०पी० शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
28.	415	850082	विनीतकुमार	श्री कृष्णकुमार वशिष्ठ	,,	,,	,,	द्वितीय
29.	416	850090	विपुलकुमार	श्री बी०सी० सिन्हा	,,	,,	,,	प्रथम

क्र.सं	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
30	417	850089	वीरेन्द्रसिंह	श्री उम्बरसिंह	गणित ग्रुप	रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, गणित	गु०कां०वि०	तृतीय
31.	419	850042	महेन्द्रकुमार शर्मा	श्री सुखबीरसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
32.	420	850041	मनोजकुमार उप्रेती	श्री रमेशचन्द्र	,,	,,	,,	प्रथम
33.	717	840033	राकेशकुमार	श्री मोहनलाल	,,	,,	,,	द्वितीय
34.	421	850099	अमरदीप	श्री शांतानन्द उपाध्याय	बायोग्रुप	रसायन शास्त्र, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान	,,	द्वितीय
35.	422	850098	अनोजकुमार	श्री सुरेशप्रकाश	,,	,,	,,	द्वितीय
36.	423	850100	हरीशकुमार	श्री जगदीशलाल	,,	,,	,,	प्रथम
37.	424	850101	ललित वर्मा	श्री आर०के० वर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
38.	425	840005	मदनमोहन पन्त	श्री बी०सी०पन्त	,,	,,	,,	द्वितीय
39.	426	850094	मनोजकुमार सिंह	श्री विजेन्द्रसिंह	,,	,,	,,	प्रथम
40.	427	850146	नन्दकिशोर	श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय
41.	428	850103	पविन्दरसिंह	श्री जरनैलसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
42.	429	840011	राजकुमार शर्मा	श्री धनप्रकाश शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
43.	430	850107	रजत शर्मा	श्री आर०के० शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय

क्र स.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
44.	431	850104	रविकान्त	श्री नरेन्द्रकुमार शर्मा	बायोग्रुप	रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान	गु०का०वि०	द्वितीय
45	432	850114	शिव शर्मा	श्री हरपाल सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
46.	433	850154	सन्दीपकुमार जैन	श्री ज्ञानचन्द्र जैन	,,	,,	,,	द्वितीय
47.	434	840014	सजय जैन	श्री मोतीलाल जैन	,,	,,	,,	प्रथम
48.	435	850108	संजय गोस्वामी	श्री सुदर्शन कुमार	,,	,,	,,	प्रथम
49.	436	850112	विधुशेखर पालीवाल	श्री विष्णुदत्त राकेश	,,	,,	,,	प्रथम
50.	437	850111	विक्रमसिह	श्री कुँवरसिह नेगी	,,	,,	,,	द्वितीय
51	438	840018	योगेशकुमार वर्मा	श्री लालसिह	,,	,,	,,	द्वितीय
52.	439	850151	अनिल बाबू गुप्ता	श्री किशोरीलाल गुप्ता	,,	,,	,,	द्वितीय
53.	440	850105	रूपककुमार	श्री जगदीशप्रसाद	,,	,,	,,	द्वितीय
54	441	840012	रामधन	श्री अमरचन्द	,,	,,	,,	तृतीय

दीक्षान्त-समारोह १६८८ पर अलंकार की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनुक्रमांक	प०सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
1.	215	850197	कु० ज्योतिप्रभा राय	श्री दीनदयाल राय	विद्यालंकार	हिन्दी, संगीत गा०	कन्या गुरुकुल देहरादून	द्वितीय
2.	216	850202	कु० कंचन	श्री विजयकुमार मिश्रा	,,	हिन्दी, संस्कृत विशेष	,,	प्रथम
3.	217	850204	कु० क्रान्ति आर्या	श्री अशोक जी	,,	,,	,,	प्रथम
4.	218	850196	कु० कल्पना	श्री हरिशचन्द्र चौरसिया	,,	हिन्दी, संगीत गा०	,,	तृतीय
5.	219	850201	कु० मीनाक्षी तिवाड़ी	श्री सुरेन्द्र नाथ	,,	हिन्दी, सस्कृत विशेष	,,	प्रथम
6.	220	850199	कु० सोमा	श्री हीरालाल	,,	हिन्दी, संगीत वादन	,,	द्वितीय
7.	221	850203	कु० शशि किरन	श्री विरेन्द्रकुमार	,,	इतिहास, सगीत गा०	,,	प्रथम
8.	222	850198	कु० सुलोचना देवी	श्री दुर्गासिह ठाकुर	,,	हिन्दी, संगीत वादन	,,	प्रथम
9.	223	850200	कु० सन्तोष	श्री रामलाल यादव	,,	इतिहास, चित्रकला	,,	तृतीय
10.	224	850180	अम्बरीश कुमार	श्री लल्लूसिह	,,	हिन्दी, मनोविज्ञान	गु०कां०वि०	द्वितीय
11.	226	850186	प्रभातकुमार सिह	श्री जबरसिह सेंगर	,,	इतिहास, दर्शन	,,	द्वितीय
1.	227	850255	देवदत्त	श्री रोढूसिह	वेदालंकार	हिन्दी, वेद, संस्कृत, दर्शन, अंग्रेजी	गु०कां०वि०	प्रथम
2.	228	850256	ब्र० ईश्वरानन्द	श्री काशीराम	,,	मनोविज्ञान	,,	प्रथम

दीक्षान्त-समारोह १९८८ पर पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त करने वाले शोधार्थियों की सूची

क्र.सं.	नाम शोधार्थी	विभाग	विषय	शोध-निर्देशक
1.	कु० सुमेधा	वैदिक-साहित्य	"महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य में अग्नि-देवता का अध्ययन ।"	डा० सत्यव्रत राजेश प्रवक्ता, वेद विभाग
2.	श्री रामनारायण रावत	वैदिक-साहित्य	"वैदिक एवं औपनिषदिक दर्शन एक तुलनात्मक अध्ययन (महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में) ।"	डा० भारतभूषण रीडर, वेद विभाग
3.	श्री वसन्तकुमार	संस्कृत-साहित्य	"वाल्मीकि रामायण एक परिशीलन (स्मृति-शास्त्र के परिप्रेक्ष्य में) ।"	डा० वेदप्रकाश रीडर, संस्कृत विभाग
4.	श्रीमती राजकुमारी शर्मा	संस्कृत-साहित्य	"महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य मे महाभारत में निर्दिष्ट धर्मों व दर्शनों का समीक्षात्मक अध्ययन ।"	डा० निगम शर्मा रीडर, संस्कृत विभाग
5.	श्री सुरेन्द्रकुमार	संस्कृत-साहित्य	"ऋग्वेद मे प्रतिपादित विभिन्न विद्याओं का संकलन एवं विवेचनात्मक अध्ययन (दयानन्द भाष्य पर आधारित) ।"	प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार अध्यक्ष, वेद विभाग
6.	श्री रविदत्त	संस्कृत-साहित्य	"गुह्यसूत्रों के परिप्रेक्ष्य में संस्कारविधि का अध्ययन ।"	डा० सत्यव्रत राजेश प्रवक्ता, वेद विभाग
7.	श्री ओम शर्मा	दर्शनशास्त्र	"जैन. बौद्ध और न्याय दर्शनों में ज्ञान मीमांसा : एक तुलनात्मक अध्ययन ।"	डा० जयदेव वेदालंकार रीडर, दर्शन विभाग

दीक्षान्त-समारोह १९८८ पर एम०ए०/एम०एस-सी० की उपाधि पाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
1.	590	850173	साधु प्रतिज्ञा दास	श्री गुरुप्रसाद साहब	एम०ए०	वेद	गु०कां०वि०	प्रथम
2.	591	820030	सोमपाल	श्री दयाचन्द	,,	,,	,,	प्रथम
3.	592	820132	पीताम्बर शर्मा	श्री श्यामप्रसाद	,,	,,	,,	द्वितीय
4.	608	830115	दूधपुरी गोस्वामी	श्री सेढूराम गोस्वामी	,,	दर्शनशास्त्र	,,	प्रथम
5.	610	840164	स्वामी भीष्म चैतन्य	श्री स्वामी आत्मानन्द	,,	,,	,,	द्वितीय
6.	593	850187	अम्बरीष कुमार	श्री सेठ सन्तप्रसाद आर्य	,,	संस्कृत साहित्य	,,	द्वितीय
7.	594	850184	भूप्रकाश सिह चौहान	श्री तोताराम सिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
8.	595	830099	देवशर्मा आर्य	श्री हरपाल शास्त्री	,,	,,	,,	प्रथम
9.	596	850182	दशरथ कुमार	श्री शिवराम सिह	,,	,,	,,	द्वितीय
10.	597	850193	दिनेश चन्द्र	श्री जयप्रकाश	,,	,,	,,	प्रथम
11.	598	850237	हेमकुमार विद्यार्थी	श्री मनोरथ उप्रेती	,,	,,	,,	प्रथम
12.	599	850183	इन्द्रप्रकाश गौतम	श्री दाताकर्ण गौतम	,,	,,	,,	प्रथम
13.	600	850181	विष्णुप्रसाद गौतम	श्री प्रेमनारायण प्रसाद	,,	,,	,,	प्रथम
14.	601	830144	कु० मीना	श्री ओमप्रकाश	,,	,,	,,	द्वितीय
15.	602	850024	कु० मीना	श्री सूरजभान शर्मा	,,	,,	,,	तृतीय

क्र सं	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	सस्था का नाम	श्रेणी
16.	604	850015	श्रीमती शकुन्तला	श्री शुभराम	एम०ए०	सस्कृत साहित्य	गु०कां०वि०	प्रथम
17.	605	850038	कु० सन्तोष	श्री महासिह	,,	,,	,,	द्वितीय
18.	611	850235	अशोककुमार विश्नोई	श्री बालेश्वर चन्द्र	,,	हिन्दी साहित्य	,,	द्वितीय
19.	612	850230	अमरोशचन्द्र ढौडियाल	श्री अनुसूयाप्रसाद ढौडियाल	,,	,,	,,	प्रथम
20.	613	850179	अमलदार	श्री सम्पति	,,	,,	,,	प्रथम
21.	614	850244	दिनेशकुमार चौहान	श्री मेदसिह	,,	,,	,,	द्वितीय
22.	615	850242	खीमानन्द	श्री ईश्वरीदत्त टिटगांई	,,	,,	,,	द्वितीय
23.	616	850177	लालजी पाण्डेय	श्री सूर्यनारायण पाण्डेय	,,	,,	,,	प्रथम
24.	617	850178	मिथिलेश्वर झा	श्री सर्वेश्वर झा	,,	,,	,,	द्वितीय
25.	618	850176	प्रकाश पाटील	श्री बाबूराव पाटील	,,	,,	,,	द्वितीय
26.	619	850222	परमवीर सिह	श्री सुखबीर सिह	,,	,,	,,	द्वितीय
27.	621	850189	योगेशचन्द्र पाण्डेय	श्री श्यामदत्त पाण्डेय	,,	,,	,,	द्वितीय
28.	622	840121	वीरेन्द्रसिह असवाल	श्री मोहनसिह असवाल	,,	,,	,,	द्वितीय
29.	623	850007	श्रीमती बीना सिह	श्री मान्धाता सिह	,,	,,	,,	प्रथम
30.	624	850207	श्रीमती कमलेश सिह	श्री रामसिह पंवार	,,	,,	,,	द्वितीय
31.	625	850010	कु० किरण रिखी	श्री रमेशचन्द्र रिखी	,,	,,	,,	द्वितीय
32.	626	850225	श्रीमती कृष्णा	श्री वाचस्पति घिल्डियाल	,,	,,	,,	द्वितीय
33.	627	830162	कु० माधुरी ध्यानी	श्री गिरिधारीप्रसाद ध्यानी	,,	,,	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
34.	629	840092	कु० पूनम	श्री नन्दकिशोर गुप्ता	एम०ए०	हिन्दी	गु०कां०वि०	तृतीय
35.	630	850212	कु० रश्मि	श्री सुरेन्द्रकुमार अग्रवाल	,,	,,	,,	द्वितीय
36.	631	850001	कु० सुलोचना नेगी	श्री लोकसिंह नेगी	,,	,,	,,	द्वितीय
37.	632	850008	कु० तारा पाण्डे	श्री देवीदत्त पाण्डे	,,	,,	,,	द्वितीय
38.	633	850006	कु० उमेश कुमारी	श्री कंवरभान जैसिंह	,,	,,	,,	द्वितीय
39.	634	850018	कु० विजयलक्ष्मी	श्री कृष्णदास	,,	,,	,,	द्वितीय
40.	635	850022	श्रीमती विनोद बाला	श्री रिछपाल सिह	,,	,,	,,	द्वितीय
41.	636	850021	श्रीमती वीना रानी	श्री नेतानन्द	,,	,,	,,	द्वितीय
42.	638	820154	बलराम आर्य	श्री सुन्दरलाल	,,	इतिहास	,,	द्वितीय
43.	639	850219	भूपेन्द्रकुमार शर्मा	श्री शिवकुमार शर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
44.	640	850249	बंशराज राम	श्री बद्रीप्रसाद	,,	,,	,,	द्वितीय
45.	641	840146	चन्द्रशेखर शर्मा	श्री रघुनाथ शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
46.	642	850234	प्रमोदकुमार	श्री सुखबीर सिह	,,	,,	,,	द्वितीय
47.	643	840149	रमेशचन्द्र पंत	श्री पी०डी० पंत	,,	,,	,,	तृतीय
48.	644	850254	सुरेशकुमार अग्रवाल	श्री त्रिलोकीनाथ	,,	,,	,,	तृतीय
49.	645	850236	श्रीराम	श्री मदनलाल	,,	,,	,,	द्वितीय
50.	647	850249	सत्यपाल	श्री दिलीपसिह	,,	,,	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
51.	649	850221	विवेक मिश्रा	श्री ओमप्रकाश मिश्रा	एम०ए०	इतिहास	गु०कां०वि०	द्वितीय
52.	650	840131	कु० आभा भंडारी	श्री ठाकुरसिह भंडारी	,,	,,	,,	द्वितीय
53.	651	850033	कु० अंजू बाला	श्री रमेशचन्द्र	,,	,,	,,	द्वितीय
54.	652	850253	कु० नीलम रानी	श्री जियालाल शर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
55.	653	850012	कु० रजनी सेगर	श्री जबरसिह सेगर	,,	,,	,,	प्रथम
56.	654	850168	कु० शशि कान्ता	श्री रघुनाथ शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
57.	657	850171	अनिलकुमार	श्री बालबचन सिह	,,	मनोविज्ञान	,,	प्रथम
58.	658	850231	राजेश कुंवर	श्री रामखिलावन सिंह	एम०एस-सी०	,,	,,	द्वितीय
59.	659	850169	श्रीमती अंजू द्विवेदी	श्री ब्रह्मदेव पचौरी	,,	,,	,,	प्रथम
60.	660	850034	कु० प्रवीन त्यागी	श्री महेन्द्रसिह त्यागी	एम०ए०	,,	,,	द्वितीय
61.	664	850192	देवेन्द्रप्रसाद डोभाल	श्री विद्यादत्त डोभाल	,,	अंग्रेजी साहित्य	,,	द्वितीय
62.	665	850157	कर्मवीर सिह	श्री इसम सिह	,,	,,	,,	द्वितीय
63.	667	840169	रविशकर शर्मा	श्री काशीराम शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
64.	669	850191	सुरेशकुमार	श्री मदनसिह नेगी	,,	,,	,,	द्वितीय
65.	670	840156	शम्भू प्रसाद	श्री सदानन्द	,,	,,	,,	द्वितीय
66.	671	840066	सजयकुमार मेहता	श्री आनन्दप्रकाश मेहता	,,	,,	,,	द्वितीय
67.	672	840172	विजयकुमार	श्री सौमदत्त सिह	,,	,,	,,	द्वितीय

क्र.सं.	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
68.	674	840151	लक्ष्मण	श्री श्रीचन्द	एम०ए०	अंग्रेजी साहित्य	गु०कां०वि०	तृतीय
69.	676	850159	रामकृष्ण शर्मा	श्री हरिराम	,,	,,	,,	द्वितीय
70.	677	850028	कु० आशारानी सढाना	श्री मोतीराम सढाना	,,	,,	,,	द्वितीय
71.	678	850156	कु० देविन्द्र कौर	श्री प्रीतमसिह	,,	,,	,,	द्वितीय
72.	681	840117	कु० ममता	श्री शिवकुमार शर्मा	,,	,,	,,	द्वितीय
73	682	850009	कु० मनजीत कौर	श्री सोहनसिह	,,	,,	,,	द्वितीय
74.	686	850160	श्रीमती शशिप्रभा	श्री जमुनादास लुन्याल	,,	,,	,,	प्रथम
75.	687	850029	कु० सरस्वती	श्री विश्वबन्धु	,,	,,	,,	द्वितीय
76.	693	820072	अखलेशकुमार	श्री ऋषिराज	एम०एस-सी०	गणित	,,	द्वितीय
77.	697	840071	द्विजेन्द्र पन्त	श्री हेमचन्द्र पन्त	,,	,,	,,	द्वितीय
78.	699	820082	मनोजकुमार	श्री जयप्रकाश शर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
79.	700	810071	नीरज	श्री प्यारेलाल	,,	,,	,,	प्रथम
80.	701	850217	शेखरानन्द उनियाल	श्री जयानन्द शास्त्री	,,	,,	,,	प्रथम
81.	703	830038	विजयपाल	श्री अकलचन्द	,,	,,	,,	द्वितीय
82.	704	840170	वीरेन्द्रकुमार	श्री हरस्वरूप सिह	,,	,,	,,	द्वितीय
83.	705	830129	कु० शशि गौतम	श्री जगदीशप्रसाद गौतम	,,	,,	,,	द्वितीय

क्र सं	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	वर्ग	विषय	संस्था का नाम	श्रेणी
1.	1081	820066	अजयशंकर	श्री विजयशकर	एम.एस-सी.	माइक्रोबायलोजी	गु०कां०वि०	प्रथम
2.	1082	840145	अजय नागयान	श्री कलीराम नागयान	,,	,,	,,	प्रथम
3.	1083	820063	अनुराग मित्थल	श्री कमलेश्वर मित्थल	,,	,,	,,	प्रथम
4.	1084	840147	हितेन्द्रकुमार शर्मा	श्री महन्तराम शर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
5.	1085	840152	ललितमोहन वत्स	श्री सुखवीरसिह	,,	,,	,,	प्रथम
6	1086	820061	मनोजकुमार अग्रवाल	श्री रामतीर्थ अग्रवाल	,,	,,	,,	प्रथम
7.	1087	840127	महेशचन्द्र जोशी	श्री क्षेमानन्द जोशी	,	,,	,,	प्रथम
8.	1088	820054	सुनीलदत्त पंवार	श्री सत्यपाल	,,	,,	,,	प्रथम
9.	1089	820058	पुरुषोत्तमकुमार सिह	श्री वकीलसिह	,,	,,	,,	प्रथम
10.	1090	820053	तरुणकुमार रिखरा	श्री पुरुषोत्तमलाल रिखरा	,,	,,	,,	प्रथम
11.	1091	840126	विक्रमवीर कुलश्रेष्ठ	श्री धर्मेन्द्रप्रसाद कुलश्रेष्ठ	,,	,,	,,	प्रथम
12.	1106	850157	अरविन्दर मोहन	श्री मनमोहन सिह	,,	,,	,,	प्रथम
13.	1107	830078	महेन्द्र सिह	श्री जहानसिह	,,	,,	,,	प्रथम
14.	1108	830066	सुनीलकुमार शर्मा	श्री कैलाशचन्द्र शर्मा	,,	,,	,,	प्रथम
15.	1109	830061	विजयकुमार	श्री नरेशकुमार	,,	,,	,,	प्रथम